पद्मपुराण भाषा चतुर्थ पातालखण्ड की भूमिका ॥

वास्तवमें उस करुणासागर सर्वशास्त्रनागर परमेश्वर ने इस अपनीप्रजा के ऊपर बड़ी कृपादृष्टिकी जो वेदव्यासजीका अवतारलेकर अष्टादश महापुराण व अष्टादश उपपुराण बनाये जिनमें नानाप्रकारके धर्मात्माओं व दुष्टात्माओंके भी इतिहास वर्णनकिये व उनके फल भी अच्छीयुक्तिकेसाथ दिखाये जिनके लोभ व भयसे ये महामूढ़ दुराचारी परवित्तदारापहारी मित्रद्रोहकारी प्राणिहिंसाविहारी विशिष्टजननिन्दाप्रचारी अनेकपशुपक्षिमारीनिजकामचारी महालोभचयधारी स्वकीयदुष्टमतप्रचारी सन्मतदारी परमांसपुष्ट महादुष्ट सदारुष्ट लोभातुष्ट महाचुष्ट लोग कुछ २ अपने धर्म कर्म पर चलतेहैं कुमार्ग पर से चरणहटातेहैं शुभधर्मपर आरूढ़होतेहैं इन पुराणोंकेश्रवणसे अपनेपाप खोतेहैं अधर्मनिद्रामें नहीं सोतेहैं यह सब इन सर्व पुराणोंकाहीप्रभावहै नहीं तो महाआकर वेदोंका पठनपाठन धीरे २ इस कलियुगमें अत्यल्पहोगयाथा धर्मशास्त्रोंका भी पाठ बन्दही होगयाथा अल्पबुद्धिहोनेके कारण व उनकी रुक्षताकेकारण कोई वहां तक पहुंचताही नहीं था यदि ये अनेक सरल सयुक्तिक चटापटीके दृष्टान्तों से भरेहुये पुराण न बनेहोते जिनका एकइतिहास देखकर फिर आद्योपान्त विना पढ़लिये छोड़ने को मन नहीं होता तो लोग अबतक महाघोर कलि समुद्रके भ्रमर में परकर डूबगये होते सो अब उन थोड़े संस्कृत पढ़ेहुयोंसे भी जो न्यूनहैं कुछ भाषाही जानतेहैं उनका महाउपकार इन पुराणोंके भाषानुवादोंसे हुआहै उन पुराणोंमें यह पद्मपुराण जो दूसरा पुराणहै व पचपन सहस्र श्लोक इसमें हैं उसका यह चतुर्थ पातालखण्ड जिसमें अत्युत्तम नीलगिरिका इतिहास और पुष्कलविजय व सविस्तर रामाश्वमेध का वृत्तान्त व सीताजीका शुकशुकी द्वारा श्रीरामजन्म व रूप सुनके उनको पकड़ना व उनपक्षियोंसे शापपाना व नारदजीको वृन्दावनमें जाके श्रीकृष्ण व राधिका को शिशुरूप देखके स्तुतिकर अशोक मालिनि से अनूपवार्त्ताहोना व श्रीकृष्णचन्द्र का अतिरमणीय रासकरना जिसमें अर्जुन जी ने सखीरूपहोके श्रीकृष्णजी के संग विहारकिया है व नारदजी स्त्रीरूपहोके वह अनूप रास अवलोकन किया है और सुमना व देवशर्मा वृत्तान्त इत्यादि बहुतसी कथायें वर्णित हैं ॥

इसके सिवाय इस यन्त्रालयमें और भी बहुतसे ग्रन्थ प्रत्येक विषयके उल्था होकर मुद्रित हुये हैं वह सम्पूर्ण महाशयों की विज्ञप्ति के लिये निम्न लिखितहैं॥

पुराणोंमें-श्रीमद्भागवत, श्रीमहाभारत, शिवपुराण, विष्णुपुराण, लिंग पुराण, मार्कण्डेयपुराण, भविष्यपुराण, नृसिंहपुराण, वामनपुराण, वाराहपुराण, जैमिनपुराण, गणेशपुराण और आदि ब्रह्मपुराण सुन्दर देश भाषा के लालित्य पदोंमें हैं॥

काव्य में-रघुवंश, कुमारसम्भव, श्रीमाघकृत शिशुपालवध॥

धर्मशास्त्र में-मिताक्षरा तीनों काण्ड और मनुस्मृति इनकी उत्तमता देखने से विदित होगी॥

वैद्यकमें-निघंटरत्नाकर, भावप्रकाश, सुश्रुत, भैषज्यरत्नावली, रसरत्नाकर, माधवनिदान॥

वेदान्तमें-योगवाशिष्ठ और श्रीमद्भगवद्गीता शंकरभाष्यादि इन ग्रन्थों को जो विद्वज्जन अवलोकन करेंगे वह प्रसन्नतापूर्वक स्वीकारकरेंगे और ग्रन्थकर्त्ता तथा यन्त्रालयाध्यक्षको धन्यवाद देंगे॥

स्वर्गवासि महेशदत्तशर्म्मा॥

इति पातालखण्ड भाषा की भूमिका समाप्तम्॥

अथ पद्मपुराण भाषा चतुर्थ पातालखण्डका सूचीपत्र ॥

अथ उत्तरार्द्ध ॥

इति पद्मपुराण भाषा चतुर्थ पातालखण्डका सूचीपत्र समाप्त हुआ ॥

❀ पद्मपुराणभाषा ❀

चतुर्थ पातालखण्ड ॥

दो०। जनकसुता दशरथतनय विनय सनय करिआज ॥
भाषान्तर पातालदल करतसरल सुखसाज ॥ १ ॥
कह्यो प्रथम अध्याय महँ लङ्कासों रघुनाथ ॥
जिमि सियलषण समेत निज पुरढिगपहुँचिसनाथ ॥ २ ॥

नारायण नरोंमें उत्तमनर देवीसरस्वती व व्यासजी के नमस्कार करके फिर किसी ग्रन्थका उच्चारण करना चाहिये १ ऋषियों ने पूँछा कि हे महाभाग! तुमसे उत्तम स्वर्गखण्ड तो हमने सुना अब हे आयुष्मन्! आप हमसे श्रीरामचन्द्रजी का चरित्र वर्णन करिये २ सूतजी बोले कि उसके पीछे वात्स्यायनमुनि ने पृथ्वी के धारणकरनेवाले नागराजजी से अतिनिर्मल इस कथाको पूँछा ३ वात्स्यायनजी बोले कि हे शेषजी! तुमसे हमने जगत्की सृष्टि प्रलयआदिकी सम्पूर्ण कथायें सुनीं और भूगोल खगोल व नक्षत्रगणों का निर्णय भी अच्छेप्रकार सुना ४ व महत्तत्वादि सृष्टियों के अलग अलग सुन्दर निर्णयसुने व तुमने नानाराजाओंके चरित्रभी हमसे कहे ५ फिर सूर्य्यवंशी राजाओं के तो परमअद्भुत चरित्र कहे उन्हीं सूर्य्यवंशी महाराजाधिराजों के मध्य में श्रीमहाराज श्रीरामचन्द्रजी की तो अनेक पापहरनेवाली अनेक कथायें कहीं ६ उन्हीं कथाओं में

उन महावीर शिरोमणि श्रीरामचन्द्रजी के अश्वमेधयज्ञकी कथा तुमसे हमने संक्षेप रीतिसे सुनी अब विस्तारपूर्वक सुनाचाहते हैं ७ क्योंकि वह सुनने स्मरणकरने व कहने से महापापोंका नाशकरती है व चिन्तना करने से सब अर्थों को देती है व भक्तों के चित्तोंको सन्तोष देती है ८ यह सुनकर शेषनागजी बोले कि हे द्विजवर्य्य ! तुम धन्यहो क्योंकि तुम्हारी ऐसीमति है जो श्रीरामचन्द्रजी के युगल चरणारविन्दोंकी रजको अभिलाषा करती है ९ सब मुनिलोग कहते हैं कि साधुओं का सङ्गम श्रेष्ठहोताहै क्योंकि उससे सबपाप क्षय करनेवाली श्रेष्ठ श्रीरघुनाथजी की कथाहोती है १० तुमने हमारे ऊपर बड़ा अनुग्रह किया जो फिर श्रीरामचन्द्रजी का स्मरणकराया जिन रामचन्द्रजी के चरणारविन्दों की अपने मुकुटों के समूहों में लगीहुई जो मणी हैं तिनसे पूजा देवता दैत्य सब करते हैं ११ जिस श्रीरामचन्द्रजी की कथा के समुद्रमें ब्रह्मादि देवगण मोहित होकर कुछ नहीं कहसक्ते उसमें हमारे समान मशकोंकी कौनगणना है १२ तथापि हमको अपनी शक्तिके अनुसार तुमसे कहना चाहिये जैसे अपनी गतिके अनुसार सबपक्षी महान् आकाश में उड़ते हैं पर पारको नहीं जाते १३ शतकोटि विस्तारयुक्त इस श्रीरामचरित्र में जिनकी विशारदबुद्धि है वे लोग यथातथ्य कहसक्ते हैं यों तो जिस की बुद्धिमें जैसा आताहै वह वैसा कहता है १४ श्रीरघुनाथजी की पवित्रकीर्त्ति अतिमलिन हमारी मतिको सम्पर्कमात्र से पवित्र करेगी जैसे कि अग्नि सुवर्णको निर्मल करता है १५ सूतजी बोले कि इस प्रकार उन मुनिवरसे कहकर ध्यान में स्थिरमन करके लोकविलक्षण कथा ज्ञानसे अवलोकन किया १६ व गद्गदस्वर से युक्तहो महाहर्षसे चिह्नित अङ्गसमेत श्रीरामचन्द्रजी की विशदकथा फिर कहने लगे १७ शेषजी बोले जब देवता दैत्योंके दुःख देनेवाला अप्सरागणोंके मुखकमलों के मलिन करने के लिये चन्द्ररूपी लङ्केश्वर रावण मारडाला गया तो १८ इन्द्रादि सब देवताओंने परमसुख पाया व सुखपाकर दासोंकेसमान प्रणामकरके सबोंने श्रीरामचन्द्र जीकी बड़ीस्तुतिकी १९ व लङ्का में धर्म्मयुक्त विभीषणजी को राजा

बनाकर स्थापितकरके सीतासहित श्रीरामचन्द्रजी पुष्पकनाम विमानपर आरूढ़हुये २० सुग्रीव हनुमान् लक्ष्मण सीता सहित विभीषणादिभी विरहमें उत्सुक व सब मन्त्रीलोगभी श्रीरामचन्द्रजी के सङ्गचले २१ विमानपर चढ़ेहुये श्रीरामचन्द्रजीने खोदीखनी तोड़ी फोड़ी सब लङ्कापुरीको देखा सीताजीके रहनेकास्थान अशोकबनदेख कर मूर्च्छित होगये २२ उस शिंशिपा के वृक्ष को भी देखा जिसके नीचे जानकीजी रहती थीं व जिसके ओरपास और भी कुरैयाके बहुत पुष्पितवृक्ष लगेथे व हनुमान्जी के भयसे बहुतसी राक्षसियां मरीहुई पड़ीथीं २३ इसप्रकार सब लङ्का देखकर श्रीरामचन्द्रजी अपने २ विमानों पर चढ़ेहुये ब्रह्मादि देवताओं के सङ्ग अपनी पुरी अयोध्याजी को चले २४ देवताओंके नगारों के सुखदायक शब्द सुनते जातेथे व अप्सराओंका नृत्य देखतेव देवगणों से पूजित होतेथे २५ मार्ग्ग में सीताजी को आश्रमयुक्त तीर्थमुनि मुनिपुत्र व मुनियों की पतिव्रता स्त्रियोंको दिखाते जातेथे २६ जहां २ श्रीरामचन्द्रजी ने लक्ष्मण के संग पूर्वसमय में निवास कियाथा सब श्रीजानकीजी को दिखातेजाते थे २७ इसप्रकार दिखाते २ श्रीरामचन्द्रजी ने आकर अपनी पुरी देखी फिर उस पुरीके समीप नन्दिग्राम जिसे अब भरतकुण्ड कहते हैं देखा २८ जहां कि राजा भरतजी धर्म्मसे प्रजाका पालन करते हुये भाई श्रीरामचन्द्रजी के वियोगसे उत्पन्न बहुत से दुःखोंको सह रहतेथे २९ जैसे कि पृथ्वी में बड़ाभारी गढ़ा खोदकर उसके भीतर तो शयन करते थे ब्रह्मचर्य्य धारण कियेहुये जटारखाये वल्कलधारण किये अतिदुर्ब्बल शरीर दुःखसे पीड़ित होकर बार २ श्रीरामचन्द्रजीकी कथा कररहे थे ३० अन्य सुखदायक अन्नोंको कौनकहे यवान्न भी नित्य नहीं भोजन करते थे व जल भी बार२नहीं पान करते थे जैसे सूर्य्योदय होताथा तो बार २ यही कहते थे कि ३१ हे जगन्नेत्र देवस्वामीजी हमारे इस बड़े भारी पापको हरो जो कि जगत्पूज्य श्रीरामचन्द्रजी हमारे लिये बनको चलेगयेहैं ३२ सो भी अकेले नहीं सुकुमाराङ्गी सीताजी सहित गयेहैं जो सीताजी पुष्पोंकी शय्यापर चरण

धरनेपर दुःखित होतीथीं हाय वे वनको चलीगईं ३३ जिन सीता जीने सूर्य्यका सन्ताप कभी देखा भी नहींथा वे हमारे अर्थ प्रत्येक वनों भ्रमण करती होंगी ३४ जिन सीताजी को राजसमूहोंने कभी नेत्रोंसे भी नहीं देखाथा उन सीताजी को विकराल नेत्रवाले किरातलोग देखतेहोंगे ३५ जो सीताजी अति मधुरस्वादुयुक्त अ-न्नभोजन करानेपर भी नहीं भोजनकी इच्छा करतीथीं वे सीता अब वनके फलोंकी प्रार्थना करती होंगी अहो बडेशोक की बातहै ३६ यह प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर सूर्य्य से भरतजी कहते थे क्योंकि रामचन्द्रजी व सीताजी के परमवत्सल थे ३७॥

चौ० समसुखदुखबुधलचितपुराने। नीतिशास्त्रजानतअरुमाने॥
जबविनती कहुँकरहिं भरतकी। तब उनसों नृपकहतलरत्नमतकी॥३८
अयिअमात्यगण भाषत काहा। जानतनाहिं पुरुषाधम नाहा॥
दुर्भगमैं ज्यहि हित रघुनाथा। वनबसिदुःखसहत नियसाथा॥३९
भाग्यहीन मैं नहिं सन्देहू। पाप मिटिहि कह किमिकरिनेहू॥
रामचन्द्र पदकमल विलोके। विनन जाहिं ममम्मन के शोके॥४०
धन्य सुमित्रा वीर प्रसूता। पतिव्रता शुभ गुणसों पूता॥
जासुतनय श्रीरघुबर केरे। चरणकमल सेवत बसिनेरे॥४१
जहँ भ्राता वत्सल श्रीभरतू। वसतहते सबगुणगण वरतू॥
करतविलाप सदा त्यहिग्रामा। देखा लखन सहित श्रीरामा॥४२

इति श्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेशेषवात्स्यायनसंवादेश्रीरघुनाथस्यभरतवासनन्दिग्रामदर्शनोनामप्रथमोऽध्यायः॥ १॥

दूसरा अध्याय॥

दो०। कह्यो द्वितीयाध्यायमहँ रघुवरभरत मिलाप॥
जासों भरतादिकनके मिटिगे सकल विलाप॥ १॥

व्यासजी बोले कि जब रामचन्द्रजी ने दूरसे नन्दिग्राम देखा तो उसके देखनेसे चित्त अत्यन्त विह्वलहोगया क्योंकि धार्मिकों में अग्रगामी भरतभाई का स्मरण उनको फिर २ हुआ १ तब चन्द्रकान्तिके समान प्रस्फुरित दन्त निकलहुये मुखारविन्द से श्री रामचन्द्रजी पवनके पुत्र बलिष्ठ हनुमानजी से बोले २ किहेवीरसाई।

भरतके विषयमें जो वाणी हम कहतेहैं सुनो बहुतदिनोंके वियोगसे हमारी वाणी बहुतगद्गदहोनेसे विह्वलहोगई है ३ व बहुतदिनों के वियोगसे हमारे भ्राता भरत भी विह्वलहोगयेहोंगे इससे तुम उनके समीप जाओ व हमारे वियोगसे दुर्ब्बल शरीर भरतजी को देखो ४ जोकि वल्कलही पहिनतेहैं व जिनके शिरकेबालों में जटा बँधगई हैं व जो विरहसे आतुरहोने के कारण फल भी नहीं खाते ५ व जिसको पराई स्त्री माताके समान है व सोना मिट्टीके ढीलेके तुल्य है व जो प्रजाओं की रक्षा और सपुत्रकेसमान करतेहैं ऐसे धर्म्मज्ञ हमारेभ्राताहैं ६ हमारे वियोगके अग्निकी ज्वालासे जिनका शरीर जलरहाहै इससे तुम्हारे आगमनरूप जल वृष्टि से सींचकर उनके शरीर को शीतलकरो ७ जाकर कहो कि सीता,लक्ष्मण सुग्रीवादि वानरोंसमेत व विभीषणादि राक्षसोंसहित रामचन्द्र आते हैं ८ सो भी यों नहीं समाजसहित पुष्पकविमानपर चढ़ेहुये आतेहैं जिसके सुनने से हमारे छोटेभाई भरतजी शीघ्रही सुखीहोंगे ९ महात्मा श्रीरामचन्द्रजी का ऐसावाक्य सुनकर हनुमान्जी भरतजीकेनिवास स्थान नन्दिग्रामको गये १० व नन्दिग्राममेंजाकर भ्राता श्रीराम-चन्द्रजी के वियोगसे व्याकुल चित्त भरतजीको मुनियों व वृद्धों के सङ्ग बैठेहुये देखा ११ वे उससमय मन्त्रि वृद्धों से रामचन्द्रजीही की कथा कहरहे थे व उन्हींके चरणकमलोंके स्मरणकरनेसे परमान-न्दित होरहे थे १२ ऐसे भरतजीके आगे जाकर हनुमान्जी ने प्रणाम किया जो कि धर्म्मकी मूर्तिही धारणकिये थे व जिनको ब्रह्माजी ने अपने सोलहों अंशों से सब पराक्रम युक्तही उत्पन्न किया था १३ हनुमान्जी को देखतेही भरतजी हाथजोड़कर उठकेबोले कि अच्छे प्रकार तो तुम्हारा आनाहुआ न अब रामचन्द्रजी का कुशल कहो १४ ऐसा कहतेहुये भरतजी का दहिना हाथ फरकने लगा व हृदय से शोकजातारहा और हर्ष के आंशुओंसे मुख पूरित होगया १५ ऐसे भरतजी को देखकर हनुमान्जी बोले कि लक्ष्मण सीता सहित श्रीरामचन्द्रजी को इस पुरके निकट आये हुये जानिये १६ रामचन्द्रजी के आगमनके सन्देश रूप अमृत से शरीर सींचेहुये

भरतजी मारेहर्ष केसमुद्रमें मग्नहोगये व नेत्रोंसे इतनेहर्ष के आंशु निकले मानों सहस्रनेत्रों से निकलते थे कि जिनको हम जान नहीं सक्तेहैं १७ फिर हनुमान्‌जीसे बोलेकि हेरामसन्देशहारक हमारे ऐसा कोई पदार्त्थ नहींहै जो तुमको इस सन्देश के बदले में दें इससे जन्म पर्य्यन्त हम तुम्हारेदास बनेरहेंगे १८ तब वशिष्ठजी व अन्यवृद्ध मन्त्रीलोग अर्घ्यादि लेकर हनुमान्‌जी के बतायेहुये मार्ग्गहोकर रामचन्द्रजीके समीपको गये १९ जैसे इससमाजकेसाथ भरतजी नन्दिग्रामसे बाहर हुये कि दूरही से देखा कि पुष्पक विमानपर चढ़ेहुये श्रीरामचन्द्रजी व सीताजी व लक्ष्मणजी चले आतेथे २० रामचन्द्रजीनेभी देखा कि जटा रखाये वल्कल कोपीन धारण कियेहुये भरत पैदर चले आतेहैं २१ व सब मन्त्र्यादिकोंकोभी देखा तो भरतही का सा वेष जटा वल्कलादिसे सब बनायेथे व नित्य तप करनेसे सब अति कृश शरीर होगये थे २२ भरत राजाको वैसे दुर्ब्बल देखकर रामचन्द्रजीनेभी अपने मनमें बड़ी चिन्तनाकी कि अहोराजाधिराज धीमान् दशरथजीके २३ पुत्र ये भरत जटा वल्कल धारणकिये पैदर चलेआते हैं ऐसादुःख तो हमको वनमें बास करनेमें भी नहीं हुआ २४ जैसा कि हमारे वियोगसे इनको हुआहै अहो सुग्रीवादिको देखो ये भाई भरत हमको प्राणोंसेभी अधिक प्रिय सुहृद् हैं २५ हमको निकट आये हुयेसुनकर हर्षितमन्त्रियों वृद्धों के साथ व वशिष्ठजी के सङ्ग हमें देखनेको आते हैं २६ ऐसा कहतेहुये महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्रजी आकाश मार्ग्ग में चले जातेहुये पुष्पकविमान पर से विभीषण लक्ष्मण व हनुमान्‌जी करके आदर कियेहुये २७ झटपट उतरे व विरह छिन्नमनहो हे भाई! हे भाई! हे भाई! ऐसा बार २ कहनेलगे २८ सब देवगणों समेत श्रीरामचन्द्रजी को उतरे हुये देखकर हर्ष के आँशु छोड़तेहुये बुद्धिमान् भरतजी ने पृथ्वीपर गिरकर भाई के विरह से आर्द्र श्रीरामचन्द्रजीको दण्डवत्प्रणाम किया २९ श्री रघुनाथजीनेभी उनको दण्डवत्प्रणाम करते हुये पृथ्वीपर पतित देखकर हर्षपूर्वक देखते हुये अपने दोनों हाथों से उठालिया ३० यद्यपि उन्होंने अच्छे प्रकार उठाया परन्तु बार २ रोदन करते हुये भरतजी न उठे

क्योंकि रामचन्द्रजी के युगलचरणों के ग्रहण करने में उनकी बाहें आसक्त होगई थीं ३१ भरतजी बोले कि हे श्रीरामचन्द्र महाबाहु करुणासागर करुणापूर्व्वक दुराचारी दुष्ट मुझ पापी के ऊपर कृपा करो ३२ क्योंकि जो आपके चरण जानकीजीके कर कमलों के स्पर्श को भी क्रूर समझते थे वे आपके चरण कमल हमारे लिये वनमें भ्रमण करते फिरे ३३ ऐसा कहकर आँशु नेत्रों से छोड़तेहुये दीन मुख भरतजी बार २ रामचन्द्रजी को छपटकर फिर हर्ष से विह्वल मुख होकर हाथ जोड़कर आगे खड़े होरहे ३४ व श्रीरघुनाथ कृपा निधिने उन अपने छोटेभाई भरतजीको अच्छे प्रकार भेंटकर महा मन्त्री व गुरुदेव वसिष्ठादिकों के प्रणाम किया व आदर से सबोंका कुशल पूँछा ३५ फिर भरत सहित पुष्पक विमानपर चढ़े तब भरत जीने अपने भ्राताकी निन्दा रहित पत्नी सीताजी को देखा ३६ व अत्रिकी पत्नी अनसूया और अगस्त्यकी भार्य्यालोपामुद्राके समान पतिव्रता माना और प्रणाम किया ३७ व कहा कि हे मातः ! मेरे पापोंको क्षमा करो क्योंकि मुझ दुर्व्वृत्तकारी ने बड़ा पाप किया जो तुमसी सबको शुभकरनेवाली पतिव्रता को ऐसा दुःख दिलाया ३८ महा भाग्यवती जानकीजीने भी देवरको देख आदर सहित आ-शीर्व्वाद देकर भरतजीकी अनामय पूँछी ३९ सब लोग विमानमें स-वार आकाशमार्गसे क्षणमात्रमें पासही पिताकी पुरीको देखतेभये ॥

चौ० त्वणायकसकलविमान विराजे । अन्तरिक्षमहँअति सबभ्राजे ॥
देखतरहे अयोध्यानगरी । हर्षित बहुबिधिसोंसोसगरी ॥४०॥

इति श्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेरामाश्वमेधभाषानुवादेशेषवात्स्यायन सँव्वादेराजधानीदर्शनोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

दो० । कह्यो तृतीयाध्यायमहँ पुरप्रवेश जिमि राम ॥
कीन सकल परिजन सहित सब विधि पूरणकाम ॥ १ ॥

शेषनागजी वात्स्यायनमुनि से बोले कि श्रीरामचन्द्रजी अपने लोगोंके बसनेवाली राजधानी को देखकर बहुत हर्षित हुये क्योंकि बहुत दिनोंसे उसके देखनेकी लालसा लगरहीथी १ व भरतजीने

भी अपनेमित्र व सचिव सुमुखनामको अयोध्यापुरीकेउत्सवकराने
के लिये नगरको भेजा २ भरतजी बोले कि अयोध्यामें जाकरकहो
कि सब लोग श्रीरघुनाथजीके आनेका उत्सव अपने २ गृहोंमें जल्दी
से करें नाना प्रकारके कौतुक व चित्रसारी आदिसे मन्दिरोंको भूषित
करें ३ सब सड़कोंपर चन्दन कपूर मिलायेहुये जलसे ऐसा छिड़-
कावहो कि धूलिका कहीं चिह्न न दिखाईदे व पुष्प सब ओर से
अतिघने सड़कोंपर बिछाये जायँ व सब लोग [illegible] कियेहुये
ही राजमार्गोंपर चलतेहुये दिखाईदें कोई दुःखित वा दुर्बल मनुष्य
न दिखाई दें ४ चित्र विचित्र वर्णके ध्वजापताका सब कहींलगाये
जायँ व सब घोड़े हाथी आदि विचित्र वेष बनायेजायँ जिससे वर्षा
कालमें बादरोंके बीचमें धनुष के समान चमकते हुये हाथियों के
भूषण दिखाईदें व सब वानरलोग देखें ५ सबके गृहोंमें गुग्गुलकी
सुगन्धि कीजाय जिसका धुआँदेखकर बादरोंके भ्रमसे मयूरनाचने
लगें ६ हथिवाललोग हाथियों को गेरू आदिसे अच्छेप्रकार विचि-
त्रताके साथ रँगेंहुहें जिससे विदितहो कि हाथी नहीं येनानाप्रकारके
धातुओंसे चित्रितपर्व्वत आगयेहैं ७ ऐसेही मनके समान वेगवाले
सब घोड़ेभी अच्छेप्रकार सजायेजायँ व चुचुकार पुचकार उनकी
चञ्चलताकमकीजाय जिससे भीड़में बड़ी कूदफांद न मचावें व
उनके वेग को देखकर सूर्य्यनारायणके अभिमानको छोड़दे ८ व
सब भूषणोंसे भूषित सहस्रों कन्या हाथियोंपर चढ़ाईजायँ कि वे
ऊपरसे लावा व फूलोंकी वर्षा करें व मोतियाँ बरसावें ९ ब्राह्मण
लोगोंकी स्त्रियां पात्रोंमें दूर्व्वा हरिद्रा अक्षत दधि आदि धरे हाथों
में लिये आगे २ चलें व सुवासिनी स्त्रियाँ जिनका कि विवाहहुआ
है व अभी पतिके यहांनहींगईं श्रीरामचन्द्रजी की आरती उतारने
के लिये आवें १० व पुत्रके वियोगके दुःख से व्याकुल चित्त कौ-
सल्याजी अति हर्षितहों क्योंकि इनके देखनेकी उनको अतिलालसा
लगरहीथी अब यह हर्ष देखें ११ इत्यादि नानाप्रकारकी रचना
सब पुरकी शोभाकरनेवाले करें जिसमें नाना प्रकारकीशोभाहो इस
उत्सव के समान अन्य कोई उत्सव नहींहै इससे श्रीरामचन्द्रजी के

आगमनका महोत्सव सब कोई करें १२ शेषनागजी बोले कि भरत
जी के ऐसे वचन सुनकर मन्त्रियों में श्रेष्ठ सुमुख नानाप्रकार के
कौतुक रचानेके लिये अयोध्यापुरी को गया १३ व वहांजाकर म-
न्त्रियों में सत्तम उस सुमुख ने सबलोगों से श्रीरामचन्द्रजी के आ-
गमनके समाचार कहे १४ लोग श्रीरघुनाथजी के आनेके समाचार
सुनकर अतिहर्षितहुये क्योंकि प्रथम उनके विरह के दुःखसे सबों
ने सब भोगविलासके सुख छोड़दियेथे १५ वेदपाठी ब्राह्मणलोग
नवीन धोयेहुयेवस्त्र धारणकिये हाथोंमें कुशलिये सब से आगे श्री
रामचन्द्रजीके समीपकोचले १६ व जो शूरवीर क्षत्रिय लोगथे वे
सब अपने २ अस्त्र शस्त्र धारण कियेहुये चले जिन्हों ने संग्राम में
बहुतसे वीरोंको जीतलिया था १७ व धन समृद्ध वैश्यलोग हाथों
में हीरा जड़ीहुई अँगूठियां धारण किये व सुन्दरवस्त्र पहिने महा-
राजाधिराज की अगुआनी को चले १८ व जो शूद्रलोग ब्राह्मणा-
दिकोंमें भक्ति करतेथे व अपने आचार धर्म्ममें तत्पर वे वेदमें जैसा
आचार उनके लिये लिखाहै उसके अनुसारही करते थे वे भी अ-
योध्यानाथ के दर्शन को गये १९ व जो २ लोग जिस २ वस्तु से
जीविका करते थे वे लोग भेंटके लिये उन २ पदार्थों को हाथोंमें
लिये हुये श्रीरामचन्द्र महाराज के समीपगये २० राजा भरतजी
के सन्देश से अतिहर्षित होकर सब पुरवासी इस प्रकारसे श्रीराम
चन्द्रजी के निकट पहुँचे २१ शेषजी बोले कि अपने २ विमानों
पर चढ़ेहुये सब देवताओं के सङ्ग श्रीरामचन्द्रजी भी नानाभांति
से चित्र विचित्र अयोध्यापुरीमें प्रविष्टहुये २२ व वानरलोग कूदते
फांदतेहुये आकाशमार्ग होकर अपनी २ शोभा से युक्त श्रीरामच-
न्द्रजी के पीछे २ पुरीमें पैठे २३ अब पुष्पक विमानपरसे उतरकर
सीतासमेत श्रीरामचन्द्रजी पालकी पर चढ़कर परिवार सहित २४
नानाप्रकारके कौतुकोंसे व वन्दनवारोंसे शोभित हृष्टपुष्ट जनोंसेभरी
हुई व उत्सवों में भूषित अयोध्या में पैठे २५ सबओर से उससमय
बीणा ढोल नगारे आदि बाजे बाजरहे थे व सूत मागध बन्दीजन
स्तुति करते चलेजाते थे इसप्रकार श्रीराघवजी पुरीमें प्रविशे २६ ॥

चौ०जयराघवजयरामखरारी । जय रविकुलभूषणअघहारी ॥
जयदाशरथि देव जय होई । लोकनाथ जयजय इमगोई१।२७
इमि हर्षित पुरवासिन केरे । सुनतबचन बहुविधिसों टेरे ॥
जोसबभांति विलोकतरामहि । मुदितभयेसबगुणगणधामहि २।२८

पुरवासियों के ऐसे वचन सुनते हुये श्रीरामचन्द्रजी सब प्रकार से चित्र विचित्र सजी सजाई चन्दन कपूरादि सुगन्धितवस्तु युक्त जल से सींचीहुई व पुष्प बिछीहुई सड़कपर पैठे २९ उस समय कोई २ पुरवासियों की स्त्रियां खिड़कियों की राह होकर छज्जेपर खड़ीहोकर रामचन्द्रजी के दर्शन से कृतार्थ होकर बोलीं ३० ॥

चौपैया।धनि भिल्लनकन्या सब गुणगन्या जिनवनमहँअवलोके ।
रघुनन्दनकेरो शुभगुण डेरो सुमुख कमलगतशोके ॥
निजलोचन पंकज ज्यहि न लख्यो अज ताहिलख्यो तिननीके ।
उनसम जगमाहीं कहुँ को नाहीं कहतबात यह ठीके ॥ १ । ३१
यह राघव आनन करु सखिध्यानन धन्य धन्य न सँदेहू ।
ज्यहि ब्रह्मा शंकर जगदभयंकर देखत कबहुँ सनेहू ॥
त्यहिहमअवलोके भईं अशोके धन्य भाग्यहै आजू ।
बड़पुण्यपुरातम जो परमातम देखा श्रीरघुराजू ॥ २ । ३२
युतहासमनोहर यह मुखनोहर देखहुसखि चित दैकै ।
अरु मुकुट विधारो शिरसु सुधारो लषहु लषहु मुदकैकै ॥
बन्धूकलजावन अति मनभावन रदन छदन पुनि देखो ।
तापर रदपाँती चमक सुहाती नवदल हिमसमपेखो ॥ ३ । ३३
इमिपुरबनितनके मत सब मनके सुनत गुनत चितचाऊ ।
कमलायत लोचन भवभय मोचन लषत सबन रघुराऊ ॥
अति प्रेम पिरीते प्रमुदितजीते सबहि देख सुखभारी ।
निजजननीगेहा सहितसनेहा गयहु सकल हितकारी ॥ ४ । ३४

इति श्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेश्रीरघुनाथपुरप्रवेशोनाम तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथाअध्याय ॥

दो० चौथेमहँ रघुनाथकर मातृ मिलन अभिषेक ॥
कह्यो नागपति मुनिवरहि करिकै युक्ति अनेक १

इतनी कथा सुनकर वात्सायन मुनिनेपूँछा कि हेभुजगाधीश्वर! हेगुरुदेव! हे धरणीभारधारक! एक हमारा संशयसुनो व कृपाकरके उसका निवारणकरो १ जब श्रीरघुनाथजीको बनवासहुआ तबसे उनकी माताजी केवल देहमात्रहीसे स्थितरहीं चित्तसे शून्यहोगई थीं २ क्योंकि उनके वियोगसे विकल व अति दुःखितहोकर अति कृशतनु होगईथीं सो सुमुख मन्त्रीकेमुखसे श्रीरघुनाथजीका आगमन सुनकर ३ कैसे हर्षित हुईं व क्याहुआ उस समय उनका चिह्न कैसाहोगया व रामचन्द्रजीकेसन्देशकेकहनेवालेसे क्या कहा ४ बसयह हमको श्रीरघुनाथजीके गुणोंसे प्रकाशितसंशय है उसको दूरकीजिये चित्त लगाकर सुनतेहुये हमसे आपकहें ५ शेषनागजी बोले कि हे द्विजवर्य्यों के अग्रणी! हे महाभाग! तुमने बहुत अच्छा पूँछा अब हम कहते हैं एकाग्रमन होकर सुनो ६ जब उस मन्त्री के मुखचन्द्र से रामचन्द्रागमनामृत कौसल्याजी ने सुना तो उसको बार २ कर्णपुटसे पान करके बनाय शिथिल होकर मारे आनन्द से विह्वलहोगईं ७ व कहनेलगीं कि क्या मुझ विमूढ़ा ने यह स्वप्नदेखाहै अथवा कोई यह भ्रमकरनेवाला वचनहै क्योंकि मुझमन्दभाग्यवाली को फिर रामचन्द्रके दर्शन कैसेहोंगे ८ मैंने बहुत तप करनेसे रामचन्द्रको पुत्र पायाथा सो मेरेही किसी पापसे फिर वियोग होगया था ९ अये प्रिय मन्त्री! भला सीता लक्ष्मण सहित हमारे प्राणाधार रामकुमार कुशलीतो हैं भला बनमें बिचरते हुये रामभद्र अति दुःखित हमको कैसे स्मरण करतेहैं १० ऐसा कहकर श्रीरघुनाथजीका स्मरणकरके बड़े ऊँचे स्वरसे रोदनकरनेलगीं उस समय ऐसी मोहितहुईं कि अपना पराया कुछभी नहीं जानती थीं सुमुखनेभी देखा कि माताजी अत्यन्तदुःखितहोगईहैं ११ इससे वह वस्त्रसे पवन करनेलगा जिससे फिर कौसल्याजी सचेतहुईं तब माताजीसे फिर हर्षदायक वचन सुमुखबोला १२ देखा कि श्रीरामचन्द्रजी के आगमन से

हर्षितहुईहैं हेमातः! सीता लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजी को गृहमें आये जानो १३ व देखो अब उनको आशिषोंसे युक्तकरो ऐसासुमुखका कहासत्यवचन सुनकर १४ जैसे हर्षको कौसल्याजी प्राप्तहुईं उसको हम नहीं जानते इससे कह भी नहीं सक्ते झट आसनपरसे उठकर अंगनेमें आगईं व मारे रोमाञ्चके सब रोम खड़ेहोगये थे १५ हर्षसे विह्वलहो आंशु छोड़तीहुई उन्होंने श्रीरामचन्द्रजीको देखा तब तक श्रीरामचन्द्रजी भी पालकीपरचढ़े हुये १६ माता कैकेयी के मन्दिरमें प्रथम पहुँचे कैकेयी ने भी देखा कि रामचन्द्र प्रथम मेरेही गृहमें आतेहैं मारेलज्जाके नीचेको मुख करके १७ कुछ भी न बोलसकी व बार २ चिन्ता करनेलगी १८ तब सूर्य्यवंशध्वज महाराजाधिराज माता को अति लज्जित देखकर १८ विनययुक्त वचनों से समझातेहुये बोले कि हे माताजी! हमने बनमें जाकर तुम्हारी आज्ञाके अनुसार सब कामकिये १९ अब हे मातः! क्या आज्ञाहोतीहै सोकरें हमने आज्ञासे कमकुछनहीं किया फिर हमको क्यों नहीं देखतीहो २० अब आशिषों से इन भरतको व हम को युक्तकरके कृपादृष्टि से देखो श्रीराघवजी के ऐसे वचनभी सुनेपर कैकेयी नीचेही को मुखकियेरही २१ धीरेसेकहा कि रामभद्र अब अपनेगृहको चलो रामचन्द्रजी भी माता कैकेयी के वचन सुन २२ प्रणामकरके कृपानिधि व पुरुषोत्तमराघवेन्द्र सुमित्राजी के मन्दिरको गये २३ सुमित्राजीने भी अपनेपुत्र लक्ष्मणसहित श्रीरामभद्रजीको प्रणाम करतेहुये देख अतिप्रसन्न मनहो २३ चिरञ्जीव चिरञ्जीव ऐसा कहती हुई बहुतसी आशिषोंसे युक्तकिया तब रामचन्द्रजी ने भी माता के चरणों में प्रणामकरके २४ व मिलकर यह वचन आनन्द से युक्तहोकर कहा कि हे रत्नगर्भे! हमारेभाई लक्ष्मणजीने २५ जैसा हमारेदुःखका विनाशकियाहै वह इन्हींका कामथा औरसे ऐसा न होसक्ता २६ क्योंकि हे मातः! रावण सीताको हरलेगयाथा व फिर जो हमने पाया वह सब लक्ष्मणहीका कियाहुआ समझो ये न होते तो न पाते २७ इसके पीछे फिर सुमित्राजीके दियेहुये आशीर्वादोंको ग्रहण करके अपनीमाता कौसल्याजीके मन्दिरको श्रीराम-

चन्द्रजी देवताओं समेतगये २८ अपने दर्शनकी लालसासे हर्षित माताजीको देखकर अपने यानपरसे उतरकर श्रीरामचन्द्रजी ने अतिवेगसे चरणों को ग्रहणकिया २९ व माताभी उनके दर्शनसे उत्कण्ठितहोने के कारण विह्वलमनहोकर फिर २ रामचन्द्रजीको छपटाकर महाहर्षवतीहुई ३० शरीरमें तो रोमहर्षहुआ व बाणीगद्गदहोगई व हर्षके आंशुओंकीगर्मधारा पैरोंतक बहनेलगी ३१ माता को अतिशिथिल हाथ पैर न चलातीहुई आनन्द में चेष्टारहित रोमाञ्चयुक्त देखकर ३२ फिर अपने दर्शनसे कुछहर्षित भी देख व अतिदुर्बल शरीरदेख आप भी महाशोकयुक्तहुये पर यह दुःखका समयनहींहै ऐसा विचारकरके श्रीरामचन्द्रजी मातासे यह बोले कि ३३ हे मातः ! बहुतदिनोंसे तुम्हारे चरणोंकी सेवा हमने नहींकी सो भाग्यहीन हमारे उस अपराधको क्षमाकरो ३४ क्योंकि जो पुत्र अपने पिता माताकी शुश्रूषा करनेमें तत्पर नहीं रहते हे मातः ! वे मनुष्य मानने के योग्य नहीं हैं किन्तु वे मानो वीर्य्य से कीट पतङ्ग उत्पन्न हुयेहैं ३५ सो क्याकरें पिताजीकी आज्ञासे दण्डकारण्यको चलेगये थे इससेसेवा न करसके पर वहां भी तुम्हारीही कृपासे दुस्तर दुःखों से उत्तीर्ण हुये ३६ रावणसीताको हरलेगया था इसलियेहमलोग भी लङ्काकोगये तुम्हारी कृपा सेही लङ्केश्वरको मारकर फिर सीताको हम ने पाया ३७ यह वही सीताहै तुम्हारे चरणों पर निपतितहै इस पतिव्रता को देखो जो तुम्हारे चरणारविन्दोंमें मनको अर्पितकररही है ३८ श्रीरामचन्द्र जी के मुखारविन्द से ऐसा वचन सुनकर पैरों पर पतित पुत्रबधू को देखकर आशीर्वाद देकर महा पतिव्रता शिरोमणि अपनी बधू सीताकी प्रशंसा करतीहुई कौसल्याजी बोलीं ३९ कि हे पावनरूप सीते ! अपने पति के सङ्ग बहुत काल तक विलासकरो व दो पुत्र उत्पन्न करके इस कुल को व हम लोगों को पवित्र कराओ ४० तुम्हारे तुल्य पतिव्रता स्त्रियां सदा अपने पति के सुख व दुःखमें अनुगामिनी रहती हैं इस से तीनों लोकों में कहीं उनको दुःख नहीं होतायह बात सत्यही है ४१ हे विदेहपुत्रि ! तुम ने अपने शरीर से अपने कुलको पवित्र किया क्योंकि रामचन्द्र

के चरण युगलकी उपासना तुम ने बनमें भी जाकरकी ४२ जिन पुरुषों के गृहमें पति के प्रिय चाहनेवाली पतिव्रता स्त्री रहती है वे पुरुष जो कोटि बैरियों का नाश करडालें तो कौनसी आश्चर्य की बातहै ४३ श्रीरामचन्द्र जीकी महापतिव्रता भार्य्या सीताजी से ऐसा कहकर अति हर्षितहो कौसल्याजी मौन होरहीं व मारे हर्षके उनके सब रोम खड़े होआये ४४ इसके पीछे इनके भ्राता भरतजी ने पिता का दिया हुआ अपना राज्य धीमान् श्रीरामचन्द्र जी के निवेदन करदिया ४५ तब मन्त्री लोगों ने प्रहृष्टहोकर मन्त्रजानने वाले ज्योतिर्व्वित्पण्डितों को बुलाकर राज्याभिषेक के योग्य मुहूर्त्त पूँछा तब ब्रह्माजीने आप मुहूर्त्त बताया क्योंकि सब देवगण संग २ तो आयेहीथे ४६ इसलिये शुभदिन शुभमुहूर्त्त शुभनक्षत्रमें सबोंने उद्यत होकर श्रीरामचन्द्रजीको महाराज्यपर अभिषेचित कराया ४७ सप्तद्वीपवती पृथ्वीका चित्र व्याघ्र के चर्म्म के ऊपर लिखकर महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्रजी सिंहासनपर स्थापितकरके उसके ऊपर विराजमान हुये ४८ ॥

चौ० तादिनसों सब साधुनकेरे । मनप्रमुदित भे लहिसुखढेरे ॥
परतापी दुष्टनके सारे । दुःखितमनभे एकहि बारे ॥ १ । ४९
सबनारी निजनिज पतिसेवा । करनलगीं जिमि सेवहिं देवा ॥
मनहूंसों तब से नर कोई । करतनपाप प्रकटकिमिहोई ॥ २ । ५०
दैत्य देव किन्नर उरगादी । सब आनन्दित विगत विवादी ॥
रामनिदेशधरहिं शिरपाहीं । चलहिंन्यायपथथिर शकनाहीं ॥ ३ । ५१
परउपकार करतसब लोगा । बहुरिस्वधर्म्म चलतगत शोगा ॥
सबविद्या विनोदकरि नीके । निशादिवस बितवतविधिठीके ॥ ४ । ५२
प्रबलपवनहूहरत न बसनू । पथिकनके कबहूं करि मननू ॥
तब किमिचौरकथाकहकोई । तासु नामतो शास्त्र रहोई ॥ ५ । ५३
अर्थिनकहँ श्रीरामकृपाला । धनदसमान देत धन जाला ॥
भाइनसहित नित्यगुरुसेवा । करतरहत जिमिपूजत देवा ॥ ६ । ५४

इति श्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेश्रीरामराज्याभिषेको नामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

दो० । पँचयें महँ ब्रह्मादिसुर श्रीरामस्तुति कीन ॥
रामराज्य बर्णनघटज आगमकह्यो प्रवीन १

शेषनागजी वात्स्यायन मुनिसे बोले कि जब श्रीरामचन्द्र जी महाराजका राज्याभिषेक होगया तो रावण नाम राक्षस के बध से हर्षित ब्रह्मादि देवगणों ने प्रणत होकर श्रीराघवेन्द्र जी की बड़ी स्तुति की १ देवलोग बोले ॥

चौ० दशरथचन्दन सुरभयहारी । जय राघव दानवबधकारी ॥
देवबधू दुःखद असुरादी । तुमघालत जय होहुप्रसादी ॥ १ । २
तव दनुजेन्द्रविनाशनहारी । कीरति कहिनसकहिंकविभारी ॥
प्रलयकाल तुम सब संसारा । ग्रसत काह यश रावणमारा ॥ २ । ३
जन्मजरादिदुःखगतजयजय । प्रबलउधारण भारणअपभय ॥
जय रविवंशजलधिभवरामा । अजरामर अच्युतगुणधामा ॥ ३ । ४
बहु पापीजपि तव वर नामा । होत पवित्र जात तव धामा ॥
गौतमतिय प्रस्तरसों नारी । बहुरि भई का स्तुतियहभारी ॥ ४ । ५
विधिहरिहरपूजितयुगचरणा । देतसुरनअभिमतवरशरणा ॥
यववज्रादि चिह्न युत सोई । चरणकमलचाहत मनगोई ॥ ५ । ६
तनु भव मूर्ति तिरस्कृतरूपा । जो न महीपर होत अनूपा ॥
तवतो किमिसबदेव सुखारी । होत कृपामय पावनकारी ॥ ६ । ७
जबजब दनुज देतदुख देवन । तबतब लेतजन्म तुम भेवन ॥
यद्यपि अजअद्वय अविनाशी । परनिजजनहितहोत प्रकाशी ॥ ७ । ८
अघनाशनमृतअमृतसमाना । निजचरित्रमहितानिवितानाः ॥
सुरवन्दितपद निजपद आपू । चलेजातपुनि विशदप्रतापू ॥ ८ । ९
आदि अनादिअजरतनुधारी । कामरूपि मुकुटी अरु हारी ॥
हर सेवित पदपद्म हतारी । जयराघवकरुणा अवतारी ॥ ९ । १०
इमिकहि ब्रह्मादिक सब देवा । बारबार करि प्रभुकी सेवा ॥
रावणवधसों होय सुखारी । नमितकन्धबहुविनयउचारी ॥ १० । ११
स्तुतिसुनिमनगुनिरघुनाथा । प्रणत देखि सुरकीन सनाथा ॥
बोले मधुर वचन तिनपाहीं । प्रणतपालनयपालसदाहीं ॥ ११ । १२

सुनहु देवगणदुर्ल्लभ कोई । वरमांगहु हमसों पुनि सोई ॥
जो न सुरासुर पावा कबहूं । देब प्रसन्नहोयहम सबहूं ॥ १२ । १३
कहदेवन सुनिये मम स्वामी । हमपावासब निजमनगामी ॥
जो सुरबैरि दशानन मारा । यासों सुखितभयहुसंसारा॥ १३।१४
जबजब बाधाकरहिं सुरारी । तब तब लै तनु राम खरारी ॥
इमि ममबैरि विनाशहुआई । यह वरदेहुनआनसहाई ॥ १४ । १५

यह सुनकर श्रीरामचन्द्रजी फिर देवताओंसे बोले कि देवताओ हमारे वचन सुनो व आदरसे ग्रहणकरो १६ तुमलोगों का किया हुआ हमारेगुणों से युक्त यह अद्भुत स्तोत्र जो कोई पुरुष दिनमें वा रात्रिमें पढ़ेगा १७ उसका दारुण बैरियोंसे निरादर न होगा व न उसको कभी दारिद्र्यका सँय्योगहोगा न कभी कोई रोग होगा न कोई उसका अनादर करेगा १८ व हमारे चरणयुगलमें उसको बड़ीभारी भक्ति होगी व केवल पाठमात्रसे पुरुषका मन आनन्दित होजायगा १९ ऐसा कहकर नरदेवशिरोमणि श्रीरामचन्द्रजी मौन होरहे व सब ब्रह्मादि देव अति हर्षित होकर अपने २ लोकोंको चले गये २० व श्रीरामचन्द्रजी भी अपने भरतादि भाइयोंका लालन पालन पिताके समान करनेलगे व प्रजाओंको अपने औरस पुत्रोंके समान पालनेलगे क्योंकि वेतो किरोड़ों ब्रह्माण्डोंके नायक हैं उनको इतनी मर्त्यलोककी प्रजाकापालन करना कौनसी बात है २१ श्रीरामचन्द्रजीके राज्यकरनेके समयमें किसी पुरुष वा स्त्रीकामरण अकालमें नहींहुआ न किसीके कोईरोग कभीहुआ सबके गृहोंमें नित्य धनकीवृद्धि होतीरही २२ अतिवृष्टि अनावृष्टि मूषक शलभ शुक स्वचक्र व परचक्र ये जो अन्नके सातरोगहैं जिनको ईतिकहते हैं उनके राज्यमें कभीनहींहुये न कभी किसीको शत्रुसे भयहुआ वृक्षों में सदा कच्चे पक्केफल लगेरहते पृथ्वीपर सबमासोंमें पक्के व कच्चेभी अन्नलगेरहते २३ व सब कोई अपने पुत्र पौत्रादि परिवारों से सनाथ रहते स्त्रियोंको अपने पतियोंकेसँय्योगसे सदा सुखभोगनेको मिलते थे अर्थात् कभी विधवा नहींहोती थीं २४ जितनी प्रजाथी सब श्रीरघुनाथजीके चरणकमलकी कथाकहने सुननेमें उत्सुक रहती कभी

कोई पुरुष किसीकी निन्दा नहींकरता था २५ चमार पासी कोरी आदि अन्त्यजलोगभी कभीकुछ पाप नहीं करतेथे क्योंकि श्रीरघुनाथजीके हाथके ताड़नकीशङ्का उनको बनीरहती थी जिससे कि पापीको दण्ड अवश्य दियाजाताथा २६ व सब अन्यलोग सीतापति के मुखारविन्दके अवलोकन से नेत्रोंकोस्थिररखते थे व सदा आनन्दित रहते थे व सब लोग करुणापूर्व्वकही देखे जातेथे इससे वेभी परस्पर करुणाकरते थे २७ सेना बाहन धनधान्यसे समृद्ध शत्रुरहित राज्य श्रीरामचन्द्रजी ने भरतजी के हाथसे पायाथा व ऋषिलोग तथा अन्य सबलोग सुवर्ण वस्त्रादिसे भूषित उसराज्यमें थे २८ सब लोग तड़ागखुदाने कूपबँधाने वाटिकादि लगाने व देवमन्दिर बनवाने आदि इष्टापूर्त्त कर्म्महीके करनेवाले उसराज्यमें बसते थे अन्न युक्त खेतोंसे वह राज्य सदायुक्तरहता २९ सब राज्य सुदेश सुप्रजा स्वस्थ व सुन्दर तृण गोधनसे युक्तथा देवमन्दिरोंकी पंक्तियों से विराजमानथा जहां देखो हरिमन्दिर शिवमन्दिरादि बने थे ३० जितने ग्राम राज्यमें थे सबोंमें यज्ञ करने के लिये सुन्दर यज्ञस्तम्भ गड़े थे व सबों में सब सुन्दर धनकी सामग्री ठौर २ धरीथी सबोंमें सुन्दर पुष्पों की फुलवाड़ियां बनीथीं वृक्षों में सदा फल लगे रहते ३१ जहांकी पृथ्वी के सब तड़ागों में कमल लगे फूले रहते जहां२ लोग बसते थे ऐसा कोई स्थान न था जहां सुन्दर जलसे भरीपुरी कोई नदी न बहतीहो व सर्व्वत्र भूमि समान शोभित होती थी सब लोग पाखण्डरहित थे ३२ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र अपने २ कुलही से कुलीनथे केवल धनहीके कारण कुलीन नहीं कहाते व समझते थे स्त्रियों के विभ्रम अन्य लोगों के सम्मुख दिखाई देते पर विद्वानोंके सामने कभी नहीं ३३ जिस देश में नदी तो टेढ़ी मेढ़ी चाल से चलती थीं व कोई प्रजा टेढ़ीचाल यानी कुमार्गगामी न रहते थे व जहां कृष्णपक्ष में रात्रि तो तम यानी अन्धकारयुक्त होतीथी पर मनुष्य कभी तमोगुण को नहीं धारण करते थे ३४ जहां स्त्रियां रजोवती तो रहतीं पर कोई मनुष्य अधर्म्म नहीं करता था व जहां धनी लोग कभी गुमान नहीं करते थे व विना भात के भोजन न करते थे ३५

व कोई भी राजाके नौकर चाकर कभी बिना पालकी आदि सवारी के नहीं चलते थे व सब परशु दण्ड चामर आदि धारण किये रहते कोई भी राजपुरुष विना शस्त्रास्त्र धारण किये नहीं रहता ३६ सब लोग छत्रही से आच्छादित रहते क्रोधके रोकने से नहीं अर्थात् क्रोध कोई कभी करतेही न थे जुआरियों को छोड़ अन्य किसी के पास द्यूतखेलने के पाशादि नहीं रहते न अन्य कोई द्यूतकी वार्त्ता करता ३७ जुआरी लोगही पाशा हाथों में लियेहुये दिखाई देते अन्य कोई भी नहीं जलों में जालधारी धीवरादिही पैठते थे अन्य कोई स्नान को छोड़ फिर नहीं पैठता था स्त्रियों के कमर तो पतले होतेथे पर मनुष्यादि सब रुष्टपुष्ट होतेथे ३८ कठोर हृदय स्त्रियांही होतीथीं पुरुष कोई भी कठोर हृदय नहीं कुष्ठनाम एक औषधीही होतीथी जिसे अब कूट कहते हैं पर मनुष्यमें कुष्ठरोग कहीं नहीं दिखाई देताथा ३९ अन्तःकरण में छिद्र हीरा आदि सुन्दर रत्नों में ही था न कि किसी मनुष्य के हृदय में शूल मूर्त्तियों के हाथही में दिखाई देता न कि किसी मनुष्यादि के हृदयमें शूल उठे कांपना सात्त्विक भावही से मनुष्य के होता भय से कभी कोई नहीं कांपता था ४० ज्वर यदि किसी को होता था तो कामज्वरही होता अन्य विषमज्वर सन्निपातादिनहीं व दरिद्रता पापही की थी अन्य किसी वस्तुकी नहीं क्योंकि सब लोग पुण्यही करतेथे इस से पाप उनको दुर्लभथा ४१ युद्ध में हाथीही मतवाले दिखाई देते अन्य मनुष्यादि कभी नहीं लहरियां जलही में दिखाई देतीं मनुष्यादिकों के मन में नहीं दान अर्थात् मदकी हानि गजों मेंही दिखाई देती व तीक्ष्णता कण्टकोंमेंही होती न कि मनुष्योंके स्वभाव में ४२ गुण का विश्लेष वर्णोंमेंही दिखाई देता मनुष्यादिक गुणों को नहीं छोड़ते थे दृढ़ता पूर्वक बन्धन करना यह कहावत पुस्तकों केही बांधने में कही जाती थी अन्य मनुष्यादिक के बन्धनमें नहीं स्नेह का त्याग करना खल पुरुषही में था स्वजनों के संग स्नेह नहीं छोड़ते थे ४३ ऐसे देश का पालन श्रीरामचन्द्रजी करते न प्रजाओं का लालन करते देश में धर्मस्थापन करनेके लिये दुष्टों के दण्ड देने में दूसरे यमराजही

थे ४४ धर्म्म से इस प्रकार देश व पृथ्वी का पालन करतेहुये महाराजाधिराज को ग्यारहसहस्रवर्ष बीतगये ४५ इसी राज्य करने के समय में एक नीच धोबीके कहने से सीताजी का अपमान व अपनी निन्दा सुनकर धर्म्मधुरन्धर मर्य्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी ने अपनी सेवाहीमें तत्पर पतिव्रताशिरोमणि श्री जानकी जी का परित्याग किया ४६ धर्म्म से पृथ्वी पालन करतेहुये महाराज रामचन्द्र जी ने केवल एक सीताजीही का परित्याग किया यद्यपि वे आज्ञाही के वशवर्त्तिनीथीं पर लोकरव से भीतहोकर त्यागही दिया अन्य किसी का त्याग नहीं किया ४७ ॥

चौ० महाबुद्धिश्रीधर्म्मधुरन्धर । यकदिनसभा विराजतशुभकर ॥
मुनिअगस्त्यआयेबड़ज्ञानी । जाहिनव्यापतकबहुँगलानी १ । ४८
लैकै अर्घ्य वशिष्ठसमेता । उठे राम मुनिलखिसदुपेता ॥
जोमुनिशोष्यहुप्रथमपयोधी । जान्यहुप्रभुमुनिवरनहिंक्रोधी २ । ४९
स्वागतपूँछि अनामय पूँछा । सुखआसन बैठायसुऊँछा ॥
पुनितासोंबोल्यहुरघुनाथा । मुनिहिकरनचहबहुतसनाथा ३ । ५०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेशेषवात्स्यायनसंवादे रामाश्वमेधेअगस्त्यागमोनामपञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

छठां अध्याय ॥

दो० छठयेंमहँ घटयोनिकह रावणजन्म कहानि ॥
अरुकुबेर घटकर्ण बीभीषणहूकिबखानि १ ॥

शेषनागजी वात्स्यायन मुनिसे बोले कि इस प्रकार स्वागत से सन्तुष्ट अगस्त्य मुनिसे जोकि ब्रह्मचर्य्ययुक्त व तपोनिधिहैं उनमुनि से मतिमान् वीर व सब लोकों के गुरु श्रीरामचन्द्रजी बोले कि १ हे तपोनिधि अगस्त्यजी! आपका आगमन अच्छीतरह तो हुआ तुम्हारे दर्शनसे हम सकुटुम्ब पवित्रहुये २ तुम्हारी गति वेदों व शास्त्रों के अवलोकनमें तो लगतीहै न क्योंकि तुम्हारे तपमें विघ्न करनेवाला तो भूमण्डलमें कोई कहीं नहीं है ३ क्योंकि महाभागा धर्म्मचारिणी लोपामुद्रानाम आपकी धर्म्मपत्नीहैं जिसके पातिव्रत धर्म्मसे सब शुभही सदा तुम्हारे यहां होता है ४ हे मुनीश्वर ! हे धर्म्ममूर्त्ति कृ-

पासागर! कहिये स्थिर मतिवाले आपका क्याकार्य्यकरें ५ हे महा-
मुनिजी ! यद्यपि तुम्हारे तपोबलहीसे मनोवाञ्छित बहुतसे पदार्त्थ
होतेहैं तथापि हमारेऊपर कृपाकरके कहिये क्या करें ६ शेषनागजी
वात्स्यायनजी से बोले कि जब लोकगुरु राजराज धीमान् श्रीराम-
चन्द्रजीने ऐसा पूछा तो लोकोंके ईश श्रीरघुनाथजी से अगस्त्यजी
अति विनीत वाणीसे बोले कि ७ हे स्वामिन्! तुम्हारा सुन्दरदर्शन
देवताओंको भी दुर्लभहै इससे हे राजराज कृपानिधान! हमको दर्श-
नकरनेकेलिये आयेहुयेजानो ८ आपने लोकोंके शत्रु रावण असुर
को मारा यह बड़े भाग्यकी वार्त्ता है जो देवगण सुखीहुये व यह भी
बड़े भाग्यहीकी बात है कि विभीषण लङ्कापुरी के राजाहुये ९ हे
रामचन्द्रजी! तुम्हारे दर्शनसे आज हमारे सब पाप दूरहुये व हमारे
मनकाखज़ाना सम्पूर्णहुआ और सब दुष्कृतनष्टहुये १० ऐसाकह-
कर अगस्त्यमुनि फिर शीघ्रही मौनहुये क्योंकि रामचन्द्रजी के
दर्शन के आनन्दसे उनका मन विह्वलहोगया बहुत बोलनेका स्म-
रण न रहा ११ तब सर्वज्ञान विशारद लोक के भूत भविष्य वर्त्त-
मान जाननेवाले सर्वज्ञ मुनिसे श्रीरामचन्द्रजी ने पूछा कि १२ हे
मुनिराज! पूछतेहुये हमसे सब आप बिस्तारसहित कहें देवताओंके
मर्दनकरनेवाले रावणको जो हमने माराहै वह कौन है १३ व कु-
म्भकर्ण भी कौनहै इन दुष्टोंकी कौनसी जातिहै हे महामुने! ये देव
दैत्य पिशाच वा मनुष्य इनमें से कौनथे हम से कहिये १४ हे स-
र्वज्ञ आप सब जानतेहैं इससे सब विस्तारसहित कहें हमारे ऊपर
कृपाकरके सत्य २ हमसे कहें १५ तपोनिधि अगस्त्यजी इसप्रकार
वचन सुनकर जो कुछ श्रीरघुराजजीने पूछा था वह कहनेलगे १६
हे महाराज ! सृष्टिकरनेवाले ब्रह्माजी हैं उनके पुलस्त्यनाम पुत्रहुये
उनके वेदविद्यामें विशारद विश्रवानाम पुत्र हुये १७ उनके पति-
व्रताओंके गुणोंसेयुक्त दो स्त्रियांथीं एकका मन्दाकिनी नाम था व
दूसरीका कैकसी १८ मन्दाकिनीके लोकपाल विलासकरनेवाले कु-
बेरजी उत्पन्नहुये जिन्होंने शिवजी के प्रसादसे लङ्कापुरीमें निवास
किया १९ व विद्युन्माली की कन्या कैकसी में विश्रवा से तीनपुत्र

उत्पन्नहुये रावण कुम्भकर्ण व तीसरे पुण्यवान् विभीषण २० हे महामते ! उनमें राक्षसीके उदरसे जन्मलेनेके कारण व सन्ध्या समयमें उत्पन्नहोनेसे रावण व कुम्भकर्णकी अधर्म्म में निपुणमति हुई २१ एक दिन सुशोभित सुवर्णकी सामग्री समेत किङ्किणी जालकी मालासे अतिप्रकाशित पुष्पकनाम विमानपर चढ़के २२ कुबेरजी अपने पिता माताके दर्शनकरनेकेलिये शोभा से युक्तहोकर गये चारोंओरसे नानाप्रकारके भूषण धारणकियेहुये गण उनकी स्तुतिकरते जातेथे २३ आकर पिता माता के चरणों पर बड़ीदेरतक गिरकर फिर हर्षसे विह्वलात्माहोकर रोमाञ्चयुक्त हुये २४ व बोले कि आज हमारा सुदिनहुआ व हमारे भाग्य का फल उदित हुआ जो कि हमने महापुण्य फल दायक आप दोनों के चरण देखे २५ इत्यादि बहुत स्तुति के पद कहकर कुबेर अपने गृह लङ्का को चले गये उन के पिता माता भी पुत्र स्नेह के मारे अति हर्षित हुये २६ कुबेर को देखकर बुद्धिमान् रावण अपनी माता से बोला कि यह पुरुष कौन है कोई देवहै वा यक्ष अथवा मनुष्यहै २७ जो कि हमारे पिता के चरणों की सेवा करके फिर चला गयाहै यह तो महाभाग्य निधि अपने गणों से परिवारितहै २८ इस ने किस तप से वायुवेग यह विमान पाया है जिस में कि पुष्पवाटिका वाटिका कूप तड़ागादि सब विलासस्थान विद्यमानहैं २९ शेष नाग जी वात्स्यायन मुनि से बोले कि ऐसा वचन अपने पुत्र रावण का सुनकर उसकी माता रोषसे चलायमान होकर उदासीनहो कुछ नेत्र टेढ़े करके पुत्र से बोली कि ३० रेपुत्र ! बहुत शिक्षायुक्त हमारा वचन सुन इस का जन्म कर्म्म सब विचार करके जानने के योग्यहै ३१ यह सब कोशों का स्वामी कुबेरहै व हमारी सौति के उदरसे उत्पन्न हुआ है जिसने कि अपनी माता के कुल को अच्छी तरह प्रकाशित कराया है ३२ व तू तो हमारे पेट से पापरूप कीड़ा उत्पन्न हुआ है जो कि अपना पेट भरनाही जानताहै जैसे गधा अपना भारहीजानताहै उस वस्तु का गुण नहीं जानता ३३ वैसेही तू भी अपना खाना जानता है सोना बैठना भोगकरना जानता है ऐसेही तेरी

उत्पत्ति ही क्योंकि तू कभी सोता है कभी भ्रष्ट रहता है ३४ इसने तप करने से शिव को सन्तुष्ट किया उसी से लङ्का का निवास व पुष्पक विमान तथा राज्य सम्पदा पाया है ३५ इसकी माता सुधन्य है सुभाग्यवती व सुमहोदयवाली है कि जिसके पुत्रने अपने गुणों से महात्माओं का अधिकार पाया है ३६ क्रोध से पीड़ित अपनी माता के वचन सुनकर दुरात्माओं में श्रेष्ठ वह रावण अपने मन में सब विचारांश करके तप करने में निष्ठाकर माता से क्रोध करके बोला कि ३७ हे जननि ! हमारा अहङ्कार सहित वचन सुनो रत्नगर्भा तुम्हीं हो कि जिस तुम्हारे तीन पुत्र हैं ३८ वह कीटपतङ्ग के समान कुबेर क्या है व उसका स्वल्प तप क्या है लङ्का क्या है व थोड़े सेवकों समेत उसका राज्यही क्या है ३९ हे मातः ! उत्साह से हम प्रतिज्ञा करते हैं करुणापूर्वक उसे सुनो हे महाभाग्यवाली कैकसी ! जिसकी हमने प्रतिज्ञा की है न किसी ने कभी की होगी न कोई करेगा ४० ॥

चौ० । जो मैंसकलभुवनबशनाहीं । करिहौं जननिशोचुमनमाहीं ॥
विधि तोषक दुष्कर तबकरिकै । सकलदेवअपनेबशधरिकै ॥ १।४१
तबतकअन्नवारि मैं त्यागा । निद्राक्रीड़ा अरु अनुरागा ॥
जोनकरौंइमितोपितुमारे । पापहोतजोसोम्वहिंपारे ॥ २ । ४२
कुम्भकर्णइमि बहुरि विभीषण । कीनप्रतिज्ञा तिनपुनितीक्षण ॥
रावणउभयसङ्गलैगयऊ । तपकहँगिरिपरकरनसुठयऊ ३ । ४३

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेरावणोत्पत्तिकथनन्नामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

दो० सतयें महँ जिमिदशबदन धनदजीति हरिलीन ॥
पुष्पकलङ्का महिसुरन बहुप्रकार दुखदीन ॥ १ ॥

अगस्त्यजी श्रीरामचन्द्रजीसे बोले कि पर्वतपर जाकर उसराक्षस रावणने नेत्रों से एकटक सूर्य्यकी ओर देखते हुये व एक पद ऊपर को उठाये दशहजार वर्ष तक उग्र तप किया १ कुम्भकर्ण ने भी बड़ा दुश्चर तप किया व धर्म्मात्मा विभीषणने भी परमोत्तम तपकिया २

तब देवदेव भगवान् प्रजापतिजी प्रसन्न हुये जो कि देवदानव यक्षादिकों के मुकुटों से सेवित रहते हैं ३ तीनों लोकों में प्रकाशित बड़ा भारी राज्य रावण को वरदिया व शरीर भी ऐसा रम्यदिया जिसकी सेवा देव दानव सब करें ४ तब वहांसे आकर रावणने अपने सौतेलेभाई कुबेर को बहुत संतापितकिया उन से पुष्पक विमान छीन लिया व जबरदस्ती लङ्कापुरी भी छीनली ५ व सब भूगोल जितना था उसने संतापित किया देवगण सब स्वर्ग को भाग गये ब्राह्मणों के कुलोंको ढूँढ़ २ कर मारडाला व मुनियों की तो जड़ही खोदकर फेंकदी ६ तब अति दुःखित होकर इन्द्रादि देव ब्रह्माजी के शरणमें गये दण्डवत् प्रणाम करके उन महात्माओं ने बड़ी भारी स्तुतिकी ७ उन देवताओंने अर्थयुक्त बाणियोंसे ब्रह्माजीको सन्तुष्टकिया तब प्रसन्न होकर भगवान् ब्रह्माजीने कहाकि क्याकरें बताओ ८ तब सब देवताओं ने ब्रह्माजी के आगे सब निवेदन किया जैसे कि रावणसे उनका निरादर व पराजय हुआ था सब कहा ९ एक क्षणभर ध्यान देकर विचारांश करके देवताओंको संग लेकर ब्रह्माजी कैलासपर गये व उस पर्व्वत के समीप जाकर बड़ी विचित्रता से सब के सब खड़ेहुये १० व इन्द्रादिकोंने महादेवजीकी बड़ीस्तुतिकी भव तुम्हारे नमस्कार है शर्व्व तुम्हारे नमस्कार व नीलग्रीव तुम्हारे नमोनमः ११ स्थूल सूक्ष्म व बहुरूप तुम्हारे नमस्कारहै इसप्रकार सबदेवताओंके मुख की बाणी सुनकर महादेवजी १२ नन्दीश्वरसे बोले कि देवताओं को हमारे समीपलाओ तब नन्दीश्वरने देवताओंको बुलाया १३ तब देवगणोंने अन्तःपुरमें जाकर देखा व देखकर सब बहुत बिस्मितहुये व वहांजाकर लोगोंके कल्याण करनेवाले शंकरजी को ब्रह्माजीने देखा १४ कि जिनकी सेवा अति हर्षित कोटिशतसहस्र गणकरतेथे कोई तो नग्नथे कोई विरूप कोई धूसरे रंगके व कोई बिकराल रूप धारण किये हुयेथे १५ तब सब देवताओं के आगेहो प्रणामकरके देवताओं सहित ब्रह्माजी देवदेवेश महादेवजीसे बोले कि देवताओंकी अवस्थाको देखो १६ हे शरणागत वत्सल महादेव! कृपाकरो अब दुष्ट दैत्यके बधकरनेके लिये कुछ समुद्योग करो १७

दैन्य व शोकसे समन्वितवचन उन्होंने भी सुनकर ब्रह्मादि देवोंको संगलेकर श्रीहरिके धामकी यात्राकी १८ व वहां पहुँचकर देवता व मुनि यक्ष किन्नर सब श्रीहरिकी स्तुतिकरनेलगे कि हेमाधव! जय हेभक्तजनोंकी पीड़ा हरनेवाले! जयहो १९ हे देवदेवेश! कृपाकरो अपने सेवक हम लोगोंको कृपादृष्टि से देखो यह बड़े ऊँचे स्वर से शिवादि सब देवताओंने कहा २० ऐसे वचन सुनकर सुरोंके अधिनाथ श्रीविष्णुभगवान् दुष्ट असुरसे देवताओंका दुःख विचार कर उनलोगों के दुःखको मिटातेही मेघवत् गंभीर बड़े ऊँचे स्वरसे देवताओं से बोले २१ कि भो ब्रह्मा शिवादि देवताओ! तुम्हारे हित की बात कहतेहैं सुनो हम जानतेहैं कि तुमलोगोंको रावणसे भय है सो उसभयको अवतारलेकर हम नाशकरेंगे २२ महादान यज्ञादि सत्क्रिया करनेवाले सूर्य्यवंशी राजाओं से पालित व पृथ्वी तलभरमें अतिप्रसिद्ध व विराजमान सुवर्ण चांदीकी भूमिवाली अयोध्यापुरी है २३ उसमें आज कल महाराज दशरथ राजा राज्य करतेहैं उनके कोई सन्तान नहीं है और राज लक्ष्मीसे संयुक्त हैं वही सप्तद्वीपवती पृथ्वीका पालन इससमय करतेहैं २४ उन्होंने ऋष्यशृंग मुनिसे पुत्रेष्टियज्ञकराया है क्योंकि उन महाबल पराक्रमी को पुत्रहोने की इच्छाहै २५ व हे देवताओ! उन्हों ने पूर्व्वकाल में हमारी बड़ी तपस्या करके हमसे प्रार्थना की है इससे हे देवो! तुम लोगों के लिये उन राजा की तीन स्त्रियों में हम चारमूर्त्ति धारण करके अवतार लेंगे २६ रामचन्द्र लक्ष्मण शत्रुघ्न व भरत चार नामों से प्रसिद्ध होंगे तब मूलबल बाहन परिवार सहित रावणका उद्धार करेंगे २७ आपलोग भी अपने २ अंशों से अवतार लेकर भूतलपर बिचरें कोई ऋक्षों का रूप धारण करके व कोई वानरों का रूप धरके पृथ्वीपर बिचरें २८ इतना आकाशवाणीकी द्वाराकहकर श्रीमहाविष्णु विराम कररहे व उसे सुनकर सबदेवगण अतिहर्षित मन हुये २९ जैसा देवदेवधीमान् महाविष्णु जीने कहाथा सबों ने वैसाही किया अपने २ अंशों से ऋक्षों वानरों के रूप से पृथ्वी को परिपूर्ण किया ३० सो हे महाराज! उनमें जो महादेव महाविष्णु

भगवान् थे वे तो देवताओं के दुःख नाशने के लिये शरीर धारण करके आपहीं प्रकटहुयेहैं ३१ व ये भरत लक्ष्मण और शत्रुघ्न तुम्हारे अंश हैं व आपने देवताओं को दुःख देनेवाले रावण को मारा है ३२ पूर्व के बैरके अनुरोध से वह जानकी को हरलेगया इसी से ब्रह्मराक्षस जालिवाले उसरावण असुर को आपने माराहै ३३ यह सब लोकों का शत्रु दैत्य पुलस्त्य जीका पौत्र था उसको आपने निपाता इससे सब पृथ्वी सुख को प्राप्त हुई हे महेश्वर ! ३४ अब सब ब्राह्मणों को सुखहुआ व मुनियों को तपही बल होताहै सो वे लोग तपस्या फिर करनेलगे सबतीर्थ कल्याणकारी हुये सब यज्ञ अब सुन्दरप्रकार से होनेलगे ३५ हे जगद्योनि नरोत्तम विश्वात्मन् ! तुम्हारे महाराज होने से सब जगत् सुखी हुआ देवता मनुष्यादि सब आनन्दित हुये ३६ हे महाराज मुकुटालङ्कार ! जो आपनेपूछा हमने रावणकी उत्पत्ति व विपत्ति सबअपनी मतिके अनुसार कही॥

चौपैया । ईश्वरअविनाशीसबसुखराशीपुरुषोत्तमश्रीरामा ।
इमिरावणवार्त्तासुनिजगभर्त्तामहापुरुषसुखधामा ॥
करिगद्गदबानीसहितगलानी अश्रुविलोचनधारे ।
महितलपरव्याकुलह्वैपरिसाकुलप्रथितप्रभावपधारे॥ ।३८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

दो० अठयें महँ कह मुनि सकल श्रीरघुनाथ परत्व ॥
पुनि द्विजहत्या नाशहित हयमखकरनसतत्व १

शेषनागजी वात्स्यायन मुनिसे बोले कि हे मुनिश्रेष्ठ ! वात्स्यायनजी ब्रह्मण्यदेव देवदेव श्रीरामचन्द्रजी की यह कथा सब पाप प्रणाशिनी है क्योंकि वे सब धर्मों के एकही रक्षकहैं १ महराजाधिराज को रावण को ब्राह्मण जान मूर्च्छितदेखकर तपोनिधि अगस्त्यजी धीरे २ अपने करसे उनके शरीर का स्पर्शकरके फिर बोलेकि २ हे श्रीरामचन्द्रजी ! सावधानहोओ किसलिये दुःखित हुयेहो आप दैत्य कुलों के छेत्ता सनातन महाविष्णुहैं ३ भूत भविष्य व वर्त्तमान

सब स्थावर जङ्गम यह जगत् तुमसे अलग नहीं है व न तुम्हारे बिना नाश को प्राप्त होताहै फिर तुम किसलिये मूर्च्छित होगयेहो ४ अगस्त्यजी के मुख से ऐसे वचनसुनकर महाराजाधिराज आँशुओं की धार नेत्रोंसे छोड़तेहुये सम्मुख उठबैठे ५ व ब्रह्मद्रोह से पराङ्मुख होनेके कारण मारे लज्जाके नीचेको मुख करके दीनता अदीनता से मिलाहुआ कुछ विस्पष्ट वचन बोले कि ६ अहो विमूढ़ दुरात्मा हमारा अज्ञान देखो कि हमने कामसे लोलुप होकर ब्राह्मण के कुलको मारडाला ७ हाय स्त्रीके अर्थ हमने वेदशास्त्र विवेकी होकर ब्राह्मणको व उसका सब कुलकाकुल संहार करदिया भला हमारे समान दुर्म्मति व बुद्धिहीन कौनहोगा ८ इक्ष्वाकुवंशी राजाओं के कुलमें आजतक किसी ने कभी ब्राह्मण को दुर्वचन नहीं कहा सो ऐसा कर्म्म करते हुये हमने उस कुलको सुकलङ्कित करदिया ९ जो ब्राह्मण लोग दान सम्मान भोजनादिकोंसे पूजा करनेके योग्यहोते हैं उनको हमने बाणोंके समूहों से मारा १० इससे नहीं जानते किन लोकोंको जायँगे हमारे पापोंको तो कुम्भीपाक भी न सहसकेगा वैसा कोई तीर्थ भी नहीं दिखाईदेता जो हमको पवित्र करनेमें समर्थ हो ११ न कोई यज्ञहै न दान न तप न देवताकी प्रतिमादिक ऐसीहै जोकि ब्राह्मणों के मारनेवाले हमको पवित्र करसके १२ जिन नरकगामी मनुष्योंने ब्राह्मण के कुलको कोपित कराया है वे नरकमें जाकर बहुतसे दुःखभोगेंगे १३ वर्णाश्रमके विवेकी धर्म्मों के मूलवेद हैं उन वेदोंके मूल ब्राह्मणों के कुलहैं क्योंकि वेहीलोग सब वेदोंकी शाखाओं को पढ़ते जानतेहैं १४ सो वेदके मूलोंके छेदन करनेवाले हमको कौन लोकहोगा अब हमको क्याकरना चाहिये कि जिस से हमारा कल्याण हो १५ शेषनाग बोले कि मायासे मनुष्यका शरीर धारण कियेहुये रघुपुङ्गव राजेन्द्र श्रीरामचन्द्रजी को अत्यन्त विलाप करते हुये जानकर अगस्त्यजी यह वचन बोले कि १६ हे महाराज महाधीर महाप्रतिवाले श्रीरामचन्द्रजी! आप विषाद न करें दुष्टोंके नाशकी इच्छा कियेहुये आपको ब्रह्महत्या न होगी १७ क्योंकि आप प्रकृतिसे परपुराण पुरुष साक्षादीश्वर सब के कर्त्ता

हर्त्ता व रक्षक व साक्षी निर्गुणब्रह्म हैं अपनी इच्छा से सगुणहुये हैं १८ मदिरापान करनेवाले ब्रह्महत्याकारी सुवर्ण की चोरी करनेवाले व और भी महापापी सब आपके नामके उच्चारणमात्र से शीघ्रही पवित्र होजाते हैं १९ व हे महामते ! ये जनककुमारी देवी साक्षान्महाविद्या हैं जिनके स्मरणमात्र से लोग मुक्तहोकर सद्गतिको जायँगे २० व रावण भी दैत्य नहीं था वरन वैकुण्ठमें जो तुम्हारी मूर्त्तिरहती है उसका सेवक है सो ऋषियों के शापसे दैत्यत्वको प्राप्त हुआहै हे दैत्यनाशक ! २१ आप उसके ऊपर अनुग्रह करनेवाले हैं ब्राह्मणके मारनेवाले नहीं हैं ऐसा विचारकरके अब फिर शोचकरने के योग्य आप नहीं हैं २२ शत्रुओं के पुर जीतनेवाले श्रीरामचन्द्र जी मुनिके ऐसे वचन सुनकर गद्गदस्वर से यह मधुर वाक्य बोले २३ कि ज्ञान अज्ञानके भेदसे पाप दोप्रकारके होतेहैं ज्ञातपाप वह है जो जान बूझकर कियाजाता है व अज्ञात वह है जो विना जाने समझे भूलसे होजाता है २४ सो बुद्धिपूर्व्वक कियाहुआ कर्म भोगनेही से नष्ट होताहै व अबुद्धिपूर्व्वक जो बिना जाने होजाता है वह करने के पीछे पछिताने से व उसकी निन्दाकरने से छूटजाता है यह शास्त्र का विनिश्चय है २५ सो हमने बुद्धिपूर्व्वक जानबूझकर अति निन्दित ब्रह्महत्या की है इससे यह साधुवाद जो आप कहतेहैं हमारे दुःखकेमिटाने के लिये नहीं होसक्ता २६ इसलिये अब कोई ऐसा व्रत दान यज्ञ तीर्थ वा आराधन बताओ जो हमारे पापको भस्म करे २७ व उससे हमारी विमल कीर्त्तिहो जोकि सब लोगोंको पीछे से पवित्रकरे चाहे वे लोग पापाचारसे पापी होगयेहों ब्रह्महत्या से उनकी दीप्ति जातीरहीहो सबको पवित्रकरे २८ शेषनाग बोले कि ऐसा कहतेहुये सुरासुरों से नमस्कार कियेहुये चरणारविन्दवाले श्रीरामचन्द्रजीसे तपोनिधि अगस्त्यजी बोले कि २९ हे महावीर ! लोकके अनुग्रह करनेवाले श्रीरामचन्द्रजी ब्रह्महत्या मिटानेकेलिये जो वचन हम कहते हैं सुनो ३० जो अश्वमेध यज्ञ करता है वह सब पापों से उत्तीर्ण होजाताहै इससे हे विश्वात्मन् ! आप भी शोभित होकर अश्वमेध यज्ञकरें ३१ वह यज्ञ महासमृद्धियुक्त महा-

बलशाली महाबुद्धिमान् महात्मा सम्पूर्ण पृथ्वीके स्वामी आप से साध्यहै क्योंकि महा प्रयास से होताहै ३२ वह अश्वमेध बहुत से ब्राह्मणों की हत्याको दूर करताहै हे महाराज! उसे आपके पूर्व्वज दिलीपजीने भी किया था ३३ हे पुरुषर्षभ! इन्द्रने सौ अश्वमेध यज्ञ किये थे इसीसे इन्द्रपुरी में जाकर उन्होंने देवताओं व दैत्यों से सेवित परमपद पाया ३४ ॥

चौ० मनुअरुसगरमरुतनहुषात्मज । इनकीन्ह्योयहमखजिमिकियअज ॥
ये बहुतव पूर्व्वज हयमेधा । करिगे परपद बिना निषेधा १ । ३५
यासों भूप भूप तुम करहू । हौ समर्त्थ सबविधि जनिडरहू ॥
लोकपाल सम भाय तुम्हारे । सकल भव्य भूषित बलधारे २ । ३६
भाग्यवान रघुवर्य्य महाना । इमि सुनि मुनिसों यज्ञ प्रधाना ॥
ब्राह्मण घात भीत श्रीरामा । पूछ्यहु मख विधानकी सामा ३ । ३७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेऽष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवाँ अध्याय ॥

दो० नवयें महँ कह आगमन ऋषिन केर तिन धर्म्म ॥
भाषे वर्णाश्रमनके सुनि भे राम सशर्म्म १

श्रीरामचन्द्रजीने अगस्त्यजी से पूंछा कि उस अश्वमेध यज्ञके लिये कैसा अश्व होना चाहिये व उसके पूजनका विधान कौनहै व कैसे वह करने के योग्यहै व उसमें बैरी कौन जीतने के योग्य समझे जाते हैं १ अगस्त्यजी बोले कि गङ्गाजलके समान श्वेत तो उसका सब शरीर होना चाहिये व रूपसे सुन्दरहो कान दोनों श्यामरङ्गके हों मुख लालहो पूंछ पीली होनी चाहिये २ मनके तुल्य वेगहो व आकाश पाताल सब कहीं उसकी गतिहो व उच्चैश्श्रवाकीसी दीप्तिहो इस प्रकारके शुभ लक्षणों से युक्त अश्वमेध यज्ञके लिये घोड़ाहोना चाहिये ३ उसको बैशाखकी पूर्णमासीको विधिपूर्व्वक पूजितकरके व अपने नाम व बलसे चिह्नित पत्र लिखकर उसके मस्तक में बांधकर ४ प्रयत्न से छोड़ देना चाहिये व उसकी रक्षाके लिये बहुतसे रक्षक उसके सङ्ग करदेना चाहिये जहां यज्ञका वह घोड़ाजाय वहां

उसके रक्षक भी जायँ ५ जो कोई अपने बल व वीर्य्य के अहङ्कार से उस घोड़े को बांधले उससे जीतकर रक्षकों को चाहिये कि घोड़ा लेआवें ६ व यज्ञ कर्त्ता तबतक विधिपूर्वक अपनी यज्ञशाला में मृगशृङ्ग धारणकिये ब्रह्मचर्य्य समेत बैठारहै ७ इसप्रकार जबतक वर्ष न बीतजाय तबतक कर्त्ताको चाहिये कि दीनअन्ध कृपणादिकों को धन प्राणादिकों से सन्तुष्ट करता व्रतका पालन करतारहै ८ अन्न दान बहुत कियाकरे व धन भी बहुतदे जो कोई जोई कुछ मांगे उसको वह बुद्धिमान् वही पदार्थ देतारहै ९ ऐसा कर्म्म करने से यज्ञ सम्पूर्ण होताहै व सब पापोंको नाश करता है हे शत्रुनाशन ! १० इससे आप इस यज्ञके करने व घोड़ेके रक्षामें व सब दीनान्धादिकों के पालन पोषण करने में समर्थ हैं इससे इस यज्ञ को करके विपुल कीर्त्ति लीजिये जो बहुधा औरोंको दुर्लभहै और जनोंको भी पवित्र कीजिये ११ तब श्रीरामचन्द्रजी बोले कि हे द्विजश्रेष्ठ! प्रथम हमारी अश्वशाला में देखिये इसप्रकारके शुभ लक्षण युक्त घोड़े हैं वा नहीं १२ ऐसा श्रीराघवेन्द्रजीका बचन सुनकर करुणाकर अगस्त्यजी उठे व यज्ञके योग्य शुभ गुणवाले घोड़े देखनेचले १३ व श्रीरामचन्द्र समेत अश्वशालामें मनोवेग महाबल विचित्र प्रकारके तुरङ्ग मुनिराजने देखे १४ व बिचारनेलगे क्या सब वाजिराज उच्चैश्श्रवाके वंशके घोड़े पृथ्वीहीपर चलेआये हैं अथवा रघुवंशियोंकी कीर्त्तिके पिण्डहैं इकट्ठे हुये हैं किम्वा अमृत की राशि है समुद्र से निकलकर वाजियों के रूप से स्थित है घोड़ों को देखतेहुये मुनि जी ऐसे विस्मय को प्राप्तहुये १५ ॥

चौ० । एकओर लोहित रँगवाजी । पांतिबँधीसबगुणसोंभ्राजी ॥
एकओर सब श्यामकर्णही । सकलतुरग कस्तूरिवर्णही ॥ १ । १६
एकओर हय कनक सुरंगा । यक वर नीलवर्ण सब अंगा ॥
सबल रंग वाजी यकओरा । अपर विशेष वर्ण हयढेरा ॥ २ । १७
इमिदेखत मुनि कौतुकमाहीं । मग्न भये सुधिबुधि कछुनाहीं ॥
याग योग्य हय देखन हेतू । अनतगयेहुमुनिकरिहियचेतू ॥३।१८
तहँ तादृश देखे मख योगू । सहसन हय किमिकरें सँयोगू ॥

लखिविस्मितमुनिर्हर्षितमथञ्ज। सकलअंगरोमावलिठयञ्ज॥४।१९
फिर मुनिने देखातो जिनके श्यामरंगके कर्ण व अन्य सब अंग दूधके समान श्वेत पूंछेंपीली मुखलाल ऐसे शुभलक्षणों से लक्षित सहस्रों घोड़ों की पांति बँधी थी २० तब सबओर देखातो विमल जल धाराके समान व सब दोषरहित सबगुणों से युक्त मनोवेग अति शोभित विमल कीर्त्तिके पुञ्जके समान अश्व सब एकत्रही विराजमान होरहे हैं तब समुद्रके शोषनेवाले महामुनि अगस्त्यजी मारे हर्ष से प्रमुदित होकर तृषित नेत्र व प्रसन्नमुखसे श्रीसीतानाथ जी से बोले कि २१ हे रघूत्तम!अश्वमेध यज्ञके योग्य तुम्हारे बहुत से शुभगुणयुक्त घोड़ों को देखकर हमारे नेत्रोंकी तृप्ति नहींहोती२२ इससे हे सुरासुरनमस्कृत महाभाग श्रीरामचन्द्रजी ! अब विस्तार सहित अश्वमेध यज्ञ करो २३ इन्द्रके समान सब यज्ञ समूहों को करतेहुये व सूर्य्य के समान सैकड़ों शत्रुरूप जलको शोषतेहुये व रिपुगणोंके मारडालनेसे सब पृथ्वीमण्डलकी मर्य्यादाको जीतकर पृथ्वीतलके सुखको भोग करो हे भूरिभाग्यवाले श्रीराघव! २४ इस ऐसे वाक्य के वाद से सर्वेन्द्रियों से आनन्दित श्रीरामचन्द्रजी ने मनोहर सब यज्ञसम्भारों को एकत्रकराया २५ मुनिके साथ महाराज सरयूजी के तीरपरगये व सुवर्णके हलसे प्रथम बहुतसी पृथ्वी को जुतवाया २६ चारयोजन लम्बी व इतनीही चौड़ी धरणी को जुतवाकर व समानकरवाकर उसमें कार्य्य २ के लिये बहुत से मण्डप छवाये जिसमें यज्ञ के सब कार्य्य मण्डपों केही नीचेहों २७ योनि मेखला समेत कुण्ड हवन करने के लिये विधिपूर्व्वक खोदकर बनवाया उसको अनेकरत्नोंसे जटितकराया इसलिये सब शोभाओं से युक्तहुआ २८ तब सुन्दर महातप करनेवाले महाभाग मुनीश्वर वशिष्ठजी ने वेदशास्त्र के विधानसे सब कार्य्यों के करनेका प्रारम्भ कराया २९ व उन मुनिने अपने शिष्यों को मुनियोंके आश्रमों में भेजकर श्रीरामचन्द्र जीके अश्वमेधयज्ञके वृत्तान्त सबकहीं कहवाकर ३० सब श्रेष्ठ २ तपस्वी ऋषिलोगोंको बुलवाया वे सब परमेश्वर परमात्मा श्रीरामचन्द्रजी के दर्शनकी लालसा से वहां आये ३१ ॥

चौ० नारद असित कपिलमुनिराया । पर्व्वतजातूकर्ण सदाया ॥
व्यासअंगिराआर्ष्टिषेणमुनि । त्रिरागर्तआयेहयमखसुनि ॥ १ । ३२
याज्ञवल्क्यहारीतशुकादी । दिशिदिशिसोंसबश्रुतिगणवादी ॥
इन्हेंआदिसबऋषिगणधाये । रामतुरग मखदेखनआये ॥ २ । ३३
तिन्हेंमहामन श्रीरघुराजा । सादर उठि आदर सबसाजा ॥
अर्घ्यपाद्यआसनआचमनू । देपूज्यहुसबकहँप्रभुअपनू ॥ ३ । ३५
जोहिरण्यदीन्ह्योंबहुसबकहँ । जो २ मुनिआयेहितकरितहँ ॥
अरुकहधन्यभाग्यममआजू । जोआयहुमुनिवरनसमाजू ॥ ४ । ३५

शेषनागजी बोले कि हे ब्रह्मन्! जब इसप्रकारसे ऋषिश्रेष्ठोंका आगमनहुआ व सब आनन्दपूर्वक विराजमानहुये तो वर्ण आश्रमोंके उचित धर्म्मवार्त्ता उनलोगों में होनेलगी। ३६ इतना सुनकर वात्स्यायनमुनि बोले कि वहां कौनसी धर्म्मकी वार्त्ताहुई व क्या अद्भुत कहागया व उन साधुओंने सबलोगों के ऊपर करुणा करके क्या २ कहा ३७ शेषनागजी बोले कि उन सब मुनियोंको एकत्र विराजमान देखकर दशरथजी के पुत्र महाराजाधिराज महात्मा श्रीरामचन्द्रजीने सब वर्णों व आश्रमोंके उचितधर्म्म उनसेपूंछे ३८ जब श्रीरामचन्द्रजीके पूँछनेसे उनलोगोंने महागुणयुक्त जो धर्म्मकहे उन सबोंको विधिविधान सहित हम तुमसे कहतेहैं तिन्हेंसुनो ऋषिलोग बोले कि ब्राह्मणको चाहिये कि सदायज्ञकरे व करावे वेदपढ़े व पढ़ावे व विमलवेद पढ़कर सदा गृहस्थाश्रमही के कार्य्योंमेंलीन न होजावे ४१ ब्राह्मणको नीचकी सेवासे जीविका करना सदा त्याज्य है आपदा भी पड़जाय तबभी नीचकी सेवा न करे ४१ किन्तु जब ऋतुकाल आवे तब स्त्री के सङ्ग भोग करना गृहस्थ का धर्म्म है अथवा जब स्त्री अपनेआप इच्छाकरे व उसके पुत्रोत्पादनकी इच्छा हो तब उसके संग भोगकरे ४२ दिनमें भोग करने से पुरुषकी आयुष क्षीणहोती है रात्रिमेंभी श्राद्धकी रात्रिमें व अमावास्यादि सब पर्वोंमें बुद्धिमान् को मैथुन न करना चाहिये ४३ जो कोई ब्राह्मण श्राद्धवासर व पर्वोंमें मोह से मैथुनकरताहै वह धर्म्म से च्युत होजाता है व जो पुरुष ऋतुकाल में भोग करता है व जो अपनी

ही स्त्रीसे भोग करता है ४४ व वह सदा ब्रह्मचारीही समझाजाता है क्योंकि ऐसेही गृहस्थों का ब्रह्मचारी नाम होताहै ऋतुके पीछे सोलह रात्रितक ऋतुकाल कहाता है उतनेही दिनोंतक स्त्री प्रसङ्ग करना चाहिये परन्तु प्रथमकी चार रात्रियोंमें नहीं क्योंकि वे रात्रियां निन्दितहैं ४५ उनमेंभी चार रात्रियों के पीछे जो युग्मतिथियां छठीं आठवीं दशईं बारहवीं चौदहीं व सोलहवीं हैं उनमें प्रसङ्ग करने से पुत्र उत्पन्न होताहै व अयुग्म पांचईं सातईं नवईं ग्यारहईं तेरहईं व पन्द्रहईं में भोगकरने से कन्या उत्पन्नहोतीहै क्योंकि युग्म पुत्रकी व अयुग्म कन्या की तिथियाँ हैं व भोग के दिन दुष्ट चन्द्रमा का परित्याग करना चाहिये व मघामूलादि दुष्टनक्षत्रोंको भी त्यागचाहिये ४६ पवित्र होकर पुरुषवाचक नक्षत्रों मेंही अपनीही स्त्रीके सङ्ग भोग करना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से सब कार्य्यों के करनेवाला पवित्र चित्त पुत्र उत्पन्न होताहै ४७ आर्ष बिवाह में जो एक गाय बैलकी जोड़ी देकर बिवाह करना लिखाहै वह अच्छा नहीं है क्योंकि थोड़ा भी धन लेकर कन्याका बिवाह करने से कन्या बेंचने का पाप लगताहै ४८ ब्राह्मण को बाणिज्य करना राजसेवा करना वेदोंका न पढ़ना कुबिवाह करना श्राद्धादि क्रियाओं का न करना ये सब उनके कुलके पतित होनेके कारणहैं ४९ जो गृहाश्रमी अन्न जल दुग्ध मूल फल गोदानादिसे विधिपूर्वक सत्पात्रअतिथि की पूजा करताहै वह पुण्यवान् कहाताहै ५० व जिसके गृहसे बिना पूजा कियेहुये अतिथि निराश होकर चलाजाताहै वह जन्म भरके बटोरे हुये पुण्यों से तुरन्त हीन होजाता है ५१ पितर देवता मनुष्यादिकों को देकर फिर जो गृहस्थ भोजन करताहै वह अमृत भोजन करता है व जो अपनेही लिये केवल बनाकर विना देव पितृ अतिथि आदि के समर्पण किये भोजन करता है वह केवल अपने पेटका भरनेवाला कहाता है ५२ षष्ठीको सदा तैलमें पाप बसताहै व अष्टमी में विशेष पाप मांसमें बसतेहैं अमावास्या को भगमें व चतुर्दशीको क्षौरकर्म्ममें इसलिये जो तैलखाते लगाते भी हों षष्ठीमें न लगावें ऐसेही जो मांस भक्षण करते भी हों अष्टमीको न भक्षण

करै ऐसेही अमावास्या में मैथुन व चतुर्दशी को चौर न करावें ५३ रजस्वला स्त्रीके सङ्ग भोग न करे व अपनीभार्या के साथ भोजन न करे व एकही वस्त्र धारण किये भोजन न करे अँगौछा भी लिये रहै व पाटा पीढ़ाआदि ऊंचे आसनों पर बैठकर भोजन न करे किन्तु भूमिपर पैरधरे रहै तो पीढ़ाआदि पर बैठके करै ५४ जिसको तेज बढ़ने की इच्छाहो वह भोजन करतीहुई अपनी स्त्रीको कभी न देखै व ब्राह्मण को छोड़ अन्य मुखसे अग्निको न फूंके व नग्नस्त्री को न देखे ५५ अग्नि में पैर न तपावे व न उस में थूंक ख्यँखार मल मूत्रादि कुछ अपवित्र वस्तु कभी डाले किसी प्राणीकी हिंसा न करै न कभी प्रातःकाल व सायङ्काल की सन्ध्याओं में भोजन करे ५६ बछड़े को पिलातीहुई गायको किसी से न बतावे न उसको रोंके व इन्द्रके धनुषकी ओर अँगुली करके किसीको न दिखावे दिनको मट्ठा न खाय न रात्रिमें दही ५७ जो स्त्री धर्ममें तत्परहो उससे नमस्कार न करे व रात्रिमेंज्यादह भोजन न करे बाजा बजानेवालों का प्रिय न बने न कांस्यके पात्र में कभी पैरधुवावे ५८ अन्य किसी के धारण कियेहुये वस्त्र व जूता न धारणकरै न फूटेपात्र में भोजन करै न अन्य किसी का जूंठा भोजनकरै ५९ गीले पैरों सहित कभी शयन न करै न जूँठे मुहँ कभी चले लेटे २ कभी कुछ वस्तु न खाय व जूंठे हाथ से शिर न स्पर्शकरै ६० मनुष्यकी स्तुति न करै न अपना अपमानकरै मदान्ध के प्रणाम न करै व दूसरे के दोषोंको न कहै ६१ इसप्रकारगृहस्थाश्रममें रहकर फिर वानप्रस्थाश्रमको जावे सो चाहै स्त्री सहित जावे व विनास्त्री के उसके बाद विरक्त होजावे ६२ ॥

चौ० । इन्हैंआदिबहुधर्म्म बखाना । सबऋषिगण दैशास्त्रप्रमाना ॥
सर्वलोकहितकारी रामा । सुने सकलयद्यपिगतकामा ॥ १ । ६३

इति श्रीपाद्मेपातालखण्डेभाषानुवादेधर्म्मनिरूपणोनामनवमोऽध्यायः ६ ॥

दशवांअध्याय ॥

दो ०। दशयेंमहँकह हयत्यजन विधि अरु लषननिदेश ॥
पुनि रिपुहनसों रामजू भाषे धर्म्म प्रवेश १

शेषनाग वात्स्यायनजी से बोले कि इसप्रकार धर्म्म सुनतेहुये वसन्त ऋतु आया जिसमें कि महात्माओंकी सब यज्ञक्रियाओंका प्रारम्भ होताहै १ उस समयको देखकर कलश से उत्पन्न धीमान् वसिष्ठ जी सब लोकों के महाराजाधिराज श्री रामचन्द्रजी से यथोचित बचनबोले २ कि हे महाबाहु! श्रीरामचन्द्र तुम्हारा अब वहसमय आगया जिसमें पूजाकरके यज्ञके अर्थ घोड़ा छोड़ा जाता है ३ इससे इसविषयकी सामग्री एकत्रकीजिये व द्विजोत्तमों को बुलाइये व ब्राह्मणों की यथोचित पूजा आपकरें ४ व दीन अन्ध कृपणादिकों को अपने धनके अनुसार दानदें व विधिपूर्व्वक दानमान पूजादिकों से सबका सत्कारकरें ५ व आप सुवर्ण की स्त्री बनाकर उसके संग दीक्षितहोकर ब्रत करें जिसमें कि भूमिपर शयनकरनाहोगा ब्रह्मचर्य्य से रहना व धनधान्यके भोगबिलास से वर्जित होकर रहनाहोगा ६ मृगकाशृङ्ग धारण किये कटिमें मेखला मृगचर्म्म बांधेहुये आप सब यज्ञकासम्भारकरें व सबबस्तु इकट्ठी करावें ७ वसिष्ठजी का ऐसा यथार्थ वाक्य सुनकर धीमान् श्रीरामचन्द्र जी नाना प्रकार के अर्थों से बढ़ाहुआ बचन लक्ष्मण जी से बोले कि ८ हे लक्ष्मण! हमारा वचन सुनो व सुनकर तुरन्त करो अश्वमेध क्रिया के योग्य घोड़ा प्रथम बड़े यत्नसे यहां लाओ ९ शेषनाग जी बोले कि श्रीरघुपति जी का वचन सुनकर शत्रुओं के जीतनेवाले लक्ष्मणजी विविध प्रकार के वर्णनसे युक्त वचन सेना-पतिसे बोले १० कि हेबीर! हमारा मधुर वचन सुनो व सुनकर तुरन्त करो क्षितिपाल मौलिमुकुट श्रीरामचन्द्र जी की महा आज्ञा से काल के भी बलके उन्मथन करने में समर्थ चतुरङ्गिणी सेनाको रथ हाथी पैदल व सवारों से युक्त करो ११ व जलकी लहरियों की पंक्तियों परभी टापें मारनेवाले वायुवेग तुरङ्गों को तैयार कराओ व उनपर वैरियों की सेनाओं पर प्रहार करनेवाले बहुत शस्त्रास्त्र-धारी असवारों को चढ़वाकर एकत्र करो १२ व हाथों में भाला अं-कुश लियेहुये महा शूरबीर हथिवालों से पर्व्वताकार हाथियों को युक्तकराओ व उन मतवाले गजों पर शस्त्रास्त्रों से पूर्ण शत्रुओं के

मारने में विशारद वीरोंको चढ़ाकर तैयार कराओ १३ बहुत समृद्धियोंसे भ्राजमान अति वेग चलनेवाले घोड़ों से युक्त व विविध प्रकारके शत्रुओं के विनाश करने के समय स्मरण आनेवाले आयुधों और शस्त्रों से भरे पुरे हमारे रथों को सारथियों के द्वारा तैयार कराकर यहां पहुंचाओ १४ व अस्त्रशस्त्र हाथों में लियेहुये सैकड़ों और पैदल भी सेनाओं के नायक अश्वमेध यज्ञवाले घोड़ेकी रक्षा करने में उद्यत यहां आवें १५ महात्मालक्ष्मणजी के ऐसे बचन सुनकर कालजिन्नाम सेनापति ने सब सेनाको तैयार कराया १६ व सब घोड़ों के भूषणोंसे दशस्थानों में भूषित छोटे २ बालों की शोभा से युक्त गले में हयकलपहिने बड़े २ मोतियों की माला धारणकिये कण्ठ में बड़ाभारी मणिपहिने मुखके ऊपर श्वेत मणिधारण किये हृदय व दोनों कान श्याम तुरङ्गको दो अश्वसेवक पकड़े हुये लाये तब वह अतीव शोभितहुआ १७ लोहके लगाम से शोभित मुख चमकते हुये रत्नों से विभूषित मोतियों की माला से शोभित घोड़ा हयशालासे बाहर निकला १८ श्वेत छत्र उसके ऊपर लगाथा व श्वेतही चामर दोनों ओर से होरहेथे ऐसा बहुत शोभा से शोभित अश्वराज निकला १९ उसके आगे पीछे व बगलों पर सब बहुत सेनापति घेरे हुये उसकी सेवा करते थे जैसा सेवा करने के योग्य श्रीहरि भगवान् की सेवा देवगण करते हैं २० इसके पीछे हाथी घोड़े रथ पैदरों से युक्त होने के कारण चतुरंगिणी बड़ी भारी सेना को बुलाकर आज्ञा दीगई २१ व सब कहीं सैनिकों की ध्वनि सुनाई देने लगी व फिर उस श्रेष्ठ पुर में नगारों का नाद हुआ २२ व शूरों के प्रिय उस बड़ेभारी नादसे बड़े २ ऊँचे पर्व्वत कांपने लगे व बड़े ऊँचे २ धवरहर खसपड़े २३ व सवारोंके चढ़नेपर घोड़ों के हिनहिनानेका बड़ाहीभारी शब्दहुआ रथोंके पहियाओं की धमकसे मानों पृथ्वी चलीहीसी जातीथी २४ व हाथियों के झुण्डों के चलनेसे मानोंधरणी रूंधीहीसी जातीथी व इतनी धूलि इन सबों के चलनेसेउड़ी कि सब लोगों को आच्छादित करलिया २५ छत्रों से सूर्य्यको आच्छादितकरके वह महासेना निकली यह सब सैन्य

कालजिन्नाम सेनापतिकी प्रेरितथी २६ श्रेष्ठवीरलोग एक दूसरेसे आगे बढ़कर गर्जते हुए चलते थे इससे रणका सम्भ्रम करते थे व श्रीरघुनाथजी के यज्ञके लिये सब उद्यतहोकर चलेथे २७ व सबके सब कस्तूरी केसर आदि सुगन्धित द्रव्योंसे युक्त चन्दन अरगजादि लगायेहुये व विमल पुष्पोंकीमाला गलोंमें व शिरोंपर डालेहुये मुकुट करधनी कण्ठा मोहनमाला आदि भूषणों से भूषित महाराजाधिराजकी आज्ञासे चले २८ इसप्रकार सब सेनाके अग्रगामी महाराजके समीप बड़ी शीघ्रतासे धन्वा पाश खड्ग आदि अस्त्र शस्त्र धारणकिये हुये आये २९ व उन सबों के मध्यमें बिराजमान यज्ञवाला अश्व इस प्रकार धीरे २ खुरोंसे पृथ्वीको खोदता हुआ इस लिये पृथ्वी को आकाश बनाता हुआ यज्ञशालामें आया ३० ऐसे दिव्य तुरंग को आये हुये देखकर श्रीरामचन्द्रजी बहुत हर्षित मन हुये व उन्होंने बसिष्ठ जी को प्रेरित किया कि सब क्रियाकरो ३१ तब सुवर्णकी स्त्री के संग ग्रन्थिबन्धन किये हुये श्रीरामचन्द्रजी को बुलाकर वसिष्ठजी ने उन शत्रुपुर जीतनेवाले श्रीरामचन्द्रजी से ब्रह्महत्या नाशक प्रयोग कराने का प्रारम्भ किया व श्रीरामचन्द्रजीभी ब्रह्मचर्य्य धारण किये व मृगशृंग धारणकिये वह कार्य्य कराते भये ३२।३३ प्रथम यज्ञकर्म्म के लिये जितना लम्बा चौड़ा कुण्ड चाहिये था मण्डप के नीचे बनवाया वहां वेद शास्त्रके विचार में चतुर ३४ श्रीरघुनाथजीके कुलगुरु महामुनि वसिष्ठजी आचार्य्यहुये व हे ब्रह्मन्! उस यज्ञ में ब्रह्माके सब कार्य्य अगस्त्य मुनि करने लगे ३५ व बाल्मीकि मुनि अध्वर्य्यु हुये व कण्वजी द्वारकी रक्षाकेलिये जापक नियत किये गये उस यज्ञशालामें तोरण सहित आठ द्वार बनाये गये ३६ व सब द्वारों पर दो २ विप्र रक्षक नियत किये गये जो कि रक्षा मंत्रोंके वेत्ताथे उन मे पूर्व्वके द्वारपर मुनियोंमें श्रेष्ठ देवल और असित ये दो नियत हुये ३७ व दक्षिणके द्वारपर तपोनिधि कश्यप व अत्रिजी स्थापित हुये व पश्चिम के द्वारपर मुनिवर जातूकर्ण और जाबालिजी नियत हुये ३८ व उत्तरके द्वारपर द्वित एकत नाम के मुनि नियत हुये इस प्रकार द्वाररक्षा विधि करके कुम्भ से उत्पन्न

वशिष्ठजी ३९ यज्ञ वाले अश्वकी पूजा करनेपर उद्यत हुये प्रथम सुवासिनी स्त्रियों को वस्त्र भूषणों से भूषित कराके ४० वहांबुलाया व उन से हरिद्रागन्ध अक्षतादिकोंसे पूजाकरवाया व धूप दीपादि भी किया ४१ फिर वशिष्ठजी की आज्ञा से उन स्त्रियोंने अगरु आदि मिश्रित देवदारु के धूपसे धूपित करके चार बातियों के दीपक से उस बाजी का वार्द्धायन कर्म्मकिया इसप्रकार चन्दनकरके चर्चित मस्तक को पूजा करके ४२ इसप्रकार उस अश्वकीपूजा अच्छे प्रकार कराकर उसके मस्तक में चन्दनादि लगाया व कुंकुमादि लगाकर अत्यन्त शोभित किया व एक सुवर्ण का बड़ाभारीपत्र उसअश्वके मस्तकके ऊपर बांध दिया ४३ उसपर श्रीरामचन्द्रजी का प्रताप व प्रचण्ड बल लिख दिया जैसे कि सूर्य्यवंश ध्वज धन्वाधारी धनुर्विद्याके गुरुओंके गुरु ४४ राजा दशरथजी हुये जिनके देव दैत्य सब अपने मस्तकके मणियोंसे नमस्कारकरते थे उनके पुत्र वीरोंके बल व दर्पके हरनेवाले ४५ रघुवंशियों में श्रेष्ठ महाभाग शत्रुओं के नाशक श्रीरामचन्द्रजीहैं सब शूरोंके शिरोमणिहैं उनकी माता कोशल नृपकी पुत्री कौशल्याजी हैं ४६ उन्हींके उदरसे शत्रुनाशक श्रीरामचन्द्रजी रत्नरूप उत्पन्नहुये हैं व ब्राह्मणोंकी शिक्षासे अश्वमेधयज्ञ करते हैं ४७ वे रावण विप्रेन्द्रके बधकरनेसे उत्पन्न पापके मिटाने के लिये रामचन्द्रजी ने घोड़ों में श्रेष्ठ इस घोड़े को छोड़ा है ४८ इससे उन्होंने महाबल पराक्रमयुक्त सेनाओं से अच्छी तरह रक्षित उसके रक्षक उन्हींके भ्राता लवणासुर के नाशक शत्रुघ्नजी हैं ४९ उनके संग हाथी घोड़े रथ पैदरों की बड़ीभारी सेना है सो जिस राजाको अपनेबलके मदसे यहश्रेष्ठमानहो ५० कि हम बड़े शूरहैं व धनुर्द्धारियोंमें श्रेष्ठहैं व इससंसारमें बड़ेउत्कट युद्धकरनेवालेहैं वे राजा लोग अपने बलसे रत्नमालाओं से विभूषित ५१ मनोवेग इच्छाके अनुरूप चलनेवाले व सब चालोंकेचलनेसे अतिप्रकाशित इसअश्वको पकड़े उनलोगोंसे श्रीरामचन्द्रजी के भाई शत्रुघ्नजी धन्वा से छोड़े हुये वत्सदन्तनाम बाणोंसे एकखेलकेसाथ जबरदस्ती छुंड़ालेंगे ५२ । ५३ महामुनीन्द्र वशिष्ठजी ने इत्यादि श्रीरामचन्द्रजी के भुजों

का वीर्य्यबल व सत्प्रताप उस सुवर्णपत्रपरलिखा क्योंकि शोभा निधानप्रचण्ड पवनके समान वेगवान् व पातालभूतलादि सर्व्वत्र जानेकी सामर्थ्यवाले उसयज्ञ तुरंगको छोड़ा व सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजीने शत्रुघ्नजीको आज्ञादी कि इच्छापूर्वक चलेजातेहुये इस अश्वकी रक्षाकेलिये इसके पीछे २ जाओ५४।५५ हे शत्रुघ्न इस वाजी की रक्षाके अर्थ जाओ मार्ग में तुम्हारा कल्याणहो व तुम्हारे भुज शत्रुवीरों के नाशने में तत्पर हों ५६ जो योद्धा लोग संग्राम करने के लिये आवें उनका तुमनिवारणकरना व अपने गणों सहित इसपृथ्वीपर अपने इसवाजी की रक्षाकरना व सोते हुये रणसे भागे हुये वस्त्रहीन अतिभयभीत नमस्कार करते हुये व विह्वल चित्तवालोंको नमारना क्योंकि सुकर्मकरनेवाले पुण्यात्मा लोग ऐसे कर्मकी प्रशंसा नहींकरते ५७ हे शत्रुघ्न सुकृत कीइच्छा कियेहुये तुमको चाहिये कि तुमतो रथपर चढ़ेहोतो किसी विरथको न मारो व जो लोगकहें कि हमतुम्हारेहैं उनकोभी नमारो ५८ क्योंकि जोविमद मतवाले सोतेहुये भागेहुयेभयसे आतुर व मैं तुम्हारा हूं ऐसा कहते हुयेको मारताहै वह नरकही को जाताहै ५९ परधन लेनेमें अपने चित्तकी वृत्ति नकरना व परस्त्रीमें भी न करना नीचका सङ्गभीकभीनकरना किन्तुउसचित्तवृत्तिकोसद्गुणोंसे हीपूरितरखना ६० वृद्धों के ऊपर पहले हथियार न चलाना जो लोग पूज्यहों उनके पूजाका व्यतिक्रम नकरना सदा उनकी पूजाही करतेरहना व दया रखना ६१ गाय विप्र वैष्णव धर्म्मयुक्त पुरुषोंके तुम नमस्कारकरना क्योंकि जो इनके प्रणामकरके चलोगेतो सिद्धिको पावोगे ६२ श्रीविष्णु सबके साक्षी सर्व्वव्यापक होकर सब प्राणियों में रहते हैं और जो उनकेभक्त होतेहैं हेमहाबाहो वे उनकी कृपा से निर्भय विचरा करते हैं ६३ जो लोग सब प्राणियों के हृदय में स्थित श्री महाविष्णुका स्मरण करतेहैं हेरघूत्तम उनको महाविष्णु के समरूप मानना चाहिये ६४ जिनके न कोई अपनाहै न पराया व जिनके शत्रु भी मित्रही के समान होते हैं ऐसे वैष्णवलोग क्षणमात्रही में पापीको पवित्र करदेतेहैं ६५ जिनको भागवत प्रियहैं

उनको ब्राह्मण प्रियहैं इसीसे भागवत व ब्राह्मणों को श्रीमहाविष्णु ने वैकुण्ठ से लोकों के पवित्र करनेकेलिये यहां भेजाहै ६६ ॥

चौ० । जिनकेमुखहरिनामउचारा । हृदयमाहिंहरिकरतबिहारा ॥
उदर विष्णु नैवेद्य विराजत । तेवैष्णवश्वपाकवरुसाजत १ । ६७
जिनकहँ प्रिय सब वेद पुराना । संसारजसुख जिननहिंमाना ॥
अरु स्वधर्म रत जो नर कोई । तिन्हेंप्रणामकरहुशुभहोई २ । ६८
शिवअरु विष्णुमाहिं नहिंभेदा । नहिंविधिशम्भुमाहिंकछुखेदा ॥
तिन पदरज पावन अघहारी । धरहुसदाशिरपरशिवकारी ३ । ६९
गौरी गंगा लक्ष्मी जासू । हैं समान नहिं पृथक् प्रकाशू ॥
ते नर स्वर्गलोकसों आये । जानहुँ वेद पुराणन गाये ४ । ७०
शरणागत रक्षक जो प्रानी । दानपरायणकृत अघहानी ॥
यथाशक्ति हरिप्रीति स्वकर्म्मा । करतवैष्णवोत्तमवहशर्म्मा ५ । ७१
जासु नाम महपाप तुरन्ता । दहतअनलजिमितूलअनन्ता ॥
तासु चरणमहँ भक्तियदीया । वैष्णवजानहुबुद्धितदीया ६ । ७२
जासु सकल इन्द्रिय वशमाहीं । मन हरिचिंतक संशयनाहीं ॥
तिन्हैंकरत जो मनुज प्रणामा । होतपूतजनिभर शुभसामा ७ । ७३
परतियकुकुर बान्त समाना । तजैं यशोधर पुरुष महाना ॥
ममादेश इमि जो नरकरई । लहिशुभतेजभवाम्बुधितरई ८ । ७४

इति पाद्मेपातालखण्डेभाषानुवादेशत्रुघ्नशिक्षोपदेशोनामदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवांअध्याय ॥

दो० । ग्यरहेंमहँ कह यज्ञ हय मोचन पूजन विप्र ॥
दानमान द्विज आदिकर बहुतकार्य्यमेक्षिप्र १

शेष नागजी वात्स्यायनमुनिसे बोले कि शत्रुओंके नाशक श्री रामचन्द्रजी ऐसा कहकर वीरों को देखते हुये फिर शुभ वाणी से बोले कि १ हमारे भ्राता शत्रुघ्न की आज्ञा का पालन करता हुआ अश्वकी रक्षा करतेहुये उनके पीछे २ रक्षा करताहुआ कौन वीर जायगा २ जोकि आये हुये सब वीरों को तीक्ष्ण शस्त्र समूहोंसेजीते वह पृथ्वीपर अपने यशको विस्तार पूर्व्वक फैलाताहुआ हमारे हाथ से वीरा ग्रहणकरे ३ श्रीरामचन्द्रजी के ऐसा कहने पर भरतजी के

पुत्र पुष्कलजी ने श्रीरघुनाथजी के करकमल से बीरा लिया ४ व कहा कि हे महाराजाधिराज ! शस्त्र चाप बाण धारण कियेहुये सब प्रकार से कवचादि धारण किये हम शत्रुघ्नजी के पृष्ठदेश की रक्षा करतेहुये जायँगे ५ क्योंकि सब पृथ्वीतल को इस समय आपका प्रतापही जीतेगा हे महामतिवाले रामचन्द्रजी ! ये हम सब केवल निमित्त मात्रहैं ६ आपकी कृपासे सुरासुर मानुषसहित सबत्रिलोकी जो युद्धकरने को उपस्थित होगी तो सबके निवारण करने में हम समर्थ हैं ७ हमारा विक्रम देखने से स्वामी सब कुछ जानेंगे अभी हम शत्रुघ्नजीके पृष्ठ रक्षक होकर जायँगे ८ ऐसा कहते हुये भरत के पुत्र पुष्कलको अच्छा २ कहकर प्रशंसाकरके हर्षित श्रीरामचन्द्र भगवान् प्रभु हनुमान् आदि वानर श्रेष्ठों से बोले कि ९ हे हनुमन् महावीर ! हमारा वचन आदर पूर्व्वक सुनो तुम्हारेही प्रसाद से हम ने शत्रुरहित यह राज्य पाया है १० व सीताका संयोग जो फिर हमारेसाथ हुआ उसमें जो तुम समुद्रकेपार उतरगये हे कपीश्वर ! यह सब तुम अपनाही कियाहुआ समझो ११ इससे तुम हमारी आज्ञासे हमारी सेनाके पालक होकर जाओ हमारे भाई शत्रुघ्नकी पालना वैसेही करना जैसी कि हमारी तुमने कीथी १२ जहां २ शत्रुघ्न की मति कुछ घबड़ाजाय हे महामते ! वहां २ हमारे भाईको समझाते रहना १३ धीमान् महात्मा श्रीरामचन्द्रजीके ऐसे वचन सुनकर शिरसे ग्रहणकर हनुमान्जीने तब प्रणाम किया १४ इसके पीछे श्रीमहाराजाधिराजजीने ऋक्षोंके स्वामी कपियोंमें उत्तम तेज वाले जाम्बवान्को शत्रुघ्न जीकी रक्षाके लिये आज्ञादी १५ फिर अंगद गवय मैन्द दधिमुख वानरराज सुग्रीव शतबलि अक्षिकवानर १६ नीलनल मनोवेग अधिगन्ता वानरांगज इत्यादि तुमलोग भी तैयार होओ १७ व सबलोग हाथियों व अच्छे तुरंगोंपर सवारहो तपायेहुये पक्के सोनेके भूषणों से भूषित कवच कुण्डी आदिसे भूषित होकर अतिशीघ्रता से जाओ १८ शेषजी ने वात्स्यायनमुनि से कहा कि इसके पीछे बलवीर्य्यसे शोभित श्रीरामचन्द्रजी सुमन्त्रनाम मन्त्री कोबुलाकर बोले हे अमात्य ! श्रेष्ठ कहो अश्वपालन करने में समर्थ

कौन लोग इस विषय में नियुक्त करने चाहियें १९ श्रीमहाराज के बचन सुनकर शत्रुओं के नाश करने वाले मन्त्री सुमन्त्रने यज्ञ के तुरंगकी रक्षा करने के योग्य बलवान् राजाओं को बताया २० कि हे रघुनाथ जी ! सुनिये धनुर्द्धर महाविद्वान् शस्त्रास्त्र चलाने में बड़े विचक्षण अच्छेप्रकार सन्नद्ध इन नवीन वीरोंको बताते हैं २१ प्रतापाग्न्य नीलरत्न तथा राजा लक्ष्मीनिधि रिपुताप उग्राश्व व शस्त्रविद् राजा २२ ये सब जावें क्योंकि जो ये नीलरत्ननाम राजा हैं महावीर व रथाग्रगामी हैं ये अकेले लक्षवीरों को रक्षाकरसक्तेहैं व लाखकेसंग अकेले युद्ध करसक्तेहैं फिर निर्भय रहते हैं यह नहीं कि कभी भयभीतहों २३ सो ये अश्वकी रक्षाकेलिये दश अक्षौहिणी सेना अपनेसंगलेकर जावें सबसैन्य जो इनकेसंगरहे कवचकुण्डी आदि धारण किये सब शस्त्रास्त्रों से युक्तरहै २४ व जो येप्रतापाग्न्य नाम राजाहैं ये कुटिल शत्रुको देखतेही मारडालते हैं क्योंकि सव्य अपसव्य दोनों ओर एकही संग बाणछोड़ते हैं ऐसे सब शस्त्रास्त्र चलानेमें चतुरहैं २५ ये बीस अक्षौहिणी लेकर यज्ञ तुरंगकीरक्षा करने को जावें व कवच बख्तर पहनकर शत्रुओंके नाशकरनेकेलिये धन्वा बाणादि धारण कियेरहैं २६ व ऐसेही राजन्यसत्तम ये लक्ष्मीनिधिजी जायँ जिन्होंने तपकरकेइंद्रको प्रसन्नकरके अस्त्रविद्यामें अभ्यासकिया है २७ ब्रह्मास्त्र पाशुपत्यस्त्र गारुड़ास्त्र नागास्त्र मायूरास्त्र नाकुलास्त्र रौद्रास्त्र वैष्णवास्त्र मेघास्त्र २८ वज्रपार्वतास्त्र वायव्यास्त्र इत्यादिसुन्दर शस्त्रास्त्रों के प्रयोग करने व संहारकरने का विधान अच्छेप्रकार जो जानतेहैं २९ ये अपनी सबसैन्यलेकर व यहांसे एक अक्षौहिणी सेना और लेकर जायँ क्योंकि सबशूरों के मुकुट व सब बैरियों के भञ्जन करनेवाले हैं ३० व धनुर्द्धरों में अग्रणी रिपुताप भी जावें क्योंकि ये सब शस्त्रास्त्रों में कुशलहैं इसीसे रिपुवंशकेलिये दावानल के समान दाहकहैं ३१ सो चतुरंगिणी बहुतसी सेना लेकर ये जायँ व ये सब शत्रुघ्नजीकी आज्ञा शिरपर धारणकरें व अपने बलकी उत्कटता दिखावें ३२ व उग्राश्व और शत्रुविद् ये दोनों राजाभी ऐसेहीहैं इसलिये सब सन्नद्ध होकर आपके यज्ञाश्वकी रक्षाकेलिये जावें ३३

सुमन्त्रमन्त्री के ऐसे बचन सुनकर श्रीरामचन्द्रजी बहुत हर्षित हुये व मन्त्री के कहेहुये वीर राजाओं को जानेकेलिये उन्हों ने आज्ञादे दी ३४ वे लोग श्रीरघुनाथजी की आज्ञाको पाकर बड़े हर्षितहुये क्योंकि ये युद्धमें उद्भट बहुत दिनों से युद्धकरने की इच्छा कररहे थे ३५ सबके सब कवचादिकोंसे सन्नद्धहोकर व शस्त्रास्त्र धारणकरके श्रीसीतापति जी की आज्ञासे शत्रुघ्नजी के समीप को गये ३६ शेष नागजी वात्स्यायन मुनि से बोले कि इसके अनन्तर वसिष्ठजी के कहने से श्री रामचन्द्रजी ने यथोचित श्रेष्ठ दक्षिणाओं से आचार्य्यादि ऋषियोंकी पूजा विधिसे की ३७ श्रीरामचन्द्रजी महाराज ने आचार्य्य को एकबहुतउत्तम साठबर्ष की अवस्थाका गज दिया व रत्न मालासे बिभूषित एकअत्युत्तम मनो बेग घोड़ा दिया ३८ व मणि रत्नोंसेविभूषित एकसुवर्णका रथदिया जिसमें चारदिव्य घोड़े जुतेथे व सबसामग्री समेत था ३९ वप्रत्यक्ष में लक्षमणि दिये व दश सहस्र टकेभर तौलकर बड़ी २ मोतियां दीं व मूंगे सहस्रतुलाभर तौलकर दिये ४० व नानाप्रकार के जनोंसे भराहुआ विचित्रअन्नों से सम्पन्न व विविधप्रकारके मन्दिरोंसे युक्त एकदिव्य ग्रामदिया ४१ ऐसेही ब्रह्मा व अध्वर्य्यु को भी सबपदार्थ दिये जो जो आचार्य्य को दिये थे व ऋत्विजों को भी बहुत पदार्थ देकर श्रीरामचन्द्रजीने प्रणाम किया ४२ वे सब विविध प्रकारकी पूजासे पूजित होनेसे बहुतसी आशिषें देतेहुये बोले कि हे रघूत्तम श्रीरामचन्द्रजी ! चिरञ्जीव चिरञ्जीव ४३ तदनन्तर महाराजने कन्यादान भूमिदान गजदान अश्वदान तिलदान सुवर्णदान मुक्तादानकिया ४४ फिर अन्नदान जलदान दुग्धदान अभयदान सबरत्नदान सबको महात्मा श्रीरामचन्द्रजी ने दिया ४५ व सब दानाध्यक्षोंसे कहदिया कि देओदेओ फिर २ देओ किसीकेलिये नहीं न करो सब भोगसहित अन्नदेओ अन्नदेओ ४६ इसप्रकार श्रीमान् श्रीरामचन्द्र महाराजका यज्ञ दक्षिणापायेहुये द्विजवरोंसेपूर्णहुआ व सबशुभहीक्रियायें उसमेंहुईं ४७ इसके अनन्तर श्रीरामचन्द्रजी के सबसे छोटेभ्राता शत्रुघ्नजी ने जाकर अपनी माता सुमित्राजी के प्रणामकिया व कहा कि आप

आज्ञा दें हे शोभने ! हम घोड़ेकी रक्षा करनेको जाते हैं ४८ तुम्हारी कृपासे बैरियों के कुलको जीतकर शोभासहित महाराजों के संग यज्ञ का घोड़ा लियेहुये आवेंगे ४९ यह सुनकर माता बोली कि हे महावीर पुत्र ! जाओ तुम्हारे मार्ग्ग कल्याणदायक हों सब रिपुगणोंको जीतकर फिर आओ हे सन्मतिवाले ! ५० व अपने भाई के पुत्र पुष्कल धर्म्मवित्तम की पालना करते रहना क्योंकि यद्यपि ये महाबली हैं पर अभी बालक होनेके कारण लीला करने में युक्त रहते हैं ५१ हे पुत्र ! जब तुम पुष्कल सहित आनन्द पूर्व्वक लौट आओगे तब हमको प्रमोदहोगा नहींतो शोकही होगा ५२ ऐसा कहतीहुई अपनी मातासे शत्रुघ्नजी विनयपूर्व्वक बोले कि तुम्हारे युगल चरणोंके स्मरणसे पुष्कल सहितही आवेंगे अन्तर न पड़ेगा ५३ पुष्कल का पालन वैसाही करेंगे कि जैसा तुम हमारा पालन करती हो व अपने नाम के तुल्य काम करके अर्त्थात् शत्रुओं का नाश करके हर्षितहो फिर आवेंगे ५४ माता से ऐसा कहकर वीर शत्रुघ्नजी सरयूजी के तट पर यज्ञमण्डप में बैठेहुये मुनिवर्यों के संग यज्ञकर्त्ता का वेष धारण कियेहुये श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी के समीप गये ५५ व सब शोभासमन्वित मतिमान् शत्रुघ्नजी बोले कि हे महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्रजी ! अब यज्ञाश्व की रक्षा करनेके लिये आज्ञा कीजिये ५६ श्रीरघुनाथजीने भी उनका बचन सुनकर कहा कि कल्याणहो जाओ बालक स्त्री व शस्त्रास्त्ररहितको न मारना ५७ तब जानकी जी के भाई लक्ष्मीनिधि जनकजी के पुत्र हँसकर कुछ नेत्र नचाते हुये श्री रामचन्द्रजी से बोले कि ५८ हे महाबाहु सर्व्व धर्म्मपरायण श्रीरामचन्द्र जी ! शत्रुघ्न को ऐसी शिक्षा दीजिये जिस से पूर्व्वजों के समान विलक्षण कर्म्म करें ५९ क्योंकि जो अपने कुलके उचित कर्म्म करता है व अपने ज्येष्ठभाई के किये हुये कर्म्म करता है वह तेज बलयुक्त परमधाम को जाता है ६० हे महाराज ! तुमने कहा कि ब्राह्मणका अपमान न करना परन्तु तुम्हारे पिता जीने पिताकी भक्ति करने में परायण विप्रको मारडाला था ६१ सो तुमनेभी यहलोकनिन्दित महाकर्म्म सुनाहीहोगा व

उसी के अनुसार तुमने भी सुनियत होकर अवध्य स्त्री वधकिया ६२ फिर इनके बड़े भाई तुमने जो पराक्रम किया है हे महाराज! वह पराक्रम तो पूर्व्व कालमें किसी ने भी न किया होगा कि उसबे-चारी राक्षसी शूर्प्पणखा की नासिका व कान काट डाले ६३ इससे तुम्हारी शिक्षासे राजाशत्रुघ्नजी भी ऐसाही कर्म्म करेंगे जो ये ऐसा न करेंगे तो इनके कुलके अनुचित कर्म होगा ६४ ऐसा कहते हुये लक्ष्मीनिधि जीसे सर्व्व वाक्यविशारद श्रीरामचन्द्रजी हँसतेही से मेघनाद से भी गम्भीरबाणी से बोले कि ६५ तुमलोग तो योगी लोगहो इससे शान्तचित्त रहतेहो व दुःख सुखको समान समझते हो व अपार संसार के निस्तार आदि के उपाय जानतेहो ६६ व जो लोग शूर वीरहोते हैं वे बड़े २ धन्वाबाण धारणकरतेहैं व सब शस्त्रास्त्रधारण करने में कोविदहोते हैं वे लोग युद्धकी वार्त्ता जान-ते हैं आपसरीखे लोग युद्ध व वीरताको नहीं जानतेहैं ६७ तुम राजनीति नहीं जानते कि जो लोग परोपतापीहों व जो कुमार्गमें चलतेहों सर्व्वलोक हितकारी राजाओं को चाहिये कि उनको मार-डालें ६८ ऐसा श्रीरामचन्द्रजीका वचन सुनकर सब सभासदलोग हँसनेलगे व वसिष्ठजीने पूजित व सुशोभित उस घोड़े को छोड़ा ६९ कुम्भसे उत्पन्न वसिष्ठजीने यह मन्त्रपढ़कर अपने करकमल से स्पर्श करतेहुये उसबाजीको जयकी इच्छासे छोड़ा ७० हे अश्व! लीला पूर्वक सबभूतल में घूमो व जिससे कि यज्ञ के अर्थ छोड़ेगये हो इससे शीघ्रही फिर लौटआओ ७१ जब इस प्रकार अश्व छो-ड़ागया तो सबशास्त्रों में पण्डित महाभटों से युक्त वायुवेग सम-न्वित वह बाजी प्रथमपूर्वदिशाको गया ७२ जब उसके संग बड़ी धूमधामी सब सेना चली तो पृथ्वी कांपने लगी व शेष जीने भी कुछ झुके हुये फनसे पृथ्वीतलको धारणकिया ७३ सब दिशायें प्रसन्न होगईं जिनसे भूतलकी बड़ीभारी शोभाहुई व पवन धीरे २ शत्रुघ्नजी के पीछे २ बहने लगे ७४ व यात्राके समय शत्रुघ्नजीकी दक्षिण भुजा फरकने लगी जोकि विजयको बताती थी ७५ चलने के समय पुष्कल जी अपने गृहमें पैठे जोकि नाना रत्नों से व धनों

से भरापुरा था व सुवर्ण रत्नोंसेही बेदी बनने के कारण अति शोभित था ७६ वहां पातिव्रत में परायण अपनी भार्य्याको उन्होंने देखा जोकि पतिके दर्शनकी अभिलाषा कियेहुये थी इससे कुछ हर्षित हुई ७७ ॥ चौपैया ॥

बदनाब्ज सुहावन पतिमनभावन सों ताम्बूल कपूरी ।
चर्व्वत बर नारी अति सुकुमारी क्षण क्षण पर अति भूरी ॥
नासा महँ मोती होत उदोती करकङ्कण अति रूरे ।
बाहुन महँ अङ्गद देखत मुदप्रद स्वपति मनोरथ पूरे ॥ १ । ७८
कुचवर्त्तुल पीने बिल्व नवीने सम धारण किय सोहै ।
वर वृहत नितम्बिनि शोभालम्बिनि देखतही मनमोहै ॥
कदली सम चरणा भूषाभरणा युत अनुहरत न काऊ ।
इमिनारिपुर्न ताशुभगुणगीतालख्योस्वपतिचितचाऊ ॥ २ । ७९
गद्गदस्वर भाषी अति अभिलाषी प्रिया पाय करिप्रीती ।
परिरम्भण कीना अति मुददीना जसमिलने की रीती ॥
तदुरोज उतंगा मिलि निजअंगा मोद बढ़्यो अधिकाई ।
पुष्कल वरवीरा अति मनधीरा बोल्यहु तासों जाई ॥ ३ । ८०
सुनु प्राणपियारी मम हितकारी हम शत्रुघ्न सहाया ।
करवे कहँ जाते अति हरषाते लहि निदेश रघुराया ॥
मखहयकी रक्षा महँ अति दक्षा हौं यासों सँग जाऊँ ।
चढ़ि कै रथ ऊपर भूषित भूपर जासों सबसुख पाऊँ ॥ ४ । ८१
तुम मम सब माता युत गुण भ्राता पूज्यहु सहित बिधाना ।
करि पद संवाहन सहित उछाहन सकल भांति करि माना ॥
तिनकर नित जूंठन अन्नस्वमूठन भरि भोजन करु प्यारी ।
सिगरे तिनकर्म्मा करबसुधर्म्मा निजमनमाहिं बिचारी ॥ ५ । ८२
निज निज तप शोभित भाव अक्षोभित लोपामुद्रा आदी ।
पति भक्ति परायन शुभगुण भायन त्याजित काममदादी ॥
तिनकर अपमाना निजमनमाना कबहुं न किह्यहु पियारी ।
जासों वे पावन नारि कहावन नितपूजाअधिकारी ॥ ६ । ८३

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेहयमोचनोनामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

दोहा ॥ बरहें महँ कह सैन्ययुत मखहय रक्षक लोग ॥
जिमि कामाक्षा दर्श किय सुमदकथा तपयोग ॥ १ ॥

शेषनाग वात्स्यायन मुनिसे बोले कि ऐसाकहतेहुये अपने पति को देखकर प्रेमसे भरी हुई कुछ हँसतीहीसी कुछगद्गदबाणी से बोली कि १ हे नाथ! रणमण्डल में तुम्हारी विजयहो शत्रुघ्न जी की आज्ञा सदा करनी चाहिये जिससे कि अश्वकी रक्षा हो २ व अपने चरणारविन्द की अनुगामिनी इस सेवकीका स्मरण सर्व्वत्र बना रहै जिससे हे नाथ! तुमसे अन्यत्र कभी मन न जावै ३ परन्तु हे कान्त! संग्राम करने के समय कभी मेरास्मरण तुमको न करना चाहिये क्योंकि जो युद्धके समय में मुझमें तुम्हारामन लगा तो विजय होने में संशय होगी ४ हे कमलनयन! अपनी माता ऊर्म्मिला जी को व मुझको वैसीकराना जिसमें मुझको देखकर ताड़ी देकर हास्य हमारी घोरानी ज्यठानियां न करें कि ५ यहपत्नी महा कातर संग्राम में से भागने वाले की है जो ऐसे कातर लोग युद्ध करनेलगें तो शूरों को समय कहां से मिलैगा ६ ऐसाकहकर मेरे देवरों की स्त्रियां न हँसने पावें हे महाबाहो! रामचन्द्र जी के अश्व की रक्षा करने में वैसाही कार्य्य करनाचाहिये जिसमें प्रशंसाहो ७ सदातुम योद्धा सबकेआगे रहना अन्यलोग सबतुम्हारे पीछेहीरहें व अपने धन्वाके टंकारसे शत्रुओं की सेनावालों को बहिरे करते रहना ८ व तुम्हारे करकमलमें चमचमातेहुये खड्गके भयसे शत्रुओंकीसेना परस्परमें जिसमें व्याकुलहोवे ९ व शत्रुओंको जीतते हुये तुमको इस अपने कुलको भूषित करनाचाहिये हेमहाबाहो! हे स्वामिन्! जाओतुम्हाराकल्याणहो १० बड़ीप्रत्यञ्चासे विभूषित यह दिव्य धन्वा ग्रहणकरो जिसका शब्दसुनकर बैरियोंका समूह भयातुरहो जाताहै ११ व हे वीरेश! ये दो तरकसधारणकरो जिसमें अच्छाफल व कल्याणहो जिनमें कि बैरियोंके कुलोंको छिन्न भिन्न व चूर्ण करनेके योग्य कोटिबाणभरेहैं १२ व अपने सुन्दर शरीरमें इस कवचको पहिनो जिसमें लगे बज्रोंकीप्रभासे सब अन्धकार हत

होजाताहै १३ हे कान्त! अपनेशिरका सुन्दर भूषण इसलोहकी कुण्डी से बनाओ व मणिरत्न विभूषित इनदोनों शिरोभूषणों का काम वहां नहींहै १४ ऐसी विमल बाणी कहतीहुई बीरकन्या को नयनकमल दृष्टिसे अपनी पत्नीको देखतेहुये अतिहर्षित रणकरनेमें समर्थ शत्रुओंके जीतनेवाले अधिवीर पुष्कलजी उससे बोले कि १५ हे प्रिये! जैसा तुम कहतीहो हम सब वैसाहीकरेंगे तुम बीर पत्नीहोओ व तुम्हारी कीर्तिहो व कान्ति हमको अति ईप्सितहो १६ इतना कहकर कान्तिमती नाम अपनी पत्नी के दियेहुये मुकुट श्रेष्ठ कवच धन्वा व बाण सब कुछ महावीर्य्यवान् पुष्कलजी ने ग्रहणकिया १७ व सबको पहिनकर बड़ी शोभासे समन्वितहुये सबशस्त्रास्त्रके चलाने व धारण करनेमें परमचतुरहोने के कारण अत्यन्त शोभितहुये १८ अस्त्र शस्त्रोंकी शोभासे युक्त बीरमालासेविभूषित कुसुम अगुरु कस्तूरी चन्दनादि देहमें लगायेहुये १९ नानाप्रकारके पुष्पों की मालाओंसे गलेसे जानुपर्य्यन्त शोभित अपने पतिकी आरती कान्तिमती ने बार २ की २० बार २ आरती उतारकर बहुतसी मोतियां बिथरातीहुई चलायमान नेत्रोंसे आँशु बहातीहुई वह अपने पतिकोभेंटी २१ पुष्कलने भी अच्छेप्रकार उसबीरपत्नीको छपटाकर बहुत समझाया कि हे कान्तिमति! हमारा विरह न करना २२ हे पतिव्रते! व हे सुन्दरि! हमतेरेभाग्यसे बहुत शीघ्र फिरेंगे अब जाते हैं ऐसा अपनी पत्नी कान्तिमतीसे कहकर श्रेष्ठरथपरचढ़े २३ जातेहुये अपने पतिको ऊपरको उठायेहुये नेत्रों से पातिव्रत में परायण कान्तिमती बड़े प्रेमसे देखनेलगी २४ व पुष्कल वहांसे अपने पिता व प्रेम से विह्वल अपनीमाताके दर्शन करनेको चले व जाकर पिता माताके शिरसेप्रणामकिया २५ व माताने पुत्रको छातीसे लगाकर गोदी में बैठालिया व आँशुगिरातीहुई तुम्हारा कल्याणहो ऐसाकहतीहुई बोली २६ व फिर उनकेपिता भरतजीसे बोली कि रामचन्द्रजी महाराज बड़े यज्ञकरने वालेहैं इससे लक्ष्मण व तुम उनकी पालना करते रहना क्योंकि शत्रुघ्न व ये राजकुमार यज्ञ हयकी रक्षाकरनेको जाते हैं २७ ऐसा कहकर माताने व पिताने भी जानेकी आज्ञादी तब वे महावीरों

से विभूषित शत्रुघ्नजीके कटकको गये २८ तब रथोंपर चढ़ेहुये शूर वीरोंसे व पैदरोंसे घोड़ों के ऊपर चढ़ने वालोंसे हाथियों पर चढ़ने वालोंसे युक्त महाराज शत्रुघ्नजी सब दल बादल सेनासमेत महायज्ञक अश्वके आगेचले २९ चलते २ पाञ्चाल देशों को देखतेहुये कुरुदेश व उत्तर कुरुदेशोंको देखा फिर दशार्ण देशोंको फिर विशालादि पर्वतीय देशों को देखतेहुये सब शोभासे समन्वित चले ३० उनसबदेशोंमें रावणके मारनेका भक्तरक्षाविधायक श्रीरामचन्द्रजी का विमलयश सुनते थे ३१ फिर यह कि देखो प्रथम तो रावणको मारकर भक्तों की रक्षाकी अब अश्वमेध आदि पावन कार्य्य करके भुवनमें यश फैलातेहुये श्रीरामचन्द्रजी लोगोंको अभयकरतेहैं३२ ऐसा कहतेहुये लोगोंको प्रसन्नहोकर शत्रुघ्नजी हार विविधप्रकार के रत्न महाधन व नानाप्रकारके वस्त्रदेतेथे ३३ सब विद्याओं में विशारद बड़े तेजस्वी सुमतिनाम श्री रघुनाथजी के एक सचिव थे इससे शत्रुघ्नजीके अतिश्रेष्ठ अनुचरथे ३४ उनके संग धीर शत्रुघ्नजी नाना देशों व ग्राम नगरों में गये परन्तु श्री रघुनाथ जी के प्रतापसे किसीने घोड़ेको नहींहरा ३५ हाथी घोड़े रथ पैदर चतुरङ्ग समन्वित महा सैन्य व बलसे विभूषित जो बहुत से खण्ड मण्डलेश्वर देशाधिपति लोग थे ३६ वे लोग मुक्ता माणिक्यादि समेत बहुतसी सम्पदा लेकर अश्वकी रक्षा करनेके लिये आयेहुये शत्रुघ्नजीको देकर बार २ प्रणाम करते थे ३७ व कहते थे कि हे रघूत्तम यह पुत्र पौत्र धनादिसहित सबराज्य व सब पशु बान्धवादि जो कुछ विभूतिहै वह सब श्रीरामचन्द्रजीकीहै हमारा कुछभी नहीं है ३८ उनलोगोंके ऐसेवचन सुनकर परवीरों के नाशक शत्रुघ्नजी अपनी आज्ञा उनलोगों को जनाकर व उनको भी संगले मार्गपर चलदेते थे ३९ हे ब्रह्मन्! इसप्रकार क्रमसे जाते २ घोड़ेसमेत शत्रुघ्नजी नानादेशों से युक्त अहिच्छत्रानाम पुरीमें पहुंचे ४० जोकि ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंसे आकीर्ण नानारत्नों से विभूषित व सुवर्ण और स्फटिक मणियोंसे बनेहुये धवरहर अट्टालिकादिकों से अलंकृतथी ४१ जहां सब धवरहरोंके ऊपर चढ़ीहुई रम्भादि अप्सराओं

के तिरस्कार करनेवाली कमलनयनी स्त्रियां लीलापूर्वक स्थित दिखाई देती थीं ४२ व जहां अपने आचारोंसे ललित सबभोगों के मुख्यभोगी कुबेरजी के अनुचरोंकीही सी लीलासे युक्त दिखाई देते ४३ व जहां धन्वा हाथों में लिये शरसन्धानकरने में बड़ेचतुर वीरलोग उसपुरी के सुमद्नाम राजाको अति हर्षितकरतेथे ४४ ऐसीपुरीको शत्रुओंके नाशक शत्रुघ्नजी ने दूरहीसेदेखा व उसपुरी के समीप शोभायुक्त एक उद्यान देखा ४५ जोकि पुन्नाग नाग चम्पा तिलक देवदारु अशोक पाडरडांड़ रसीले आम्र मन्दार कोविदार ४६ साधारण आम्र जामुन कदम्ब चिरोंजी कटहल शाल ताल तमाल मल्लिका जाहीजूही जायफल ४७ बड़ेकदम्ब छोटेकदम्ब बाकुल कठचम्पा मयनफरआदि वृक्षोंसे सुशोभितथा शत्रुओंके नाशक शत्रुघ्नजी ने उसे देखा ४८ व तमाल तालादिकों से शोभित उस उपवन में वहघोड़ा चलागया और उसके पीछे धनुर्द्धरों से सेवित चरणपीठ वीर शत्रुघ्नजी भी चलेगये ४९ वहां इन्द्रनीलमणि वैदूर्य्यमणि व मारकतमणियों से बनाहुआ एक देवमन्दिर देखा ५० जोकि अति शोभितहोनेके कारण देवताओं की सेवाके योग्य कैलास स्थलीकेही तुल्य था व सुवर्ण केही खम्भों से शोभित था इससे मन्दिरोंमें श्रेष्ठथा अतिमोहितकराताथा ५१ श्रीरघुनाथजीके भ्राता शत्रुघ्नजी उस श्रेष्ठ देवालयको देखकर बोलनेवालों में श्रेष्ठ अपने मन्त्री सुमतिसेबोले व पूछा कि ५२ हे अमात्यवर ! बताओ कि यह क्याहै व किसदेवताका मन्दिरहै व किसदेवताकी पूजा इसमें होती है व हे पापरहित ! यह किसके हेतु स्थित है ५३ ऐसासुनकर सर्व्वज्ञ मन्त्रवेत्ता सुमति मन्त्री बोले कि हे वीर ! सब एकाग्रमनहोकर सुनो हम यथावत् सबकहते हैं ५४ विश्वका कल्याणदेनेवाला कामाक्षाजीका यह मन्दिरजानिये जिसके दर्शनमात्रसे सब सिद्धि उत्पन्न होतीहै ५५ जिसकी स्तुति करके व जिसके नमस्कार करके देवताओं व असुरों ने सम्पूर्णशोभा राज्यलक्ष्मी पाई है यह देवी धर्म्म काम अर्थ व मोक्षको देती व भक्तोंके ऊपर दयाकरतीहै ५६ पूर्व्वकालमें अहिच्छत्रापुरीके राजासुमद्ने इनकी पूजाकीहै याच्या

किया तब ये इस पुरीमें स्थितहुई हैं व सब शुभकरतीहैं और अपने भक्तोंका दुःख हरतीहैं ५७ हे सर्ब्बवीर शिरोमणि शत्रुघ्नजी ! इन देवीजीके तुम भी नमस्कारकरो क्योंकि इनके नमस्कार करके तुम सुरासुरोंको दुर्लभ सिद्धिपाओगे ५८ सुमतिके ऐसे वचन सुनकर शत्रुओंको सन्तप्तकरानेवाले शत्रुघ्नजीने भवानीकी सब वार्त्ता पूँछी ५९ शत्रुघ्नजी बोले कि अहिच्छत्रापुरीका राजा सुमद कौनहै व उसने कौनसा तपकिया जिससे लोगोंकी माता यह देवी सन्तुष्ट होकर यहां स्थिरहोगई ६० हे महामात्य ! नानाप्रकारके अर्त्थों से बढ़ेहुये इस सब बृत्तान्तको कहो जैसा जानतेहो व जैसी वर्णन शक्तिहो सब हमसे वर्णनकरो हे महामतिवाले ! ६१ यह सुनकर सुमति मंत्री बोले कि पूर्व्वदिशामें एकहेमकूटनाम पर्व्वतहै वह सब देवताओंसे शोभित रहताहै वहां ऋषि वृन्दों से सेवित एक विमल तीर्थहै ६२ वहां जाकर शत्रुओंसे माता पिता व प्रजाओंके मारजाने पर राजासुमद अपने मन्त्रियों समेत तप करने लगे ६३ जब राजा तीन वर्षतक एक पैरसेखड़े होकर व एक मनसे स्मरण करते हुये नासिकाके अग्रभागको देखतेहुये जगन्माताका ध्यान करतेरहे ६४ व फिर तीन वर्षतक वृक्षोंके सूखे पत्ते खातेरहे इस प्रकार उन्होंने परम उग्र दुश्चर तपकिया ६५ व तीन वर्षतक शीतकाल में जल के भीतर पैठकर तप करतेरहे व ग्रीष्मकाल में पञ्चाग्नि तापते रहे और वर्षाका सब जल अपने शिरपर धारण करते छायामें नहीं बैठे ६६ फिर तीनवर्षतक श्वासचढ़ाकर पवनको रोंककर अपने मनमें भवानीका स्मरण करतेरहे परन्तु उन्होंने कुछ भी न देखा ६७ इस प्रकार तप करते २ बारहबर्ष बीतगये तब इनका परमतप देख अपने मनमें विचारकरके इन्द्रजीने भयसे ईर्षाकिया ६८ परिवार सहित कामको आज्ञादी कि तुम अप्सरादिकोंके गीतोंसे ब्रह्मा इन्द्रादिकों के जीतने में भी उद्यत होजातेहो ६९ अब हे सखे ! काम जाकर हमारा प्रिय मोहन करो व ऐसा कर्म्मकरो जिसमें सुमदके तपमें विघ्नहो ७० हे रघूद्वह इसप्रकार इन्द्रका वचनसुनकर बड़ा समर्त्थ काम जोकि विश्वविजयी है बड़े अहंकारसे बोला कि ७१ काम

बोलाकि हे स्वामिन्! यह सुमद क्याहै व उसका यह थोड़ासा तप क्याहै हमतो ब्रह्मादिकोंके तपको भङ्ग करडालतेहैं तो सुमद बेचारे की कौनसी कथाहै ७२ पूर्वकालमें हमारेही बाणसे भिन्नांगहोकर चन्द्रमा अपने गुरुबृहस्पतिजीकी स्त्री ताराको प्राप्तहुये व हेभगवन्! तुम हमारेही बाणसे भिन्नहोकर अहल्याके ऊपर गिरेव विश्वामित्र उर्वशी के ऊपर ७३ इससे हे देवेन्द्र! मुझसेवककी विद्यमानता में चिन्तानकरो मैं अभी सुमदके समीप जाताहूं तुम अपने देवों का पालन करो ७४ ऐसा कहकर कामदेव भी हेमकूट पर्वतपर गया अपने संगही अपने सखा बसन्तऋतुको व सब अप्सराओंको भी लेगया ७५ वहां पहुँचतेही बसन्तने सब वृक्षोंको पुष्प फलोंसेयुक्त करदिया व सबोंपर कोकिल भ्रमरोंकी पंक्तियोंकी कूक व गुञ्जार भरदिया ७६ व अति शीतल दक्षिण दिशाका पवन चलने लगा कृतमाला नदीकेतीरपर लवंगके पुष्पोंको तोड़ २ गिरानेलगा ७७ जब इसप्रकारका सबबन होगया तो रम्भानाम श्रेष्ठ अप्सरा अपनी सखियोंको संगलिये सुमदके समीप पहुँची ७८ वहां किन्नरों के स्वरोंसे शोभित गानेका आरम्भ किया व मृदंग ढोल आदि अनेक बाजे बजानेलगी क्योंकि इसकर्म्म में तो अतीवविशारद थीही ७९ उसकागाना सुनकर व मनोहर बसन्तऋतुको देखकर और कोकिलाओंकी कूकसुनकर राजासुमद यद्यपि पण्डितभीथे तथापि उधर देखनेलगे ८० ॥

चौ० । नृपहिप्रबुद्धदेखिकुसुमायुध । कामतुरतसाज्योनिजआयुध ॥
चापहिकीन प्रनचयुत नीके । भूपपृष्ठशर हत्यो सुठीके ॥ १ । ८१
चरणपलोटनलगियकबाला । भूपतिकरगहि बाहुविशाला ॥
अपर कटाक्षकरनयकलागी । तीजीहँसतबदनअनुरागी ॥ २ । ८२
इमि अप्सरनकीनजबकामा । तब भूपतिवरभयहुसकामा ॥
चिन्ता करनलग्यो मनमाहीं । इन्द्रियजितभूषणहमआहीं ॥ ३ । ८३
इन अप्सरनकाहिं सुरराजा । ममतप विघ्नकरन के काजा ॥
पठयहु यहां करत कृतिसोई । जासों हानि तपस्या होई ॥ ४ । ८४
यहमनसमुझिभूप तिनपाहीं । बोल्यहुको तुमजानत नाहीं ॥

काह विचार तुम्हार बखानो । कहांनलतहमसोंसलमानो ॥ ५ । ८५
यह अतिअद्भुतभयहुमहाना । जो तुम यहांकरलहोंगाना ॥
जो तुम दुर्लभ तपलिनकाहीं । अहोवात्स्यायनतप मईसहाहीं ॥ ६ । ८६
इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेकामाख्यानन्नाम
द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

दो० तेरहयें महँ कहसुमद तपोभंग जिमि नाहिं ॥
रम्भादिक कृतभोमहं देवी तुष्ठजि माहिं ॥ १ ॥
वरलहिपुनिनिजराज्यकियसुमदलण्योमखवाजि ॥
पूजाकरि शत्रुघ्नकहँ निजगृह लैगो साजि ॥ २ ॥

शेषनागजी वात्स्यायनमुनि से बोले कि तपोनिधि सुमद के ऐसे वचन सुनकर कामकी सेना रम्भादि अप्सरायें बोलीं कि १ हम सब श्रेष्ठस्त्रियां तुम्हारे तपोंसे तुमको पति बनाने के लिये यहांआई हैं इससे हमलोगों के यौवन सर्व्वफल को भोगो व तपके फलको छोड़ो २ यह चम्पाके रंगकी शरीर धारण किये सुभगा घृताची नाम अप्सराहै जिसकेअङ्गोंकी सुगन्धि कपूरके भी गन्ध को गलित करती है सो तुम्हारे मुख के अमृत का पान करे ३ हे महाभाग ! सुन्दर विभ्रमसहित मनोहर अङ्गवाली व घने मोटे कठोर कुचवाली इन सब हमलोगों के संग मुनियों के समान तपकरनेके पुण्यकेप्रभावसे भोगकरो व तप करने के दुःखसमुद्र में अब न डूबो उसे त्यागो ४ व अमूल्य भूषणों से शोभित कल्पवृक्ष के पुष्पों की माला गले में धारण कियेहुई नानाप्रकार की रतियों के विचार में निपुण हमारा आलिंगन करो ५ व हमारे मुखसे निकले हुये अमृत का पानकरो व श्रेष्ठ विमान पर हमारे संग चढ़के बहुत पुण्यवान् लोगों से सेवित सुमेरुके शृङ्गपर चलकर तपका फल भोगकरो ६ व यौवन रूप से शोभित तिलोत्तमा नाम अप्सरा तुम्हारे शिरके बड़ेभारी ताप को अपने स्तन रगड़कर दूरकरे व अपने हाथों को सुन्दर चामर गङ्गाजीके प्रवाह के समान चमकते बनाकर तुम्हारे ऊपर पवनका संचार करे ७ व हे कान्त ! नानाप्रकारकी मनोहर कामकथाओं को सुनो व

देव गणादिकोंके वाञ्छित अमृत को पानकरो व नन्दनादि उद्यानों में चलकर चन्दनादिकों से लिप्त उत्तम अंगनाओंके संग विहार करो ८ उनलोगों के ऐसे वचन सुनकर महामति राजा ने विचार किया कि यह हमारे तप करनेसे उत्पन्न अन्धकार रूप विघ्न कैसे आगया हमको अब इस विषय में क्या करना चाहिये ९ इसप्रकारकी चिन्ता से आतुरहोकर अपने मनमें चिन्तनाकरके धीरमति वाले सुमद नाम वीरराजा देवताओं की स्त्रियों से बोले कि १० तुम लोग हमारे चित्त में टिकीहुई जगन्माता के रूपकी हो व जिसकी हम चिन्तनाकरते थे वह भी तुम्हारेही रूप कीथी ११ हम इसस्वर्ग सुखको तुच्छ समझते हैं क्योंकि यह कल्प के पीछे न रहेगा अब जिसकी हम भक्तिसे सेवा करते हैं वही हमारी स्वामिनी हमको वरदेवेगी १२ जिसकी कृपा से ब्रह्माजी सत्यलोक को पाकर महान्हुये व सबही भक्तों के दुःखों के अन्त करनेवाली हमको सब कुछ देवेगी १३ नन्दन बन क्या है व सुवर्ण से भूषित सुमेरुपर्व्वत क्या है व थोड़े पुण्य से प्राप्तहोने के योग्य दानवों को दुःख देनेवाला अमृत क्याहै १४ ऐसावाक्यराजा का सुनकर काम ने विविधप्रकार के बाणों से राजा को मारा परन्तु नरपति का कुछ भी न करसका १५ और कटाक्षों से नूपुरादिकों की खनखनाहटों से दौड़ २ कर छपट लपट जाने से टेढ़ी दृष्टियों के पातों से सब अप्सरायें राजाका कुछ भी न करसकीं १६ जैसे आईं वैसेही अपनासा मुहँलगाये चलीगईं व जाकर इन्द्र से कह दिया कि वह राजा बड़ाधीर मतिवाला है सो सुनकर इन्द्र बहुत भयभीत हुये व अपने बचने का उपाय खोजने लगे १७ व अम्बिकाजी ने अपने चरणकमल में राजाको निश्चित देखकर अति सन्तुष्टहो महाराज सुमद को प्रत्यक्ष में दर्शन दिया क्योंकि उसको बुद्धिमान् परम जितेन्द्रिय समझा १८ इसलिये सिंहकी पीठपर सवार पाश व अंकुश धारण किये धन्वा बाण हाथों में लिये जगत् के पवित्र करने वालों को पावन करने वाली भगवती आगे आन खड़ी हुई १९ धन्वाबाण अंकुश पाश धारणकिये कोटि सूर्य्य समान प्रकाशित उस माताको देखकर धीमान् राजा बहुत हर्षितहुआ २० व अप-

नी देहमें करकमलसे स्पर्श करतीहुई व बार २ हँसती हुई भक्ति से प्रतिष्ठाकीगई माताको बहुत नमस्कारकरके २१ भक्तिसे उत्कलित चित्तवृत्तिवाले उस राजा महामतिने उसको सन्तुष्टकिया व उत्तमकण्ठको शोभितकर गद्गद्स्वरसेराजा स्तुतिकरनेलगा २२ ॥

चौ० । जयजय देविभक्तजनशोभित । परमउदारउच्चारअक्षोभित ॥ ब्रह्मरुद्र मुख देव तुम्हारे । चरण कमल सेवत भयहारे १ । २३
जगचरअचर जननि निजअंशा । जानहु नहिं कछुकरतप्रशंसा ॥ तुमबिन नहिं कछुहूँ संसारा । मात नमत हम चरणउदारा २ । २४
तुम आधार शक्ति ह्वै धरणी । धरत टरत नहिं कहुँ सब भरणी ॥ पर्व्वतबनसरसरितितड़ागा । सोहितसदायुनतवअनुरागा ३ । २५
निज खर करसों तपत तमोरी लहि तव कृपा शक्ति नहिंचोरी ॥ बसुधारसकर्षत बसु मासा । पुनिछोड़तजलकरितवत्रासा ४ । २६
अनल लोक अभ्यन्तर बाहर । थिर ह्वै सब शुभ करत भव्यकर ॥ तव प्रताप सों देविउदारे । इमि सो करत नमोनम सारे ५ । २७
तुम विद्या महमाया हरिकी । सर्व्व लोक पालत जो परि की ॥ अरुनिजशक्तिदेविजगपालतासृजतबहुरित्यहितुमपुनिघालत६।२८
तुम सों पाय सकल सुरवृन्दा । सिद्धि करत सुखगत लब निन्दा ॥ कृपानाथ पालहु अब मोहीं । भक्त वत्सले विनवत तोहीं ७ । २९
तव पद शरणागत मैं माता । रक्षा करहु हरहु दुख व्राता ॥ करुममबाञ्छितसिद्धिभवानी । महापुरुषपूर्व्वजसुखखानी ८ । ३०

सुमति मंत्री शत्रुघ्नजीसे बोले कि ऐसी स्तुतिको सुनकर संतुष्ट हो जगन्माता तप करने से दुर्ब्बलदेह राजा सुमदसे बोली कि जो चाहो बर मांगो ३१ यह बचन सुनकर राजा सुमद ने अतिहर्षित होकर दुर्ज्जन शत्रुरहित अपना हरगया हुआ राज्य मांगा ३२ व महेशीके युगल चरणों में अचल भक्तिमांगी व अन्तकाल में संसार सागर तारनेवाली मुक्ति मांगी ३३ तबकामाक्षादेवी बोली कि हे सुमद ! सर्व्वत्र शत्रुरहित राज्य पाओ व बहुतसी स्त्रियां तुम्हारे चरणोंकी पूजाकरें ३४ हे सुमद ! बैरियों से तुम्हारी पराजय कभी न हो जब रावणको मारकर महायशस्वी श्रीरामचन्द्र जी ३५

उस पापके मिटाने के लिये सब संभारों से शोभित अश्वमेधयज्ञ करेंगे तब उनकेभ्राता महावीरशत्रुओंके मारनेवाले शत्रुघ्नजी ३६ उस यज्ञके घोड़ेकी पालना करतेहुये अपने वीरादिकों समेत यहां आवेंगे तबउनको तुम सब राज्य कोशसमृद्धि समर्पण करके ३७ फिर धन्वाबाणधारी अपने योधाओंसे इस पृथ्वी का पालन कराओगे व सब महीमण्डलमें शत्रुघ्नके साथ भ्रमण करोगे ३८ फिर अयोध्या में जाकर ब्रह्मा इन्द्र रुद्रादि देवताओंसे सेवित श्री रामचन्द्रजीके प्रणामकरके यम नियम साधनकरनेवाले योगियोंको भी दुर्लभ मुक्तिको पाओगे३९ व तबतक हम भी इस तुम्हारेस्थान पर निवास करेंगी जबतक कि वह यज्ञकाअश्व यहां न आवेगा पीछे तुम्हारा उद्धारकराके हमभी परमपदको चलीजायँगी४०ऐसा कहकर सुरासुरोंके नमस्कार करनेके योग्य देवी अन्तर्द्धान होगई व राजा सुमदभी शत्रुओंको मारकर अपनी अहिच्छत्रापुरीमें राजा होगया ४१ सो बल बाहनसंयुत यह राजा समर्थ भीहै परन्तु महामाया ने इसे अच्छेप्रकार सिखादियाहै इससे यहतुम्हारे घोड़े को न पकड़ेगा ४२ अपनीपुरीके समीप अश्वमेध यज्ञके उत्तम तुरंग को आयेहुये सुनकर सब महीपालोंसे सेवितचरण महामतिवाले तुमको ४३ सुमद नाम राजा सब अपना राज्यकोश देडालेगा हेसर्वज्ञ रामचन्द्रजीके प्रतापसे अभी यहसब होताहै ४४ शेषनागबोले कि यहसुमद का वृत्तान्त सुनकर महायशस्वी मतिमान् व बली शत्रुघ्नजी साधु साधु ऐसा कहतेहुये हर्षितहुये ४५ व अहिच्छत्रापुरीका राजा अपने सब गणोंके साथ सभामें सुखपूर्व्वक बैठाथा व उसकी सेवा बहुतसे राजालोग कररहेथे ४६ व शोभायुक्त उस सुमद राजाकी उपासना वेदवादी ब्राह्मणलोग व धनवान् वैश्यलोग अपने धनके बढ़ानेकेलिये कररहे थे ४७ व सबलोगोंके रक्षक उस राजाको नैयायिक पण्डितलोग नानाप्रकारकी विद्याओंके विनोद से आनन्दितकरते व आशीर्व्वाद देतेथे ४८ इसीसमयमें किसीने आकर राजासे कहा कि हे महाराज ! नहींजानते किसका एकघोड़ा मस्तकमें एकपत्र बँधायेहुआ आया है ४९ यहसुनकर राजाने एक

उत्तम सेवकसे कहा कि शीघ्र जाकर देखो तो किसराजा का घोड़ा हमारे पुरके समीप आया है ५० राजा की आज्ञा से वह सेवक शत्रुघ्नजी के समाज में आकर सब वृत्तान्त जानकर गया व महाराजाओं से सेवित राजा से उसने सब कहा ५१ तब श्रीरघुनाथजी के अश्व का आगमन जानकर कि जिसका स्मरण बहुत दिनों से राजा कररहा था इससे राजाने अपने सबजनोंको आज्ञादी कि ५२ हमारे सबलोग धनधान्यसमृद्धि समेत होकर तोरणादिकों से अपने २ गृह अच्छेप्रकार साजें ५३ व रम्य भूषणों से भूषित सहस्रों कन्या हाथियों पर चढ़कर शत्रुघ्न जी के सम्मुख जावें ५४ इत्यादि सबों से कहकर आपभी राजा अपने पुत्र पौत्रादिकों को सङ्ग ले व सब रानियों को भी साथ लेकर कटक को गया ५५ व शत्रुघ्न जी ने भी अपने मन्त्रिवर्गों समेत व पुष्कलादि वीरों सहित सुमद राजा को देखा ५६ जो कि हाथियों घोड़ों व शत्रुओं को तापितकरनेवाले सिपाहियों से व घोड़ों पर चढ़ेहुये भूषित वीरोंसे शोभित होरहा था ५७ तबतक आकर महाराज शत्रुघ्नजी के राजा ने प्रणाम किया व कहा कि मैं धन्य हूं कृत्यकृत्यहूं व मेरा शरीर आज सत्कारयुक्त हुआ ५८ हे महाराज ! यह शोभित राज्य आप ग्रहण करें जो कि महामाणिक्य मुक्ता धन धान्यादिकों से अच्छे प्रकार भराहुआ है ५९ हे स्वामिन् ! मैं बहुत दिनों से आप के अश्व के आगमन की प्रतीक्षा कररहा था कामाक्षाजीने जो पूर्व्वकालमें कहा था वह सत्यहुआ ६० पुरी को चलकर देखिये व हमारे परिवारको कृतार्थ कीजिये व हे रामानुज महाराज ! हमारे सब कुलकापालन कीजिये ६१ यह कहकर चन्द्रमा के समान श्वेतगजपर पुष्कलको चढ़ाया व आप भी उसीपर आरूढ़ हुये ६२ व नगारे ढोल तुरुही वीणा बेनादि बाजे बाजे ये सब महाराज सुमद की ओर से बजवायेगये ६३ जब शत्रुघ्नजी इसप्रकार अपने समाजसमेत चले तो हाथियों पर चढ़ीहुई कन्याओं ने इन्द्रादि देवताओंसे सेवित महाराज शत्रुघ्नजी के ऊपर लावा मिश्रित मोतियों की वर्षा की ६४ धीरे २ जातेहुये व पुरवासियोंके धनादिककी भेंट लेतेहुये शत्रुघ्नजी

तोरणादि से भूषित राजमन्दिर में पहुँचे ६५. हय रत्नसे संयुक्त अपने बीरों से व राजा के बीरों से व राजा से घिरेहुये महाराजशत्रुघ्नजी बनाय मन्दिर के भीतर पहुँचे ६६ तब राजा सुमद ने अर्घ्यादिकों से शत्रुघ्नजी की पूजाकर अपना सब राज्य कोश बल बाहन श्रीरामचन्द्रजी को समर्प्पण करदिया ६७॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

दो० चौदहयेंमहँ कह च्यवन चरिततदाश्रम गाथ ॥
जिमिशर्य्यातिसुतादियो त्यहितबभयोसनाथ १

शेषनागजी वात्स्यायानमुनि से बोले कि स्वागत प्रश्न पूंछकर व शत्रुघ्नजी को सन्तुष्ट जानकर फिर राजा सुमद शत्रुघ्नजी से श्री रघुनाथजीके श्रेष्ठवृत्तान्त सुनने की इच्छा से बोला कि १ भक्तोंकी रक्षा करने के लिये अवतार धारणकिये व हमारे ऊपर अनुग्रहकरनेवाले सर्व्वलोकशिरोमणि श्रीरामचन्द्रजी सुखपूर्व्वक तो हैं न२ इस अयोध्यापुरीके लोग ये सब धन्यहैं जो कि श्रीरघुनाथजी का मुखारविन्द बार २ हर्षितहोकर अपने नेत्रपुटकों से पानकरतेहैं ३ हे महामति ! पुरुषश्रेष्ठ आज हमारे जन्मको व कुल व भूमि आदि सब वस्तुओंको कृतार्थकरो ४ दयासे आर्द्रहृदय कामाक्षाने हमारे ऊपर पूर्व्वकाल में बड़ा प्रसाद किया जिससे कि हम सकुटुम्ब श्री रघुनाथजी का मुखारविन्द देखेंगे ५ पार्थिवों में उत्तम व बीरसुमद के ऐसाकहनेपर श्रीरघुनाथजी के गुणों का सब उदय कहा ६ व तीनरात्रि वहां निवास करके महामति शत्रुघ्नजी ने उस सुमदराजा के साथ आगे को चलने का बिचारकिया ७ यहजानकर अपनेपुत्र को शीघ्रही राज्यपर नियतकरके सुमदमहाराज शत्रुघ्नजी व पुष्कल जी से अनुमोदित होकर ८ बहुत से वस्त्र व विविधप्रकार के रत्न व नानाप्रकारकेधन महामतिवाले उसने शत्रुघ्नजीके सेवकोंको दिया९ व फिर बड़े २ चतुर मन्त्रियों व अच्छे घोड़े हाथी कोटिन रथ व पैदरोंकेसाथ शत्रुघ्नजीके सङ्ग चलनेका प्रारम्भ किया १० व उस धनुर्द्धर सुमदसहित शत्रुघ्नजी श्रीरघुनाथजी के प्रताप को धारण

कियेहुये हँसते हँसाते सुमदकेसंग २ मार्गमेंचले ११ पयोष्णीनदी के तीरपरहोकर वह घोड़ा चला व घोड़ेकी रक्षाकरनेवाले भी सब योद्धा लोग पीछे २ चले १२ मार्गमें सुन्दर तपकरनेवाले बड़े २ ऋषियोंके बड़े विविध प्रकारके आश्रम देखतेहुये व उनपर श्री राघवेन्द्रजीके गुणोंके प्रकाश सुनतेजातेथे १३ कि ये धीमान् श्री रामचन्द्रजी साक्षात् सनातन महाविष्णुहैं व यहां श्रेष्ठ घोड़ोंपर चढ़ेहुये श्रीहरिके भक्त वानरोंसे रक्षितहुये १४ मुनियोंकेऐसे शुभ बचन सबओर सुनतेहुये शत्रुघ्नजी भक्तियुक्त चित्तवृत्तिवाले उन मुनियोंके ऊपर बहुत सन्तुष्टहोतेजातेथे १५ जाते २ उन्होंने महर्षि जनोंसे समाकुल वेदध्वनिसे सुनतेहुये मनुष्यों के अमंगल नाशने वाला व शुद्ध एक आश्रम देखा १६ जोकि अग्निहोत्रकी हविके धूमसे आकाशको पवित्रकररहाथा व मुनिश्रेष्ठों के कियेहुये अनेक यज्ञस्तंभोंसे शोभितहोरहाथा १७ जहां कि पालनकरनेके योग्यगाय व सिंह एकहीस्थानपर आनन्दपूर्वक पालितथे व विडालोंके भयसे मूसा अपने रहनेकाबिल नहीं खोदते यानी निर्भयरहते हैं १८मयूरों व नकुलोंकेसाथ बड़े २ सर्प घूमते क्रीड़ाकरतेथे व हाथी और सिंह नित्य एकहीस्थानपर मित्रताको प्राप्तहोकर निवास करतेथे १९ मृगा वहां के तृण व तिनी पसाढ़ीआदिके खानेमें आदर करते व आपसमें नहीं डरतेथे क्योंकि मुनियोंने अपने तपके प्रभावसे मृत्युसे उनकी रक्षाकर रक्खीथी इसीसे किसीका बैरी किसीको मार नहीं सक्ताथा २० वहांकी सबगायें घड़ोंकेसमान बड़े२ आयनकियेथीं व सब वशिष्ठजीकी धेनु नन्दिनीकेही समान शरीरमेंथी व अपने चरणों से उठाईहुई धूलिसे इलायचीके फलोंको भी पवित्र व सुगन्धित करतीथीं २१ व यज्ञक-रनेकेलिये इन्धन हाथोंमें लियेहुये मुनियोंके यज्ञ क्रियाओंके करने के योग्य उसआश्रमको देखकर शत्रुघ्नजीने श्रीरामचन्द्रजीके मन्त्री सर्व्वज्ञ सुमतिसेपूंछा २२ शत्रुघ्नजीबोले कि हे सुमतिजी ! निर्वै रजन्तुओंसे सेवित व मुनिवृन्दों से भराहुआ यह किसमुनिका सुन्दर स्थानहै जो आगे शोभित होरहा है २३ हम मुनियों की बिविध प्रकारकीवार्त्ता सुनाचाहते हैं व उनके बिबिध वार्त्ताओंके वर्णन करने

से अपने शरीरको पवित्रकियाचाहते हैं २४ महात्मा शत्रुघ्नजी के ऐसे बचन सुनकर श्रीरघुनाथजीके मन्त्री सुमति कहनेलगे २५ सुमतिजीबोले कि निर्वैर जन्तुओंसे भराहुआ मुनियोंकी स्त्रियोंसे घेराहुआ व महातपस्वियोंसे शोभित यह च्यवनमुनिका आश्रमहै २६ जिन्होंने इन्द्रका मानभङ्गकरके देवताओंके वैद्य अश्विनीकुमार को राजा शर्य्यातिके महायज्ञमें भागलगवादिया २७ सो तपोबल युक्त वेदमूर्त्तिधारी महामुनिके इस प्रभावको आजतक कोई भी न रोंकसका कि उन दोनों वैद्यराजोंका भाग यज्ञ से फिर उठादे २८ महात्माच्यवनजीकी वार्त्ताको सुनकर शत्रुघ्नजीने इन्द्रमानादि भञ्जन सब सुमतिसे पूंछा कि २९ इन मुनिने कब देवताओं की पङ्क्तियों मेंअश्विनीकुमारनाम दोनों देववैद्योंका भागलगादिया व राजाशर्य्यातिजी के महायज्ञमें इन्द्रने क्या कियाथा ३० सुमतिनाम मन्त्रीबोले कि विख्यात भृगुकेवंश में भृगुनाम महामुनिहुये वे एककिसीसमय सन्ध्याकालमें समिधालानेको अपनेस्थानपरसे चलेगये ३१ तब यज्ञ नाशकरनेके लिये बलवान् दमन नाम राक्षस उनके आश्रमपर आकर बड़े ऊंचे स्वरसे महाभयङ्कर यहवचन बोला कि ३२ वह नीच मुनि बंधु कहांहै वउसकी स्त्री कहांहै रोषयुक्तहोकर यहवचन उसने फिर २ कहा ३३ तब अग्निने जाना कि राक्षस से भय आगया है इसलिये मुनिकी उत्तमा गर्भिणीस्त्रीको उन्होंने उसराक्षसको दिखादिया ३४ व वह राक्षस कराकुलके समान रोदनकरतीहुई मुनिपत्नी को हरलेगया तब उसने पुकारा कि हेभृगुजी! मेरीरक्षा करो हे पतिजी ! रक्षाकरो व हे तपोनिधिनाथ ! रक्षाकरो ३५ ऐसाकहतीहुई अतिदुःखित महातपस्विनी व पतिव्रता उसको दुष्टवचनों के प्रहारों से वेधितकरताहुआ वह दुष्ट लेकर बाहर निकला ३६ तब महाभयसे उद्वेजितहोकर उसके उदर से गर्भ यहां पर पतितहोगया वह कैसामालूमहुआ कि ज्वलतेहुये नेत्रों अग्निसे रूपधरके अग्निही पैदाहोगया ३७ व वह प्रतापी गर्भबोला कि तू बहुतशीघ्र न चल हे दुष्ट! अभी भस्महोजा क्योंकि पतिव्रता स्त्रीके निरादरकरनेवाला व बल से उसकेस्पर्शकरने वाला कल्याणको नहीं पाता ३८ जैसेही उस तुरन्तके प्रतितगर्भ ने

ऐसा कहा कि वह दुष्ट राक्षस भस्महोकर गिरपड़ा व उस बालककी माता उसगर्भको लेकर अपनेआश्रमपर खुशीमन आई ३९ इतनेमें भृगु मुनि अपने आश्रमपर आकर अग्निका कियाहुआ कर्म्म जानकर कि इन्हींने बताया तब राक्षस स्त्रीकोहर लेगया बड़े सङ्कुपितहुये व अग्निको उन्होंने शापदिया कि हे दुष्ट! शत्रुके सूचक तू आज से सर्व्वभक्षीहो ४० तब शापित व दुःखितहोकर अग्निजी फिर मनुष्यरूप धारणकरके मुनिके चरणोंपर गिरे व बोले कि हे दयासागर महामति महाराज! मेरेऊपर अनुग्रहकरो ४१ मैंने मिथ्या वचन भयसे कहदिया कुछ गुरुद्रोहसे नहीं कहा इससे हे धर्म्म शिरोमणि महाराज ! मेरेऊपर कृपाकरो ४२ तब मुनिने अनुग्रहकिया व कहा कि आप सर्व्वभक्षी तो होंगे पर पवित्रबनेरहेंगे सर्व्वभक्षी होनेसे अपवित्र न होजायँगे दयासे आर्द्रहृदय मुनिने अग्निसे ऐसा कहा ४३ फिर गर्भसे च्युत अपने उस पुत्रके जातकर्म्मादि कुश हाथों में लियेहुये मुनिने सुमङ्गलपूर्व्वक किये ४४ च्यवनहोनेसे अर्थात् गर्भचूकर गिरनेसे सब तपस्वियोंने इनका नाम च्यवन कहा फिर च्यवनकुमार धीरे २ शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे चन्द्रमाके समानबढ़े ४५ जब बनाय सयानेहुये तो बहुतसे शिष्योंको संग लेकर लोकपावनी नर्म्मदा नदीके तीरपर तपकरनेकेलिये गये ४६ वहां जाकर दश हजार बर्षतक उन्होंने बड़ा तपकिया यहांतक कि दोनों कन्धोंपर ब्यमौर व बामी के लगजाने से उनपर दो पलाशके वृक्ष जमआये ४७ मृगालोग आकर उनके अङ्गमें उत्साहसे अपनी अपनी देह खुजलातेथे ये ऐसे दुर्वार तपकरने में स्थितथे कि कुछ जानतेही न थे ४८ किसीसमय राजामनु शर्य्यातिजी अपने कुटुम्ब को सङ्गलिये व बड़ीभारी सेनाको सङ्गकिये तीर्थयात्राके प्रसंग से नर्म्मदा में स्नान करनेको गये ४९ व उस महानदीमें स्नान करके देवताओं व पितरों का तर्प्पणकर श्रीविष्णुभगवान् की सन्तुष्टताकेलिये ब्राह्मणोंको विविधप्रकार के दानदिये ५० व तपायेहुये पक्केसुवर्ण के सब भूषणपहिने अतिरम्य रूपवती उनकी कन्या अपनी सखियोंके संग इधर उधर घूमतीहुई वहां आई जहां मुनिजी

तपकरतेथे ५१ वहां उसने बड़े वृक्षोंसे शोभित एक बड़ीभारी बामी देखी कि जिसमें कोई कुछ न श्वासलेताथा न देखताथा पर हां तेजसे प्रकाशित तो उसने देखा ५२ वहां निकटजाकर उसने शलाकाओंसे उसमें छेदकरदिया इससे उससे रुधिर बहनेलगा उसे देखकर राजाकी कन्या बहुतदुःखितहुई व खेदको प्राप्तहुई ५३ पर पापयुक्त उसने न यह वृत्तान्त अपनीमातासे कहा न पिताहीसे कहा केवल अपने आपहीभयसे आतुरहो शोचकरतीरही ५४ तब हे महाराज पृथ्वी चलायमानहुई व दिशाओंमें उल्कापातहोनेलगे सब दिशाओंमें कुछ अँधियारीहोगई सूर्य्यमें घेराबनगया ५५ व राजाके बहुतसे घोड़े नष्टहोगये व बहुतसे हाथी मृतकहोगये व सब धन रत्नादि नष्टहोगये आपसमें सब से कलह होनेलगा ५६ यह देखकर राजा बहुतडरा व दुःखितमनहोकर लोगोंसेपूछा कि अरे यहां किसने मुनिका अपराध किया ५७ क्रमसे पूंछते २ जाना कि तुम्हारी कन्याने अपराध किया तब अपनेसमाज सेना वाहनादि समेत राजा दुःखित चित्त वहां गया ५८ व बड़े तपकरतेहुये उन तपोनिधिको देखकर स्तुतिकरके प्रसाद मांगनेलगा कि हे मुनिवर्य्य ! कृपाकरो ५९ राजाके ऊपर सन्तुष्टहोकर इन मुनिवर्य्य च्यवन जीने कहा कि यह सब उत्पात तुम्हारी कन्याका कियाहुआहै ६० हे महाराज ! तुम्हारी पुत्रीने हमारे नेत्रही फोड़डाले बहुतसारुधिर बहा उसको उसने देखा जानपड़ताहै कि तुमसे नहीं कहा ६१ इससे हे महाराज इसको हमें विधिपूर्व्वक देदेओ हे सुरार्च्चित ! तब उत्पात शान्तहोगा अन्यथा नहीं ६२ यह सुनकर राजा बहुतदुःखितहुये परन्तु थे बड़े प्रज्ञा चक्षु इससे कुल अवस्था रूप शील शुभ लक्षण युक्त कन्या मुनिको देदी ६३ ॥

चौ० कमलनयनिनिजसुतामहीपा । दीनमुनिहिजबनृपमणिदीपा ॥
तब उत्पात शान्त भे सारे । जो सब भये प्रथम मुनिकारे १ । ६४
महातपोनिधि मुनिकहँ कन्या । दीन नृपति सब विधिसों मन्या ॥
तब निजपुरी गये महिपाला । सुतादुःखयुतपरम बिहाला २ । ६५

इतिश्रीपाद्मेपातालखण्डेभाषानुवादेच्यवनोपाख्याननामचतुर्दशोऽध्यायः १४॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

दो० पन्दरहें महँकहच्यवन सेवसुकन्या कीन ॥
दस्रकृपासों सुभगह्वै भोग विविधकियपीन १

शेषनागजी वात्स्यायनमुनि से बोले कि तब च्यवनमुनि तपको समाप्तकर शर्य्याति मनुकी कन्या सुकन्या भार्य्या समेत अपने आश्रम पर बिमान पर चढ़ कर आये व सब पातकहत होने के कारण व सुन्दरी भार्य्या पानेके हेतु बहुत हर्षितहुये १ व वह महाराजकुमारी सुकन्या नेत्रहीन अतिवृद्धता के कारण बलपराक्रम रहित अपने पतिकी सेवा इसरीति से करनेलगी जैसे मङ्गल देवता लक्ष्मीजी महापराक्रमी व बलवान श्रीहरि अपने पतिकी सेवा करतीहैं २ पतिके मन के अभिप्राय को जानती हुई उनके अनुकूल सेवा करती हुई महानुभाव तपोनिधि अपने प्रियतमकी सेवा करनेसे ऐसी प्रसन्न रहने लगी जैसे इन्द्रकी शुश्रूषा करतीहुई अति मनोहर रूपवती इन्द्राणी प्रसन्न होती हैं ३ फल मूल जल भोजन पानकरती हुई सुन्दराङ्गी महाराजपुत्री सब शुभ लक्षणों से लक्षित सुकन्या पतिके चरणोंकी सेवा अति प्रेमसे करने लगी ४ नित्यपतिके वचन के करने में तत्पर व पूजाकरने में रतहोकर सब प्राणियों के हित करने में रतहो अपना कालक्षेप करने लगी ५ काम दम्भ अप्रीति लोभ पाप व मदको छोड़कर सावधान चित्त करके नित्यसेवासे उसने च्यवनजी को सन्तुष्ट करलिया ६ इस प्रकार वचन काय व कर्म्मोंसे पतिकी सेवा करतीहुई हजार बर्षतक उसने कामको अपने मनमें न ठहरनेदिया ७ एक समय देवताओंके वैद्य अश्विनी कुमार च्यवन मुनिके आश्रम पर आये उनका आगत स्वागत करके मुनिकी स्त्रीने दोनों की बड़ी पूजाकी ८ शर्य्याति की कन्या से पूजन किये गये दोनों सन्तुष्ट चित्त वृत्तिहोकर स्नेह बश से उस राजा की मनोहर अङ्गवाली कन्या से बोले कि हम दोनोंसे तुम वरमांगो ९ सन्तुष्ट होने पर ये देववैद्य मांगने पर देवताओं को भी वरदेतेहैं यह बिचार कर राजाकी श्रेष्ठमतिवाली कन्याने वर मांगने का बिचारकिया १० व अपने पतिका अभिप्राय देखकर

राजकन्या उन दोनोंसे बोली कि यदि दोनों देव सन्तुष्ट हुयेहो तो हमारे पतिको नेत्र देओ ११ सुकन्याका ऐसा मनोहर वचन सुन कर व उसका पातिव्रत देखकर दोनों वैद्य बोले कि १२ तुम्हारे पति जो देवताओं के संग यज्ञमें हम दोनों काभी भागलगवादें तो अभी हम इनके फूटेहुये नेत्र अच्छे करदें जिससे ये देखनेलगें १३ तबच्यवनजीने कहा अच्छा हम तुमको भाग अपने बलसे दिला देंगे तब हर्षितहो अश्विनी कुमार तापसोंमें श्रेष्ठ च्यवनमुनि से बोले १४ कि इस सिद्धों के बनाये हुए सेवितकुण्डमें आप स्नान करें ऐसा कहकर वृद्धतासे ग्रस्तदेह जिनके केवल नसें शरीरमें रह गईथीं १५ उनको अश्विनी कुमारने उठाकर उसहृदमें प्रवेश कराया व दोनों वैद्य भी उस कुण्ड में पैठे तब उन्होंने स्नान किया तब उसहृदमें स्त्रियोंके प्रिय तीनपुरुष एकही प्रकारके निकले १६ सब सुवर्णकी मालापहिने कुण्डल धारणकिये तुल्यरूप सुन्दर वस्त्र धारणकियेथे उनतीनों सुरूप सूर्य्यके समान प्रकाशितोंको देख कर श्रेष्ठ नितम्बादिकवाली सुकन्या १७ पतिव्रता अपने पति को न पहिचानतीहुई अश्विनी कुमारोंके शरण हुई तब उसके पातिव्रत से सन्तुष्ट दोनों वैद्य उसकेपतिको उसे दिखाकर १८ ऋषिसे पूँछ कर विमानपर चढ़कर स्वर्गको चले गये व यह आशा लगायेरहे कि अब जबकभी यज्ञहोगा तो हम दोनों का भी भाग मुनि लगवादेंगे १९ व मुनिजी बहुतकालसे व्रत करते २ अति दुर्बल शरीर वाली अपनी स्त्रीसे दुःखितहो प्रेमगद्गदबाणीसे कृपाकरके बोले २० कि हे भामिनि ! हम तुम्हारी परम शुश्रूषासे व हृदयकी परमभक्ति से मानपानेके योग्य तुम्हारे ऊपर बहुत सन्तुष्ट हुये क्योंकि प्राणियों को यह अपना शरीर सबसे अधिक प्रिय होता है परन्तु तुमने हमारे अर्थ उसकी ओर कुछभी नहीं विचारकिया २१ सो अब अपने धर्म्ममें निरत तप समाधि विद्या आत्मयोगों से जीतेहुये भगवान् के प्रसाद जो हैं व हमारी सेवासे हममें रुँधेहुये हैं अभी कहीं कये नहीं देखो आज उन सब अशोक व अभय करने वालों को तुमको देते हैं २२ इनके विशेष और बिभय उरुक्रम श्रीभगवान्जी भौहों के

उद्विजृम्भसे दियेहुये अर्थों से रचित धर्म्मपूरणकरने वाले विभवोंको भोगकरो जो कि महाराजों को भी नाना प्रकारकी क्रियाओं से दुःखसे मिलते हैं क्योंकि तुम अब सिद्धहो व भगवान्को कुछ देना कठिन नहीं है २३ अखिल योगमायाकी विद्यामें विचक्षण पतिको ऐसा कहते हुये देखकर वह महाराज कुमारी मनकी व्यथासे रहित होगई व नम्र होकर तब प्रेम से विह्वलबाणीसे कुछ लज्जितहो देखतीहुई व भाव सहित हँसतीहुई पतिसे बोली २४ सुकन्याबोली कि हे द्विज श्रेष्ठ ! सफलयोग माया के स्वामी तुम में यह सब विभव सिद्ध है सो हे भर्त्तः ! हम जानती हैं जो तुमने समय कहा कि एक बार महात्माओं के अंगोंका संगकिया वह सतियोंके प्रसव गुणोंके उत्पन्न करने वालाहो २५ सो अब तुम से उपकृत्यको यथोपदेश सीखकर यह दुर्बल हमारा शरीर तुम्हारेलिये कामसे पीड़ित होता है इससे हे ईश्वर ! अब तुम एक विमान अच्छा बनाओ और हमारा शरीर भी हृष्टपुष्टकरदो जिसमें भोगकरनेकी इच्छाहो २६ सुमति शत्रुघ्नजीसे बोले कि हे राजन् प्रियाके प्रियकी इच्छाकरतेहुये च्यवनजीने योगमायामें स्थितहोकर उसीसमय सब कामदेने वाला एक विमान बनादिया २७ जोकि सब कामोंको देता व दिव्य बनाथा सब रत्नोंसे युक्तथा सम्पूर्ण ऋद्धियोंकी वृद्धिसे युक्तथा मणियोंके स्तम्भोंसे युक्तथा २८ दिव्य सब सामग्रियों से व दिव्यविस्तरोंसे युक्त सब कालोंमें सुखपहुंचानेवाला व विचित्र पट्टिकाओंतथा पताकाओं से अलंकृतथा २९ पुष्पोंकी विचित्रमालाओं से व और भी सुवर्ण मुक्तादिकोंकी मालाओं से कि जिनमें लपटेहुये भ्रमर गुञ्जारकरतेथे उनसे और नानाप्रकारके रेशमी सूक्ष्मवस्त्रों से विराजितथा ३० जिसके ऊपर २ स्थानों में अलग २ सुन्दर विस्तरों व पंखों से युक्त पलंग लगे हुये शोभादेरहे हैं ३१ उसमें सब कहीं नानाप्रकार के शिल्पियोंकी सचमत्कृति की शोभा दिखाई देती महामरकतमणियोंकी गचबनीथी व मूंगोंकी वेदियोंसे सेवित था ३२ द्वारोंमें मूंगोंकीही चौकठेंधरीथीं व हीरेके किवाड़ों से चमचमाताथा व इन्द्रनीलमणिके बनेहुये शिखरोंपर सुवर्णके कुम्भों के

धरनेसे अत्यन्त शोभितहोरहाथा ३३ हीरों से बनी हुई भित्तियों में चमकतेहुये पद्मरागमणियोंके बूटेबनेथे विचित्र वितानों में ठौर २ मोतियों के हारलटकतेथे ३४ हंस व कबूतरों के झुण्ड के झुंड ठौर २ कूजतेथे व उड़ २ कर कृत्रिमविमानों पर बैठते थे फिर कूदकर नीचे आतेथे जो बने हुये मालूम होते थे ३५ विहारकरने के स्थान विश्राम करनेके स्थल शयन करने के योग्य मशहरी पलँग आदि छोटी चौकें व बड़े अँगनोंसे शोभित इनसब प्रकारों से ऐसा यथोचित बनाथा कि मानों देखने वालेको विस्मित कराता था ३६ ऐसे भी सुन्दरगृहको जब सुकन्याने अति प्रसन्न चित्तहोकर न देखा तो सब प्राणियों के आशयके जाननेवाले च्यवनजी आप उससे बोले कि ३७ हे भीरु ! इस कुण्डमें स्नानकरके फिर इस विमान पर चढ़ो पतिके बचनको ग्रहण कर वह सुन्दर भौंहों से युक्त कमल नयनी ३८ मैलेवस्त्र धारण किये व लुटुवारबालोंको शिरमें लपेटेअङ्गोंमें मैल लगाये अति सूखे स्तनों से युक्त ३९ कल्याण दायक जलसे भरेहुये उससरमें पैठी उससरके भीतर एक मन्दिर बनाथा जिसमें दशसौ कन्या बैठीथीं ४० सबोंकी दशवर्षसे ऊँची व पन्द्रहतककी अवस्थाथी व सबोंके अङ्गोंमें कमल के पुष्पों कीसीसुगन्धि आतीथी उनको सुकन्याने देखा व सुकन्या को देखकर वे सबकन्या भी एकाएकी उठकरहाथ जोड़कर बोलीं ४१ कि हमलोग तुम्हारी दासियां हैं इससे हमलोगोंको आज्ञाहो कौनकार्यकरें उनकी इच्छाजान प्रथम बहुमूल्य अतर फुलेल अरगजादि लगाकर उन्मर्दनकर उस मनस्विनीको स्नानकराकर ४२ निर्म्मल व नवीन दो रेशमी वस्त्रउनको पहिनाये व बड़े मोलके चमचमाते हुये श्रेष्ठ भूषण दिये ४३ सबगुण युक्त बनाबनाया अन्नदिया व अमृत रससे युक्तपीनेके लियेकोई शर्व्वतादि पदार्थ दिया तब दर्प्पणमें सुकन्याने अपनेकोमालादिकोंसे भूषितदेखा ४४ जो कि शुद्धवस्त्रोंको धारणकिये शुद्ध स्वस्त्ययन कियेहुआ बहुतसी कन्याओंसे मानित बड़े मोलके हारसे व पदिकसे भूषित ४५ सुवर्णकी कण्ठीसे शोभित कङ्कण धारण किये बजते हुये सुवर्णके नूपुरोंसे

शोभित बहुत रत्नोंसे जड़ी हुई सुवर्णकी क्षुद्र घण्टिकासे कटिके नीचेके भागसे शोभित ४६ सुन्दर भौंहोंसे सुन्दर दांतोंसे शुक्कव चीकनेनेत्रोंके निरीक्षणसे कमलकोशकी स्पर्द्धाकरती हुई गोलाई से व नीलकमलोंके समान नीलअलकोंसे शोभित मुखथा ४७ जब ऐसे रूपको देखकर ऋषियोंमें श्रेष्ठ अपने पतिका स्मरण किया कि सहस्र स्त्रियोंकेसाथ वहांपहुँचगई जहांकि वे मुनीश्वरजी विद्यमानथे ४८ पतिके आगे सहस्र स्त्रियों सहित अपनेको स्थितजान पतिके योगकी गतिदेख बड़े संशयको प्राप्तहुई ४९ तब अच्छेप्रकार स्नानकीहुई अपूर्व्वरूपसे चमकतीहुई अपने समानरूप को धारणकियेहुई परमपतिव्रता सुकन्या नाम भार्य्याको रुचिर पीनस्तन ढांकेहुई ५० सहस्र विद्याधारियोंसे सेव्यमान सुन्दर सूक्ष्मवस्त्र धारण किये देख भावयुक्त होकर मुनिने अपने हाथों से उठाकर उस विमानपर हे शत्रुघ्नजी ! चढ़ालिया ५१ उस विमानपर प्रकट महिमा वाले च्यवनजी अपनी प्रियाको छपटायेहुये व विद्याधरियोंसे सेवित शरीरवाले अतिशोभितहुये जैसे कि प्रचण्डपवनयुक्त मनोहर चन्द्रमा ताराओं के बीच आकाश में टिकाहुआ शोभितहोताहै ५२ ॥

ह०गी० आरूढ़ ताहि बिमानपर वनिता समेत सचेत ह्वै ।
कुलगिरिगुहा सहमंदनसखमारुतसुभगसहरेल ह्वै ॥
नुतसिद्धगण सुरसरितपात शिवस्वनान्वितमैंसही ।
चिरकाल बालसमेत धनपति सद्मशरमितमुदैलही १।५३ ॥
स्वरवनरुनन्दन चैत्ररथ वैभ्रम्भ पुष्पकभद्रमैं ।
निजनारि मनअनुसारिधारि बिहारकरत समुद्रमैं ॥
नृपराजकन्या जो सुकन्या नाम धन्या सो सही ।
मुनिसंगकरत प्रसंग अंग अनंग रंग लसी वही २।५४ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेच्यवनतपोभोगवर्णनन्नाम पञ्चदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

दो० । सोलहयेंमहँ कह च्यवन अरु शत्रुघ्न मिलाप ॥
जिमिमुनिकपिवर पृष्ठचढ़ि अवधगये सँल्लाप १ ॥

शेषनाग वात्स्यायन मुनिसे बोले व सुमति शत्रुघ्न से बोले कि इस प्रकार उस सुकन्या के साथ क्रीड़ाकरतेहुये च्यवनजीने धरणी तलपर सर्व्वत्र रमतेहुये सैकड़ोंवर्ष बीतगये परन्तु न जाना कि कितने वर्ष हुये १ तदनन्तर इन विप्रने जाना कि हमारे सङ्कःकाल बिताने वाली हमारी श्रेष्ठप्रियतमा अब मनोरथसे पूर्ण हुई २ तब पयोष्णी नदीके तीरपर विराजमान निर्व्वैरजन्तु समूहोंसे समाकुल मृगों से सेवित अपने आश्रमपर अपनी स्त्रीको लौटालाये ३ व वहां बसते हुये सुतपस्वी च्यवनजी वेदवादी शिष्योंसे नित्यसेवित चरण होकर परमतप करनेलगे ४ तब एक समय राजाशर्य्यातिजी ने देवताओं के लिये यज्ञकरना चाहा इसलिये च्यवनजी के बुलाने के लिये सेवकों को भेजा ५ उनके बुलाने से द्विज श्रेष्ठ महातपस्वी च्यवनजी अपने आचार में परिनिष्ठित सुकन्या नाम अपनी धर्म्म पत्नीके साथ गये ६ अपनी पुत्री पत्नी के साथ महामुनि को आयेहुये देख महायशस्वी राजाने कन्या के पास सूर्य्य के समान तेजस्वी पुरुष को देख ७ प्रणाम करती हुई कन्या से राजा बोला परन्तु अति प्रसन्न न होकर आशीर्व्वाद न दिया ८ कि तू ने यह क्या करना चाहा लोकों से नमस्कार कियेहुये मुनिपति को छललिया क्योंकि उनको जरासे ग्रस्तहोनेसे अयोग्यपति मानकर छोड़दिया और मार्ग्गमें चले आतेहुये इस उत्तम पुरुष को जार पुरुष मानकर भजने लगी ९ तेरी यह अन्यथामति कैसे होगई हे कुलीन के यहां उत्पन्न होने वाली यह सज्जनों के कुलके लिये महा दूषण कर्म्म है जोकि तू जारपतिको ग्रहण किये हुई है यह पिता व भर्त्ता दोनोंको लज्जित कराती है व दोनों के कुलोंको महाअन्धकार नरक में डालती है १० ऐसा कहते हुये अपने पिता से कुछ गर्व्व के साथ हँसती हुई सुकन्या बोली कि हे तात ! ये तुम्हरे जामाता वेही भृगुनन्दनही हैं ११ यह कहकर पितासे पति की अवस्था व रूप पानेके वृत्तांत सब कहे व विस्मित होकर परम प्रीतिसे अपनी कन्या को प्रेम पूर्व्वक लपटालिया १२ फिर च्यवनजीने राजाको सोमयज्ञकराया जिसमें कि सोम न पीनेके योग्यभी अश्विनी कुमा-

रों को देवताओंके संग सोम पियाया १३ उनका भाग अपने तेज व बलसेही दिलाया तब वज्र हाथ में लेकर इन्द्र ब्राह्मणश्रेष्ठ च्यवन जीके मारनेके लियेआये १४ किअपङ्क्तिपावन इन दोनों देवोंकोतुम ने पङ्क्तिपावन करना कैसे चाहा है इन्द्रको वज्र धारण कियेहुये अपने मारनेमें उद्यत देखकर च्यनमुनिने १५ हुङ्कारशब्द किया कि जिससे वज्र उठायेहुये इन्द्रके उसभुजको स्तम्भित करदिया इन्द्र ज्योंके त्यों चित्रसारी में लिखेसे खड़े रहगये हाथ रुकेहुये इन्द्रको वहां सब मनुष्यों ने देखा १६ जोकि मारेकोपसे मन्त्रके बलसे रुके हुये महा सर्पके समान श्वास लेतेथे तब फिर हाथ रुकेहुये इन्द्रने तपोनिधि च्यवनमुनिकी बड़ी स्तुति करके १७ सन्तुष्टकिया जो कि निर्भय होकर अश्विनीकुमारको भागलगारहे थे व इन्द्रने कहा कि हे स्वामिन् ! यद्यपि वैद्यकी करनेके कारण ये दोनों हम लोगों के संग कभी आजतक भाग नहीं पातेथे व न हम लोग अपनी पंक्ति में भोजनके समय बैठने देतेथे तथापि अब आप इन दोनों अश्विनी कुमारों को भी बलिदें १८ हम नहीं रोंकते हे तात ! अब हमारे पापको क्षमाकरो जब इन्द्रने ऐसा कहा तो कृपानिधि मुनि ने तुरन्त कोप को त्याग दिया १९ हे पुरुषर्षभ ! जैसेही मुनि ने कोप को त्यागा कि इन्द्र का हाथ जो मुनि के कोपसे सहित वज्र रुँकगयाथा छूटगया यह देखकर कौतुकमें आविष्टमनहो २० सब जनोंने ब्राह्मणों के बलकी प्रशंसा की जो कि देवादिकों को दुर्ल्लभ है तदनन्तर राजा शर्य्यातिजीने ब्राह्मणों को बहुत धन दिया २१ वयज्ञ के अन्तमें अवभृथस्नानकिया हे महाराज ! शत्रुघ्न जी तुमने पूंछा था कि च्यवनमुनिका महोदय कहो २२ सो हमने तप योग युक्त सब उन का महोदय कहा सो अब इन तपोमूर्ति के नमस्कार करके व आशीर्बाद लेकर २३ पत्नी सहित इन च्यवनजी को भी तुम मनोरम श्रीरामचन्द्रजी के यज्ञमें भेजो शेषजी ने कहा कि हे वात्स्यायनजी ! इस प्रकार सुमति व शत्रुघ्नजी बार्त्ता करतेही थे कि घोड़ा जाकर च्यवनजीके आश्रमपर पहुँचा २४ जो कि वायुवेगसे चलने के कारण खुरोंसे पृथ्वी को खोदे डालता था व उस आश्रमपर

दूर्व्वा के अंकुर मुखके अग्रभागसे चरने लगा २५ सब मुनि लोग कुशादि हाथों में लिये हुये उस समय नदी में स्नान करनेको गये थे व शत्रु सेना के तपाने वाले शूरवैरियों के नाशक शत्रुघ्नजी भी २६ तब तक च्यवनमुनि के शोभित आश्रमपर पहुँचे व आश्रमके भीतर जाकर उन बीरने च्यवनमुनि को देखा २७ जो कि सुकन्या के समीप तपकी मूर्त्तिहीके समान स्थितथे तब अपने नामका स्मरण करते हुये शत्रुघ्नजी ने चरणोंमें प्रणाम किया २८ व कहा कि मैं श्री रामचन्द्रजी का भाई शत्रुघ्नहूं उन के यज्ञ के अश्वकी पालना करताहूं २९ महापापोंके शान्त होने के लिये आपके चरणोंमें नमस्कार करताहूं यह वचन सुनकर मुनि सत्तमजी बोले ३० कि हे पुरुष श्रेष्ठ शत्रुघ्न ! तुम्हारा कल्याणहो व यज्ञ पालन करते हुये तुम्हारी विपुलकीर्त्तिहो ३१ हे ब्राह्मणो ! यह आश्चर्य्य देखो कि श्रीरामचन्द्रजी भी यज्ञ करते हैं कि जिनके नामस्मरणादि पापों का नाश करते हैं ३२ महापातक संयुक्त परस्त्री गामी भी लोग जिन के नाम के स्मरण से परमगति को जाते हैं ३३ जिनके चरण कमलसे उड़ीहुई धूलि के परनेसे पाषाण की मूर्ति धारण किये हुई गौतमकी स्त्री ने फिर सबको मोहने वाला रूप धारण करलिया ३४ देखो हमारेही रूपका ध्यानकरो कि उन के प्रेमसे निर्भर होकर सब पातकों की राशिका नाशकरके अब कैसी सुरूपता को प्राप्त होगया है ३५ जिन रामचन्द्रजी के मनोहर रूप को समर मण्डल में देखकर दैत्य लोग विकार रहित रूपों को प्राप्तहोगये ३६ व योगी लोग योगमें स्थितहोकर ध्यान निष्ठा में ध्यान करके संसार भय से निर्म्मुक्त होकर परमपद को चले जाते हैं ३७ हम धन्य हैं जो अब सुन्दर नासा सुन्दर भौहों से युक्त श्रीरामचन्द्र जी का मुखारविन्द देखेंगे ३८ जिह्वा वही है जो आदर से श्रीरघुनाथ का नाम जपती है व जो इस के विपरीत करती है राघव नाम कीर्त्तन नहीं करती वह सर्प की जिह्वाके समानहै ३९ आज तपका पुण्य पाया व आज पूर्ण मनोरथहुये क्योंकि जो ब्रह्मादिकोंको भी दुर्ल्लभ है श्रीरघुनाथजी का वह मुखारविन्द देखेंगे ४० उनके चरणकी धूलि से अपने अंगों

को पवित्र करेंगे व विचित्रतर वार्त्ताओं से अपनी जिह्वा को पवित्र करेंगे ४१ इत्यादि श्रीरामचन्द्रजी के चरणों के स्मरण से बढ़े हुये प्रेम समूहसे गद्गद वचनहो नेत्रोंसे आंशू बहातेहुये मुनि पुकारउठे कि हे श्रीरामचन्द्र! हे रघुपुंगव! हे धर्म्ममूर्त्ते! हे भक्तानुकम्पक! संसारसे मुझको उबारो ४२ ऐसा जपतेहुये आंशुओंकी कलासे पूर्ण होकर मुनियोंके आगे बैठेहुये ध्यानावस्थित होजानेके कारण मुनि अपने पराये को नहीं जानतेथे ४३ तब शत्रुघ्नजी मुनि से बोले कि आप अपने चरणकी रज से चलकर हमारे यज्ञ सत्तमको सुपवित्र करें ४४ महाभाग्यहै रघुनाथजीकी जो कि आपके मानसके भीतर सर्वलोक में एक पूज्य महाबाहु श्रीरामचन्द्रजी टिके हैं ४५ जब शत्रुघ्नजीने ऐसाकहातो सपरिवार च्यवनजी उठे व अपनी सब यज्ञ सामग्री समेत बार २ हर्षितहोतेहुये अयोध्याजीको चलदिये ४६ तब रामचन्द्रजीके भक्त च्यवनजीको पैदरजातेहुये देखकर हनुमान् जी विनययुक्त वाणी से शत्रुघ्नजी से बोले ४७ हे महापुरुष! हे सुन्दर! हे स्वामिन्! जो आप कहें तो श्रीरामचन्द्रजी के भक्त इन मुनिवरको मैं अयोध्यापुरीमें पहुँचादेऊँ ४८ कपिवीर हनुमान् जीका ऐसा महावाक्य सुनकर शत्रुघ्नजी ने हनुमान्जी को आज्ञा दी कि अच्छा जाओ इन मुनिको पहुँचाआओ ४९ हनुमान्जी ने सकुटुम्ब मुनिको अपनी पीठपर चढ़ाकर अतिवेगसे मुनिको शीघ्र पहुँचादिया जैसे पवन आकाशमें सर्व्वत्र चलाजाता है ५० ॥

चौ० । आगतमुनि लखिरामकृपाला । सबमतिवरमहँश्रेष्ठविशाला॥
प्रीतप्रणययुतदैअर्घ्यादिक।मुनिहिंसमर्प्पणकीनसुखादिक॥ १।५१
अरुकह मुनिवर तव दर्शनसों । भयहुँधन्य जिमिनहिं वर्णनसों ॥
सब सम्भार सहित मखमेरो । कीनपवित्र आयकरिडेरो ॥ २ । ५२
इमिसुनिवचन च्यवन मुनिसत्तम । बोले वचन यथा सब वित्तम ॥
प्रेमपूर सब अंग मुनीशा । धन्य धन्य तुमहौ जगदीशा ॥ ३ । ५३
तुम ब्रह्मण्य देव मम स्वामी । यासों द्विजपूजन अनुगामी ॥
धर्म्ममार्गरक्षक महराजा । तुम्हैंउचित नमविप्र समाजा ॥ ४ । ५४

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डे भाषानुवादेषोडशोध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

दो० । सत्तरहें महँ नीलगिरि परपुरुषोत्तम बास ॥
लखि शत्रुघ्न निदेशसों सुमति कह्यो इतिहास ॥ १ ॥
रत्नग्रीव महिपालकर जामें तीर्थ बखान ॥
अरु बहु पापिनहिं लखत नीलशैल यह ज्ञान ॥ २

शेषनागजी वात्स्यायनमुनिसे बोले कि च्यवनजीका अचिन्त्य तपोबल देखकर शत्रुघ्नजीने सब लोगोंके वन्दनाकरनेकेयोग्य ब्राह्मणोंके तपकी बड़ी प्रशंसाकी १ अहो इन ब्राह्मणसत्तमके विषय की सिद्धियोंको देखो तो कि जिन्होंने एक क्षणमात्रहीमें दिव्य सुन्दर विमान बनादिया २ कहां अमलात्मा मुनियोंके भोगोंकी महा सिद्धि कहां तपोबलहीन मनुष्यों को भोगकी इच्छा बड़ाही अन्तर है ३ च्यवनजीके आश्रमपर क्षणभरठहरकर जलपानकरके अपने मार्ग्गमें इसप्रकार प्रशंसाकरतेहुये शत्रुघ्नजी बहुतसुखीहुये ४ व घोड़ा उस पयोष्णी नदीके पुण्य जलाशयमें जलपीकर मार्ग्गमें वायु वेगसे पैरधरताहुआ चला ५ व उसको चलतेहुये देखकर योद्धालोग कोई हाथियोंपर चढ़ेहुये कोई घोड़ोंपर कोई रथोंपर कोई पैदरही उस के पीछे २ चले ६ व शत्रुघ्नजी मन्त्रियोंमें श्रेष्ठ सुमति के संग घोड़ों से शोभित रथपरचढ़कर पीछे २ चले ७ जाते २ घोड़ा विमल नाम राजाके हृष्टपुष्टजनोंसे बसेहुये रत्नतटनाम पुरमें पहुँचा ८ उस राजाने सेवकसे सुनकर कि श्रीरघुनाथजीका उत्तम घोड़ा सब योद्धाओं से युक्त पुरके निकटआयाहै ९ चन्द्रमाके समान श्वेत सत्तरहाथी दश सहस्रघोड़े सुवर्णजटित होनेके कारण चमचमातेहुये हज़ाररथसंग लियेहुये १० वह शत्रुघ्नजीके समीप आया व शत्रुघ्नजीके नमस्कार करके उस महाराजने सब समर्प्पण किया ११ सब वसु कोश धन धान्य राज्य इनको समर्प्पणकर आगे खड़ेहोकर कहा कि क्याकरूं आज्ञाहो १२ राजा शत्रुघ्नजीने भी उस राजाको अपने चरणों पर झुककर प्रणामकरतेहुये देख दोनों हाथोंसे पकड़कर छातीमें लगालिया राजाराज्य अपने पुत्रको विमल भी देकर बहुतसे वीरोंको अपने संग लियेहुये शत्रुघ्नजीके संग चला १३ तब सबके कर्णोंमें पड़तेही

मनोंकेहरनेवाला रामनाम सुनकर घोड़े के प्रणामकरके जिसके जो धनादि उत्तमपदार्त्थथा उस वाजीकी न्योछावरकरदिया १४ जिसके बाद शत्रुघ्नजी बड़ी खुशीसे राजा की पूजाकरके सेनासहित घोड़के पीछेचले १५ फिर वहां से घोड़ा चला मार्ग्गमें भी जो कोई रामचन्द्रजीका घोड़ा सुनताथा जो कुछ होता न्योछावरकरता जाते २ घोड़ेने एक पर्व्वताश्रम देखा जोकि स्फटिकमणि सुवर्ण व चांदी से बनाथा १६ जोकि बहतेहुये झरनों के नादसे शोभित व नानाप्रकारके धातुओंसे विराजित व गेरूआदि अच्छे धातुओंसे व लाखकेरंग से अच्छेप्रकार विराजमानथा १७ व जहां सिद्धोंकीस्त्रियां सिद्धोंकेसंग निर्भय होकर क्रीड़ाकररही थीं व गन्धर्व्व अप्सरा नाग जहां लीलापूर्व्वक क्रीड़ाकरतेथे १८ व गंगाकेस्पर्शहोनेकेकारण शीतल पवनसे सेवितथा व बीणाशब्द हंस शुकोंके सुन्दर शब्दोंसे शोभितहोरहाथा १९ ऐसे पर्व्वताश्रमको देखकर शत्रुघ्नजी उसके देखने से विस्मितमनहोकर सुमतिसे यह बोले कि २० हे महामात्य ! यह कौन पर्व्वतहै जो हमारे मनको विस्मितकराताहै व जिसके मार्ग्गों में सुवर्ण व चांदीके ढेरकेढेर पड़ेहुये हैं २१ यहां क्या देवताओंका स्थानहै वा देवताओंके क्रीड़ाकरने का स्थलहै जोकियह लक्ष्मीजी के समूहों से मनको क्षोभ कराताहै २२ यह वाक्य सुनकर तब सुमतिनाम मन्त्री बोले जो कि वक्ष्यमाणगुणों के आगार श्रीरामचन्द्र जीके चरणकमल में बुद्धि किये थे २३ हे महाराज ! मनोहर स्फटिक मण्यादिकोंके कँगूरोंसे सब ओर से शोभित यह नीलनाम पर्व्वतहै जोकि आगे शोभित होताहै २४ इसको परस्त्रीगामी पापी लोग नहीं देखते व वे मनुष्याधम भी नहीं देखते जो कि विष्णुके गुणगणोंको नहीं मानते २५ व वे लोग भी नहीं देखते जो किसज्जनों के सिद्ध किये हुये वेद स्मृति व पुराणों के धर्म्मको अपनी बुद्धि में टिके हुये हेतुओं के वादोंके विचारसे नहीं मानते २६ व नील बेंचने वाले लाख विक्रय करनेहारे ब्राह्मण होकर घृत तैल लवणादि रस बेंचने वाले व मदिरा बनाने वाले भी नहीं देखते २७ व जो रूप सम्पन्न कन्या को अच्छे कुलीन गुणी पुरुषको नहीं देता पिता

होकर द्रव्य के लोभ से बेंच डालताहै वह भी महापापी इस को नहीं देखता २८ व जो पुरुष कुल शीलवती पतिव्रता स्त्री को दूषित करता है व जो मीठी बस्तु आपही खाताहै बन्धुओं को नहीं देता २९ ब्राह्मणके अर्त्थ जो माया करताहै वा अपनेलिये अन्यभोजन बनाताहै व ब्राह्मणकेलिये और वा शक्कर खीर आदि केवल अपनेही लिये बनाता है उस में अतिथियों का भाग नहीं लगाता ३० व जो सन्ध्या समय में भी आये हुये अतिथियों का अपमान करते कुछ नहीं देते खिलाते पिलाते जो अन्तरिक्षमें भोजन करते हैं व जो विश्वासघात करते हैं ३१ व जो श्रीरघुनाथजी से पराङ्मुख होते हैं हे महाराज! ये सब मनुष्य इस नील पर्व्वतको नहीं देखते यह नील गिरिवर पुरुषोत्तम जगन्नाथजीसे शोभित है ३२ व हम सबोंको दर्शनमात्र से पवित्र करता है यहां देवताओं के मुकुटों से पूजितचरण पुरुषोत्तमजी सदा टिकेरहते हैं ३३ व पुण्यवानों के दर्शनके योग्यहैं इसमें उनको पुण्यदेतेहैं वेदलोग नेतिनेति कहकर जिनको कहतेहैं पर नहीं जानतेहैं ३४ व जिनके पादकीरज ऐसी दुर्ल्लभ है कि इन्द्रादि देवताओंको ढूंढ़े नहीं मिलती व जिनको वेदान्तादि शास्त्रों से जो पण्डित न्यून नहीं हैं वेही जानते हैं ३५ वे श्रीमन्महाराज पुरुषोत्तमजी यहां निवास करते हैं, हे महाराज! इस पर्व्वतपर चढ़कर पुरुषोत्तमजीके नमस्कार कर उनकी पूजा अच्छे प्रकार सुकृतादिकों से करके ३६ नैवेद्य भोजनकरके प्राणी चतुर्भुजहोजाताहै इस बिषयमें पण्डितलोग यह पुराना इतिहास कहतेहैं ३७ हे महाराज! सब आश्चर्य्यमय वह इतिहास सुनो वह सकुटुम्ब रत्नग्रीव राजाका वृत्तांत है ३८ जिसने कि चतुर्भुजादिक पाया जो देवताओं को व दानवों को दुर्ल्लभ है हे महाराज! लोकों में प्रसिद्ध एक काञ्चीनामपुरी है ३९ जिसमें महाधन धान्य बाहनादि सहित व परिवार सहित लोग बसते थे जिसमें अबभी षट्कर्म्म करनेमें निरत श्रेष्ठ ब्राह्मण लोग बसतेहैं ४० जो कि सब प्राणियों के हित करनेमें लगेरहते हैं व श्रीरामचन्द्र जी की भक्तियोंमें लालसा रखतेहैं व क्षत्रियलोग ऐसे रहते हैं जो रणकरते हैं व समरसे कभी भागते नहीं ४१

व परस्त्री परधन परद्रोह से पराङ्मुख रहते हैं व शुभवृत्तिवाले
वैश्य लोग लेन देन करनेसे ब्याज लेते व खेती वाणिज्य करते ४२
व श्रीरघुनाथजी के चरणकमलों में प्रीति सदा करतेहैं शूद्र लोग
ब्राह्मणोंकी सेवाकरने में अपने दिनरात्रि बिताते हैं ४३ व जिह्वाके
अग्रभाग से सब वहाँ के बासी राम २ करतेहैं व कोई मनुष्य स्वभा-
वही से मनसे भी पाप नहीं करते ४४ दान दया इन्द्रियों का दमन व
सत्य ये सब उन लोगोंमें नित्य टिके रहते हैं वहाँ कोई भी धर्म्मा-
त्मा नर पराया अपवाद नहीं कहता ४५ व न कोई पराये धनमें लोभ
करते न पाप करते इन प्रजाओं का पालन महाराज रत्नग्रीव कर-
ताथा ४६ व प्रजाओंसे छठाँभाग लेताथा और कुछ नहीं क्योंकि
लोभ से विवर्जित है इसप्रकार धर्म्म से प्रजाओं को पालतेहुये
४७ व सब भोगविलास करतेहुये राजाको बहुत वर्ष बीतगये एक
समय पातिव्रतमें परायण पतिव्रता विशालाक्षी अपनी पत्नी से राजा
रत्नग्रीवजी यह बोले कि ४८ हे विशालाक्षि! प्रजारक्षाकरने के धु-
रन्धर बहुतसे पुत्र हमारे तुम्हारे संयोगसे हुये ४९ व परिवारभी
हमारे बहुतहै सोभी रोगरहित हमारे गजपर्व्वताकार व घोड़े पवन
के तुल्य वेगवाले ५० व रथ सुन्दर घोड़ोंसेयुक्त हमारे नि रहते
हैं महाविष्णुजी के प्रसादसे हमारे कुछ भी कम नहीं है ५१
हमारे मन में एक मनोरथ रहताहै वह यहहै कि हमने कोई
शोभन तीर्थ नहीं किया ५२ जोकि गर्भवासको निवारणकरे व
विन्द भगवान् के रूपसे शोभितकरे देखतेही देखते हम बनाय वृद्ध
हुये व देह बनाय शिथिलहुआ ५३ इससे अबआदरसे किसीमनो
हर तीर्थकी सेवाकरेंगे क्योंकि जो नर जन्मपर्य्यन्त अपने पेटही
को भरता रहताहै ५४ हरिकी पूजा कभी नहीं करता वह नर
समानहै इससे हे भद्रे! राज्यकाभार पुत्रको देकर सहित कुटुम्ब हम
तीर्थयात्रा किया चाहते हैं ऐसा विचारकर श्रीहरिका ध्यान करता
हुआराजारात्रिमें ५५।५६ सोरहा तब स्वप्नमें उसने एकतपस्वीश्रेष्ठ
ब्राह्मणको देखा प्रातःकाल उठकर स्नान सन्ध्या वन्दनादि क्रिया
करके ५७ सभामें अपने मन्त्रियोंकेसाथ सुखसे राज्यसिंहासनपर

बैठा तबतक दुर्बल देह धारण कियेहुये एकतपस्वी ब्राह्मणको देखा ५८ जोकि जटावल्कल धारण किये कौपीन पहिने हाथमें एक छड़ी लियेथा व अनेक तीर्थोंकी सेवाकरने से जिसका शरीर पुण्य होगया था ५९ महाभुज राजाने उसे देखकर शिर झुकाकर प्रणाम किया व प्रहृष्टात्मा होकर महीपतिने अर्घ्यपाद्यादिक सब ब्राह्मणको दिया ६० जब सुखपूर्व्वक वे ब्राह्मणदेव आसनपर बैठे व अच्छेप्रकार मार्ग्गका श्रम मिटाचुके तब राजाने उस प्रसिद्ध ब्राह्मणसे पूछा कि हे स्वामिन्! आपने अपने दर्शन से हमको पवित्र किया सो क्यों न हो महात्मालोग दीनोंको पावनही करनेकेलिये आदरसे उनके गृहोंको जाते हैं ६१ आपलोग सबकहीं जातेरहतेहैं व समाधि ध्यानमें तत्पररहते हैं व सब तीर्थों में स्नान करनेसे पुण्यात्माहो निर्म्मलमन होजाते हैं ६२ इससे हे विप्रजी ! कहिये अब अनाथवृद्धहुये हमारे लिये गर्भवाससे निवारणकरने के लिये कौनदेवहै व कौन समर्त्थ तीर्थहै तुमलोग सर्वगत व श्रेष्ठहो वसमाधि व ध्यानमें तत्परहो ६३ सो हे सर्व्वतीर्त्थ जाननेमें विचक्षण! श्रद्धासे श्रवणकरतेहुये हमसे बिस्तार सहित ६४ प्रसन्नहोकर कहो तब वे ब्राह्मणदेवबोले कि हे राजन् ! सुनो जो तीर्त्थसत्तम है कहते हैं जो तीर्थसेवन तुमने पूछा ६५ व किस देवदेवकी सेवा से गर्भबाससे निवारण होता है उनको भी बताते हैं संसार के ज्वरके नाशक श्रीरामचन्द्रजी सेवा करने के योग्यहैं ६६ सो भगवान् पुरुषोत्तम पूज्यहैं व सर्वपापोंको नाश करनेवाली बहुतसी पुरी हमने देखाहै ६७ व अयोध्या सरयू तापी व हरिद्वार अवन्तीपुरी बिमलकाञ्चीपुरी सागरगामिनी नर्म्मदा नदी ६८ गोकर्ण हाटकेश्वर हत्याकोटिहरण देखनेवाले मनुष्योंको मोक्ष देनेवाला मल्लिकानाम महापर्वत ६९ जिसपर जाकर स्नानकरने से मनुष्योंकी मलिनता जातीरहतीहै व निर्म्मलता होजातीहै ये तीर्त्थ हमने पापहारी देखे ७० व सुरासुरों से सेवित हमने द्वारावती पुरी भी देखी जहाँ कि गोमती नदी बहती है जिसका जल साक्षात् ब्रह्मरूपहै ७१ जहाँका शयन करना श्रीहरिमें लय होनाहै व मृतकहोना मोक्षहै यह श्रुतिहै जहाँ बसतेहुये लोगों के

ऊपर कलियुग अपना प्रभाव नहीं करसक्ता ७२ जहाँके पाषाण सब चक्राङ्कितहैं व मनुष्यभी सब जहाँ चक्राङ्कितही हैं पशु कीट पतंग पक्ष्यादि सब जहाँ चक्रशरीरी हैं ७३ व सबलोकों के एक पालक त्रिविक्रम भगवान् जहाँ सदा निवास करते हैं वह पुरी हमने अपने नेत्रों से देखी ७४ सब हत्या मिटानेवाला कुरुक्षेत्रतीर्थभी हमने देखा है जहाँ कि स्यमन्तपञ्चकनाम महापातकनाशन एक तीर्थ है ७५ वाराणसीपुरी हमने देखी है जिसमें विश्वनाथजी निवास करते हैं व जहाँ वे सब प्राणियों को ब्रह्मसञ्ज्ञक रामतारक मन्त्र सुनाया करते हैं ७६ जहाँ मरेहुये कीट पतंग भृंग पश्वादिक वा असुरयोनिवाले दुष्ट दुराचारी भी अपने कर्म्म के सम्भोग के सुखोंको छोड़कर सब दुःखों से रहितहो कैलासको चलेजाते हैं ७७ जिस वाराणसीपुरी में एक उत्तरवाहिनी मणिकर्णिकाहै जोकि पाप करनेवाले मनुष्यों के भी संसार बन्धनको काटती है ७८ वहाँ भुजगहारी सर्प्पभूषण कुण्डलधारी गजचर्म्मविधारी दुःखहारी शिवजी बसते हैं ७९ इसपुरी में कालभैरवनाम यम शासन करते हैं इस लिये दण्डधारी भी यमराज वहाँ के निवासीजनों की वार्त्ता नहीं करते ८० विश्वेश्वर जी से चिह्नित ऐसी काशीपुरी हमने देखी है हे भूप ! और भी बहुत से तीर्थ हमने देखे हैं ८१ ॥

चौ० । परयक महाचित्र यहि गिरिपर । जो देखासो कतहुँ न नरवर ॥
जासु नाम पुरुषोत्तम पावन । सो सेवाकेयोग्य सुहावन १ । ८२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेब्राह्मणसमागमे सप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

दो० कहा अठरहें महँ चरित भिल्ल चतुर्भुज होन ॥
जो पुरुषोत्तम दर्श सों भये सकल सुखभोन १

वह ब्राह्मण राजा रत्नग्रीव से फिर बोला कि हे राजन् ! पर्व्वत म नीलपर जो वृत्तान्त हुआथा उसको सुनो जिसमें श्रद्धा से पुरुष सनातन ब्रह्ममें मिलजाते हैं १ हम पर्य्यटनकरतेहुये ...थ गंगासागरके जल से प्रक्षालित नीलनाम पर्व्वतपर

गये २ वहां हमने पर्व्वत के आगे धन्वा बाण धारणकिये चतुर्भुजी मूर्त्तिवाले मूलफल भक्षण करके निर्व्वाह करतेहुये भिल्ल देखे ३ तब हमारे मनमें महान् संशयहुआ कि ये मनुष्य धनुर्व्बाण धारण किये चतुर्भुजी कैसे दिखाई देते हैं ४ यह तो विजयात्मा वैकुण्ठ-वासियों का रूप दिखाई देताहै ब्रह्मादिकोंको भी दुर्ल्लभ यहरूप इनलोगों ने कैसे पाया ५ ये तो शङ्ख चक्र गदा पद्म धन्वा बाण हाथों में लियेहुये बनमाला पहिने बिष्णुभक्तोंकेही समान समीप में दिखाई देते हैं ६ तो हे नृप! संशययुक्त चित्तहमने उनसे पूँछा कि तुमलोग कौनहो व तुमलोगों ने चतुर्भुजी मूर्त्तियां कैसे पाई ७ तब उनलोगों ने हमारीओर मुखकर बहुत हँसकर आपस में कहा कि देखो यह ब्राह्मण पिण्डका उत्तम माहात्म्य नहींजानता ८ उनलोगों का यह महावाक्य सुनकर पूँछा कि पिण्ड कौन है व किसको दिया जाता है उसे हमसे चतुर्भुजी शरीरवाले धर्म्मिष्ठ तुमलोग कहो ९ तब हमारा बचन सुनकर उन महात्माओं ने चतुर्भुजादि होनेका सब वहांका वृत्तांत कहा १० किरात बोले कि हे ब्राह्मण! हमलोगों के वाक्य सुनो हमलोगों के एक बहुतछोटा बालक था वह नित्य जामुनआदि के फल खाताहुआ खेलाकरै ११ सो एकसमय खेल-ताहुआ वह बालक अन्य बालकोंके साथ मनोरम इस पर्व्वत के शृङ्गपरचढ़गया १२ तब वहां उसने गारुत्मतादि मणियों से खचित सुवर्णकी दीवारों से बनाहुआ एक अद्भुत देवालय देखा १३ जो कि अपनी दीप्ति से सूर्य्य के समान अन्धकारकी पंक्तिको बिदारण करताथा उसे देख वह बड़े बिस्मयको प्राप्तहुआ कि यहक्या है किस का गृहहै १४ तब उसने कहा कि हम इस किसी महात्मा के स्थान को देखें यह चिन्तनाकरके बहुत भाग्यके बशसे वह मन्दिर के भी-तरचलागया १५ वहां उसने सुरासुरों से नमस्कारकियेहुये देवदे-वेशको किरीट हार केयूर कण्ठा माला से बिराजित १६ मनोहर सुनि-र्म्मल दो कर्णभूषण धारण किये चरणकमलों में तुलसी के गन्धसे मतवाले भ्रमरों से लपटेहुये १७ शङ्ख चक्र गदा चाप पद्मादि मू-र्त्तिधारणकियेहुओं से उपासित चरण कमल व लक्ष्मी नारदादिकों

से अच्छेप्रकार सेवित १८ देखा वहां कोईकोई तो गाते कोई ना-
चते कोई हँसते कोई सबलोकों से बन्दित महाराजको अद्भुत
रीतिसे तृप्तकरते १९ श्रीहरिको देखकर हमारा वह बालक बनाथ
समीप चलागया तब देवगण धूपदीपादिकों से पूजाकरके २० फिर
लक्ष्मीनाथजी के प्रिय करने के लिये नैवेद्य लगाकर नीराजनकर
आदर से महाराजकी कृपाको देखतेहुये अपने अपने गृहोंकोचले
गये २१ व महाभाग्यके बशसे वहां उस लड़केने नैवेद्यका एकभात
का सीथ पड़ाहुआपाया जो कि ब्रह्मादिदेवोंको भी दुर्ल्लभथा व
मनुष्यों को तो अतिदुर्ल्लभ था २२ सो उस बालक ने श्रीमूर्त्तिके
दर्शन करके वह भात का सीथ खा लिया कि उस सुन्दर बालकने
चतुर्भुजी मूर्त्ति पाई २३ जब वह गृहको आया तो हम लोगोंने
देखा कि इसने चतुर्भुजता कहांपाई जिसमें शङ्ख चक्रादिकोंको
धारणकिया २४ तब हम लोगोंने पूंछा कि तेरा यह अद्भुतरूप कैसे
होगया तब वह हम लोगोंका बालक हम लोगों से परम अद्भुत
वचन बोला कि २५ हम आज इसपर्ब्बतके ऊपर एकशृङ्गपर चढ़
गये थे वहां देवों के ईश्वरको देखा व वहां नैवेद्यका एक मनोहर सीथ
हमने पड़ा पाया २६ उसके खातेही हमारा ऐसा रूप चतुर्भुज विस्मय
युक्त होगयाहै २७ चतुर्भुजता देखकर व उसके वचनसुनके बिस्मित
होकर हम लोगोंने भी उन परम दुर्ल्लभ देवदेवके दर्शन किये २८ व
सब स्वादुयुक्त वहां भात इत्यादि भोजन किया व देवकी कृपासे हम
लोग भी चतुर्भुजहोगये हे सत्तम ! तुमभी जाकर देवके दर्शनकरो २९
चौ० तहँ भोजनकरि सीथमहीसुर । होहु चतुर्भुज कहत अहैं फुर ॥
द्विजवर तुम पूँछ्यहु जो कहऊ । सो हम कहा बहुरिका चहऊ ।३०
इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेऽष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

दो० उन्निसयें महँ कह सकल तीर्त्थयात्र विधि ठीक ॥
रत्नग्रीव नृप तीर्त्थ हित चल्यो यथा सो नीक १

वह ब्राह्मण राजा रत्नग्रीवसे बोला कि हे श्रेष्ठनाथ ! उन भिल्लों
के ऐसे वाक्य सुनकर हम अत्याश्चर्य्य मानकर बहुत हर्षितहुये १

व गंगासागरके संगम में स्नानकरके पुण्य शरीरहो मणि माणिक्यों से चित्रविचित्र उस शृंगपर हम भी चढ़े २ व वहां देवदेवादिकोंसे वन्दित महाराजको देखा व नमस्कार करके कृतार्थहुये व वहांके भातके भोजनसे ३ शङ्ख चक्रादिकों से चिह्नित चतुर्भुजत्व पाया व पुरुषोत्तम भगवान्के दर्शन से फिर हमको गर्भबास नहीं हुआ ४ इससे महाराज तुम भी नील नाम पर्व्वतपर जावो व गर्भदुःखसे छूटकर अपनेको कृतार्थकरो ५ धीमान् ब्राह्मणोत्तमके ऐसे वचन सुनकर हर्षितमनहो राजा रत्नग्रीव ने उन मुनि से तीर्थयात्रा का विधान पूँछा ६ राजा बोला कि हे बुद्धिमन् ब्राह्मणश्रेष्ठ ! हे पापरहित ! तुमने बहुत अच्छा व सुननेवालों के पापों का नाशक पुरुषोत्तम माहात्म्य हमसे कहा ७ अब उस तीर्थयात्रा का विधान वेदके प्रमाण समेत कहो किसविधिसे तीर्थ करने से महात्मालोग महाफल पातेहैं ८ यह सुन ब्राह्मण बोला कि हे राजन् ! सुनो तीर्थयात्रा विधि अतिशुभ कहतेहैं जिस विधिसे सुरासुरों से नमस्कार कियेगये देवदेव पुरुषोत्तम मिलते हैं ९ चाहे वृद्धावस्था को प्राप्त हो वा युवावस्था को प्राप्त हो पर यह जानले कि मृत्यु को कोई रोंक नहीं सक्ता इस से श्रीहरिके शरण में जावे १० उन के कीर्त्तन करने में उनकी कथाश्रवण करनेमें उनके बन्दन व पूजन में ही बुद्धि करनी चाहिये अन्यत्र वनितादिकों में नहीं ११ हे नरवर ! इससबको नश्वर व क्षणस्थायी व अतिदुःखदायी देखकर जन्मदुःख जरादिकों के अतिक्रमण करनेवाले भक्तवल्लभ श्रीअच्युत भगवान् को १२ क्रोधसे कामसे भयसे बैरसे लोभसे व दम्भसे पुरुषको चाहिये कि भजे क्योंकि जिसी किसीरीति से भजताहुआ पुरुष दुःख नहीं भोगता १३ वे श्रीहरि पापवर्जित साधुओंकेसंगसे जानेजातेहैं जिन साधुओं की कृपासे पुरुष दुःखरहित होजातेहैं १४ हे महाराज! काम लोभ वर्जित रोगरहित साधुलोग जो कुछ कहतेहैं वह संसार से निवृत्त करनेवाला होताहै १५ श्रीरामचन्द्र में परायणसाधु तीर्थों में मिलतेहैं जिनका दर्शन पुरुषोंके पापराशिके भस्म करनेकेलिये अग्नि के समान होताहै १६ इससे संसार से डरतेहुये मनुष्योंको तीर्थों में

अवश्य जाना चाहिये क्योंकि उन तीर्थों में पुण्यजलहोताहै व उन में साधुओं की श्रेणी विराजती रहती है १७ वे तीर्थ विधिपूर्व्वक दर्शन करने से पाप को हरतेहैं हे नृपशार्दूल! उस विधि को सुनो व करो १८ प्रथम स्त्री पुत्रादि कुटुम्ब में विराग उत्पन्न करताहुआ पुरुष उसको मिथ्या जान कर श्रीहरि को मन से स्मरण करे १९ फिर राम राम कहताहुआ गृह से एक कोस बाहर चलाजाय वहाँ पर पवित्र जलादि से स्नान करके बार बनवाडाले २० क्योंकि जब मनुष्य तीर्थादि शुभ कर्म्म करने के लिये चलते हैं तो उनके सबपाप बालोंमें आकर टिकते हैं इस से उनको बनवाडालना चाहिये २१ इसकेपीछे बिना गाँठियोंका एक दण्डा कमंडलु व मृगचर्म्म धारण करे व लोभ छोड़कर तीर्थ के इसवेषको धारणकरले २२ विधिसे तीर्थकों जातेहुये मनुष्योंको तीर्थ का फल विशेष मिलता है इससे सब यत्नों से तीर्थयात्रा विधिको करे २३ जिसके हाथ पैर मन अच्छे प्रकार उसके वशमें रहते हैं व विद्या तप और कीर्त्ति भी जिसमें होती है वह तीर्थ का फल भोगताहै २४ ॥

दो० हरे कृष्ण विष्णो हरे कृष्ण गोप भगवान ॥
भक्तबछल शरणार्त्तिहर भवसों मामवआन १ । २५
इमि रसनासों कहत हरि मनसों सुमिरत जात ॥
पैदर तीर्थ करै चलै सकल लहै फल ब्रात २ । २६

घोड़ेपर चढ़कर जानेसे पुरुष आधा फल पाताहै व जूता पहिन कर जानेसे चौथाई बैल जुतीहुई लढ़ीपर चढ़कर तीर्थयात्राको जाने से गोवध करनेका पाप पाताहै २७ किसी अन्यके धन से जाने से तृतीयांशफल मिलताहै व सेवकहोकर जानेसे आठवाँभाग मिलताहै व बिनाइच्छा के तीर्थ में जाने से आधाफल मिलता है २८ जैसे कैसेबने तीर्थयात्रा करनीचाहिये क्योंकि तीर्थ में जाने से पापका नाशहोताहीहै यह बिशेषता देखीगईहै २९ तीर्थ में जाकर वहाँ के साधुओं के नमस्कार करना चाहिये व उनके चरणोंकी बन्दना व सेवन करना चाहिये क्योंकि उन्हींलोगों के द्वारा पुरुषोत्तम जी में भक्ति मिलतीहै ३० यह तीर्थ विधिसंक्षेप रीति से कहा वि

स्तार से नहीं इससे इस विधि से तुम भी पुरुषोत्तमजीके दर्शन को जावो ३१ हे महाराज ! सन्तुष्ट होकर तुमको महाराज पुरुषोत्तम जी अचल भक्ति देंगे जिस से कि क्षणमात्र में संसारसे तुम्हारा निर्व्वाह होजायगा ३२ सब पापनाशन तीर्थयात्रा विधि सुनकर हे पुरुष श्रेष्ठ ! उग्रपापोंसे छूटजाताहै ३३ सुमतिजी महाराज शत्रुघ्नजी से बोले कि उनब्राह्मणदेव के ऐसे वाक्य सुनकर महात्मा राजाने उनके चरणों की बन्दनाकी व उस तीर्थ के दर्शन करने की अभिलाषा से वह विह्वल मन हुआ ३४ व सम्मन्त्र करने में बड़े विज्ञतम अपने प्रधान मन्त्री को आज्ञादी कि तीर्थयात्रा करने के लिये सबको साथ लेजानेके लियेमेरीमनसा है ३५ भोमन्त्री ! सब पुरवासियोंको हमारी आज्ञासे आदेशकरो कि पुरुषोत्तम जीके चरणारविन्दों के दर्शनके लिये सबचलें ३६ जोलोग हमारे पुरमें बसतेहों व जो कोई अन्य नौकरचाकर हमारे आज्ञाकारी हैं वे सब हमारे साथ इसपुरी से पुरुषोत्तमजी के यहाँ को चलें ३७ व जो पुरुष हमारे वाक्यका उल्लङ्घन करके गृहमें रहजायँगे उन अधर्म्मकारियोंको हम यमदण्डसे दण्ड देंगे ३८ उन पुत्र समूहों से क्या है व उन दुष्ट बान्धवोंसे क्याहै कि जिन्होंने अपने नेत्रोंसे श्रीपुरुषोत्तमजीके दर्शन नहीं किये ३९ जिनके पुत्र व पौत्र श्रीहरिके शरणको न गये उनकी सन्तति शूकरियोंके झुण्डके समानहै जो सदा विष्ठाभोजन करतेहैं ४० जो देव नाममात्र के उच्चारणसे सबको पवित्र करनेमें समर्थहै उसके चलकर बहुत शीघ्र नमस्कारकरो अये हमारे शुभलोगो ! ४१ भगवान्के गुणों से गुम्फित इस मनोहर वाक्यको सुनकर उत्तमनाम महामन्त्री जिसका सत्यही उत्तमनाम था बहुत हर्षितहुआ ४२ व एक हाथीपर डङ्काधरवाकर उसपर एक बजानेवालेको चढ़वाकर तीर्थयात्राकी इच्छाकियेहुये राजाने जो आज्ञादीथी डङ्काबजवाकर पुरीभरमें पुकरवादिया ४३ कि अयेलोगो! राजाकेसाथ नीलाचलको शीघ्र चलो व पापहारी श्रीपुरुषोत्तम जी के दर्शनकरो ४४ व सब संसारसागरको गोपदकेसमान करो व शङ्खचक्रादिक चिह्नोंसे अपने शरीरोंको युक्तकरो ४५ इत्यादि

जो २ राजाने कहा था सब श्रीरघुनाथजीके ध्यानसे आनन्दित चित्तवाले उस महामन्त्रीने ढिंढोरा पिटवाकर पुकरवादिया ४६ उसे सुनकर सब प्रजा आनन्दरसमें मग्नहोकर अपने निस्तारकरनेवाले पुरुषोत्तमजीके दर्शन मनसेचाहनेलगी ४७ प्रथम सब ब्राह्मणलोग सुन्दर वेषधारणकरके अपने शिष्यादिकोंको संगलिये राजाको उत्तमवर युक्त आशीर्व्वाददेतेहुये पुरीसे बाहरनिकले ४८ फिर अस्त्र शस्त्र धारणकिये वीरक्षत्रिय लोगचले तदनन्तर नानाप्रकारकी उचितबस्तु लियेहुये वैश्यलोग निकले फिर संसारके निस्तारसे हर्षित शरीर शूद्रलोग चले ४९ फिर धोबी चमार नट किरात राजलोग दरजी तँबोली आदिचले ५० फिर गानेबजानेवाले लोग व वस्त्र रँगनेवाले रँगरेज़ छीपी तेलबेंचनेवाले तेली व इसीप्रकार बस्त्रों के बेंचनेवाले चले ५१ सूतलोग हर्षयुक्त होकर पुराणोंकी वार्त्ता कहते हुये चले व मागध वन्दीगण आदि राजाकी आज्ञासे चले ५२ फिर जो वैद्यकी करनेसे जीतेथे तथा जो जुआपाशखेलने में चतुरथे जो पाक करनेवाले लोगथे व हास्यकरनेमें निपुण भांड़लोग ५३ इन्द्रजाल विद्याकरनेवाले व वार्त्ताकरने में बड़े चतुर दलाल लोग ये सब महाराजकी प्रशंसाकरतेहुये पुरकेबीचसेनिकले ५४ व राजाने भी प्रातःकालकी शौचस्नानादि क्रियाकर सन्ध्याबन्दनादि करके उन तपस्वी श्रेष्ठ ब्राह्मणदेवको बुलवाया जिनके सम्मतसे यह सब हुआ था ५५ फिर उन्हींकी आज्ञासे महाराज पुरकेबाहर निकले सब लोगोंके मध्यमें राजा नक्षत्रोंके बीचमें चन्द्रमाके समान शोभित हुआ ५६ फिर एक कोशभरजाकर वहां ठहरकर विधिपूर्व्वक मुण्डनकराकर दण्ड कमण्डलु व मृगचर्म्म धारणकिया ५७ शुभ वेषसे संयुक्त श्रीहरि के ध्यानमें परायण काम क्रोधादि से रहित मनहो महायशस्वीहो चले ५८ तब ॥

चौ० दुन्दुभिभेरिपणवअरुआनक । बीणाशङ्खआदिकेवादक ॥
लगेबजावन निजनिज बाजा । सोसुनिमुदितभयो महराजा १ । ५९
जय देवेश शत्रुगणनाशक । पुरुषोत्तम निजरूप प्रकाशक ॥

दर्शनदेहु हमें करुणाकर । कहत चले इमिसकलमनुजवर २ । ६०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेरत्नग्रीवस्यतीर्थप्रयाणनाम एकोनविंशोऽध्यायः १६ ॥

बीसवां अध्याय ॥

दो० त्रिशयेंमहँ कह विप्रवर शालग्राम महात्म ॥
तहँ यक व्याधाकीकथा लह्यो जौन परमात्म १

सुमतिमन्त्री शत्रुघ्नजीसे बोले कि सब लोगोंके साथ जब राजा रत्नग्रीवचला तो मार्गमें महाभाग्यवाले वैष्णव व गानेवालोंसे सब कृष्णचन्द्रजीका कीर्त्तनसुना १ व राजाने मार्ग्गमें गोविन्दका कीर्त्तन सुना जोकि लोग कहतेजातेथे कि जयमाधव भक्तोंके शरण्य जय पुरुषोत्तम २ मार्ग्गमें अनेकतीर्थोंको करतेहुये व उनके महोदयको देखतेहुये व उन तपस्वी ब्राह्मणके मुखसे सबकी महिमा सुनतेहुये चले जाते ३ व विचित्र श्रीविष्णुभगवान्की वार्त्ताओंसे विमोदित मन राजा रास्ते रास्ते में गायकोंसे श्रीमहाविष्णुभगवान्जी को गवाता चलाजाता था ४ दीन अन्ध कृपण व लूले लँगड़ों की इच्छाके अनुकूल बुद्धिमान् जितेन्द्रिय महाराज दानदेताजाताथा ५ व अनेक तीर्थोंमें विरत अपने आत्माको कल्याणयुक्त करतेहुये श्रीहरि के ध्यान में परायण होकर अपने लोगोंकेसाथ आनन्दसे राजा जाताथा ६ जाते हुये राजाने आगे सबपापनाशनेवाली चक्रोंसे चिह्नित पत्थरों से युक्त व मुनियों के मनके समान निर्म्मल जलसे भरीहुई एक नदी को देखा ७ जोकि अनेक मुनिवृन्दोंकी बहुत श्रेणियोंसे विराजित व सारसादि पक्षियों के शब्दोंसे उपशोभित होरहीथी ८ ऐसीनदी को देखकर राजाने सब धर्म्मों के जाननेमें परमकोविद ब्राह्मणों में श्रेष्ठ अनेक तीर्थोंके माहात्म्यों के विशेष ज्ञानसे युक्त उन तपस्वी जीसे पूँछा ९ कि हे स्वामिन् ! मुनिवृन्दोंसे सेवित यह कौनसी पुण्य नदी है जोकि हमारे मनको प्रमोद के भारसे युक्त करती है १० उन धीमान् राजराजके ऐसे वचन सुनकर वे विद्वान् ब्राह्मणजी उस तीर्थ का उत्तम माहात्म्य कहनेलगे ११ कि हे राजन् ! सुरासुरों से सेवित व अपने पुण्यजलके प्रवाह से पापसमूहको नाशकरनेवाली यह

गण्डकीनाम नदीहै १२ जोकि दर्शन करनेसे मानसी पापका नाश करती है व स्पर्श करनेसे कर्म्मसेउत्पन्न पापको भस्मकरती है व अपने जलके पीनेसे वाचिक पापके समूहको नष्ट करतीहै १३ पूर्व्व कालमें प्रजाओं के नाथ ब्रह्माजीने प्रजाओं को पाप युक्त देखा इससे उनके तारनेकेलिये अपने गण्डस्थलसे अनेक जल उत्पन्न करके पाप नाशनेवाली इसनदीको बनाया १४ सुन्दर तरंगवाली पुण्यजल वाली इसनदीका स्पर्श जो नर करते हैं चाहे बड़े बड़े भी पाप किये हों पर फिर गर्भवासी नहीं होते १५ इसमें उत्पन्न जो पाषाणहैं वे सब चक्रके चिह्नसे अलंकृत होनेके कारण अपने २ रूप धारण किये साक्षात् भगवान्की मूर्त्तियाँ हैं १६ इसीसे श्रीमहा विष्णु भगवान्का वचन है कि जो कोई इस नदी की शिला को चक्र के साथ नित्य पूजेगा वह फिर कभी माता के उदरमें न बसे-गा १७ परन्तु जो नर श्रेष्ठ बुद्धिमान् इस नदी से उत्पन्न शालग्राम की श्रेष्ठ शिला का पूजन करे उस को चाहिये कि आचार युक्तरहे व लोभ मोह से भी अलग रहे १८ व जो परस्त्री परद्रव्य से विमुखहो उसी मनुष्यको गोमतीचक्र सहित शालग्रामकी मूर्त्तिका पूजनकरना चाहिये १९ द्वारावतीपुरी में उत्पन्न चक्र व गण्डकी नदी में उत्पन्न शिला पुरुषों के सैकड़ों जन्मों के इकट्ठे किये हुये पापोंको एक क्षण भरमें हरलेती है २० चाहे सहस्रों पाप तब तक करचुकाहो पर जैसे ही उसने शालग्राम शिला का जल पानकिया कि तुरन्त वह नर पवित्र होजाताहै २१ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र वेद मार्गमें स्थितहो-के व गृहस्थी में टिक करके शालग्राम के पूजने से मुक्त होजाता है २२ परन्तु जिसको स्वर्ग्ग लोक जानेकी इच्छाहो चाहे विधवाहो वा सुभगाहो कोई भी स्त्री कभी शालग्रामकी पूजा नकरै २३ क्यों-कि जन्म शील गुणादिकों से युक्तभी स्त्री जो कभी मोहवश होकर शालग्रामकी मूर्त्तिका स्पर्श करती है अपने पूर्वके किये हुये पुण्य समूह को छोड़ नरकको जाती है २४ स्त्रीके हाथों से छोड़ेहुये पुष्प जो शालग्रामकी शिलाके ऊपर पड़ते हैं तो सबसे अधिक पापहोते हैं यह उत्तम ब्राह्मण लोग कहते हैं २५ स्त्री के हाथ से चढ़ायाहुआ

चन्दन शालग्रामके ऊपर विषके समान व पुष्प वज्रके तुल्य नैवेद्य कालकूट नाम महाविष के समान होती है २६ इस से सर्व्वथा स्त्री को चाहिये कि अपने हाथोंसे शालग्रामकी पूजा तो क्या कभी स्पर्श भी न करे क्योंकि जो स्त्रियां शालग्रामका स्पर्श करतीहैं वे इतने दिनों तक नरकमें रहती हैं जितने दिनोंतक चौदह इन्द्र भोगते हैं २७ और पुरुष तो चाहे महापापीहो चाहे ब्रह्महत्यादि पापों से युक्तभी हो परन्तु शालग्राम शिलाके स्नानका जल पीकर परम गति को जाता है २८ ॥

दो० । तुलसी चन्दन चक्र दर घण्टानाद सुवारि ॥
शिला ताम्रभाजनबहुरि हरिस्मरणश्रुतिचारि १ । २९
चरणामृत नव वस्तु सों होत पापचय हारि ॥
सकलशास्त्रज्ञाता सुमुनि शान्तकहतनिरधारि २ । ३०

हे राजन् ! सब तीर्थों में स्नान करनेसे व सब यज्ञों के करनेसे जो पुण्य होताहै वह चरणामृतके प्रत्येक बिन्दुकेपानकरने से मिलता है ३१ जहां पुरुषों में उत्तम लोग शालग्राम शिला का पूजन करते हैं वहां चारकोशतक सब ओर कोटि तीर्थ के समान पवित्र होजाता है ३२ शालग्राम चार छ आठ दशआदि समपूजने चाहियें परन्तु समों में दो नहीं व बिषमों में केवल एक शालग्राम पूज्यहै तीन पांच सात नव आदि नहीं यह पुराने पण्डितोंने कहाहै ३३ द्वारकापुरी में उत्पन्न गोमतीचक्र व गण्डकी नदी में उत्पन्न शालग्राम शिला जहां इन दोनों का संगमहोताहै वहां गङ्गा व सागरका सङ्गम होजाताहै ३४ व जहां ये दोनों एकत्ररहते हैं वहांकेआयुधन से रहित मनुष्यों को भी मनोहर आयु व धन देतेहैं व उनकी रक्षा करते हैं स्निग्ध मनोहर रूप व लक्ष्मी देते हैं ३५ जो मनुष्य आयुकी कामनासे व धनकी कामना से शालग्राम की पूजा करता है वह इस लोक के पदार्थ व परलोक के भी सब पदार्थ पाता है ३६ हे नृप ! मरण के समय जिस पुण्यवान् मनुष्य के मुख में तो हरि का नाम होता है और हृदय पर शालग्राम शिला ३७ व प्राण निकलने के समय भूल से भी जो शालग्राम का स्मरण करता है तो उस की

मुक्तिही होती है इसमें कुछ संशय नहींहै ३८ पूर्वकाल में श्रीभगवान् ने धीमान् अम्बरीष राजा से कहा है कि ब्राह्मण संन्यासी व शालग्राम शिला ३९ ये तीनों पृथ्वीतलपर हमारे स्वरूप जानो यह बात उन्होंने पापियों के पाप समूहों के निवारण करने के लिये कही थी ४० जो पापी लोग एकबार भी शालग्राम शिलाकी निन्दा करते हैं वे शीघ्र कुम्भीपाक नरकमें गिरते हैं व प्रलय के समय तक वहां पड़े रहते हैं ४१ पूजा करने में उद्यत पुरुष को जो कोई मूढ़बुद्धि पुरुष रोकता है उसके माता पिता बन्धु बर्ग सब नरकगामी होते हैं ४२ व जो कोई ब्राह्मणों से कहे कि शालग्राम की पूजाकरो वह शीघ्र अपने पूर्वजों सहित अपने को वैकुण्ठ को पहुंचावे है ४३ इस विषय में काम क्रोध बिवर्ज्जित विरागयुक्त मुनि लोग इस पुरातन इतिहास को कहते हैं कि ४४ पूर्व्व काल में धर्म्म रहित कीकटदेश में चण्डालों की जातिका एक शवर नाम पुरुषथा ४५ वह नित्य धन्वाबाण धारण किये जन्तुओं का बध कियाकरे तीर्थ जाने की इच्छा कियेहुये लोगों का प्राण हर लिया करे ४६ अनेक प्राणियों की हत्या करताहुआ परधन नित्यही हराकरे कामक्रोधरागादि में सदा लगारहे ४७ व प्राणियों का बधकरताहुआ भयङ्कर बन में घूमा करे विष से बुझेहुये बाण व धन्वा सदा लिये रहे ४८ प्राणीमात्रों को भयकरनेवाला वह व्याधा एक दिन घूम रहाथा व उसका काल आगया पर उग्रमन वाले उसने न जाना यद्यपि वह बनाय निकट आगया था ४९ फांसी व मुद्गर हाथों में लियेहुये लाल २ केश वाले बड़ेलम्बे नखों व लम्बे दांतोंवाले महाभयानक यमराज के दूत आगये ५० काले लोहे की बेरी लिये मोहकरातेहुये ऐसा कहते हुये कि प्राणीमात्र के भयकरनेवाले इसपापी को बांधो ५१ इस ने मन से भी कभी जीव मात्रका उपकार नहीं किया पराई स्त्री पराया धन व पराये द्रोह में युक्त रहा है ५२ इसकी बड़ी भारी जीभ हम निकालते हैं एक कहने लगा कि हम इसकेनेत्र उखाड़े लेतेहैं ५३ क्योंकि कभी इसने मन से प्राणी मात्रका उपकार नहीं किया सदा परस्त्री गमन करने परद्रव्य हरने व परद्रोहकरने

में परायण रहा ५४ एक कहने लगा कि इस पापीके हम दोनोंहाथ काटे डालतेहैं अन्य बोला कि हम इस दुष्टात्मा के कान काटे लेतेहैं ५५ ऐसे कहतेहुये दांत कटकटाते हुये अस्त्र बांधे आकर सबके सब उस दुरात्मा के समीपखड़ेहुये ५६ एक दूतने सर्प्प का रूपधारण करके उसके पद में काट खाया इससे वह देखतेही देखते मृतक होगया तब उसको लोहकी फांसी में बांधकर यमके दूत लोहे के दण्डों से व मुद्गरों से ताड़ित करने लगे ५७ व कहने कि अहोदुष्ट! तू बड़ा दुरात्मा था कि कभी तू धर्म्म में मन से भी न टिका इससे तुझे रौरव नरक में फेंकेंगे ५८ तेरी खाल मांस क्रोध युक्त बिकराल कौये खायँगे जन्म सब बीत गया तूने हरिसेवन न किया ५९ तूने पुत्र कलत्रादिकों को सबका द्रोहकरके अच्छे प्रकार सन्तुष्ट किया पापहारी जनार्दन देव का स्मरण कभी न किया ६० इस से तुझे लोहकील नाम नरकमें वा कुम्भीपाक में व रौरव नरकमें धर्म्म-राजकी आज्ञा से बहुत मारते पीटतेहुये हम सब लेजायँगे ६१ ऐसा कहकर जब यमदूतों ने लेजाना चाहा कि तबतक एक महा विष्णुजी के चरणारविन्द में परायण आगये ६२ उन महात्मा वै-ष्णवजीने यमदूतों को देखा जोकि फांसी मुद्गर दण्डादि दुष्ट आ-युध धारण किये हुयेथे ६३ व उस व्याधा को लोहेकी बेरियाओं व जञ्जीरों से बांधेहुये लेजाने में उद्यत थे बांधो २ लीलो २ काटो २ बिदारणकरो २ ऐसा कहरहेथे ६४ तब गोबिन्द पद्मनाभके चरणार-बिन्दोंमें परायण उनकृपालु वैष्णव के चित्तमें अत्यन्त कृपाआई ६५ कि यह महादुष्ट अब हमारे समीप बड़ीपीड़ा को पारहाहै इस से हम इसे यमराज के दूतों से अभी छुड़ाते हैं ६६ उस पापीके विषय में वे मुनीश्वरजी ऐसी कृपाकरके शालग्राम की शिला अपने हाथ में लेकर उसके समीपगये ६७ स्नानकराय उसका चरणामृत पुण्यदायक तुलसीपत्र से युक्त उसके मुखमें छोड़तेहुये मुनि ने कान में रामनाम बड़े ऊंचे स्वरसे कहदिया ६८ व उन वैष्णवोत्तमने तुलसी उसके मस्तकपर धरदी व शालग्राम की शिला जो कि साक्षात् महा-विष्णुकी मूर्त्ति है उसकी छातीपरधरदी व यहमन्त्रपढ़ाकि ६९ ॥

दो० । यम यातना प्रवीण यम दूत यहां सों जाहु ॥
शालग्राम शिलास्परश दहैपाप अतिदाहु १ । ७०

ऐसा उन मुनीश्वरके कहतेहुये महाअद्भुत श्री विष्णु भगवान् के गण वहांआगये क्योंकि गण्डकीनदी की शिला के स्पर्शमात्र से उसके सब पाप हरगयेथे ७१ विष्णुजीके पार्षद सब पीताम्बरओढ़े शङ्ख चक्र गदा पद्म से विराजित थे पहुँचतेही बोले कि इस वैष्णव को छोंड़ो २ किसलिये इसे पकड़ा है ७२ व महापापी उस व्याधा को छुड़ाकर बोले कि इस पुण्य शरीर धारण कियेहुये वैष्णव को तुम लोगों ने किसलिये बांधा ७३ तुमलोग किसके आज्ञाकारी हो यदि अधर्म्म प्रचारक हो तो इस वैष्णव को छोड़ो यह किसलिये पकड़ा गया है ७४ यह वाक्य सुनकर यमराजके दूतों ने कहा कि हमलोग धर्म्मराज की आज्ञा से इस पापी को लेने आये हैं ७५ क्योंकि इसने कभी मनसे भी किसीप्राणीका उपकार नहींकिया प्राणहत्या महापाप करता था इस से महादुष्ट शरीर इसका है ७६ बहुतसे तीर्थयात्रा करनेवालों को इसने लूट लिया है परस्त्री के संग नित्य भोग करतारहा इससे इसने सब पाप किये कोई पाप करने से बाकी नहीं रहा ७७ इससे इस पापी व्याधा को हम लोग लेने आये हैं आपलोगों बीरों ने अकस्मात् आकर कैसे इसे छुड़ालिया ७८ तब श्रीविष्णुभगवान् के दूत बोले कि चाहे ब्रह्महत्या कियेहो चाहे कोटि प्राणियों को मारडाला हो परन्तु जिसके शरीर में शालग्रामकी शिलाका स्पर्श होताहै उसके सब पाप क्षणमात्रमें भस्म होजाते हैं ७९ ॥

दो० । रामनाम जाके श्रवण धोखहु महँ परिजात ॥
पापदाह तिमिकरतजिमि तूलहिअनलनशात १ । ८०
जाके मस्तक तुलसिका हृदि पर शालग्राम ॥
सदामुक्त सो जासुमुख श्रुतिमहँ वा श्रीराम २ । ८१

इसी से इसके मस्तकपर देखो तुलसी धराई गई है व श्रीराम नाम सुनायागया है व शालग्राम शिला छाती पर धरीहुई है ८२ फिर अब भी कोई पाप इसके पुण्यशरीर में रहगया सबपाप समूह

भस्महोगये इस से अब यह परमस्थान को जायंगा जो पापियोंको अति दुर्लभहै ८३ दशसहस्र वर्ष तक वहांके मनोहर सुर भोगोंको भोगकर फिर काशी में ब्राह्मण का जन्म पाकर जगद्गुरुका ध्यान करके ८४ सुरासुरों को भी जो दुर्लभ लोकहै उस ब्रह्मलोकको जायगा यमराज तो क्या ब्रह्मा भी शालग्राम शिलाकी महिमा अच्छी तरह नहीं जानते ८५ जो कि देखने छूने व कभी भी पूजाकरने से क्षणमात्र में सबपापों को हरती है यह कहकर वे सब महाविष्णु के गणतो आनन्द से चुपहोगये ८६ व यमदूतोंने भी जाकर सब यमराज से कहा व श्रीरघुनाथपरायण वह वैष्णव बहुत हर्षितहुआ ८७ कि हमने इस दीन को छुड़वा दिया यह परमपद को जायगा तब देवलोकसे किङ्किणी जालों से भूषित मनोहर महाअद्भुत एक विमान वहांआया उसपर चढ़कर वहव्याधा महापुण्यवालों से सेवित स्वर्गलोक को चलागया ८८।८९ वहां बहुत दिनोंतक विपुल भोग करके फिर भूतलपर आया बड़े पवित्र कुलीन ब्राह्मण के कुल में काशीजी में जन्म लेकर ९० जगदीश्वरकी आराधनाकरके परमपद को चलागया देखो वह पापी साधुकी संगति से शालग्रामकी मूर्त्तिका स्पर्श करके ९१ महा पीड़ासे छूटकर उसपरमपद कोचला गया ॥

चौ० । भूप कहा हम तुमसन पूजा । शालग्राम केरितजि दूजा ।
याहिसुनिपापमुक्तनरहोई । भुक्तिमुक्तिपावतपुनिसोई १ ॥९२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

दो० । इक्किसयें महँकहपहुँचि नृपनहिं दर्शन पाव ॥
तब गायहु हरि कहँ यती बनि हरि रूप दिखाव १

सुमति मन्त्री शत्रुघ्नजीसेबोले कि यह गण्डकीका अतुल माहात्म्य सुनकर राजा रत्नग्रीवने अपने को कृतार्थ माना १ व उस गण्डकी तीर्थ में स्नानकर पितरों का तर्प्पण करके राजा बहुत हर्षित हुआ व उस ब्राह्मण के कहने से तब से शालग्रामकी पूजा करने लगा २ गण्डकी में से चौबीस मूर्त्तियां शालग्रामकी लेलीं व चन्दनादि पूजनों से बड़े प्रेमसे उनकी पूजाकी ३ फिर वहां दीनादिकों

को बहुत दानदेकर व ब्राह्मणों को बिशेष दान देकर राजा पुरुषोत्त-
मजी के दर्शनको चला ४ चलते २ क्रमसे गङ्गासागर सङ्गम में
पँहुचा व देखकर हर्षितहो उस अपने ब्राह्मण से बोला ५ कि हे स्वा-
मिन्! कहो कितनी दूर वह महान् नील पर्वतहै जहां कि पुरुषोत्त-
मजी का बास है जो कि सुरों व असुरों से भी नमस्कार किये जाते हैं ६ तब
रत्नग्रीव राजाका यह महाबाक्य सुनकर बिस्मय युक्तहो वह ब्राह्मण
आदर सहित राजासे बोला कि ७ हे राजन्! नमस्कार करने के
योग्य नील पर्व्वत का स्थल तो यहीहै महा पुण्य दर्शन वह तुमको
क्यों नहीं दिखाईदेता ८ फिर २ ब्राह्मणने यहकहा कि नीलपर्व्वतका
स्थल तो यही है हे राजन्! पुरुषोत्तमजीके निवाससे युक्त वह कैसे
नहीं दिखाईदेता ९ यहीं हमने अच्छे प्रकार स्नान कियाथा व यहीं
भिल्ल दिखाई दियेथे व हे राजन्! इसी मार्ग्ग होकर हम इस पर्व्वत
के ऊपर चढ़ेथे १० ब्राह्मणके ऐसे बचन सुनकर मनमें राजा दुःखित
हुआ व नीलपर्व्वतके दर्शनके लिये उसकामन उत्कण्ठितहुआ ११
व फिर राजा बोला कि हे बिप्र! पुरुषोत्तमजी क्यों नहीं दिखाई
देते व नील पर्व्वत कैसे दिखाई दे उसका उपाय हमसे कहो १२
रत्नग्रीव राजाके वचन सुनकर वह तपस्वी ब्राह्मण विस्मितहोकर
राजा से बोला कि १३ हेमहीपाल! गंगासागर के संगम में स्नान
करके जबतक पुरुषोत्तम जीके दर्शन नहों तबतक हमलोग यहींठहरे
रहैं १४ क्योंकि पुरुषोत्तम नामदेव पापहारी कहे जाते हैं इस से
शीघ्र कृपाकरेंगे क्योंकि दूसरा उनका भक्तवत्सल नामहै १५ देव-
देव शिरोमणि ये पुरुषोत्तम जी भक्तोंका त्याग नहींकरते उन्हों ने
अनेक भक्तोंकी रक्षाकीहै इससे अब उनके यशको गावो १६ यह
बचन सुनकर व्यथितमनहो राजा गंगासागर संगममें स्नानकरके
पीछे उपवासकरके वहांबैठे १७ व कहा कि जब पुरुषोत्तमजी कृपाकरें-
गे तब पूजाकरकेही भोजनकरेंगे अन्यथा ऐसेही बिनाभोजन पान
कियेही बैठेरहेंगे १८ यह नियमकरके हरिके गुण गातेहुये राजा
गंगासागरके तीरपरबैठा १९ व यह स्तोत्र जपने लगा ॥
चौ० । दीनदयाकरजयजयप्रभुवर । निजजनदुखहरजयकरुणाकर ॥

भक्तजनार्ति विनाशन हारे । दुष्टदमनकृत हर्षहमारे १ । २०
विप्र शाप हत दुःखित देखी । अम्बरीष नृप निज जन लेखी ॥
निजकर चक्र सुदर्शन धारी । रक्षाकीन जठर बलिहारी २ । २१
पितकृत शूलपाशदुखपीड़ित । दैत्यराज प्रह्लाद सुईड़ित ॥
धरिन्द्रसिंहतनु तापित देखत । रक्षाकीनस्वीयजनलेखत ३ । २२
ग्राहबदनगतअतिदुखव्याकुल । अतिबलदन्तिराजभोआकुल ॥
त्राहित्वखिकरुणारसयुतमानस । गरुडारूढ़भयहुकरिसाहस ४ । २३
पुनिखगपतितजिसजिह्वेपदचर । चक्रपाणि गहिवेग वेगधर ॥
नक्रबदन सोंकीन विमोचन । हत्योग्राहनिजकरक्रियशोचन ५ । २४
जहँ जहँ सेवक दुखित तुम्हारे । तहँ तहँ धरत देह तुम न्यारे ॥
पालन करत सदा निजदासा । पापहारितवचरितबिलासा ६ । २५
दीननाथसुर शिर गंतहीरा । तव पदतल गत लषत सुधीरा ॥
पापकोटि दाहक जन प्यारे । दर्शन दीजै मोहिं मुरारे ७ । २६
जो मैं पापकारि जन आया । परमनमहँ तुम बसत न माया ॥
अघनाशनतवचरितअपारा । नहिं भूलहुँ तव दर्शअधारा ८ । २७॥
जे तव निर्मल नाम उचारत । पाप जलधिते तरतरमारत ॥
जो यह सत्य नाथ श्रुति होई । तो दर्शन दीजै दुख खोई ९ । २८

सुमति शत्रुघ्नजी से बोले कि राजा रत्नग्रीव इस रीति से दिन रात्रि परमेश्वर के गुण गायाकरे एक क्षणमात्र भी विश्राम न करे न उसे निद्रा आवे न सुखपावे २९ चलते समय गावे बैठेपर गावे रात्रिदिन यही कहे कि हे कृपानाथ ! पुरुषोत्तम अपने दर्शन दीजिये ३० इसप्रकार गंगासागर के संगमपर राजाको पांचदिन बीतगये तब कृपासागर श्रीहरिने कृपापूर्व्वक चिन्तनाकी ३१ कि यह राजा हमारे गानसे पापरहित होगयाहै इससे अब सुरासुरों से नमस्कार किये हुये हमारेप्रिय देहको देखे ३२ कृपासे पूरित मन श्रीभगवान् यह चिन्तना करके संन्यासीका वेषधारणकर राजाके समीपगये ३३ त्रिदण्डी का वेष धारण कियेहुये महाराज भक्तों के ऊपर दयाकरने के लिये वहां पहुँचे व उस तपस्वी ब्राह्मण ने देखा ३४ व ॐनमो विष्णवे ऐसा कहकर राजाने प्रणामकिया और अर्घ्यपाद्य आसना-

न्दिकों से हर्षितमन होकर मन हरिमें लगाये हुये पूजाकी ३५ व कहा कि जो आप नेत्रोंके आगे आये तो हमारा अतुल भाग्य है अब इस के पीछे हम लोगों को श्रीगोविंदजी भी दर्शनदेंगे ३६ ऐसा राजा का बचन सुनकर संन्यासी जी उस से बोले हे राजन् ! हमारे मुख से निकले हुये बचन सुनो ३७ हम ज्ञान से भूत भविष्यद्वर्त्तमान तीनों कालों के समाचार जानते हैं इससे कुछ कहतेहैं एकाग्र मन करके सुनो ३८ कलके मध्याह्नसमयमें श्रीहरि ब्रह्मादिकों को भी दुर्लभ अपना दर्शनदेंगे व तुम अपने पांच मनुष्योंसहित परमपदको जाओगे ३९ तुम तुम्हारा मंत्री तुम्हारी स्त्री व यह तपस्वी ब्राह्मण व तुम्हारे पुरमें करम्बनाम एक कोरी बड़ा साधुहै वह ४० इन्हीं पांचोंके साथ तुम नील पर्व्वतपर जावोगे व ब्रह्मादि सुरों से वन्दित श्रीहरि के धाम में पहुँचोगे ४१ इतना कह कर वे संन्यासी जी अदृश्य होगये फिर कहीं न दिखाई दिये सो सुनकर राजा बहुत हर्षित हुये व विस्मित भी हुये ४२ और अपने उन तपस्वी ब्राह्मण से बोले कि हे स्वामिन् ! यह सन्न्यासी कौनहै जो आकर हमसे ऐसा कहकर फिर अब नहीं दिखाईदेता हमारे चित्तको हर्षदेकर कहां चलागया ४३ वह तापस ब्राह्मण बोला कि हे राजन् ! तुम्हारे महा प्रेमसे आकृष्टचित्त होकर सब पापनाशक पुरुषोत्तमजीहैं सन्न्यासी का वेष धारणकरके आयेथे ४४ कलके मध्याह्नमें वहपर्व्वत जैसा पूर्व्वमें था जब कि हमने देखाथा व अबभी देखतेहैं वैसा तुम्हारे सामने भी दिखाईदेगा उसपर चढ़कर श्रीहरि को देखकर तुम कृतार्थ होगे इसमें कुछभी संशय नहीं है ४५ ॥

चौ० सुनि द्विजबचन भूप अनुरागे । बचन सुधासागर रसपागे ॥
हर्षलह्यहु जोभूपतिभारी । त्यहिनहिंजानतविधित्रिपुरारी ॥ १ । ४६
त्यहि अवसर दुन्दुभि बीणादी । गोमुख पणवआदि रववादी ॥
राजराज के चित्तमँझारी । परमानन्द भयहु अतिभारी ॥ २ । ४७
बैठत उठत चलत हरिगावत । नाचत जल्पत निजमन भावत ॥
परमानन्द तापगणहारी । पायहुनृप कहिकहि बलिहारी ॥ ३ । ४८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डे भाषानुवादेएकविंशोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

दो० । बाइसयें महँ कह रतनग्रीव विष्णुपद बास ॥
करि पुरुषोत्तम दर्शजिमि सब सुखराशि सुपास १

सुमति शत्रुघ्नजी से बोले कि फिर इसप्रकार आनन्द से सब दिन श्रीहरिकी कथा सुनने व कीर्त्तन करनेसे बिताकर राजा रात्रि में बहुत फल देनेवाले गंगाजी के किनारे पर सोगये १ तब स्वप्न में अपनेको शङ्ख चक्र गदा पद्म धन्वा बाण धारण किये चतुर्भुजी देखा २ जो कि शोभा सहित ब्रह्मा महादेव जय विजय नारदादि भक्तों सहित व अन्य पार्षदगणों के संग श्रीपुरुषोत्तमजी के आगे नाच रहाथा व श्रीपुरुषोत्तमजी को देखकर हर्षित होरहाथा ऐसे अपने शरीर को देख राजा स्वप्नही में अतिआनन्दित हुआ यह महाअद्भुत चरित्र हुआ ३ फिर यह भी देखा कि श्रीपुरुषोत्तमजी मनके अभीष्टको देरहेहैं व महामतिराजा अपने को उनकी कृपाका पात्र मानरहाहै ४ इस प्रकार स्वप्न में राजसत्तमने देखा व प्रातःकाल उठकर उन अपने तपस्वी ब्राह्मण से अपना देखा हुआ स्वप्न बताया ५ उसे सुनकर उन धीमान् ब्राह्मण श्रेष्ठ ने विस्मित होकर कहाकि हे राजन् ! तुमने स्वप्नमें जिनको देखाहै वे पुरुषोत्तमजी हैं ६ हे महाभाग ! जो विष्णुभगवान् प्रसन्नहोकर शङ्खचक्रादि चिह्नित अपना शरीर देंगे यह सुनकर रत्नग्रीव महामतिमान् राजाने ७ दीनों व कृपणादिकों को इच्छा के माफिक बहुतसे दानदिये व गंगा समुद्रके संगममें स्नानकरके देवताओं पितरोंका तर्प्पण कर ८ हरिके गुण समूहोंको गातेहुये श्रीपुरुषोत्तमजीके दर्शनकी अभिलाषाकरने लगे तब मध्याह्नके समय देवताओं के नगारे बार २ बाजे ९ व ऐसा शब्दहुआ मानों देवताओं का शब्दहोरहाहै व फिर अकस्मात् राजाके शिरपर पुष्पोंकीवर्षाहुई १० व यह शब्दहुआ कि हे नृपवर्य्य! तुम धन्यहो जिनके नेत्रोंके आगे नीलपर्व्वत दिखाईदेनेचाहता है ११ जब राजाने देवों के कहेहुये ऐसे वचनसुने कि वैसेही श्रीपुरुषोत्तमजीकी प्रभासे प्रकाशितकोटिदीप्तियोंको धारणकियेहुये नीलपर्व्वत १२ राजाके नयनगोचरहुआ जो नीलपर्व्वत चांदीके व सोने

के शृंगोंसे सर्वत्र अतिशोभित होरहा था १३ उसे देख राजा अपने मनमें बिचारनेलगा कि क्या ज्वलित अग्नि अथवा ये दूसरे सूर्य्य उदयहुये हैं वा चन्द्रमा अथवा यह सब बिजुली का समूह है एकत्र होकर महाकान्ति धारणकिये विराजमान है १४ तब उन तपस्वी ब्राह्मण ने आगे स्थित नीलपर्व्वत को देखकर राजा से निवेदन किया कि यही पुण्यरूपी महा नीलाचल है १५ यह सुनकर पूज्य राजाने शिर झुकाकर प्रणाम किया व कहा कि हम धन्यहैं व कृतार्थ हैं जोकि नीलपर्व्वत हमारे नयन गोचरहुआ १६ तब राजमन्त्री राजपत्नी व करम्ब नामकोरी व ब्राह्मण ये सब नीलाचलके दर्शन से अति हर्षित हुये १७ व वे पांचो विजय मुहूर्त्त में नील पर्वतपर चढ़े तब देवताओं ने उस समय बड़े बेगसे अपने नगारे बजाये १८ उस पर्वतके चित्र बिचित्र बृक्षों से शोभित एक शृंगके ऊपर सुवर्णसे बनेहुये एक अत्युत्तम देवमन्दिर को राजाने देखा १९ जहांकि ब्रह्मा आकर श्री हरिका पूजन करते व श्रीभगवान्‌के सन्तोषके लिये नैवेद्य लगाते २० उस उत्तमोत्तम देवालयको देखकर अपने पांच जनों समेत राजा भीतरगये २१ फिर वहां सुवर्णसे बनेहुये मणिजटित एक सिंहासनपर विराजमान चतुर्भुजी मूर्त्ति धारण किये २२ चण्ड प्रचण्ड बिजयजयादिकोंसे उपासित श्रीहरिको देखकर अपनी स्त्री परिवार समेत राजा ने प्रणाम किया २३ फिर महाराज नरोत्तमजी के प्रणाम करके वेदोक्त मन्त्र पढ़२कर विधिपूर्व्वक दिव्य गङ्गाजलसे स्नानकराया २४ व प्रसन्न मनसे राजाने अर्घ्य पाद्याचमनीयादि दिये चन्दन से बिलेपन करके फिर दो वस्त्र निवेदन किये २५ धूप आर्त्तिक्य करके सब स्वादु युक्त मनोहर नैवेद्य उसी मूर्त्तिको निवेदन किया २६ प्रणाम करके फिर तापस ब्राह्मणके साथ राजाने स्तुतिकी जैसी राजाकी मतिथी उसके अनुसार स्तोत्रोंसे गुंफित करके बिधानसे स्तुति करनेके लिये राजा बोला २७ प्रकृतिसे परे साक्षात् भगवान् एकही तुम पुरुषोत्तमहो व कार्य्य कारण दोनोंसे भिन्नहो व महत्तत्त्वादिकों से पूजितहोतेहो २८ तुम्हारे नाभि कमलसे सृष्टिकारक ब्रह्मा उत्पन्न

होतेहैं व संहारकर्ता रुद्र तुम्हारे नेत्रों से उत्पन्न होतेहैं २९ व तुम्हारी आज्ञासे इस बिश्वको चेष्टित करातेहैं व तुम्हींसे पूर्व्वकालमें यह सब बिश्व स्थावरजङ्गम उत्पन्न हुआ ३० व तुम्हीं इसमें चैतन्य शक्ति रूप होकर प्रवेश करके इसको सचेत करतेहो और तुम्हारा जन्म कभी नहीं होता न हे जगत्पते! कभी तुम्हारा अन्तही होताहै व हे विभो! वृद्धिक्षय व बन्धन तुममें नहीं हैं ३१ तथापि भक्तों की रक्षा करने के लिये व धर्म्म रक्षाकरनेकेलिये जन्म कर्म्मको करतेहो फिर उनके अनुरूप गुणोंको धारणकरतेहो ३२ तुमने मत्स्य का शरीर धारण करके शंखासुरको मारा व हे महापुरुष! हे पूर्वज! तुमने वेदों की रक्षाकी ३३ शेषनाग जिनके सहस्रमुखहैं वेभी तुम्हारी महिमा नहीं जानते न महेश्वरी सरस्वती जानती है फिर हे महाविष्णो! हम ऐसे कुबुद्धि लोग कैसे जानें ३४ यह परमेश्वरी बाणी मनसेभी तुमको नहीं पहुँचती इससे हम तुम ईश्वरकी स्तुति कैसे करसकें ३५ ऐसी स्तुति करके राजाने शिरसे प्रणाम किया व गद्गद बाणी होगया फिर राजाके सब रोम खड़ेहोगये ३६ इसस्तुतिसे प्रहर्षित शरीर होकर भगवान् पुरुषोत्तमजी राजासे सत्य व सार्थक बचन बोले ३७ श्रीभगवान् बोले कि हे महामतिवाले भूपाल! हम तुम्हारी स्तुतिसे बहुत प्रसन्न हुये हमको तुम जानो कि ये प्रकृतिसे परे हैं ३८ अब तुम शीघ्रही हमारी नैवेद्यभक्षणकरो इससे चतुर्भुजहोकर हमारे परमपदको जाओगे ३९ व जो मनुष्य तुम्हारी की हुई स्तुति रत्नसे हमारी स्तुतिकरेगा उसको भी हम अपनादर्शनदेंगे व भुक्तिमुक्ति दोनोंदेंगे ४० श्रीभगवान्जीके कहेहुये ऐसे वचनसुनकर राजाने अपने चारसेवकोंके साथ श्रीहरिकी नैवेद्यभोजन किया ४१ तब किङ्किणीजालोंसे भूषित एक विमान अप्सराओं से सेव्यमान् सब भोगयुक्त वहां आया ४२ पुरुषोत्तमजी को देखते हुये उस धर्म्मात्मा राजाने उनकी कृपाकापात्र होनेसे पवित्रहोकर प्रणाम किया४३ व फिर पुरुषोत्तमजीके चरणारविन्दोंके प्रणाम करके उनकी आज्ञा से अपनी स्त्री समेत विमानपर चढ़कर सबोंके देखतेही देखते परम अद्भुत वैकुण्ठलोकको चलागया ४४ व राजाका

धर्म्मपरायण सर्व्वधर्म्मवेत्ता मन्त्री भी अप्सराओंसे सेवित विमानपर चढ़कर बैकुण्ठही को चलागया ४५ व सब तीर्थों की सेवा करनेवाला वह तपस्वी ब्राह्मण भी चतुर्भुजी मूर्ति धारणकरके देवगणों के संग बिमानपर चढ़के स्वर्ग को चलागया ४६ व हे महाराज! करम्ब नाम कोरी भी अपने पुण्यसे भगवान् के दर्शन करनेसे सब देवादिकों के दुर्लभ सत्यलोक को चला गया ४७ इसप्रकार सब चतुर्भुजी मूर्ति धारणकिये शङ्ख चक्र गदा कमल हाथोंमें लिये परम अद्भुत श्रीबिष्णुलोकको अन्तमें पहुँचे ४८ सब लोग सजल मेघसम श्याम शरीर धारण किये हाथों में कमल लिये हार बहूँटा करधनी आदि भूषणों से भूषित वैकुण्ठ को चले गये ४९ उन लोगों के विमानों की पंक्ति देखकर सब प्रजा लोगों ने देवताओं के बजाये हुये बाजन सुने ५० उनमें एक और भी ब्राह्मण श्रीविष्णुभगवान् के चरणारविन्दों का प्रिय था वह भी उन लोगों के विरह से खिंचाहुआ चतुर्भुज होकर वैकुण्ठही को चला गया ५१ इस चित्र को देखकर इस महोदय का वर्णन करते हुये अन्य लोग गंगासागरके संगममें स्नान करके अपनेपुरको चलेगये ५२ कि देखोभाई महात्मा राजा रत्नग्रीवका अहोभाग्य है कि इसी देह से श्रीविष्णुभगवान्जी के परमपद को चले गये ५३ सो हे महाराज! पुरुषोत्तमजी के सत्कार करनेवाला यह नीलगिरि है जिसके दर्शनमात्र से पुरुष साक्षात् बैकुण्ठको चले जाते हैं ५४ यह नीलाचल का माहात्म्य जो सुनताहै वह भाग्यवान् होताहै व जो कोई इसे किसीको सुनाता है श्रोता वक्ता दोनों परमपद को जाते हैं ५५ इसके सुनने व स्मरण करनेसे दुस्स्वप्न नष्टहोजाते हैं व अन्तमें पुरुषोत्तमजी संसार से उसका निस्तार करते हैं ५६ सो जो इस नीलाचलपर पुरुषोत्तमजी निवास करते हैं वे श्रीरामचन्द्रजी हैं व सीताजी महाकारणों की कारणरूपिणी साचात् लक्ष्मीजी हैं ५७ ऐसे श्रीरामचन्द्रजी अश्वमेध यज्ञकरके सब लोकों को पवित्र करेंगे नहीं तो उनको ब्रह्महत्या मिटाने के लिये अश्वमेध करने की कौन आवश्यकताथी क्योंकि ब्रह्महत्याके प्रायश्चित्त करने के लिये उनके

नामका स्मरण कियाजाताहै ५८ सो हे शत्रुघ्नजी ! इससमय तुम्हा
घोड़ा नीलपर्व्वत पर पहुँचा अब तुम भी श्रीपुरुषोत्तम जीके प्रणा
करो ५९ ॥

चौ० । जासु प्रताप पाय गत पापा । जात परमपद सबगतदापा
जासु प्रसाद बहुतभवसागर । उतरेनरवरजोमतिआगर १ । ६०
सुमतिभनतइमिरह्यहु हयोत्तम । तब लग पहुँच्यहु गिरिपरसत्तम
बायुबेगसोंचलिमहिखुरतर । गिरितलखुदरनलग्यहुजदनवर २ । ६
तब राजा निज तुरगारूढ़ा । नीलाचल ढिगगयहु अमूढ़ा
करि गङ्गासागर असनाना । पुरुषोत्तम पहँ गयहुमहाना ३ । ६२
करि अस्नान देवसुर सेवित । देवदेव नति करि अघभेदित
निज शरीर कृतकृत्यमनावा । रिपुसूदन महराजसुहावा ४ । ६३

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

दो० । तेइसयेंमहँ कहदमन प्रतापाग्र्यकर युद्ध ॥
जहँकरिसमर अनेकविधि दूजोभयहुअबुद्ध १

शेषनाग वात्स्यायन मुनिसे बोले कि वहां एकक्षण मात्र ठ
कर घासचरकर पत्रसहित मस्तकमें बँधायेहुये बीरोंसे आच्छादि
अश्वमनोवेग से वहां से आगेको चला १ सुबीर शत्रुघ्न व
लक्ष्मीनिधि सहित व मुख्यप्रताप रखने वाले पुष्कल महा
कुमारसे रक्षित चला २ व जाकर राजा सुबाहु की चक्राङ्क
पुरी में पहुँचा व उस अश्वके पीछे २ अनेक बीर चलेजाते
से वह रक्षित था ३ उस राजा के पुत्रका दमनक नाम था
कार खेलने के लिये अपनीपुरी से बाहरआयाथा कि इतनेमें
में चन्दनादि लगेहुये पत्रको बँधायेहुये इस यज्ञके घोड़ेको दे
देखकर अपने किसी सेवकसे बोला कि यह किसका तुरङ्ग है
हमारे नयनगोचर हुआ है इसके मस्तक में तो बड़ा दिव्य
दिखाईदेता है व इसके दोनोंओर अतिसुन्दर दोचामर दुरहे
राजकुमारके ऐसे वचनसुनकर सेवकचला व जहां मस्तक में
बँधायेहुये सुन्दर यज्ञका अश्वथा वहां पहुँचा ६ व रत्नमाला

विभूषित उस घोड़ेके स्कन्ध परके बाल पकड़कर जहां राजासुबाहु
कापुत्रथा वहांलाया ७ व सुन्दर अक्षरोंसे शोभित उसके मस्तक के
पत्रको उसने बांचा जिसमें लिखाथा कि पूर्वसमय में अयोध्या के
महाराजाधिराज महाबीर बली दशरथजी हुये ८ उनके पुत्र सबशूरों
के शिरोमणि श्रीरामचन्द्रजी हैं जिनकेसमान पृथ्वीपर धनुर्द्धर वि-
क्रमी और कोई नहींहै ९ उन्होंने चन्दनादिसे पूजितकरके इस अश्व
को छोड़ाहै उसकीपालना सबबीरोंके नाशक शत्रुघ्नजी करतेहैं १०
सो उनकी यह प्रतिज्ञाहै कि हम सब बीरलोग इस घोड़े की रक्षा
करतेहैं व सब धनुर्बाण हाथोंमें धारणकिये रहतेहैं जिसके ऐसेही
बीरशूरहों वह इसबाजीको पकड़े ११ उससे इस अश्वको सर्व्व बी-
रशिरोमणि शत्रुघ्न अवश्य छुड़ावेंगे यदि कोई धनुर्द्धर इसबाजीको
न बांधे तो शत्रुघ्नके चरणोंपर आकर गिरें अपने स्थान को चले
जायँ १२ इस अभिप्रायको लिखेहुये देखकर वह राजकुमार बोला
कि रामचन्द्रही धनुर्द्धारीहैं हमलोग क्षत्रिय नहीं कहाते १३ हमारे
पिताकी विद्यमानतामें पृथ्वीपर अन्यकिसी को ऐसा महाअहङ्कार
करना वृथाहै अब हमारे छोड़ेहुये बाणों से इसगर्व्वकाफल वे अ-
वश्य पावेंगे १४ आज हमारे तीक्ष्णबाण शत्रुघ्नको अवश्य फूलेहुये
पलाशके वृक्षके समान करेंगे क्योंकि हमारे शस्त्रास्त्र ऐसेही बाधा
करातेहैं १५ हमारेबाण हाथियोंके कपोलोंको विदीर्ण करेंगे व तुम
लोग सैकड़ों अश्वोंको रुधिरकी धारासे भीगेहुये देखोगे १६ यो-
गिनियोंके समूह मनुष्योंकी खोपड़ियोंमें भरकर रुधिर पानकरेंगी
व हमारे शत्रुओं के मांसभक्षण से शृगालियां सन्तुष्ट होंगी १७
उनके सुभटलोग अब हमारे बाहुओंका बलदेखें हम अभी धनुष
खींचकर बाणसमूह छोड़ते हैं १८ दमननाम राजकुमार ऐसाकह-
कर उसघोड़ेको अपनेपुरको भेजकर बहुतहर्षितहुआ १९ व अपने
सेनापति से बोला कि हे महामते! शत्रुसेना निवारण करनेके लिये
उतनीहीसैन्य तैयारकरलाओ २० इसप्रकार सबसेना तैयारकरके
जबतक दमनक राजकुमार स्थितहुआ कि तबतक सब उसघोड़ेके
पीछे २ चलनेवाले लोगभीआये २१ व व्याकुलमन होकर आपस

में पूँछनेलगे कि महाराजाधिराजजी का वह पत्रांकित घोड़ा कहां है कहां चलागया २२ तबतक प्रतापाग्रयनाम सेनापति ने वीर शब्दसे शब्दायमान आगेखड़ीहुई एक सेना युद्धकरने को तैयार देखी २३ तब कोई २ कहनेलगे कि महाराजाधिराजका घोड़ा तो इसने न हराहोगा कोई बोले कि जो इनलोगोंने अश्व न हराहोता तो इस सेनाके इकट्ठीहोनेका क्या कार्य्यथा २४ यहसुनकर प्रतापाग्रयने एक सेवककोभेजा उसने वहां जाकर पूंछा कि राजा रामचन्द्रजीका अश्व कहां है २५ किसने लिया व क्यों लिया वह कुमति क्या श्रीरामचन्द्रजीको नहीं जानता जिनके आगे आकर इन्द्रादि देव भेटेंदेकर फिर प्रणामकरते हैं २६ यदि घोड़ेके हरनेवाला चलकर प्रणाम न करेगा तो धर्म्मराज श्रीरामचन्द्रजी की कोपकियेहुई सेना उसे अवश्य लीललेगी २७ उस सेवकके ऐसे वचन सुनकर उस बली राजकुमारने उदासीन होकर यहां के उस सेवकको बहुत धिकारा २८ व कहा कि पत्रसे चिह्नित यज्ञके घोड़े को हमने हरलियाहै जो कोई समर्थहो तो हमको जीतकर अपने बलसे घोड़ेको छुड़ावें २९ यह वचन सुनकर मारेरोषके मुखलाल कर वह सेवक हँसताहुआ यहां चलाआया व जैसा उस राजकुमार ने कहाथा सब ज्योंकात्यों राजासे उसने कहा ३० उस बातको सुनकर प्रतापाग्रय मारेरोषके लालहोगया व महावीरोंसहित उद्यत खड़ेहुये उस राजकुमारके संग युद्धकरनेको गया ३१ चार अतिवेगवान् घोड़े जुतेहुये सुकूवरयुक्त शस्त्रास्त्रोंसे भरेहुये सुवर्णसे बनेहुये रथपरचढ़कर तुरन्त वहां पहुँचा ३२ व पहुँचतेही उस महाबल पराक्रमी ने अपनेधन्वापर टंकोरदिया व कोपकेमारे आंशु उगिलताहुआ बड़े ऊंचेस्वरसे हँसा ३३ क्रोध से युक्ततीक्ष्णनेत्रवाले प्रतापाग्रय के पीछे घोड़ोंपर व हाथियोंपर चढ़ेहुये खड्ग भालाहाथों में लिये असवारलोगपहुँचे ३४ संग्राममें उद्यत फिर किरोड़ों हाथी और पैदरपहुँचे जोकि बहुतदिनोंसे किसीबीरके संग संग्रामकरनाचाहतेथे ३५ तब शत्रु की सेनाको युद्धकरनेपर उद्यतजानकर वीरों में श्रेष्ठवह राजकुमारभी अपनी बड़ीभारी सेनासे आच्छादितहोकर आया ३६ जो कि

शस्त्रप्रकार से सन्नद्ध कवच धारणकिये खड्गहाथ में लिये धन्वा पाणि में किये युवावस्था को प्राप्त एक खेलके साथ ऐसे आनपहुँचा जैसे सिंह हाथियों के झुण्डमें प्रवेश करता है ३७ तब इधर उधर के योधालोग परस्पर एक दूसरीओरके बीरके बध करने की इच्छा कियेहुये व कोपकियेहुये काटो मारो बिदारोआदि बचन युद्धकार्य्य में चतुर वे लोग कहनेलगे ३८ पैदरलोग तो पैदरोंसे युद्ध करने लगे व हाथियोंपर चढ़ेहुये हाथियोंपरवालों से रथोंपर चढ़ेहुये रथपरवालों से घोड़ोंपर चढ़ेहुये घोड़ोंपरवालों से युद्ध करने लगे ३९ हाथियोंके दो २ खण्ड होगये व घोड़े भी दो २ खण्डके होगये व अनेक मनुष्यों के मुण्डों से पृथ्वी परिपूरित होगई ४० तब अपनी सेनाको मारतेहुए उस राजकुमार को देख महाबली राजा प्रतापाग्र्य बहुत संकुपित हुये ४१ व अपने सारथि से बोले कि जहांपर वह राजकुमार हमारी सेना का कदन कररहा है शीघ्र हमारा रथ वहां पहुँचाओ ४२ तब महाबली बीर शिरोमणि राजपुत्र भी पैतड़े के साथ प्रतापाग्र्य के सम्मुख आया व युद्धकरने को सन्नद्धहुआ ४३ व जहां सर्व्वबीर शिरोमणि दमनबीर स्थितथा वहीं सारथिने प्रतापाग्र्य के घोड़ोंसे जुतेहुये रथकोभी पहुँचादिया ४४ व जाकर धन्वाबाण धारणकिये हुये सुवर्ण के रथपर आरूढ़ प्रतापाग्र्यने रणकरने में उद्यत सुवर्णनिर्मितरथपर चढ़ेहुये दमनक को युद्धकरनेके लिये बीरशब्द से पुकारा ४५ रेराजपुत्र बाऊक तूने अश्वमेध को बांधलिया सब बीरेन्द्रों से सेवित महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्रजी को नहींजाना ४६ जिनके अद्भुत प्रताप को दैत्यों व राक्षसादिकों का राजा रावण नहीं सहसका उनके घोड़े को लेकर तूने अपने पुरमें पहुँचादिया ४७ अब जो हुआ सो हुआ आगे आयेहुये हमको कालरूप बैरी समझ व हे बालक! शीघ्र घोड़ा छोड़दे व जाकर खेलना कूदना कर ४८ तू किसका पुत्र है व कहां रहताहै व आगेपीछेका बिचार तूने कैसे नहींकिया झट घोड़े को पकड़लिया बालक देखकर हमको तेरऊपर दया आतीहै ४९ ऐसा सुनकर महामनस्वीदमनक कुछ हँसा व उसके बलको तृणकी समान

समझतेहुये प्रतापाग्रय से बोला कि ५० दमन बोला हमने भूलसे अश्वको नहीं बांधा बलसे बांधाहै और अपने पुरको भेजदिया है हे महाबल! जबतक हमारे प्राणहैं तबतक घोड़ा न छोड़ेंगे अब तुम हमारेसंग युद्धकरो ५१ तुमने जो कहा कि जाकर बालकहोनेकेकारण खेलोकूदो सो हे महाराज! हमारा खेलना समरभूमिमें देखो ५२ शेषनागजी बोले कि ऐसाकहकर धन्वापर प्रत्यञ्चा चढ़ाकर राजासुबाहु के पुत्रने सौबाण चढ़ाये व राजा प्रतापाग्रयकी छातीमें मारे ५३ व सौ बाण मारकर फिर उस प्रतापी ने शङ्ख बजाया उस शङ्खके बड़े भारी शब्दसे कातरोंका मन पतितहोगया ५४ जब सौ बाण प्रतापाग्रयके वक्षस्स्थलमें दमनकने मारे तब अतिशीघ्र कार्य्य करने वाले प्रतापाग्रय ने अपने बाणोंसे छातीमें लगने के प्रथमही उन बाणों को काटडाला ५५ बाणोंको कटेहुये देखकर अति कोपकरके महाबली उस राजकुमार ने बड़े तीक्ष्ण कङ्कपक्ष लगेहुये बहुत से बाण चलाये ५६ उसके नामों से चिह्नित वे बाण आकाश पृथ्वी व अन्तरिक्ष सब में छागये व जैसे मेघबर्षे प्रकाशित होनेलगे ५७ उन बाणोंमेंसे जो हाथों व छाती में लगे बहुत से अग्नि की ज्वाला छोड़तेहुये प्रतापाग्रयकी सैन्यको जलानेलगे ५८ तब प्रतापाग्रय ने खड़ेरहो खड़ेरहो ऐसा कहकर दशबाणों से उसकीमस्तक ताड़ित किया ५९ वे बाण राजपुत्र के मस्तक में लगे सो हे मुनिराज! वे वृक्ष की दश शाखाओं के समान शोभित होनेलगे ६० उन बाणों के प्रहार से वह राजकुमार कुछ व्यथित नहीं हुआ प्रसन्नचित्तही बनारहा जैसे एक लाठीकेमारे साठबर्षकाहाथी व्यथितनहींहोता ६१ फिर उस ने महाकालके अग्निके समान प्रकाशित सुवर्णके पङ्ख लगेहुये बड़े सुन्दर तीनसौ बाण धन्वापर चढ़ाकर छोड़दिये ६२ वे बाण प्रतापाग्रच की छातीका भेदन करके नीचे को चलेगये सबोंमें रुधिर लगाथा सबके सब कैसे नीचेको चलेगये जैसे श्रीरामचन्द्रजीकी भक्ति से पराङ्मुखलोग नीचे गिरते हैं ६३ तब अति क्रोधकरके सहस्रों बाण छोड़तेहुये प्रतापाग्रचने तुरन्त राजासुबाहुके पुत्रको क्षण मात्र में जल्दी विरथ करदिया ६४ चारबाणोंसे तो चारघोड़ोंको मारडाला

व दो शरोंसे ध्वजा काटडाली व एकबाणसे सारथिका शिर काटकर धरतीमें गिरादिया ६५ व चारबाण और फिर राजकुमारके मारे व एक बाण से प्रत्यञ्चासहित धन्वाको काटडाला ६६ तब उसने सुन्दर अश्वोंसे शोभित अन्य रथपर चढ़कर हाथमें धन्वालेकर उसको उस मनुस्वी ने प्रत्यञ्चासहितकिया ६७ व प्रतापाग्र्यसे कहा कि तुमने अद्भुतपराक्रमकिया हे सद्भट! अब इससमय हमारेधन्वाका पराक्रम देखो ६८ ऐसा कहकर दमनने दशबाण चढ़ाये उनमें से चारसे चारो घोड़ोंको यमपुरको पहुँचाया ६९ व चारसे चक्रसहित रथको तिल २ काटडाला एकबाण प्रतापाग्र्यकीछातीमें व एकसारथिकोमारा ७० व शंखबजाकर उसके शब्दसे युक्तहोकर गर्ज्जा उसके इस कर्म्मकी प्रतापाग्र्यने बड़ी प्रशंसाकी कि हे महाबलबीर! बहुत अच्छा ७१ ऐसे पराक्रमकरतेहुये को देखकर फिर प्रतापाग्र्यने बड़ाक्रोधकिया अन्य रथपर चढ़कर राजपुत्रसे युद्धकरनेको आकर ७२ उससे कहा कि हे बीर! अब हमारा अद्भुतविक्रम देखो ऐसाकहकर अतितीक्ष्ण सफलशीघ्रतासे बाणोंके समूह चलाये ७३ वेबाण सब कहीं हाथियोंमें घोड़ोंमें पैदरादिकोंमें लगेहुये व्याप्त दिखाईदेनेलगे जैसे कि पर-ब्रह्म परमेश्वर सब में व्याप्त दिखाई देता है ७४ सो उस राजपुत्र को तीखे किरोड़ों बाणोंसे व्याप्तकरके महा विक्रमी प्रतापाग्र्य ग-र्ज्जने लगा व उन बाणोंसे अपने बीरोंको अतिहर्षित कराया व शत्रुके बीरोंको प्राणरहित कराया ७५ व वह राजपुत्र अपनेको बा-णसमूहों से सम्पूर्ण देखकर अति रोषितहुआ व झट उस पराक्रमी ने धन्वा बाण चक्रादि शस्त्रादि भुजोंको घुमाते हुए ग्रहणकिये ७६ व उनसे सब शस्त्रास्त्र काटडाले व बैरियोंके विदारण करनेवाले स-हस्रोंबाण चलाये ७७ व उन शस्त्रसमूहों को चलाकर राजपुत्र ने बड़े ऊंचेस्वरसे कहा कि हे श्रेष्ठ! यदि शूरहोओ तो अब हमारा एक प्रहारसहो ७८ हे बीर! जो इस एकही प्रहारसे आपको रथपर से नीचे न गिरादें तो गर्व्वसे कीहुई हमारी इस प्रतिज्ञा को सुनो ७९ जो मत्तलोग हेतुओं के बादों में विचक्षण बनकर नानाप्रकार के खण्डनोंसे वेदोंकी निन्दा करतेहैं नरक सागरमें डुबानेवाला उन

लोगोंका पाप हमको हो ८० ऐसा कहकर उसने तरकस से ज्वाला माला युक्त एक तीक्ष्णबाण काल के समान धन्वा पर चढ़ाया ८१ व राजा प्रतापाग्रय की छातीमें हीककर मारा वह प्रलय समय के अग्निकेसमान चमकता हुआ बाणचला ८२ अपने निपात करनेमें उद्यत आतेहुये उस बाणको देखकर प्रतापाग्रयने भी बाण काटनेके लिये बहुतसे तीक्ष्णबाण धन्वापर चढ़ाये ८३ व चलाये परन्तु उस राजकुमार का वह बाण इनके सब बाणों को काटता हुआ आकर प्रतापाग्रयकी धीरजयुक्त छाती में लगी गया ८४ व वह बाण लगकर फिर राजाके हृदयमें प्रविष्ट होगया जिसके प्रहारसे व्यथित होकर प्रतापाग्रय राजा पृथ्वी पर गिरपड़ा ८५ ॥

चौ० । मूर्च्छितचेतरहितमहिंपरयऊ । सारथित्यहिउठायरथधरयऊ ॥
लैरण बाहर कीन महीपहि । परमशूरभूपतिकुलदीपहि १ । ८६
हाहाकार महाभो तबहीं । भागी तासु सैन्य तहँ सबहीं ॥
जहँ कोटिन भटयुत रिपुशूदन । हते तहां सब्बगे करि पूदन २ । ८७
राज तनय हति प्रबल प्रतापी । पाय बिजय अति भयहु सदापी ॥
रिपुसूदन की करन प्रतीक्षा । लाग्योसमरमाहिं युतदीक्षा ३ । ८८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणे पातालखण्डे भाषानुवादे राजपुत्र युद्धकथनन्नामत्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

दो० । चौविशयेंमहँ कह दमन पुष्कल युद्ध अपार ॥
जहँ विजयी पुष्कलभये दमनकमूर्च्छितचार १

शेषनाग वात्स्यायन मुनिसे बोले कि शत्रुघ्नजी क्रोधयुक्त होकर दांतोंसेदांत रगड़तेहुये व हाथ कँपाते हुये जीभसे ओठचाटने लगे १ व फिर २ उन भागआये हुये लोगोंसे पूछनेलगे कि हमारा घोड़ा किसने हरा व सर्व्वशूर शिरोमणि प्रतापाग्रय को किसने जीता २ तब सब सेवकों ने कहा कि हे शत्रुहन् ! सुबाहुका पुत्र एक दमन नाम है उसीने प्रतापाग्रय को जीता व घोड़ा भी हरा ३ इसप्रकार दमन बैरीने घोड़ा हरा यह सुनकर जहां रणहुआ था वहां शत्रुघ्न जी आये ४ वहां देखा तो हाथी कटेकुटे पड़ेथे व पर्व्वतोंके समान

रक्तकीचड़ में मतवाले सबकेसब डूबेहुये थे ५ व घोड़े भी वहां स-वारों सहित कटे हुये पड़ेथे इन सबोंको मरे हुये देखकर शत्रुघ्नजी ने और भी महा कोप किया ६ नर रथ गजोंको कटे टूटे फूटे देख-कर शत्रुघ्नजी ने ऐसा क्रोधकिया जैसे कि प्रलयके समय प्रलयका समुद्र क्रोध करता है ७ फिर अपने बलको तृणवत् करके व घोड़े के हरने वाले प्रतापाग्र्य के जीतने वाले दमन को देखकर ८ को-पसे आकुल नेत्र करके राजा शत्रुघ्न जी योद्धाओं से बोले कि ऐसा कौन सब शस्त्रास्त्र धारण करने वाला है जो दमन को जीतसक्ताहै ९ इतने में जो कोई रणकर्म्म में विशारद निडर हो व इस राजकुमार को समरमें जीतसके वह तैयारहो १० यह वचन सुनकर पर शत्रु वीरों के नाशक पुष्कल दमनके जीतनेके लिये उद्यत होकर यह बचन बोले कि ११ हे स्वामिन्! इस दमनककी कौन गणनाहै कि जहां यह इतनी सेना आपकी है हम अभी इसी समय तुम्हारे प्रतापसे जीतलेंगे १२ हम सेवककी बिद्यमानता में कौन घोड़ेको लेजासक्ताहै यह सब कार्य्य तो श्रीरघुनाथजी का प्र-ताप करेगा १३ हे स्वामिन्! अपने हर्षदेने वाली हमारी प्रतिज्ञा सुनो कि रणकर्म्म में विचक्षण दमनको हम समर में जीतेंगे १४ व जो पाप रामचन्द्रजी के युगल चरणकमलके मकरन्दसे बिमुख लोगों को मिलताहै वही पाप हम को मिले जो हम दमनको न जीतें १५॥

दो० । मातुचरणतजिसुतअपर तीर्थमानितासंग ॥
बैर करै त्यहि सम अघी होउँ न जो रिपु भंग १ । १६
ममसर हतहद भूपसुत रणमहि सेज मभ्कार ॥
शयन करै अबहीं सही तो मम बचन प्रचार २ । १७

शेषनागजी बोले कि पुष्कल राजकुमारकी ऐसी प्रतिज्ञा सुन-कर शत्रुघ्न अपने चित्त में बहुत हर्षितहुये रणकरने को उन को उन्होंने आज्ञादी १८ शत्रुघ्नजी की आज्ञापाकर बहुतसेना संग लिये पुष्कल वहांगये जहां कि राजकुमार दमन अपनी सेनासमेत युद्धकरनेको उद्यतखड़ाथा १९ दमननेभीजाना कि अब पुष्कल युद्धकरनेको आते हैं इसलिये वहभी बहुतसीसेनासंगलेकर आगे

बढ़कर मिला २० इसप्रकार रथोंपर चढ़ेहुये दोनों परस्पर मिले उससमय इन्द्र व दैत्य के समान समर में आयेहुये दोनों शोभित हुये २१ तब महाबली पुष्कलजी उस राजपुत्र दमनसे बोले कि हे राजपुत्र! दमनक हमको आयेहुये जानो २२ हम प्रतिज्ञा करके आयेहैं व भरतजीके पुत्रहैं पुष्कल हमारा नाम है सो तुम अच्छे प्रकार जानो २३ श्रीरघुनाथजी के चरणारविन्द मकरन्दके पान करनेकेलिये भ्रमररूप हमको समझो हे महामते! हम तुमको समर में शस्त्रसमूह से जीतेंगे इससे अब तैयारहोओ २४ ऐसा वचन सुनकर परवीरहन्ता दमनभी प्रशस्तवचनसे हँसताहुआ जिसका पराक्रम देखागया है निर्भय वचनबोला कि २५ सुबाहु के पुत्र पितृभक्तिमें परायण व राजाशत्रुघ्न के घोड़ेके हरनेवाले दमननाम हमको जानो २६ जय देवताओं का उत्पन्न किया होताहै इससेवह जिसको भूषित करेगा वही उसे पावेगा अब समरमें हमारे पराक्रम को देखो २७ इतना कहकर बाण सहित धन्वाको कर्णपर्य्यन्त खींच-कर वैरियोंके प्राणापहारी तीक्ष्ण बाण उसने छोड़े २८ उनबाणों ने फैलकर सब आकाशको छालिया यहांतक कि बाणों की छाया से निवारित होनेसे सूर्य्यका प्रकाशभी न दिखाई पड़ने लगा २९ व फिर बाणोंकी निरन्तर चाल हाथियों के शरीरमें लगी वह उन को ऐसे शोभित करने लगी जैसे कि गेरूआदि धातुओं की धारा पर्व्वतों को शोभित करती है ३० नर घोड़े हाथी रथ शस्त्रास्त्रों से राजकुमार दमन के मारे हुये वहां पतित दिखाई देने लगे ३१ उसके विक्रमका ऐसा प्रभाव देखकर शत्रुवीरों के नाशक पुष्कल जीने भी बाणों से रणमण्डल को आच्छादित देखा ३२ प्रथम उ-न्होंने आचमन करके अग्निबाण धन्वा पर चढ़ाया व विधि पू-र्व्वक मन्त्रयुक्तकरके चलाया ३३ तब संग्राम में सब ओरसे अग्नि प्रकटहोगया अपनी ज्वालाओं से आकाशको चाटता था जैसे कि प्रलयसमयका समुद्र उफलाता है वैसेही दिखाई देताथा ३४ तब दमनकी सबसेना जलनेलगी व रणभूमि में बहुत भयभीत होकर जिधर देखो अग्निहीअग्नि दिखाई देनेके कारण भागखड़ीहुई ३५

सेनावालों के सब चन्द्राकार छत्र भस्महोगये सब उनकी कान्तिसुवर्ण की सी दिखाई देनेलगी ३६ शत्रुओं के घोड़ोंकी आलें जलतीचली जातीथीं व घोड़े भागे चलेजाते थे चक्र कूबरसहित सबरथ भस्महोगये ३७ मणि माणिक्य धारणकिये उनमें अग्नि लगने के कारण चमकतेहुये ज्वालामालासे अतिपीड़ित हाथीसब भागखड़ेहुये ३८ घोड़ों परके चढ़नेवाले तो कहीं नष्टहुये व हाथी कहीं व अग्नि से जलेहुये शरीरवाले पैदरलोग सब जहांतहां नष्टहोगये ३९ व दमनके चलायेहुये सबबाण जलकर भस्महोगये न जाने कहांगये अग्निकी ज्वालाओंसे सर्वत्र भस्मीभूतहुये ४० तब अपनी सेनाके जलजानेपर दमन अतिरोषसेपूरितहुआ उस अग्निबाणके शान्त होनेके लिये बारुणास्त्र ग्रहण किया ४१ व अग्निके शान्तहोने के लिये उस राजकुमार ने बारुणास्त्र चलायाभी उसने गज बाजि समाकुल उसकी सेनाको बनाय जलसे डुबोदिया ४२ रथभी डूबगये हाथी भी डूबनेलगे ये सब अपनी २ शान्ति चाहनेलगे एवम् सबके सब जलसे व्याकुलहुये ४३ अग्नि भी सब शान्तहुआ व सबको अग्निबाण से उसने छुड़ाया इसरीति से अग्निज्वाला से पीड़ित उसकी सबसेना शान्तहोगई ४४ व उसके बैरीलोग शीतजलसे कांपनेलगे व सिसकारी मारनेलगे प्रचण्डपवन ऐसा शीतलचला कि जिससे उपलोंकी बर्षाहोनेलगी ४५ तब अपनीसेनाको शीतजल से पीड़ितहोकर कांपतीहुई देखकर व इधर उधर नष्ट होती हुई जानकर ४६ भरतजीके पुत्र पुष्कलजी मारेक्रोधके रक्तनेत्र युक्तहुये व अपनेधन्वापर उन्होंने एक बायव्यास्त्रचढ़ाया ४७ उसके चलातेही महाप्रचण्ड पवन चला जिसने अपनेवेगसे सब बादलों को उड़ाकर दूर २ करदिया ४८ बायु करके स्फालित हाथी परस्पर संहत होगये व घोड़े भी असवारों से युक्तहोगये व परस्पर संहतहोगये ४९ शत्रुसेनाके पुरुषों के सब केश पवनके बेगसे खुलगये इधर उधर पृथ्वीपर भागते हुये बैतालों के समान दिखाईदेने लगे ५० तब बायव्यास्त्र से व्याकुल अपनी सेनाको देख राजपुत्र दमन ने अपने धन्वापर पर्वतास्त्र धारण किया ५१ तब सैनिकों के मस्तकों

पर पर्व्वत गिरने लगे व पवन उनमें रुँकगया कहीं न चलनेलगा ५२ तब पुष्कल जीने वज्रास्त्र धारणकिया उस बज्रसे कटे हुये सब शत्रुसेनावाले तिल २ होकर क्षण मात्र में उड़गये ५३ बाण से अभिमंत्रित बज्र पर्वतों को धूल की तुल्य करके राजपुत्र दमनकी छाती में बड़ा शब्द करते हुये गिरा ५४ हृदयमें बज्रलगने से अति व्याकुल चित्त होकर यद्यपि बड़ा बलवान् बीरथा पर मूर्च्छित हो गया ५५ उसको ऐसा कष्टित देखकर नीति जानने में पण्डित उस का सारथि राजपुत्र को समर से कोश भर बाहर लेगया ५६ ॥

चौ० । तब सब राजतनयकेयोधा । भागे इतउततजिसब क्रोधा ॥
जाय पुरी महँ कहा पुकारी । राजसूनु घायल भो भारी १ । ५७
धर्म्म धुरन्धर पुष्कल बीरा । पायबिजय रणमहँ मतिधीरा ॥
पुनिनपलायमानकहँ मारा । सुमिरिबचन श्रीरामउदारा २ । ५८
तब दुन्दुभी घोष सब ठाईं । अरुजयशब्द भयहु हहराईं ॥
साधु साधु बाणी मनहरणी । भईमुदितभे सब सुनिकरणी ३ । ५९
बिजयीलषिपुष्कलकहँराजा । हर्षितभे बहु सहितसमाजा ॥
सुमतिआदियुतकीनप्रशंसा । रिपुसूदनलषि उत्तमबंसा ४ । ६०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेपुष्कलविजयोनाम चतुर्व्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पचीसवां अध्याय ॥

दो० पचिसयें महँ कह सुभुज नृप सेना सन्धान ।
क्रौञ्चव्यूहरचवाय किय युद्ध करन बन्धान १ ॥

शेषनागजी वात्स्यायनमुनि से बोले कि अपने भटोंको रुधिर समूहसे भीगेहुये देखकर राजा सुबाहुने बड़ा शोच किया और उनसे अपने पुत्रके सब कर्म्म पूँछा १ कि उसने अश्व श्रेष्ठ कैसे हरा व फिरउसके संग कितनी सेना आई व कितने लड़ने केवास्ते आये सब हमसे कहो २ व शत्रुओं की सेना के आगे हमारे पुत्रदमनबीर ने कैसे रणकिया व फिर बिजय भी उसने पाया पीछेसे हमारे बीरको किसने मारा ३ राजाके ऐसे बचन सुनकर सब सेवक लोग बोले जिनके कि रुधिरसे सब अंग वस्त्रादि भीगेहुये थे ४ हे राजन्! पुत्र

चिह्नादिसे अलंकृत घोड़े को देखकर श्रीरामचन्द्रजी को तृणवत् मानकर अहङ्कारसे तुम्हारे पुत्र ने अश्वको पकड़वालिया ५ तब थोड़ीसी सेनालिये एक घोड़े का रक्षक आया उसकेसङ्ग रणसंकुल रोमहर्षणयुद्धहुआ ६ व वहवीर तुम्हारे पुत्रके बाणों के लगने से रुधिरसे भीगगया व मूर्च्छित होगया तब अपनी सब सेना लिये हुये शत्रुघ्नजी आये ७ तब शस्त्रास्त्रों से बढ़ाहुआ बड़ाभारी युद्ध हुआ महाबली तुम्हारे पुत्रने कईबार विजयको पाया ८ परन्तु इस समय उनकी ओरके शत्रुघ्नके भाईकेपुत्र वीरके चलायेहुये बाणोंसे तुम्हारे पुत्र रणमें मूर्च्छित हुये व हमलोगोंकी यह दशा हुई कि समर छोड़ना पड़ा ९ यह वाक्य सुनकर राजा रोष व शोक से युक्त हुआ व जैसे पूर्णमासी के चन्द्रमाकोदेख समुद्र बढ़ताहै वैसेही उफलाया १० व रोषसे ओठ कँपाते हुआ अपने सेनापति से बोला व दांतों से दांतोंको घिसताहुआ व शोकसे कर्शित होकर जिह्वासे ओठोंको चाटनेलगा ११ हे [illegible]धिप! हमारीसेनाको अच्छे प्रकार युद्धकरनेके लिये तैयार करो हम अपने पुत्रके मारनेवाले रामचन्द्र के सुभटोंसे युद्ध करेंगे १२ आज अपनेपुत्रकेदुःखदेनेवालेको तीक्ष्ण बाणोंसेमारेंगे चाहे साक्षात् महादेवजीभी रक्षा करें १३ सुबाहु राजा के ऐसे वाक्यको सुनकर सेनापतिने सब सेनाको तैयार किया व आपभी तैयार हुआ १४ व राजासे जाकर कहा कि चतुरंगिणी सब सेना तैयारहै जोकि कालकी सेनाकेसमानहै इससे कोटिशःवीरोंको मार सक्ती है १५ शत्रुवीरोंके मारनेवाला सुबाहु अपने सेनापतिका बचन सुनकर वहां अपनी सेना समेत पहुँचा कि जहां उसके पुत्रके मारनेवाले शत्रुघ्नजीथे १६ मद चूते हुये पर्ब्बताकार हाथियोंसे व पवनके तुल्य वेगवालेघोड़ों से तथा शत्रुओंके जीतनेवाले शस्त्रास्त्रों से पूरित मनुष्योंसे १७ उससमय पृथ्वी कांपने लगी क्योंकि सेनाकेबड़े भारसे नीचेको दबीचली जातीथी इसलिये उससेनाके चलनेके समय बड़ाभारी सम्मर्दहुआ १८ सुवर्णके रथपर चढ़कर राजाको निकलेहुये देखकर इधर कोटि वैरियोंको मारनेवाली शत्रुघ्नजीकी सेना भी युद्धकरने को उद्यत हुई १९ गदा युद्ध करनेमें बड़ा चतुर एक राजाका भाई

सुकेतु नामथा वह सब शस्त्रास्त्रोंसे पूरित रथपर चढ़कर अतिबेग से आया २० व राजाका एक चित्रांग नाम पुत्र जो कि सब युद्धों के करने में बिशारदथा वह अपने रथपर चढ़कर महाउन्मद शत्रुघ्नजीकी सेना को गया २१ व उससे छोटा बिचित्र रण करनेमेंकोबिद एक बिचित्र नाम राजपुत्रथा वह अपने भाई के दुःखसे पीड़ितहोकर सुवर्णके रथपर चढ़करगया २२ इनके बिशेष बड़ेधनुर्द्धर सब शस्त्रास्त्र चलानेमें कोविद और शूरलोग राजाकी आज्ञासेबीरों से पूरित समरको चले २३ राजा सुबाहुने रोषसे समरभूमि में आकर देखा तो बाण लगनेसे मूर्च्छित उसकापुत्र पड़ाथा २४ रथ पर मूर्च्छित अपने दमन नाम पुत्रको देखकर अति दुःखित राजा अपने हाथोंसे पवन करने लगा २५ व जलसे सींचा अपने कोमल हाथों से राजाने सुहराया तब दमनबीर धीराधीरा चैतन्य हुआ मूर्च्छा जाती रही २६ इससे उठबैठा व कहनेलगा कि मेरा धन्वा कहांहै व पुष्कल नाम वीर कहां है रण छोड़कर कहां मेरे बाणोंसे पीड़ित होकर गया २७ अपने पुत्रकेकहेहुये ऐसे वचन सुनकर राजा सुबाहु पुत्रको छातीसे लगाकर बहुत हर्षितहुआ २८ दमन पिताको देखकर बहुत लज्जित हुआ व रुधिरसे भीगाहुआ अपने पिताके चरणों पर भक्तिसे गिरपड़ा २९ तब फिर अपने पुत्र दमनको रथपर बैठाकर राजासुबाहु सेनापति से बोला जिससे कि वह आप रणकर्म्म में विशारदथा ३० तुम रिपुओं से दुर्ज्जय क्रौंचनाम व्यूहरचो जिसके मध्य में होकर हम राजा शत्रुघ्न की सेना को जीतें ३१ ॥

चौ० । सुनि सुबाहु भूपतिकेबचना । क्रौंचव्यूहकी बिरचीरचना ॥
जामहँ सहसा रिपुगणनाहीं । प्रविशत शस्त्रधारि बरुआहीं १ । ३२
तामुख मैं सुकेतुनृपलागो । गलमहँ चित्रांगद अनुरागो ॥
उभयपक्ष दुइ राजकुमारा । पुच्छमाहिं नृप कीनप्रचारा २ । ३३
मध्यतासु चतुरङ्गिणि सैना । करिरचिव्यूह दीनशुभचैना ॥
इमिरचिव्यूह भूपसों भाषा । यहविचित्र पूरक अभिलाषा ३ । ३४
क्रौंचव्यूह संनद्ध बिलोकी । भूपति पुनि बहुभांति अलोकी ॥

युद्धकरनकर कनिविचारा । नृपशत्रुघ्न संशयकबारा ४ । २५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेसुबाहुसैन्यसमागमो नामपञ्चविंशोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

दो० । छब्बिसयें महँ कहसमर लक्ष्मीनिधिरु सुकेतु ।
जिमि शररण पुनि मल्लरण करिपुनि भये अचेतु १

शेषनागजी बोले कि हाथी घोड़े रथ पैदलोंयुक्त मेघोंके समान अतिभयङ्करी सेनाको देखकर शत्रुघ्नजी १ जोकि नानावाक्यों के विचार जाननेवाले पण्डितों से परिसेवितथे अपने मन्त्री सुमतिसे गम्भीरशब्द युक्त वचन बोले २ शत्रुघ्नजीबोले हे सुमतिजी! हमारा घोड़ा अब किसके नगर में आयाहै व समुद्रकी लहरियोंके समान यह जो सेना दिखाई देतीहै ३ यह चतुरंगिणी दुर्द्धर्षसेना किसकीहै जोकि बड़े आदर से युद्धकरनेकेलिये आईहुई आगे शोभितहोती है ४ यह सब जैसाहो यथार्थ हमसे कहो जिसे जानकर युद्धकरने के लिये हम अपने भटोंको आज्ञादें ५ यह वचन सुनकर शुभबुद्धिमान् सुमति मन्त्री प्रीतिपूर्व्वक वैरियोंके सन्तापक शत्रुघ्नजीसे बोले ६ सुमति बोले कि हे महाराज! समीपही एक चक्राङ्कानाम नगरी है जिस में विष्णुकीभक्ति करनेकेकारण सबलोग पापरहितहीबसते हैं ७ उसीपुरी का राजा यह धर्म्मज्ञ सुबाहु है जो कि अपने पुत्र पौत्रादिकों समेत आप के आगे शोभितहोताहै ८ यह राजा नित्य अपनी स्त्री के संग भोगकरता है व पराई स्त्री से पराङ्मुख रहता है श्री महाविष्णुजी की कथा इस के कर्णों में टिकी रहती है व अन्य किसी के अर्थ के प्रकाश करनेवाली कथा कभी इस के कानों में नहीं पड़ती ९ परायाधन अपने छठें भागसे अधिक यह राजा नहीं लेता व ब्राह्मणोंका पूजन यह विष्णुकीभक्तिही से सदा करता रहताहै १० विष्णुकी सेवामें नित्य रतरहता व उनके पादकमलके रसलेनेके लिये भ्रमररूपहै व अपने क्षत्रियके धर्म्मसे निरत रहता व परधर्म्मसे पराङ्मुख रहताहै ११ इसीके बलसे सब बलीहैं वीरों के बलसे यह कभी अपने को बली नहीं समझता सो अपने पुत्रको

पतन सुनकर रोष शोकसे युक्त होकर १२ चतुरंगिणीसेना लेकर युद्ध करनेके लिये आयाहै तुम्हारेभी लक्ष्मीनिधि आदि बहुत से वीरहैं १३ इसलिये शस्त्रसमूहों से जीतेंगे उनको शीघ्रही आज्ञा दीजिये कि शत्रुओं को जीतें तब शत्रुघ्नजी ऐसे वचन अपने योद्धाओं से बोले १४ जिनके कि रणहोनेके हर्षसे मनभरेथे कहा कि देखो सुबाहु के भटोंने आज क्रौंचव्यूह बनायाहै १५ उसके मुख व पक्षों में जो योद्धा स्थितहैं कहो उनको कौन शस्त्रज्ञ विदारण करेगा जिसको भेदन करने में अपनी शक्तिहो व जो वीर विजय में उद्यतहो १६ वह हमारे करकमलसे बीरालेवे तब लक्ष्मीनिधि बीरने क्रौंचव्यूह भेदनकरने के लिये बीरा ग्रहण किया १७ व सब शस्त्रोंके जानने वाले बहुत से वीरोंसे युक्त यह वचन कहा कि हे राजन्! हम क्रौंच भेदनको जायँगे १८ व कहा कि कितो पूर्वकालमें परशुरामजी ने ही क्रौंचव्यूहका भेदन कियाहै कितो अब हमीं करसक्तेहैं तब फिर शत्रुघ्नजीने और वीरोंसे कहा कि इनकेसाथ और कौन वीरजायगा १९ तब पुष्कलजी ने उनके संग २ जाने की इच्छाकी फिर शत्रुघ्न जीकी आज्ञासे रिपुताप नीलरत्न उग्रास्य वीरमर्दन २० ये सब क्रौंचभेदन करनेके लिये गये फिर बहुत शस्त्रास्त्र धारण किये रथपर चढ़कर २१ बहुतसी सेनासंगलिये पीछे से शत्रुघ्नजी भी वहांगये व दोनों सैन्य सागरोंको चलते हुए परस्पर देखकर २२ उस समय हर्षित होकर परस्पर दोनों सैन्यसागर महा तरंगोंसे युक्त प्रलय करनेही के लिये मानों उद्यतहुये तब दोनों सेनाओं में युद्धके नगारे बाजे २३ व समर की तुरुही और शंखोंके शब्द सर्व्वत्र सुनाई देने लगे घोड़े हिनहिनानेलगे व हाथी जोरसे गर्ज्जनेलगे २४ वीर लोग हाहाकार करनेलगे व रथोंकी पहिया शब्द करने लगीं वहां राजा सुबाहुके बलसे दर्पित वीरलोग बड़े कुपित हुये २५ काटो मारो बिदारो ऐसा सब रणमें बहुतलोग कहनेलगे जब शत्रुघ्नजी के वैरीकी ऐसी सेना उद्यतहुई २६ तो क्रौंचव्यूहमें जो सुकेतु वीरमुख स्थानमें स्थितथा उससे लक्ष्मीनिधिवीर बोले लक्ष्मीनिधिने कहाकि हम जनकके पुत्र लक्ष्मीनिधिहैं २७ व सबशस्त्रास्त्र

में कुशल व सब युद्धमें विशारदहैं अभी सम्पूर्ण दानवोंके मारनेवाले श्रीरघुनाथजी के घोड़ेको छोड़दो २८ नहींतो हमारे बाणों से कटकर यमपुरको जाओगे इसमें अन्तर न पड़ेगा ऐसा कहतेहुये वीराग्रणी लक्ष्मीनिधि से पुकार कर राजा सुकेतु जल्दी से २९ धन्वाच ाकर बाणसमूह समर में छोड़तेहुए खड़ाहुआ वे सब तीक्ष्ण सुवर्णकीफोंको से युक्त बाण सब ओरसे रणमें ३० दिखाईदेने लगे जिधर देखो बाणही बाण दृष्टिमें पड़ते थे तब लक्ष्मीनिधिजी ने अपने धन्वापर बाण चढ़ाकर उस ओरके उन शरोंको काटडाला व उस ओर के सुकेतु नामवीर की छाती में तीक्ष्णफोंकवाले छ बाण मारे ३१ वे बाण राजा सुबाहुके भाई सुकेतुकी छाती को विदीर्ण करके बाहर निकलगये व रुधिर लगने के कारण पृथ्वीकी धूलि लगनेसे मैले दिखाई देनेलगे ३२ उन बाणोंसे भिन्न हृदय होकर सुकेतु अति कुपित हुआ व अति तीक्ष्ण बीस बाण उसने चलाये ३३ वे सब लक्ष्मीनिधि के लगे इससे दोनों बाणों से भिन्नांग हुये व दोनों के अङ्गोंसे रुधिरबहने लगा इस लिये फूलेहुये पलाशके समान दोनों को सेनाके लोग देखतेथे ३४ व दोनों ऐसी शीघ्रताके साथ किरोड़ों बाण चलाते थे कि कोई नहीं देखताथा कि कब सन्धान होताहै व कब बाण छूटतेहैं ३५ अपने २ धन्वाओंको कुण्डलाकार झुकाकर ऐसी बाण वर्षा करतेथे जैसे कि इन्द्रकी आज्ञासे मेघ आकाश से जलकी वर्षा करतेहैं ३६ उन दोनोंके बाण केवल हाथी घोड़े मनुष्यों के शिर काटते हुये तो दिखाई देतेथे पर चढ़ाते चलाते में नहीं दिखाई देते ३७ वहांतक धन्वा बाण हाथों में लिये क्रोधसे दोनों ओठों को चबाते हुए किरीट कुण्डल धारण कियेहुये वीरोंके चबुरी बांधेहुये शिरोंसे पृथ्वी पूर्ण होगई थी ३८ बड़े अहङ्कारसे युद्ध करतेहुये शस्त्रास्त्र धारण कियेहुये उन दोनोंका ऐसा भयङ्कर युद्ध हुआ जिससे कि देवता लोगभी विस्मित हुये ३९ किरोड़ों वीर इधर उधरके मारेगये ऐसा महा घमासान का युद्ध हुआ कि बाणजाल के बीचमें आकाशके सिवाय और कुछ दोनों ओर दिखाई नहीं देताथा उस समय शत्रुमर्दन लक्ष्मीनिधि वीरने अपने धन्वापर आठ बाण

और चढ़ाये जोकि अत्यन्त तीक्ष्ण थे ४१ उन में चार बाणों से तो सुकेतु के रथके चारों घोड़े मारडाले व एक से हँसतेहुये उन्हों ने बड़ी शीघ्रता के साथ ध्वजा काटडाली ४२ व एकसे सारथिका शिर काटकर भूमि में गिराया व अति रोषयुक्त होकर एकसे प्रत्यञ्चा सहित धन्वा काटडाला ४३ व एक बाण से उन बेगवान् राजा ने सुकेतुके हृदय में मारा उनका यह अद्भुत कर्म्म देखकर बीरलोग अतीव विस्मितहुये ४४ जब सुकेतुका धन्वा कट गया व घोड़े सारथि के मारजाने से वह बिरथ होगया तो युद्ध करनेकी इच्छासे एक बड़ीभारी गदा लेकर वह उपस्थितहुआ ४५ गदायुद्धमें विशारद सुकेतु को पैदरआतेहुये बड़ीगदा लिये देखकर लक्ष्मीनिधि बीरभी अपने रथपरसे उतर पड़े ४६ व एक सुवर्णके कामसे चमकतीहुई लोहेकी बड़ीदृढ़ गदा लेकर जोकि सब शोभासे युक्तथी ४७ अति क्रोध करके लक्ष्मीनिधिजी ने बड़े बल से बज्रसमान कठोरगदा सुकेतुकी छाती में मारी ४८ परन्तु उस गदाके लगनेसे वहबीर कुछभी न कांपा जैसे कि मतवाले हाथीको कोई बालक फूलोंकी माला से मारे व वह कुछभी नहीं समझता ४९ व फिर उसने राजा लक्ष्मीनिधिबीर से यह कहा कि यदि शूरबीर होओ व शत्रुओंको सन्तापित करतेहो तो अबकी एकहमारा प्रहारसहो ५० इतना कहकर उसने ललाटमें अति दृढ़तासे गदा मारी कि जिसके लगनेसे मुखसे रुधिर उगिलते हुये अतिक्रुद्ध होकर ५१ लक्ष्मीनिधिने कालरूप एकगदा से सुकेतुके शिरमें प्रहार किया व सुकेतुने भी दूसरी गदा इनके कांधेपरमारी ५२ इसप्रकार गदायुद्धमें विशारद दोनों परस्पर जीतने की इच्छाकिये हुये बड़ी देरतक गदायुद्ध करतेरहे ५३ दोनों परस्पर जीतने व मारनेकी इच्छासे युद्ध करतेरहे परन्तु न कोई हीनहुआ न कोई बिजयी हुआ ५४ दोनों महाबल पराक्रमी शिर मस्तक कन्धे छाती व सब अंगों से रुधिर बहातेहुये युद्ध करने में बड़े बल व पराक्रम से सनद्धरहे ५५ तब लक्ष्मीनिधि महाबली अत्यन्त क्रुद्धहोकर राजाके भाई के मारने के लिये एकगदा उठाकर हृदयमें मारनेको बनाय सम्मुख

आया५६ उसको इसप्रकार आतेहुये देखकर महापराक्रमी राजाके भाईने भी एक बड़ी भारी गदाहाथमें लक्ष्मीनिधिके मारनेके लियेली ५७व उसकेऊपर गदाचलाई परन्तु उसने इनकी चलाईहुई गदाको पकड़लिया व उसीसे इनकी छातीमें बड़ेबलसे मारा ५८ अपनी गदाको उससे पकड़ीहुई देखकर राजा लक्ष्मीनिधि बाहुयुद्ध करने के लिये उद्यतहुये ५९ तब राजासुबाहुका भाई जोकि सबप्रकारके युद्धोंमें चतुरथा अतिक्रोधकरके दोनोंहाथों से लक्ष्मीनिधिको पकड़कर युद्धकरनेलगा ६० तब लक्ष्मीनिधिजीने एक मूका उसकी छाती में मारा तो उसने भी एकमूका बड़ेबलसे इनके शिरमें मारा ६१ इसप्रकार वज्रसमान मूकोंसे दोनों परस्पर दांतोंसे दांत पीसतेहुये एक दूसरेको मारनेलगे ६२ तब मूकोंमूकोंसे दांतों दांतोंसे केशकेशों नखनखोंके खींचनेसे महाभुरमुटका लोमहर्षण युद्ध दोनों से हुआ ६३ तब सुकेतुने अतिक्रोधकरके लक्ष्मीनिधिको पकड़कर घुमाया व पृथ्वीपर बड़ेबलसे पटकदिया ६४ परन्तु लक्ष्मीनिधिने सँभरकर उसके दोनों हाथ पकड़कर उससे सौगुणा अधिक घुमाकर एक हाथीके ऊपरको फेंकदिया ६५ वह पृथ्वी में गिरा हुआ क्षणमात्रही में फिर होश में होकर उसवीरने उसी तरहसे आकाश को घुमाया ६६ इसरीतिसे युद्धकरते २ दोनों एकमें लपटगये पैरों से पैर मिलाये हाथोंसेहाथ मुखसेमुख छातीसेछाती मिलाकर मल्लयुद्ध बड़ेक्रोधसे करनेलगे ६७ इसप्रकार दोनोंलपटगये एकदूसरेके वधकर डालनेकी इच्छासे ऐसे बलसे प्रहारकिये कि दोनों संगही मूर्च्छित होगये ६८ ॥

चौ० । देखि उभयगतिइमिसबवीरा । विस्मितभये त्यागिनिजधीरा ॥ धनिलक्ष्मीनिधि धनिनृपभ्राता । कहनलगे मुनि२यहबाता १।६९

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

दो० । सत्ताइसयें महँ कह्यो पुष्कल अरु चित्रांग ॥
कीनभयङ्कर समरजहँ पुष्कल विजयशुभांग १ ।

शेषनाग वात्स्यायनमुनि से बोले कि उस क्रौंचव्यूह के कण्ठमें

सुबाहुकापुत्र वीरशिरोमणि चित्रांगनाम रथपर चढ़ा हुआथा वह आगे बढ़कर समरको थहानेलगा जैसे कि शूकरावतार धारण करके प्रलयके जलमें श्रीहरि थहानेलगेथे १ व उसने मेघके नादके समान शब्द करतेहुये धन्वा को चढ़ाया व कोटिवैरियों के भस्म करनेवाले बाणसमूह चलाये २ उन बाणोंने छिन्नभिन्नहोकर किरीट कुण्डलादि धारणकियेहुये सहस्रोंवीर रणभूमिमें दांतोंसे ओठदबायेहुये सोये ३ इसप्रकारके युद्धहोनेपर वैरियोंके सन्ताप करानेवाले विचित्रधन्वाकोलेकर भरतजीकेपुत्र पुष्कलजी युद्धकरनेको गये ४ उन दोनों के मनोहररूप संग्राममें ऐसे दिखाई दिये कि जैसे पूर्व्व समय तारकासुर और षडाननजीकेरूप दिखाईदियेथे ५ पहुँचतेही पुष्कलजीने अपने धन्वा पर टंकोरदेकर सैकड़ों बाणोंसे चित्रांग को मारा ६ चित्रांगने भी अतिक्रोधकर अपनेधन्वापर सैकड़ोंबाण धारणकिये व समरमंडलमेंचलाये७वेदोनों ऐसीशीघ्रताकेसाथबाण चलातेथे कि न तो कोई उनका सन्धानकरना देखताथा न छोड़ना देखताथा केवल दोनों कुण्डलीकृत धन्वा बाण किये एक दूसरेकी तरफ़ देखते हुए दिखाई देतेथे ८ तब अपारक्रोधकरके पुष्कलजीने उसमहाउद्भट योद्धाकी छाती में तरप्फक सौ बाण मारे ९ परन्तु लगने के प्रथमही चित्रांगने उनबाणों को अपने शरोंसेतिल २ करके क्षणमात्रही में काटडाला व तीक्ष्णसायकों से पुष्कलजी को ताड़ित किया १० पुष्कलजीने एक ऐसा आग्नेयबाणमारा कि जिनके लगनेसे चित्रांगकारथ उड़कर आकाश में भ्रमण करने लगा यह महा अद्भुत कर्म्म हुआ ११ घोड़े सहित वह रथ दोपहरी तक आकाशहीमें घूमता हुआ व रणमण्डल में पकड़ा बड़े कष्ट से स्थित रहा १२ जब रथ नीचे को आया तो पुष्कलके इसविक्रमको देखकर कोप करके बुद्धिमान् सब शस्त्रास्त्रों में विशारद चित्रांग ने कहा कि १३ सारथि घोड़े सवार सहित हमारे रथ को तुमने आकाश में पहुँचादिया यह बहुत उत्तम कर्म्मकिया इसलिये इसे सब सुभटों ने माना १४ अब हमारा भी सब सुभटों से पूजित विक्रम देखो व आपभी रथपर चढ़ेहुये आकाशमें देवताओंसे पूजित होवें १५

ऐसा कहकर सर्व्व धर्म्मज्ञों में उत्तम सब धनुर्विद्या में विशारद चित्रांग ने परमदारुण अस्त्रचलाया १६ उस बाण के लगने से घोड़े सारथि रथी समेत पुष्कलजी का रथ आकाशमें पतंग के समान उड़नेलगा १७ जब आकाशमें देरतक उड़कर नीचे को आने पर हुआ तबतक उसने दूसरा बाणमारा १८ कि फिर सारथी सहित ऊपर घूमने लगा जब फिर घोड़े सारथि रथी सहित वह रथ आकाशमें घूमने लगा तो उस राजकुमारका कर्म्म देखकर सब लोग बहुत विस्मित हुये १९ किसी प्रकार से जब रथ फिर रणभूमि में आया तो अति क्रोधकरके पुष्कलजीने बाणोंसे घोड़े सारथि सहित चित्राङ्गके रथको तिल २ काटडाला २० रथ भग्न होने पर वह बीर दूसरे रथपर सवारहुआ पुष्करजी ने समरभूमि में उसेभी काटडाला २१ फिर और रथपर चढ़कर जैसेही सम्मुख आया कि वैसेही उसरथको भी तीक्ष्ण बाणोंसे तुरन्त पुष्कलजीने छिन्न भिन्न करदिया २२ इसप्रकार महा समरशाली पुष्कलजी ने राजकुमार चित्राङ्गके दश रथ एक दूसरे के पीछे तरपटक काटे २३ तब चित्राङ्ग एक विचित्र रथपर चढ़कर पुष्करजीकेसङ्ग युद्धकरने के लिये रणभूमि में आया २४ व उसने आतेही पांचबाण पुष्कल जीके मारे उनबाणों के लगने से भरतजीके पुत्र अतीव व्यथित हुये २५ फिर उन्होंने अत्यन्त क्रोधकरके चित्राङ्ग के हृदयमें सुवर्णकी फोंकोंके लगेहुये बड़े तीक्ष्ण दशबाण मारे २६ उन दारुण बाणों ने उसके हृदय का बहुत रुधिर पानकिया व पीकर फिर निकलकर जायपृथ्वीमें घुसे २७ तब क्रोधकरके चित्रांगने पांचभाले लिये व महापराक्रमी पुष्कलजी के हृदय में बड़े बलसे मारे २८ उनभालों के लगनेसे पुष्कलजीने क्रुद्धहोकर अति श्रेष्ठ अपने धन्वा पर बाण चढ़ाकर चित्राङ्गके बध करडालने की प्रतिज्ञाकी २९ कि हे राजपुत्र! हमारी प्रतिज्ञा शीघ्र सुनो जोकि तुम्हारे बधके लिये करते हैं यह जानकर खबरदारी के साथ लड़ो ३० जो इसी बाण से तुमको हम प्राण रहित न करदें तो शील आचार से शोभित पतिव्रतास्त्रीके पातिव्रत भङ्गकरनेवालेको ३१ यममार्ग्गमें जाकरजो

लोकमिलताहैवहीलोकहमकोमिले यहहमनेसत्य २ प्रतिज्ञाकीहै ३२ ऐसा श्रेष्ठवचन सुनकरपरवीरनाशक चित्राङ्ग बहुत हँसा व पुष्कल जीसे वह मतिमान् वीर बोला कि ३३ प्राणियोंकी मृत्यु सदा व सर्व्वत्र अपनेसमयपर होती ही है इससे हेशूरशिरोमणिजी ! हमको समरमें मरजानेसे कुछ भी दुःख न होगा ३४ हे वीर ! अतिशोभित वीरराज तुम ने जो प्रतिज्ञाकी है वह सत्यही है परन्तु हमारा कहा हुआ भी वचन सुनो ३५ जो बाण तुमने हमारे मारडालनेकेलिये प्रतिज्ञाकरके उठायाहै उसे जो हम अपनेबाण से न काटडालें तो सब वीरों के अभिमान से युक्त हमारा वचन सुनो ३६ जो कोई तीर्थजानेकी इच्छाकियेहुये पुरुषको अपनेमनसे भी रोंकताहै वा उसके जानेमें विघ्नकरताहै व जो एकादशीव्रतसे और किसी व्रत को उत्तमसमझता है ३७ उसकापाप हमको लगे जो हम तुम्हारे इस बाण को न काटडालें यह कहकर चित्राङ्ग चुपहोकर अपना धन्वाहाथमें लेकर खड़ारहगया ३८ तब अपनेनिषंगसे एक अति सुन्दर बाण निकालकर धन्वापर चढ़ाकर पुष्कलजी फिर वीरघा· तक वाक्य बोले कि ३९ जो हमने एकाग्रमन से श्रीरामचन्द्रजीके युगलचरणोंकी उपासनाकीहो तो हमारावचन सत्यहो ४० व जो हम अपनी स्त्री को छोड़ अन्यस्त्रीको मन से भी कभी भोगकरनेके लिये न जानते हों तो उस सत्यसे समरभूमिमें हमारा वाक्य सत्य हो ४१ यह कहकर शीघ्रही बाणको धन्वापरचढ़ाया जोकि का- लाग्निकेसमान था व वीरके बधकरनेकेलिये चलाया ४२ उस बाण को धन्वा पर चढ़ेहुये देखकर उस बलवान् राजकुमार चित्रांगने भी अपने धन्वापर एक कालाग्निही केसमान कराल बाण चढ़ाया ४३ व उस बाणसे पुष्कलजी के चलायेहुये अपनेबधकरनेमें उद्यत उस बाणको काटडाला उस बाणके कटजानेपर बड़ाभारी हाहाकार हुआ ४४ परन्तु उसका परार्द्धखण्ड तो पृथ्वीपर गिरपड़ा व पू- र्वार्द्धखण्ड सफलहुआ इसलिये जाकर राजपुत्रके शिरको काटकर अलग करदिया जैसे कमलका फूल कोई अलगकरडालताहै ४५ ॥

चौ० तबशिररहितगिरतक्षितिमाहीं । लखिनृपसुतहि कुबीरतहांहीं ॥

हाहाकरि नृप सैन्यसमेता । भागचले निजजन दुखदेता १ । ४६
कुण्डलमुकुट सहितशिर महिपर । पतित सुहावन लग्योश्रेष्ठतर ॥
जिमिनभगतसोहतबिधुमण्डल । तिमिसोरणमहँशीर्षसकुण्डल २ । ४७
पतित विलोकि ताहिवरवीरा । भरततनयपुष्कल रणधीरा ॥
व्यूहसहित परसैन्य मझारी । करनविलोड़न लगे प्रचारी ३ । ४८

इति श्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेचित्रांगद
बधोनामसप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

दो० । अट्ठाइसयें महँ कह्यो सुभुज पवनसुत युद्ध ॥
जहँ सुबाहु मूर्च्छित लह्यो ज्ञानयदपिथोक्रुद्ध १

शेषनाग वात्स्यायन मुनिसे बोले कि प्राणरहित अपने पुत्रको पृथ्वीपर पतित देखकर पुत्रके दुःख से दुःखितहोकर राजा सुबाहु ने बड़ा बिलापकिया १ अति दुःखितहोकर हाथों से शिर पीटने लगा थर २ काँपते हुये राजा कमलरूपी नेत्रोंसे आँसुओं की धारा छोड़ने लगा २ पुष्कलजी के बाणों से छिदाहुआ कुण्डलों से शोभित चन्द्रबिम्बसमान मनोहर अपने पुत्रका रुधिर से सिक्त पतित शिरहाथमें लेकर ३ जोकि टेढ़ीभौहोंसे युक्त दाँतोंसे ओठदबाये चबुरी बांधेथा उसे अपने मुख कमल से चूमकर बिलाप करताहुआ राजा यह बोला कि ४ हा पुत्रशूर ! उत्कण्ठा कियेहुये मनवाले हमको क्यों नहीं देखते क्याहमारे विनोदकी कथा से रहित तोनहींहो अथवा रोषके समुद्रमें तोतुम्हारा मननहीं डूबगया जो नहीं बोलते ५ हे पुत्र ! कहो हँसते हुये तुम हमसे क्यों नहीं बोलते हे पुत्र ! मधुरस्वाद युक्त अमृतवद्वचनों से हमको हर्षितकराओ ६ श्वेत चामर युक्त सुवर्णके पत्र से चिह्नित शत्रुघ्न के अश्वको तुम ग्रहणकरो हे महामते ! निद्राको छोड़ो ७ श्वेत प्रतापी प्रतापाग्रय शत्रुओंको सन्तप्तकरनेवाले शत्रुवीरोंके नाशक ये पुष्कलवीर आगे खड़ेहैं ८ इनको धन्वा से निकले हुये तीक्ष्ण बाणोंसेरोंको हे वीर ! विमोहित होकर तुम बीचरण में कैसे सोरहेहो ९ हे वीर ! हाथी पैदर व रथपर चढ़ेहुये लोग भयसे पीड़ित शरणागतवत्सल तुम्हारे शरणमें आये

हैं इनको देखो तो १० हे पुत्र ! तुम्हें बिना समरमें प्रचण्ड धन्वासे निकलेहुये शत्रुघ्न के तीक्ष्ण बाणों को हम कैसे सहसकेंगे ११ इससे तुमसेहीन हमको कौन पालितकरसकेगा यदि तुम निद्रा छोड़ो विजय के योग्य हो १२ इस प्रकार पुत्र दुःख से दुःखित होकर अपने हाथों से छाती पीटते हुये राजा सुबाहु ने बड़ा विलाप किया १३ तब विचित्र व दमन दोनों राजा के पुत्र रथपर चढ़े हुयेआये व राजाके चरणों में प्रणाम करके समयके उचित बचन बोले १४ कि हेराजन् ! हमलोगों के जीतेहुये तुम्हारे मनमें कौन दुःखहै सो कहो वीरलोगों की मृत्यु जो समरमें हो तो वह उनकी वाञ्छितही मृत्युहै १५ इससे वीरभूमि में शोभित ये भाई चित्रांग धन्यहैं जो कि किरीट धारण किये चतुरीबांधे संग्राम में विराजते हैं १६ शीघ्र कहिये इस समय तुम्हारा कौनसा वांछितकार्य्य करने केयोग्यहै हमलोग सम्पूर्ण शत्रुघ्नकी सेनाको मारकर अनाथ किये देतेहैं १७ व अभी अपने भाई के बध करनेवाले पुष्कलका मुकुट सेवितशिर समरमें गिरातेहैं १८ हे महामते ! शोकको छोड़ो दुःखित कैसे शोभितहोतेहो आज्ञाकेयोग्य हमलोगोंको आज्ञादो व युद्धकरने में बुद्धिकरो १९ दोनों पुत्रोंके वीरतायुक्त वाक्य सुनकर शोकको छोड़कर महाराज सुबाहुने युद्धकरनेकाविचारकिया २० व उनदोनों राजकुमारों ने अपने समान योद्धाओं की इच्छा की दोनों बहुत से बीरोंसे पूरित रणभूमि में गये २१ व रिपुतापनाम वीरकेसंग तो दमन युद्ध करनेलगा व विचित्रनील रत्नवीरके साथ सहस्त्रोंबाणोंसे ऐसे युद्धकरनेलगे जैसे कि वर्षाकालमें दो बड़े २ बादर जल वरसाते हैं २२ व राजा सुबाहु सुवर्णसे बनेहुये रत्नोंके गुम्मजवाले चित्रविचित्र रथ पर चढ़कर धन्वालिये २३ किरोड़ों वीरोंसहित शत्रुघ्नजीकेसंग युद्धकरने को गया व अपने मनसे धनुर्विद्यामें विशारद बड़े २ वीरों को तृणवत् समझनेलगा २४ रोषसे पूरित पुत्रके नाशके शोक से सब सैन्यका बधकरतेहुये युद्ध करनेकोआये राजासुबाहुको देखकर २५ शत्रुघ्नजीके समीप पैदर खड़ेहुये हनुमान्जी सम्मुख हुये व नखोंकोही आयुध बनाये हुये उन्होंने रणभूमिमें मेघोंकीतुल्य महा

नादकिया २६ तब महाशब्द करते आते हुये उन हनुमान्जी से क्रोधसेपूरित हँसताहुआ राजा सुबाहुबोला कि २७ जिसने रण में हमारे पुत्रकोमाराहै वह पुष्कल कहां है बताओ हम अभी ज्वलित कुण्डलयुक्त उसकाशिरकाटतेहैं २८ घोड़ेकेरक्षक शत्रुघ्न कहां हैं व रामचन्द्र कहां हैं व संग्राम में आयेहुये अपने प्राणहन्ता हमको देखें २९ ऐसा कहा हुआ वचन सुनकर हनुमान्जी उससे बोले कि लवणासुर के छेदन करनेवाले शत्रुघ्नजी घोड़ेकेरक्षक यहीं तो विद्यमानहैं ३० परन्तु हे नृप ! जबतक कि उनके बहुतसे सेवक विद्यमानहैं तबतक वे कैसे युद्धकरें हे पुरुषश्रेष्ठ ! हमको रणमें जीत कर फिर उनके समीपजाना ३१ ऐसा कहतेहुये पर्व्वतके आगेही मानों टिकेहुये हनुमान्जीकी छातीमें सुबाहुने दशबाणमारे ३२ परन्तु आयेहुये उन बाणों को लगनेके प्रथमही हनुमान्जीने पकड़ लिया व यद्यपि वे बड़े तीक्ष्ण व बैरिबिदारण करनेवालेथे पर पकड़तेही चूर्णकरके तिल २ करडाला ३३ बाणोंको तिल २ चूर्णकरके फिर मेघवत् गर्ज्जे व अपनीपूंछ बड़े वेगसे घुमाकर सुबाहु के रथको लपेटकर ऊपर को कूदगये ३४ जब रथको लेकर आकाशमें पहुँचे तब उसपर चढ़े हुये उस राजाने सैकड़ों तीक्ष्णबाण उसपूंछ में तरपटकमारे ३५ जब इसप्रकार पूंछमें सैकड़ों तीक्ष्णबाणोंसे हनुमान्जी मारेगये तो उन्होंने उस रथको छोड़दिया जोकि सुवर्णसे विचित्रितथा ३६ जब वह राजा रथसहित छूटगया तो रोषसे पूरित होकर उसने हनुमान्जी के बहुत तीक्ष्ण बाणमारे ३७ तब बाणोंके लगने से सर्वत्र रुधिरसे भींगेहुये हनुमान्जीने राजाके ऊपर बड़ा भारी रोष किया ३८ व अपने दांतों से पकड़कर सुबाहुके रथको घोड़ेसारथि समेत रत्ती २ चूर्णकरडाला यह कर्म्म बड़ा अद्भुतसा हुआ ३९ अपने रथको चूर्णीभूत होतेहुये देखकर अतिवेग से वह बलीराजा झटकूदपड़ा व अन्यरथपर चढ़कर फिर हनुमान्जी से युद्धकरने को उपस्थितहुआ ४० व बाणसन्धान करनेमें परमचतुर उसवीरने बानर शिरोमणिके मुख पूंछ छाती भुजा व चरणोंमें शरसमूह मारे ४१ तब अत्यन्त क्रुद्धहोकर हनुमान्जी ने सुभटों में

शोभित राजा सुबाहुकी छातीमें एक लात बलसेमारा ४२ कि चरण-तल लगनेसे राजा रथपरसे पृथ्वीपर गिरकर मूर्च्छितहोगया व मुख से गर्मरुधिर बमन करताहुआ श्वासछोड़ता हुआ कांपनेलगा४३ तब हनुमान्जी अत्यन्त क्रुद्ध होकर रण में हाथी घोड़े रथ व पैदरों को मारने मर्दने लगे यहां तक कि कूद २ कर बहुतों को चूर्णीभूत कर डाला ४४ इतने में सुबाहुके भाई सुकेतुकी व राजालक्ष्मीनिधिकी मूर्च्छा जागी कि दोनों वीर तैयारहोकर फिरयुद्धकरनेपर उपस्थितहुये ४५ व राजाको मूर्च्छितदेख सबलोग उसीबीचमें भागखड़ेहुये क्योंकि इधरउधर पुष्कलादिकोंने बाणोंसे उनको छिन्नभिन्न करडालाथा ४६ उसभागेहुये अपनेसैन्यको राजपुत्र दमनने बड़ा ढाढ़सबँधाकर किसी प्रकारथँभाया जैसे चलायमान समुद्रको श्रीरामचन्द्रजीके सेतुनेथँभा दियाथा ४७ तब मूर्च्छित राजा ने एकस्वप्न देखा जब किरण के मध्य में हनुमान्जी के चरणाघात से ताड़ितहुआथा ४८ क्या देखा कि अयोध्याजी में सरयूनदी के तीरपर मण्डपकेनीचे श्रीरामचन्द्रजी विराजमानहैं व बहुतसे यज्ञकर्त्ता ब्राह्मणलोग सबओर से घेरेहुये बैठे हैं ४९ व वहीं ब्रह्मादिक सब देवगण बैठे हैं व वहीं कोटिशः ब्रह्माण्ड इकट्ठेहैं सब के सब हाथजोड़े श्रीरामचन्द्रजीकी स्तुतिकर रहेहैं ५० व श्यामस्वरूप सुन्दरनयनवाले मृगशृङ्ग हाथ में लिये हुये श्रीरामचन्द्रजीको वीणा हाथों में लिये नारदादिक मुनिलोग गायरहेहैं ५१ व घृताची मेनकादि अप्सरायें वहां नृत्यकररहीं हैं व चारोंवेद मूर्त्तिधारणकियेहुये श्रीरामचन्द्रजीकी उपासना करतेहैं ५२ व रामचन्द्रजी नानाप्रकारकी भोगबिलास करनेकी वस्तु सब को देरहेहैं व अपने भक्तोंकेऊपर अनुग्रह करतेहैं ५३ इत्यादि स्व-प्न में देखकर राजा जागा व उसकी मूर्च्छा जागी ब्राह्मण के शाप के कारण ज्ञान जातारहाथा इस से राजा कहनेलगा कि मैंने यह क्या देखा व मुझ से ये समाचार किसने कहे ५४ फिर शोचकर वहांसे उठकर पैदर शत्रुघ्नजी के चरण शरणको चला राजाकेसङ्ग किरोड़ों सेवकचले व किरोड़ों रथ ५५ युद्धकरनेको उद्यत सुकेतु विचित्र व दमनको बुलाकर धर्म्मवेत्ता उसराजाने निवारणकरदिया ५६ धर्म्मा-

त्मा धर्म्मसंयुक्त वह महाराज उनसबोंसे बोला कि रेपुत्रो! हे भाई! धर्म्मयुक्त हमारा वचन सुनो ५७ अब युद्ध न करो बड़ाभारी अन्याय हुआ जोकि श्रीरामचन्द्रजी के घोड़ेको हे दमन! तुम ने पकड़रक्खा ५८ क्योंकि ये रामचन्द्रजी परब्रह्म हैं कार्य्य व कारण पुरुष प्रकृति दोनों से परेहैं ये चराचरके स्वामी हैं मनुष्य का शरीर नहीं धारण कियेहैं ५९ यह ब्रह्म विज्ञान इससमय हमने जाना हे पापरहितो! पूर्व्वकाल के असितांग मुनि के शाप से हमारा ज्ञान हरगया था ६० हम पूर्व्वसमय में ज्ञान जानने की इच्छासे तीर्थयात्रा करने गयेथे नहीं जानते वहां हमने कितने धर्म्मवित्तम मुनिदेखे ६१ जाते जाते जाननेकी इच्छासे हम असितांगमुनि के पासगये तब हमारे ऊपर कृपाकरके उन मुनिने हम से कहा कि ६२ जो ये अयोध्या के अधिपति हैं वे परब्रह्महैं व उनकी जो जानकी देवी हैं वे चैतन्यमयी हैं ६३ इससे योगी लोग यम नियमादिकों से इनकी ऐसीही उपासना करतेहैं जोकि दुस्तर अपार संसार सागरको उतराचाहते हैं ६४ ये गरुडध्वज श्रीरामचन्द्रजी स्मरणमात्र से ब्रह्महत्यादि महापापों को हरतेहैं जो विद्वान् इनकी सेवा करेगा वह संसारको उतरजायगा ६५ तब हम उन विप्रजी को हँसे कि ये रामचन्द्र मनुष्य कौन हैं व हर्ष शोक से समाकुल ये जानकी देवी क्या हैं ६६ अजन्मा परमेश्वर का जन्म कैसे होसक्ताहै व अकर्त्ताको इस संसार में क्या करना है जिसके लिये आयाहै हे मुनिजी! जो जन्म मृत्यु जरासे रहितहो उसे हमको बतावो ६७ ऐसा कहते हुये हमसे शाप देतेहुये मुनीश्वरजी बोले कि हे अधम! उनके स्वरूपको बिना जाने हमसे तू ऐसा कहता है ६८ जोकि ये मनुष्य हैं ऐसा कहकर इन रामचन्द्र जी की तू निन्दा करता है इससे तू तत्त्वज्ञान से सम्मूढ़ होकर केवल अपने पेटको भरतारहेगा ६९ तब हमने उनके चरण पकड़े तब उन करुणानिधिने कृपायुक्त होकर मेरे ऊपर बड़ी दयाकी ७० व कहा कि जब तू रामचन्द्रजी के सङ्ग यज्ञ में विघ्न करेगा तब हनुमान्जी तेरे एक लात मारेंगे ७१ तब तू श्रीरामचन्द्र जी को जानेगा यों अपनी बुद्धि से न जानेगा पूर्व्व समय में मुनि

नें जैसा हम से कहा था वैसा हम ने अभी देखा ७२ ॥
चौ०॥ जब ह्वै क्रुद्ध मोहिं हनुमाना । वक्षस्स्थल महँ हन्यो महाना ॥
तब मैं पूर्णब्रह्म भगवाना । देख्यहुँनिजनयनन धरिध्याना १ । ७३ ॥
तासों शोभायुत सो बाजी । लावहु त्वरित न होहु अकाजी ॥
धनअरुबसन राज्यसब येहू । सविनयचलहुरामकहँदेहू २ । ७४ ॥
पुण्यरूप मख महँ श्रीरामहिं । लखि कृतार्थ होवें गुणधामहिं ॥
लावहु तुरग रुचत यह बाता । देहु उन्हें वे जगके त्राता ३ । ७५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेसुबाहुपराजयोनामा ऽष्टाविंशोऽध्यायः २८ ॥

उन्तीसवां अध्याय ॥

दो० उन्तिसयें महँ कह सुभुज नृप जिमि सहपरिवार ॥
सह धन रघुपति दरशहित नृपरिपुहनहि जुहार १

शेषनागजी वात्स्यायनमुनि से बोले कि पिताके ऐसे वचन सुन कर युद्ध करनेमें तत्परभी उन लोगोंने श्रीरामचन्द्रजी के दर्शनकी लालसा कियेहुये पिता से ऐसाही करेंगे ऐसा कहकर वे पुत्रलोग बोले कि १ हे राजन् ! हमलोग आप के पदों से और कुछ नहीं जानते इससे जो आप अच्छा समझें वहीहो २ श्वेतचामरसे भूषित रत्नमालादिकी शोभासे युक्त चन्दनादि से पूजित यह अश्व वहां पहुँचाया जाय बहुत अच्छा ३ सब कोश धन समृद्धि बड़े मोल के सूक्ष्मवस्त्र जितने कि पदार्थ हैं सब राजा की आज्ञाहीके फल हैं ४ चन्दन मनोहर घोड़े बड़े २ सुन्दर हाथी सुवर्णके गुम्मजों से बनेहुये दिव्य रथ ५ बिचित्र भूषण वस्त्र धारण कियेहुये आज्ञाकारी दास दासियां हजारों व और भी नाना प्रकार के पदार्थ ६ सूर्य्य सम प्रकाशित मणि व विविध प्रकारके रत्न मुक्ताफल व गजमुक्तादि ७ सैकड़ों हजारों मूँगे कहां तक कहें जो २ उत्तम पदार्थ हैं महाराज सब लेकर श्रीरामचन्द्रजीको दीजिये बहुतही अच्छी बात है ८ व हे भूप ! हम सब पुत्रोंको सेवक समझ कर उनको सौंप दीजिये व कहदीजिये कि यह राजासन आपहीके अधीन है ९ शेषजी बोले कि पुत्रोंके ऐसे वचन सुनकर राजा सुबाहु

बहुत हर्षित होकर अपने वचन करने में उद्यत उन पुत्रोंसे बोला १० राजा बोले कि नाना प्रकारके शस्त्रास्त्र धारण कियेहुये तुमलोग अश्वको लावो व नाना प्रकारके रथादि लावो राजा शत्रुघ्नजी के समीप चलें ११ शेषनाग बोले कि राजा का ऐसा वचन सुनकर सुकेतु व दमनादिक व अन्य शूरवीर सबके सब राजाकी आज्ञा में उद्यत चले १२ व पुरीमें जाकर स्वर्णपत्र से अलंकृत श्वेत चामर से युक्त अतिमनोहर १३ रत्नोंकी माला से विभूषित विचित्र पत्रसे शोभित विचित्र मणि भूषणों से युक्त मोतियों के जाल से भूषित १४ रस्सीसे बँधेहुये आगे पीछे शूरवीरोंकी भीड़से घिरे हुये उस घोड़ेको उन सब शस्त्रास्त्रधारी सब शोभायुक्त योद्धाओं के द्वारा लेआये १५ उस घोड़े के शिरपर श्वेतछत्र लगाथा दो चामर इधर उधर ढुरायेजाते थे १६ कृष्णागुरु आदि के धूपों से धूपितकरके चारबत्ती बारकर नीराजन कियेगये हुये अतिबेगवान् यज्ञ के बाजी को सब राजा के सम्मुख लाये १७ रत्न मालाओं से विभूषित उस वेगवान् घोड़ेको सामने आयेहुये जो कि कामरूप बनाहुआ वमनके समान बेगवालाथा उसे देखकर राजा सुबाहु बहुत हर्षित हुआ १८ व राजचिह्नादिकों से अलंकृत होकर अपने पुत्र पौत्रादिकों सहित परमधार्म्मिक वह राजा पैदर शत्रुघ्नजी के पास गया १९ इसजानेका मुख्य फल यहथा कि चलायमान धनको अच्छी रीति से खर्च कियाजावे क्योंकि धन नश्वर तो होताही है जिनका चित्त उसी में लगारहता है नष्ट होजानेपर उन्हें महाकष्ट देता है २० राजा ने जाकर सितछत्रसे शोभित आगे खड़े हुये सेवकों से चामर किये जाते हुये महाराज शत्रुघ्नजी को देखा २१ जो कि वीर शोभादिकों से अलंकृत भय वार्त्तासे रहित होकर प्रसन्नचित्त सुमति से श्रीरामचन्द्रजी की कथा पूँछ रहेथे २२ व अश्वपालन व अपनी आज्ञाकी इच्छा कियेहुये किरोड़ों वीरोंसे घिरेहुये थे व चारोंओर से सहस्रों बानर वीरोंसे परिवेष्टित थे २३ देखतेही पुत्र पौत्र समेत राजाने शत्रुघ्नजी के चरणों के नमस्कार किया व रामचन्द्रजी में एकमन होकर कहा कि मैं आज

धन्यहूं यह कहकर खुश हुआ २४ शत्रुघ्नजीने उसे प्रणामकरते व चरणोंके समीप लोटते हुये देखकर अपने वीरोंसे उठवाकर अपने हाथोंसे पकड़ अतिप्रेमसे छाती में लगालिया २५ व अच्छेप्रकार राजा वीर शत्रुओंका नाश करनेवाले शत्रुघ्नजी का सत्कार करके फिर हर्षसे गद्गदमन होकर राजा प्रसन्नमन होकर बोले कि २६ सुबाहु बोले कि आज कोटिराजाओं से पूजित आपके चरणों के दर्शनसे कुटुम्ब पुत्रादि सहित मैं धन्य हुआ २७ इस अज्ञानी अनार्य्य मेरे पुत्र दमन ने भूल से आप के इस अश्वश्रेष्ठको पकड़ लिया था सो हे करुणानिधान! इसके अपराध क्षमाकीजिये २८ यह सब देवों के अधिदेव श्रीरघुनाथजी को नहीं जानता जो कि अपनी लीला से इस विश्वको उत्पन्न कराते हैं फिर पालन करवाते अन्त में नाश करवाते हैं २९ समृद्ध बल बाहन समेत यह समृद्ध राज्य धनों से पूर्ण ये कोश ये सब पुत्र व ये सब हम लोग ३० ये सब हम रामनाथ हैं इस से आप की आज्ञा के परिपालक हैं इस सब सामग्री को आप कृपापूर्व्वक ग्रहणकरें यद्यपि कुछ उत्तम पदार्थ मेरे नहीं है तथापि सब आपका है लीजिये ३१ श्रीरामचन्द्रजीके चरणकमलके भृंग हनुमान्‌जी कहां हैं जिनके प्रसाद से मैं श्रीराजराजेश्वर के दर्शनपाऊँगा ३२ क्योंकि साधुओं के संगम से भूतलमें क्या २ नहीं मिलता जिनके प्रसादसे मूढ़ मैं ब्राह्मणके शाप से मुक्तहोगया ३३ अब आज जिसके प्रसादसे कमलदलनयन श्रीमहाराज को देखताहूं इस से अतिदुर्लभ जन्मका फल पाऊँगा ३४ श्रीरामचन्द्रजीके वियोगमें मेरी सब आयु बीतगई कुछ थोड़ीही रहगईहै अब इसमें श्रीरघुनाथजी के दर्शन कैसेकरूं ३५ अब यज्ञकर्म्म में विचक्षण उन श्रीरामचन्द्रजी के दर्शन मुझको करवाइये जिनके चरण की रजसे पाषाणरूप अहल्या पवित्रहोगई है ३६ व जिनके बाणके स्पर्शमात्रसे जयन्तकाक परमपदको गया व अनेक प्राणी संग्राम में जिनके मुखारबिन्द के दर्शन से उत्तम स्थान को गये ३७ जो कोई इन श्रीरघुनाथजी का नाम आदरपूर्व्वक ग्रहण करते हैं वे लोग उस लोकको जातेहैं जिसकी चिन्तना

सदा योगी लोग किया करते हैं ३८ अयोध्यावासी लोग धन्य हैं जो श्रीरामचन्द्रमुखकमल का रस अपने नयनपुटों मे पीकर परम महोदय स्थानको जातेहैं ३९ ऐसा कहकर राजाने बाहन व राज्य व धन सम्पूर्ण देकर शत्रुघ्नजीसे कहा कि अब क्याकरें हे महीपते ! ४० राजा सुबाहु ऐसा वाक्य सुनकर परमप्रशस्त वक्ता शत्रुघ्नजी राजा सुबाहु से बोले कि ४१ शत्रुघ्नजी बोले कि हे राजन्! तुम ऐसा कैसे कहतेहो तुमतो वृद्धहोनेके कारण हमारे पूज्य हो तुम्हारा सब यह राज्य तुम्हारा पुत्र यह दमन भोगे ४२ क्षत्रियोंका तो यह कार्य्यही है कि संग्रामकरें इससे हमारी कुछ भी अप्रसन्नता नहीं है यह सब राज्यधन हमारी आज्ञा से लौटजाय ४३ जैसे मन बचन से हमारे श्रीरघुनाथ महाराज पूज्यहैं हे महीपाल! वैसेही तुमभी पूज्यहोवोगे ४४ अब आप कवच खड्गादि धारण करके अपनी सब सेना लेकर इस यज्ञ के घोड़े के पीछे२ चलनेके लिये उद्यत हो ४५ महामति शत्रुघ्नजीका ऐसा बचन सुनकर शत्रुघ्नसे पूजित होकर राजा अपने पुत्रको राज्य देकर ४६ महारथों से घिरेहुये समरभूमि में पुष्कल बीरसे मारेगये हुये अपने पुत्रका साम्परायिक दाहादि कराकर ४७ लोकदृष्टि से महारथ उस राजा ने एक क्षणमात्र शोच किया फिर श्रीरघुनाथ जी के स्मरण से उत्पन्न ज्ञान से शोकका नाश किया ४८ व युद्धकी सामग्रीसे युक्त रथपर चढ़कर महासेना साथ लेकर महारथों के संग शत्रुघ्नजी के समीप आया ४९ सब सेना समेत आये हुये राजा सुबाहुको देख कर शत्रुघ्नजी ने अपने यज्ञकेघोड़ेको फिर वहांसे चलाया ५० वह मस्तक में पत्रसे चिह्नित तुरंग जब वहां से छोड़ागया तो वामावर्त्त घूमता हुआ पूर्वसम्बन्धी बहुत देशों को गया ५१ वहां२ महाशूरों से पूजित राजाओंने उसकी पूजाहीकी कोई उसे पकड़ न सका ५२॥

चौ० कोई चित्र वसन दिय नीके। कोई दीन राज्य निज ठीके॥
कोई धन कोई शुभ वचना। कहे प्रणाम किये अतिरचना १।५३॥

इति श्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेशत्रुघ्नस्यसुबाहुनासनिर्याणंनामैकोनत्रिंशत्तमोऽध्यायः २९ ॥

तीसवां अध्याय ॥

दो० तिसयेंमहँ कह नरकदुख तरन हेतु श्रीराम ॥
नामभजन यम जनकसों कहिइतिहासललाम १

शेषनाग वात्स्यायन मुनिसे बोले कि पत्रसे शोभित वह यज्ञका अश्व तेजःपुरमें पहुँचा जिसपुरकी प्रजाका पालन सत्यताके साथ सत्यवान् नाम राजा करताथा १ उसके पहुँचतेही कोटियों योद्धाओं सहित श्रीरघुनाथजीके छोटेभाई पुरनाशक शत्रुघ्नजी घोड़ेके पीछे २ उसके पुरहोकर पहुँचे २ चित्र विचित्र खावें व शहरपनाह से शोभित अतिरम्य सुवर्णके कलशों से शोभित ३ सब ओर से सहस्रों देवमन्दिरों से विराजित सन्न्यासियों से भरेहुये यतियों के मठों से शोभित ४ महादेवजी के शिरपर महादेवी से विराजमान हंस कारण्डवादि पक्षियों से सेवित व मुनिवृन्दोंसे भरे हुये ५ व अग्निहोत्र के धूम से परिपूर्ण ब्राह्मणों के भवनों से युक्त व उस धूमसे पातकियों के अङ्गोंको पवित्र कराताहै ६ उस पुर को देखकर शत्रुओं के तपानेवाले शत्रुघ्नजी हर्ष से विस्मितमन होकर अपने मन्त्रीसुमति से पूँछनेलगे ७ शत्रुघ्नजी बोले कि हे मन्त्रीजी! कहो यह किसका पुर हमारे दृष्टिगोचर है जोकि धर्म्मसे प्रतिपालित होने के कारण हमारे मनको आह्लादित करारहा है ८ शेषनागजी वात्स्यायन मुनिसे बोले कि महीपति शत्रुघ्नजी का वाक्य सुनकर सुमति यथातथ्य सब वृत्तान्त कहने के लिये बोले कि ९ सुमति बोले हे स्वामिन्! एकाग्र चित्तहोकर वैष्णवी सुन्दरी कथासुनो जिसके सुनने से ब्रह्महत्या के समानके भी पापसे प्राणी छूटजाताहै १० यह सत्यवान् नाम राजा श्रीरामचन्द्रजीके चरण कमल के आस्वादन करने के लिये भ्रमररूप होने से जीवन्मुक्त है व यज्ञ यज्ञाङ्गोंके जाननेवाला व करनेवाला तथा पालन करनेवाला है ११ जिसको इस के पिता परमधार्म्मिक संसारमें ऋतम्भर के नामसे प्रसिद्धने बहुतसे व्रतोंके करनेसे धेनुको प्रसन्नकरके पायाथा १२ गौने प्रसन्नहोकर अनेक गुणोंसे सम्पन्न सब शोभाओंसे युक्त सत्यवान् नाम पुत्र राजाको दिया इसे आप वही सत्यवान् जानें १३

यह सुनकर शत्रुघ्नजी ने पूँछा कि ऋतम्भर नाम राजा कौनथा व उस ने किस लिये धेनुका पूजन किया व विष्णुका सेवक वैष्णव पुत्र उस ने कैसे पाया १४ यह सब वैष्णवीकथा हम से कहो क्यों कि सुनने से वह जन्तुओं के पाप पर्व्वतको हरती है १५ शेषजी बोले कि शत्रुघ्नजीका महाअर्थयुक्त वचन सुनकर उसकी उत्पत्ति की कथा सुमति कहनेलगे १६ कि राजा ऋतम्भर नाम हुये उनके पुत्र नहींथा क्योंकि यद्यपि उन के बहुतसी स्त्रियांथीं परन्तु उन में उन्हों ने पुत्र न पाया १७ तब भाग्यसे आये हुये जाबालिनाम मुनि से राजाने कुशलप्रश्न के पीछे पुत्र उत्पत्तिका कारण पूँछा १८ ऋतम्भर बोले कि हे स्वामिन् ! पुत्रहीन मेरे पुत्रकी उत्पत्ति करने वाला बचन कहो जिसके करने से मेरे बंशधर पुत्रहो १९ सो नि-श्चय करके कोई वचनकहो जिस दान ब्रत तीर्थ यज्ञ के करने से पुत्र मिले वह हमसे कहो जिसे हमकरें २० राजाके ऐसे वचन सुन कर मुनिसत्तमने परमार्थसे पुत्रकी उत्पत्ति करनेवाला वचन कहा २१ किहे राजन्!पुत्रपानेकेतीन उपायहैं एक श्रीविष्णु भगवान्के प्रसाद से पुत्रहोताहै दूसरे गौ के प्रसाद से तीसरे शिवजी के संतुष्ट होने से २२ इससे तुम धेनुकीपूजा करो क्योंकि वह सर्व्वदेवमयी होती है उस की पूँछ मुख सींग पीठादि अङ्गों में सब देव सदा टिकेरहतेहैं २३ वह सन्तुष्टहोनेसे बाञ्छित धर्म्मसंयुत प्रिय पुत्र तुमको शीघ्र देगी यह जानकर हे ऋतम्भर ! तुम गोपूजा करो २४ जो कोई नित्यगृहमें घास सानी आदि से गायकी पूजा करताहै उसके देव पितर नित्य तृप्तहोते हैं २५ व जो गाय के लिये नियमसे कुछ भोजनादि प्रति दिन के लिये बांध देताहै उस सत्य से उसके सब मनोरथ पूरेहोते हैं २६ व जिसके गृहमें प्यासी गाय बाँधीरहती है व जिसके घरमें बिना बिवाह कीहुई रजस्वला कन्यारहती है व जिसके घरमें बिना पूजा किये हुये कोई देव रहताहै उसके प्रथमके किये पुण्यको नाश करताहै २७ जो अपनी घास चरतीहुई गायको रोकता है उस के पूर्व्वज पितरलोग पतित होने के लिये कांपने लगतेहैं २८ जो मूर्ख महाबिमूढ़ बुद्धिहोकर धेनुको लाठी से मारता है वह दण्ड

देनेवाला धर्म्मराज के नगरको जाता है २९ व जो धेनु के पीछे २ चलकर उस के ऊपर के डांश मशकोंको रोंकता उड़ाता है उस के पितर जो नरकमें भी पड़े होते हैं तो नाचने लगतेहैं कि अब हमारा पुत्र हमको यहां से तार देगा ३० इस बिषयमें पुराने इस इतिहास को पण्डितलोग कहतेहैं जिस में कि धर्म्मराजके पुरमें जनक का वृत्तान्त है ३१ एक समय राजा जनकजीने योगाभ्यास से शरीर छोड़ा तब किङ्किणीजालों से भूषित बिमानआया ३२ तब अपने सेवकों समेत राजा जनक उसपर चढ़कर स्वर्गको चले जब यमपुरी के निकटपहुँचे तो मार्ग में ३३ वहां कोटियों नरकों में पापीलोग पीड़ितहो रहेथे वे जनकके अंगके पवनके लगने से सुखीहुये ३४ नरक में जो जलती हुई भूमि पीड़ा देती थी वह शीतलकारिणी होगई तब जनक के अंग के पवन ने उन लोगों के महादुःख को नष्ट किया ३५ वहां से उन को चले जाते हुये देखकर पाप से पीड़ितलोगों ने उनके बियोगने डरकर बड़ीभारी पुकारमचाई ३६ व सबोंने करुणामय वचन कहे कि हे पुण्यसे युक्त महाराज ! अब तुम यहां से न जाओ क्योंकि तुम्हारे अंगों के स्पर्श करने वाले पवनके लगने से हम लोग बहुत सुखी हुये जो कि प्रथमसे पीड़ित थे ३७ उन लोगों के ऐसे बचन सुनकर परम धर्म्मात्मा राजा ने करुणा समूह से भरेहुये अपने मन में चिन्तना की ३८ कि जो इस पुरमें हमारे रहने से इन प्राणियों को सुख मिलताहै तो हम इसी पुरमें टिकेंगे अब स्वर्ग उत्तम यही है ३९ ऐसा बिचार करके राजा उसी नरकके आगे स्थित होगये करुणायुक्त मन करके प्राणियोंको सुख देने लगे ४० तब उस समय अपार दुःख देने वाले नरक में नाना प्रकारकी यातना नाना प्रकारके पापियोंको करनेके लिये आये हुये धर्मराज ने ४१ राजा जनक को द्वारपर स्थित व सुशोभित देखा जो कि महा अद्भुत पुण्य देने वाले बिमानपर चढ़े हुये वहां ठहरे थे ४२ तब हँसते हुये प्रेतों के पति यमराजजी जनक जी से बोले कि हे राजन् ! सब धर्म्मों के शिरोमणि तुम यहां कहां से आये ४३ यह स्थान तो प्राणियों के घाती दुष्ट महा पापी लोगों का है

हे भूप ! तुम्हारे सरीखे पुण्यकारी पुरुष यहां नहीं आते हैं ४४ यहां वे मनुष्य आते हैं जो पराया द्रोह करते हैं व जो पराये अपवाद के करने में निरत रहतेहैं व जो परधन परस्त्री में परायण रहतेहैं ४५ व जो अपनी सेवा में परायण धर्म्मवती अपनी स्त्री को बिना अपराध छोड़ देता है वह यहां आताहै ४६ व जो धनके लोभ से अपने मित्र को छलताहै वह पुरुष यहां आकर हम से दारुण पीड़ा पाताहै ४७ व जो मूढ़ बुद्धि मन से कर्म्म से वचनसे दम्भ से भी वैरसे भी व उपहास से भी श्रीरामचन्द्रजी का स्मरण कभी नहीं करता ४८ उस को बांधकर यहां हम दण्ड देते हैं व अनुशासन करते हैं क्योंकि उसने नरकक्लेशनाशक श्रीजानकी नाथ का स्मरण कभी नहीं किया ४९ हे राजेन्द्र ! तभी तक मनुष्यों के अङ्गों में पापरहता है जब तक कि श्रीरामचन्द्रजी का नाम वे लोग जिह्वा से एक बार भी नहीं कहते ५० हे राजन् ! जो लोग महा पापकारी होते हैं उनको हमारेभट यहां लाते हैं और तुम सरीखे लोगों के देखनेमें भी हमारे दूत असमर्थ होते हैं फिर लेआने को कौन कहै ५१ इस से हे महाराज ! यहां से जाओ व अनेक भोगों को भोगो श्रेष्ठ बिमानपर चढ़ के अपने इकट्ठे किये हुये पुण्यों को भोगो ५२ वहांके स्वामी धर्म्मराजके ऐसे बचन सुनकर कृपा समूह से पूरित होकर राजा जनकजी धर्मराजजी से बोले कि ५३ जनकजी ने कहा हे नाथ ! हम को जीवों के ऊपर दयाहै इस से हम यहां से न जायंगे क्योंकि हमारे अङ्गों के पवनके लगनेसे ये लोग सुखी होते हैं ५४ इस से हे राजन् ! बिनय करतेहुये नरकके रहने वाले इन सब लोगों को भी जो छोड़दो तो पुण्यजनों से सेवित स्वर्ग को सुख से हम जायँ बिना इनके न जायँगे ५५ शेषनाग बोले कि यह वचन सुनकर धर्म्मराजजी नरकमें टिके हुये अनेक जीवों को शिक्षा देते हुये राजा जनकजी से बोले कि ५६ धर्म्मराजजी बोले देखिये इस पुरुषने विश्वास किये हुये अपने मित्रकी स्त्री के संग भोग किया है इस लिये दशहजारवर्षसे इस को लोहेके तपेहुये खम्भे में छपटा रक्खाहै ५७ पीछे से इस दोषी को शूकरों की योनिमें जन्म

देंगे फिर मनुष्यों की योनियों में जन्म पावेगा पर नपुंसकहोगा ५८ व इस दूसरे पुरुषने बलसे परस्त्री के संग भोगकर लियाहै इस से यह सौवर्ष तक रौरव नरकमें पचाया जायगा ५९ व इसने पराया धन चुराकर खायाहै इस लिये इस दुर्बुद्धि के हाथ काट डाले हैं व पीब रुधिर के बीच में डाल कर पचातेहैं ६० इसने सन्ध्या समय में आये हुये भूँखे अतिथि को वचन से भी सत्कार युक्त आदर नहीं किया फिर भोजन देना तो दूररहा ६१ इस से इसे अन्धकार से पूरित तामिश्र नरक में डाला है अब यह भ्रमरों से पीड़ित यहां पड़ाहुआ बहुत दिनों तक दुःखसहेगा ६२ यह पुरुष पराई निन्दा करने में कभी नहीं लजाता था व यह बार २ प्रेरणा करता हुआ सुनता था ६३ इस से ये दोनों दुःख से दुःखितहोकर अन्धकूप नरकमें डालेगयेहैं व यह जो रौरवनरकमें अत्यन्त परिपक्क कियाजाता है इसने अपने मित्रके साथ द्रोह किया है ६४ इस लिये इन सबों को पाप भोगकराकर तब फिर छोड़ेंगे हे पुण्यराशि विधायक पुरुष सिंह ! आप जायँ स्वर्गके सुखभोगें ६५ जाबालि वात्स्यायनजी से बोले कि सब पापकारियों को जब इसप्रकार धर्म्मराजजी बताकर चुप होरहे तो करुणा पूरित लोचन व श्रीरामचन्द्रजी के भक्त जनकजी धर्म्मराजसे बोले कि ६६ जीवों की निर्म्मुक्ति नरक के दुःखों से कैसेहो वह उपाय हमसे बताओ जिसके करने से मुक्ति मिले ६७ धर्म्मराज बोले कि न तो इन लोगोंने श्रीविष्णुभगवान् की आराधना की न इन्होंने उनकी कथायें सुनी तो इन पापकारियों की निर्म्मुक्ति नरकों से कैसेहो ६८ हे महाराज ! जो तुम महा पाप करने वाले इन पापियों को भी छुड़ाया चाहतेहो तो हम जो पुण्य कहें वह इन को देदो ६९ एक दिन प्रातःकाल उठकर शुद्ध चित्त से महा पापों को नाशकर ने वाले श्रीरामचन्द्रजी का तुमने ध्यान किया है वह अपना पुण्य इन को देदो बस नरक से इन की मुक्ति होजाय ७० ॥

चौ० । राम रामसों पुण्य जु होई । शुद्धचित्तसों भाषे सोई ॥
पुण्य समर्पिय इन्हें महीशा । नरक मुक्तिकरिहै जगदीशा १ । ७१

शेषनाग बोले सुनि बानी । धर्म्मराजकी भूपति ज्ञानी ॥
जन्म भरे महँ पुण्य महीपा । कीन सम्प्रीं मम नृपदीपा २ । ७
कह रघुनाथ पदार्चन कीने । पुण्य लह्यों जो मैं अघहीने ॥
तासों मुक्ति होय इन केरी । याके होत होय जनि देरी ३ । ७३
जैस्यहिह्नमिभाण्योमहिपाला । सकल जीव जो नरक बिहाला ॥
हते मुक्त ह्वै धरि वरदेहा । गये स्वर्ग समभ्मतनृपनेहा ४ । ७४
बोले जनक भूप सों सारे । तव प्रसाद मम भये उधारे ॥
दुःखद नरक बास से छूटी । जायपरमपदअवमुदलूटी ५ । ७५
नरक बास सों निर्गत होई । सूर्य्य समान प्रकाशित जोई ॥
देखि नरननृपभयहुसुखारी । सबजनदयानिरतहितकारी ६ । ७६
ते सब गे सुरसेवित लोका । परमसुखी गत सकल कुशोका ॥
दया निधानजनक नृप केरी । करतप्रशंसानिजचितहेरी ७ । ७७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेजनकेननरकस्थप्रा णिमोचनन्नामत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३० ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

दो० । यकतिसयेंमहँकहसुरभि जनकभूपअपराध ॥
जासोंयमपुरद्वारपर भूपतिगमनअबाध १
बहुरिकृतम्भरनृपसुरभि वधपुनिसेवातासु ॥
करिसुतलहित्यहिराज्य दै हरिपुरकीन्हनिवासु २

जाबालिजी वात्स्यायन मुनिसे बोले कि जब नरक निवासी सब मनुष्य परमधामको चले गये तो राजा जनकजी ने सब धर्म्मज्ञोंमें श्रेष्ठ धर्म्मराजजी से पूँछा कि १ राजा जनक बोले हे धर्म्मराज! तुम ने कहा कि जो पाप करनेवाले पुरुषहैं वेही हमारे स्थान को आते हैं व धर्म्म कथाओं में रतलोग नहीं आते २ सो हे धार्म्मिक! हमारा आगमन यहां कैसे हुआ हमने जो पापकर्म्म कियाहो यथा तथ्य हम से कहो ३ राजाके ऐसे वचन सुनकर शत्रुओं के तपाने वाले धर्म्मराजजी ने राजा के यमपुरमें आनेका हेतु कहा ४ कि हे राजन्! तुम्हारे बहुत पुण्य हैं ऐसा कहीं नहीं है क्योंकि तुम श्री रघुनाथजी के पद कमल युगल के स्वादु लेने में भ्रमर रूपहो ५

तुम्हारी परमाह्लादकारिणी दुष्टतारिणी कीर्त्ति गंगामल संयुत सब पापियों को पवित्र करतीहै ६ तथापि हे नृप सत्तम ! तुम्हारे थोड़ा सा पापका लेशहै जिसके कारण तुम ऐसे पुण्यात्मा होकर भी यम-पुरी के समीप होकर आये ७ एक समय किसी खेत में चरती हुई गाय को तुम ने खेदने को किसी से कहा था उसी पाप से तुम को नरकके द्वारपर आना पड़ा ८ अब इस समय पापसे छूटगये बहुत सी पुण्य मिली इस लिये अपने पुण्य से इकट्ठे किये हुये बहुतसे भोगों को पुण्य युक्त होकर भोगो ९ इन लोगों के ऊपर श्रीरघुनाथ जी ने बड़ी करुणाकी जो इन को सुखदिया जो कि इस यमपुरी के मार्ग्ग होकर ऐसे परम वैष्णव तुम को भेजा १० हे सुव्रत ! यदि तुम इस मार्ग्ग से न आये होते तो नरक से इन लोगों का परिमो-चन कैसे होता ११ हे महामते ! तुम सरीखे करुणालय लोग पराये दुःख से दुःखित रहतेहैं इसी से वे प्राणियों के दुःखों को नष्ट करते हैं १२ जाबालि बोले ऐसा कहते हुये यमराजजी के प्रणाम करके अप्सरागणों से शोभित दिव्य विमानपर चढ़के राजा जनक स्वर्ग्ग को चले गये १३ इस से गायें सदापूज्य हैं मन से भी उनकी निन्दा न करनी चाहिये क्योंकि उनकी निन्दा करने से जब तक चौदह इन्द्र भोगेंगे तब तक नरकमें निन्दाकरने वाला पड़ा रहेगा १४ इस से हे नृपतिश्रेष्ठ! तुम गायकी पूजाकरो वह सन्तुष्ट होनेपर धर्म्मप-रायण पुत्र तुमको देगी १५ सुमति बोले यह सुनकर धेनुकी पूजा राजा ने जाबालि से पूछी कि किस प्रयत्न से व आदर से धेनुओं की पूजा करनी चाहिये व मनुष्य किस रीति से पूजन करते हैं १६ तब जाबालिजीने विधि सहित गोपूजनकहा कि व्रतकरनेवाला प्र-तिदिन धेनुकोचरानेकेलिये बनको जायाकरे १७ गायको यव खड़े खिलावे प्रातःकाल उसके गोबरमेंसे यवनिकाले उन्हींको पीसकर वा वैसेही पुत्रकी इच्छाकियेहुयेको खानाचाहिये १८ जब धेनु जल पीवे तो राजन् ! तुम भी पीवो जब वह अच्छी तरह से ऊंचे स्थान पर ठहरै तो तुम नीचे ठहरो १९ डांश नित्य निवारित करते रहो व सानी घास आदि उसको खिलातेरहो ऐसे करतेहुये तुमको धेनु

धर्म्मात्मा पुत्रदेगी २० सुमतिजी शत्रुघ्नजीसे बोले कि ऐसावाक्य सुनकर पुत्रकी कामनाकियेहुये राजा ऋतम्भर धर्म्मात्माने धेनुकी पूजा करतेहुये व्रतको किया २१ प्रतिदिन सानी घास आदिसे धेनुको सन्तुष्ट कियाकरे व उसके डांशोंको झाड़ाकरे आप उसीके गोबर में से निकले हुये यवोंका भोजन करे २२ इस प्रकार पूजा करते २ बहुत दिन बीतगये एक दिन बड़े सघन बनमें धेनु तृण चरते २ चलीगई निर्भय अपने मनसे चरतीथी २३ एकसमय राजा वन की शोभाको देखतेहुये कौतुक देखते फिरतेथे व दृष्टि लगायेहुये सर्वत्र घूमरहेथे २४ इतने में किसी दूसरे वनसे आकर सिंहने गायकोमारा कि धेनुबड़े सिंह के भार से दुःखयुक्त शब्द से हुङ्कारभरके चिल्लाई २५ तब राजा ने आकर अपनी माताको सिंहसे मारी हुई देखकर विह्वल होकर बड़ारोदन किया २६ व महादुःखितहो मुनिसत्तम जाबालिसे जाकर उसके बधके पापके मिटनेका उपाय पूंछा २७ ऋतम्भर राजा बोला कि हे स्वामिन्! तुम्हारी आज्ञा से धेनु को पालते हुये हम बनमें थे कि कहीं से आकर हमारे न देखते हुये सिंहने उसको मारा २८ उस पापकी निष्कृति तुम्हारी आज्ञा से हम क्याकरें व पुत्र देनेवाली हमारे व्रतकी पूर्णता कैसेहो २९ ऐसे कहतेहुये उस राजाको जाबालिजी ने कहा कि हे महीपाल! इस पाप मिटाने के बहुत से उपाय हैं ३० हे महामते ! ब्राह्मण मारडालने वाले उपकार न मानने वाले व मदिरापान करने वाले के लिये प्रायश्चित्त विद्यमान हैं व और भी सब पापों के हारक हैं ३१ कृच्छ्रचान्द्रायण दान व्रत संयम व नियमों के नियम पूर्वक करने से पाप नष्टहोजाते हैं ३२ परन्तु दो बड़ेभारी पापों के छूटने का कोई उपायशास्त्र में नहीहै एक तो जानकर धेनु के वधकरने का व दूसरे श्रीहरिकी निन्दाकरने वालेका ३३ क्योंकि जो अधम मन से गौवों के दुःख देनेकी इच्छा करता है वह चौदह इन्द्रों के भोग करनेके समय तक नरक में पड़ा रहता है ३४ व ऐसेही जो दुर्भाग्यवाला पुरुष श्रीहरि देवदेवकी निन्दा एकबारभी करता है वह भी अपने पुत्र पौत्रों समेत नरकको देखताहै ३५ इस से हे नरे-

श्वर ! जानकर श्रीहरिकी निन्दा करता हुआ व धेनुओं के विषय में दुष्टता करता हुआ प्राणी कभी नहीं नरक से छूट सक्ता ३६ परन्तु अज्ञान से जो गोहत्या मिलजाती है उसका प्रायश्चित्त तो है परन्तु उसके पूँछने के लिये श्रीरामजी के भक्त ऋतुपर्णके पास जाओ ३७ वे शत्रुओं को व मित्रोंको समदृष्टि से देखते हैं इस से इस गोबधकी हत्या मिटने का उपाय तुमसे कहेंगे ३८ उनके देशों में घूमते हुये तुम उनके रोंकने परभी बैरभाव को छोड़कर राजा ऋतुपर्णजी के पास जाना ३९ वे जैसा कहें वह एकाग्र चित्तहोकर शीघ्रही करना क्योंकि यथावत् उसके करने से पाप छूटजायगा ४० जाबालिजी का वचन सुनकर राजा ऋतम्भर श्रीरामचन्द्रजी के भक्त व शत्रु मित्र को समदृष्टिसे देखने वाले ऋतुपर्ण के पास गया ४१ व जिस रीति से गोबधादिक हुआथा सब उनसे कहा व ऋतुपर्णभी उसपाप के मिटाने के उपाय के लिये विचार करते भये ४२ तब राजा ऋतम्भर से बुद्धिमान् धर्म्मकोविद व प्रतापवान् राजाऋतुपर्णजी क्षणमात्र ध्यान करके हँसते हुये बोले कि ४३ हे राजन् ! शास्त्र जानने वाले मुनियों के आगे हम क्या हैं जो तुम उनको छोड़कर मूर्ख पण्डितमानी हमारे पास आये हो ४४ जो हममेंही तुम्हारी श्रद्धा है तो हम कुछ कहतेहैं हे नरशार्दूल ! कहते हुये हमसे आदरसे सुनो ४५ ॥

चौ० । मनसागिराकर्म्मणारामहिं । भजहुजायसबगुणगणधामहिं ॥
ह्वैनिश्छललोकेशहितोषौ । तजिसबमानरोषअरुदोषौ १ । ४६
ह्वैसन्तुष्टदेइहैंतोहीं । सकलमनोरथमनगतओहीं ॥
अरुअज्ञानजनितगोबधकर । हरिहैंपापआपजनहितकर २ । ४७
रामसुमिरिपुनात्माहोई । दैब्राह्मणकहँधेनुनगोई ॥
अरुसुवर्णदैके नृपफेरी । छूटिहिपापनहोइहिदेरी ३ । ४८
इमिसुनितासुवचनविधिठीके । भूपऋतम्भरकरिमननीके ॥
सुमिरतरामपूततनुभयऊ । यहव्रतबहुतदिवसनिनठयऊ ४ । ४९
धेनुहिपालतबनपुनिगयऊ । सुमिरतरामनामचितचयऊ ॥
सर्व्वभूतहितह्वैदिनराती । रहतनृपतिनहिंआनपुसाती ५ । ५०

परितोषितसुरभीभैजबहीं । बोलीनृपसोंवरवचतबहीं ॥
माँगहुवरभू तिमनमाना । हमसोंदेवकरतकल्याना ६ । ५१
तबभूपतिकहसुतमुहिंदेहू । परममनोरमसहितसनेहू ॥
रामभक्तपितुसेवाधारी । धर्म्मपालगोद्विजहितकारी ७ । ५२
एवमस्तुकहिवरतिनदीना । अतिप्रसन्नमनधेनुप्रवीना ॥
कामधेनुदेवीत्यहिठामा । अन्तर्द्धानभईगैधामा ८ । ५३
समयपायपायहुसुतभूपा । वैष्णवरामभक्तशुभरूपा ॥
सत्यवानअसनामधरावा । तासुपितानिजमनठहरावा ९ । ५४
पितुसेवकमतिवानसुनामा । लहिसुतनृपभोपूरणकामा ॥
परमहर्षयुनभयउमहीपा । जिमिशचीशसुतलहिकुलदीपा १० । ५५
धार्म्मिकतनयपायसोराजा । हर्षितभयउमनहिंमनगाजा ॥
ताहिराजदैबनहिंसिधावा । करनतपस्यामहँचितलावा ११ । ५६
भक्तियुक्तचितह्वैतहँभूपा । हरिआराधनकरिशुभरूपा ॥
स्वजनसहितह्वैनिर्ग्गतपापा । हरिपदगयहुकरतत्यहिजापा १२ । ५७

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेधेनुव्रतवर्णनोनाम एकत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

दो० । बत्तिसयें महँ कह यथा सत्यवान नृपराज ॥
अपनोदिय शत्रुघ्नको पुनि तिनतासुतसाज १

सुमति शत्रुघ्नजी से बोले कि सो इस राज्यका राजा वही सत्यवान्नाम है उसनें अपने धर्म्मसे प्रजापालन करके श्रीरघुनाथजी को सन्तुष्ट कियाहै १ उसके ऊपर सन्तुष्टहोकर श्रीजानकी नाथजी ने अपने चरण कमलों के पूजन करतेहुये अपनीअचञ्चल भक्तिदी है जोकि कोटिपुण्यों से भी दुर्ल्लभहै २ व नित्य यह राजा सावधानता से श्रीरघुनाथजीकी कथा सबलोगों के पवित्र करने के लिये कृपा पूर्व्वक कहा करताहै ३ इसके राज्यमें श्रीजानकीनाथ रघुनाथ जी की पूजा जो नहींकरता उसे यमदण्डों से भी अधिक भयावने दण्डों से ताड़ना देता है ४ व जब से आठवर्षकी अवस्था होती है व अशी वर्षकी अवस्थातक सब श्रीरामचन्द्रजी के सेवक सब

एकादशियोंका व्रत करतेहैं ५ और इस राजाको तुलसी बहुतहीप्रिय है इस से सदा उसकी माला गले से नाभि पर्य्यन्त लम्बी धारण किये रहताहै व श्रीजानकीनाथ के चरण कमलके ऊपरकी पुष्पमालाभी सदा पहिने रहताहै ६ इस लिये यह राजा ऋषियों से भी पूज्य है तो औरों से कैसे पूज्य नहीं है क्योंकि श्रीरघुनाथजी की स्मृति व प्रीतिसे इस के सबपाप धोगयेहैं इस से सब अशुभ नष्ट होगयेहैं ७ सो परम अद्भुत श्री रामचन्द्रजी के घोड़ेको जानकर यह यहां आकर सब अपना अकण्टक राज्य तुमको देदेगा ८ हे राजन्! जो तुमने पूँछा था सब हमने उत्तम चरितकहा हेस्वामिन्! और क्या पूँछतेहो आज्ञाकरो हम अभी करें ९ शेषनाग वात्स्यायन जी से बोले कि नाना आश्चर्य्यों से युक्त वह यज्ञका अश्व पुर के भीतर चलागया उसे देख सब जन समूहों ने राजासे निवेदन किया १० जन समूह बोले कि गंगाजलके समान उजले रंगका व मस्तक में सुवर्ण के पत्र से शोभित कोई घोड़ा यहां आया है ११ प्रजाओं के कहे हुये मनोहरबचन को सुनकर राजा ने उन सबों से कहाकि जानोतो किसका घोड़ा है १२ उन लोगों ने जानकर आकर कहा कि इस घोड़ेकी पालना शत्रुघ्नजी करतेहैं व महाराजाधिराज श्री रामचन्द्र जी का है व पुर के भीतर घुसता चलाआता है १३ सुमनोहर दो अक्षर के राम ऐसे नाम के सुनतेही चित्तमें राजा बहुतही हर्षितहुआ व गद्गदस्वर से चिह्नित हुआ १४ व विचारने लगा कि जिनश्रीरघुनाथजी का ध्यान मैं नित्य अपने हृदय में किया करताहूं उनका घोड़ा शत्रुघ्न सहित मेरे पुरमें आया अहोभाग्य है १५ इस समाजमें तो श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंके सेवक हनुमान्‌जीभी होंगे जो कि कभी अपने मनसे रामचन्द्रको नहीं भूलते १६ इससे जहां शत्रुघ्नजी हैं व जहां पवननन्दनजी हैं व और भी श्रीरामचन्द्रजी के चरण कमलों के सेवकहैं वहां मैं जाऊं १७ ऐसा विचार करके अपने मन्त्री को आज्ञादी कि सब हमारा अच्छा २ राज्य धन लेकर अति बेग हमारे साथ चलो १८ हम श्रीरघुनाथजी के श्रेष्ठ घोड़े की रक्षाकरने को चलेंगे व फिर वहां से श्रीरघुनाथजी के चरण कम-

लोंकी दुर्ल्लभ सेवाकरने को चलेंगे १९ ऐसा कहकर सेनापतियों के साथ राजा शत्रुघ्नजी के समीप को चला तब तक अपने सेनापतियों समेत श्रीरामचन्द्रजी के भाई भी पुरी में पहुँचे २० प्रबल बीर उस समय गर्ज्जने लगे रथोंका सुन्दर सुहावना शब्द होरहा था जय शब्द व शङ्ख वीणादि के नाद सब ओरसे होते थे २१ कि अपने मन्त्रियों समेत सत्यवान् नाम राजा ने आकर चरणों में प्रणाम करके राज्य महा धन सब लेकर देदिया २२ व शत्रुघ्नजी ने उस राजाको उत्तम राम भक्त जानकर वह राज्य उस के रुक्म नाम पुत्र को देदिया २३ व राजा श्रीहनुमान्जी को मिलकर फिर श्रीरामचन्द्रजी के सेवक राजा सुबाहु को भेंटकर व और भी श्रीरघुनाथजी के भक्तों से मिलकर अति प्रसन्न मनहो २४ सत्यवान् ने अपने को कृतार्थ माना व वह शत्रुघ्नजी के संग बैठ कर चित्त में बहुत आनन्दित हुआ २५ ॥

चौ०। तबलगहयसबबीरसुप्रल्लित। गयहुदूरनिजमननसमलालित॥
त्यहि भूपतिसँग रिपुहनबीरा। चल्यहुतहांसोंअतिरणधीरा १।२६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेसत्यवत्समागमोनामद्वात्रिंशत्तमोऽध्यायः ३२ ॥

तेंतीसवां अध्याय ॥

दो०। तेंतिसयेंमहँ कह चपल माली जिमि हय लीन ॥
तासु हतन हित सुभट सब विविध प्रतिज्ञाकीन १

शेषनागजी वात्स्यायनमुनि से बोले कि कोटियों महाराजों समेत शत्रुघ्नादिक रथों समेत महारथी लोग चले जाते थे कि १ इतनेमें अकस्मात् मार्ग्ग में परमदारुण अन्धकार होगया जिसमें कि ज्ञानी नरों को भी अपना पराया न सूझनेलगा २ धूलिसे आकाश आच्छादित होगया बिजुलियां गर्जने लगीं इस प्रकार महा भयकारी सम्मर्द के होनेपर ३ मेघ रुधिर पीब आदि अपवित्र वस्तु बरसाने लगे तब शत्रुघ्नबीर के बीर अति व्याकुल हुये ४ जब सब लोग व्याकुलहोकर कहनेलगे कि यह क्याहै यह क्या है तबतक चलेजाते हुये बड़े पराक्रमी सब लोगों के नेत्रों में अँधियारी छागई ५ तब रावण

का मित्र विद्युन्माली नाम राक्षस जो कि पातालमें रहताथा अपने राक्षसों समेत आकर घोड़े को हरलेगया ६ वह कामचारी लोहेके विमानपर चढ़कर आया व सब बीरोंको भयभीत करके अश्व को लेगया ७ तब एकमुहूर्त्त भरमें वह अन्धकार मिटा आकाश निर्म्मल हुआ शत्रुघ्नादिक बीर आपसमें कहने लगे कि वह घोड़ा कहांहै ८ अश्वराजको परस्पर देखते हुये उन लोगों ने जब बाजी को न देखा तो बड़ाभारी हाहाकार हुआ ९ व कहने लगे कि अश्वमेधका घोड़ा कहांहै कौन कुबुद्धि लेगया ऐसा वचन सब कहतेथे कि तब तकवह राक्षसेश्वर १० शौर्य्य शोभित रथोंपर चढ़े हुये सुन्दर भटों समेत बड़े २ राक्षसों के संग श्रेष्ठ बिमानपर चढ़ा हुआ दिखाईदिया ११ व दुष्ट मुख वाले विकराल आनन वाले भयानक लम्बे २ दांतोंवाले राक्षस सेना के खानेमें उद्यत दिखाईदिये १२ तब सब लोगों ने शत्रुघ्नजी से जनाया कि हम लोग नहीं जानते कि आकाश में श्रेष्ठ विमानपर चढ़े हुये इसीने घोड़े को लिया वा अन्य किसीने १३ हम तो जानतेहैं कि अन्धकार से हम बीर लोगों को युक्त करके इसी ने घोड़े को पकड़ लियाहै इस से हे नृप शार्दूल ! इस विषय में जैसा मुनासिबहो यत्नकरो १४ इस वचन को सुनकर शत्रुघ्नजी महा रोषयुक्त होकर बोले कि यह कौनवीर्य्यवान् राक्षस है जिस ने हमारे घोड़ेको पकड़लियाहै १५ आज हमारे बाणसमूहोंसे हतहोकर उसका विमान पतितहो व हमारे तीक्ष्ण शरोंसे कटकर आजही उसका शिर पृथ्वीपर गिरे १६ महाशस्त्रास्त्रों से पूरित अभी सब रथ तैयारहों व हमारे घोड़े के हरनेवाले उसपुरुष के मारने को बीर अभी जायँ १७ इतनाकहकर रोष के मारे लालनेत्र किये हुये शत्रुघ्न जी नीति अनीति जाननेवाले व युद्ध के कार्य्य में विशारद अपने बहादुर मन्त्री से बोले १८ कि हे मन्त्रिन् ! कहो महाशस्त्र परमास्त्र जानने वालों में उत्तम महाशूर कौन २ इसराक्षसके बधके लिये युक्त करनेचाहियें १९ विचारकरके शीघ्र कहो आपका वहीवचन हमकरें व उसके संग युद्धकरने के योग्य सब अस्त्रों के चलानेमें पण्डितबीरों को भी बताओ २० ऐसावाक्य सुनकर रण

के योग्य बीरों को दिखाताहुआ मन्त्री यथायोग्य वचन बोला २१ सुमति बोला कि यहां पर उस राक्षस से युद्ध करने के लिये समरके विजयमें उद्यत शत्रुओं के सन्तापक महाशस्त्रास्त्रों से युक्त पुष्कलवीर जावें २२ व वैसेही शस्त्रोंके समूहोंसे युक्त लक्ष्मीनिधि जावें व अपने तीक्ष्ण बाणों से उसके विमानको काटें २३ व उत्कट कार्य्य करनेवाले हनुमान्जी राक्षसों के संग युद्ध करने के योग्य हैं क्योंकि इन्होंने राक्षसों का समर अच्छे प्रकार देखा व किया है सो जाकर मुख व पूँछसे उस राक्षस को ताड़ित करें व नोचफोंचकर भक्षणकरडालें २४ व और भी जो रणकर्म्ममें चतुर बानरबीर हैं वेभी आपके बचनसे प्रेरित वहांकोजावें २५ सुमद सुबाहु व प्रतापाग्र्य ये तीनों राजाभी जावें व अपने तीक्ष्ण बाणों से उन राक्षसाधमों से युद्धकरें २६ व आपभी महाशस्त्रास्त्रोंसे भरेहुये रथपर स्थितहोकर राक्षसके मारडालनेमें उद्यतहोकर युद्धमें विजयकरें २७ हे राजन् ! हमारा तो यहीमतहै कि जो योद्धा लोग उस राक्षसका मर्द्दन करसकें वेही शूरबीरजावें अन्य बहुत भटोंसे क्या कामहै २८ जब मन्त्रियोंसे सेवित श्रेष्ठ मन्त्रीवीर श्रेष्ठ सुमति ने ऐसाकहातो संग्रामकरनेमें परमचतुर वीरोंसे शत्रुघ्नजीने कहा कि २९ हे सब शस्त्रास्त्रों के चलानेमें अति पण्डित पुष्कलादि वीरो ! राक्षसके मर्द्दन करनेके विषय में हमारे आगे प्रतिज्ञाकरो ३० व अपने पराक्रमसे शोभित बड़ीभारी प्रतिज्ञाकरके तुम लोग सेना संगलेकर संग्राम के मध्य में जाओ ३१ शत्रुघ्नजी की ऐसी बाणी सुनकर महाबली सब बीरों ने अपने २ तेज से युक्त अपनी २ प्रतिज्ञाओंको किया ३२ उनमें सबसे प्रथमराजा शत्रुघ्नजीके बचन सुनकर परम उत्साहसे युक्तहोकर पुष्कलवीरने प्रतिज्ञाकोकहा ३३ पुष्कल बोले कि हे नरशार्दूल पराक्रमसे कीहुई हमारी प्रतिज्ञाको सुनो जिसके सुननेवालों को परम आश्चर्य्यहोगा ३४ जो हमउस राक्षसको अपनेधन्वापरसे चलायेहुये तीक्ष्णबाणोंसे मूर्च्छितकरके छूटेहुयेकेशोंसे व्याकुलमुख न करैंतो ३५ जो पाप अपनीकन्याकेसङ्ग भोगकरनेवाले को होताहै व जो देवताओंकी निन्दाकरनेवालेको

होताहै वह पाप हमकोहो जो हमाराबचन झूठहो ३६ व हे महाराज! जो हमारे बाणोंसे छिन्न भिन्नहोकर महाबली उधरके सेनावाले पतित नहों तो हमारीप्रतिज्ञाको सुनो ३७ श्रीविष्णु व महादेव में जोभेद करताहै व शिवमें और शक्ति में भेदकरताहै उसका पाप हमकोहो जोहम अपना बचनसत्य नकरें ३८ श्रीरघुनाथजी के चरणारविन्द में हमारी निश्चलभक्ति है तो यह सब हमारा वचन सत्यहीहोगा और बाञ्छितकार्य्य होगा इसमें अन्तर न पड़ेगा ३९ पुष्कलजी की इसप्रतिज्ञाको सुनकर राजा लक्ष्मीनिधिजीने अपने पराक्रमसे शोभित प्रतिज्ञाको किया ४० लक्ष्मीनिधिजी बोले कि वेदोंकी निन्दा सुनकर जो पुरुष चुपसा रहजाताहै मनमें उसको वहबात बहुत अच्छी लगतीहै वह पुरुषसब धर्म्मोंसे बाहर समझा जाताहै ४१ व जो ब्राह्मणहोकर दुराचार करताहै और लाखकारस बेंचताहै व जो मूढ़ धनके लोभसे मोहित होकर गायको बेंचताहै ४२ व जोमुसलमान आदि म्लेच्छोंके कुयें काजल पीकर फिर प्रायश्चित्त नहीं करता ये सब पाप हमको हों यदि हम रणसे विमुखहोकरलौटें ४३ उसप्रतिज्ञाको सुनकर रणमें परम चतुर हनुमान्‌जी रामचन्द्रजीके चरणों का स्मरण करके बोले कि ४४ जिन हमारेस्वामी को योगी लोग मनमें बार २ नित्य ध्यावते हैं व जिनके देव और असुरगणभी शिर झुँकाकर प्रणाम करतेहैं ४५ वे सब लोकेशोंसे पूजित श्रीरामचन्द्रजी अयोध्याजी के स्वामीहैं उनका स्मरण करके जो वाक्य हम कहेंगे वह सत्यहोगा ४६ हे राजन्! यह इच्छाचारी विमान परचढ़ा हुआ बेचारा दुर्ब्बल राक्षस क्याहै कहियेतो हम अकेलेही इसका निपातकरडालें ४७ व इन्द्रसहित सुमेरु पर्व्वत को अपनी पूँछके अग्रभाग से उठालें सब समुद्रको शोषलें व प्रलयके समयके अग्निको पीजावें ४८ श्रीराजाधिराज रामचन्द्रजीकी व श्रीजानकी जीकी कृपा से हे राजन्! भूतलपर हमको ऐसा कोई कार्य्य नहीं जो साध्य न हो ४९ हे प्रभो! जोयह हमारा कहाहुआ वचन झूँठाहो तो हम श्रीरघुनाथ जीकी भक्तिसे दूरहोजावें ५० व जो शूद्र कपिला गायको दूधखाने

की बुद्धि से पालन करताहै उसका पाप हमकोहीहो जो हम अपने वचनको झूँठाकरें ५१ व जो शूद्र कामसे बिमोहित होकरब्राह्मणीके साथ भोग करता है उसका पाप हमींकोहो जो हम अपना वचन झूँठाकरें ५२ व जिसके सूंघने से प्राणी नरकको जाताहै और छूने से रौरवको जाता उस मदिराको जो पुरुष जिह्वाके स्वाद से लोलुप होकर पीताहै ५३ उसको जो पापहोताहै वह निश्चय हमींकोहो जो हम श्रीरामचन्द्रजी की कृपा से अपनी प्रतिज्ञाको पूर्ण न करें ५४ महाबीर जीके ऐसे कहनेपर सब बीरोंने अपने २ पराक्रमसे भरीहुई प्रतिज्ञाओंको किया ५५ तब शत्रुघ्नजीनेभी सब लोगों के देखतेही देखते प्रतिज्ञाकी व रणमें कोविदउन सब बीरोंको बहुत अच्छा ब-हुत अच्छा ऐसा कहकर प्रशंसाकी ५६ कहा कि हे वीरो! पराक्रमसे शोभित प्रतिज्ञा तुम लोगों से कहतेहैं हे महाभागो!युद्ध के उत्साह से युक्तहोकर तुम लोग उसे सुनो ५७ ॥

चौ० । जो न तासुशिरधरसेकाटी । निजसायकसमूह महिपाटी ॥
अरु विमानयुत ताहि न भूपर । देहुँ गिरायआजरणऊपर १ । ५८
तो जो पापझूँठ साखिन को । अरुजो द्विजनिन्दाभाषिनको ॥
स्वर्णचोर को जो अघ होई । होयआजमोकहँअघसोई २ । ५९
इमि शत्रुघ्न वचन सुनिकाना । सकलबीर वर के मन्न माना ॥
कह तुम धन्य रघूत्तम भ्राता । तुमसमानकोअपरविधाता ३ । ६०
तुम मारा सुर असुर दुखारी । महा बली लोकप बलहारी ॥
लवण नाम दैत्याधिप काहीं । यासोंयहिमारब शकनाहीं ४ । ६१
को यह दुष्ट निशाचर कोई । तासु स्वल्पबल है नहिं गोई ॥
क्षणमहँ याहि निपतिहौ नीके । नहिंसंशयकछु कहतसुठीके ५ । ६२
इमि कहिसकल बीरभेसज्जित । रणमहिमाहितनिकनाहिंलज्जित ॥
निजनिज करन प्रतिज्ञासाँची । राक्षस पहँगे जोतिनबाँची ६ । ६३

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेवीरप्रतिज्ञाकथनंनाम त्रयस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ३३ ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

दो० चौंतिसयें महँ कह समर पुष्कल पवनज आदि ॥
शूरनकर शत्रुघ्ननिशिचरन हत्यो जिमि बादि १

शेषनागजी वात्स्यायन मुनि से बोले कि अच्छे २ घोड़े नहेहुये सब शस्त्रास्त्रों से भरेहुये शोभासेयुक्त अश्व श्रेष्ठों से विराजितरथों पर चढ़कर वे सब वीर उस अधम राक्षस के ऊपरको गये १ इन लोगोंको देखकर इच्छाचारी विमान पर चढ़हुये वह राक्षस इन लोगोंको बहुत भयभीत करताहीसा बोला कि २ हे सुभटो! युद्धकरने के लिये न आओ अपने २ घरोंको चले जाओ अपने प्राणोंको न छोड़ो हम इस श्रेष्ठ घोड़ेको न छोड़ेंगे ३ हमारा विद्युन्माली नाम है व रावण के मित्र और सखाहैं हम मरेहुये अपने सखाका दावँ लेने के लिये आये हैं ४ हमारे मारने के योग्य वे रामचन्द्र कहां हैं जो हमारे सखाको मारकर चले गये व उन सब शूर शिरोमणि रामचन्द्र के भ्राता लक्ष्मण कहांहैं ५ रामचन्द्र के उन छोटे भ्राता को मारकर हम रावण का पलटापावेंगे व उन के गले से निकला हुआ रुधिर पीवेंगे ६ ऐसा वाक्य सुनकर योद्धाओं में श्रेष्ठ महाबली पुष्कलजी बीरता व शूरतासे युक्तबचन उस से बोले कि ७ सुभट को चाहिये कि समर में मिथ्या विकत्थन न करे अपने शस्त्रास्त्रों की वर्षासे पराक्रम दिखावे ८ जिन्हों ने सुहृत् मित्र व अपने जनों समेत रावणको मारडाला उन के घोड़े को हरकर दुष्ट अब कहां जायगा ९ तू शत्रुघ्नजी के धन्वा से निकलेहुये बाणों से पृथ्वीपर गिरेगा व मरेहुये तुझको भूतलपर शृगालियां खायँगी १० हे दुष्ट! श्रीरामचन्द्रजी के सेवक हमारी विद्यमानता में तू न गर्ज्ज सुभट लोग बड़े उदयवाले शत्रुओंको समरमें मारकर गर्ज्जते हैं ११ शेषनागजी बोले कि रणकर्म में दुर्म्मद ऐसा कहते हुये पुष्कलवीरकी छातीमें उस राक्षस सत्तम ने शक्ति से मारा १२ परन्तु सुवर्ण झरतीहुई उस लोहेकी शक्तिको अपनीओर आतीहुई देखकर पुष्कल बीर ने अपने अति उग्र तीन तीक्ष्ण बाणों से काट डाला १३ वह बाणों से कटजाने के कारण प्रभा रहितहो तीन खण्ड हो-

कर पृथ्वी पर गिरपड़ी व गिरने के समय श्री बिष्णु भगवान् की तीनों शक्तियोंकेही समान मानों शोभितहुई १४ उसशक्तिको कटी हुई देखकर औरोंको तपानेवाले उस राक्षसने अतिवेग से लोहे से बनाहुआ एक त्रिशूल लिया १५ व उस जाज्वल्यमान तीक्ष्णफोंक-वाले शूल को उस राक्षसेन्द्र ने चलाया परन्तु आतेहुये उसको पुष्कल बीर ने बाणों से काटकर तिल २ करडाला १६ त्रिशूल को काटकर अति बेग से श्रीरामचन्द्रजी के सेवक पुष्कलजीने धन्वा लेकर उसपर मनकेसमान बेगसे चलनेवाले तीक्ष्णबाण चढ़ाये १७ व चलाये वे बाण जाकर उसराक्षस के हृदयमें प्रविष्टहोकर भीतर से रुधिर बाहरको निकालनेलगे जैसे कि श्रीविष्णुजी के मनोहर गुण वैष्णव के हृदयमेंजाकर अरुणरङ्गके रागोंको निकालकर बाहर करते हैं १८ उनबाणोंके लगनेके दुःखसे पीड़ित अतिमर्द्दन करने वाले विद्युन्माली ने पुष्कलजीके मारनेके लिये उद्यतहोकर घोर मुद्गर हाथमें लिया १९ व उस विद्युन्मालीनामने मुद्गरको चलाया भी हृदय में जाकर लगाभी इसलिये बड़ेकष्टको उत्पन्न किया २० उसमुद्गरके लगने से शत्रुओंके सन्तापनकरानेवाले पुष्कलबीर कांपे वमूर्च्छितहोकर रथहीके ऊपर गिरपड़े २१ व विद्युन्माली का भाई एक उग्रदंष्ट्रनाम था उसने लक्ष्मीनिधिजीको बैरियोंके नाशक बहुत से बाणों से युद्धकराया २२ व एकक्षणमात्रहीमें मूर्च्छा जागी तो पुष्कलजी उसराक्षससे बोले किहेराक्षसश्रेष्ठ!तुमधन्यहो व तुम्हारा पराक्रम अतिशय महान्है २३ अब शूरोंके मान करनेके योग्य हमारीभी इस प्रतिज्ञाको देखो कि तीक्ष्ण बाणों से अभी तुमको बिमानपरसे पृथ्वीपर गिराते हैं २४ इतना कहकर महा उदारता से युक्तपुष्कलजीने झटएक अतिदुरासद जाज्वल्यमान अग्निकेसमान तेजवाला बाणलिया व चलाया २५ जबतक वह राक्षस उसबाणके खण्डनकरने के उपायमें पराक्रम कियाचाहे कि तबतक वह तीक्ष्ण मुखवाला सायक उसके हृदयमें लगगया २६ उसबाणके लगने से विभ्रान्तचित्त होकर वहराक्षस मूर्च्छितहोकर बिमान पर से पृथ्वी पर गिरपड़ा २७ उग्रदंष्ट्रने अपने बड़ेभाईको बिमानपरसे गिरेहुये

देखकर शत्रुसे शङ्काखाकर उसे लेकर अलग पहुँचा दिया २८ व फिर वह महारोष से बलवानों में श्रेष्ठ पुष्कलनाम अपने शत्रु से बोला कि हेदुष्ट ! हमारे भाईको पातितकरके अब हे दुर्मते ! कहां जायगा २९ हमको संग्राममेंजीतकर तब उत्तमविजय पावेगा और हमारे रहतेहुये तेरेमनमें विजयकी आशा न रहे ३० ऐसा कहतेहुये उस दुष्ट के हृदयमें रोषसे पूरितलोचनहोकर पुष्कलजीने दशबाण मारे ३१ जब महात्मा पुष्कलजीने उसके दशबाणमारे तो उस दुर्बुद्धिने अपनेमनमें बड़ाक्रोधकरके उनके हृदयमें मारनेका प्रारम्भ किया ३२ क्रोधसहित दांतोंको पीसकर मूठीउठाकर हृदयमें वज्रके शब्दकी शङ्का करातेहुये उसने उनके हृदयमें मारा ३३ व परमास्त्रके जाननेवाले पुष्कलवीर उस मूठीसे ताड़ितहोनेसे उस दुष्टात्माको पीसडालनेका बिचार करतेहुये कम्पित न हुये ३४ व उस दैत्यके हृदय में महा तीक्ष्ण वत्सदन्तनाम बाण उन्होंने मारे उन बाणोंसे व्यथितहोकर उसने त्रिशूल हाथमें उठाया ३५ व चलाया वह जाज्वल्यमान ज्वालाओंकीमाला निकलने के कारण अति भयङ्कर दारुण त्रिशूल महावीर पुष्कल के हृदय में लगा ३६ उसके लगनेसे धनुर्द्धरों में श्रेष्ठ पुष्कलजी मूर्च्छितहो व परमकष्ट को पाय रथकेऊपर गिरपड़े ३७ उनको मूर्च्छितजानकर पवनकेपुत्र हनुमान्जी अपनेमनमें कोपसे व्याकुलहोकर उस राक्षससे बोले कि ३८ हे दुष्ट ! हम ऐसे योद्धाकी विद्यमानतामें कहां जाताहै घोड़ेके हरनेवाले तुझको अभी लातोंसे मारते हैं ३९ ऐसा कहकर महान् हनुमान्जीने विमानपर चढ़ेहुये शत्रुके सैनिकोंको आकाशमें जाकर नखोंसे विदीर्णकरके मारडाला ४० व किसी २ को तो पूंछसेमारा व किसी २ को पादतलसे किसी २ को दोनोंहाथोंसे चीरडाला इसप्रकार पवनकुमार ने सहस्रोंको विदीर्णकिया ४१ उनके मारे कोई २ तो तुरन्तमृतक हीहोजाते कोई २ मूर्च्छितहोजाते व बहुत उनके मारने के भय से भागखड़ेहुये ४२ इसप्रकार अनेकदारुण राक्षस वहां मारेगये व छिन्नभिन्नहोकर दोटुकड़ेहोगये इसप्रकार पवनके पुत्रने किया ४३ व उसइच्छाचारी विमानके तोरणप्राकारादि तोड़ उखेड़डाले यद्यपि

हाहाकारतेहुये असुर चारों ओर से उसे घेरे थे पर एक न माना तोड़हीडाला ४४ महादुरासद हनुमान् महाशूरके कारण वह इच्छाचारी विमान क्षणभरमें दौड़कर पृथ्वीपरआता जब यहां सौदोसौ लातलगते आकाशको उड़ता जब वहांभी कूदकर ये ताड़ितकरते फिर धरणीपरआता इसप्रकार इधर उधर दिखाई देता यद्यपि दुःशासदथा ४५ जहां २ वह विमानजाता वहां २ पवनकुमार प्रहार करतेहुये यथेच्छ चलनेवाले वायुनन्दनजी कामरूपधारी दिखाई देते ४६ जब विमानपर चढ़ेहुये लोग इसप्रकार व्याकुलहुये तो दैत्येन्द्र उग्रदंष्ट्र हनुमान्जी के पास पहुँचा ४७ व बोला कि हे वानर ! तूने बड़ाकाम किया जो योद्धाओं को पातित किया परन्तुजो एक क्षणभर और यहां खड़ाहै तो तेरेप्राण शरीर से अलग किये देताहूं ४८ ऐसा कहकर उस दुर्म्मतिने हनुमान्जी को बरतेहुये अग्निके समान चमचमातेहुये अति तीक्ष्ण त्रिशूलसे मारा ४९ परन्तु आयेहुये उस त्रिशूलको महावीर्य्यवान् हनुमान्जीने अपने मुखमें लिया व यद्यपि वह सब लोहेसेही बनाथा पर रत्ती २ उसे चूर्णकरडाला ५० इस प्रकार उस दैत्यके चलायेहुये लोहमयी त्रिशूलको चूर्णीभूतकरके बली हनुमान्जीने हाथोंकेचटकनोंसे उसेपीटा ५१ जब कपीन्द्रजीने उसे खूब चटकनों से पीटा तो व्यथितहोकर वह इधर उधर दौड़कर सब लोगोंके भय करानेवाली मायाकरने लगा ५२ जैसे कि प्रथम उसने ऐसा अन्धकारकरदिया जिसमें कोई कहीं दिखाईही न देने लगा अपने व परायेजनोंको कोई पहिचानही नहीं पाता ५३ व सुभटोंके ऊपर पर्व्वतके समान प्रकाशित शिलायें गिरनेलगीं व बर्षा ऐसी होनेलगी कि उसके मारे सबके सब व्याकुलहोगये ५४ बिजुलियां चमकने लगीं व बादर जोर शोरसे गर्ज्जने लगे पीब व रुधिर बरसानेलगे व विष्ठा मूत्र छोड़नेलगे ५५ आकाश से गिरते हुये कुण्डल पहिने कटेहुये शिर अलग व बिना शिर के रुण्ड अलग बहुत से दिखाई देने लगे ५६ व नंगे विरूप दारुण भयकारी दैत्यलोग बार खोले बड़े २ मुखके दिखाई देने लगे ५७ तब सब लोग व्याकुलहो व परस्पर भययुक्त होकर भागकर महा-

उत्पात मानने लगे ५८ तब रथपरचढ़ कर महापराक्रमी शत्रुघ्नजी आये व श्रीरामचन्द्रजीका स्मरण करके उन्होंने धन्वापर बाण चढ़ाये व चलाये ५९ व उन वीर्य्यवान् ने मोहनास्त्रसे उस माया को दूर करके आकाश में व समरभूमि में भी बाणों की धारा बहाई ६० तब सब दिशा प्रसन्न हुईं व सूर्य्यका घेरा जाता रहा बादल नहीं जानते कहां चलेगये बिजुलियों का चमकना बन्द होगया ६१ तब राक्षसों सहित बिमान आगे दिखाई देने लगा जिसपर से काटो मारो बिदारो ऐसे बचन सब ओर से होरहे थे ६२ तब शत्रुघ्नजी के सहस्रों बाण सुवर्णके पुङ्खों से शोभित होकर आकाशमें ठहरे हुये उस इच्छाचारी बिमान पर जाकर गिरे ६३ तब वह बिमान टूटकर एक स्थान पर छोटासा दिखाई देने लगा वैसा ऊंचा नहीं जैसा कि प्रथम दिखाई दियाथा जैसे कहीं स्वर्गपुरी का कोई खण्ड भग्न होकर भूतल में आकर दिखाई दे ६४ तब उस राक्षसने कोप करके धन्वा पर चढ़ाकर बाण चलाये व सम्मुख गर्ज्जते हुये उसने श्रीरामचन्द्रजी के भाई के ऊपर बरसाये ६५ व सैकड़ों हज़ारों बहुत से बाण शत्रुघ्नजीके शरीरमें लगे व तीक्ष्ण मुख होनेके कारण रुधिर समूह बहातेहुये शोभित हुये ६६ तब शत्रुघ्नजीने परमशक्तिसे युक्त कर वायव्यास्त्र धन्वापर चढ़ाया व चलाया जोकि राक्षसों के कँपाने वाला था ६७ उस बाण के लगने से अपने बिमान पर से गिरते हुये शिर के बार खोले हुये राक्षस लोग आकाश में चलने वाले भूत वेतालों के समूहोंके समान दिखाईदेने लगे ६८ शत्रुघ्नजी के चलाये हुये उस वायव्यास्त्रको देखकर उस राक्षस पुत्रने पाशुपतास्त्र अपने धन्वा पर चढ़ाया ६९ उस अस्त्रसे भूत प्रेत वेताल व निशाचर निकले वे सब हाथों में खोपड़ियां लिये हुये रुधिर पान कररहे थे ७० वे लोग शत्रुघ्नजीके वीरोंका रुधिर पीनेलगे सो मरेहुओंका नहीं जीतेहुये बीरोंकाही शोणितकत्तृीसे काटकर ज़बरदस्ती पीनेलगे ७१ उस अस्त्रको सर्व्वत्र व्याप्त देखकर किसब बीरोंका भञ्जन करताहै उस के निवारण के लिये नारायणास्त्र को छोड़ा ७२ नारायणास्त्रने क्षण-

मात्र में उन सब भूत प्रेतादिकों को निवारित किया व निशाचरके प्रेरित वे सब भूतादि नष्ट होगये ७३ तब विद्युन्माली निशाचर ने क्रुद्धहोकर तीक्ष्ण त्रिशूल से शत्रुघ्नजी को मारना चाहा ७४ व शूल हाथ में लिये विद्युन्माली को संग्राम में आते देखकर शत्रुघ्नजीने अर्द्धचन्द्राकार मुखवाले बाणों से उसके भुजमें मारा ७५ उन बाणों से हाथ कटे हुये उसने शिर से मारने का विचार किया व कहा कि हे शत्रुघ्न! तुम मारे गये अब यहां से जाओ तुम्हारा रक्षक कौन होगा। ७६ ऐसा कहते हुये बलवान् व शूर उस विद्युन्मालीका कुण्डलसहित शिर बाणोंसे शत्रुघ्नजीने काटगिराया ७७॥

चौ० । ताहि छिन्नशिर देखिप्रतापी । उग्रदंष्ट्रबलवत्तर पापी ॥
मुष्टि उठाय शूरजन सेवित । रिपुहनहतन चह्यो ह्वै वेपित १ । ७८
तब शत्रुघ्न तीक्ष्ण लै बाणा। काट्यो तासु शीर्षयुत प्राणा ॥
जो धावत रह शस्त्रविधारी । बीरन सँग रणमाहिं प्रचारी २ । ७९
नाथरहित हत शेष निशाचर। चलेगये तबसब अपनेघर ॥
बाजीलै दियरिपुहन काहीं । करिप्रणाम बहुबिधिजुटिब्राहीं ३ । ८०
तब बीणा निनाद दर नादा । बहुरि बीर गणकें जय बादा ॥
परम मनोहर वहुँदिशिलोगा। सुनेसकलविधिभये अशोगा ४ । ८१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेविद्युन्मालीपराजयो नामशत्रुघ्नविजयोनामचतुस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

दो० । पैंतिसयेंमहँ कह निरखि आरण्यक मुनिकाहिं ॥
रिपुहन पूँछ्यो तिनकह्यो लोमशवचन सराहिं १

शेषनाग वात्स्यायनमुनि से बोले कि राक्षसोंके हरेहुये उसघोड़े को पाकर पुष्कलसहित राजाशत्रुघ्नजी अत्यन्त हर्षितहुये १ तब रुधिरोंसे अंग सींचे हुये सबयोद्धा और राजालक्ष्मीनिधि रणसे उत्साहसे संयुक्त होकरमहाराजकी प्रशंसा करनेलगे २ हे वात्स्यायन! दुर्जन विद्युन्माली दैत्यके मारजानेपर भय छोड़कर सब देव बड़े सुखीहुये ३ नदियां सब बिमल होगईं व सूर्य्य बिमलहुये शीतल मन्द सुगन्ध तीनप्रकारके पवन बहनेलगे ४ अब शास्त्र आरण्य

किये तैयार रथोंपर चढ़ेहुये बिमल अंगों समेत सब बिजय लक्ष्मी युक्तवीर राजालोग राजा शत्रुघ्नजी से बोले ५ कि अहो भाग्य है कि आपने महाबली विद्युन्माली दैत्यको मारा कि जिसके भय से ब्याकुल होके देवगण स्वर्ग से निकलगये थे ६ व अहो भाग्य है कि श्रीरघुनाथजी का सुन्दर घोड़ा फिर मिलगया व अहो भाग्य है कि सब भूमण्डल में जीतने के लिये आप जायँगे ७ हे स्वामिन् ! अब इसमनके समान बेग व मनोहर घोड़े को छोड़ो कि चले इस विषयमें बिलम्ब न हो ८ शेषनाग बोले कि बीरोंके समयके योग्य ऐसे बचन सुनकर अच्छा २ कहकर प्रशंसाकरके फिर उत्तम घोड़ा छोड़ा गया ९ छोड़ाहुआ वह घोड़ा रक्षकों से रक्षित होकर उत्तर दिशामें घूमा उसके पीछे २ रथपैदर व घोड़े चले और सब शस्त्रास्त्रधारी बीर लोगभी चलते रहे १० हे वात्स्यायन ! वहाँ जो महात्मा शत्रुघ्नजी का बृत्तान्त हुआ पापराशिनाशन उसे सुनो ११ जाते २ घोड़ा मुनि बृन्दोंसे सेवित नर्म्मदा नदी के तीरपर पहुँचा वहाँ ऐसी हरियाली थी कि उसके कारण मानों घोड़ा नील रत्नोंके समूह के समानही शोभित हुआ १२ व उन २ मुनिवरों के प्रणाम करतेहुये शूरोंसे सेवित शत्रुघ्नजी पीछे २ यथेच्छगामी उस अश्वरत्नके पीछे २ चलेजाते थे १३ जाते २ नर्म्मदाकी लहरियों से सींचे हुये सबपापों के हरनेवाले व पलाश के पत्रों से बनेहुये एकपुराने जीर्णआश्रमको देखा १४ उसे देखकर सब धर्म अर्थ कामों के करनेमें पण्डित शत्रुघ्नजीने न्याय में चतुर सर्वज्ञ सुमति से पूँछा कि १५ हे मन्त्रीजी ! कहिये यह पुण्यदर्शन आश्रम किसका है हे बिचार चतुरोंमें श्रेष्ठ ! पूँछते हुये हमसे यहकहो १६ शेषनाग बोले कि ऐसा बचन सुनकर बिशद हँसतीहुई बाणी से अपना सौहृद दिखातेहुये सुमतिजी राजासे बोले कि १७ हे महाराज ! सर्व्वशास्त्रों में विशारद इन मुनिश्रेष्ठको देखकर हमलोग पापरहित होजायँगे १८ इस से नमस्कार करके उन्हींसे पूँछिये वे सब आपसे कहेंगे क्योंकि ये श्रीरघुनाथजीके चरणारविन्दों के रस के आस्वादन करने के बड़े लोलुपहैं १९ नाम इनका आरण्यक है

व रघुनाथजी के चरणोंके सेवकहैं और अत्युग्रतपसे पूर्णहैं व सब शास्त्रार्थों के जानने में बड़े पण्डितहैं २० धर्म्म अर्थसे युक्त सुमतिके ऐसे बचन सुनकर शत्रुघ्न जी थोड़ेसे सेवकों के संगउनके दर्शन को गये २१ हनुमान् पुष्कलबीर सन्त्रियों में सत्तम सुमति लक्ष्मीनिधि प्रतापाग्र्य सुबाहु व सुमद २२ इन लोगोंको संगलिये उदार मतिवाले शत्रुघ्नजी द्विजों में श्रेष्ठ आरण्यकजी के नमस्कार करने के लिये उस आश्रम पर पहुँचे २३ व वहां जाकर बिनय से कन्धा झुकाये हुये उन सब बीरों सहित शत्रुघ्नजीने उन तापस श्रेष्ठके नमस्कार किया २४ शत्रुघ्नादि सहित उन सब राजाओंको नमस्कार करते हुये देखकर उनमुनिने फल मूलादिकों से उनका अर्घ्य पाद्यादि सत्कार किया २५ व फिर उन सब राजाओंसे कहा कि आपलोग कहां इकट्ठे हुये व यहां कैसे आये हेपापरहितो! सोसब हमसे कहो २६ उन मुनि श्रेष्ठका वहबचन सुनकर वाक्य के बाद में बिचक्षण सुमतिनाम मन्त्री बोले २७ कि ये सब रघुवंश के महाराज के घोड़े की पालना करतेहैं क्योंकि वे वीरशिरोमणि जी सबसामग्री इकट्ठीकर के यज्ञकरेंगे २८ उन लोगों की ओर से ऐसा बचन सुनकर अपने दांतों की चमक से सम्पूर्ण घोरअन्धकार दूरहीकरते से वे मुनि सत्तम बोले २९ आरण्यकजी बोले कि बहुत सी सामग्री इकट्ठीकरके स्वल्प पुण्यदेनेवाले वे नाशहोने के योग्य थोड़े फल देनेवाले बिबिधप्रकार के मनोहर यज्ञों से क्या है ३० मूढ़लोगस्थिर ऐश्वर्य्य से युक्त परमपद देनेवाले श्रीजानकीनाथ रघुबीर श्रीहरिको छोड़कर अन्यदेवकी पूजा करतेहैं ३१ जो श्रीराम स्मरण मात्र से पर्व्वत समान पापको हरलेतेहैं उनको छोड़कर यज्ञ योग व्रतादिकों के करने से मूढ़लोग क्लेशपाते हैं ३२ अहो लोगोंकी मति से छलीहुई मूढ़ताको देखो कि सुलभ रामभजनको छोड़ दुर्लभकर्म्म करतेहैं ३३ देखो रामचन्द्रजी की चिन्तना सकाम गृहस्थादि व कामरहित योगीलोग भी करतेहैं क्योंकि ये मनुष्योंको मोक्षदेतेहैं व स्मरण मात्र से सम्पूर्ण पापों को नष्ट करतेहैं ३४ पूर्वसमय में हमभी तत्त्वजानने की इच्छा से ज्ञानी को बिचारते हुये

बहुत तीर्थों में गये परन्तु उस फलके देनेवाला कोई न मिला ३५ तब एक समय हमारे भाग्य से स्वर्गलोक से तीर्थ यात्रा करनेकी इच्छा से लोमशमुनि आये ३६ उन महामुनि के प्रणाम करके हम ने बड़ी आयुवाले व योगियों से सेवित चरण युगल उन मुनि से पूँछा ३७ कि हे स्वामिन् ! दुर्लभ व अद्भुत मनुष्य जन्म पाकर संसार घोर सागर तरने की इच्छा किये हुये हमको क्या करना चाहिये ३८ आप बिचार करके कहें जो व्रत दान तप व यज्ञ अथवा संसार सागरसे तारक कोई देवताहो बतावें ३९ जिसको जानकर आप की कृपा से घोर संसार को तरें सो हम से कहो हे सब शास्त्रों के अर्थ के पारगामी योगीशजी! ४० हमारा ऐसा वाक्य सुनकर मुनि सत्तम बोले कि हे बिप्र ! एकमनहोकर श्रेष्ठ श्रद्धा से युतहोकर सुनो ४१ दान तीर्थ व्रत नियम यम योग व तथा अनेक यज्ञ स्वर्ग देने वालेहैं ४२ परन्तु हम सबपापोंका नाशक एकपरमगुप्त यत्न कहते हैं हे महाभाग! उसे सुनो वह सर्वोपरि संसार सागरको तारनेवाला है ४३ परंतु वह नास्तिक से न कहना और न श्रद्धा हीन पुरुष से कहना निन्दक व शठ से भी न कहना न भक्ति के बैरीको देना ४४ रामभक्त शान्तस्वभाव काम क्रोध से रहित पुरुष से सब दुःख नाश करनेवाला यह पदार्थ कहना ४५ ॥

दो० । देव अपर नहिं रामसों नहिं व्रत राम समान ॥
योग न राघव सों अपर यज्ञ न तासम आन १ । ४६

इस से उनका स्मरण करके जप करके व पूजन करके मनुष्य यहां व वहां दोनों स्थानों के लिये परमसमृद्धि को पाता है ४७ स्मरण करने व मन से ध्यान करने से सब कामों के फल को देते हैं व संसार सागर तारिणी परम भक्ति देतेहैं ४८ डोमड़ाभी रामचन्द्रजी का स्मरण करने से परमगति को जाता है व जो तुम्हारे तुल्य वेदशास्त्रों में निरतहैं उनको फिर क्या कहें ४९ यह हमने सब वेदों व शास्त्रों का रहस्य तुम से कहा है अब जैसा तुम्हारी बुद्धिमें आवे वैसा करो ५० ॥

दो० । रामचन्द्र यक देव यक व्रत त्यहि पूजन होय ॥

मन्त्रएकत्यहि नामत्यहि स्तुतिहै शास्त्रसुजोय १।५१

इस से सब प्रकार के मनोरम श्रीरामचन्द्रजी को भजो उन के भजन से संसार सागर गोपदके समान तुच्छ होजायगा ५२ उन के वचन सुनकर हमने फिर पूँछा कि श्री राम देव का ध्यान मनुष्य कैसे करें व पूजन कैसे करें ५३ हे महा बुद्धिवाले ! सर्वज्ञ हमसे बिस्तारसहित कहो हे मुनि सत्तम ! जिसके जाननेसे तीनों लोकोंमें हम कृतार्त्थ हों ५४ हमारा ऐसा वचन सुनकर मुनिश्रेष्ठ उन लोमशजीने विचार करके हमसे रामचन्द्रजीके ध्यानादिक सबकहे५५ कि हे बिप्रेन्द्र ! सुनो जो तुमने पूँछाहै सब हम तुमसे कहेंगे जैसे कि संसारबन के काटनेवाले श्री रमानाथजी सन्तुष्टहोतेहैं ५६ रम्यअयोध्या नगरमें कल्पवृक्ष के नीचे सब समृद्धि देनेवाले रत्नोंके मण्डपमें ध्यान करे ५७ महा मरकत मणि सुवर्ण व नीलरत्नोंसेशोभित अपनीदीप्तिसे अन्धकार दूरकरतेहुये व चित्तके हरनेवाले सिंहासन का ध्यान करे५८फिर उसके ऊपरबिराजमान मनोरमदूर्व्वादल समान श्याम शरीर देव देवेन्द्रोंसे पूजित श्रीरघुराजका ध्यानकरे५६ जो कि पूर्णमासी के पूर्णचन्द्रमाकी दीप्ति के धिक्कार करनेवाले मुख से शोभित व अष्टमीके चन्द्रमाके खण्डके समान मस्तकसे प्रकाशित ६० नीलरंगके घूँघरवारे केशोंसे शोभित किरीट व मणियोंसे रञ्जित मकराकार सुन्दरतासे युक्त दो कुण्डलों से बिराजित ६१ मूंगोंके समान अरुणरंगके ओठों के बीचमें दांतोंकी झलकसे शोभित व चन्द्रमा के किरणोंके समान प्रकाशित दांतोंकी पंक्तिसे बिराजित ६२ व दुपहरीके फूलकेसमान जीभसे शोभित मुख कि जिसमें ऋगादि वेद व शास्त्र सदा बसते ६३ शङ्खकी दीप्ति व तीन रेखाओंसे युक्त कण्ठसे शोभित सिंहके कन्धे के समान ऊँचे व मोटे कन्धोंसे युक्त ६४ अंगद व कङ्कणधारणकिये मुँदरियोंमें जड़े हीरों की शोभासे भूषित जानु पर्य्यन्त लम्बायमान दो दीर्घ बाहुओं को धारणकिये ६५ लक्ष्मी के निवास से युक्त श्रीवत्सादि विचित्र चिह्नों से चिह्नित मनोरम बिपुल छातीको धारणकिये ६६ मनोहर उदर नाभि व कटिसे बिराजित व मणिमयी क्षुद्रघण्टिकाकेविशेषशोभासे

युक्त ६७ विमल दो जंघाओं व फीलियों की शोभासेयुक्त व ब्रज्र यव अंकुश आदि सुरेखाओंसे युक्त दो चरणोंसे शोभित ६८ जिन दोनों चरणोंको योगी लोग सदा ध्यानकरते हैं उनसेशोभित ऐसे श्रीराम-चन्द्रजीका ध्यान व स्मरण करके तुम संसारसागरको उतरोगे ६९॥

चौ०। चन्दनादिसोंत्यहि नितपूजत। पावतअक्षयऋद्धि सुकूजत॥
ऐहिक परलौकिक दुइसिद्धी। लहतपुरुषसबविधिसों इद्धी १।७०
महाराज रघुनन्दन केरो। पूंछयहु ध्यान जौन श्रुतिटेरो॥
सो तुमसन हम विप्रसुनावा। यासोंभवकथितरहुसुहावा २।७१॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेपंचत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३५॥

छत्तीसवां अध्याय॥

दो०। छत्तिसयेंमहँ कह सकल लोमश रामचरित्र॥
यद्यपि सो संक्षेपही कहपर परम विचित्र १
चौदहहायनवनबसन के दिनसब गिनिदीन॥
यहअपूर्वविधियहँकही मुनिसबभांतिप्रवीन २

आरण्यक मुनि सुमतिजीसे बोले कि हे विप्रेन्द्र! लोमशजी से यह परममहावचन सुनकर हमने योगियोंमें श्रेष्ठ सर्वज्ञ उन मुनि से फिर पूंछा कि १ जो हम पूंछतेहैं वहहमसे कहो क्योंकि गुरुलोग कृपायुक्त होते हैं इससे सेवक से सब कुछ कहते हैं २ वे महाभाग रामचन्द्रजी कौन हैं जिनका ध्यान तुम नित्य करतेहो व उनके कौन चरित्र हैं हे द्विज श्रेष्ठ! तुम कहो ३ किस अर्थ वे अवतीर्ण हुये व मनुष्यताको क्यों प्राप्त हुये सो सब हमारा संशय मिटाने के लिये तुम कहो ४ शेषजीने कहा ऐसे मुनि के परम शोभन वचन सुनकर लोमशजी ने अद्भुत श्रीरामचन्द्रजीका चरित्रकहा ५ कि लोगोंको नरकमें डूबतेहुये जानकर योगेश्वरोंके ईश्वर परमेश्वर अपनीकीर्ति सब लोगोंमें फैलानेकेलिये कि जिससे सब लोग घोर संसारकोतरेंगे ६ ऐसा जानकर दयासागर मनोहर परमेश्वरने चारप्रकारकी शोभासे युक्तहोकर अवतार लिया ७ पूर्वकाल त्रेता युग में पूर्णांश श्रीरघुनन्दन राजीवलोचन श्रीरामचन्द्रजी सूर्य्य वंशमें उत्पन्नहुये ८ वे श्रीरामचन्द्रजी अपने छोटेभाई लक्ष्मण

सहितपिताकी आज्ञासे जुलुफेंरखायेहुये विश्वामित्र मुनिकेसंगगये९ यज्ञकी रक्षाकरनेकेलिये राजादशरथजीने अपने दोनोंकुमार मुनि को दियेथे सो इन्द्रियोंको दमनकियेहुये व धन्वाबाणधारणकियेहुये उन दोनों महाराजकुमारों ने विश्वामित्रजी की बड़ी सेवा की १० मार्ग में चलेजातेहुये इन दोनों जनों के संग विघ्नकरनेके कारण से घोरबनमें ताडकानाम राक्षसी आगई ११ सो ऋषिकीआज्ञासे धनुर्विद्याके अभ्यासके कारण श्रीरामचन्द्रजीने ताडका को यम-यातनामें प्रवेशकराया १२ व फिर जब विश्वामित्रजी यज्ञकरने लगे तो उसकी रक्षाकरनेकेलिये श्रीरामचन्द्रजीने बाणोंसे मारीच व सुबाहु नाम राक्षसोंकोमारा १३ व फिर आगे चलके उन्हीं राम-चन्द्रजीके चरणोंकी रजके स्पर्शसे इन्द्रकेसंग भोगकरानेके कारण से मुनिकेशापसे पत्थररूपिणी गौतमजीकी बधू अहल्या फिर स्व-रूपिणी होगई १४ फिर जनकराजाके गृह में स्थापित महादेवजी के धन्वाको तोड़कर पन्द्रह वर्ष की अवस्थाके श्रीरामचन्द्रजीने छ वर्ष की अवस्थाकी जानकीजी १५ विवाहकी रीति से अयोनि से उत्पन्न सीताजीके संग विवाह करके व उनको पाकर श्रीराघवजी कृतकृत्यहुये १६ उसके पीछे अयोध्याजीमें आकर उनके साथ बारह वर्ष तक श्रीरामचन्द्रजी क्रीड़ा करते रहे फिर सत्ताईश वर्ष की अवस्था में उनको युवराजपदवी मिलने लगी १७ तब कैके-यीने राजा दशरथ जीसे दो बर मांगे उनमें एकसे सीता लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजी १८ जटाधारण करके बनको चौदह वर्ष के लिये जायँ व दूसरे से भरत तुम्हारे राज्यके स्वामीहों यह राजा से कहा १९ तब जानकी लक्ष्मणके संग रामचन्द्रजीको वनबास देते हुये राजाने तीन रात्रि तक तो जलहीका आहार किया व चौथे दिन फल भक्षण किया २० पांचयें दिन श्रीरामचन्द्रजी चित्रकूट में पहुँचे व वहां स्थानबनाया व रहे फिर तेरहवेंवर्ष पञ्चवटी में जाकर श्रीरामचन्द्रजीने २१ शूर्पणखा नाम राक्षसीकी नाक व कान लक्ष्मणद्वारा कटवाडाले फिर जानकी सहित उसी बनमें वि-चरतेहुये श्रीराघवके २२ पापी रावण राक्षस जानकीजीके हरने के

लिये आया व माघके शुक्लपक्षकी अष्टमीको वृन्दनाम मुहूर्त्तमें २३ रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी के वहां पर न होनेपर रावण सीताजी को हरलेगया इसप्रकार से उस दुष्ट के हरने पर सीताजीने कुररी पक्षिणी के समान रोदन किया व पुकारा २४ कि हे राम ! हे राम ! राक्षस से हरीहुई हमको रखाओ जैसे क्षुधा से आक्रान्त बाजपक्षी बटई नाम पक्षिणी को लेजाय उसी प्रकार यह दुष्ट हमको लिये जाता है २५ व इस प्रकार रोदन करती हुई सीताको काम के वशीभूत रावण हरलेगया जब इस प्रकार सीताजी को लेचला तो पक्षियों के राजा जटायु ने २६ रावण के संग बड़ा युद्ध किया परन्तु वह महात्मा राक्षसेन्द्र से मारा गया व माघकी शुक्ला नवमी को जानकीजी जाकर रावण के यहां बसीं २७ व उस के दशवें मासमें सम्पाति गृध्र ने वानरों से सीताजी को बताया व एकादशी तिथि में हनुमान्जी महेन्द्राचल पर से २८ सौ योजनका समुद्र लड़के व उसी रात्रिमें जाकर लङ्का में पैठे व ढूंढ़ने लगे व थोड़ी रात्रि बाकी रहजाने पर हनुमान्जी को सीताजी के दर्शन हुये २९ व उस के प्रातःकाल द्वादशी को हनुमान्जी शिंशिपा के वृक्ष पर स्थित हुये व उसी रात्रि में जानकीजीके विश्वास के आलापकी कथा हुई ३० व फिर त्रयोदशी को अक्षादिकों के साथ हनुमान्जीका युद्धहुआ व चतुर्दशी को मेघनादने वानरसिंह पवनकुमार को ब्रह्मपाश से बांधा ३१ व उसी दिन अग्नि युक्त पूँछसे लङ्कापुरी को भस्म करदिया व पूर्णमासीको फिर हनुमान्जी का महेन्द्राचल पर आगमन हुआ ३२ व मार्गकृष्ण प्रतिपदासे पंचमी तक वानरोंके संग वायुनन्दन मार्गमें रहे फिर छठे दिन आकर मधुबनका विध्वंसकिया ३३ व सप्तमीको आकर पता केलिये चूणामणि दिया व सब लंका व जानकीजीके वृत्तान्तकहे व अष्टमीतिथि को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमें बिजय मुहूर्त्तमें ३४ मध्याह्न समय श्रीरामचन्द्रजीका प्रस्थान हुआ व श्रीरामचन्द्रजी प्रतिज्ञाकरके दक्षिण दिशाकोचले ३५ व कहाकि हमसमुद्रकोभी उतरकररावणको मारेंगे व जब दक्षिणदिशाकोचले तो उनकेसखा सुग्रीवभीमित्रहुये ३६ सात

दिनों में जाकर समुद्रके किनारे सेना का निवास हुआ व पौष शुक्ल प्रतिपदासे लेकर तृतीया पर्य्यन्त समुद्रका ३७ उपस्थान सेना सहित श्रीरामचन्द्रजी ने किया व उसी चतुर्थीको विभीषण आकर श्रीरामचन्द्रजी से मिले ३८ व समुद्र उतरने के लिये पंचमी को सम्मत हुआ व फिर चारदिन तक रामचन्द्रजी ने मुकाम किया समुद्रतटपर रहे तब समुद्रसे वर लाभ हुआ व महा उपाय उसने दिखाया फिर दशमीसे सेतु बँधनेका प्रारम्भ हुआ व त्रयोदशीको समाप्तहुआ ३९।४० व चतुर्दशी को सुवेल पर्व्वतपर रामचन्द्रजी ने सैन्यका निवेशन किया व पूर्णमासी से लेकर द्वितीया पर्य्यन्त तीन दिनोंमें सेना उतरी ४१ इस प्रकार वानरराजकी सेना सहित रामचन्द्रजी समुद्रको उतरगये व लक्ष्मण सहित उन्हों ने जाकर सीता जीके लिये लंकाको घेरलिया ४२ व तृतीया से दशमीतक आठ दिन वहां निवेशरहा व एकादशीके दिन शुकसारण दो रावण के दूत आये ४३ व माघकी कृष्णा द्वादशीको सैन्यकी गिनती हुई व कपिराज शार्दूलने एकाएकी सेनाका आरोपण बताया ४४ व त्रयोदशीसे अमावास्यातक तीनदिनोंमें लंकामें रावणकी सेनाकी गिनती हुई व उसने समरका उत्साह किया ४५ फिर माघशुक्ल प्रतिपदाको अंगद दूतता करनेको गये फिर रावणने मायासे उनके पति का शिर लेकर उन्हें दिखाया ४६ फिर माघकी द्वितीयासे अष्टमी पर्य्यन्त सात दिन राक्षसों व बानरों का महाघोर युद्ध हुआ ४७ व माघकी शुक्ल नवमीकी रात्रिमें इन्द्रजित् ने रामचन्द्रजी व लक्ष्मण को नागपाशमें बांधदिया ४८ तब सब कपीन्द्र आकुल होकर उत्साह रहित होगये तब नागपाश छुड़ाने के लिये दशमी के दिन पवनने ४९ रामचन्द्रजी के कानमें गरुड़जीके आनेको कहा फिर वे आये तब नागपाश से छूटे फिर एकादशी व द्वादशी में धूम्राक्षका बधकिया ५० व त्रयोदशी को वहीं समरमें कम्पननाम राक्षस मारागया व माघशुक्ला चतुर्दशीसे फाल्गुन बदि प्रतिपदा तक ५१ तीनदिन में नीलने प्रहस्तका बधकिया व फाल्गुनके प्रथम पक्ष में चतुर्थी पर्य्यन्त तीनदिनों में ५२ तुमुलयुद्धकरके श्रीरामचन्द्रजीने

रावणको रणसे भगादिया फिर पंचमीसे अष्टमीतक रावणने कुम्भकर्णको जगाया तब उसने भोजन किया फिर अष्टमी तक भोजन करके नवमीसे चतुर्द्दशीतक कुम्भकर्णने ५३ । ५४ रामचन्द्रजी से युद्धकिया व श्रीराघवजीने बहुत वानरोंके भक्षण करनेवाले उसदुष्ट को रणमें मारडाला फिर मारेशोकके अमावास्याकेदिन राक्षसोंने युद्ध ही नहींकिया ५५ इससे समर बन्दरहा फिर फाल्गुनकी शुक्ला प्रतिपदासे चतुर्थी तक चार दिनमें इन्द्रजित्आदि पांच बड़ेभारी राक्षस मारेगये ५६ फिर पंचमी से सप्तमी तक अतिकायका बध हुआ अष्टमीसे द्वादशीतक पांचादिनोंमें ५७ फिर निकुम्भ कुम्भ व मकराक्ष तीनदिनोंमें रणमें मारेगये व चैत्रके आदिकी द्वितीयाको इन्द्रजित्ने फिर जीता ५८ इसलिये तृतीया से सप्तमीतक पांचदिन औषधादि लेआने में इधरके लोगोंके व्यग्र होने से युद्ध बन्दरहा ५९ फिर जबतक त्रयोदशी आवे पांचदिनमें बड़ा प्रसिद्ध व पराक्रमी मेघनाद रणमें लक्ष्मणजी करके मारागया ६० फिर चतुर्दशी को युद्ध बन्दरहा क्योंकि उसदिन रावणने यज्ञ कियाथा व फिर अमावास्याको रावण युद्धकरनेको आया ६१ व चैत्रकी शुक्ल प्रतिपदासे पांचदिनों तक रावणसे युद्ध होतारहा उसमें बहुत से राक्षस मारेगये ६२ व चैत्रकी षष्ठी से अष्टमीतक महापार्श्वादि राक्षसमारे गये फिर चैत्रशुक्ला नवमीको लक्ष्मणजी के शक्तिलगी ६३ तबकोप से युक्तहोकर श्रीरामचन्द्रजीने रणसे फिर रावणको भगाया व लक्ष्मणजीके लिये हनुमान्जी द्रोणाचल लाये ६४ व दशमी की रात्रिमें युद्ध बन्दरहा फिर एकादशीको रामचन्द्रजीके लिये इन्द्रका सारथि मातलि रथलाया ६५ वह इन्द्रका भेजा हुआ आयाथा इससे बड़ी भक्तिसे उसने रथ श्रीराघवजीको समर्प्पण किया फिर कोपवान् होकर द्वादशी से दूसरी चतुर्द्दशी पर्य्यन्त ६६ सब अठारहदिन में रामचन्द्रजीने रथपर चढ़कर रथपर चढ़ेहुये रावण को मारा व बड़े तुमुलयुद्धके करनेके पीछे श्रीराघवेन्द्र महाराज विजयी हुये ६७ माघकेशुक्लपक्षकी द्वितीया से लेकर वैशाखके कृष्णपक्षकी चतुर्द्दशी पर्य्यन्त सत्ताशी दिनतक युद्धहुआ व बीच २ में पन्द्रह दिन ६८

युद्धबन्दरहा इससे बहत्तर दिन रात्रि संग्राम हुआ फिर रावणादिकों की प्रेतक्रिया बैशाखकी अमावास्याको हुई ६९ व वैशाख शुक्ला प्रतिपदा को रामचन्द्र जी रणभूमिही में उपवास करते हुये रहगये व द्वितीया को लङ्काके राज्यपर बिभीषण का अभिषेक किया ७० व तृतीयाको सीता जी देवताओं की ओर से शुद्धताका बरपाकर श्री रामचन्द्रजीको प्राप्तहुईं इस प्रकार शीघ्रही रावणको मार श्रीरामचन्द्रजी ७१ राक्षसों से दुःखित पुण्य रूप सीताजी को लेकर परम प्रीतिसे लङ्का से लौटे ७२ बैशाखकी शुक्ल चतुर्थी को श्री रामचन्द्र जी पुष्पक नाम विमान पर चढ़े व आकाश मार्ग्ग होकर अपनी अयोध्या पुरीको लौटे ७३ व चौदहबर्ष पूर्णहोने पर बैशाख शुक्ल पञ्चमी को अपने गणोंसहित श्रीराघवजी भरद्वाजजी के आश्रम पर पहुँचे ७४ व षष्ठीको नन्दिग्राम भरतजी से मिले व फिर सप्तमीको अयोध्या जी में राजगद्दीपर बैठे ७५ रामचन्द्रजी से रहित ग्यारह मास चौदह दिन श्री जानकीजी लङ्कापुरी में रहीं ७६ जब राजगद्दीपर बिराजमान हुये तो श्रीरामचन्द्रजीको बयालिसवां बर्षथा व जानकी जी को तेंतीसवां ७७ इस प्रकार चौदह बर्ष के पीछे संग्राम में रावण के विदारण करने वाले श्री रामचन्द्र जी अपनी पुरी अयोध्याजी में प्रवेश करके आनन्द को प्राप्त हुए ७८ वहां श्री रामचन्द्रजी ने अपने तीनों भाइयों सहित राज्य किया व राज्य करते हुये उन के पुरोहित बेदबादियों में श्रेष्ठ वसिष्ठजी रहे ७९ व फिर कुम्भ से उत्पन्न अगस्त्यजी भी उन के यहां आवेंगे उन्हीं के कहने से श्री रघुनाथजी अश्वमेध यज्ञ करेंगे ८० सो उनका घोड़ा तुम्हारे आश्रम पर आवेगा हे सुव्रत! व उन के योद्धा हर्षित होकर तुम्हारे आश्रम पर आवेंगे ८१ हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! उन के आगे तुम मनोहर राम कथा कहोगे व उन के साथ तुम अयोध्या में जाकर ८२ कमल नयन श्रीरामचन्द्रजीके दर्शन करके उसीक्षण संसार सागरके पार उतर जाओगे ८३ ऐसा हमसे कहकर महा बुद्धिमान् लोमशजी फिर बोले कि अब और तुमको क्या पूंछना है तब हम ने उन मुनीश्वरजी से कहा ८४ कि तुम्हारी कृपा से हम ने सब

अद्भुत श्री रामचन्द्र जी का चरित जाना अब तुम्हारे प्रसाद से हम रामचन्द्र जीके चरणारबिन्दपावेंगे ८५ इतना कहकर जब हम ने नमस्कारकिया तो वे मुनि सत्तम फिर चलेगये सो उन्हींके प्रसाद से हम ने रामचन्द्रजी के चरणों का पूजन पाया है ८६ व सो हम रामचन्द्रजीके चरणों का स्मरण प्रतिदिन बार २ किया करते हैं व निरालस होकर उनके चरित बार २ गाते हैं ८७ व अपने हृदयके हरनेवाले उस चरित के गान से अन्य लोगों को पवित्र करते हैं व उन मुनिके बचनों का स्मरण फिर २ करके श्रीराघव के दर्शन की इच्छा से हर्षित होते हैं ८८ व यह समझते हैं कि हम भूतल पर धन्यहैं व कृतार्थ हैं व रामचन्द्रजीके चरण कमलों के दर्शन की इच्छा हमको होरही है ८९ इससे सबप्रकार से मनोहर श्रीरामचन्द्रजीही भजन करनेके योग्य हैं व सबके बन्दनीय हैं व जो संसार के तरनेकी इच्छा करताहो ९० इससे हम तुमलोगों से पूछतेहैं कि तुमलोग किसअर्थ यहां प्राप्त हुयेहो व उनराजाका क्या नाम है व वे धर्म्मात्मा किसलिये अश्वमेध महायज्ञ करते हैं ९१ सो सब हमसे इस समय कहकर फिर अपने घोड़ेकी रक्षाकरनेको जाओ व श्रीरघुनाथजी के चरणों का स्मरण बार २ करतेरहो ९२ इस प्रकारके उन मुनि के बचन सुनकर सब बड़े बिस्मित हुये व श्रीरघुनाथजी का स्मरण करते हुये वे लोग उन आरण्यक मुनि से बोले ९३ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेलोमशारण्यकसंवादेश्रीरामचरित्रकथनंनामषट्त्रिंशत्तमोऽध्यायः३६ ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

दो० । सैंतिसयें महँ कहयथा पवनजसों आरण्य ॥
सुनिरामाहित्यहि निकटगे लषेताहिब्रह्मण्य १
श्रीहरिरत्यहिपूज्यहुमुनिहु रामनाममाहात्म्य ॥
कहितनुपरिहरितहँलही श्रीरघुपतितादात्म्य २

शेषनागजी वात्स्यायन मुनि से बोले कि जब मुनियों में श्रेष्ठ आरण्यजीने उन सुमति आदिकोंसे उत्तम रामचन्द्रजीका चरित

पूँछा तब वेलोग अपनेभाग्यको धन्यमानतेहुये आदरसे आरण्यकमुनिसेबोले कि १ जिससे कि इससमय श्रीरामचन्द्रजीकी कथासे हमलोगोंको पवित्र करातेहो इससे हमलोग इससमय तुम्हारेदर्शन से पावनहुये २ हे ब्रह्मर्षिसत्तम! अब सत्यबचन सुनो तुमनेहमलोगों से जो पूँछा सो सब तुमसे कहतेहैं ३ अगस्त्यजीके कहनेसे वेही महात्मा श्रीरामचन्द्रजी ब्रह्महत्या मिटाने के लिये सब सामग्रीसमेत यज्ञ करतेहैं ४ सो उसी यज्ञके अश्वकी पालना करतेहुये हम सब लोग घोड़ेसहित तुम्हारे आश्रमपर आयेहैं हे महामतिवाले ! विप्र सो तुम जानो ५ मनोहर रसायन यह वाक्य सुनकर श्रीरामचन्द्र जीके भक्त वे ब्राह्मणदेव अत्यन्त हर्षितहुये ६ व बोले कि मनोरथ की लक्ष्मीसे युक्त आजहमारा वृक्ष सफलहुआ व आज जो हमारी माताने हमको उत्पन्न किया था वह भी धन्यहुई ७ आज हमनेशत्रु रहितराज्यपाया आज कोश अच्छे प्रकार सम्पन्नहुये व आज हमारे देव सुतोषितहुये ८ नित्य आहुति देतेहुये अग्निहोत्रका फल आज हमनेपाया जोकि हम श्रीरामचन्द्रजी के युगल चरणारविन्द देखेंगे ९ जिन अयोध्याधिप प्रभुका ध्यान हम नित्य अपने मनमें करतेहैं निश्चयहै कि वे मनोहर रूप श्रीरामचन्द्रजी आज हमारे नयन गोचरहोंगे १० हनुमान्‌जी हमको अच्छे प्रकार आलिङ्गन करके हमसे कुशल पूँछेंगे व हमारी बड़ी भारी भक्ति देखकर रामचन्द्रजी सन्तुष्ट होंगे ११ यह वाक्य सुनकर बानरों में श्रेष्ठ तम हनुमान्‌जीने आरण्यकमुनिके युगल चरण बड़े आदर से ग्रहण किये १२ व कहा कि हे स्वामिन् ! हे विप्रर्षे! हनुमान् सेवक आपके आगे खड़ाहै हे मुनीश्वर ! उसे आप श्रीरामचन्द्रजीके दासके चरणकी धूलिसे भी न्यून जानें १३ उनके ऐसा कहतेही मुनि परम हर्षितहुये व रामचन्द्रजीकी भक्तिसे शोभित हनुमान्‌जी को छपट गये १४ दोनों प्रेमसे भरगये व दोनों सुधा समुद्र में मग्नहुये इसलिये दोनों निश्चलहोकर चित्रसारीमें लिखेसेहोगये १५ फिर बैठकर श्रीरघुनाथजी के चरणकमलों की प्रीतिमें निर्भर मन होकर दोनों मनोहरकथा कहने सुननेलगे १६ श्रीरामचन्द्रजीके ध्यानसे

निश्चल आरण्यक मुनिसे हनुमान्जी बिबिध भांतिसे शोभित यह बचन बोले कि १७ हे स्वामिन् ! ये दशरथजीके कुलके हीराके अंकुर महात्मा महाशूर शत्रुघ्नजी श्रीरामचन्द्रजी के भाई आपके प्रणाम करतेहैं १८ जिन्होंने सर्ब्बलोक भयङ्कर लवणनाम राक्षसको मारडाला व सुतपोधन मुनियोंको सुखीकिया १९ व ये अति उद्भट लोगों से भी सेवित पुष्कलनाम वीर आपके प्रणाम करतेहैं जिन्हों ने अभी समर मण्डल में महा शूरबीरोंको जीताहै २० ये श्रीरामचन्द्रजी के मन्त्री प्राणेन्द्रिय सर्ब्बज्ञ धर्म्म करनेमें अतिपण्डित हैं व महाबली हैं इसीसे रामचन्द्रजीने शत्रुघ्नजी के संग इनको भेजा है २१ व बैरियोंके बंशके दावानल व रामचन्द्रजीके चरण कमलके अवलम्बी महा यशस्वी ये राजा सुबाहु आपके प्रणाम करतेहैं २२ व पार्व्वती जीकी दीहुई रामचन्द्रजीकी चरण सेवासे संसार सागर की लीलाको तरेहुये ये महात्मा सुमदजी प्रणाम करतेहैं २३ व ये राजा सत्यवान्जी तुम्हारे प्रणाम पृथ्वी में गिरकर करते हैं कि जिन्होंने अपने सेवक से रामचन्द्रजी के घोड़ेको अपने यहां आयेहुये सुनकर अपना सब राज्य समर्प्पण करदिया २४ ऐसा वाक्य सुनकर आरण्यकमुनि ने आदर से सबको भेंटा व फलादिकोंसे सबका आगत स्वागत किया २५ तब उन सब लोगों ने यह सबदेखकर मुनिवरजीके आश्रमपर आनन्द से रात्रि में निवास किया व प्रातःकाल नर्म्मदा में स्नानकरके अपने नित्य कर्म्म किये बड़े उपाय करनेवालों ने २६ फिर पीनसपर सवार कराकर मुनिको अपने सेवकोंके साथ शत्रुघ्नजीने रामचन्द्रजीके निवास स्थान अयोध्याजी को भेजदिया २७ मुनिने जाकर सूर्य्यवंशियों राजाओं से बसीहुई अयोध्या नगरी को जैसेही देखा कि रामचन्द्रजी के दर्शन की इच्छा से झटपट पैदर होगये २८ व रामचन्द्रजी के दर्शन के बिषय में सहस्रों मनोरथों से गुप्तमुनि सब जनों से शोभित अयोध्यापुरी में पहुँच गये २९ व सरयूजी के तीर पर अति शोभित रत्नमण्डप में बैठेहुये दूर्ब्बादल समान श्याम स्वरूप व कमल कांति युक्त लोचन वाले ३० कटि भाग में मृग शृङ्ग धारण किये अति

शोभायुक्त व्यासादि ऋषि समूहों से घिरेहुये व शूरबीरों से सुसेवित ३१ भरत व सुमित्रानन्दन लक्ष्मणजी के बीचमें स्थित दीन समूहों को मनोबांछित बिबिध प्रकार के प्रसिद्ध दान देतेहुये ३२ श्रीरामचन्द्रजी को वहां देखकर मुनि ने अपने को कृतार्थ माना व मन में कहा कि हमारे नेत्र धन्य हैं जोकि रामचन्द्रजी के दर्शन करनेको कमलदल के समान बिकसित हुये ३३ आज हमारा सब शास्त्रोंकाजानना बहुतसार्थकहुआ क्योंकि जिस के कारण श्री रामचन्द्रजीके दर्शन व आलाप करने के लिये हम इस अयोध्यापुरीकोआये ३४ इत्यादि बहुत वचन हर्षितहोकर कहतेहुये व श्री रामचन्द्रजी के चरणों के दर्शन से सुहर्षित अंगों से शोभित मुनि अन्य लोगों के अगम्य व विचार में तत्परभी योगेश्वरों से अति दूर श्रीराघवेन्द्रके समीप पहुँचे ३५ व बोले कि आज हम धन्यहैं कि रामचन्द्र जी के चरण जिन के नयनगोचर हुये रामचन्द्र जी हमसे बोलेंगे यह कहते हुये मुनिने श्री रघुनाथजी की ओर देखा ३६ तब श्रीरामचन्द्रजी भी अपने तेजसे प्रज्वलित तपोमूर्त्तिधारी ब्राह्मण श्रेष्ठको देखकर आसन परसे उठखड़े हुये ३७ व मुनि के चरणोंको बहुत कालतक ग्रहण किये रहे व बोले कि आजहम ब्रह्मण्य देवके शरीरको आपने पवित्र किया ३८ ऐसा वाक्य कहते हुये श्री प्रभुजी मुनि के चरणों पर पड़गये जिनके चरण सुरासुरों के मुकुटों के मणियों से पूजित होतेथे ३९ प्रणाम करते महाराजाधिराज को देख महातपस्वी मुनिनेभी प्रिय प्रभुको छाती से चिपटा लिया ४० तब श्री कौसल्यातनयजी ने उन मुनिको अपने हाथों से उठाकर बड़े ऊंचे मणिमय आसन पर बैठादिया व अच्छे प्रकार स्थापित करके फिर उनके दोनों चरण जल से धोये ४१ व बड़े हर्ष से उनके चरणों के धोवन का जल श्री हरिजीने अपने मस्तकपर धारण करलिया व कहा कि आज हम गणोंसहित व कुटुम्ब समेत पवित्र हुये ४२ फिर मुनि के अंगों में अपने करकमलोंसे चन्दन लगाकर एक लागती हुई गायदी फिर देवदेवेन्द्रों से सेवित श्रीरामचन्द्र जी रम्य वचन बोले ४३ कि हे स्वामिन्! हम

अस्वमेधयज्ञ किया चाहते हैं सो वह आज तुम्हारे चरणों के यहां आने से पूर्णहोगा ४४ व आज तुम्हारे चरणारविंदों से पवित्रित अश्वमेधयज्ञ ब्रह्महत्या से उत्पन्न हमारे पापकीहानि करेगा ४५ राजराजेन्द्रों से सेवित ऐसा वचन कहतेहुये श्रीराघवेन्द्र जी से हँसते हुये आरण्यक मुनि मधुरबाणी से बोले कि ४६ हे स्वामिन्! ब्रह्मण्य देव आपको हे राजन्! ऐसा करना कहना उचितही है क्योंकि हे महाराज! सब वेदपारग ब्राह्मण लोग आपहीकी मूर्तियां हैं ४७ जो आप ब्राह्मणके पूजनादि शुभकर्म कार्य्य करेंगे तो फिर सब विप्र श्रेष्ठोंकी पूजा हे भूमिप! सब राजालोग सदा किया करेंगे ४८ परन्तु हे महाराज! जो आपने कहा कि हम ब्रह्महत्या मिटाने के लिये विमल यज्ञ करतेहैं वह वचन तो हास्य करने वाला है ४९ क्योंकि सर्व्वशास्त्र से विवर्जित महामूढ़ भी प्राणी तुम्हारे नाम के स्मरण मात्र से सब पापसागर को उतरकर परमपद को जाता है ५० सब वेद सब इतिहास व सब पुराणों का सारार्थ यह स्पष्ट है कि जो कि पापतारक श्री रामचन्द्र जी के नाम का स्मरण करे ५१ तभी तक ब्रह्महत्यादि के समान पाप गर्ज्जतेहैं कि जब तक हे रामचन्द्रजी! तुम्हारे नाम का उच्चारण नहीं किया जाता ५२ हे महाराज! तुम्हारे नाम का गर्ज्जना सुनकर महापापों के हाथी कहीं स्थान पानेकी इच्छासे भाग खड़े होते हैं ५३ इससे महापुण्यदर्शी तुम्हारे ब्रह्महत्या कहां है क्योंकि हे रामचन्द्रजी! तुम्हारी कथा सुनकर सब लोग पवित्र होंगे ५४ सत्ययुग में हम पूर्व्वसमय गंगाजी के तीरपर बसनेवाले पूर्व्व व परवृत्तांतवादी ऋषियोंके मुख से हमने सुनाहै ५५ कि तब तक अति पापी कातर पुरुषों को पाप से भय होती है कि जब तक वचन से वे मनोहर राम नाम नहीं कहते ५६ इस से हम इस समय धन्यहैं क्योंकि हे रामचन्द्रजी! तुम्हारे दर्शन से इस समय हमारी संसृतिकानाशन सुलभ हुआ ५७ ऐसा कहते हुये मुनिकी वहां रामचन्द्र जी ने पूजाकी व सब मुनिजनों ने अच्छा २ यह वचन कहा ५८ शेषजीने कहा हे वात्स्यायन! हे मुनिश्रेष्ठ! हे राम भक्तिपरायण! जो आश्चर्य्य वहां हुआ

वह कहते हुये हम से सुनो ५९ महाराज रामचन्द्र जी को वैसे ध्यानगोचर देखकर अत्यन्त हर्ष को प्राप्त होकर मुनि सब मुनीश्वरों से बोले कि ६० ॥

चौ० । सुनहुमनोहरवचनहमारे । सकलमुनीश्वरकहतपुकारे ॥
ममसमानकोमो यहि लोका । अरुकोहोइहिविगतसुशोका १ । ६१
ममसमनाहिं है कोइनहोइहि । नहिंकभुँ भयहुसकलमनजोइहि ॥
जासों मोहिं नमोकरि पाछे । स्वागतपूँछ्यहु श्रीप्रभुआछे २ । ६२
जासु चरणपंकज रज माहीं । सदाप्रविष्टरह्यो शक नाहीं ॥
सो प्रभु जासुचरणजलपीके । मान्यहु निजहि पूतगुनिहीके ३ । ६३
इमिभाषत मुनिकोमोतबहीं । ब्रह्मस्फोटलषतजन सबहीं ॥
मुनि सायुज्यमुक्तितइँ पाई । जोदुर्लभयोगिनकहँ भाई ४ । ६४
नभमे तूर्यनादपुनि बीणा । नाद किये सब देवप्रबीणा ॥
लखि पूतात्मा मुनिहिंबहोरी । पुष्पवृष्टि सुरकीन निहोरी ५ । ६५
यहलखिसबमुनि मुनिहिप्रशंसा । बर्णनकरि ताकर शुभवंशा ॥
कहकृतार्थयहमुनिवरभयऊ । जोरामहिंविलोकिमिलिगयऊ ६ । ६६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेसप्तत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३७ ॥

अड़तीसवां अध्याय ॥

दो० । अड़तिसयेंमहँ कह यथा हयनर्म्मदा समान ॥
तहँ रिपुहनपुष्कलगये अरु हनुमान महान १
तहँ यकयोगिनिदेखिलहि तासोंहयअरुअस्त्र ॥
पुनिआयेबाहरमुदित जिमि गे तहां सशस्त्र २

सूतजी शौनकजीसे बोले कि यह आख्यान सुनकर मुनीश्वर वात्स्यायन उदारमतिने परमहर्षितहोकर शेषनागजीसे प्रश्नकिया १ वात्स्यायनजीने कहा कि हे फणीश्वर ! सुन्दरकथायें सुनतेहुयेहमारी तृप्ति नहीं होती मुख्यकर भक्तोंकी पीड़ा हरनेवाली कीर्त्तिवाले श्रीरघुनाथजी की कथाओं के सुनने से २ वेदधारीसमर्थ आरण्यकमुनि धन्यहैं जिन्होंने श्रीरघुनाथजीके दर्शनकरके फिर नश्वर देह को छोड़दिया ३ तदनन्तर महाराजरामचन्द्रजीका तुरंग कहांगया व किसने बांधा व वहांश्रीजानकीनाथजीकी कैसी कीर्त्तिहुई हे फणी-

श्वरजी ४ हे धराधार ! जिससे कि आप सर्व्वज्ञहैं इससे सब कहैं क्योंकि धराधरशरीरधारी आप साक्षात् उन श्रीरामचन्द्रजी के रूपधारी हैं ५ यह वाक्य सुनकर हर्षित शरीरसे उनके तत्तत् गुणोंकीकथाओंसे युक्त श्रीरामचन्द्रजी का चरित शेषजी कहनेलगे ६ शेषजीने कहा कि हे विप्र ! श्रीरघुनाथजीके गुणोंको बार २ पूंछते हो यह बहुतअच्छा करतेहो कि सुनकरभी बिना सुनेहुये अपने को उसकी लोलुपतासे करते हो ७ उसके पीछे बहुतसे सैनिकोंके संग फिर वह यज्ञकाअश्व मुनिबृन्दोंसे सेवित मनोज्ञ नर्मदा के किनारे जहां २ वह जाताथा सब सेनावाले वहां २ जाते थे व उसके पीछे चलनेमें और रण करनेमें बड़ेचतुर वे लोग बाजीको देखतेहुये जाते थे ८।९ घोड़ा जाकर नर्म्मदा नदीके एक बड़े गहिरे अथाहकुण्डमें घुसगया जोकि मस्तकमें सोनेकापत्र बँधाये था व जिसके सर्व्वांग पूजित थे १० सो रामचन्द्रजी का वह उत्तम बाजी वहां जलमें डूब गया तब उसके पीछे चलनेवाले वे सब महावीर बड़े विस्मितहोकर ११ आपसमें बोले कि यह घोड़ा इस अगाध जलमेंसे कैसे निकले भाई अब इस जलके भीतर इस महोदय घोड़े के लेनेको कौन जायगा १२ जबतक उद्विग्नचित्त होकर यह सम्मतकरें करें तबतक सैकड़ों वीरोंके साथ रघुवंशियोंके पति शत्रुघ्नजी भी आगये १३ व उन सबोंको बहुत व्याकुल देखकर उन वीरशिरोमणिने मेघ गम्भीर बाणी से उन सबोंसे पूंछा १४ कि तुमलोग झुण्डके झुण्ड इस जलमें क्यों खड़ेहो सुवर्णके पत्रसे शोभित श्रीरघुनाथजी का अश्व कहांहै १५ क्या जलमें डूबगया वा कहीं कोई अभिमानी लेगया सो हमसे शीघ्रकहो तुमलोग कैसे विमोहित होगयेहो १६ शेषजी बोले राजाशत्रुघ्नजी के ऐसे वचन सुनकर वे सब वीर वीरशिरोमणि रघुवीरजीसे बोले १७ कि हे स्वामिन् ! हमलोग नहीं जानते कि क्याहुआ एक मुहूर्त्त भर हुआ जबसे घोड़ा जलमें पैठगयाहै तब से वहांसे आपका उत्तमघोड़ा नहीं निकला १८ अब आपही वहां से अतिवेग उस घोड़ेकोलावें तो बने हमलोग भी आपके संग हे महामते ! वहां चलेंगे १९ सैनिकोंके ऐसे वचन सुन

कर रघुवंशभूषण खेद को प्राप्त जलमें पैठनेपर उद्यत उन लोगों को जानकर २० अपने मुख्य मन्त्री से बोले कि इस विषय में क्याकरना होगा घोड़ेकी प्राप्ति कैसे होगी वह कहो २१ जलके भीतर घोड़ा ढूंढ़नेके लिये किन २ शूरोंको नियुक्त करना चाहिये कौन किस उपाय से बाजी लावेगा वह उपाय कहो २२ ऐसा शत्रुघ्नजीका वचन सुनकर मन्त्रियों में सत्तम सुमति समयके अनुसार शत्रुघ्न जीको हर्षित करातेही से बोले २३ कि हे स्वामिन्! अद्भुतकर्म्म करनेवाले श्रीमान् आपही में यह शक्तिहै कि पातालको चलेजायँ व जलके भीतरसे फिर यहां चले आवें २४ व अन्य महात्मा पुष्कल जीकी भी ऐसीही शक्ति है व श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंकी सेवामें तत्पर हनुमान्‌जीकी भी शक्तिहै २५ इससे आप तीनों जन जलके भीतरजाकर उत्तमघोड़ा शीघ्रलाइये जिसमें धीमान् श्रीरघुनाथ जी का अश्वमेधहोवे २६ शेषजी बोले कियह वाक्य सुनकर शत्रुबीरों के हन्ता शत्रुघ्नजी हनुमान् व पुष्कलको संगलेकर आप जलके भीतर पैठे २७ जैसेही जलमें पैठे कि वैसेही वहां एकपुर दिखाई दिया जोकि अनेक उद्यानोंकी शोभासे युक्तथा व अप्रमाण छोटे २ अन्यपुरोंसे विराजितथा २८ वहां माणिक्योंसे जड़ेहुये सोनेके एक खम्भेमें स्वर्णपत्रसे शोभित श्रीरामचन्द्रजीके घोड़ेको बँधेहुयेदेखा २९ व वहां मनोहररूप धारणकियेहुये उत्तमस्त्रियां पलँगपर सुखसेलेटी हुई एक अद्भुतस्त्रीकी सेवाकररहीथीं ३० इनसबलोगोंको देखकर वे सब स्त्रियां अपनी स्वामिनीसे बोलीं ये छोटी देह व थोड़ी उमर वाले व मांसपुष्ट देहवाले ३१ ये लोग तुम्हारे आहारके बड़े श्रेष्ठफल होंगे व आयुसे हीन इनलोगोंका रुधिर तुम्हारे पानकरने के लिये स्वादुदायक होगा ३२ सेवकियोंका ऐसा वचन सुनकर वह श्रेष्ठ स्त्री कुछ मुखनचातीहुई भौंहोंसे डरवातीहुई हँसी ३३ तबतक कवचादिकोंकी शोभासे युक्त ये तीनोंजने जा पहुँचे व शिरोंपर कुण्डीधरे हुये शूरतावीरतासे युक्त ३४ वहां सौंदर्य शोभासे युक्त उन स्त्रियों को देखकर वे लोग विस्मित होकर आपसमें कहनेलगे कि यह क्या अद्भुत दिखाईदेताहै ३५ फिर जाकर सबलोगोंने श्रेष्ठ उन स्त्रियों

के प्रणामकिया इससे उनके किरीटोंके मणियोंकी दीप्तिसे उस स्त्री के युगलचरण प्रकाशित हुये ३६ तब सबोंमें श्रेष्ठ उस स्त्रीने इन सब पुरुषोंसे पूंछा कि तुमलोग कौनहो जो चापबाणादि धारणकिये हुयेहो ३७ व यहां आयेहो हमारा यह स्थान सब देवोंसे भी अगम्य है व सबको मोहितकरताहै यहां आयेहुये पुरुषकी कहींको निवृत्ति नहीं होती ३८ यह घोड़ा किस राजाकाहै व चामरसे वीजित कैसे है व सुवर्णकेपत्रकी शोभासेयुक्त कैसेहै हमारे आगे कहो ३९ शेष जीने कहा मोहन अक्षरोंसे युक्त उस स्त्रीके ऐसे वचन सुनकर उस से निर्भयहोकर हँसतेहीसे हनुमान्‌जी बोले कि ४० जिन सर्वदेव शिखामणि के ये तीनोंलोक प्रणाम करते हैं उन त्रिलोक शिखा-मणि महाराजाधिराजके हमलोग किङ्करहैं ४१ व उन्हीं श्रीरामचन्द्र जीके यज्ञकरनेका यह घोड़ा है सो अब हमलोगों के इस घोड़े को छोड़दो हे वराङ्गने ! तुमने क्यों इसे बांधरक्खाहै ४२ हमलोग सब शस्त्रास्त्रमें कुशलहैं व सब अस्त्रोंके चलानेमें पण्डितहैं इसलिये इसके पकड़नेवालोंको मारकर बलसे इसे लेजायँगे ४३ वानरराजके ऐसे वचनसुनकर वह श्रेष्ठ स्त्री जो कि वहां थी व बोलनेमें बड़ीचतुरथी हँसतीहुई बोली कि ४४ हमने इस घोड़ेको यहां लेआकर बांधा है इसे कोई नहीं छुड़ासक्ता चाहे दशहजार वर्षतक कोटिशः तीक्ष्ण बाण चलायाकरे ४५ परन्तु हम श्रीरामचन्द्रजी के चरणकमलकी सेवकी कर्मकारिणी हैं इसलिये धीमान् श्रीरामराजाके घोड़ेको न ग्रहणकरेंगी ४६ जो हम इस घोड़ेको लाईं यह महाअनुचित हुआ इससे शरण्यभक्तवत्सल श्रीरामचन्द्रजी इस अपराधको क्षमाकरें हे महाबलो ! ४७ तुमलोग श्रीरामचन्द्रजीके पुरुष इस अश्वके रक्षकहो व इसके लिये यहां आनेमें बड़े कष्टितहुयेहो इस लिये हे स-त्तमो ! देवताओंको भी जो नहीं मिल सक्ता है हमसे वह वरमांगो ४८ जिसमें खेलती हुई हमने जो अत्युग्र कर्म्म किया कि श्रीरघु-नाथजी का घोड़ा लेलिया उसका अपराध पुराण पुरुषोत्तम श्रीरा-घवजी क्षमाकरें इससे सबलाज को छोड़ सबजन अवश्य हमसे वरग्रहणकरो ४९ उसका ऐसा वचन सुनकर उससे हनुमान्‌जीबोले

कि श्रीरघुनाथजीके प्रसादसे हमलोगोंके सब बलादिकहैं किसीवस्तु की कमी नहीं है ५० तथापि तुमसे एक उत्तमवर मांगतेहैं हमारेमनका वाञ्छित वही वरदेवो वह यह है कि जन्म २ में हमलोगों के पति श्रीरघुनाथजीहीहों व हम सब उनके कर्म्मकारीहों ५१ हनुमान् जीका ऐसा वचन सुनकर तब वह स्त्री फिर हँसकर मधुर व गुणोंसे पूजित वचन बोली कि ५२ आपलोगोंने जो प्रार्थनाकीहै वह तो सब देवताओंको भी दुर्लभहै परन्तु हे श्रीरघुपतिजी के सेवको! वह सत्य ही होगा तुम जन्म २ उनके सेवक व वे तुम्हारे स्वामी होंगे ५३ पर इसके सिवाय खेल ऐसा करती हुई हम एक और वरदेंगी क्योंकि जिसमें श्रीरघुनाथजी प्रसन्नहों यह हमारा वचन सत्यहो ५४ आगे एक महाबलयुक्त व शिवसे रक्षित वीरमणिनाम राजा इस महाअश्व को पकड़ेगा ५५ सो हे महाबलो! उसके जीतनेके लिये हमारामहाअस्त्रग्रहणकरो सो हे शत्रुघ्न! उससे तुम अकेले द्वन्द्वयुद्ध करना ५६ जब समरमें इस हमारे अस्त्रको चलावोगे तब वह इस अस्त्र से पवित्रहोकर श्रीरामचन्द्रजीके स्वरूपको जानेगा ५७ बस उनके नमस्कारकरके व तुमको घोड़ादेकर तुम्हारे चरणपर गिरेगा इससे वैरिविदारण यह हमारा अस्त्रग्रहणकरो ५८ यह सुनकर श्रीरघुनाथजीके भ्राता शत्रुघ्नजीने उत्तरको मुखकर आचमनादिकरके पवित्रांगहोकर उस योगिनीके दियेहुये अर्थयुक्त उस अद्भुतअस्त्र को ग्रहणकिया ५९ उस अस्त्रकोपाकर शत्रुघ्नजी और भी महातेजस्वीहोगये इससे बड़ेदुःखसे ढिठाईकरनेकेयोग्य व अत्यन्त दुराधर्ष व शत्रुरूप हाथियोंकेलिये अंकुशरूपहोगये ६० उस योगिनी के नमस्कारकरके शत्रुघ्नजी उत्तम अपने उसयज्ञके अश्व को लेकर उसजलसे सुखदायक उस नर्म्मदा के तीरपर आये ६१ उनको देखकर सब सेनाकेलोग हर्षितहोकर अत्यानंदितहुये व अच्छा २ कहकर घोड़ेके निकलनेके वृत्तान्त सबोंने पूंछे ६२॥

चौ० तबहनुमानकहासबहाला। जिमिआयहुतहँबाजिबिशाला॥
अरुजिमिबरपायहुत्यहिपाहीं। सोसुनिमुदितसकलमनमाहीं॥६३

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेऽष्टत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३८॥

उनतालीसवां अध्याय ॥

दो० । उनतालिसयें महँ कह्यो देवपुरी में बाजि ॥
जिमिपहुँचोतहँराजसुत गह्यो युवतिजनराजि १
तासुजनकनिजसुतापति शिवसोंसम्मतलीन ॥
समरकरण उद्यतभयो क्षत्रियधर्म्म प्रवीन २

शेषनाग वात्स्यायन मुनि से बोले कि सब ओरसे मृदङ्ग व वीणाओंके नादहोने के समय वहांसे घोड़ा छोड़ागया व वह देवताओंके बनाये हुये देवपुरमें पहुँचा १ जहां कि स्फटिक मणियों सेही मनुष्यों के गृहोंकी भीतें व वेदियां बनीथीं व नागों से सेवित विमलविन्ध्याचलको हँसतीथीं २ व बहुत लोगों के गृह चांदी के भी बने हुये दिखाई देतेथे व विचित्र मणियोंसे व माणिक्यों से जिसके गोपुर बनेथे ३ व जहां लोगों के घर २ कमलों से युक्त छोटी २ तलैयां विद्यमानथीं व सब ऐसी मनोहरथीं कि मनुष्यों के चित्तोंको अपने मुखकमल दिखाकर हरतीथीं ४ व जहां पद्मराग मणियोंसे प्रत्येकगृहोंमें भूमिजड़ीथी व सबगयें उन्हींसे बनीथींतो ईटोंकी कौनसी बातथी ५ व सबद्वारों पर क्रीड़ा करनेके पर्व्वत नीलरत्नोंसे बनेहुये थे वे मयूरोंको मेघोंकी शङ्का से बुलारहे थे ६ व जहां मनुष्यों के गृहोंमें हंस स्फटिक मणिजटित बावलियों में पालित थे मेघों की भीति नहीं करते थे न मानस सरका स्मरणही करते थे ७ व निरन्तर वहां शिवके स्थान में चन्द्रमा की उजियाली से अन्धकार मिटा करता था इससे शुक्ल व कृष्णपक्षका भेद मनुष्यों को नहीं जान पड़ता था ८ वहां के राजा का बीरमणि नाम था व धार्म्मिकों में आगे गणना करने के योग्य था वह सब भोग सहित राज्य करता था ९ उसके पुत्रका रुक्माङ्गद नाम था वह बड़ा शूरवबली था वह मनोहर देहवाली स्त्रियोंके सङ्ग क्रीड़ा करनेके लिये बनको आया था १० उसकी बनिताओंके कङ्कणादिकों के शब्द व मंजीरों के शब्द एक साथ होतेथे व कामके भी मनकोहरते थे तो औरोंकी कौनकथा कहे ११ फिर वह पुष्पित वृक्षों से शोभित बड़ेभारी बन को गया जिसमें सदाशिवजी के निवास करने के कारण छः ऋ-

तुओं की शोभा रहतीथी १२ जहां कि प्रफुल्लित कलियों से युक्त च-
म्पा के बहुत वृक्ष बिराजमान थे जोकि देखतेही कामियों के हृदयों
को पीड़ित करते थे १३ फलादिकों के भारों से सब वृक्षोंके समूह
झुके पड़ते थे व कोटि मंजरियों से संयुक्त थे व नाग पुन्नाग शाल
ताल तमाल के भी वृक्ष इसी प्रकार के लगे थे १४ व जहां कोकि-
लाओंके शब्द कानों से सुनाईदेतेथे व भ्रमरों झींगुरोंकी झङ्कारों
से मल्लिकायें शोभित होरही थीं१५अनारोंके समूह व कठचम्पाओं
के समूह लगे थे केतकी कान्तकी ताल के वृक्षों की पंक्तियों से
शोभायमान होरहाथा १६ उस बनमें प्रमदाके साथ चित्तवृत्ति को
लगाये व बिषय बासना में मत्त मधुर बचनसे गान करते हुये व
ऊँचे कुचों वाली स्त्रियोंके सङ्ग अतिप्रीति से शोभानिधान शरीर-
वान् वह राजकुमार उन्हींमें लीन होजाने के कारण निर्विशेष हो-
रहा था प्रवेश किया १७ कोई २ उसे नृत्य विद्याओं से सन्तुष्ट
करके शोभित करती थी कोई २ गानकी कलाओं से व कोई कोई
बचनकी चातुरीसे १८ कोई उन्मत्त और स्त्रियां भौंहोंसे सनकारने
से उसेसन्तुष्ट कररहीथीं वसब आलिङ्गन करनेकी चतुरताओंसेस्त्रियां
उसे हर्षित कराती थीं १९ उन से पुष्प इकट्ठे कराकर उन स्त्रियों
को अपने हाथों से भूषित करता था व कोमल वाणीसे बातें करके
काम रूपधारी वह स्त्रियों के संग बिहारकररहा था २० इस प्रकार
के समय में वहां धीमान् राजाधिराज श्री रामचन्द्र जी का परम
शोभन घोड़ा उस बन में पहुँचा २१ व सोने के पत्र से एक भागमें
मस्तक शोभित गंगाजलके समान श्वेत चीकने रंगवाले कुंकुम माथे
में लगे हुये उस घोड़े को पवन बेग से भी उत्तम गति से जातेहुये
देखकर सब स्त्रियां बहुत हर्षितहुईं कि यह परम कौतुक तेजवाले
देहका बाजी कहां से आया २२ व कमल के मध्य के समान पीले
रंग वाली अपने ओठोंकी ललाई से मूंगोंकी अरुणताकी चमकको
नष्ट करती हुई प्रकाशित दांतों के मध्य में से निकलते हुये हास्यसे
शोभित मुखवाली व अपने शोभननेत्रों से काम को भी मोहित
कराती हुई वे स्त्रियां अपने पति से बोलीं २३ स्त्रियां कहने लगीं

कि हे कान्त! सुवर्ण के पत्र से शोभित यह घोड़ा कौन है व किसका है जो शोभा से युक्त होने से प्रकाशित होता है इसे अपने बल से पकड़ो २४ शेषजी ने कहा उन के कहे हुये बचन सुनकर लीला से ललित लोचन वह राजकुमार एक श्रेष्ठ कमल हाथ से लीला सी करके उस घोड़े को पकड़ लिया २५ व उस के मस्तक पर स्पष्टअक्षरों से लिखे हुये सुवर्ण पत्र को बांचकर स्त्रियों के बीच में हँसा व बोला कि २६ रुक्मांगद बोला हे स्त्रियो! पृथ्वी पर शूरतामें हमारे पिता के समान कोई नहीं है उस के विषय में रामराजा कैसे गर्व करतेहैं २७ जिस हमारे पिताकी रक्षा सदा पिनाकधारी रुद्र जी किया करतेहैं व देवदानव यक्ष मणियुक्त मस्तकों से जिस के नमस्कार करते हैं २८ वे महाबली हमारे पिता जी अश्वमेधयज्ञ करेंगे इस से यह घोड़ा हमारी अश्वशालाको चले व हमारे योद्धा इसको बांधें २९ इस वाक्यको सुनकर वेसब मनोहर स्त्रियां हर्षितमुखी होकर अपने पतिको छपटगईं ३० तब राजाबीरमणिका वह महान पुत्र घोड़े को पकड़कर अपनी स्त्रियों समेत महा उत्साह से पुरीको चला गया ३१ उस समय मृदंगों की ध्वनि सब ओर से होरहीथी व बन्दीजन स्तुति करते थे तब राजपुत्र अपने पिता के मन्दिरको गया ३२ व उस ने अपने पिता से कहा कि हम श्री रघुपति का घोड़ा हरलायेहैं जोकि अश्वमेध करने के लिये स्वच्छन्द गति छोड़ा गया है व उत्तम है ३३ व महासैन्य सहित शत्रुघ्न से रक्षित है उसका ऐसा बचन सुनकर महान् बीर मणि राजा ३४ व महा मतिमान् उस ने उस के कर्म्मकी प्रशंसा न की क्योंकि वह चोर के समान रक्षकों के परोक्ष में उसे चोरी से लाया था ३५ तब उस ने अपने जामाता अद्भुत कर्म्म करने वाले शिव नाम से कहा जो कि अंग में गंगाको धारण किये व मस्तक में चन्द्रमा को धारण करने से शोभित होरहे थे ३६ उन के संग महान् राजा बीरमणि ने सम्मत किया क्योंकि उस के पुत्र ने महात्माओं से निन्द्यकर्म्म को किया था ३७ शिव बोला उन्होंने कहा कि राजन् आपके पुत्र ने महा अद्भुत कर्म्म किया जो कि धीमान् श्रीरामचन्द्र जी के

घोड़े को हरलाया ३८ इस में सुरासुरों को भी मोहित करने वाला महा युद्ध होगा क्योंकि कोटिवीरों के एक रक्षक श्रीरामचन्द्रजी के शत्रुघ्नवीर इस के रक्षकहैं ३९ हम अयोध्या नाथका नाम सदा जिह्वा से रटाकरते हैं व सदा हृदयमें धारण किये रहतेहैं उन राम-चन्द्रजी के यज्ञका घोड़ा तुम्हारा पुत्र हरलाया ४० इस रण में परम महा लाभ होगा जो कि अपने से सेवित श्रीरामचन्द्रजी के चरणारविन्द हम देखेंगे ४१ इस घोड़ेकी रक्षामें बड़ा यत्न करना चाहिये क्योंकि शत्रुघ्नजी बल से हम से रक्षाकिये हुए इस घोड़े को लेजायँगे ४२ इस से हे महाराज! घोड़े को भोजन कराके अपने राज्य समेत इस घोड़े को रामचन्द्रजी को देकर फिर उन के युगल चरणारविन्द देखना ४३ शिवजी के ऐसे वचन सुनकर वह राज-सत्तम इन्द्रादिकों से वन्दितचरण उन शिवजीसे यह बोला कि ४४ वीरमणि बोला क्षत्रियों का यह धर्म्म है जो अपने प्रतापकी रक्षा करें सो उस हमारे प्रताप को अश्वमेध यज्ञ करके श्रीरामचन्द्र द-बाया चाहते हैं ४५ इस से मानीको चाहिये कि अपने प्रताप की रक्षा जैसे कैसे बनेकरे शरीर जानेतक जितना कर्म्म उसके करनेसेहो करतारहै ४६ सो पुत्र घोड़े को पकड़चुका अब सब कर्म्म करनाही पड़ेगा क्योंकि अब श्रीराम भूपालको कोपित कियाही है बिना युद्ध हुये कहां रहताहै ४७ सो क्षत्रियोंका यह कर्म्महीहै अभय होकर करना चाहिये क्योंकि जोकोई भय से विह्वल होकर शत्रु के पादों के प्रणाम करताहै ४८ ऐसा करतेहुये अधम राजाको शत्रुलोग हँसते हैं क्षुद्र प्राकृती देहको धारण किये यह राजाभयसे विह्वलहोकर आधीन हो गया ४९ इससे युद्ध होने की तय्यारी आपकर रक्खें व जो भक्तकी रक्षाकरने में करनाहो उसका भी बिचार करें ५० यह बचन सुनकर चन्द्रचूड़ शिवजी यह वचन हँसते हुये मेघ गम्भीर बाणी से मन को मोहित करते हुये बोले कि ५१ तथापि हम रक्षक बने हैं तो तुमसे घोड़ा कौन लिये जाता है जो तेंतीस कोटि देवता आवें ५२ जब रामचन्द्रजी आप आकर अपने दर्शन देंगे तब हम उनके को-मल चरण युगलों को प्राप्त होकर प्रणाम करेंगे ५३ अपने स्वामी

से युद्धकरेंगे यद्यपि अनुचित है व अन्य वीर तो तृणप्राय हैं वे कुछ भी नहीं करसक्ते ५४ इस से हे राजेन्द्र! युद्धकरो हम तो रक्षक विद्यमानही हैं यदि तीनोंलोक इकट्ठे होकर आवें तो अब घोड़े को कौन लेजासक्ता है ५५ शेषजी बोले चन्द्रचूड़ जी का ऐसा श्रेष्ठ वचन सुनकर राजा युद्धकर्म में कौतुक करने के लिये अपने मनमें अत्यन्त हर्षित हुआ ५६ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेवीरमणिपुत्रेणहयग्रहणंनाम एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥

चालीसवां अध्याय ॥

दो० । चालिशयें महँ देवऋषि रिपुहनसों सब हाल ॥
जहँ बाजी अरु अश्वहर कहिगे परम बिशाल १
पुनि नृपसेना समर हित जिमि आई फिरि राम ॥
कटक भयउ सन्नद्ध रण हितसो कह्यहु ललाम २

शेषनाग वात्स्यायनजीसे बोले कि और महाराज के सेनापति लोग सेनासमेत श्रीरामचन्द्र महाराज के घोड़ेको देखतेहुये वहां आगये १ व कहनेलगे कि वह अश्व कहांहै कौनलेगया वह कैसे नहीं दिखाई देता व घोड़े को हरकर कौनमन्दबुद्धि यमपुरीकोजाया चाहता है २ जबतक शत्रुघ्नजीकी सेनाके आगे चलनेवाले उस मार्गको देखाचाहें कि तबतक अपनी सेनासेयुक्त महाराजभी आ-गये ३ व आतेही उन्होंने सब सेवकोंसे पूँछा कि इससमय हमारा घोड़ा कहांहै सुवर्णकेपत्रसे सुशोभित बाजी क्योंनहीं दिखाईदेता ४ उनका ऐसा वचन सुनकर घोड़ेके अनुयायी वे सेवकलोग बोले कि हे नाथ! इस बनमें नहीं जानते किसने घोड़ा ५ हरा हमलोगमार्ग जाननेमेंचतुरभी हैं परनहींलक्षित करसक्के इससे अब हे स्वामिन्! घोड़ेकेमिलनेकायत्न करनाचाहिये ६ उनलोगोंका ऐसा वचन सुन-कर शत्रुओंके संहारकारी मोहनरूपधारी राजाशत्रुघ्नजी ने अपने मन्त्री सुमतिजीसे पूंछा कि ७ शत्रुघ्नजीनेकहा यहां कौन राजा नि-वासकरताहै व घोड़ा कैसे मिले व इस राजाकी कितनीसजाहै जिस ने आज हमारे घोड़ेको हरलिया ८ सुमति बोले कि हे राजन्! यह

देवपुरहै व देवताहीने इसे बनायाहै व कैलासके समान संनद्धशत्रु समूहोंसे दुर्गम्यहै ९ यहां प्रतापवान् महाशूर वीरमणिनाम राजा रहताहै व शिवसे रक्षितहोकर धर्म्मसे राज्यकरताहै १० जो प्रलय के कर्त्ता चन्द्रचूड़जी हैं वे भक्तिके वशीभूतहोकर अपनेभक्तका पक्ष पातकरतेहुये यहां सदा निवासकरतेहैं ११ इससे जो यहां घोड़ा पकड़ागयाहोगा तो महायुद्धहोगा इसलिये यत्नवान्होकर कटककी रक्षाकीजिये १२ सब भूपोंके शिरोमणि महायशवाले शत्रुघ्नजी ऐसा सुनकर सैन्यब्यूहबनाकर अच्छे प्रकार युद्धकरनेपर सन्नद्धहोकर स्थितहुये १३ व सुखपूर्व्वक आसनपर बैठेहुये मन्त्री से सम्मतकर-नेलगे इतनेमें युद्धका कौतुक देखनेकेलिये नारदजी आये १४ शत्रु-घ्नजीने तपस्याके निधि उन मुनिको आयेहुये देखकर आसनपरसे उठकर मुनिको उसपर बैठाकर मधुपर्कदिया १५ व स्वागतसे जब मुनिसत्तम नारदजी सन्तुष्टहुये तब वाक्योंके भेद जाननेमें परमच-तुर शत्रुघ्नजी वचनसे तृप्तकरतेहुये बोले कि १६ शत्रुघ्नजीनेकहा हे विप्रर्षे! हमारा अश्व इससमय कहां है हे महामते ! हमसे कहो य-द्यपि हमारे सेवक बड़े चतुरहैं तो भी यह नहीं जानते कि किधर घोड़ा गयाहै १७ हे तपोधन ! कहिये जिस किसी मानी क्षत्रियने ग्रहणकियाहो तो वहां फिर अश्व की प्राप्ति कैसे होगी १८ शत्रुघ्न जी का ऐसा बचन सुनकर बीणाबजातेहुये व बार २ श्रीराम-चन्द्रजी की कथा गानकरतेहुये नारदजी बोले कि १९ नारदजी ने कहा हे राजन् ! यह देवपुर है व यहांका महाराज वीरमणि नाम है बनमें ठहरेहुये उसके पुत्रने तुम्हारे तुरंगराजको पकड़ा है २० वहां आज तुम्हारा दारुण महायुद्धहोगा व बल शूरता समेत बड़े २ भारी वीर इसमें पतितहोंगे २१ इससे हे महाबल ! यहां पर तुम को बड़े यत्नसे ठहरना चाहिये व ऐसी व्यूहरचना रचाओ जो शत्रुके सैनिकोंको दुर्गमहो २२ हे राजन् ! इस राजासे तुम्हारा वि-जय होगा पर बड़े कष्टसे होगा क्योंकि चतुर्दश भुवनों में श्रीराम-चन्द्रजी को कौन पराजित करसक्ताहै २३ इतना कहकर नारदजी अन्तर्द्धान होगये व जाकर आकाशमें स्थित होकर देव दानवों के

समान दारुणयुद्ध देखने की इच्छा करने लगे २४ शेषजी ने कहा तब सब शूरशिरोमणि राजा वीरमणि ने अपनेपुरमें बड़े शब्दवाला जय का नगारा बजाने के लिये २५ महाबली रिपुवार नाम अपने सेनापतिको बुलवाया व मेघ गम्भीर बाणी से अति शीघ्र उससे कहा २६ कि हे सेनानी! हमारे शोभनपुर में डौंड़ी बजवादो जिसको सुनकर हमारे सुभट लोग सनद्धहो करके शत्रुघ्नसे युद्ध करने को अभी जायँ २७ राजा वीरमणि का ऐसा वचन सुनकर तब उसने बड़े घोरशब्दकी डौंड़ी बजवाई व पुकरवा दिया २८ घर २ व गली २ उसकी ध्वनि सुनाई देती कि इस राज पुरमें जो वीरलोग हैं सब अभी शत्रुघ्नसे युद्धकरने को जावें २९ जो वीरमानी चाहे पुत्रहों वा भाईहों पर राजाकी आज्ञाका उल्लंघनकरेंगे युद्ध करने को न जायँगे राजाकी आज्ञासे वे वधकरने के योग्य समझे जायँगे ३० हे वीरो ! फिर भी इस नगारे का शब्द सुनो व सुनकर बहुत शीघ्रकार्य्यंकरो विलम्ब न होनेपावे ३१ शेषजी ने कहा ऐसा नगारेकाशब्द सुनकर नरोंमें श्रेष्ठ वीर अतिवेग कवचादि धारण करके व समर के महोत्सवसे हर्षित चित्तहोके सब उत्तम राजाकेपासकोगये ३२ कोई तो शिरमें उत्तम कूण्डीधर केगये व सैकड़ों कोटिन कवच बख़्तर पहनकर शोभाके साथगये ३२ । ३३ सबके सब माणिक्योंसे व सब शासिबने हुये दो २ घोड़े जुतेहुये रथोंपर चढ़कर राजाके सन्देशसे प्रसन्नमनहो सब राजमन्दिर को गये ३४ कोई २ मतवाले हाथियों पर चढ़के व कोई २ सुन्दर घोड़ोंपर चढ़कर सब राजाके सन्देश के करने वाले गये ३५ सब पक्के सुवर्ण के कवच धारण किये थे व सब पुष्ट लोहेकी कुण्डियां शिरों पर धरे थे व रुक्माङ्गद भी अपने मनोवेग रथपर चढ़ा हुआ ३६ उस का छोटा भाई शुभांगद भी महारत्नमय कवच धारण किये अपने श्रेष्ठ रणस्थान को गया ३७ सब शस्त्रास्त्रोंके चलानेमें परमचतुर राजाका भाई वीरसिंहभी राजा की आज्ञासे शत्रुघ्नजी के संग युद्ध करने को गया ३८ व बलमित्र नाम राजा का जामात्र भी सन्नद्धहो कवच खड्गादि धारण करके राजमन्दिर को गया ३९ रिपुवार नाम सेनापति भी चतुरंगिणी

सेनाको तैयारकरके जाय राजासे उसने निवेदन किया ४० फिर सब शस्त्रास्त्रों के चलाने में परमचतुर राजा वीरमणि भी सब शस्त्रास्त्रों से पूरित श्रेष्ठ मणियोंसे बने हुये व ऊँचे पहियों वाले उत्तम रथपर चढ़े ४१ तब वीरोंका शब्द व शङ्खोंका निनाद सब ओर से सुनाई देने लगा वह जानोंकातरवीरोंको भी समरभूमि को भेजे देताथा ४२ अच्छे बाजे वालों से बजाईहुई तुरुँहियां सब ओर से बाजीं जो कि शमरमें जाते हुए राजाकी फौजों को समरकी ओर बुलारहीथीं ४३ सब चलने के समय स्वस्त्ययनकराकर भूषणादिकों से भूषितहुयेथे व सब शस्त्रास्त्रों से पूर्णहोकर समरमण्डलको गये ४४ नगारे व शङ्खों के निनादों से पहाड़ व कन्दरा पूरित हुए वह शब्द आकाश के निवासियों के बुलानेही के लिये स्वर्गमें पहुँचे ४५ उस कोलाहलके होने पर राजा वीरमणि समरके उत्साहसे युक्तहोकर रणमण्डलको गये ४६ व आकर रथ पैदरोंसे युक्त उस समुद्राकार वारापार रहित अपनी सेनाके बीचमें खड़े हुये मानों सबको उस सैन्यसागर से डुबवानेही का विचार करते थे ४७ ॥

चौ०। सबरथिगणकृतकोलाहलयुत । अस्त्रशस्त्रकोविदअरुरणनुत ॥
सैन्य बिलोकि शत्रुहन वीरा । बोले सुमति पाहिं रणधीरा १ । ४८
मम बाजीहर करन समरहू । भूपवीरमणि क्रोधकरतहू ॥
आयहु सैन्य लिये चतुरंगा । सकल किये वरवीरन ढंगा २ । ४९
किमिचाहियँयहिसँगरणकरना । कौन वीर संगर महँ टरना ॥
तिन ममवीरन कहो विचारी । जोवाञ्छितजयलहहिंकरारी३ । ५०
सुमति कहा स्वामी यह राजा । सकलसैन्ययुत रणमहँआजा ॥
है शिव भक्ति परायण भारी । समरकरनआवतो प्रचारी ४ । ५१
साम्प्रत समर करें यहि संगा । पुष्कल वीर धीर रण रंगा ॥
अन्यनील रत्नादिक योधा । परमयुद्ध कोविदहुसुबोधा ५ । ५२
आपशम्भुसँग वा नृपसंगा । द्वन्द्वसमर अति रंग विरंगा ॥
कियहुसमयपर जीत्यहुनीके । महाबली यद्यपि द्वौ ठीके ६ । ५३
यहिविधिभूप यहांजयहोइहि । संशयनहिं यामहँ सो रोइहि ॥
फिरजोरुचै करहुसो स्वामी । हम निजमतिअनुसारबदामी ७ । ५४

यह सुनिवचन शत्रुहनवीरा । रणरिपुमारण महँ जो धीरा ॥
आयसुदीन वीरगण काहीं । करिरणनिश्चयनिजमनमाहीं ८।५५
शत्रुचतुरनृपगण के संगा । युद्धकरन कहँ जाहु सुढंगा ॥
जिमिममतूर्णहोय जयसोई । करहु उपाय जाय मन जोई ९ । ५६
यहसुनिसबशत्रुघ्नजथार्त्थी । भये चले संगरके स्वार्त्थी ॥
परमउछाह किये मनमाहीं । सैन्यसहितचितकातरनाहीं १०।५७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेवीरमणिनासह
युद्धनिश्चयोनामचत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

दो० । इकतालिशयें महँ कह्यो पुष्कल अरु रुक्मांग ॥
परमयुद्ध पुष्कल विजय अरुताअजयविनांग १

शेषनाग वात्स्यायन मुनि से बोले कि अच्छे प्रकार सन्नद्धहो-कर शत्रुघ्नजी के महाबली वीरलोग शूरतासे युक्तहोकर वीरमणि के समर के मध्य में युद्ध करने के लिये जापहुँचे १ व पहुँचतेही बाणोंकी वर्षाकरने व सैनिकों का विदारण करने लगे यहां तक कि उस समर के बीच में इधर के सब धनुर्द्धरहीवीर दिखाई देनेलगे२ अनेक मणियोंसे बनेहुए रथ हाथी घोड़े मनुष्यमारेगये रणमण्डल में दिखाई दिये ३ जब अपनी ओरवालों को मारे जाते सुना तो महाबली रुक्मांगद नाम राजकुमार जिसने घोड़ाबांधा था वह म-णिमय रथपर चढ़ाहुआ युद्ध करने को आगे आया ४ व धन्वापर बाण चढ़ाये दो अक्षय तरकस धारण किये लालनेत्र किये महाकोप युक्त होनेसे महा भयङ्कर रूप दिखाई दिया ५ व पहुँचतेही उस ने भी अनेक बाणों से सहस्रोंवीरों को उद्विग्नकर दिया व बहुतों को हाहाकार कराता हुआ वह बली रणमें गया ६ व वह राजपुत्र अ-पने तुल्य बलवीर्य व शोभा से शोभित फिर उस महाबली ने पुष्कलवीर व शत्रुघ्नजी को पुकारा ७ रुक्मांगद ने कहा कि हे वीर! महा बल पराक्रम आओ मेरे प्रतापवान् व बलवान् राजपुत्र के संग युद्ध करो ८ अन्य कोटिवीर नरोंको भयभीत करने व मा-रडालने से क्या है मेरेसाथ महा युद्ध करके जयको लेओ ९ ऐसा

कहते हुये उसको देख हँसतेहुये पुष्कलवीर ने तीक्ष्ण बाण तानकर उसकी छाती में मारे १० उन बाणों को न सहकर उस राजपुत्र ने भी अपने धन्वापर बाण चढ़ाये व दशबाण पुष्कलवीर की छाती में मारे ११ दोनों समर करने में उद्यत व दोनों विजय की इच्छा किये हुये समर में कुमार व तारकासुरके समान शोभित हुये १२ तब पुष्कलवीर ने महातीक्ष्ण दशबाणों को धन्वापर चढ़ाकर राजपुत्रको विरथ करदिया १३ उनमें चारशरों से तो चारोघोड़े रथके मारडाले व दो बाणों से सारथिको नीचे गिराया एकसे उसकी ध्वजा काटडाली व दो से रथ के दोरत्नकों को मारा १४ व एक बाण राजपुत्रकी छाती में मारा यह अद्भुत कर्म्म देखकर सब वीर सन्तुष्ट हुये १५ वह धन्वाहत होने से व विरथ होने व सारथि घोड़ों के मारजाने से अत्यन्त कुपित होकर झट दूसरे रथपरचढ़ा १६ व बड़ाभारी अतिदृढ़ गुण पूरित धन्वा हाथ में लेकर सुन्दर घोड़ों से युक्त उत्तम रथमें बैठकर १७ पुष्कलवीरसे वह रुक्मांगद वीर यह वचन बोला कि हे परन्तप महा पराक्रम करके अब कहां जाते हो १८ अब बल से विनिर्म्मित हमारे भी पराक्रम का कर्म्म देखो हे वीर! यत्नसे स्थिररहो तुम्हारे रथको आकाशको पहुँचाता हूं १९ ऐसा कहकरअत्युग्र बाण अपने धन्वापर चढ़ाया व मंत्रित करके भ्रामकास्त्र पुष्कल बीर के रथ में २० मारा वह बाण अति तीक्ष्ण था व सुवर्णकी फोंक से शोभित था उस बाण के लगने से वीरपुष्कलजी का रथ चारकोश में गया २१ पृथ्वीपर घूमा यद्यपि सारथि बड़ी दृढ़ता से आड़ेरहा व बड़े कष्ट से फिर उस स्थानपर पहुँचा तब परमास्त्रवेत्ता पुष्कलजी २२ अपने धन्वापर बाण चढ़ातेहुये यह वचन उस बीरसे बोले कि हे बीराग्रय अब तुम स्वर्ग को प्राप्तहोओ जिसकी सेवा सब देवलोग करते हैं २३ क्योंकि तुम्हारे सदृश उत्तम राजा लोग पृथ्वी पर रहने के योग्य नहीं होते हैं तुम तो इन्द्र के साथ रहने के योग्य हो इस से देवलोक को जाओ २४ इतना कहकर आकाश प्रापक महा अस्त्र छोड़ा उस बाणके लगतेही उसका रथ सीधे आकाशको उड़ा चलागया २५

व सब लोकों को नांघताहुआ वह सूर्य्य के मण्डल में चलागया व सारथि अश्व समेत वहरथ वहां सूर्य्यकी ज्वालासे जलगया २६ व राजकुमारके भी बहुतसे अंग सूर्य्यके किरणोंसे जलगये इससे बहुतही दुःखित हुआ व दुःखनाशक चन्द्रचूड़ महादेवको हृदय में धारणकरके २७ आप बिनारथका पृथ्वीपरगिरपड़ा व किरणों से जलेहुये शरीरसे युक्त व अत्यन्त दुःखयुक्त होकर रणभूमिमें मूर्च्छित होकर पड़ा २८ जब पृथ्वीपर गिरकर राजपुत्र मूर्च्छित होगया तो उस संग्राम में बड़ाभारी हाहाकारहुआ २९ शत्रुके बिजयकी लक्ष्मी पुष्कलजीके सम्मुख आई घोड़े के रक्षकशत्रु भागखड़े हुये ३० उस समय अपने बीरपुत्रको मूर्च्छितजानकर बीरमणि राजा कोप से पूरितहोकर पुष्कलके संग युद्ध करनेको आया ३१ तब सब वन पर्व्वतसहित वहांकी भूमि चलायमानहुई शूरलोगहर्षितहुये व कातरलोग भयभीतहुये ३२ राजा बड़ाभारी धन्वा व दो अक्षय तरकस धारण किये आया रोषसे ऊर्ध्व श्वास लेतेहुये उसने बैरी पुष्कलजी को पुकारा ३३ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेरुक्माङ्गदपराजयपुष्कल बिजयोनामएकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥

बयालीसवां अध्याय ॥

दो० । बयालिशें महँ बीरमणि अरु पुष्कल कर युद्ध ॥
जहँ मूर्च्छित भो बीरमणि करि बहुरण ह्वै क्रुद्ध १

शेषनाग वात्स्यायन मुनि से बोले कि महासैन्य समुद्र में खड़े हुये राजा बीरमणिको पुष्कलबीर को बुलाते हुये देखकर कपीन्द्र हनुमानूजी उधरको दौड़े १ पूँछ ऊपरको उठाकर व बिशाल देह करके गर्जतेहुये मेघके समान शब्द करके रणमें स्थित अन्यबीर बरोंको लतियाते मारते कूटते पीटते हुये श्री हनुमानूजी उस बीर मणि राजाके सम्मुख जा पहुंचे २ हनुमानूजी को आतेहुयेदेखकर उद्भट पुष्कलबीरने बैरीके ऊपर क्रोध करनेके कारण अरुण नेत्रसे उनकोदेखा ३ व परमास्त्र जाननेवाले पुष्कलजी मेघकेनादके समान बाणीसे रण मण्डलको नादित कराते हुये बोले कि ४ पुष्कलजीने

कहा हे महाकपे ! इसमें युद्ध करने के लिये तुम क्यों आये यह राजा वीरमणिकी थोड़ीसी सेना कितनी है ५ जहां कहीं तीनोंलोक युद्ध करनेको इकट्ठे होकर आवें वहां तुम लीला पूर्वक युद्ध करनेकेलिये जो चाहोतो जाओ न चाहो तो न जाओ ६ यह राजा वीरमणि क्या है व इसका यह अल्प सैन्यक्याहै हे वीर! यहां तुम्हारा आगम उचित नहीं हुआ ७ क्योंकि श्री रघुनाथ जी की कृपा कटाक्षसे इस दुस्तर सैन्य सागरको एक क्षणमें निस्तीर्णहोकर हे कपीश ! अभी हम आते हैं आप संग्राम के विषय में चिन्ता न करें ८ रामचन्द्रजी की कृपाकी अधिकतासे आपतो राक्षस समुद्रको उतरआये ऐसेही रामचन्द्र जीका स्मरण करके हमभी इस दुस्तर सैन्यसागरको उतरआवेंगे९ जो कोई दुस्तरको पाकर रघुनाथजीका स्मरण करतेहैं उनके दुःखकासमुद्र सूखजाताहै इसमें कुछ सन्देह नहीं है १० इससे हे वीर! हे बलवन् ! तुम अब शत्रुघ्नजी के समीपजाओ हम अभी क्षण मात्र में वीरमणि राजाको जीतकर आतेहैं ११ शेषजी ने कहा पुष्कल की कही हुई ऐसी धीरवाणीको सुनकर वीरहनुमान्जी फिर पुष्कल से बोले कि १२ हनुमान्जी ने कहा हे पुत्र! राजावीरमणिके विषय में ऐसा साहस न करो क्योंकि यह राजा बड़ा दाता व शरण्य और बलवीर्य से युक्तहै १३ तुम बालकहो व राजा वृद्धहैं व सम्पूर्ण शस्त्रास्त्र चलाने आदिमें कोविद हैं इन्होंनेसमरमें शूरतासे शोभित अनेकवीरों को जीतलियाहै १४ व इनकेपास सदाशिवजीको सदा रक्षक जानो भक्तिसे वश कियेहुये पार्वती जी सहित महादेवजी को इनके पुरमें बसे समझो १५ इससे हे पुष्कल ! इस राजासे हम लड़ेंगे तुम और वीरोंको जीतकर अच्छी कीर्ति लेना १६ पुष्कलबोले इन्होंने शिवको अपनीभक्ति से वशकरके अपनेपुर में लाकर बसालियाहै परंतु इन के हृदयमें महादेवजी नहीं रहते १७ सदाशिवजी जिन रामचन्द्रको आराधनकरके परमस्थानको पहुंचे हैं वे रामचन्द्रजी हमारे मनको छोड़करकहीं जातेही नहीं हैं हमारेमनमें सदा टिकेरहते हैं १८ फिर जहां रामचन्द्रजी रहतेहैं वहीं सबविश्वम्भर रहताहै क्योंकि वे चराचर सबमें व्याप्तरहतेहैं इससे हम इनवीरमणिको जीतेंगे १९ तुम अन्य

अभिमानी राजाओं के संग जाकर युद्ध करो वा बीर सिंहादिकों के संग समर करो हे प्रभो ! हमारी चिन्ता न करो २० ऐसी धीरधीरतायुक्त पुष्कलकी बाणी सुनकर हनुमान्जी राजाके भाई बीरसिंह के साथ समर में युद्ध करने को गये २१ और लक्ष्मीनिधिजी शुभांगद नाम राजाके पुत्रसे द्वन्द्वयुद्ध करतेथे जो कि महाशस्त्रास्त्र चलाने का वेत्ताथा २२ व अपने प्रताप और बलसेयुक्त सुभटवीर बलमित्र के साथ लड़ते थे ये सुभट राजा शस्त्रास्त्रोंके संग्राम के बिचारमें बड़े ही चतुरथे २३ व रथपर चढ़े हुये राजा को बुलाते हुये देख कर पुष्कलजी सुवर्ण खचित रथपर चढ़कर युद्ध करने के लिये राजा बीरमणि के सम्मुख हुये २४ युद्धमें परम कोबिद पुष्कलजीको आये हुये देखकर राजाबीरमणि रणके मध्य में सुन्दर निर्भय बाणी से बोला कि २५ बीरमणि बोला हे बालक ! संग्राम में अत्यन्त कोप करने वाले हमारे सामने न आवे जा अपने प्राणों की रक्षाकर हमारे संग युद्ध न कर २६ तुझसे बालकों के ऊपर हम से राजालोग कृपा करते हैं ऐसों के ऊपर प्रहार नहीं करते इस से रणसे बाहर निकल जा २७ हम ने जानों नेत्रों से तुझे देखाही नहीं तब तक तू चला जा इस समय तेरेऊपर प्रहार करने को हमारा मन नहीं होता २८ व जो तूने बाणों से विदीर्ण करके हमारे पुत्र को मूर्च्छित कर दिया है सो सब हमने बाल बुद्धि वाले तेरेकर्म्मपर क्षमाकी २९ राजाका ऐसा वचन सुनकर पुष्कलजी उस से बोले पुष्कलजी ने कहा कि हां हम बालकहैं व तुम सब शस्त्रास्त्रों के चलाने में परमचतुर व महावृद्धहो ३० परन्तु क्षत्रियों का मत यह है कि जो बलकी अधिकता से युद्धहों वेही वृद्ध व राजाओं के अग्रगण्यहैं अवस्था से जो वृद्धहो गयेहों वे वृद्ध नहीं कहाते ३१ हमने अपने बल व शूरता से दर्पित तुम्हारे पुत्रको मूर्च्छित कर दियाहै अब इस समय तुम को महातीक्ष्ण बाणों से समर में निपातित करते हैं ३२ इस से हे राजन् ! तुम संग्राम में यत्न से खड़े रहो हम रामचन्द्रजी के भक्तहैं इस से हमको कोई नहीं जीतसक्ता चाहे इन्द्र के स्थानपर क्यों न स्थित हो ३३ इस प्रकार पुष्कल का कहाहुआ सुनकर राजाओं

में आगे गिनने के योग्य वीरमणि कोपकरके इस लड़केको देखकर हँसा ३४ उस राजाको कोपित देखकर महा उन्मद भरतजी के पुत्र पुष्कलजी ने राजा के हृदय में अति तीक्ष्ण बीसबाण मारे ३५ पुष्कलजी के छोड़े हुए उन बाणों को आते हुये देखकर राजा हृदय में अत्यन्त क्रुद्धहुआ इस लिये तीक्ष्ण बाणों से काट दिया ३६ शत्रुनाशक पुष्कलजी बाणों का कटना देख के हृदय में बड़ा कोप करके तीन बाण राजाके ३७ मस्तक में मारे भरतजी के पुत्र पुष्कलजी के चलाये हुए बाण राजाकी देहमें मानो त्रिकुटा चलके शिखरों की तुल्य शोभित हुए ३८ उन बाणों के लगने से व्यथित होकर राजा ने बड़ा कोप करके पुष्कलजी की छाती में नौ बाण मारे उन बत्सदन्त बाणों ने पुष्कलजी का बहुत शोणित पिया ३९ व वे विषधर सर्पों के समान जाकर पुष्कलजीके शरीर में घुसगये व तब तो परम कोप युक्त होकर फिर पुष्कलजी ने ४० सौ महा तीक्ष्ण बाणों से राजाको मारा उन बाणों से राजाका कवच व मुकुट कटगया व उस के नीचेकी कुण्डीभी कटगई ४१ रथ धन्वा सब छिन्न भिन्न होगये तब राजा बहुत क्रुद्धहुआ राजाके शरीर में इतने बाण लगे कि बनाय छिन्न भिन्न होगया व रुधिर से बनाय सराबोर होगया ४२ तब फिर अन्य रथपर चढ़के पुष्कलजी के सम्मुख आया व बोला कि हे वीर! धन्यहो व रामचन्द्रजी के चरण कमल के भ्रमर हो ४३ तुम ने आज महा कर्म किया जो हमको विरथ करदिया अब हे वीर! अपने प्राणों की रक्षाकरो क्योंकि हमारे युद्ध करने में ४४ अब तुम्हारे प्राण सुलभ नहीं हैं क्योंकि हम काल रूपही स्थित हैं ऐसा कहकर सब शस्त्रास्त्रों के चलाने में परमचतुर उस राजा ने असंख्य बाण चलाये ४५ यहांतक कि पृथ्वीपर व दिशाओं में सब बाणही बाण दिखाई देने लगे उन से अनेक सहस्रों हाथी छिन्न भिन्नहोगये व अनन्त घोड़े मरगये ४६ सवारों सहित रथ छिन्न भिन्न होगये व शोणितकी नदी वहां रणभूमि में बह चली ४७ जिस में केश तो स्यवार के समान उन्मत्त हाथी पहाड़ों के कंगूरों की तुल्य दिखाई देते ४८ मुदरियों की शोभा से युक्त

वीरों के अनेक हाथ छिन्न भिन्न होगये थे वे चन्दन से भूषित सर्पाकार बहेचले जाते थे ४९ व भटों के शिर कच्छप से विदित होतेथे बड़े २ बीरोंकामास कीचकी तुल्य ५० ऐसा होनेपर सैकड़ों योगिनियां दिखाईदेनेलगीं व रणमें पतित प्राणियोंका रुधिर पात्रों में करके पीनेलगीं ५१ व हर्ष कौतुक के साथ मांस वे खानेलगीं रुधिर पीकर व मांसखाकर सब योगिनियां उन्मत्त होगईं ५२ इस-लिये समरभूमिमें नाचने हँसने व ऊंचे स्वरसे गाने चिल्लाने लगीं व उस समरमें पिशाच लोग प्राणियों के मस्तक५३ दोनोंहाथों से लेकर तालके साथ बजानेलगे व रणांगणमें पड़ेहुयेलोगोंका महा-मांस५४ खाकर शृगालियां मत्तहोकर शब्दकरनेलगीं जिसको सुन-कर कातरोंको महाभय होनेलगा डरपोंकलोग भयभीतहोकर मरे हुये हाथियोंकी आड़में जाकरछिपे ५५ पर वहां उनको योगिनियों ने भक्षण करलिया पापियोंकी स्थिति कहीं नहीं होती ऐसा अपनी सेनाका कदन देखकर रथाग्रणी ५६ पुष्कलजीनेभी रणभूमिमें शत्रु की सेनाका कदनकरदिया ऐसी बाणावरीकी कि हाथियोंके शिर विदीर्ण होगये गजमुक्तायें उनमेंसे गिरपड़ीं ५७ व लोमोंसे पूर्ण होकर ताम्रपर्णी नदीकेसमान रुधिरकी नदियां दिखाई देनेलगीं पुष्कलके मारेहुये बाण मनुष्योंके अंगोंमें घुसकर बीर प्राणियोंके भी प्राणोंकोनिकालकर बाहर करनेलगे ५८ व सबलोग रुधिर से भीगेहुयेअंग व सब अंगकटेहुये सुभटलोग रणभूमि में फूलेहुये टेसूकेवृक्षकेसमान दिखाईदेतेथे ५९ इसीसमयमें फिर अतिक्रुद्ध होकर राजाको पुकारकर पुष्कलबीर रणधीरने रोषसमूहसे युक्तहो-कर राजाके बहुतबाणमारे ६० उनबाणोंसे ताड़ितहोनेसे राजाके अंग भिन्नहोगये व कवच रत्ती २ विशीर्णहोगया तब राजाने पु-ष्कलको महाबली मानकर किरोड़ों बाण टरपटक पुष्कलजीकेमारे ६१ उनबाणोंकेलगने से कवचरहित होकर रुधिरबहताहुआ शरीर पुष्करजीका उत्तम शरपञ्जरके बीचमें होगया ६२ तब शरपञ्जरके मध्यमें रहनेसे ऐसा मन विह्वलहोगया कि श्रीभरतकुमारजीको बाणलेने व चढ़ाने चलानेकी सामर्थ्य न रही ६३ फिर रामचन्द्र

जीका स्मरणकर धन्वाहाथमेंलेकर प्रत्यञ्चाचढ़ाकर उन महाभटने बैरिवृन्दोंके निवारणकरनेवाले तीक्ष्णबाणचलाये ६४ उन बाणोंसे उस शरपंजरसे छूटकर हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! पुष्कलजीने समरमें शङ्ख बजाया व निर्भयहोकर राजासेकहा ६५ पुष्कलजीने कहा कि हे बीर! तुमने महाकर्म्म किया जोकि बीरोंके ताप न करनेवाले महाउद्भट वीर हमको शरपंजरके भीतर करलिया ६६ सो वृद्धहोनेकेकारण योंतो तुम हमारे मान्यहो परन्तु इससमय रणमण्डलमें हे बीरमणि! हे राजन्! हमारा बड़ाभारी पराक्रम देखो ६७ हे बीर! जो हम तीन बाणोंसे तुमको मूर्च्छित न करदें तो सबबीरोंकी विमोहिनी हमारी प्रतिज्ञा सुनो ६८ गंगाजीकोपाकर भी जो उन पापहारिणीकी निन्दा करके महापापकारी व महामूढ़ विचेष्ठित उनमें स्नान नहीं करता ६९ उसका पाप हमकोहो जो तुमको रणमण्डलमें मूर्च्छासे पतित न करदें इससे हे बीर! सन्नद्धहोओ ७० पुष्कलका यहवाक्य सुनकर नृपोत्तमबीरमणिने बड़ाक्रोधकरके उद्विग्नहोकर तीक्ष्णबाण चलाये ७१ वे बाण पुष्कलजी के हृदयको भेदनकरके पारनिकलगये व जाकर नीचे पृथ्वीपरगिरगये जैसे कि रामचन्द्रजीकी भक्तिसे बि-मुखलोग नीचेनरकमें पतितहोते हैं ७२ तब राजाकी कपाटकेसमान चौड़ीछातीमेंहींककर एकतीक्ष्णबाण पुष्कलजीने मारा जोकि अग्नि के समान प्रज्वलितहोरहाथा ७३ उसबाणको राजाने अपने बाणसे काटकर दोखण्ड करदिया वह रथकेमध्यमें वैसाही सूर्य्यमण्डलकी तरह प्रज्वलित गिरपड़ा ७४ ॥

चौ०। मातृभक्तिभवपुण्यसुनीकी । अपरबाणपर धरिकरिठीकी ॥
दीनचलाय भरत सुत बीरा । परस्वउकाटयहु तिनरणधीरा १। ७५
तबह्वै खिन्नहृदय रघुनन्दन । अबकर्त्तव्यकाहकिय चिन्तन ॥
निजदुखहरणसुमिरिश्रीरामहिं। बाणअपरछोड़्यहुगुणधामहिं २। ७६
विषसमानसो बाणमहाना । नृपउरलग्यो न तनिकभुलाना ॥
मूर्च्छितकीन महीपतुरन्ता । अग्निसमानज्वलितगुणवन्ता ३। ७७
तब हाहाकरि रिपुदलभागा । तजिकै भूपकेर अनुरागा ॥

जबमूर्च्छितभोनृपतत्रभयऊ । बिजयीपुष्कलरणजयलयऊ ४।७८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेवीरमणेपराभवोनाम द्विचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४२ ॥

तैंतालीसवां अध्याय ॥

दो० । त्यैंतालिशयें महँ समर पुष्कल रिपुहन दोय ॥
वीरभद्रशिवसँग प्रबलकरि जो करिहि न कोय १
परमूर्च्छितभे सुभटद्वौ पुष्कल रिपुहन वीर ॥
तिन्हें रक्षि हनुमान तब आयहु अतिरणधीर २

शेषनाग वात्स्यायन मुनिसे बोले कि पुष्कलके लगसे जाकर हनुमान्जी वीरसिंहसे यह बचन बोले कि हे वीर! कहां जातेहो ठहरो एक क्षणमात्रमें तुमको हम जीतते हैं १ वानरसिंहका ऐसा महावचन सुनकर कोपसमूहसे परिपूर्णहोकर मेघसमान शब्दकरते हुये धन्वाको उसने लिया २ व नादकरके तीक्ष्ण घोरबाणों को चलाताहुआ वीरसिंह ऐसा शोभितहुआ जैसे आषाढ़में मनोहर धाराछोड़ताहुआ मेघ शोभितहोताहै ३ उनबाणोंको अपनी देह में लगेहुये देखकर अंजनीके पुत्र हनुमान्जी ने अत्यन्तकोपकिया ४ व वज्रकेसमान सारवाला एक मूका तानकर उसकीछातीमेंमारा वह वीर मूका के लगने से धरणी पर भहरा पड़ा ५ व मूर्च्छित होगया तब अपने चचा को मूर्च्छित देखकर शुभांगद व मूर्च्छा जगने के कारण रुक्मांगद भी रण मण्डल में आया ६ व दोनों दो महा गर्जने वाले बादरों के समान बाणों की वर्षा रणमें करने लगे व बहुत लोगों का कदन करके आय हनुमान्जी पर पहुँचे ७ उन दोनों वीरों को समरमें आये हुये देखकर कपीश्वरजी ने पूंछ से रथ बाण बाहन सारथि सहित दोनों को लपेटकर ८ पृथ्वीपर पटक दिया कि दोनों मूर्च्छित होकर गिरपड़े व निश्चेष्ट होगये अंगों से रुधिर बहने लगा ९ व वहां बल मित्रने बहुत काल तक समर करके सुमद नामको मूर्च्छित किया क्योंकि बहुत से सुमद ने बाण उसके खाये १० परन्तु पुष्कलजी ने आकर एक क्षणमात्रमें बलमित्रको मू-

च्छित करदिया इससे उसे मूर्च्छा क्या अचैतन्यताही आगई बस वीर नाशक शत्रुघ्नजी की सेना ने जय पाया ११ तब श्रेष्ठ रथपर चढ़कर महादेवजी दिव्य धन्वापर टंकोर देते हुये इधर के भटोंपर दौड़े १२ जिनके कि जटाजूट में चन्द्रमाकी रेखा चमकती थी मन को हर्ष कारक सर्प्प सब भूषण बने थे व जो आजगवनाम धन्वा धारण किये थे १३ अपने जनों को सम्मूर्च्छित देखकर भक्तों के दुःख नाशने वाले महेश्वरजी शत्रुघ्नजी के भटों से शोभित महा सेनाके संग युद्ध करने को आये १४ सो आपही नहीं अपने गणों को व परिवार वालों को भी संग लाये जैसे कि भक्तों की रक्षाके लिये पृथ्वी को कँपाते हुये पूर्व्वकाल में त्रिपुरके ऊपर चढ़े थे १५ कोपसे अति लालनेत्र किये थे जैसे कि प्रलय समय में करते हैं बड़ी कड़ी दृष्टि से देखते हुये देवताओं से बन्दित शिवजी आये १६ उन महादेव जी को आये हुये देखकर बली शत्रुघ्नजी उन के संग युद्ध करने के लिये समर भूमि में गये यद्यपि वे बहुत देवोंके शिरोमणि थे १७ शत्रुघ्नजी को आये हुये देखकर पिनाक धारण किये हुये धन्वापर चाप चढ़ाये हुये शिवजी परम कुपित होकर बोले कि १८ श्रीरामचन्द्रजी के चरणों की सेवासे पुष्कल ने महा कर्म्म किया जो कि समर में हमारे भक्त को मार कर फिर चला गया १९ आज अबपरमास्त्र जानने वाला वह पुष्कलवीर कहांहै हम उस भक्त पीड़क को समर में मारकर तब सुख पावेंगे २० शेषनागजी बोले कि यह कह कर उन्होंने वीरभद्र नाम अपने गणको पुष्कल से युद्ध करनेको भेजा व कहा कि तुम हमारे सेवक के अर्द्दन करनेवाले पुष्कलसे युद्ध करनेको जाओ २१ व नन्दीको महाबली हनुमान्जी से समरकरनेको भेजा व प्रचण्डको कुशध्वजके साथ व भृंगी को राजा सुबाहु के संग को भेजा २२ चण्डको सुमद के साथ इस प्रकार अपने गणोंको आज्ञादी पुष्कलने देखा कि शिवके महागण वीरभद्र आतेहैं २३ इसलिये प्रसन्न होकर वेभी युद्ध करने के लिये आगे बढ़े व पहुँचतेही उन के पांच बाण पुष्कलने मारे २४ उन बाणों से छिन्नगात्र होकर वीरभद्र ने त्रिशूल हाथ में लिया परन्तु महाबली पुष्कल क्षण मात्रही में

उसे अपने बाणसे काटकर गर्जे २५ अपना त्रिशूल टूटा देखकर रुद्रजी के बली अनुचर वीरभद्र ने खट्वांग से पुष्कलजी के मस्तक में मारा २६ व खट्वांगसे हत होने पर एक क्षणमात्र को पुष्कलजी मूर्च्छित हुये व फिर मूर्च्छा को छोड़कर परमात्म वेत्ता पुष्कलजीने २७ वीरभद्र के हाथ ही में स्थित खट्वांग को अपने बाणसे काट डाला जब हाथ में लियेही लिये खट्वांग कट गया तो वीरभद्र २८ परमक्रुद्ध हुये व पुष्कलजी के रथको छिन्नभिन्न कर दिया वीर पुष्कलकारथ तोड़कर उन को पैदर करके २९ महात्मा पुष्कल के साथ बाहुयुद्ध से युद्ध करने लगे पुष्कलजी ने भी वीरभद्रसे तोड़ेहुये रथको तुरन्त छोड़कर ३० वीरभद्रको मुष्टि से ताड़ित किया ऐसे महाबलथे दोनों एकमेंलपटकर एकदूसरेको मूठों जांघों व फीलि-योंसे मारनेलगे ३१ दोनों एक दूसरे के बधकरने में युक्त व दोनों अपने २ विजयमें उद्यतथे इसप्रकार चाररात्रिदिन बराबर दोनों जनोंसे लत्तामुक्कीकायुद्ध होतारहा ३२ उनमें कोई महाबली न जी-तहीसका न कोई हीनहीपड़ा पांचयेंदिन महाबली वीरभद्र ३३ महाबीर पुष्कलको लेकर आकाशको उड़गये वहां दोनों का ऐसा युद्धहुआ कि जिससे देवता व असुरदोनों विमोहितहुये ३४ अति तीक्ष्णमुष्टियों व चरणोंकेघात बार २ होते रहे तब अत्यन्त कुपित होकर पुष्कलजीने वीरभद्रको ३५ गलापकड़कर पृथ्वीपर पटक दिया उस प्रहारसे व्यथितहोकर महाबली वीरभद्रने ३६ पुष्कल जीका पैरपकड़कर बहुतघुमाया व बड़े बलसे पृथ्वीपर पटकदिया ३७ व त्रिशूलसेज्वलित कुण्डलसहित पुष्कलवीरकाशिरकाटडाला इसप्रकार पुष्कलकोमारकर महाबली वीरभद्र बहुतगर्जे ३८ व गर्जतेहुये उन्होंने सब भटोंकोत्रासितकिया समरमें पुष्कलकेपति-तहोनेपर महाहाहाकारहुआ ३९ व रणमें कोविद सबजनत्रासको प्राप्तहुये व सबों ने जाकर शत्रुघ्नजी से कहा कि पुष्कलजी रणमें पतितहुये ४० व महादेवकेगण वीरभद्रने पतितकिया महाबीर रणधीर भी शत्रुघ्नजीथे पर पुष्कल राजकुमारकाबध रणमें सुन-कर ४१ समरमें अत्यन्त दुःखितहुये व मारेशोकके थर २ कांपने

लगे शत्रुघ्नजीको ऐसे दुःखित जानकर महादेवजी यह वचन ४२ पुष्कलके मारजानेकेकारण अतिशोचकरतेहुये शत्रुघ्नजीसेबोले कि रे अतिमहाबल शत्रुघ्नरणमें शोक न कर ४३ क्योंकि वीरोंकारण में निपातहोना कीर्त्तिके लिये होताहै यह पुष्कल नाम वीर धन्यहै जिसने पांचदिनतक ४४ महाप्रलयकारी वीरभद्रके साथ युद्धकिया जिसवीरभद्रनेहमाराअपराध कियेहुये दक्षप्रजापतिको क्षणमात्रहीमें मारडाला ४५ व जिसने क्षणमात्रमें त्रिपुरासुरकी सेनाके अनेकदैत्यों कोमार डाला इससे हे महाबलराजेन्द्र!शोकछोड़कर युद्धकरो ४६ हे वीराढ्य!हम योद्धाकी विद्यमानतामें यत्न से सँभरकर खड़ेहोओ तब शत्रुघ्नजीने शोककोछोड़दिया व महादेवजी केऊपर क्रोधकिया ४७ व धन्वापर बाणचढ़ाकर शङ्करजीकोमारा उन बाणोंने शिवजी के चरणसेलेकर शिरपर्य्यन्त सर्व्वांगमें घावहीघावकरदिये ४८ भक्त की रक्षाकेअर्थ आयेहुये महादेवजीको ऐसा किया यह बड़ा आश्चर्य्यहुआ व इधरसे शत्रुघ्नजीके और बाण चले व उधरसे शङ्करजीके सब जाकर आकाशमें स्थितहुये ४९ व उनसे सब विश्व भरगया दोनोंओरसे विश्वभरमें इधर उधरके बाणोंसे युद्धहोने लगा उसको सब कहीं देखकर ५० लोगोंने लोकसंहार कारक व सर्व्वमोहन प्रलयमाना व आकाशमें अपने २ विमानोंपर चढ़कर सब देवगणआये ५१ व दोनोंजनोंका ऐसा दारुणयुद्धदेखकर दोनों जनोंकी प्रशंसाकरनेलगे कि ये तो तीनोंलोकों की उत्पत्ति व प्रलय के करनेवालेहैं ५२ व ये भी महाराजाधिराज रामचन्द्रजी के छोटे भ्राताहैं नहीं जानते यह क्याहोगा व भूमण्डलपर कौन जीतेगा ५३ व पराजयकोधों कौनवीर संग्रामभूमिमें प्राप्तहोगा इसप्रकार ग्यारह दिन तक ऐसा भयङ्करयुद्ध परस्पर होतारहा ५४ बारहेंदिन राजाशत्रुघ्नजीने क्रोधसे युक्तहोकर महादेवजीके बधकरनेके लिये ब्रह्मास्त्र चलाया ५५ तब वैरी शत्रुघ्न के चलायेहुये महाअस्त्रको जानकर हँसतेहुये महादेवजी ने उनके छोड़ेहुये ब्रह्मशिरोनाम अस्त्र को पीलिया ५६ तब तो शत्रुघ्नजी अत्यन्त बिस्मयको प्राप्तहुये कि अब इसके पीछे हमको क्या करना चाहिये ऐसा बिचारकरतेहुये

शत्रुघ्नजी के हृदयमें अग्निसमान प्रकाशित ५७ बाण अतिशीघ्र देवदेव शिरोमणि रुद्रजीने गाड़दिया उसबाणसे शत्रुघ्नजी रणमण्डलमें मूर्च्छितहोगये ५८ ॥

चौ० । भटसेवितसबकटकमझारी । हाहाकारभयहुअतिभारी ॥
वीररुद्रगणसों सब वीरा । पतितभये महिपर रणधीरा १ । ५९
सुमद सुबाहु आदि सब जेते । रुवबल विदर्पितथे सब तेते ॥
मूर्च्छा पीड़ित पतित विलोकी । रिपुहनको सब भये सशोकी २ । ६०
मूर्च्छित पुष्कल कहँ रथऊपर । थापित रक्षित करिरणभूपर ॥
आयहु समर करन हनुमाना । शिवसंहारक सों बलवाना ३ । ६१
सुमिरत रामचरण मनमाहीं । निजजन हर्षित करत तहां हीं ॥
अतिरोषितलांगूलकँपावत । तीव्रकोपनिजशिवहिंदिखावत ४ । ६२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेपुष्कलशत्रुघ्नपराजयो नामत्रिचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

दो० । चवालिशें महँ पवनसुत अरु शिवयुद्ध अपार ॥
जहँ प्रसन्न ह्वै समरसों वर हर दीन उदार १
पुनि द्रोणाचल लेनगे क्षीर जलधि हनुमान ॥
तहँ मारे बहु देवगण प्रेरित इन्द्र महान २

शेषनाग वात्स्यायनमुनि से बोले कि समर भूमि में शिवजी के समीप आकर हनुमान्वीर सुरोंकेअधिप शङ्करजी के संहार करने की इच्छा से उन से बड़े ऊंचेस्वरसे बोले कि १ हनुमान्जीने कहा हे रुद्र ! तुम ने जिससे आज धर्म्म के प्रतिकूल आचरण किया है इससे श्रीरामभक्तों के बध में उद्यत तुम को हम शिक्षादेनी चाहते हैं २ हमने पूर्व्वसमय वेदमें ऋषियों से बहुधा कहते सुना है कि पिनाकधारी शिव सदा श्रीरघुनाथ जी के पदोंकेस्मारी हैं ३ सो सब मिथ्याहुआ क्योंकि तुम ने शत्रुघ्नजी के संग युद्धकिया हमारे पुष्कलवीर को मारा व शत्रुघ्नजी को भी मूर्च्छितकिया ४ इस से त्रैलोक्य के प्रलय करने पर उद्यत तुम को आज हम पातित करते

हैं हे रामभक्ति से पराङ्मुख! शिव अब सँभरकर खड़ेहोओ ५ शेष
जी बोले कि ऐसा कहते हुये हनुमान् जी से वे महेश्वर जी बोले
कि हे वीरवर्य्य! तुम धन्यहो आप मिथ्या नहीं कहतेहैं ६ सुरासुरों
से नमस्कार किये गये हुये ये श्रीरामचन्द्रजी हमारे स्वामीहैं उन्हीं
के घोड़े को शत्रुवीरों के संहार करने वाले शत्रुघ्न वीर लाये ७ व
उन्हों ने हमारे भक्तों को मारडाला उन अपने भक्तोंकी भक्ति के
वशीभूत हम उनकी रक्षाके लिये यहां आये क्योंकि यह स्थिति है
कि जैसे कैसे बने अपने भक्तकी रक्षाकरनी चाहिये ८ सो कृपा
करके श्रीरघुनाथ जी अपने भक्त के दुःख से किञ्चित् कोप कियेहुये
हम निर्ल्लजको देखें ९ शेषनाग जी बोले कि शिवके ऐसे कहतेही
हनुमान् जी अत्यन्त कुपित हुये व एक बड़ी भारी शिला उठाकर
उन के रथ पर बल से पटकदिया १० उस शिला से ताड़ित होने
से उन के रथ के खण्ड २ होगये सारथि घोड़े पताकादि सहित
वह रथ चूर्णीभूत होगया ११ तब आकाश में ठहरेहुये देवगणों
ने कपीश्वरजी की बड़ी प्रशंसाकी व कहा कि हे वानराधीश! तुम
धन्यहो क्योंकि तुम ने महा कर्म्म किया १२ तब श्री शिवजी को
विरथ देखकर नन्दीश्वर उन के पास दौड़आये व श्री महादेवजी
से बोले कि अब हमारी पीठपर चढ़ो १३ तब बैल के ऊपर चढ़े
हुये महादेवजी को देखकर हनुमान् जीने अत्यन्त कोप किया व
अति शीघ्र एक शिला उखाड़कर शिवजी के हृदय में तानकर
मारा १४ उस से मारे हुये भूतपति जी ने त्रिशूल हाथ में लिया
जोकि तीन शिखायुक्त अग्निके समान प्रज्वलित होने से जाज्वल्य
मान हो रहाथा १५ उसे अपने ऊपरको आतेहुये देखकर यद्यपि
वह अग्नि के समान प्रकाशितथा पर हाथ से पकड़ कर हनुमान्
जी ने तोड़कर तिल २ करडाला १६ जब एक क्षणमात्रही में क-
पीन्द्र ने त्रिशूल को तोड़डाला तो तब शिवजी ने सब लोहे की
बनी हुई शक्ति हाथ में लेकर चलाया १७ वह शिवकी चलाई हुई
शक्ति धीमान् कपीन्द्र जी के हृदयमें जाकर लगी इस से वानरा-
धीश्वर एक क्षणमात्र विक्लव होगये १८ एक क्षणभर में उस की

व्यथा से निवृत्त होकर व एक उल्ल्वण वृक्ष लेकर महाव्यालों से विभूषित शिवजी के हृदयमें बल से मारा १९ उन वीर से ताड़ित होकर हृदय में लपटेहुये फणीन्द्र भयभीत होकर इधर उधरसे शिवजी को छोड़कर पाताल के नीचे को भागगये २० शिवजी ने हनुमान् जी के चलाये हुये वृक्षको अपने हृदय में लगे हुये देखकर संकुपित होकर दोनों हाथों में मूशल लिये २१व कहा कि हे वानराधम!मारागया संग्राम से अभी भागजा अभी इस मूशल से हम तेरे प्राणों को हरतेहैं २२ तब कोप किये हुये शिवके चलाये हुये उस मूशलको देखकर श्रीरामचन्द्रजी का स्मरण करते हुये महा वेगवान् हनुमान् जी कूदकर बचागये २३ वह शिवजी का छोड़ाहुआ महा लोहे का मूशल नीचे जाकर गिरा व सब पृथ्वीको बिदारण करके रसातल को चलागया २४ तब श्रीरामचन्द्र जीके सेवक हनुमान् जी अत्यन्त प्रकुपित हुये व एक समूचा पर्व्वत हाथ में लेकर शिवजी की छाती में उन्होंने ताड़ित किया २५ जब तक सतीपति जी ने उस पर्व्वत के काटने में मति की तब तक बहुत शाखाओं से युक्त साँखू के बड़े भारी वृक्ष से कपीन्द्रजी ने ताड़ित किया २६ उसेभी जैसेही काटना चाहा कि तब तक शिला से मारे गये जब तक उद्भट शिवजी ने शिला काटना चाहा २७ तब तक हनुमान् जी ने तरपटक शिलाओं वृक्षों व पर्व्वतोंकी वृष्टि करदी जैसेही वृष्टि से घबराये कि अपनी पूँछ से शिवजीको लपेट कर पृथ्वी पर पटकादिया २८ इस प्रकार शिलाओं पर्व्वतों वृक्षों व पूँछकी झपेटों लपेटों से नन्दीश्वर बड़े त्रासको प्राप्तहुये व चन्द्रमा भी पीड़ित करदिये गये २९ तब बड़े प्रकोप करने वाले भी महादेव जी अत्यन्त विह्वलहुये क्योंकि क्षण २ में एक के पीछे दूसरे प्रहार से निहत होने के हेतु बनाय विकल होगये थे ३० तब वानराधीश हनुमान् जी से बोले कि हे रामानुचर! तुम धन्यहो व तुम ने महा कर्म्म किया जो कि युद्ध में हम को भी सन्तुष्ट कर दिया ३१ यहां तक कि हम न दानसे इस प्रकार कभी किसी से सन्तुष्ट होतेहैं न यज्ञ से न थोड़ी तपस्यासे जैसा कि तुम को सुलभ हुये

हैं इस से हे महावेग! हम से बरमाँगो ३२ शेषनाग बोले कि ऐसा कहते हुये शिवजी को देखकर हँसते हुये हनुमान् जी निर्भय बाणी से सुतोषित महेशानजी से बोले कि ३३ हनुमान् जी ने कहा हे महेश्वर! श्रीरघुनाथजी के प्रसाद से हमारे सब कुछ है तथापि समर से तोषित तुम से एकवर माँगतेहैं ३४ ये हमारे पुष्कलनाम मारेहुये समर में पड़ेहैं व ऐसे ही रामचन्द्रजी के छोटे भाई शत्रुघ्नरणमें मूर्च्छितहैं ३५ व और भी बहुत शूरबीर शरोंसे मारे हुये पड़ेहैं व बहुत से मरे नहीं मूर्च्छितही पड़े हैं उन को तुम अपने गणों सहित रखाओ ३६ जिस से इन लोगों को महा भूत बैताल व पिशाच न लेजायँ न खालें व कुत्ते शृगालादिभी न खाने पावें ३७ जिस में इन लोगों के अङ्गों में कुछ भेद न हो वैसा तुम करो यह तब तक करो कि जब तक हम इन्द्रको समर में जीतकर द्रोणाचल न लावें ३८ अथवा उसपरकी औषधियाँ न लावें और इन सब पतितभटोंको अपने बलसे न जिआवें तब तक तुम इन सबों की रक्षा सब ओर से करतेरहो ३९ हम अभी उस पर्व्वत सत्तम द्रोणको लेनेजातेहैं जिस में कि प्राणियों की सञ्जीविनी औषधियां रहती हैं ४० यह बचन सुनकर शिवजी ने उनसे कहा कि अच्छा ऐसाही होगा तुम शीघ्र उस पर्व्वत के लिये जाओ हम मरे हुये व मूर्च्छित सब तुम्हारे योद्धाओं की रक्षा तब तक करते रहेंगे ४१ महादेवजी के ऐसे वचन सुनकर हनुमान् जी द्रोण पर्व्वत के लेने कोगये सबद्वीपोंको लाँघते २ क्षीरसागर के तटपर पहुँचे ४२ व यहां शिवजी अपने गणों सहित भूत प्रेतादि महा पराक्रमी व बलवानों से श्मशान भूमिकी रक्षाघूम २ कर करते रहे ४३ व हनुमान् जी द्रोणपर पहुँचकर द्रोण नाम उस महापर्व्वत को अपनी पूँछ से लपेटकर उखाड़ लेकर रण मण्डलको चले ४४ परहे विप्र! जैसे ये लेचलने पर उद्यत हुये कि वह पर्व्वत कांपने लगा उसे कांपते हुये देखकर उस के पालक देवगण ४५ हाहाकार करके आपस में कहने लगे, कि यह पर्व्वत के विषयमें क्या होगा कौन महाबल पराक्रमी वीर इसे लिये जाता है ४६ ऐसा कहकर सब

देवोंने इकट्ठेहोकर वानर सिंहको देखा व कहाकि इसे छोड़दे यह कहकर कोटिशः शस्त्रास्त्रों से मारा४७ उन सबों को मारते हुये देखकर हनुमान् जी अत्यन्त क्रुद्धहुये व उन्होंने एक क्षण मात्र में सबों को मारा जैसे कि इन्द्र असुरोंको मारते हैं ४८ वहां किसी २ को तो पादों से मारा व किसी २ को हाथों से मींजडाला किसी २ को लाङ्गूलसेमारा व किसी २ को दांतों से काटकर मारडाला ४९ यहां तक कि वानरेश से ताडित होने से वे सब क्षण मात्र में नष्ट हुये व कोई २ रुधिरसे भीगे हुये पृथ्वी पर पतित हुये ५० व कोई२वानर राजके भय से डरकर घावों से युक्त व रुधिर बहते हुये देवताओं के स्वामी इन्द्रके समीपगये ५१ रुधिर से भीगे हुये भय से व्याकुल उन सब देवताओं को देखकर सब देवताओं में सत्तम इन्द्रजी उन से बोले कि ५२ तुम लोग भयसे त्रस्त कैसे हो व कैसे रुधिरसे भीगेहुयेहो किस अधमदैत्यसे वा राक्षससे मारेगयेहो ५३ सब हमसे कहो तो वैसाजानकर हम उस के पास जायँ व तुम लोगों के घातक उस उन्मद को मारकर वा बांधकर यहां चलेआवें ५४ ऐसा वचन सुनकर सुरों व असुरों से भी नमस्कार किये गये हुये इन्द्र से आये हुये देवगण दीन वाणी से बोले कि ५५ देवताओं ने कहा कि हम नहीं जानते यहां आकर किसी ने वानर का रूप धारण करके अपनी पूँछ से लपेट उखाड़कर द्रोण पर्व्वत को लेजाना चाहा ५६ जब उस ने चलनेही का विचार किया तब तक हम लोग इकट्ठे होकर पहुँचे व सब शस्त्रास्त्र बरसाते हुये युद्ध किया ५७ परन्तु उस बलशाली ने युद्धमें हम सबों को जीत लिया सो अनेक देवता लोग मारे हुये पृथ्वी पर पड़े हैं ५८ हम लोग तो बड़े पुण्यों से बचकर यहां आये हैंसो भी शोणितसे भीगे हुये हैं व घावों की पीड़ासे युक्तहैं ५९ देवताओंके ऐसे वचन सुनकर इन्द्रने महाबलवाले अन्य देव गणोंको आज्ञादी ६० कि तुम लोग द्रोणाचलपर उस महा कपिके पकड़ने के लिये जाओ व उस देवों के पापी को पकड़कर व बांधकर लाओ ६१ ऐसी आज्ञा को पाकर सब पर्व्वत सत्तम द्रोणाचलपर गये जहां कि बलवान् कपियोंमें सत्तम हनुमान् वीरथे ६२ व जाकर

वे सब एकही संग महाबली हनुमान्‌जी के ऊपर प्रहार करने लगे परन्तु हनुमान्‌जी ने मूठियों लातों से ऐसा मारा कि ६३ वे एक क्षण मात्रमें पतित हुये व रुधिर से परिप्लुत हुये व अन्य भागकर उन्हीं देवराज के समीप गये ६४ व सब वृत्त कहा सो सुनकर कोप करके इन्द्र ने सब देवताओं को आज्ञादी कि उस बानरेन्द्रके ऊपर को तुम लोग जाओ ६५ इन्द्र की आज्ञासे वहां गये जहां कि वे महाबली बानरेन्द्र हनुमान्‌जी थे उन सबों को आये हुये देखकर हनुमान्‌जी उन से बोले कि ६६ हे बीरो! समरमें बलसे मारडालने वाले हमारे सामने नआओ नहीं तो अभी तुम लोगों को यमपुरी के समीप को पहुँचावेंगे ६७ ऐसा हनुमान्‌जी ने कहा भी तौ भी सब के सब सन्नद्धहोकर महाकपि के ऊपर प्रहारकरने लगे बड़े बल से समन्वित उनलोगों ने नाना प्रकारके शस्त्रास्त्रोंकी बर्षाकी ६८ ॥

चौ० कोई शूलनसों बलवाना । कोई परशु खड्ग सन्धाना ॥
पट्टिश मुशल शक्ति सों कोई । क्रोधकलुषमनप्रहरतसोई १ । ६९
विविधायुध सुर संघ पवारे । जाय लगे कपिवर के सारे ॥
शिला वृष्टि करि तब हनुमाना । मारासबदेवनरिसियाना २ । ७०
कोई भागिजाय सुर राजहि । खबरिजनायहुसब गुणभ्राजहि ॥
सुनि तिनउक्ति सुराधिप भारी । भयहुभीतनहिंबचनउचारी ३ । ७१
सकल देवमन्त्री गुरुराजा । नाम बृहस्पति वरमति भ्राजा ॥
तासु निकटगे कीनप्रणामा । पुनिपूँछासबकरि विश्रामा ४ । ७२
स्वामी को यह बानरसत्तम । जो आयहु गिरि लेन बृहत्तम ॥
जिनमारे ममअमर समूहा । आयुधधारी करिकै हूहा ५ । ७३
बोले शेष सुनहु मुनिराया । सुनि सुरपतिके बचन सदाया ॥
बोलेसुरगुरुसुरपति पाहीं । जो भयविग्न बहुत मनमाहीं ६ । ७४
जो रणमहँ रावण कहँ मारा । कुम्भकर्ण कर कीन सँहारा ॥
अरु तवसकलबैरिजिनमारा । तिनकर सेवकयहबरियारा ७ । ७५
जिनत्रिकूटगिरिसहितअशङ्का । पुच्छानलसों जारी लङ्का ॥
अक्षनिपात्यो जो बलवाना । जानहु सोइ वीर हनुमाना ८ । ७६
तिन तव सकल देवरणमारे । आयहु द्रोणलेन सुनुप्यारे ॥

महाराज रघुवंश विभूषण । अश्वमेध मखकरत अदूषण ९ । ७७
तासुबाजि शिवभक्त नृपाला । नाम वीरमणि जासु विशाला ॥
हयो तासुसुत तहँरणभयऊ । देवदनुजमोहन दुखदयऊ १० । ७८
रामचन्द्र के वीर अनेका । तहँ शिवमारे रहित विवेका ॥
तिन्हें जियावन हित ये वीरा । आये द्रोणलेन मतिधीरा ११ । ७९
आप बर्षशतकरि अतिसङ्कर । नहिं यासों जीतिहैं भयङ्कर ॥
यासों करहु प्रसन्न कपीशा । द्रोणौषधि देवहुतजि ईशा १२ । ८०

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेद्रोणगिरौदेवानां
पराजयोनामचतुश्चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

दो० पैंतालिसयेंमहँ कह्यो औषधलै हनुमान ॥
जिमिपुष्कलरिपुहनप्रभृति वीरजिआयेआन १
पुनि पुष्कल रिपुहनगिरिश वीरभद्ररणघोर ॥
भयहुरामसुमिरनरिपुह कीनसुगे त्यहिठोर २

शेषनागजी वात्स्यायनमुनिसे बोले कि बृहस्पतिजी के बचन सुनकर वृषपर्वा के शत्रु इन्द्रजी ने श्रीरामचन्द्रजी के कार्य्य के लिये श्रीहनुमान्जी को आये हुये जानकर १ वानरसे उत्पन्न अपने मन में स्थित भय को छोड़ दिया व चित्त में अत्यन्त हर्षित होकर फिर वे अपने गुरु बृहस्पतिजी से बोले २ हेसुराधीश! जो यह द्रोणाचल चला जायगा तो कैसे कार्य्य चलेगा व फिर देवताओं का जीवन कैसे होगा यह हम से कहो ३ व इस समय जैसे कैसे बने पवन तनय को प्रसन्न कीजिये जिस से रामचन्द्रजी बहुत प्रसन्नहों व देवताओं को सुखहो ४ देवराज के वचन सुनकर बृहस्पतिजी सब देवों सहित इन्द्र को आगे करके ५ वहां गये जहाँ सब देवोंको हठसे जीतकर निर्भय होकर सुख पूर्वक आसनपर बैठेहुये वे गर्ज्जतेथे ६ बृहस्पति आदिक सब हनुमान्जी के समीप जाकर पवन तनयजी के चरणों के प्रणाम करके फिर उन्हीं के पादोंपर गिरपड़े ७ तब लोक गुरु इन्द्र की प्रेरणासे बोलने वालों में श्रेष्ठ बृहस्पति जी हनुमान्जी से बोले कि ८ बृहस्पतिजीने कहा तुम्हारे पराक्रम

को न जानते हुये देवों ने ऐसा कर्म्म किया है महामते ! तुम तो श्रीरामचन्द्रजी के चरणों के सेवकहो ९ यह युद्ध करनेका आरम्भ किस लिये है व यहाँ किसलिये आगमन हुआ सो तुम्हारा कहा हुआ हम सब लोग करें इसी लिये चरणों में सन्नतहैं १० रोष छोड़ कर व कृपा करके देवराज को देखिये हे पवनकुमार ! तुम ने तो ऐसा भयङ्कर शरीर धारण कियाहै जो दैत्यों को भयभीत करने के लिये चाहिये ११ शेषनाग वात्स्यायनजी से बोले कि देवताओं के व गुरु बृहस्पतिजी के ऐसे वचन सुनकर महायशस्वी हनुमान्जी देवताओं से व उनके गुरुसे बोले कि १२ राजा वीरमणि के संग्राम में महादेवने बहुतसे वीरों को मारडालाहै सो उनको जिलाने के लिये द्रोणाचल लेजायँगे १३ तिस को ये अपने पराक्रम के अभिमान से रोकेंगे उन का क्षण मात्र में यमराज के घर को भेजेंगे १४ इस से तुम लोग हम को द्रोणाचलही देओ वा उसपरकी मृतसञ्जीविनी औषधीही देओ जिससे रणभूमि में मरेहुये वीरों को हम जिलावें १५ शेषजी बोले कि पवनपुत्र की ऐसी वाणी सुनकर उन सबों ने प्रणाम करके संजीवन औषध दिया १६ व सब देव गण परम सौख्य से युक्त होकर इन्द्रको आगे करके सब के सब एकही संग भय को छोड़ हर्षित होकर चले गये १७ और हनुमान्जी उस औषध को लेकर महाकर्म्मकी प्रशंसा करते हुये देवों से स्तुतिपाकर अपने उसी रणमण्डल को गये १८ व आये हुये उन हनुमान् जी को देखकर सब वैरी लोगोंने भी अच्छा २ कहकर प्रशंसाकरते हुये वानर राजको अद्भुत वानर माना १९ ॥

चौपै० हर्षित हनुमाना वीर महाना प्रथमहिं पुष्कलकाहीं ।
आगे लषि मारे शिव रखवारे दुर्घट संगर माहीं ॥
मनमहँश्रीरामा सबगुणधामा करिपहुँचेत्यहिठामा ।
सबकपिगणमुखियात्यहिलषिदुखियाभयेतहांवरकामा ।१२०

व वहां पहुँचकर महानोंमें महान् सुमति नाम मन्त्रीको बुलाकर उन से कहा कि हम इस समय रणमें मरेहुये सब वीरों को जिलाते हैं २१ ऐसा कहकर पुष्कलकी बड़ी भारी छाती में लगाया व शिर

शरीर में जोड़कर यह शुभ वचन बोले कि २२ जो हम मन बचन और कर्म्म से श्रीराघवही को पति जानतेहों तो इस औषध से यह बीर शीघ्र जीवे २३ जैसेही यह वाक्य कहा है कि वैसेही पुष्कल वीर रणमें उठबैठे व मारेरोष के वे वीर शिरोमणि दांतोंसे दांत रगड़ने लगे २४ व बोले कि हम को समर में मूर्च्छित करके बीरभद्र कहां गये हमारा उत्तम धन्वा कहां है उन को तुरन्त हम पातित करतेहैं २५ ऐसा कहते हुये उन बीरसे हनुमानूजी बोले कि हे बीर ! धन्य हो जो समरभूमि में फिर ऐसा कहतेहो २६ तुम को बीरभद्रने मार-डाला था श्रीरघुनाथजी के प्रसाद से फिर जिलाये गयेहो अब हम मूर्च्छित पड़े हुये शत्रुघ्नजी के समीप जातेहैं २७ ऐसा कहकर संग्रा-ममें वहां को गये जहां कि शिवके बाणसे प्रपीड़ित कुछ श्वासें लेते हुये शत्रुघ्नजी थे २८ व वहां महात्मा शत्रुघ्नजी के निकट जाकर स्वास लेते हुये उनकी छाती पर औषध धरके २९ हनुमानूजी उन से बोले कि हे सज्जनतम शत्रुघ्नजी ! हे महाबल पराक्रम ! रण में मूर्च्छित कैसे होगयेहो ३० जो हम उद्यत होकर जन्म पर्य्यन्त ब्रह्मचर्य्यही को पालते हैं तो वीर शत्रुघ्न एक क्षणही भर में जी उठें ३१ उन के ऐसा कहतेही क्षणमात्रही में जी उठे व बोले कि शिव कहां हैं शिव कहां हैं रण मण्डल छोड़कर कहां गये ३२ महात्मा रुद्रेन्द्र ने अनेक बीरों को समर में मार डाला था उन सबोंको महात्मा कपीन्द्रजी ने प्राणयुक्त किया ३३ तब रोषसे पूरितमन होकर सबके सब युद्ध करनेको सन्नद्धहुये व अपने २ रथ पर स्थितहोकर घाव लगेहुये शरीरों से युक्त समरको गये ३४ पुष्कल तो समरमें फिर बीरभद्रको कुशध्वज चण्डको हनुमान् नंदी को व शत्रुघ्नजी शिवजीको ३५ मारनेलगे उनमें बलवानों में श्रेष्ठ शत्रुघ्नजीको समरमें शिवजीको पुकारकर धन्वापर टङ्कोर देतेहुये खड़े देखकर राजा गया ३६ राजा वीरमणि जापहुँचा व शत्रुघ्नवीर और वीरमणिवीर परस्पर मुनियोंको विस्मय करानेवाला युद्ध करने लगे ३७ हे द्विज ! राजा वीरमणिने राजराजेन्द्र शत्रुघ्नजी के कोटिन रथ एक क्षणमें तिल २ काटकर उड़ादिये ३८ सब रणमण्डल में

अत्यन्त कोपकरके शत्रुघ्नवीरने वीरमणिकेऊपर आग्नेयास्त्र चलाया जिससे सेनासमेत राजा जलनेलगा ३९ तब शत्रुघ्नके चलायेहुये उसदाहक महाअस्त्रको देखकर अत्यन्त कुपित होकर उस राजाने वारुणास्त्र छोड़ा ४० तब वारुणास्त्रसे अपनी सेनाको शीतसे दुःखित देखकर बली शत्रुघ्नजीने उसके ऊपरको वायव्यास्त्र छोड़ा उससे महाप्रचण्ड पवन चलनेलगा ४१ वायुके लगने से जो बादर इकट्ठेथे सब दूर २ सब दिशाओंको उड़गये जब वे इधर उधर चले गये तो वह शत्रुघ्नजीकी सेना सुखित होकर शोभितहुई ४२ व जब वीरमणिकी सेना उसी पवनसे बहुत पीड़ितहुई तो महान् राजा वीरमणिने रिपुके हरनेवाले पर्व्वतास्त्रको चलाया ४३ तब पर्व्वतों में अड़जाने से वायु सैन्यमें न चलनेलगा यह देखकर शत्रुघ्नजीने वज्रास्त्र चलाया ४४ व वज्रास्त्रसे हतहोकर सब पर्व्वत तिल २ कट गये व बीरबरों से युक्त इस रणमें कटकर फिर और चूर्णीभूत होगये ४५ इसप्रकार वज्रास्त्रसे विदीर्णअङ्गवीर लोग रुधिरसे रणमें बहुत शोभितहुये ऐसा होनेसे समर अति विचित्र होगया ४६ तब महान् राजा वीरमणिने अत्यन्त कोपकरके वैरियोंके जलानेवाले अद्भुत ब्रह्मास्त्रको धन्वापर चढ़ाया व चलाया ४७ ब्रह्मास्त्रको चापपर चढ़ाकर चलाते देखकर शत्रुघ्नजीने योगिनीके दियेहुये उस बैरि बिमोहन अस्त्रका स्मरण किया ४८ उसके कारण ब्रह्मास्त्र राजाके हाथ से छूटकर इधर शत्रुकी तरफको आया तब शत्रुघ्नजीने मोहनास्त्र छोड़दिया ४९ परन्तु फिर शत्रुघ्नके चलायेहुये उस मोहनास्त्रने उस ब्रह्मास्त्रको दो खण्ड करदिया व जाकर राजा बीरमणिके हृदय में लगकर उनको शीघ्रही मूर्च्छित करदिया ५० व उसमें से और भी अनेक बाण निकले जिन्होंने जाकर महादेवजीके सब गणों को मूर्च्छित व मोहित करदिया ५१ यहांतक कि वे सब मूढ़हो जाकर शिवजीके चरणके समीप पृथ्वीपर गिरे तब शिवजी कोपकरके रथ पर चढ़ राजा शत्रुघ्नजीके ऊपरको गये ५२ तब शिवजीके साथ युद्ध करने के लिये शत्रुघ्नजी धन्वापर प्रत्यंचा चढ़ाकर बाण सन्धान करके रणभूमिमें युद्ध करनेलगे ५३ उन दोनोंके छोड़ेहुये शस्त्रास्त्रों

से दिशाओं के अन्तरको प्रकाशित कराताहुआ महावैरि विदारण घोरयुद्ध हुआ ५४ अस्त्र प्रत्यस्त्रोंके समूहोंके ताड़नों से व फिर उनके प्रति ताड़नों से ऐसा हुआ कि देवदैत्योंका भी ऐसा संग्राम कभी नहीं हुआ ५५ तब शिवके संग्राम में शत्रुघ्नजी अत्यन्त व्याकुल हुये और श्रीरामचन्द्रजीका उन्होंने हनुमान्‌जीके कहने से स्मरण किया ५६ ॥

चौ० हा राघव हा नाथ हमारे । शम्भु प्राणहर समर प्रचारे ॥
चाप उठाय करत रण भारी । रक्षा कीजे आय हमारी १ । ५७
राम अनेक दुःख पाथोधी । तरे तुम्हारे जन मन बोधी ॥
ऐसहि मोहिं दुःखगत जानी । लेहु उबारि कृपानिधि दानी २।५८
जैसहि इमि भाष्यहु रणमाहीं । तैसहि रामहिं लख्यो तहांहीं ॥
नीलकमल दल श्याम शरीरा । राजिव लोचन मोचन पीरा ३।५९
कटिमृग शृंगपाणि कुश धारे । दीक्षित राघव तहां पधारे ॥
समर माहिं रामहिं अवलोकी । रिपुहनविस्मितभयहुविशोकी ४।६०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेश्रीरामसमागमोनाम पंचचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

दो० । छयालिसयें महँ राम अरु शिव संवाद बहोरि ॥
अन्तर्द्धान उभय भये तुरग चल्यो दिशि ओरि १

शेषनाग वात्स्यायनमुनिसे बोले कि हे द्विजसत्तम! प्रणत लोगों कीपीड़ा हरनेवाले अपने भ्राता उन श्रीरामचन्द्रजीको आयेहुये देख-कर शत्रुघ्नजी सब दुःखोंसे छूटगये १ व भक्तोंकी रक्षाकेलिये आये हुये श्रीरामचन्द्रजीको देखकर हनुमान्‌जी भ्रान्तहोकर चरणों की वन्दनाकरके बोले कि २ हे स्वामिन्! आपको अपने भक्तका पाल-न करना योग्यहीहै जो कि संग्राममें हारकर पाशसे बँधेहुये सबको आपनेछुड़ाया ३ हमलोग इससमय धन्यहैं जोकि आपकेचरण यु-गलदेखतेहैं हे रघूद्वह! आपकीकृपासे अबएकक्षणमात्रमें सबशत्रुओं को जीतेंगे ४ शेषनागजी बोले कि योगियोंको ध्यानमें दिखाई देने वाले श्रीरामचन्द्र जी को आयेहुये देखकर महादेवजी उनके दोनों

चरणोंके ऊपर पतित होकर हे विप्र! प्रणतों के अभय करनेवाले उनसे बोले कि ५ तुम एक साक्षात् पुराणपुरुषहो व प्रकृति से परहो जो कि अपने अंशकी कलासे इसविश्वको बनाते पालते व नाशतेहो ६ वास्तवमें आपहैं तो अरूप इसी से इस जगत्के पर कारणहैं क्योंकि एकहीआप कुइकयुक्त तीनरूपहोकर ७ सृष्टिमें तो विधाता का रूप धारण करते व पालन के समय विष्णुकारूप व जगत्के प्रलयमें साक्षात् हम शिव होजातेहैं ८ व तुम परमेश्वरको जोब्रह्महत्या मिटानेके लिये अश्वमेध यज्ञकी क्रिया करनीहै वह अत्यन्त विडम्बनाकी बात व अद्भुत है ९ क्योंकि जिन तुम्हारे पाद के धोयेहुयेविमलजल गंगाको हम पापशान्तिकेलिये शिरपर धारण करते हैं उन तुम्हारे पाप कहां से आया १० मैंने भक्तके उपकारकेलिये तुम्हारे कर्म्ममें यह विघ्न किया सो आप कृपालुहैं क्षमा करैं जो कि इतना विघ्न मैंनेकिया ११ क्याकरूं आपका प्रभाव जानताहूं परन्तु भक्तकी रक्षाके लिये यहांआया व सत्यकेपालनके अर्थ यह कर्म्म किया १२ इसने पूर्व्वकालमें उज्जैनके महाकाल के स्थानमें नर्म्मदा नदी में स्नानकरके महाअद्भुत तपकियाथा १३ तब प्रसन्न होकर मैंने इस राजासे कहा कि हे महाराज! माँगो तब इसने अद्भुत राज्यमाँगा १४ तबमैंनेकहा कि देवपुर तुम्हाराराज्य होगा व जब श्रीरामचन्द्रजीके यज्ञकाघोड़ा तेरीपुरीमें आवेगा १५ तबतक तेरी रक्षाकेलिये हम तेरेपुरमें रहेंगे ऐसा वर दियाथा सो उसी अपनी सत्यतासे अबतक यहां रहे क्याकरें हे रामचन्द्रजी! १६ अब हम बहुत लज्जितहुये व यह राजा पुत्र पौत्र बान्धव समेत आपका घोड़ा देकर सदा चरणोंकी सेवाकरेगा १७ शेषजी बोले कि महेशजीके वचनसुनकर कृपासे पूर्ण नेत्रकरके श्रीरामचन्द्रजी मधुरबाणी से बोले कि १८ हे देव! हमारे यहाँ सब अच्छा है व भक्तकी रक्षा करना सज्जनों का धर्म्म है तुमने अच्छाकर्म्म किया जो इससमय भक्त की रक्षा की १९ हमारे हृदय में तुमरहते हो व आपके हृदय में हमरहते हैं इससे हममें तुममें अन्तर नहीं है व जो अन्तर देखते हैं वे मूढ़ और दुर्बुद्धि हैं २० एकरूप हम

तुमसे जोलोग भेदकरतेहैं वेनर सहस्रकल्पतक कुम्भीपाकनामनरक में पकायेजाते हैं २१ जो सदातुम्हारे भक्तहोते हैं वे जोधर्म्मसेंच्युत रहें तो हमारेही भक्तहैं व हमारे भक्तभी बड़ी भक्तिसे तुम्हारे नमस्कार करतेहैं २२ शेषनागजी बोले कि श्रीरामचन्द्रजी के ऐसे वचन सुनकर महादेवजीने मूर्च्छित वीरमणि राजाको अपने हाथ से स्पर्श करके जियादिया २३ व मूर्च्छित शरों से पीड़ित और भी राजा के पुत्रों को समर्थ प्रभु ईश्वर शिवजी ने जिया दिया २४ फिर पुत्र पौत्रादि सहित उसराजा को साजसजाकर महादेव जी ने श्रीरामचन्द्रजी के चरणों के प्रणाम कराया २५ राजावीरमणि धन्य है जिस ने योग में निष्ठा कियेहुये योगियों को भी किरोड़ों वर्षों में बड़े दुःख से प्राप्त होने के योग्य श्रीरामचन्द्र जीका दर्शनपाया २६ वे सब श्रीरघुनाथ जी के नमस्कार करके कृतार्त्थ शरीर होगये इसीसे ब्रह्मादिदेवों से भी पूजितहुये हे द्विजसत्तम! २७ तब शत्रुघ्न हनुमान् और पुष्कलादिकों से स्तुति किये गये हुये श्रीरामचन्द्रजी को राजा वीरमणि ने अश्वमेधवाला उत्तम घोड़ा ले आनदिया २८ फिर महादेवजी की प्रेरणा से राजा वीरमणि ने राज्यसहित अपने पुत्र पौत्र बान्धव पशुइत्यादिक सब श्रीरामचन्द्रजी को अर्प्पण करदिया २९ बाद इसके श्रीरामचन्द्र जी सम्पूर्ण शत्रु व अपने सेवकों से व विशेषतासे अत्यन्त उत्साह युक्त जो शत्रुघ्न इत्यादिक हैं तिनकरके नमस्कारको प्राप्तहुये ३० फिर मणिमय रथपर स्थित होकर श्रीरामचन्द्रजी वहीं अन्तर्द्धान होगये श्री रामचन्द्रजी के अन्तर्द्धानहोने पर सब बड़ेविस्मित हुये ३१ व आपस में कहनेलगे कि रामचन्द्रजी को मनुष्य न जानो ये सब लोकों से एकही बन्दितहैं व इसी मे जल स्थल सबमें सदा स्थित रहतेहैं ३२ तब सब वीर अत्यन्त हर्षित होकर आपस में मिले भेंटे व तुरुही नगारे आदि बाजे बाजे इस से एक बड़ा भारी उत्सव हुआ ३३ तब फिर वह घोड़ा वहाँ से छोड़ा गया व सब शस्त्रों में कोविद प्रसन्न चित्त व विस्मित सब वीर उसके पीछे २ चले ३४ व सत्य प्रतिज्ञ शिवजी अपने सेवक से कहकर कि सब

लोगों को दुर्लभ श्रीरामचन्द्रजी के शरण को जाओ ३५ आप उसी समय अन्तर्द्धान होगये व अपने गणों सहित कैलासको चले गये क्योंकि वे तो प्रलय उत्पत्ति के करने वाले ठहरे सदा कहीं किसी के यहाँ रहते हैं ३६ ॥

चौ०।तब श्रीरामचन्द्रपदध्यावत । भूपवीरमणिअतिअरषावत ॥
निज बलयुत शत्रुघ्न सुसंगा । गयहुतहाँ जहँगयहु तुरंगा १ । ३७
यह श्रीरामचरित जो प्राणी । सुनिहैं अरु कहिहैं निज बाणी ॥
तिनकहँ संसृतिदुःखनकबहूँ । होइहिकहतमहाबुधसबहूँ २ । ३८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेहयप्रस्थानं नामषट्चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४६ ॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

दो०। सैंतालिसेंमहँ कह्यो जिमि हय मेरु समीप ॥
गयहु तहाँ स्तम्भितभयहु खिन्न तहाँ रघुदीप १
पूंछा शौनकसों कहा उनयक राक्षस गाथ ॥
ग्रहणकीन हयशापसों ताहि छुड़ावहु नाथ २

शेषनाग वात्स्यायनमुनिसेबोले कि हेद्विज!तदनन्तर घोड़ा भारतके अन्तमें स्थित हेमकूटनाम पर्व्वतपर पहुँचा जोकि अनेक सहस्रोंभटोंसे रक्षित व बहुत चामरों से घोड़ा शोभितथा १ व जो पर्व्वत लम्बाई चौड़ाई के गुणने से दशहज़ार योजनकाहै कँगूरा उसके चाँदी और सोनेके हैं इससे अतिमनोहर है २ वहाँ एक उद्यान अतिश्रेष्ठहै जोकि शाल ताल तमाल कर्णिकार आदि वृक्षोंसे सब ओर शोभित रहताहै ३ हिन्ताल नाग पुन्नाग कोविदार बिल्व चम्पक बाकुल मेघसंज्ञक मदन कुटजादि तरुओं से शोभायमान है ४ जाहीजूही चमेली आम महुआ अनार अमरूत अम्बार कदम्बादि वृक्षोंसे शोभित बनहै ५ व अनेक पक्षियोंसे सेवित व भ्रमरों के नादसे नादित होरहाथा मयूरोंकी बाणियोंसे भराहुआ व सबऋतुओंमें सुखदायकथा ऐसे बनमें घोड़ने ६ प्रवेश किया जोकि मन केसमान वेगसे चलताथा उसकेसंग शत्रुघ्नजी भी पहुँचे व घोड़ा विशाल मस्तक में सुवर्ण के पत्रसे शोभितथा ७ अश्वमेधयज्ञ के

उस घोड़े के जाते २ अकस्मात् जो आश्चर्य्यहुआ हे द्विजोत्तम ! उसे सुनो ८ बस उसके अङ्गोंका स्तम्भन होगया इसलिये चल न सका मार्गमें खड़ारहगया हेमकूटहीकी नाईं वह बाजिसत्तमभी वहाँ पर अचल होगया ९ तब उसके रक्षकोंने चाबुक उठाकर ताना व चलाया व माराभी परन्तु तोभी वह उत्तमअश्व जहाँकातहाँ खड़ाहीरहा कुछभी न चला १० तब घोड़ेके रक्षकोंने शत्रुघ्नजीके समीपजाकर कहा कि स्वामिन् हमलोग नहीं जानते कि हयोत्तमको क्याहोगया ११ हे बड़ी मतिवाले ! मनोवेगसे चलेजातेहुये अश्व श्रेष्ठके गात्रोंका स्तम्भन अकस्मात् होगया १२ तब हमलोगोंने कोड़ोंसे भी ताड़ित किया परन्तु वह वहाँसे न चला हे नृपोत्तम ! अब ऐसा बिचारकर जो करनाहो कीजिये १३ तब राजा शत्रुघ्नजी बहुत विस्मित होकर सैनिकोंके साथ महा अश्व के समीपको गये १४ पुष्कल ने अपने हाथसे पकड़कर उसके आगेके दोनोंपैर बड़ेबलसेउठाये परन्तु भूतलपरसे तनिक भी न उठे न चले १५ जब बड़े बली पुष्कलने बलकरके उठाया चलाया तोभी न चला तो महामनस्वी हनुमान्जी ने उसके चरणोंके उठानेका विचारकिया १६ अपनी पूँछसे उसे लपेटकर बलवानोंमें श्रेष्ठ उन्हों ने बलसे घोड़ेकोखींचा परन्तु वह तो भी कुछ न चला १७ तब कपियोंमेंश्रेष्ठ हनुमान्जी विस्मित होकर सबवीरों के सुनतेहुये बलवानों में श्रेष्ठ शत्रुघ्नजी से बोले १८ कि हमने अभी द्रोणाचलको एक खेलकेसाथ पूँछसे लपेटकर उखाड़ लियाथा परन्तु यहाँ यह महाआश्चर्य्य है कि यह उत्तम अश्व काँपता भी नहीं चलने उठने को कौन कहै १९ इसमें कुछ दैवहीका कारणहै जो कि बड़े २ बलीवीरोंके खींचनेसे भी स्थानपरसे तिलमात्र नहींचलता २० हनुमान्का बचन सुन विस्मितहोकर शत्रुघ्नजी ने मन्त्रियों में श्रेष्ठ व बक्ताओं में भी श्रेष्ठ सुमतिजीसे पूँछा २१ शत्रुघ्नजी ने कहा कि हे मन्त्रीजी ! क्या हुआ जो घोड़े के शरीर का स्तंभन होगया इस विषय में कौन उपाय करना चाहिये जिससे घोड़ा चले २२ सुमतिजी बोले कि हे स्वामीजी ! सम्पूर्णज्ञान जानने में परम विचक्षण कोई मुनि हूँ-

ढ़ाजाय हम तो जो देश में हो चाहे प्रत्यक्षहो वा परोक्षहो उसको जानतेहैं इसे नहीं जानते २३ शेषनाग बोले कि सुमति के ऐसे वचन सुनकर धर्ममें कोविद शत्रुघ्नजी ने सेवकों से उत्तम किसी मुनिको ढुँढ़ाया २४ उन सबोंने सब ओर जाकर सब धर्म्म जानने वाले मुनिको सबकहीं ढूँढ़ा परन्तु कहीं वैसे ऋषियों के ईश्वरको न पाया २५ तब हे विप्र ! एक अनुचर एक योजन मात्र चलागया तो पूर्व्वदिशामें उस ने एक आश्रम देखा २६ जहां सब पशुलोग बैर छोड़े हुये रहते थे व मनुष्यभी वहां वैसेही बैर रहितही थे व गंगा स्नान करने से सब के पापहरगये थे इस से सुमनोहर दिखाईदेते थे २७ जहां कोई २ तो अग्निसहित तप कररहेथे व कोई केवल धूमही अधोमुखकरके पीते थे व कोई पवनही से अपना पेटभरते थे २८ व जहां अग्निहोत्र से उत्पन्नधुवां सदा सब को पवित्रित करताथा वहां अनेक मुनियों से अच्छे प्रकारसेवित एक मुनि सत्तमविराजते थे २९ उस आश्रमको शौनकमुनिका अति मनोहर जानकर आकर विस्मययुक्त राजा से निवेदन किया ३० उसे सुनकर अत्यन्त हर्षितहो शत्रुघ्नजी हनुमान् पुष्कलादि सेवकोंसहित उस आश्रम को गये ३१ वहां अच्छेप्रकार अग्निमें आहुति देकर बैठे हुये मुनि श्रेष्ठको देखकर व पापहारी उन के दोनों चरणों के दण्डवत्प्रणाम करके ३२ मुनि ने बलिनमें श्रेष्ठ शत्रुघ्नजी को आये हुये जान के उन के दर्शन से खुश होकर के अर्घ्यपाद्यादिक यानी पूजन किया ३३ सुखपूर्व्वक बैठे हुये राजा से मुनीश्वरजी बोले कि किसलिये तुम्हारा अटनहोता है व यहां किसलिये महापर्य्यटनहुआ ३४ यद्यपि यह तो हम जानतेहैं कि तुम्हारेसे नृपश्रेष्ठ जो पृथ्वी पर भ्रमण न कियाकरें तो दुष्टलोग विगतज्वर साधुओं को बाधित करनेलगें ३५ हे सब बलियों में श्रेष्ठ शत्रुघ्नभूपाल ! कहिये व तुम्हारे सब पर्य्यटनादिक हम को शुभहों ३६ शेषनाग बोले कि ऐसा कहते हुये भूदेवजी से महीश्वर शत्रुघ्नजी गद्गद स्वरयुक्त वाणी से खिन्नशरीर होकर बोले कि ३७ हे विप्रों में श्रेष्ठ ! तुम्हारे स्थान के समीपही मन हरनेवाला आश्च-

र्थ जो रामचन्द्रजी के यज्ञ के घोड़े के विषय में अकस्मात् हुआ है उसे सुनो ३८ पुष्पों की शोभा से युक्त तुम्हारे उद्यान में अपने मन से घोड़ा चलागया उस के समीप पहुँचतेही उस बाजी के अंगोंका एक क्षणही भर में स्तम्भनहोगया ३९ तब हमारे महाबली पुष्कलादिवीरों ने बल से उस घोड़े को खींचाभी परन्तु वह उस स्थानपर से तो भी न चला ४० सो इस दुःखसमुद्र में डूबते हुये हम लोगों को दैव के दिखाये हुये तुमनौका रूप प्राप्त हुयेहो इससे इसका आदि कारण कहो क्या है ४१ शेषनागजी वात्स्यायनजी से बोले कि शत्रुघ्नजी के ऐसे वचन सुनकर क्षण मात्र विचारांश करके बाद इस के घोड़े के स्तम्भन का कारण विचार से जानते भये ४२ क्षण मात्र में उसकी ज्ञानताको पाकर विस्मय से उत्फुल्ल-नयनहोकर शौनकमुनि दुःखित व संशययुक्त राजा शत्रुघ्नजी से बोले ४३।४४ कि हेराजन्! घोड़े के रुँकजाने का कारण कहतेहैं सुनो जिसके सुनने से प्राणी दुःख से छूटता है वह अति आश्चर्य्ययुक्त कथा महारम्य गौड़देश में कावेरी नदी के तीरपर सात्विकनाम ब्राह्मण ने परमतप किया ४५ एक दिन तो जल पान करके रहते थे व दूसरे दिन वायुपानकरके व तीसरे दिन निराहार इस प्रकार तीन दिन बितातेथे ४६ इस प्रकार तप करते २ सब को क्षयकरने वाला काल आगया व उस ने अपने दांतों से मुनिको ग्रहण कर लिया इस से वे महामुनि मृतक होगये ४७ व सब रत्नों से विभूषित सब शोभा से युक्त विमान पर अप्सराओंके संग क्रीड़ाकरते हुये मुनि जाकर मेरुकी शिखापर पहुँचे ४८ वहांपर एक जम्बूनाम का महावृक्ष सेवा करने के योग्यथा व वहीं जाम्बुमतीनाम एक नदी बहतीथी जिसमें सुवर्णकारसंभरा रहताथा ४९ उस नदी में मुनि लोग एक कौतुक के साथ अनेक पुण्यों के प्रभाव से सब सुखसे युक्त क्रीड़ाकरतेथे ५० वहां उन को क्रीड़ाकरते हुये देखकर ये भी अप्सराओंके संग उतर कर क्रीड़ाकरने लगे परन्तु अपने अभिमान के मद से उद्धतहोकर इन ब्राह्मण देवने उन तपस्वियों के संग कुछ अनिष्टकर्म्म किया ५१ ॥

चौ०। तबमुनिवरनशापत्यहिदीना । दुर्म्मुख राक्षसहोहु मलीना ॥
तब दुःखित ह्वै तप व्रत धारी । विद्याधरमुनिजनसोंभारी १ । ५२
करि बहु विनय कह्यो मुनिराया । करहु अनुग्रह करिकै दाया ॥
तब दयालु मुनि कहा बहोरी । जबआइहिरघुबरहयमोरी २।५३
तबत्यहि बलसों थँभिहहुनीके । कथा श्रवण करिहहु विधिठीके ॥
पीछे यह अति दारुण शापा । होइहिमुक्तित्वरितगतदापा ३।५४
सो मुनिकृत लहि शाप विशेषी । भयहु विप्र राक्षस हमदेखी ॥
स्तम्भन कीन राम हय केरो । कथासुनायछुड़ावन देरो ४ । ५५
इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेशापकीर्त्तनंनामसप्तचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४७ ॥

अड़तालीसवां अध्याय ॥

दो० । अड़तालिसयें महँ नरक बर्णन पूर्व्वज चीन्ह ॥
शौनक कहहय मुक्ति पुनि जिमि भै सो कहिदीन्ह १

शेषनाग वात्स्यायन मुनिसे बोले कि यह मुनिका कहा हुआ बचन सुनकर शत्रुघ्नजीने विस्मितमन होकर शौनकमुनि से पूंछा कि १ कर्म्मकी बड़ी गहन वार्त्ता है कि जिससे सात्विकनाम ब्राह्मण स्वर्ग में पहुँचकर भी बड़े कर्म्म से राक्षस करडालेगये २ सो हे महर्षिस्वामीजी ! कर्म्मों की गति हमसे कहो जिस कर्म्म विपाक से जैसा नरक होताहो ३ शौनकमुनि बोले कि हे राघव श्रेष्ठ ! तुम धन्यहो जिसकी ऐसी शुभमति है कि तुम जानते भी हो पर लोगों के हित के लिये ऐसा पूँछतेहो ४ हम कहते हैं विचित्र कर्म्मोंकी विविध प्रकार की गतियां होती हैं हे महाराज ! उनको सुनो जिनको सुनकर मनुष्य मोक्ष पाता है ५ पर धन पर सन्तान व पराई स्त्री जो दुष्ट मतिवाला जबरदस्ती से व भोग के कारण लेलेता है ६ उसे महाबली यमदूत काल पाश से बांधकर तामिश्र नरक में तबतक डालते हैं जबतक सहस्र वर्ष बीतते हैं ७ व वहां यमदूत कभी २ उसमें से निकालकर ताड़न भी करते रहतेहैं जब वहां के पाप भोग करके छूटता है तब फिर शूकर की योनि में उत्पन्न होताहै ८ वहां महा दुःख भोगकर फिर

मनुष्य होता है वहां रोगादि चिह्नों से युक्त होता जो कि दुष्टवंश को जतातेहैं ९ व जो प्राणियों से द्रोह करके केवल अपनेही कुटु-म्बका पालन करताहै वह अन्धतामिस्र नरकमें पतित होता है १० व जो नर मिथ्या यहां जन्तुओं का बध करते हैं वे रौरवनाम नरक में डाले जातेहैं वहां रुरुनाम के यमदूत उनको भेदन करते हैं ११ व जो अपने पेट के लिये छागादि प्राणियोंका वध करता है वह यमराज की आज्ञासे महा रौरव नरक में डाला जाता है १२ व जो पापी अपने पिता रूप ब्राह्मण से बैर करताहै वह दशहजार योजन के लम्बे चौड़े महादुष्ट कालसूत्रनाम नरक में डाला जाता है १३ व जो गायसे बैर करता है वा उसे मारता है जितने पशुके अंगमें रोमहोते हैं उतने हजार वर्षतक कुम्भीपाकादि नरकों में यम किंकर उसे पचाते हैं १४ व राजा होकर पृथ्वी पर जो दण्ड के अयोग्य पुरुषोंको दण्ड देताहै व ब्राह्मणको अपराध करनेपर भी देहदण्ड देताहै १५ उसे यमके किंकर शूकर मुखनाम महादुष्ट न-रकमें डालकर पीड़ित करतेहैं पीछे फिर पाप छूटनेके लिये दुष्टयोनि यों में उत्पन्नहोता है १६ व जो लोग ब्राह्मणों की और गौओं की जीविका वा थोड़ाभी धनद्रव्य मोहसे लोभमें आकर हरलेते हैं वा हरालेते हैं १७ वे मरनेके पीछे अन्धकूपनाम नरकमें गिराकर महा-पीड़ित कियेजातेहैं जो अन्न लेआकर अच्छे प्रकार मधुर बनाकर मारेलालच के १८ उसमें से न किसी देवता को देता न सुहृदको देता जिह्वा से आतुर होकर आपही खाता है वह क्रिमिभोजननाम नरकमें पतितहोता है १९ व बिना विपत्तिके ऐसेही बने चुने में जो कोई किसीका सुवर्णादिक हरलेता है वा ब्राह्मणकाधन विपत्तिकाल में भी हरलेता है वह महादुष्ट संदंश नरकमें पतित होताहै २० व जो मूढबुद्धि अपनादेह तो अच्छीतरह पुष्टकरताहै और दूसरेको कुछ नहीं जानता है वह तपायेहुये तेलसे भरेहुये अति दारुण कु-म्भीपाकनाम नरक में डालाजाता है २१ जो पुरुष अगम्य काकी दादी मामी मौसी फूफूआदि स्त्रियोंको स्त्रीके भावसे इच्छा करता है यम किंकर उसी प्रकारकी लोहेकी तपाईहुई स्त्रीके संग उसे आ-

लिंगित कराते हैं २२ व जो लोग अपने बलसे उद्धतहोकर बलसे वेद की मर्यादाको काटतेहैं वे वैतरणीनदी में पड़कर मांसखाते व रुधिर पीते हैं २३ व जो ब्राह्मण होकर शूद्रीको स्त्री बनाकर उसीसे गृहस्थी का कर्म्मकराताहै गृहकी स्वामिनी मानताहै वह महादुःख से युक्त होकर उसनरक में परता है जिसमें पीबभरी होतीहै २४ जो लोग लोगों के ठगने के लिये दम्भकरतेहैं व धूर्त्तताकरतेहैं वे मूढ़लोग यमदूतों मे ताड़ित वैशिसनामनरकमें डालेजाते हैं २५ व जो मूढ़ अपनी सवर्णा स्त्री अपने वीर्य्यसे पानकराते हैं वे वीर्य्यकी नहर में गिराये जातेहैं व वीर्य्यही भक्षणकरने को पातेहैं २६ जो दुष्टचोरी करते अग्नि लगादेते विषदेते और ग्राम लूटलेते हैं वे लोग पाप से युक्त होकर सारमेयादनाम नरकमें पतितहोते हैं २७ व जो लोग साक्षात् झूँठीसाखी देते हैं ऐसे पापी पुरुषहोते हैं व जो परायाधन हठसे अपने पास रखलेता है २८ वह पापी अवीचिनाम नरकमें नीचेको शिरकरके पतित होता है वहां महादुःख भोगकर पापिष्ठ योनिको जाता है २९ जो मूढ़ बुद्धि जिह्वाके स्वादुके लिये ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यहोकर मदिरा पीता है उसे धर्म्मराजके दूत लोहेकारस उष्ण करके पिलातेहैं ३० व जो पुरुष अपनी विद्या और आचारके घमण्डसे अपने गुरु व माता पिता ज्येष्ठभ्रातादिकोंका अपमानक-रताहै वहनीचेको मुखकरके क्षारकर्दम नाम नरकमें डालाजाताहै ३१ जो धर्म्म रहितपुरुष विश्वासघात करते हैं वे मनुष्य बहुत यातना वाले शूलप्रोतनाम नरकमें डालेजाते हैं ३२ व जो चुगुली करके किसीको उबादेतेहैं वे दन्तशूकनाम नरकमें गिराये जाते हैं जहां बड़े२ सर्प्प उन्हें काटते हैं ३३ हे राजन्! पापकारियों के लिये ऐसे अनेक नरकहैं पापकरके प्राणी उन्हींमें जातेहैं व पीड़ितहोतेहैं ३४ जिन्होंने न कभी रामचन्द्रजी की कथासुनी न परायाउपकार किया उनको सब दुःख अन्य नरकोंमें होते हैं ३५ हे भूप! यहां जिसको सुखहै उसे स्वर्गमें भी सुखहोताहै व जो यहां दुःखी व रोगी रहते हैं वे नरकसे आयेहुये पुरुषहैं ३६ शेषनाग बोले कि यह सुनकर महीपाल शत्रुघ्नजी क्षण२में कम्पमानहुये व उन्हों ने सब संशय

मिटानेके लिये फिर ब्राह्मणदेवसे पूछा ३७ कि हे महामुनिजी ! उन पापोंके चिह्नकहो भूलोकमें किसपापसे कौन चिह्नहोता है ३८ यह वाक्यसुनकर मुनि राजासे बोले कि हे राजन् ! सुनो पापकारियोंके चिह्नकहते हैं शौनकजीने कहा जो इस जन्ममें ब्राह्मण क्षत्रिय वा वैश्यहोकर मदिरा पान करता है उसके दूसरे जन्म में काले दांत होते हैं जब कि वह नरक से निकलकर जन्मपाता है जो अभक्ष्य वस्तुओं को भक्षणकरता है उसके उदर में पिलही वायुगोलादि गुल्महोते हैं ३९।४० जो रजस्वलास्त्री के देखतेहुये भोजनकरताहै उसके पेटमें कीड़े रहते हैं कुत्ते बिलारों का जूँठा खाने से मुख में दुर्गन्धि आती है ४१ व जो बिना देवादिकों को नैवेद्यलगाये भोजन करताहै वह पुरुष सदा उदररोगी होता व महारोगों से पीड़ितरहता है ४२ जो पराये अन्नमें विघ्नकरता है उसके अजीर्ण रोग होता है व धनवान्होकर भी जो चना कोदो सावां मकरा मसुढ़ी मोथी आदिक अन्न देतेहैं उनके मन्दाग्निरोग होताहै व यहीरोग किसी ब्राह्मण को इन अन्नोंके देनेसभी होताहै ४३ जो किसी को विष देता है उसके डाकनेका रोगहोता है व मार्ग नाशकरनेवाला पादरोगी होताहै चुगुली करनेवाला नरकके अन्तमें श्वासकास रोगीहोता अर्थात् उसके दम खांसीआती है ४४ जो धूर्त्तहोता उसके मृगी रोगहोता है व अन्य को सन्तापित करनेवालेके पेटमें शूलकारोग होताहै देवता के मन्दिर में अग्निलगानेवाले के रक्तयुक्त दस्तआतेहैं ४५ देवमन्दिर में वा जलमें जो मूत्रोत्सर्ग करताहै उसके अति दारुण गुदरोग भगन्दरादि होताहै ४६ व गर्भपातकरानेसे कछुही पिलही व जलोदर रोग होतेहैं व जो देवप्रतिमाको तोड़ता है उसकीही अप्रतिष्ठाहोती है ४७ व दुष्टवादी के वचन सदाखण्डित हुआकरते हैं व पराई निन्दा करनेवाले के शिरकेबाल अतिवेग गिरजाते हैं इससे वह खल्वाट होजाता है जो सभा में किसी के पक्षका घातकरता है उसके पक्ष घात रोगहोता है ४८ पराये वचनको जो हँसता है वह कानाहोता है व ब्राह्मण के सुवर्ण चुराने से नख खराबहोते हैं ताम्र चुराने वाले के लालदाग देह में पड़जाते हैं व कांसा चुरानेवाले

के उजले दाग पड़ते हैं ४९ रांगा चुरानेवाले के पीले भूरे बालहोते हैं शीसा चुरानेवाले पुरुषके शिरमें रोगहोताहै ५० घृतचुराने वाला पुरुष नेत्ररोगीहोता है व लोह चुराने वाला बबरांग होता है ५१ छाल चुराने वाले पुरुष के भी मेदा में रोगहोताहै व मधुचुरानेवाले के बस्ति की गन्धिआती है ५२ चोरी करनेवाले के खाज होती है व कच्चा अन्न हरने से दन्तहीन होजाता है ५३ व पक्का अन्न चुराने वालीकी जीभमें रोग होता है व माता के संग भोग करने वाला पुरुष लिङ्ग से बर्जित होजाता है ५४ गुरु स्त्री के संग भोगकरने से मूत्रकृच्छ्र रोगहोता है व अपनी बहन के साथ भोग करने से पीतकुष्ठरोग होताहै ५५ व अपनी कन्या के संग भोग करने से रक्तकुष्ठी होता है भाई की स्त्री के साथ भोग करने से गुल्मकुष्ठ होता है ५६ व स्वामी के गमनकरने के योग्य रानी आदि के संग गमन करने से दाद्रु रोगहोता है व किसी विश्वासी मित्रकी स्त्री के संग भोग करने से गजचर्म्म रोगहोता है ५७ फूफूके संग गमन करने से दक्षिण अंग में घाव होता है व मामीके संग गमन करने से बायें अंग में घाव होता है ५८ पितिआनी के संग भोग करने से कमरमें कोढ़होता है स्नेहीकी भार्य्या के संग प्रसंग करने से स्त्री मरजाती है ५९ अपने गोत्रवाले की स्त्री के संग भोगकरने से भगन्दर रोगहोता है तपस्विनी के संग प्रसंग करने से पुरुषके प्रमेह रोगहोता है ६० पुरोहितकी स्त्री के संग भोग करने से नासिकामें घाव होता है व यजमानकी भार्य्याके संग प्रसंग करने से रक्त में विकार होता है ६१ अपनी जातिवालेकी किसी की स्त्री के संग प्रसंग करने से हृदय में घाव होता है व अपनी जातिसे ऊँची जातिकी स्त्रीके संग भोग करने से मस्तक में घावहोता है ६२ पशुयोनि में गमन करने से मूत्रकृच्छ्ररोग होता है ये सब दोषनरों के नरकके अन्त में होते हैं इस में कुछ संशय नहीं है ६३ व ऐसेही उन २ पुरुषों के संगम से स्त्रियोंके भी ये सब रोगहोते हैं हे राजन्! इस रीति से हम ने पापियों के चिह्नकहे ६४ पर ये सब चिह्न दान पुण्य करने से तीर्थों में स्नान करने से व रामचन्द्रजी

के चरित सुनने से अथवा तप करने से नष्टहोजातेहैं फिर अंगों में नहीं रहते ६५ व सब पापों के पापियों के पापकीचड़को श्रीहरि कीर्त्तनकी नदी धोडालती है इस में कुछ विचार न करना चाहिये ६६ जो श्रीहरिको नहीं मानता उस के विधिपूर्व्वकभी कियेहुये यज्ञ व सुपुण्य तीर्थभी उसे पवित्रनहीं करसक्तेहैं ६७ व जो ज्ञान दुर्ब्बल पुरुष हरिकीर्त्तन करने वालेको हँसता है उसकी कल्पान्तमें भी नरकसे मुक्ति न होगी ६८ हे राजन् ! अब अपने अनुचरों सहित घोड़े के छुड़ाने के लिये जाइये व श्रीरमानाथ जी के चरित सुनाइये जिस से घोड़ा फिर वहां से चले ६९ ॥

चौ०। बोलेशेषनागमुनिसुनहू । सुनिकैपुनि अपने मन गुनहू ॥
सुनि शत्रुघ्न मुदितमुनिवन्द्यो ।सेवकयुतपुनिचल्योअनन्द्यो १।७०
तब हनुमान तुरंग समीपा । गयो जहां सो हय कुलदीपा ॥
रामचरित सब दुर्ग्गति नाशी । तहांविविधविधिकीनप्रकाशी २।७१
जाहु राम कीर्त्तन सुनि देवा । चढ़हु विमान त्वरित सुर सेवा ॥
मुक्त कुयोनि भई अबतुम्हरी । सकलभांतिसोंतवगतिसुधरी ३।७२
सुनिइमि वचन भूपरिपुसूदन । जबलग तहँ थिर रहे अपूदन ॥
तबलग देखा दिव्य विमाना । देवनसहितमहितविधिनाना ४।७३
तापर थिर बोल्यहु सुर सोई । रामचरित सम नहिं जग कोई ॥
जासों पूतभयों महिपाला । आयसुहोयजाउँ निजशाला ५।७४
यहकहिचढ़िसोसुभगविमाना । चलो गयो प्रमुदित बलवाना ॥
तबविस्मित रिपुसूदनआदी । भये सकलऋषि देवप्रसादी ६।७५
तब सो तुरग मुक्तभो नीके । स्तम्भित प्रथमहतो जो ठीके ॥
गयहुसकलवनमहँ अतिवेगा । पक्षिसमाकुलमहँ शुभनेगा ७।७६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेहयनिर्मुक्तिनामअष्टचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४८ ॥

उनचासवां अध्याय ॥

दो०। उनचसयें महँ जिमि सुरथ पुरमहँ गयहु तुरंग ॥
रामभक्त नृप सुरथ त्यहिं गह्यो कह्यो त्यहिं ढंग १
मुनितनुधरि यमपरखकरम करन कह्यो नृपपाहिं ॥

पर नृप हरि पर ह्वै सुबर लीन्ह्यो कीन्ह्योंनाहिं २

शेषनागजी वात्स्यायन मुनिसे बोले कि अनेक राजाओं से पूरित भरतखण्डमें घूमते २ उसअश्वश्रेष्ठको सातमासबीतगये १ व सब कहीं श्रेष्ठ राजाओंसे पूजित होकर भारतवर्षको शत्रुघ्नादि वीर महा उद्भटोंके साथ घूमआया २ व बहुतसे देशोंमें घूमते २ हिमालय पर्वत के समीपवर्ती देशोंमें आया परन्तु रामचन्द्रजी के रूप व महाबल का स्मरण करके और किसीने उस बाजी को नहीं ग्रहण किया ३ अंग बंग कलिंगादिकों के राजाओं से स्तुति किया गया वह घोड़ा जाते २ राजा सुरथ के नगर में पहुँचा ४ उस नगर का कुण्डल नाम था जहां आनन्द व भय से कांपतेहुये अदिति के कानों से कुण्डल गिर गया था धरती पर ५ जहां कि धर्म्म से विरुद्ध कुछ कर्म्म कोई नहीं करता था वहां के सब निवासी प्रेम से नित्य श्रीरामचन्द्रजीकाही स्मरण करते थे ६ व जहां श्रीरघुनाथजी के पापबर्जित सेवक मनुष्य प्रति दिन पिप्पलोंकी व तुलसीकी पूजा किया करते थे ७ व जहां कि श्रीराघवजीकी प्रतिमाओंसे युक्त मनोहर रम्य देवालय बनेथे व प्रतिदिन उनकी पूजा कपटरहित चित्त वाले पुरुष करते थे ८ जहां सब के वचन से श्री हरिका नाम निकलता था कलहकी कथा नहीं निकलती थी हृदय में श्रीरामचन्द्रजी का ध्यानही रहता था नानाप्रकारकी कामनाओं के फलोंका स्मरण नहीं रहता था ९ जहां कि श्रीरामचन्द्रजी की वार्त्ताओंसे पवित्रजुआ खेला जाता था व मनुष्योंमें कभी दुर्व्यसन के जुये के वार्त्ताभी नहीं होतीथी इस प्रकार लोगों ने दुर्व्यसनोंको छोड़दिया था १० जिसमें धर्म्मात्मा सत्यवान्बली व श्रीरघुनाथ जीके पदोंके स्मरण करने से हर्षित चित्त व उसमें अत्यन्त उन्मद सुरथनामराजा बसता था ११ श्रीरामचन्द्रजी के परम सेवक का और बर्णन क्याकरें जिसके सम्पूर्ण गुण पृथ्वी पर विस्तृत होकर पापोंको हरते थे १२ उस राजाके सेवकोंने कभी घूमते २ चन्दन लगे हुये इस अश्वमेध वाले घोड़ों को देखा १३ वे लोग विस्मित होकर घोड़े का पत्र देखनेलगे जोकि स्पष्ट अक्षरों से लिखा हुआ

व चन्दन से पूजित था १४ उसम रामचन्द्रजीका नाम लिखा दे-
खकर व घोड़ेको भी अति मनोहर जानकर हर्षितहो उनलोगों ने
उत्साह से युक्त होकर सभा में बैठे हुये राजा से जाकर जनाया
१५ कि हे स्वामिन्! अयोध्या नाम नगरी है व उसकेपति राजारा-
मचन्द्रजी हैं उन्हों ने अश्वमेधयज्ञके योग्य एकघोड़ा छोड़ा है
वह घूमते घूमते १६ तुम्हारेपुरके निकट अपनेसेवकों समेतआया
है सो हे महाराज ! उस अति मनोहर घोड़े को तुमग्रहणकरो १७
शेषजीने कहा अपने लोगों के ऐसे बचन सुनकर हर्ष से युक्त हो-
कर राजासुरथ मेघकी बाणी के समान गम्भीर बाणी से उन अ-
पने वीरों से बोला कि १८ राजा सुरथने कहा हम लोग धन्य हैं
जो अपने सेवकों समेत श्रीरामचन्द्रजी का मुखारविन्द देखेंगे इस
से अवश्य कोटिभटोंसे घिरे हुये उनके अश्व को पकड़ेंगे १९ व
तब घोड़ेको छोड़ेंगे जब कि श्रीरामचन्द्रजी आप आवेंगे बहुत
दिनोंसे मैं उनका भक्त ध्यान करताहूं २० शेषनागजी बोले कि
ऐसा कहकर राजाने अपनेसेवकोंको आज्ञादी कि हठकरके इसघो-
ड़ेको पकड़ो और अब तो दिखाईदिया कभी न छोड़ो २१ इस से
बड़ाभारी लाभ होगा यह हमारा मतहै क्योंकि इसके ग्रहण करने
से ब्रह्मा इन्द्रादिकों को दुर्ल्लभ श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंके दर्शन
करेंगे २२ वही पुत्र सुजनबान्धव पशु वा वाहन धन्य है जिसके
कारण श्रीरामचन्द्रजीकी प्राप्ति हो २३ इससे सुवर्णके पत्र से शो-
भित यथेच्छगामी व मनोरम इस यज्ञके अश्वको पकड़कर बाजि-
शालामें लेकर बांधो २४ ऐसे कहेगये हुये उन लोगोंने अतिवेग
से जाकर श्रीरामचन्द्रजी के अति सुन्दर उस घोड़ेको पकड़कर
राजाको देदिया २५ दैत्यों के शत्रु श्रीरामचन्द्रजी के महा अश्व-
को पाकर धर्म्म कर्म्म करनेमें विचक्षण राजा अपने बली सेवकोंसे
बोला २६ हे महाबुद्धिवाले वात्स्यायनजी ! एकाग्रमन होकर सुनो
उसके राज्यभरमें कोई परस्त्री रतपुरुष नहीं रहता था २७ व न
परद्रव्य परापवादमें इच्छा करने में कोई लम्पट रहता व न कोई
श्रीरामचन्द्रजीके कीर्त्तन को छोड़ अन्य उन्मार्गकी वार्त्ता जिह्वा

से निकालता था २८ जब कोई उसके यहां नौकरी चाकरी के लिये आताथा तो राजा पूछता था कि तुम सेवाके लिये आयेहो तो यदि धर्म्म कर्म्ममें विशारद हो तो अपनी अपनी चेष्टा कहो क्या कर्म्म करतेहो २९ भला एक पत्नी व्रतधर हो परधन में लोलुप तो नहीं हो पराये अपवाद के कहने में निरत तो नहींहो व वेदमार्ग्ग के विपरीत तो नहीं चलते ३० ये बीर श्रीरामचन्द्रजी का स्मरण पूजन बन्दनादि प्रतिदिन करतेहैं बस ऐसे यदि होवें तो उन लोगोंको श्री रामचन्द्रजीकी सेवाके लिये हम अपने यहां रखते हैं क्योंकि हम यम राजकी तुल्य कोपवान भी हैं ३१ व जो कोई इसके बिरुद्ध पापकारी पुरुषहों उनको सेवामें रखनेको कौनकहे वे हमारे राज्यसेही निकल जावें ३२ इसलिये उस राजाके देश भरमें पापीकोई नहीं रहताथा यहां तक कि कोई मनमें भी पाप नहीं करता सब के सब श्रीहरिके ध्यानसे सम्पूर्ण पापोंके नष्टहोजाने के कारण सदा आनन्द से युक्त रहते थे ३३ जब इस प्रकार उस राजा का देश धर्म्म से संयुत होगया तो उस देशके रहनेवाले सब पुरुष मुक्तहोने जाने लगे ३४ पर सुरथ के उसपुर में यमदूतों का आनाही बन्दहोगया तब यमराज एक मुनिकारूप धारण करके राजाके समीपआये ३५ वे बृक्ष के बकले के तो वस्त्रधारण किये थे व शिर में जटारखाये थे आकर उन्हों ने सभा के बीच में बैठे हुये रामचन्द्रजी के सेवक सुरथको देखा ३६ जिस के कि मस्तकपर तो तुलसी थी व वचन में श्री राम २ व धर्म्म कर्म्म की वार्त्ता अपने भटों को सुनरहेथे ३७ तब तपस्या की मूर्त्तिही के समान स्थितमुनि को देखकर राजा ने उन के चरणों के प्रणाम करके अर्घ्यपाद्य आचमनादि दिया ३८ जब सुख से बैठे बनाय सुस्ताये तो मुनि से राजा ने कहा कि आज हमारा जन्म धन्य है व आज हमारा गृह धन्य है ३९ अब आप रामचन्द्रजी की विविधप्रकार की मुझ से श्रेष्ठ कथा कहो जिन के सुन ने से पद २ पर पाप की हानिहोवेगी ४० ऐसा बचन सुनकर वे मुनि दांतों को निकाल कर व ताड़ी बजाकर अत्यन्त हर्षितहोकर हँसे ४१ हँसते हुये मुनि से राजा ने पूँछा कि अपने हँसने का

कारण प्रसन्न होकर हम से कहो जिससे हमारे मन को सुखहोवे ४२ तब राजासे मुनिने कहा कि बुद्धि से युक्त होकर राजन् सुनो हम अपने हँसने का उत्तम कारण अपनी बुद्धि से बिचारकर कहते हैं ४३ तुम ने पूँछा कि हरिकीकीर्त्तियां हम से कहो सो कौन हरि हैं व किसकी कौन कीर्त्तिहै सब कर्म्म के वशीभूत नरहैं ४४ कर्म्म से स्वर्ग्ग मिलता है व कर्म्मही से प्राणी नरकको जाता है कर्म्मही से पुत्र पौत्रादिक सब होते हैं ४५ इन्द्र सौ अश्वमेध यज्ञ करके परम पद इन्द्रासन को प्राप्तहुये ब्रह्माभी कर्म्मही से अद्भुत सत्य लोकको प्राप्तहुये ४६ व अनेक पवनादिक कर्म्मों के भोगकरतेहैं व अप्सराओं से सेवितहोकर नानाप्रकार के भोगबिलास करतेहैं ४७ इस से यज्ञादिककरो व देवताओं की पूजाकरो उस से मही-तलपर तुम्हारी बिमल कीर्त्तिहोगी ४८ मुनिका ऐसाबाक्य सुनकर कोप से क्षुभित मनहो रामचन्द्र में एकाग्रमन किये हुये राजा कर्म्मविशारद उन मुनि से बोला कि ४९ क्षय होनेवाले फलों के देनेवाली कर्म्मकी वार्त्ताहमारे आगे न कहो हमारे नगरके बाहर निकल जाओ क्योंकि तुमलोगों में निन्दितहो ५० इन्द्र शीघ्रही अपने लोकसे पतितहोंगे व ब्रह्माभी पतितहोंगे परन्तु श्रीरामचन्द्र जी के सेवक मनुष्य कभी न पतितहोंगे ५१ देखो ध्रुव प्रह्लाद व विभीषण को व और भी जो रामचन्द्र जी के भक्तहैं कभी पतित नहीं होते ५२ व जो रामचन्द्र जी के निन्दक दुष्टलोग हैं उन को यम के दूत पाशों में बांधकर लोहे के मुद्गरों से ताड़ित करेंगे ५३ हे द्विजाधम! ब्राह्मण होनेके कारण तुम्हारा देहदण्ड हम नहीं करते हैं हमारेयहांसे जाओ २ नहीं तो हमारे लोग तुम को ताड़ितकरेंगे ५४ भूप श्रेष्ठ सुरथ के ऐसा कहतेही सेवक लोग मुनि को पकड़ कर वहांसे निकालने पर उद्यत हुये ५५ तब यमराज लोक में एकही के बन्दना योग्य अपना रूप धारण करके राजा से बोले कि हे हरिके सेवक! हम तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्न हुये हम से बरमांगो ५६ हे सुब्रता! हम ने बहुत बातोंसे तुमको प्रलोभित किया परन्तु तुम ऐसे साधु सेवितहो कि श्रीरामकी सेवा से चलायमान नहीं

हुये ५७ तब यमराजजी को सन्तुष्ट देखकर राजासुरथ बोले कि यदि हमारे ऊपर सन्तुष्ट हुये हो तो हमको यह उत्तम वर देओ ५८ कि जब तक रामचन्द्रजी यहां न आवें तब तक हमारी मृत्यु न हो व हे धर्म्मराज! जब तक तुम से भी हम को भय कभी न हो ५९ तब यमराज राजा से बोले कि अच्छा तुम्हारेको वैसाही होगा व सब तुम्हारा वाञ्छित श्रीरघुपतिजी पूर्णकरेंगे ६० इतना कहकर यमराज अन्तर्द्धान होकर अपने पुरको हरिभक्तिपरायण राजाके चरितकी प्रशंसाकरके चलेगये ६१ वह रामचन्द्रजी का परमसेवक धर्म्मात्माराजा परमहर्षितहोकर श्रीरामचन्द्र जीके अश्वको ग्रहण करके श्रीहरि के सेवक अपने भृत्यवर्गों से बोला कि ६२ हम ने महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्र जीका यह घोड़ा पकड़ा है इससे युद्ध कर्म्म में परमचतुर तुमलोग समर करनेको सजो ६३ ॥

चौ०।इमिसुनिनिजभूपतिकीबानी। सब भटयुद्धकर्म्म विज्ञानी ॥
क्षणमहँ उद्यतह्वै अतिवेगा। पहुँचेसभामाहिंयुततेगा १। ६४
राजाके दशसुत अतिबीरा। चम्पक मोहक रिपुजयधीरा ॥
मोदक बलद प्रतापीनामा। अरुदुर्व्वारनामगुणधामा २। ६५
भूरिदेव हर्य्यक्ष सुतापन। अरु सहदेवविगतसबदापन ॥
ये दशसुतराजाके सारे। रणमहँ उद्यत भये दुलारे ३। ६६
समर गमन मतिकीनविशेखी। परमोत्साहसहितयुतशेखी ॥
हेमसुशोभितनिजरथराजा। परमबिराजित सबगुणआजा ४।६७
सुजवबाजि युतलीनबुलाई। सबसेवक युतसभा मँझाई ॥
बैठ्यहुभूपकरतअनुशासन। सबसेवकनकाहिंदे आसन ५।
सुनहुसकलसेवकजनप्यारे। रणमहँ लड़हुप्रचारिप्रचारे ॥
शङ्कातजहुसकलमन माहीं। हरिप्रतापकछुसंशयनाहीं ६।६८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेसुरथराज्ञाहयहरणंनाम एकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ४९ ॥

पचासवां अध्याय ॥

दो०। कह्यो पचसयें महँ यथा सुमति पूँछि रिपुनाशि ॥
करि अङ्गद कहँ दूत नृप निकट पठाय प्रकाशि १

अङ्गद सुरथ महीपके बहुत वाद प्रतिवाद ॥
भये सुरथ हय दीन नहिं कहि पठयो स्वप्रमाद २

शेषनाग वात्स्यायन मुनिसे बोले कि तब शत्रुघ्नजीने आकर अपने सेवकों से पूँछा कि यज्ञका अतिमनोहर वह घोड़ा कहाँ है १ तब वे सब महाबलीलोग बोले कि नहीं जानते कोई महाभट आये व घोड़े को पकड़ कर इस पुर को लेगये २ व उन बलवान् राजसेवकों ने हमलोगों को बहुत धिकारा और फटकारा और कहा कि इस कर्म्मके करनेमें भगवान् प्रमाण हैं ३ उनलोगों के वचन सुनकर मारे रोषको जिह्वा से दांतों को बार २ चाटतेहुये व दाँत कटकटाते हुये शत्रुघ्नजी अत्यन्त क्रुद्धहुये ४ व बोले कि हमारे घोड़े को हरकर तू कहाँजायगा अभी जनों समेत पुरको बाणों से उ-ड़ाये देते हैं ५ यह कहकर सुमतिसे कहा कि यह पुर किसका है व इसका स्वामीकौनहै जिसने हमारे घोड़ेको अतिहठसे हरलिया ६ शेषजी बोले कि राजाके ऐसे कोपयुक्त वचन सुनकर मन्त्री सुमति स्पष्ट अक्षरोंसेयुक्त सुन्दर वाणीसे बोले कि ७ इस नगरका कुण्डल नाम जानिये व बड़ा मनोहरपुर है इसमें बली व धर्म्मात्मा सुरथ नाम क्षत्रिय बसताहै ८ वह नित्यधर्म्म में तत्पररहकर श्रीरामचन्द्र जीके युगलचरणोंकी सेवाकरताहै मन कर्म्म व वचनसे हनुमान् की नाईं सेवकहै ९ इस धर्म्मचारी राजाके सैकड़ों चरितहैं व इस सर्व शोभन सुरथ के सेना भी बड़ी बलवतीहै १० जो उसने अश्वको लियाहै तो महायुद्ध यहां होगा अनेक रणविशारदवीर यहां पतित होंगे ११ ऐसा वचन सुनकर बोलनेवालों में श्रेष्ठ शत्रुघ्न जी अपने मन्त्रीसे फिर यह वचन बोले कि १२ इसविषयमें क्याकरनाहोगा कि जो उसने श्रीरामचन्द्र जी के घोड़े को पकड़ा है व युद्धकरने के लिये वीरोंसे सेवित इस हमारे कटकमें नहीं आताहै १३ सुमतिजी बोले कि हे महाराज ! तो इस राजाके समीप कोई अच्छा वक्ता दूत भेजना होगा जिसके कहने से बलवानों में श्रेष्ठ वह राजा सेना स-हित युद्धकरनेको आवेगा १४ व नहीं तो यदि किसी अभिमानी ने बिना जाने घोड़ा पकड़ाहोगा तो वह उस यज्ञ के शोभन वाजी

को हमलोगों को अर्पण करेगा १५ इसवाक्यको सुनकर बुद्धि-मान् व बली शत्रुघ्नजी अंगदसे यह विनय युक्त वचन बोले कि १६ तुम निकट बसेहुये सुरथ राजाके पुरको जावो और दूतता की रीति से जाकर राजा से कहो १७ कि तुमने रामचन्द्रजी का घोड़ा जानकर बांधाहो व विना जाने पर अब कितो देदो अथवा वीरों से युक्त समर करने को चलो १८ पर हमने तो ऐसा कहा है तुमने जैसे लंकामें रावण से श्रीरामचन्द्रजी के दूत बनकर कहा किया है वैसाही बल व बुद्धिसेयुक्त बरन उससेभी अधिककरके कहना १९ शेषनाग वात्स्यायनमुनि से बोले कि यह सुनकर अंगदवीर अंगी-कारकरके राजाशत्रुघ्नजी से बिदाहोकर वीरश्रेणीयुक्त उस राजा की सभाको गये २० व तुलसी की मञ्जरी धारण किये सुरथराजा को जीभसे श्रीरामभद्र का नाम अपने सेवकों से कहते हुये देखा २१ व राजाने भी मनोहर शरीर धारण किये अंगद वानरको देख कर शत्रुघ्नजी का दूत मान जानकर आप बालिनन्दन से बोला कि २२ हे वानरराज! कहां रहते हो व आप यहां कैसे आयेहमसे कारण कहें उसे जानकर फिर वैसा हम करें २३ शेषनागजी बोले कि ऐसा कहते हुये चित्त में विस्मययुक्त रामसेवा करने में तत्पर राजा से अंगदजी बोले २४ कि नृपश्रेष्ठ हम को बाली के पुत्र कपीश्वर अंगद जानो शत्रुघ्नजी ने आपके समीप दूतता करने के लिये भेजा है २५ सो हे राजन्! उन्होंने कहा है कि किसी ने अपने बड़े अनारी सेवकों के संग आकर अविवेक से बिना जाने हमारे घोड़े को इस समय पकड़ाहै २६ सो यदि तुम्हीं ने पकड़ा हो तो अपने राज्य पुत्र पौत्रादिसमेत उस घोड़ेको लेकर शत्रुघ्नजी के पास चलो व उन के पैरोंपर पड़के उन्हें शीघ्र देदेवो २७ नहीं तो श-त्रुघ्नजी के चलाये हुये बाणों से भिन्न शरीर होकर व बिना शिरके होकर पृथ्वीतल को शोभित करते हुये शयन करोगे २८ क्योंकि जिन रामचन्द्रजी ने क्षणमात्र में रावणको एक खेल के साथ नाश को पहुँचा दिया यज्ञ के योग्य उनके घोड़े को हरकर कहां जावोगे २९ शेषजीने वात्स्यायन मुनि से कहा कि ऐसे बहुत कहते हुये

अंगदसे राजासुरथ बोला कि सब तुम सत्यही कहतेहो तुम्हारा कहना मिथ्या नहीं है ३० परन्तु हे शत्रुघ्न के पदों के सेवक! अब हमारा बचन सुनो धीमान् श्रीरामभद्रजी का महान् घोड़ा हम ने पकड़ाहै ३१ सो शत्रुघ्नादिकों के भय से हम न छोड़ेंगे यदि श्री रामचन्द्रजी आप आकर हमको दर्शन देंगे तो ३२ हम उन के चरणों के नमस्कार करके अपने पुत्रों समेत सब राज्य कुटुम्ब धन धान्य व बहुत सेना सब कुछ उन को देदेंगे ३३ क्षत्रियों का यह धर्म्म है कि समय पाकर स्वामी से भी विरोध करें इस लिये श्रीरामचन्द्रजी के दर्शनकी इच्छा किये हुये हम वहां भी धर्म्मयुद्ध करेंगे ३४ व जो रामचन्द्रजी आप न आवेंगे तो शत्रुघ्नादि प्रचण्डवीरों को जीतकर अपने घरमें लेआकर बाँधदेंगे ३५ शेषनाग वात्स्यायन मुनि से बोले कि यह सुनकर धीमान् अंगद जी राजाको हँसे व महाधैर्य्ययुक्त महावाक्य राजासे बोले कि ३६ अंगद ने कहा बुद्धिहीन होनेके कारण तुम ऐसा कहतेहो क्योंकि वृद्धहोने के हेतु तुम्हारी बुद्धि जातीरही है जोकि तुम अपनी बुद्धि से अपने को बली जानकर राजा शत्रुघ्नजी को धिक्कारतेहो ३७ जिन्हों ने मान्धाताराजा के शत्रु लवणदैत्यको एक खेल के साथ मारडाला व जिन्होंने बड़े २ प्रबल वैरियों को मारडाला है ३८ जिन्हों ने कामचारी विमानपर चढ़े हुये महावीर विद्युन्माली नाम राक्षस को मारडाला उन वीरेन्द्र को तुम बांधनाचाहतेहो हमको तो बुद्धिहीन जानपड़तेहो ३९ फिर उनसे विशेष उनके भतीजे महाबली परमास्त्रवेत्ता पुष्कलजी हैं जिन्हों ने समर में महादेव के गणोंमें श्रेष्ठ वीरभद्रको सन्तुष्ट करदिया ४० व इन के बलयुक्त पराक्रम को हम क्या वर्णनकरें जिन के समान पृथ्वी पर बल यश व शोभा से युक्त कोई विद्यमानही नहीं है ४१ वे हनुमान् जी जिन के निकट विद्यमानहैं जोकि श्रीरघुनाथजी के चरणों मेंही बुद्धि लगाये रहते हैं जिन के अनेक कर्म्म तुम ने भी सुनेहोंगे ४२ जिन्होंने त्रिकूट पर्व्वत सहित लङ्कापुरी जबरदस्ती एक क्षणमात्रमें भस्मकरडाली व उस दुर्बुद्धि राक्षसेन्द्र रावण के महापराक्रमी अक्षनाम पुत्रको

मारडाला ४३ व जिन्हों ने देवताओं समेत द्रोणाचल को अपनी पूंछ की फुनगीपर धरकर सैनिकों के जिलाने के लिये कई बार पहुँचाया ४४ उनके चरित्रोंको श्रीरामचन्द्रही जानतेहैं अन्य कोई मूढ़बुद्धिवाला नहीं जानता है जिन कपीन्द्र हनुमान् जी अपने सेवक को श्रीराघव क्षणमात्र भी अपने हृदयसे नहीं भूलते ४५ व जो सब पृथ्वीको लीललेतेहैं वे सब सुग्रीवादि वानरेन्द्र शत्रुघ्नजी की सेवा करतेहैं व उन के मुखकी ओर देखा करतेहैं कि क्या आज्ञाहुआ चाहती है ४६ फिर कुशध्वज नीलरत्न महास्त्रवेत्ता रिपुताप प्रतापाग्र्य सुबाहु विमल और सुमद ४७ राजावीरमणि सत्यवान् ये सब श्रीरामचन्द्रजी के सेवक व अन्य भी जो राजा लोगहैं सब श्रीराघवेन्द्र की उपासना करतेहैं ४८ उस वीरसागर रूप में मशक के समान तुम कौनहो यह जानकर अपने पुत्रोंसमेत परमकृपालु शत्रुघ्नजीके शरण में चलो ४९ व घोड़ा इनको देकर फिर राजीवलोचन श्रीरामचन्द्रजीके समीप पहुँचो व उनके दर्शन से अपने जन्म को कृतार्थ करो ५० शेषनागजी बोले कि ॥

चौ० विविधप्रकारकहतइमिबानी । अङ्गदसोंकहनृपविज्ञानी ॥
इन्हेंदिखावहु मोहिं तुरन्ता । सब ममगोचर नाहिं बलवन्ता १।५१
जिमि ममबल तिमिअंगदनाहीं । है हनुमानसुबलजगमाहीं ॥
जो पीछे करि रामहिं आपू । आयहु हय पालन युत दापू २।५२
जो मैं कर्म्म वचन मन पाहीं । कपटछोड़ि करिचितउनमाहीं ॥
भजत राम कहँ तो श्रीरामा । दर्शन देहैं तुरत अकामा ३।५३
नहिं तो हनुमदादि सब बीरा । बँधिहैं मोहिं महारणधीरा ॥
रामभक्ति युत वे बलवन्ता । लेहैं बाजी छीनि तुरन्ता ४।५४
जाहु कहहु रिपुहन नृपपाहीं । मम सब वचन अशङ्कतहांहीं ॥
सजें सकलभट रणहितनीके । महाबली हम आवत ठीके ५।५५
वे बिचारि करिहैं जो योगू । रण महँ आय दिखाय नियोगू ॥
हमसों कितो छुड़ैहैं बाजी । कितो देइहैं ह्वै मन राजी ६।५६

यह सुनकर जहां शत्रुघ्नजी थे वहां जाकर अंगद ने जो कुछ राजा सुरथ ने कहा था सब कह सुनाया ५७ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेऽङ्गदस्यदूतत्ववाक्यंनाम पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

दो० इक्यावनयें महँ कह्यो पुष्कल चम्पकयुद्ध ॥
जहां उभय वरवीरकिय परमसमर ह्वै क्रुद्ध १
पर पुष्कल मूर्च्छितभये तबचम्पकहनुमान ॥
भिड़े महारण करि विकल चम्पकभयोशयान २

शेषनागजी वात्स्यायन मुनिसे बोले कि सुरथके वचन अंगद से सुनकर सब रणकर्म्म में विशारद लोग सजसजाकर रथोंपर चढ़े १ व डङ्का बाजनेलगा नगारों और तुरहियोंका बड़ाभारी नाद हुआ व वीरों के गर्ज्जने का शब्द रणभूमि में हुआ २ रथों के व गजों के बृंहित (चिग्घार) शब्दसे सब विश्वभर व्याप्तहोगया व इस लोक से स्वर्गतक महाशब्द पहुँचा ३ रणके उत्साह से युक्तहोकर समरकर्म्म में विशारद वीर लोग विविध प्रकार के वीरशब्द करने लगे जो सुनने मात्र से कातरोंको भयङ्कर थे ४ इसप्रकार के कोलाहल के होने पर सुरथनाम राजा अपने दशपुत्रों व सैनिकों सहित रणभूमि में आपहुँचा ५ व उसने हाथी घोड़े रथ व पैदरों से वहांकी पृथ्वी सब पूर्ण देखी मानो वीरोंका सैन्यसमुद्र सब ओरसे आकर पृथ्वी को डुबोना चाहता था ६ व सुरथको भी शङ्खके नादों से युक्त व जयशब्दों से युक्त संग्राम करने में उद्यत देखकर राजा शत्रुघ्नजी अपने मन्त्री सुमति से बोले कि ७ शत्रुघ्नजी ने कहा महासैन्य सहित यह राजा तो युद्ध करने के लिये आगया अब यहाँ पर जो हमलोगों को करनाहो सो हे महामतिवाले ! अति वेग कहिये ८ सुमतिजी बोले कि सब शस्त्रास्त्रों के चलाने में विशारद अत्युग्र पुष्कलादि वीर व अन्य भी समरकर्म्म में परम चतुर वीरोंको संगलेकर यहाँ पर युद्ध करना चाहिये ९ परन्तु राजासुरथ के साथ परमशूरतायुक्त पवन के पुत्र हनुमान्जी युद्धकरें क्योंकि

ये सब युद्धकर्म में अतीवविशारद हैं इससे अत्यन्त प्रबल रण करेंगे १० शेषनाग बोले कि जबतक महामन्त्री ऐसा कहनाचाहे कि तबतक महाउद्धत राजाके पुत्रों ने आकररणमें अपने २ धन्वाओंकी प्रत्यञ्चा खींचकर टङ्कोरदिया ११ उनको देखकर अति बलों से उत्कट पुष्कलादि महाबलशाली रथोंपर चढ़ २ कर जाय धन्वाओं पर रोदाचढ़ाते बाण चढ़ातेहुये सम्मुख पहुँचकर जुट गये १२ परमास्त्रवेत्ता पुष्कलवीर महाबलशाली महारणधीर चम्पकनाम राजपुत्रके संग द्वन्द्वयुद्ध करनेलगे १३ व जनक के पुत्र कुशध्वज मोहकनाम राजपुत्र से रण करने लगे रिपुञ्जयके साथ विमल नाम इधरकेवीर व दुर्व्वार नाम राजकुमार के संग इधर के राजासुबाहु १४ प्रतापीके संग प्रतापाग्र्यनाम राजा व बलामोदके साथ अंगद हर्य्यक्षनाम राजसुतके संग नीलरत्ननामवीर व सहदेव नाम राजपुत्रसे राजा सत्यवान्जी जुटे १५ व महाबली राजावीरमणि भूरिदेवके संग समर करनेलगे व असुताप के साथ उग्राश्व नाम राजा अपने बल समेत लड़ने लगे १६ इनसब युद्धकर्म्म में विचक्षणोंने द्वन्द्वयुद्धही किया इनमें सबलोग सब शस्त्रास्त्रोंके चलाने में कुशल व सब युद्धमें विशारद थे १७ हे मुनिसत्तम! इसप्रकारसुरथ के पुत्रों के संग युद्धहोनेपर बड़ाभारी कदनहुआ १८ तब पुष्कल जी चम्पकसे बोले कि हे राजपुत्र ! तुम्हारा क्या नामहै तुम धन्यहो जो रणमें हमारे संग युद्धकरनेको प्राप्त हुयेहो १९ अब इससमय ठहरोकहाँजातेहो तुम्हारा जीवन कैसेहोसक्ताहै आवो सबशस्त्रास्त्रकोविद हमारे साथयुद्धकरो २० इसप्रकार पुष्कलजीके वचन सुन कर महाबली राजपुत्र चम्पक मेघनादके समान गम्भीर वाणी से पुष्कलजीसे बोला कि २१ चम्पकनेकहा नाम और कुलसे यहाँपर युद्ध न होगा तथापि तुम्हारे पूँछनेसे बलसहित अपना नाम हम बताते हैं २२ हमारी माता श्रीरघुनाथजी हैं व हमारे पिता राघवजीहैं व हमारे बन्धु श्रीरामभद्रजी हैं व स्वजन राघवहीहैं २३ हमारानाम रामदासहै क्योंकि हम सदा रामहीके सेवकहैं इससे भक्तके ऊपर कृपाकरनेवाले रामचन्द्रजी युद्धमें हमको तारेंगे २४ अब लोकके

मतपर स्थितहोकर इससमय तुमसे कहतेहैं कि राजा सुरथ के तो हम पुत्रहैं व माताका वीरमती नामहै २५ व हमारे नामका वह वृक्ष है जो कि वसन्तऋतुमें सबको शोभितकरताहै वह मधुसे मोहित भ्रमर लोग जिस रसीलेको त्यागदेतेहैं उसकेपुष्पपर बैठतेहीनहीं २६ व रंग उसका सुवर्णके तुल्य होताहै व मध्यमें लिंगके समान शरीर धारण करताहै हे वीर! उसीकेनामसे हमारा नाम जानो जो जनोंको मोहित करताहै अर्थात् चम्पक नामहै २७ अब समरमें बाणोंसे युद्ध करो परन्तु हमको कोई जीतनहीं सक्ता अब हम अपना अद्भुत पराक्रम दिखावेंगे २८ शेषनाग वात्स्यायनमुनिसे बोले कि यह महावाक्य सुनकर पुष्कल हृदयमें बहुत सन्तुष्टहुये व उसको दुर्ज्जय मानतेहुये रणमें बाण चलानेलगे २९ पुष्कलवीरको रणमें कोटि प्रकार से बाणछोड़तेहुये देखकर बलीचम्पक ने अतिकोपकरके अपने धन्वापर प्रत्यञ्चाचढ़ाई ३० व अपने नामसे चिह्नित सुवर्ण की फोंकलगेहुये व वैरिवृन्दों के विदारण करनेवाले अतितीक्ष्ण शरोंको चलाया ३१ उन बाणों को समरभूमि में सर्व्वत्र अति तीक्ष्णबाणबरसातेहुये व महाअन्धकार बाणों से करतेहुये महावीर पुष्कलजीने काटडाला ३२ वीरपुष्कलके काटेहुये अपने बाणों को देखकर चम्पकवीरने कोपकरके बली पुष्कलवीरको स्पर्द्धापूर्व्वकपुकारा ३३ कि हे पुष्कल ! रणछोड़कर भागो२ ऐसा बार२ कहकर बड़ी शीघ्रताके साथ उसने दशबाण पुष्कलजीके हृदयमें मारे ३४ उन तीव्रवेगवाले बाणोंने पुष्कलजी के हृदयमें लगकर बहुतसा हृदयका रुधिर पानकिया ३५ उनबाणोंसे व्यथित होकर पुष्कलवीर ने पांचबाण अतितीक्ष्ण महाकोपकरके चलाये मानो उनसे पर्व्वतों का भी विदारण होताथा ३६ वे बाण आकाशमें जाकर चम्पक के बाणोंसे खूबहीलड़े परन्तु अन्य बाणोंसे राजकुमार चम्पकने उनके सौ२ खण्डकरके गिरादिया ३७ उन सुतीक्ष्णाग्र बाणों को काटकर सुरथके बली उस पुत्रने सौबाण और चलाकर पुष्कलजीके हृदयमें मारा ३८ परन्तु हृदयमें लगने के पहिलेही महात्मा पुष्कलवीरने उनके सैकड़ों खण्ड करडाले इसलिये पुष्कलजी के शरोंकी बाधासे

पीडित वे बाण समरके निकट पृथ्वीपर गिरपड़े ३९ तब पुष्कलजी का यह महाकर्म्म देखकर बली उस राजकुमारने सहस्र शर छाती में लगनेके लिये चलाये ४० परन्तु परमास्त्रवेत्ता पुष्कलजीने उनको भी काटडाला फिरभी उसने अपने धन्वामें दशहजार बाणचढ़ाये ४१ उनकोभी परमास्त्रवेत्ता पुष्कलजी ने काटकर व अत्यन्त कुपित होकर बाणवृष्टि करदी ४२ उस शरवृष्टिको अपनी ओर आतीहुई जानकर चम्पकवीर ने बहुतअच्छा २ कहकर इन पुष्कलवीरको बाणोंसे ताडित किया ४३ तब चम्पकको महावीर्य्यसमन्वित देख कर परमास्त्रवेत्ता पुष्कलवीर ने अपने धन्वापर ब्रह्मास्त्र चढ़ाकर चलाया ४४ उनका चलायाहुआ वह महास्त्र दशोदिशाओंमें प्रज्व-लितहोगया व आकाश अन्तरिक्ष व पृथ्वीमें व्याप्त होकर प्रलय करनेपर उद्यतहुआ ४५ उस अस्त्रको छूटेहुये देखकर शस्त्र अस्त्रोंके चलाने में परमविज्ञ चम्पकनेभी उसअस्त्र के संहार करने के लिये ब्रह्मास्त्रही परमउद्यत प्रबलशत्रु पुष्कलकी ओरको चलाया ४६ अब उनदोनों ब्रह्मास्त्रोंका तेज एकमें मिलकर औरभी प्रज्वलित होनेलगा इसलिये लोगोंनेजाना कि प्रलयहुआ चाहता है बस चम्पकके ब्रह्मास्त्रने पुष्कलके ब्रह्मास्त्रमें मिलकर उसे हरलिया ४७ उसके इस अद्भुत कर्म्मको देखकर खड़ारह ऐसा कहकर पुष्कल जीने बड़ेक्रोधसे प्रमाणकरने के अयोग्य बहुत से बाण चम्पकके ऊ-पर चलाये ४८ तब उन आतेहुये बाणोंको कुछभी न समझकर प्रसन्नमन होकर चम्पकने पुष्कलजी के ऊपर महादारुण रामास्त्र चलाया ४९ उस महात्मा चम्पक के चलायेहुये दारुणअस्त्र को देखकर जबतक पुष्कलजी उसके काटनेके लिये अन्य कोई अस्त्र चलाया चाहें कि तबतक वह आकर इनके लगगया ५० बस ये मूर्च्छित होगये व झट चम्पकने इनको अपने रथ में लेकर बांध दिया व उसने चाहा कि इनको अपने पुरको भेजदूं ५१ पुष्कल जीकी यह दशाहोनेपर पुष्कलकी ओर सेना में महाहाहाकारहुआ व सब योद्धा भागकर शत्रुघ्नजीके समीप गये ५२ उन लोगों को भागेहुये आते देखकर शत्रुघ्नजीने हनुमान्जी से कहा कि किस

वीरने वीरोंसे युक्त हमारी सेना को भगाया ५३ तब हनुमान्‌जीने कहा कि हे महीनाथ ! परवीरों के हन्ता पुष्कलजीको बांधकर महा-उद्धत यह चम्पक अपने पुरको लिये जाताहै ५४ उनके ऐसे वचनको सुनकर अत्यन्त कोपयुक्त होकर शत्रुघ्नजी हनुमान्‌जी से बोले कि शीघ्रही राजकुमारसे पुष्कलको छुड़ावो ५५ महावली राजाका यहपुत्रहै जो पुष्कलवीरको बांधे लियेजाताहै हे वीराग्रय! उससे पुष्कलको छुड़ावो तुम कैसे समर में चुप्पे बैठे हो ५६ इतनी बात के सुनतेही हां ऐसा कहते हुये महाबली हनुमान्‌जी चम्पक नाम भटसे पुष्कलजी के छुड़ाने को गये ५७ उनके छुड़ाने के लिये हनुमान्‌जी को आये हुये देखकर परमकोपी चम्पक ने सैकड़ों हजारों बाण तरपटकमारे ५८ परन्तु उस महात्माके चला-येहुये सब बाण महाबली हनुमान्‌जीने तोड़डाले फिर भी उसने बहुतसे बाणचलाये ५९ शत्रुके चलायेहुये उन सब बाणोंको भी हनुमान्‌जीने चूर्णकरडाला व एकसांखूकावृक्ष हाथमेंलेकर चम्पक के मारा ६० परन्तु इनके चलायेहुये उस वृक्षके तिल २ खण्ड उस महाबलीने करडाले तब हनुमान्‌जीने एकहाथी को उठाकर उस राजकुमार के मस्तकपर पटकदिया ६१ परन्तु चम्पकने उसे ऐसा मारा कि मृतकहोकर वह भी पृथ्वीपर गिरपड़ा तब परमास्त्रवेत्ता हनुमान्‌जीने शिलाओंको उसके ऊपर चलाया ६२ चम्पकने उन सब शिलाओंको एक क्षणमें चूर्णीभूतकरडाला उसकी ऐसी बाणा-वरीसे हे ब्राह्मणदेव ! यह महाआश्चर्य्य हुआ ६३ अपनी चलाई हुई उन सब शिलाओंको चूर्णितदेखकर उन हनुमान्‌जीने उसको अत्यन्त पराक्रमी हृदयमें जानकर बड़ा कोप किया ६४ व आकर चम्पकके हाथपकड़कर हनुमान्‌जी आकाशको उड़गये व झट वहां चलेगये कि जो स्थान नीचेसे किसीको दिखाईही नहीं देताथा ६५ व आकाशमें ठहरकर चम्पक हनुमान्‌को व हनुमान् चम्पक को लगे मारने पीटने धुनकने इसबड़ेभारी बाहुयुद्धमें हनुमान्‌जी बहुत पिटे ६६ तब पर्व्वतों के गर्वकोदारणकरनेवाले हनुमान्‌जीने अपने मनमें बड़ाही कोपकिया व पैरपकड़कर चम्पकको वहांसे बड़े बलसे

पृथ्वीपर पटकदिया ६७ परन्तु कपीन्द्रने जब इसप्रकार उसे ताड़ित किया तो वह एक क्षणमात्रही में पृथ्वीपर से उठकर अतिवेग से कूदकरजाय वहीं हनुमान्जीकी पूंछपकड़कर आकाश में सबओर घूमने व घुमाने लगा ६८ हनुमान्जीने उसका बल देखकर बहुत हँसकर उसको एक पैरपकड़कर उससे सौगुण अधिक घुमाकर हाथियों के ऊपरको फेंक दिया ६९ ॥

चौ० तब मूर्च्छितह्वैराजकुमारा । महाबली चम्पक बरियारा ॥
वीरभूमिकहँकरतसुशोभित। गिरयोधरणिपरपरमअशोभित १।७०
तब हाहाकरि सकल पुकारे। चम्पक अनुचर जो रण कारे ॥
चम्पकपाशबद्ध रणधीरहि ।पुष्कल कहँ मोच्यहु बरवीरहि २।७१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेपुष्कल
सोचननामैकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

बावनवां अध्याय ॥

दो० बावनयें महँ पवनसुत सुरथ महारण घोर ॥
भयहु बहुरि पुष्कलसुरथ रणभो महाकठोर १
पुनिरिपुहनअरुसुरथसोंरणभोअतिहिकराल ॥
जहँपवनजपुष्कलरिपुहमूर्च्छितसुरथनिहाल २

शेषनाग वात्स्यायन मुनिसे बोले कि चम्पकको पतित देखकर बली सुरथ क्षत्रिय पुत्रकेदुःखसे व्याकुलहो रथपरचढ़कर वहां गया १ व अत्यन्त कोपसंयुक्तहो निश्वासों को छोड़तेहुये महाबलवान् सुरथने कपीन्द्रजीको स्पर्द्धापूर्वक पुकारा २ अपनेको पुकारते हुये राजाको देखकर महावीर रणधीर कपीश्वरजी महावेगके साथ वहां पहुँचे ३ आतेहुये कपीन्द्र हनुमान्जीको देखकर एक तृणके समान समझताहुआ राजासुरथ मेघके शब्दके समान गम्भीर वाणीसेबोला ४ सुरथजीने कहाकि हे कपिवर्य्य! तुम धन्यहो व महाबल पराक्रमी हो जिन्हों ने लङ्का में बड़ाभारी रामचन्द्रजी का कार्य्यकिया ५ तुम रामचन्द्रजीके चरणके सेवक व भक्तहो व तुम वीरने हमारे बली पुत्र चम्पकको पतित किया ६ इस समय अब हम तुमको बांध कर अपने नगरको जायँगे इससे हे वानरराजों के राजा कपीश्वर!

अब यत्नसे स्थिरहोवो हमारे इस कहनेको सत्यही जानो ७ सुरथ के ऐसे वचन सुनकर हनुमान्जी वीरों से भूषित उस रणमें धीर वाणीसे राजासे बोले कि ८ हनुमान्जीने कहा तुम रामचन्द्रजी के चरणोंके स्मरण करनेवालेहो व हमलोग रामचन्द्रजीके चरणोंके सेवक हैं जो हठ से हमको बांध लेवोगे तो हमारे प्रभु श्रीराघव छुड़ा लेंगे ९ हे वीर! अब अपने मनकी प्रतिज्ञाको पूरीकरो जो वचन कहा है उसे सत्यकरो क्योंकि रामचन्द्रजीको सुमिरताहुआ प्राणी दुःखके अन्त को पहुँचताहै यह सब वेद कहतेहैं १० शेषनाग बोले कि ऐसा कहतेहुये हनुमान्जीकी प्रशंसा करके सुरथ ने शानसे अतितीक्ष्ण करायेहुये बहुतसे दारुण बाणोंसे पवनकुमारजीको मारा ११ रुधिर गिरतेहुये उन बाणोंको कुछभी न गिनकर बाण चढ़ेहुये धन्वाको सुरथकेहाथसे हनुमान्जीने छीनलिया १२ व दोनों हाथोंसे पकड़ कर लीलापूर्व्वक उसे तोड़डाला व चिक्कारकरके महाभटोंको नखों से विदीर्ण करडाला १३ हनुमान्जी के हाथोंसे तोड़ेहुये अपने धन्वाको देखकर बड़ीभारी प्रत्यञ्चासे विभूषित और धन्वा सुरथने लिया व सन्धान किया १४ उसेभी मारेरोषके वानरसिंहने हाथ से छीनलिया व तोड़डाला तब उसने और धन्वा लिया महाबली हनुमान्जीने उसेभी तोड़डाला १५ उसचापके टूटजानेपर उसने अन्य धन्वा लिया उस चापकोभी महावेगसमन्वित वानरराजने तोड़ डाला १६ इसप्रकार राजाके अस्सीधन्वा हाथहीसे छीन २ कर हनुमान्जीने दो २ खण्ड करडाले व क्षण २ पर मारेरोषके वायुनन्दन जी बड़े ऊंचेस्वरसे नादकरतेरहे १७ तब अत्यन्त कोपकरके राजाने अत्युग्रशक्ति हाथमेंली व मारी उस शक्तिके लगनेसे वीर हनुमान् जी पतितहुये व क्षणमात्रही में उठकर १८ अत्यन्त कोपकर कूद कर राजाकारथ लेकर अतिवेगसे उड़े कि लेकर समुद्रमें डालें १९ उनको रथलेकर उड़ेजातेहुये देखकर परवीरोंकेहन्ता सुरथने परिघों से पवनतनयजीके हृदयमें ताड़ित किया २० तब उन्होंने बड़ीदूरसे उसके रथको छोड़दिया कि एक क्षणमात्रमें भूमिपर गिरते २ चूर्णीभूत होगया तब राजा दूसरेरथपर चढ़के अतिवेग से पवनतनयके

ऊपरपहुँचा २१ परन्तु हनुमान्‌जीने रणभूमिमें अपनी पूँछसे लपेटकर घोड़े सारथि पताका समेत उसरथकोभी पटककर तोड़डाला २२ तब महाबलीराजा अन्य रथपर चढ़करआया उसरथकोभी महाकुपित पवननन्दनजी ने तोड़डाला २३ उसरथको टूटाहुआ देखकर सुरथ अन्य रथपर समाश्रितहुआ उसेभी घोड़े सारथि समेत हनुमान्‌जी ने तोड़डाला २४ इसरीतिसे उञ्चासरथ आतेहीकेसाथ हनुमान्‌जी नेतोड़े उनके इसकर्म्मको देखकर सेनासहितराजा अत्यन्त विस्मित हुआ २५ व अत्यन्त कोपयुक्तहोकर बोला कि हे वानरेन्द्र! तुमधन्य हो हे पवनकुमार! जो कर्म्म तुमने कियाहै उसको न आजतक किसी ने कियाहै न अब कोई करेगा २६ परन्तु अब जबतक हम धन्वा को खींचें एकक्षणभर हमको परखो हे रामचन्द्रजीके चरणकमलके भ्रमर पवनकुमार! जल्दी न करो २७ इतना कहकर कोपयुक्त होकर चापपर प्रत्यञ्चा चढ़ाई व उल्वण बाण चढ़ाकर उसे पाशुपतास्त्रसे योजितकिया २८ उसमेंसे अनेक भूत वेताल पिशाच योगिनी कूष्माण्डादि सहसा उत्पन्न हुये और हनुमान्‌जीको भय दिखानेलगे २९ व हनुमान्‌जी पाशुपतास्त्रोंसे बांधलियेगये उनको बँधेहुये देखकर जबतक लोगोंने हाहाकार कियाहै कि तबतक पवनकुमारजीने ३० अपने मनमें श्रीरामचन्द्रजी का स्मरण करके एक क्षणमात्रमें उसेभी तोड़डाला व जैसेही इनके अंग उससे छूटे कि फिर येराजा सुरथसे युद्धकरनेलगे ३१ उनको पाशुपतास्त्रसे छूटेहुये देखकर परमास्त्र जाननेवाले राजा सुरथने महाबली जानकर ब्रह्मास्त्र धन्वापर चढ़ाया ३२ परन्तु हँसते हुये मारुतनन्दनजी ने उसे पकड़कर लीललिया ब्रह्मास्त्रको लीलेहुये देखकर राजाने श्रीरामचन्द्रजीका स्मरण किया ३३ व श्रीदशरथनन्दन श्रीरामभद्रका स्मरण करके रामास्त्र धन्वापर धारणकिया व धारणकरकेकहा कि हे कपिपुंगव! अब तुम बँधगये ३४ यह सुनकर जबतक हनुमान्‌जी वहां से हटाचाहें कि तबतक राजा ने रामास्त्रसे रणभूमिमें हनुमान्‌जी को बांधलिया क्योंकि हनुमान्‌जी रामचन्द्रजीके सेवकहैं फिर रामास्त्रसे कैसे न बँधते ३५ फिर रामास्त्रसे बँधेहुये हनुमान्‌जी राजासे बोले कि हे महीपाल! हम

क्याकरें अपने स्वामी केही अस्त्रसे बांधेगये अन्य प्राकृती अस्त्र पाशुपत व ब्राह्मास्त्रादिकों से नहीं बँधे ३६ सो हम उस अपने स्वामी के अस्त्रको मानतेहैं तुम अपने पुरको हमें लेचलो दयानिधि हमारा स्वामी आकर हमको छुड़ावेगा ३७ हनुमान्जीके बँधजाने पर पुष्कलवीर अत्यन्त क्रुद्धहुये व राजाके समीप युद्धकरनेको जा पहुँचे तब आतेहुये पुष्कलजीको देखकर राजाने आठ बाणमारे ३८ तब बली पुष्कलजीने अनेक सहस्रों बाण राजा के मारे व राजाने समरमण्डल में पुष्कल के अनेक बाण काटडाले ३९ इस प्रकार जब क्रुद्धहोकर पुष्कल व सुरथ ने युद्धकिया तो दोनोंके शरों से स्थावर जङ्गम सब जगत् व्याप्त होगया ४० उनदोनोंके रणका उद्यम देखकर देवोंके सैनिक लोगभी मोहितहोगये फिर क्षणमात्र में त्रसित होजानेवाले मनुष्योंकी कौनसी बातहै ४१ महामन्त्रों से युक्त अस्त्र प्रत्यस्त्रों की उलटापलटी से महातुमुल युद्धहुआ जिसको देखकर वीरोंकेभी रोम खड़े होगये ४२ तब कोपकरके राजाने लोहे का महाविकराल बाण पुष्कलजीके ऊपरको चलाया उन्होंने वत्स-दन्त नाम बाणों से उसे काटडाला ४३ उस शर के कटजाने पर राजाने कोपसे अन्यबाणलिया जबतक पुष्कलजी उसे काटाचाहें कि तबतक वह उनकी छाती में लगगया ४४ उसके लगने से महा-तेजस्वी पुष्कलवीर मूर्च्छितहोगये यह महाअद्भुत हुआ क्योंकि ऐसा अद्भुतयुद्ध राजाके संगकरके तब महामति पुष्कल मूर्च्छितहुये ४५ पुष्कलके पतितहोनेपर शत्रुओं को सन्ताप करानेवाले राजा शत्रुघ्नजी क्रुद्धहोकर रथपर चढ़के सुरथकेसंग युद्धकरनेकोगये ४६ व महाबली शत्रुघ्नजी सुरथराजा से बोले कि तुमने महाकर्म किया जो पवनकुमारको बांधलिया ४७ व महाबल पराक्रम से तुम ने महाबली पुष्कलको भी पातित किया व और भी हमारे बहुतसे वीरोंको तुमने रणमें गिराया ४८ अब इससमय खड़ेरहो हे राजन्! हमारे वीरोंको रणमें गिराकर कहां जानेपावोगे अब हमारेबाणों को सहो ४९ वीर शत्रुघ्नजीका ऐसा वचन सुनकर बली राजासुरथ अपने सुन्दर चित्तमें श्रीरामचन्द्रजी के चरण स्थापितकरके बोला

कि ५० हमने तुम्हारे हनुमदादि वीरोंको समरमें पातित कियाहै व इस समय रणांगणमें तुमकोभी पातित करेंगे ५१ अब अपने रामचन्द्रजीका स्मरणकरो जो कि आकर तुम्हारी रक्षाकरें हे शत्रुतापन! अन्यथा हमारे सम्मुख तुम्हारा जीवन नहीं होसक्ता ५२ इतना कहकर राजाने सहस्रों बाण शत्रुघ्नजी के मारे यहांतक कि उनको शरसमूह के पिंजरे के भीतर करदिया ५३ तब बाणसमूह छोड़ते हुये उस राजाके बाणोंके नाश करने के लिये शत्रुघ्नजीने आनत ग्रंथिवाला अग्निबाण चलाया ५४ उस अस्त्र को चलायेहुये देख कर महान् राजा सुरथने वारुणास्त्रसे युक्तकरके करोड़ों बाण मारे कि जिनसे अग्निशर शान्त होगया ५५ तब शत्रुघ्नजी ने उस योगिनीके दियेहुये सम्मोहनास्त्रको धन्वापर चढ़ाया जो अद्भुत अस्त्र सब वीरों को मोहित व निद्रा करानेवाला है ५६ उस मोह करानेवाले महास्त्र को देख श्रीरामचन्द्रजीका स्मरण करके सब शस्त्रों के चलाने में परमकोविद राजा शत्रुघ्नजी से बोला कि ५७ श्रीरामचन्द्रजी के स्मरण से मोहित हमको अन्यअस्त्रादिक नहीं मोहित करसक्ते क्योंकि ऐसे हमको मायाभी डरती है ५८ ऐसा सुरथवीरने कहाभी तथापि शत्रुघ्नजीने मोहनास्त्र चलायही दिया परन्तु सुरथने एक बाण से उसे काटडाला इससे वह रणमण्डलमें गिरपड़ा ५९ उस मोहनास्त्रको विफल देखकर राजा शत्रुघ्नजीने अत्यन्त विस्मित होकर दूसरा बाण धन्वापर चढ़ाया ६० जिससे कि महासुर लवणको मारा था जो सब असुरोंका मर्द्दन करता था उस घोरकालाग्नि के समान प्रकाशित बाणको चापमें चढ़ायाद१ उस बाणको देखकर राजाने कहाकि यह बाण दुष्टोंके हृदयमें लगता है श्रीरामचन्द्रके भक्तोंके तो सम्मुख प्रकाशमानभी नहीं होता ६२॥

चौ० इमिभाषतनृपहृदयमँझारी । रिपुहन मारयो बाण करारी ॥
ज्वाला माला तुल्य प्रकाशी । लाग्योशर नृपकीन उदासी२।६३
तासु बाण हति सो महिपाला । दुःखार्त्तित पीडित सुबिहाला ॥
मूर्च्छित ह्वै रथपर गो सोई । जिमिसोवत मृतिबशनरकोई ३।६४
क्षणमहँत्यागिव्यथासो भूपा । बोल्यहु रिपु सों बचन अनूपा ॥

सहहु प्रहार एक मम वीरा । जैह्यहु कहां यहांसों धीरा ४ । ६५
यह कहि ज्वाला मालोपेता । स्वर्णपुंख शर तीक्ष्ण निकेता ॥
तान्यो भूप चाप पर नीके । महासमरमहँ गुनि मनठीके ५ । ६६
चापमुक्त सो शर मगमाहीं । काट्यो रिपुसूदन शक नाहीं ॥
परकाट्यहुपरशरफलआगा । रिपुहनकेहृदिलग्यो अभागा ६ । ६७
ताशरसों मूर्च्छित रिपुहन्ता । रथ पर व्याकुल गिर्‌यो तुरन्ता ॥
तब हाहा करि सैन्य पुकारी । भागि चली इतउत न सँभारी ७ । ६८
रामचरण सेवक महिपाला । सुरथ विजय पायहु त्यहिकाला ॥
अरुनृपदशसुतदशवरवीरन । मूर्च्छितकीनसकलहतितीरन ८ । ६९

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेसुरथ
विजयोनामद्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

तिरपनवां अध्याय ॥

दो० तिरपनयें महँ सुरथ सुग्रीव युद्ध पुनि सोय ॥
हनुमदादि कहँ निज पुरहि लैगो बन्ध सजोय १
पवनतनय कृत विनय सुनि तहँ आये श्रीराम ॥
त्यहि छुड़ाय नृप प्रीतिकरि सब जियाय गे धाम २

शेषनाग वात्स्यायनमुनि से बोले कि उस सब कटक को रणभूमिमें नष्ट देखकर व स्वामी शत्रुघ्नजी को मूर्च्छित देखकर सुग्रीव वानरराज सुरथ से युद्धकरनेको गये १ व कहा कि हे भूप ! आवो हमारे सब लोगों को मूर्च्छित करके तुम कहां जातेहो हे रणविशारद ! अब शीघ्र हमको युद्धदेवो २ ऐसा कहकर एक बड़ाभारी बिशाल वृक्ष उखाड़कर शाखाओं समेत बड़े बलसे सुरथके माथे में मारा ३ उस प्रहार के लगने से राजा सुरथ ने सुग्रीव की ओर अपने धन्वापर अतितीक्ष्णबाणोंको चढ़ाकर बड़े क्रोधसे युक्तहोकर अति बलसे सुग्रीवकी छातीमें मारा ४ महाकपि सुग्रीवजीने उनसब बाणोंको हँसतेहुये तोड़डाला व उन महाबली ने सुरथके हृदयमें बड़े बलसेप्रहारकिया ५ पर्व्वतों शिखरों वृक्षों व हाथियोंके शरीरोंसे अति वेगसे सुरथकी छाती में ताड़ितकिया व फिर नखों से नोचडाला ६ तब सुरथने रामास्त्र नाम भयंकर अस्त्र से झट सुग्रीव को भी बांध

लिया जब बँधगये तो कपिवरने सुरथ को श्रीरामचन्द्रजी का सेवक माना ७ व तब जैसे लोहमयी बड़ीभारी पादमें पड़ीहुई लम्बी ज़ंजीर को पाकर हाथी फिर कुछ नहीं करसक्ता ऐसेही सुग्रीव रामपाश से बँधकर कुछ न करसके ८ इस प्रकार अपने पुत्रों सहित उस महाराज सुरथ ने जीत लिया व सब वीरों को रथपर स्थापित करके सङ्ग ले अपने पुरको चला गया ९ व जाकर सभा में बैठकर बांधे हुये हनुमान्जी से बोला कि हे पवनकुमार ! अब भक्तपालक परम दयालु श्रीरघुनाथजी का स्मरण करो १० जिस से कि वे सुन्दरमति वाले श्रीराम शीघ्रही तुम को बन्धन से छुड़ावेंगे यदि वे न छुड़ावेंगे तो तुम को दशसहस्र बर्ष के पीछे बन्धन से हम छोड़ेंगे ११ सुरथ के ऐसे बचन सुनकर तब हनुमान्जी ने अपने को अच्छे प्रकार बँधे हुये देखकर व अन्य सब वीरों को शत्रुओं के शरोंके विघात से पीड़ित व मूर्च्छित देखकर बन्धन से छूटने के लिये श्रीरामचन्द्रजी का स्मरण किया १२ ॥

चौपैया। रघुवंशबिभूषण रामअदूषण सीतापति भगवाना ।
राजीव विलोचन भवभयमोचन परम कृपालु महाना ॥
बन्धनसों छूटन दुखगण टूटनहित सब शोक बिहीना ।
इन्द्रियगण करिकै सबसुखभरिकै सुमिरनलग्यो प्रवीना १ । १३
हा नाथ हमारे नरवरपारे महादयालु कुजेशा ।
कुञ्चित घुँघुवारे केश सँवारे सहित बदन शुभ वेशा ॥
भक्तार्त्तिविदारक अरु मन हारक रूप धारि भगवन्ता ।
बन्धनसों मोहीं आयसु सोहीं लेहु छुड़ाय तुरन्ता २ । १४
गज आदि छुड़ाये बहु मनभाये आप न कीन बिलम्बा ।
अरु देवसमूहा जब किय ऊहा लहिं दैत्यन अवलम्बा ॥
तबतिन्हैं छुड़ाये तहँतहँ जाये अरु तिन रिपुजन नारी ।
शिरके सबबन्धन कीन अबन्धन सुमिरहु मोहिं खरारी ३ । १५
तुमहो मखनिरता जानकिभरता मुनिगणयुतसबधर्म्मा ।
नितकरत बिचारा दीनउधारा नृप पूजित पद चर्म्मा ॥
यहँ मैं हौं बांधा सुरथ सुसाधा दृढ़ बन्धनसों रामा ।

अबआय छुड़ावहु तुरतजुड़ावहु भयमोचन तवनामा ४ । १६
जो सुमिरनजानी अरु मुनिबानी त्वरितन मोहिं छुड़ैहो ।
तो सुरवर पूजित चरण अदूषित दूषित नाम करैहो ॥
सब लोक तुरन्ता त्वहिं भगवन्ता हँसिहैं नाहिं सँदेहू ।
तजिदेव बिलम्बा अतित्वरितंबा मुहिं छुड़ाय अब लेहू ५ । १७

हनुमान्जीकी ऐसी बाणी सुनकर कृपानिधान जगन्नाथ श्री रघुनाथ अति वेग चलनेवाले पुष्पक विमानपर चढ़के भक्तों के छुड़ाने के लिये गये १८ अपने छोटेभाई लक्ष्मण व भरतको संग लिये व व्यासादि मुनिवृन्दोंसमेत आयेहुये श्रीरामचन्द्रजीको हनुमान्जीने देखा १९ अपने नाथ श्रीरघुनाथजी को आतेहुये देखकर हनुमान्जी राजासुरथ से बोले कि राजन्! देखो अपने दास मुझको छुड़ानेको कृपा से श्रीहरि आगये २० इन्हों ने स्मरणमात्र से पूर्व्वकालमें अनेक सेवकों को बन्धन से छुड़ायाहै ऐसेही हमको भी सबके देखतेही देखते बन्धनसे छुड़ानेको आगये हैं २१ श्रीरामभद्रजी को आयेहुये देखकर राजासुरथ ने तुरन्त उठकर भक्तिसमूह से पूरितहोकर सैकड़ों नमस्कार किये २२ श्रीरामचन्द्रजी ने उस समय चतुर्भुजी मूर्त्ति धारणकरके चारों भुजाओं से राजाको पकड़कर छातीमें लपटालिया व हर्षके आंशुओं से अपने भक्तका शिर सींच दिया २३ व बोले कि तुम धन्यहो क्योंकि तुमने महाकर्म्म किया जो कि सबसे बली कपीश्वर हनुमान्जीको बांधलिया २४ फिर श्री रामचन्द्रजी ने अपने हाथों से बानर श्रेष्ठ हनुमान्जीको बन्धन से छुड़ाया व मूर्च्छित उनसब भटोंको अपनी कृपादृष्टि से देखकर सबों को जिया दिया २५ सुरों से सेवित श्रीरामचन्द्रजी ने जैसेही सबों की ओर देखा कि वैसेही सबोंने मूर्च्छाको छोड़दिया व उठकर सबों ने मनोहर मूर्त्ति श्रीरामचन्द्रजी को देखा २६ व सबोंने श्रीरघुपति जी के प्रणाम किया व उन्हों ने सबकी नीरोगता पूछी वे सब सख्य भावको प्राप्त होकर बोले कि आपकी दयाही सब कुशल है २७ तब सेवकों के अर्थ आये हुये श्रीरामचन्द्रजी को देखकर राजा सुरथ ने अपना सब राज्य कोश पुत्र पौत्रादि श्रीमहाराजाधिराज

श्रीरामचन्द्रजी को समर्पण करदिया २८ व अनेक बीरबरों क- रके श्रीरामचन्द्र को प्रसन्न करके कहा कि हे रामचन्द्रजी ! हमारे अपराधको क्षमा कीजिये व श्रीरामचन्द्रजी ने भी अनेक भांति से राजा का संतोष किया व कहा कि तुमने घोड़े की रक्षाकी अच्छा किया २९ क्षत्रियों का यही धर्म्म है कि समय पर स्वामी के संग भी युद्धकरते हैं तुमने अच्छा कर्म्म किया जो रणमें बीरोंको सन्तुष्ट किया ३० ऐसा कहतेहुये श्रीरामचन्द्रजी की पूजा सपुत्र राजा ने की व तीनदिन श्रीरामचन्द्रजी वहां रहकर फिर सुरथ राजा से बिदाहोकर चलेआये ३१ उसी अपने इच्छाचारी पुष्पकविमानपर मुनियोंसमेत चढ़कर अयोध्याजी में पहुँचगये श्री रामचन्द्रजी के दर्शनसे सुरथ के यहां के सबलोग बहुत विस्मित हुये व उनकी म- नोहर कथा आपस में कहने लगे ३२ तब चम्पकको अपने पुर में राज्यपर स्थापित करके बली सुरथ क्षत्रिय ने शत्रुघ्नजी के संग च- लने को मनकिया ३३ व शत्रुघ्नजी ने अपने घोड़े को पाकर नगारे तुरुहीआदि बाजेबजवाये व बहुत प्रकारके शङ्खोंकेनाद करवाये ३४॥

चौ० । पुनिनृपसुरथसहितनिजवाजी । रिपुसूदनछोड़्योबहुसाजी॥
हय नाना देशनमहँगयऊ । भ्रमणकरत देखत पुर नयऊ १ । ३५
गंगातीर रुचिरवर आश्रम । बालमीकि मुनिवरकर भासम ॥
यज्ञधूमचिह्नित अतिभूषित । तहँपहुँच्यो मखवाजिअदूषित २ । ३६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेरघुनाथसमागमोनामत्रि पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

चौवनवां अध्याय ॥

दो० चौवनयेंमहँ तुरगलषि लव बांच्यो त्यहिपत्र ॥
बांध्यो हयकरि कोपभुज मोचक काट्यो तत्र १

शेषनागजी वात्स्यायन मुनि से बोले कि वहां जानकीजी के पुत्र लवजी प्रातःकालकी क्रिया करनेकेलिये व उसीकालकी क्रियाके यो- ग्य यज्ञ इन्धनलेनेके अर्थ मुनिपुत्रोंके संग गये १ व वहां सुवर्णके पत्रसे चिह्नित कुंकुम अगरु कस्तूरीआदि दिव्यगन्धसे वासित इस यज्ञके घोड़ेको उन्होंने देखा २ व देखकर वे बड़े कौतुकके साथ मुनि

पुत्रों से बोले कि यह मनोवेग घोड़ा किसकाहै जो भाग्यवस हमारे आश्रमपरआगयाहै ३ हमारेसाथ सबजनेआओ देखो भय न करो इतना कहकर सबको संग लेकर लवजी घोड़े के निकट गये ४ व अश्व के समीप जाकर रघुवंश में उत्पन्न लवकुमार धन्वाबाण कांधे पर धारणकिये हुये जयन्त के समान दुर्जयहोने के कारण अतिशोभित हुये ५ उन लवजीने मुनियों के बालकों के सङ्ग जाकर उस घोड़े के मस्तक पर स्थित स्पष्ट अक्षरोंकी पंक्तिसे शोभित उत्तम स्वर्णपत्र को बांचा ६ तो उस में यह लिखाथा कि सबलोकों में विख्यात सूर्य्यजी का महा वंशहै जिस में कोईभी परापवादी व परद्रव्यके लेनेमें लम्पट नहीं है ७ सूर्य्यवंशध्वज महाधनुर्द्धर धनुर्विद्या सिखानेवाले गुरुओं के गुरु राजा दशरथ जी हुये जिनके देवता व असुरलोगभी अपने मणियुक्त मुकुट सहित मस्तकों से प्रणाम करते थे ८ उन के पुत्र वीरबलों के अहङ्कारके हरनेवाले रघूद्वह सर्व्वशूर शिरोमणि महा भाग्यवान् श्रीरामचन्द्रहैं ९ व उनकी माता कोसलराज पुत्री कौसल्याजी हैं उनकी कुक्षिसे श्रीरामचन्द्र रत्नरूप उत्पन्न हुये जो कि शत्रुओं के क्षयकारी हैं १० वे रावण नाम विप्रेन्द्रके बध करने के पाप के मिटाने के लिये ब्राह्मणोंकी शिक्षा से अच्छेप्रकार शिक्षितहोकर अश्वमेध यज्ञ करते हैं ११ उन्होंने महाबली शूरवीरोंकी सेनाओंकी परिखाओं से अच्छीरीति से रक्षित करके घोड़ोंमें उत्तम अश्वमेध यज्ञ के योग्य इस मुख्य घोड़ेको छोड़ा है १२ व उस के रक्षक हाथी घोड़े रथ पैदरोंकी चतुरङ्गिणी सेनाओं से युक्त हमारे भ्राता लवणासुरके मारनेवाले शत्रुघ्नहैं १३ सो जिस राजाको अपने हर्ष से ऐसाश्रेष्ठ मानहो कि हम शूरहैं व धनुर्द्धारियोंमें श्रेष्ठहैं व इस भूतलपर बड़े उत्कट वीरहैं १४ वे राजालोग रत्नोंकी माला से विभूषित मनोवेग यथेच्छगामी सब प्रकारकी चालसे प्रकाशवान् इस घोड़े को अपने बल से पकड़ें १५ उन से फिर धन्वा से छूटेहुये वत्सदन्तादि बाणों से व्यथित करके हमारे भ्राता शत्रुघ्न हठसे एक खेल के साथ घोड़े को छुड़ालेंगे १६ सो जो क्षत्रिय लोग क्षत्रियोंकीही कन्याओं से

उत्पन्न हुयेहों सो भी अच्छे कुलीनों के अच्छे २ क्षत्रियों की स्त्रियों में हुयेहों वेहीलोग इस घोड़े को पकड़ें व जिन्होंने इसके विपरीति जन्म लियेहों वे सब अपना राज्य रघुवंश भूषण हम को देकर आके प्रणामकरें १७ इसको बांचकर शत्रुनाशक धनुर्द्धारी लवजी बहुतही कुपितहुये व मारे रोषके गद्गद वाणीसे उन मुनि पुत्रों से बोले कि १८ तुम लोग शीघ्र यहां आकर इस क्षत्रिय की धृष्टता को देखो कि जिसराजा ने अपने प्रताप का बल घोड़े के मस्तक के पत्र में लिखा है १९ स्वल्प बलयुक्त कीटके समान ये राम कौन हैं व शत्रुघ्न कौन है क्या क्षत्रियों के कुल में उत्पन्न होनेसेही ये लोग उत्तम होगये हम लोग उत्तम नहीं हैं २० इन्हींकी माता वीरपुत्र उत्पन्न करनेवाली है श्रीजानकीजी ने कुश-वीरको नहीं उत्पन्न किया जिन्होंने कुशनाम रत्नको अपने उदर में धारण किया जैसे कि शमी अपने पेट में अग्निको धारण करतीहै २१ इस समय क्षत्रियपन आदि जो पत्र में लिखा है उसका फल सब ओर से हम दिखावेंगे जो क्षत्रिय से क्षत्रियकीही कन्या में उत्पन्न शत्रुघ्न हमारे ऊपर प्रहार करेंगे २२ व हमारे बांधेहुये इस यज्ञ क्रिया के योग्य घोड़े को फिर ग्रहण करेंगे नहीं तो गर्व्वको छोड़कर कुशजी के चरणोंकी पूजाकरेंगे २३ अभी हमारे धन्वा से छूटे हुये बाणों के लगने से रणभूमि में शत्रुघ्न सोवेंगे व और भी जो बड़े बड़े वीर रणमण्डल के भूषणहैं वे भी सोवेंगे २४ इत्यादि वचन कहकर लवजीने उस घोड़े को पकड़ लिया राजारामचन्द्र जी को और शत्रुघ्नादि सब वीरोंको तृणसमान समझकर धन्वा बाण धारण किये हुये खड़ेरहे २५ तब घोड़े के पकड़नेकी इच्छा करते हुये लवसे मुनियों के पुत्र बोले कि ये रामचन्द्रजी जिनका यह घोड़ा है अयोध्याजीके महाराजाधिराजहैं व महाबल पराक्रमी हैं २६ उन के घोड़ेको अपने सब देवगण समेत इन्द्र भी नहीं ग्रहण करसक्ते इस से इसे तुम भी न पकड़ो हितयुक्त हम लोगों का यह वचन सुनो २७ यह सुनकर अच्छी तरह कानों में धा-रण कर लव उन ब्राह्मणों के बालकों से बोले कि तुम लोग

ब्राह्मणों के पुत्रहो इस लिये क्षत्रियों का बल नहीं जानते हो २८ क्योंकि क्षत्रिय लोग वीर्य्य में प्रचण्डहोते हैं व ब्राह्मण लोग उत्तम भोजनकरने में इस से तुम लोग घरमें जाकर माता के हाथका बनाया भोजनकरो २९ जब लवने ऐसाकहा तो वे लोग चुपहो गये व लवके पराक्रमके देखनेकी इच्छासे सब ब्राह्मणों के पुत्र बाहर बड़ी दूरजाकर खड़ेहुये ३० जब यहां ऐसा वृत्तान्त होचुका तबतक राजा शत्रुघ्नजी के सेवकलोग पहुँचे व पहुँचतेही घोड़ेको बँधेहुये देखकर लवसे सब बोले ३१ कि बड़े आश्चर्य्यकी बातहै घोड़ेको किसने बांधा है किसके ऊपर यमराज रुष्टहुये हैं कौन बाणों के मध्य में पड़कर महाव्यथा पावेगा ३२ तब लवजी ने शीघ्र उत्तरदिया कि यह उत्तम घोड़ा हमने बांधाहै व जो इसे छुड़ावेगा उसके ऊपर हमारे भाई कुशजी रुष्टहोंगे ३३ उनका यमराज बेचारा क्या करसकेगा जो अपने आप इसका स्वामी आवेगा तो वह भी बाणोंकी वृष्टिसे सन्तुष्ट किया जायगा ३४ शेषनाग बोले कि जब लवजी ने ऐसाकहा तो उनलोगों ने आपस में कहा कि यह बालकहै इसलिये कहताहै फिर जाकर वे लोग बंधेहुये घोड़ेको छुड़ानेलगे ३५ ॥

चौ० अश्व छुड़ावत रिपुहन केरे । सेवक देखे जबहि घनेरे ॥
तबको दण्डबाण सन्धाना । अतिहि तीक्ष्ण लववीर महाना ॥३६
काटे तिनके बाहु तुरन्ता । शोकित सो सब गे बलवन्ता ॥
जहँ शत्रुघ्न हते तिन पूंछा । कह तिन लवकीन्ह्यो भुजछूंछा २।३७

इतिश्री पाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेरामाश्वमेधेभाषानुवादेलवेनहयबन्धनं नामचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

पचपनवां अध्याय ॥

दो० पचपनयें महँ राम यश दूतन सुन्यो पवित्र ॥
निशिनगरीजनकथितनिजगृह२ परमविचित्र १

व्यासजी सूतसे बोले कि महाबली लवकीरम्य यहकथा सुनकर वात्स्यायनमुनि ने संशययुक्त होकर सहस्रमुखवाले शेषनागजी से पूंछा कि १ वात्स्यायनजी ने कहा तुमने पूर्व्वकाल में कहाथा कि श्रीरामचन्द्रजी ने उस धोबी के दुर्व्वचन से सीताजी को अकेली

वनमें त्यागदिया २ फिर जानकीजी में दो पुत्र कहां उत्पन्नहुये व कहां वे दोनों धनुर्द्धरता को प्राप्तहुये व उन्होंने विद्या कैसे सीखी कि जिन्होंने श्रीरामचन्द्रजी का घोड़ा हरलिया ३ व्यासजी बोले कि मुनिके ऐसे वचनसुनकर महामतिवाले शेषनागजी मुनिकी प्रशंसा करके अद्भुत श्रीरामचरित कहनेलगे ४ शेषनागजी बोले कि जब लङ्कासे आकर श्रीरामचन्द्रजी अपने भाइयोंसमेत श्रीअयोध्याजी में राज्य करनेलगे तो बड़े धर्म्म के साथ उन्हों ने अपनी स्त्रीसमेत पृथ्वीमण्डल का पालनकिया ५ उन्हीं दिनों में सीताजी ने उनका वीर्य्य धारण किया उसको पांचमास बीतगये तब जानकीजी पुरुष के वीर्य्य को धारण किये प्रकृति के समान शोभितहुईं ६ इसके अनन्तर किसी दिन एकान्त में श्रीरामचन्द्रजी ने श्रीवैदेहीजी से पूँछा कि हे पतिव्रते! तुम्हारे किसवस्तुकी विशेष इच्छा गर्भवती होने के कारण है वह इसीदिन पूरी कीजाय ७ जब रहस्य में इस प्रकार पूँछीगईं तो लज्जित होकर कुछ गद्गदवाणी से श्रीजानकीजी श्रीरघुपति रामचन्द्रजी से अमृततुल्य वचनबोलीं ८ सीताजी ने कहा कि आपकी कृपासे हमने सबसुन्दर भोज्य पदार्थ भोगे हे का-न्त! कुछभी विषय ऐसा नहीं जिसकेलिये मन चलताहो ९ जिस हमारे सब देवताओं से पूजित चरण आप ऐसे स्वामी हैं उसके सब कुछ अतिशयता से विद्यमान है कुछभी अवशिष्ट नहीं जिसकेलिये कभी स्वप्नमें भी इच्छाहो १० परन्तु जो आप आग्रह करके हमारे मनमें टिकेहुये दोहद अर्थात् गर्भवती की अभिलाषा को पूँछते हैं तो आपके आगे अपना मनोरम दोहद कहती हूं ११ हे स्वामिन! बहुतदिन होगये तब हमने लोपामुद्रा आदि स्त्रियोंको देखाथा सो अब उन सुन्दरियों के देखनेको मन उत्सुक होताहै १२ क्योंकि आ-पके सङ्ग राज्यको पाकर हम अनेक सुखों को प्राप्तहुईं अब हम कृ-तघ्न ठहरती हैं इससे कभी उन पतिव्रताओं के नमस्कार करने में मन लगाती हैं १३ वहां जाकर उन लोगों के तपके कोशोंको वस्त्रा-दिकों से पूजितकरें व विविध प्रकारके प्रकाशित रत्न व नानाप्रकार के भूषण उनको समर्पणकरें १४ जिससे कि हमसे सन्तोषित होकर

वे लोग मनोहर आशीर्व्वाद देवें बस हे कान्त ! यही हमारे मनका दोहद आप परिपूरणकरें १५ सीताजीका ऐसा मनोहर वचन सुन कर श्रीरामचन्द्रजी परमप्रसन्न होकर अपनी प्राणप्रियासे बोले कि १६ हे जानकी ! धन्यहो प्रातःकालही तुम तपोवनको जाओगी व उन तपोधन स्त्रियोंको देखकर कृतार्थहोकर फिर हमारे समीप आ-जाओगी १७ रामचन्द्रजीका ऐसावचन सुनकर जानकीजी परमप्रीति को प्राप्तहुईं कि अब प्रभातसमय हमको साक्षात् तपस्विनियों के दर्शनहोंगे १८ व उसीरात्रि में श्रीरामचन्द्रजीके दूत जिनको महा-राजने अपनीसुकीर्त्ति सुनने के लिये भेजाथा वे अर्द्धरात्रि में धीरे २ घूमतेथे १९ वे प्रतिदिन श्रीरामचन्द्रजीकी मनोहर कथायें सुनते हुये उस दिन एक बड़े धनाढ्य के बड़ेभारी गृहकेसमीप पहुँचे २० वहां उसके गृहमें दीपक जलतेदेख व मनुष्यका वचन सुनकर दूत लोग क्षणमात्र वहां ठहरगये व अमृतरूप वचन सुननेलगे २१ वहां कोई स्त्री हर्षितहोकर अपने बहुत छोटे केवल दुग्धपीनेवाले बालकसे सुमनोहर वचन कहरहीथी कि २२ हे पुत्र ! तुम यथेष्ट मनोहर हमारा दुग्धपानकरो क्योंकि पीछे अब हमारा क्षीर तुमको दुर्लभहोजायगा २३ जिससे कि इस पुरीके राजानीलकमलदल श्याम श्रीरामचन्द्रजी हैं उनकी पुरीके रहनेवाले जनोंका फिर जन्म नहींहोगा २४ फिर जन्मके न होनेसे माताके स्तनका दुग्धकैसेपी-नेको मिलसक्ताहै इससे हे पुत्र ! मनमें दुर्लभमानकर स्तनकादुग्ध पीवो २५ जो जन रामचन्द्रजीका स्मरणकरेंगे व अपने हृदयमें उनको धारणकरेंगे अथवा जो उनकानाम मुखसे कहेंगे उनकोभी कभी माताके स्तनकाक्षीर न पीनेकोमिलेगा २६ श्रीरामचन्द्रजी के यश अमृतसेभरेहुये इत्यादि वचन अच्छेप्रकार सुनकर हर्षित होकर वे दूत अन्य किसी भाग्यवान्‌के गृहकेसमीपगये २७ तबतक अन्य दूतभी उसीमनोरम गृहके समीपआया व वहभी श्रीरामचन्द्र जीके यशकेसुननेकी इच्छासे क्षणमात्र वहां ठहरगया २८ वहांकोई स्त्री स्नेहसे अपने पतिके हाथके दियेहुये ताम्बूलको खाती हुई प-लँगके ऊपर सुंदररीतिसे स्थित अपने कान्तसे २९ कङ्कणके शब्द

की शोभासे युक्त व कपूर अगरुके धूमसे धूपित वह सुन्दरी नेत्रों से शोभित मुखकरके निजनाथको कामरूपमानकर यह वचन बोली कि ३० हे नाथ! तुम हमको ऐसे शोभित जान पड़तेहो कि जैसे अत्यन्त सुन्दर तर शरीर धारण किये सुकोमलरूप श्रीरघुपतिजी हैं ३१ कमलदल समान नेत्रयुगल धारण किये मोहन करनेवाली विस्तृतछाती से शोभित बहूँटे युक्त भुजों को धारण किये साक्षात् श्रीरामहीके समान हमको जानपड़तेहो ३२ अपनी कांताका ऐसा सुमनोहर वचन सुनकर नेत्र नचाकर कामके समान सुन्दर वह पुरुष अपनी स्त्रीसे बोला कि ३३ हे कांते! सुनो जो सुमनोहर वचन तुम साध्वीने कहा वह पतिव्रताको उचितहीहै क्योंकि पतिव्रतानारियोंके लिये उनके पति रामचन्द्रही हैं ३४ परंतु कहां मैं मन्दभाग्य वाला कहां भाग्यवान् महान् श्रीरामचन्द्रजी कहां मैं कीटपतङ्ग से भी तुच्छजीव कहां ब्रह्मादि देवताओंसे पूजित श्रीराघवेंद्र ३५ कहां खद्योत कहां सूर्य्य कहां नीचशलभ कहां आकाशके खगरुड़ कहां मार्जार व मंदबुद्धि शशक कहां हाथी व सिंह ३६ कहां श्रीगंगा देवी कहां मैली कुचैली गलीका अतिमलिन पानी कहां देव निवासस्थान सुमेरु कहां अल्प घुँघुचियों का ढेर ३७ ऐसेही कहां मैं कहां ये श्रीरामचन्द्रजी कि जिनके चरणकी रज से शिला भूत गौतमकी स्त्री अहल्या ब्रह्मादिकों के मोहन करनेवाले रूपसे युक्त होगई ३८ ऐसा वचन कहते हुयें अपने पतिको कामवती होकर प्रेमसे नचाई हुई भौंहोंको धन्वाके समान धारण किये हुई वह स्त्री लपटगई ३९ इत्यादि वाक्य सुनकर दूत अन्य किसी गृहके समीप गया तब तक और किसी दूतने कहीं श्रीरामचन्द्रजी के यशसे युक्त बचन सुना ४० कोई स्त्री फूलों से सेज बनाकर चन्दन कपूर से सुवासित करके व सब रति सामग्री इकट्ठी करके काम के योग्य बचन अपने पतिसे बोली कि ४१ आओ भोगकेयोग्य फूलोंसेवासित इसशय्या पर विराजमानहोकर चन्दनादि लेपन व अनेक प्रकारके भोगों को भोगो ४२ तुम्हारेही से पुरुष भोग करने के योग्य होतेहैं श्रीराम चन्द्रजी से बिमुख कुपुरुष नहीं भोगकरने के योग्य होते इस लिये

रामचन्द्रजी की कृपासे सब कुछ प्राप्तहुआहै सुखपूर्वक इसे भोगो ४३ हमारी नाईं कामिनी तुम्हारे आजहै व ताप हरनेवाला चन्दन व पर्य्यङ्क पुष्पोंसे रचितहै यह सब श्रीरामकी कृपासे इकट्ठाहुआहै ४४ जो नर रामचन्द्रजीका भजन नहींकरते वे नर अपना पेटभी नहीं भरसक्के और वस्त्र भोगादि से तो वर्ज्जित रहतेही हैं ४५ ऐसा कहतीहुई अपनीस्त्रीसे पतिबोला कि सब तू सत्यहीकहती है रामचन्द्रजीकी कृपासे सब हमको मिला है ४६ ऐसा रामचन्द्रजी का यश सुनकर दूत वहांसे चलागया तब तक अन्य किसी के गृहके समाचारको अन्य दूतने सुना ४७ कोई स्त्री अपने पतिके पलँगपर बैठी हुई बीणा बजाकर कान्त के साथ श्रीरामचन्द्रजी की कीर्त्ति गातीहुई पतिसेबोली कि ४८ हे स्वामिन्! हमलोग धन्यतम हैं कि जिनकी पुरीके पति व प्रभु श्रीरामचन्द्रजी अपनी प्रजाओं को पुत्रों के समान पालते हैं व रक्षा करते हैं ४९ जिन्हों ने महा दुस्साध्यकर्म्म किया कि समुद्रको दण्डदिया और उसमें सेतु बांधा यह कर्म्म सुलभ नहीं है ५० व जिन्हों ने शत्रु रावणकोमारकर वानरोंसे लङ्काका विध्वंस कराके श्रीजानकीजी को यहां लाके यहां नानाप्रकारके आचारकिये ५१ अपनी स्त्रीके कहेहुये ऐसे सुमनोहर वचन सुनकर पति कुछ मुसुकाकर अपनी प्रिया से यह वाक्य बोला कि ५२ हे भामिनि, हे मुग्धे! रावण बधादि व समुद्र निग्रह बन्धनादि कर्म्म श्रीरामचन्द्रजी के लिये महाकर्म्म नहीं है ५३ जोकि ब्रह्मादि देवताओं की प्रार्थना से क्रीड़ाकरने के लिये इस पृथ्वीपर आये हैं व वे महात्मा महापापहारी विचित्र कर्म्म करते हैं ५४ श्रीरामचन्द्रजी को कौसल्याजी के आनन्ददायक नर न समझो ये इस विश्व को उत्पन्न कराते हैं फिर पालन कराते हैं अन्तमें नाशभी कराते हैं केवल लीलामात्रसे मनुष्यकारूप बनाये हैं ५५ हमलोग धन्य हैं जो रामचन्द्रजीका मुखारबिन्द देखते हैं जोकि ब्रह्मादि देवताओंको दुर्द्दर्श है हमलोगों ने महापुण्य कियाहै ५६ जो श्रीरामचन्द्रजी के चरित्र सुनते हैं जोकि कानोंको परमसुख देते हैं इत्यादि वाक्य दूतने द्वारपर खड़े २ सुना ५७ अन्य दूत अन्यके गृहके समीपजाकर श्री

हरिके यशके सुननेको ठहरा वहां भी श्रीरामभद्रजी का सुन्दर यश उसने सुना ५८ एकसुमनोहर स्त्री अपने पतिकेसंग जुआखेलतीथी वह हाथउठाकर कङ्कणबजाकर नाचतीहुई सी अपने स्वामी से बोली कि ५९ हे कान्त! हमने शीघ्रता से बाजी लगायाहुआ तुम्हारा सब धन जीतलिया अब तुम हमसे हारगये कहो कैसे करोगे इसीतरह की बहुतसी बातें परिहास सहित करके अपने पतिको छपटजातीहुई ६० तब पति बोला कि हां हे सुन्दर अंगोंवाली, हे सुन्दरि! तुमने जीतलिया परन्तु श्रीरामचन्द्रजी का स्मरण करतेहुये हमारा पराजय कहीं नहीं होसक्ता ६१ देखो मनोहर श्रीरामचन्द्रजी का स्मरण करके अभी तुमको जीतलेते हैं जैसे पूर्व्वसमय में उनका स्मरणकरके एक क्षणमात्र में देवताओं ने दैत्योंको जीतलियाथा ६२ ऐसा कहकर उसने ज्योंही पाशप्रक्षेप किया कि वैसेही वह जीता और हर्षितहोकर बोला कि ६३ हमने जो कहाथा वह सत्यहुआ अब तुम्हारी नई जवानी हमने जीतली हमने तो कहाथा कि रामचन्द्रजी के स्मरण करनेवालेको शत्रुसे कभी भय नहीं होता न कभी किसी से वह हारताहै ६४ इसप्रकार वे दोनों स्त्रीपुरुष परस्पर कहते हुये प्रेमसे दृढ़तापूर्वक छपटगये तब वह दूत उसस्थानसे गृहको चला गया ६५ इसतरह पांचमहादूत महाराजाधिराज रामचन्द्रजीकायश सुनकर इकट्ठे होकर परस्पर प्रशंसा करतेहुये अपने २ घरों को आनन्दसे चले गये ६६ एक छठांचार अर्थात् दूत कामकरनेवाले चमार पासी कोरी धोबी आदिकोंके घरोंको देख करके श्रीमहाराज रामचन्द्रजीका यश सुननेको गया ६७ तो वहां एक धोबी क्रोधसे अतिरुष्टहोकर दूसरेके घरमें रही हुई अपनी स्त्रीको लातसे मारता था व मारे क्रोधके लालनेत्र किये धिक्कार देताथा ६८ कि तू हमारे घरसे जा जिसके घरमें दिन में रही थी उसी के यहां जा हम वचन लांघनेवाली तुझ दुष्टा को नहीं ग्रहण करते ६९ तब उसकी माता उससे बोली कि घरमें आईहुई इसको न छोड़ क्योंकि यह अपराधसे रहितहै व दुष्टकर्म्म से वर्जित है ७० तब क्रोधसंयुतहो वह धोबी अपनी मातासे बोला कि हम रामचन्द्रकी नाईं दूसरे के

घरमें बसीहुई अतिशय प्रियाको अब न ग्रहणकरेंगे ७१ वे राजाहैं जो चाहैं सो करें सबनीतियुक्तहीहै परन्तु हम परघरमें रहीहुई इस को न ग्रहणकरेंगे ७२ बार २ यही कहताथा कि हम रामराजानहीं हैं जिन्होंने पराये गृहमें बसीहुई जानकी को फिर अपने घरमें रख-लिया ७३ यह सुनकर उस दूतने क्रोध में डूबकर खड्ग हाथमें ले कर उसधोबीके मारनेको मन किया ७४ परन्तु श्रीरामचन्द्रजी के वचन का उसने स्मरण किया कि कोई भी जन बध करने के योग्य नहीं यह जानकर उसने अपने रोषको मिटाया ७५ ॥

चौ० । अरु सोसुनि दुःखितह्वै चारा । गयहुजहां चरपांचउदारा ॥
ऊर्ध्वश्वास पुनिपुनिले दूता । तिनढिगभोथिरनहिंमजबूता १।७६
पांच प्रथमके चारपरस्पर । मिलितब कह वच रामयशस्कर ॥
जो तिनसुना चरित रघुवरके । सर्व्वलोक पूजित अघहरके २।७७
तासुवचन सुनि ते सबचारा । लगे परस्पर करन विचारा ॥
दुष्टकथित यहकुवचनरामहिं । नाहिंसुनावहु सबगुणधामहिं३।७८
यह विचारि सबगे निजगेहा । कहिंप्रभात सब कहब सनेहा ॥
रामचन्द्रसों तिनयशपावन । सोये निज २ गृहमनभावन ४।७९

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेचरनिरीक्षणंनामपञ्च पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥

छप्पनवां अध्याय ॥

दो० । छप्पनयें महँ प्रात कृति करि रघुकुल शिरताज ।
रजक बचन चर मुख सुनत मूर्च्छित भे महराज १ ॥
भरतहि लीन बुलाय कह उनसों सब उन बैन ।
कहे दुःख खण्डक बहुरि तिन कह प्रिय तज चैन २ ॥

शेषनाग वात्स्यायन मुनिसे बोले कि श्रीरामचन्द्रजी प्रातःकाल की शौच स्नानादि नित्यक्रिया करके वेदवित्तम ब्राह्मणोंको सुवर्णादि दानोंसे अच्छे प्रकार तृप्त करके सभाको पधारे १ व वहां सब लोग श्रीरघुनाथजीके नमस्कार करने के लिये आये जो कि सदा पुत्रके समान प्रजाओंको पालतेहुये सभामें बिराजते थे २ लक्ष्मणजी ने आकर श्रीमहाराजके शिरपर छत्र लगाया व भरत शत्रुघ्न दोनों

जनोंने चामर डुराया ३ वसिष्ठादि मुनि लोग सबओर से आकर बैठे ३ न्याय करनेवाले सुमन्त्रादि मन्त्रीलोग अपने अपनेस्थानोंपर बैठे ४ जब इसप्रकार सभाजुटी तो वे वहाँ दूत जिनको महाराजाधिराजजीने भेजा था सभामें विराजमान श्रीराघवजी के नमस्कार करनेको गये ५ उन दूतोंको कुछ कहनेकी इच्छा कियेहुये देखकर उसके सुननेमें उत्सुकहोकर नृपतिसत्तम श्रीराघवजी सभासे उठकर उसीके मध्यमें बनेहुये एक सम्मत करनेवाले एकांत स्थलको गये ६ व सब दूतों से सुमतिमान् महाराजने पूँछा कि हे दूतो, हे शत्रुओंके निवृत्त करनेवाले ! हमसे यथातथ्य कहो ७ लोग हमको कैसाकहते हैं व हमारी भार्य्याको कैसी कहते हैं व हमारे मन्त्रियों के चरित्र लोग कैसे कहते हैं ८ यह वाक्य सुनकर दूत लोग मेघ के समान गम्भीरवाणी से पूँछतेहुये श्रीरघुनायकजी से बोले कि ९ दूत कहने लगे हे नाथ ! इस समय आप की कीर्त्ति पृथ्वीपर सब लोगोंको पवित्र करती है घरघर क्या पुरुष क्या स्त्री सब कीर्त्तिकी स्तुति कररहे हैं हम लोगों ने जाकर घरघर में सुनाहै १० सूर्य्यके इस वंशको भूषितकरने के लिये परमेश्वर आपने भूतलपर आकर अपनी कीर्त्तिको विस्तारित किया है ११ प्रजाओं के अर्थों के करने वाले अनेक सगरादि राजा इसी वंशमें हुये हैं परन्तु उनकी कीर्त्ति ऐसी नहीं हुई जैसी कि आपकी हुई है १२ हे महाराज ! तुम नाथ ने सब प्रजाओं को कृतार्थ किया क्योंकि उनका न तो अकाल में मरणहोताहै न रोगोंका उपद्रवहोता है १३ लोक में जैसे चन्द्रमा है व जैसी जाह्नवी नदी है वैसीही आपकी उज्ज्वल कीर्त्ति है जो सब भूतलभरको प्रकाशित कराती है १४ हे नाथ ! आपकी अधिक कीर्त्ति देखकर व सुनकर ब्रह्मा बहुत लज्जित हुये इससे आपकी कीर्त्ति सर्व्वत्र है व सब जनोंको पवित्रकराती है १५ हम सब लोग धन्यतम हैं जो आप ऐसे महाराजके दूतहुये कि जिससे क्षण२पर आपका मनोहर मुख देखते हैं १६ पांच चारोंके इत्यादि वाक्यसुनकर व उनको देखकर कुछविलक्षण मुखसे चिह्नित छठें चारसे श्री महाराज १७ रामचन्द्रजीने कहा कि हे महामतिवाले ! जो

तुमने वर्णसंकरजनों के यहां सुनाहै वैसाही हमसे कहो उसके विपरीत कहनेमें पापादि करनेवाले होवोगे १८ इसप्रकार बहुत कुछ सुने हुये उस दूतसे रामचन्द्रजी ने फिर २ पूंछा तौभी उसने केवल एक नीचजनका कहाहुआ बचन रामचन्द्रजीसे न कहा १९ तबकुछ विलक्षित मुख कियेहुये उसदूतसे श्रीरामचन्द्रजी ने फिर कहा कि तुमको सत्यसे शपथकरातेहैं सब जैसे का तैसा कहो २० तब वह दूत धीरे २ श्रीरामचन्द्रजी से वह बचन बोला जोकि अकथनीय था जिसे उसनीच दुष्टधोबीने कहाथा २१ चारबोला किहेस्वामिन्! रावणके वध करने आदिकी सबकहीं आपकी सुकीर्त्ति है पर रावण के यहां निवास करने के कारण आपकी स्त्री की कीर्त्ति को छोड़के यह बड़े खेदकी बातहै २२ एक नीच कर्म्म करनेवाला धोबी अर्द्धरात्रिको अन्य किसीके घरमें रहीहुई अपनी स्त्रीको धिक्कारता हुआ वहदुष्ट मारताथा २३ तब उसकी माता ने कहा कि इस निरपराधिनीको क्यों मारताहै इसको ग्रहणकर हमारा वचन मान इसकी निन्दा न कर २४ तब उस धोबी ने कहा कि मैं राजारामचन्द्र नहीं हूं जोकि राक्षस के गृह में बसीहुई सीताको उन्हों ने अंगीकार कर लिया २५ समर्थ राजाका कियाहुआ सबकर्म्म नीतियुक्तही होताहै व अन्य पुण्यात्मालोगोंकाभी कियाहुआ कर्म अनीतियुक्तही होता है २६ इसप्रकार बार २ उसने कहा कि मैं राजारामचन्द्र नहींहूं हे महाराज! यह सुनकर मुझको बड़ाक्रोध हुआ पर आपके वचन का स्मरणआया २७ नहींतो उसी समय उसदुष्ट का शिरकाटकर पृथ्वीपर गिरादेता फिर मैंने विचारा कि कहां श्रीरामचन्द्रजी कहां यहदुष्टधोबी इसके कहने से क्या होसक्ता है २८ क्यों कि यहदुष्ट मिथ्या कहताहै यहसत्य कभी नहींहै इससे अभी मुझको आज्ञाहो इसीसमय जाकर उस दुष्टका शिरकाटडालूं २९ हे महाराज! मैंने जो यह अवाच्य वचन आपके सम्मुखकहा वह बार २ आपके आग्रह करनेही से अन्याय किया इस विषयमें संगत असंगत आपही विचारें क्यों कि राजाही ऐसे समयमें प्रमाणहोता है वह जो विचारे सोठीक ३० शेषनाग वात्स्यायनमुनि से बोले महा वज्रपातके स-

मान अक्षरोंसे युक्त ऐसे वाक्यको सुनकर बारबार ऊर्ध्वश्वासें लेकर महाराज मूर्च्छित होकर गिरपड़े ३१ तब भूपालमणि धर्म्मपाल को मूर्च्छित देख कर अतिदुःखित सब दूतलोग महाराजके दुःख के मिटाने के लिये वस्त्रोंके अग्रभाग से पवनकरने लगे ३२ मूर्च्छाजागनेपर धर्म्म प्रतिपालक श्रीराघवजीने उन दूतोंसे कहा कि तुम लोग घरको जाओ भरतको शीघ्र यहां भेजो ३३ दुःखितहोकर वे चार भरतजीके शीघ्र मंदिरको गये व रामचंद्रजी का संदेश उन से कहदिया कि महाराज ने आपको बुलाया है ३४ धीमान् भरतजी रामचंद्रजी का संदेश सुनकर सभा को चलेगये फिर वहां एकांतमें बैठेहुये श्रीराघवजी को सुनकर अतिवेगसे जाकर वहां पहुँचे ३५ आके वहांके द्वारपाल से पूँछा कि महात्मा श्रीरामभद्रजी कृपानिधि हमारे भ्राताकहां हैं ३६ उसके बताये हुये रत्नोंसे बनेहुये मनोहर गृहमें वीर भरतजीपैठे व रामचंद्रजी को प्रभाहीन देखकर अपने मनमें बहुत भयभीतहुये ३७ व विचारने लगे कि क्या रामचंद्रजी कुपितहैं अथवा प्रभुको कुछ दुःख है ऐसा विचारकरके बार २ निश्वास लेतेहुये महाराजसे बोले कि ३८ हे स्वामिन्! हे सुखसे आराधना करनेके योग्य ! आपका मुख नीचेको झुँका क्योंहै हमको आपका मुखराहुके किरणोंसे ग्रस्त चंद्रमाकेसमान दिखाई देताहै३९ सब जैसाहो वैसा सत्य कारण हमसे कहिये मैंतो तुम्हारा किंकरहूं क्यों बुलायाहै हे महाराज! दुःख छोड़िये आप दुःखके पात्र कैसे हुये ४० इस प्रकार भाई के कहने पर बीरधीर परमधार्म्मिक श्रीरामचंद्रजी भाई भरतजी से गद्गदस्वरयुक्तबाणी से बोले कि ४१ भाई हमारा बचन सुनो व हमारे दुःखका कारण समझो व हे भ्रातः! उस दुःख का मार्ज्जन प्रातःकालही करो ४२ इस वैवस्वत के वंश में दाग नहीं लगाथा परंतु आज हमारी कीर्ति मलिन होकर यमुनाके संग मिलने से गंगाके समान एक ओर कालीरेखा से युक्तहोगई ४३ जिन मनुष्योंका यश भूमिपर है उन्हींका सुजीवनहै व अपकीर्ति से घायल लोगोंका जीवन मरेहुओं के समानहै ४४ जिनका यश पृथ्वी परहो उन के लिये सनातनलोक हैं व जो अपकीर्ति सर्पिणी से काटे

जातेहैं उनकोनरकमें जानाहोता है ४५ आज गंगाके समान लोक में फैलीहुई हमारी कीर्ति मैली होगई वह हमारा वचन सुनो जोकि नीचधोबी ने कहाहै ४६ इसपुरमें आज एक धोबी ने जानकी के विषय में किंचित् वाक्यकहाहै उसको सुनकर भूतलमें हम रहकर क्या करेंगे ४७ कितो आज हम अपने प्राणही छोड़ें कितो जानकी स्त्रीहीको छोड़ें इन दोनों में हमको क्या करना चाहिये सो आप सत्य बतावें ४८ ऐसा कहकर आंसू बहातेहुये कम्पमान होने के कारण चलायमान अंग पापलेशरहित धार्मिकों के शिरोमणि महाराज पृथ्वीपर मूर्च्छित होकर गिरपड़े ४९ भाई को पतित देखकर दुःख से युक्तहोकर भरतजी ने धीरे २ पवनका संचारकरके रामचन्द्रजीको सचेत किया५० वव्यजनादिकों की पवनसे सचेतहोनेपर भी रामचन्द्र जी को सुदुःखित देखकर दुःखनाशके लिये सुमनोहर वाक्य बोले५१ भरतजीने कहा कि यह धोबी कौन होता है व वाक्योंकी कथाओं से युक्त वह कौनसी कहने के योग्य बात है जानकीजी के विषयमें वाक्य कहने वालेकी जीभ अभी काटडालेंगे ५२ तब श्रीरामचन्द्र जी ने उस रजककी कहीहुई कुवाणी जो दूत के मुखसे सुनी थी महात्मा भरत से सब ज्योंकी त्यों कही ५३ सो सुनकर दुःख व शोक युक्त अपने भाई रामचन्द्र जी से भरतजी बोले कि जानकी जी तो लङ्का में अग्निमें सेभी शुद्धहोचुकी हैं व सबवीरों से पूजित हुई हैं ५४ ब्रह्माजी व आपके पिता दशरथ जी ने कहा कि जानकी जी शुद्ध हैं वह लोकपूजित जानकीजी धोबीके कहने से कैसे छोड़ने के योग्य हैं ५५ व ब्रह्मादि देवताओं से स्तुति की गईहुई तुम्हारी कीर्त्ति चतुर्दशलोकों को पवित्र कररही है वह कीर्त्ति आज एक धोबी के कहने से कैसे मैली होजायगी ५६ इस से सीताजी के विषय के वचन से उठे हुये महादुःख को छोड़देओ उन सुभाग्यवती गर्भवती के संग राज्य भोगकरो ५७ तुम कैसे अपने सुन्दर शरीर को छोड़ा चाहतेहो तुम दुःखनाशक के न होने पर हम सब एक क्षण में मरजायँगे ५८ व तुम्हें बिना महोदय युक्त सीताजी भी क्षणमात्रभी न जीवेंगी इससे पतिव्रता शिरोमणि जानकी

जी के संग त्रिपुल राज्यलक्ष्मी को भोगो ५९ भरतजी का ऐसा वाक्य सुनकर परम धार्म्मिक सब वाणी वेत्ताओं में श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी फिर बोले कि ६० भाई जो तुम कहतेहो वह तुम्हारे धर्म्म के योग्यही बचन है परन्तु जो वाक्य हम कहते हैं उसे हमारी आज्ञा से करो ६१ हम इन जानकी को अच्छीतरह जानतेहैं कि अग्नि में से भी शुद्धहोकर निकली हैं व सब प्रकारसे पवित्र हैं इस से सब लोगों से पूजितहैं परन्तु हम लोकके अपवादसे डरकर अपनी इन जानकी को छोड़ते हैं ६२ इस से अतिदारुण खड्ग हाथ में लेकर कि तो हमारा शिर काटडालो अथवा हमारी जाया जानकी को बन में छोड़ आओ ६३ ॥

चौ० इमिसुनिभरतरामकेबचना। मूर्च्छितगिरयोधरणितजिघटना॥
थरथरकाँपत सकल शरीरा। बाष्पविलोचनशोचगभीरा १। ६४॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेभरतवाक्यन्नाम षट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥

सत्तावनवां अध्याय ॥

दो०। सत्तावनयें महँ कह्यो कीर शुकी इतिहास ॥
मिथिलामहँ मैथिलिहि जिनशापदीनउद्दास १
पुनि शुकमरिसाकेतमहँ रजकभयोनिजनारि ॥
भर्त्सनकरि अपबादकह जनकसुताअपकारि २

यह कथा सुनकर वात्स्यायनमुनि ने शेषनागजी से पूँछा कि जगत् पवित्र करनेवाली सत्कीर्त्ति वाली श्रीजानकी जी के विषय में ऐसा बचन उस दुष्ट रजक ने कैसे कहा इस विषय में हम को बड़ा सन्देह होता है इसका कारण कहिये १ जिससे तुम्हारे मुख से निकले हुये अमृत के पान करने से हमारे मन को सुखहो व तृप्तिभी हो व उस के सुनने वालोंकी संसार बासनाभीकटे अर्थात् उस में कुछ श्रीरामचन्द्रजी वा जानकीजी का चरितहो २ शेषनागजी बोले कि महापुरी जनक नगरी में जनकनाम राजा हुये वे उस पुरीमें धर्म्म से प्रजाओं की आराधना करते हुये राज्य करतेथे ३ पर वास्तव में सीरध्वज नामथा वे यज्ञ करने के लिये सुबर्ण के

हल से पृथ्वी जुताते थे उन के हलकी सीतासे अर्थात् खुदहरी के अग्रभाग से खुदी हुई भूमि में से एक कन्या कामकी स्त्री रति से भी अधिक सुन्दरी निकल आई ४ तब राजा सीरध्वजजी अत्यन्त हर्षित हुये व जगत्की श्री को भी मोहित करनेवाली उस कन्या का उन्होंने सीता से उत्पन्न होने के कारण सीता ऐसा नाम धराया ५ व उसको अपनी कन्या माना वह सुमनोहर कन्या एक समय बाटिका के वनमें खेलतीथी अपने मनका प्रिय एक शुकशुकीका जोड़ा देखा वह अति मनोहर शब्द बोलरहाथा ६ वे दोनों परस्पर शुभवाणी से अत्यन्त हर्षयुक्त हो व अत्यन्त कामसे लोलुपहोकर स्नेहसे बोल रहे थे ७ फिर वे दोनों परस्पर क्रीड़ाकरके बड़ेवेगसे सुन्दरीबाणीसे आ-काशमें उड़कर एक बृक्षकेऊपर बैठकर आपसमें प्रेमसे बतलानेलगे कि ८ एक अति मनोहर रामचन्द्र नाम राजा पृथ्वीपरहोंगे उनकी सीतानाम रानी होगी ९ वे उस अपनी रानीके साथ ग्यारह हज़ार बर्षतक सब राजाओंको जीतकर सुख पूर्व्वक राज्य करेंगे १० वे सीतादेवी धन्यहैं व वे श्रीरामचन्द्र धन्य हैं जोकि आनन्दपूर्व्वक परस्पर पृथ्वीपर क्रीड़ा करेंगे ११ ऐसी बार्त्ता करतेहुये उन दोनों पक्षियों को देख व उनकी बाणीसुनकर उन्हें देव देवी की जोड़ी जानकर सीताजी ने बिचारा कि १२ यह शुकी शुकका जोड़ा हमारी ही कथा कहताहै इससे इस जोड़ेको पकड़कर सबबातें अर्थसहित पूँछलें तो अच्छाहो १३ ऐसा विचार करके उन्होंने अपनी सखियों से कहा कि धीरेसे यह मनोहर पक्षियोंका जोड़ा पकड़ो १४ सखियां धीरे २ पीछे से उसगिरि में गईं व दोनोंको पकड़लाईं व अपनी सखी सीताजीका प्रिय करनेकेलिये उनको देदिया १५ बहुत विविध प्रकारके वचन बोलतेहुये उन दोनोंको मनोहर शब्द करतेहुये देख स्वस्थचित्त करके जानकीजी ने यहबात उनदोनों से पूँछी कि १६ तुम दोनों न डरो अतिरम्यरूप कौनहो व कहांसे और क्यों यहांआये हो श्रीराम कौनहैं और सीता कौनहैं व उन दोनोंको तुम कैसे जानते हो १७ वह सब हमसे कहो व हमसे दोनोंजने न डरो जब उन्होंने ऐसापूँछा तो वे दोनों पक्षी बोले कि १८ धर्म्मवेत्ताओं में उत्तम एक

बाल्मीकिमहानुऋषि हैं हम दोनोंका मनोहर स्थान उन्हीं के आश्रम परहै १९ उन मुनिने अपने शिष्यों से भावी रामायण कहा है व नित्य वही उनसे गवाया करते हैं क्योंकि प्रतिदिन वे रामचन्द्रजी के पदोंका स्मरण कियाकरते हैं व सब प्राणियों के हितमें रतरहते हैं २० सो हम दोनोंने सबभावी रामायण उन्हीं मुनिके मुखसे सुनाहै क्योंकि उनके शिष्य बार बार गाया करतेहैं व वे उनको पढ़ाते रहते हैं २१ सो सुनो हम दोनों तुमसे कहेंगे जो रामहैं व जो जानकी हैं व जो कि रामचन्द्रजी के संग जानकी की क्रीड़ाहोगी वह भी कहेंगे २२ अयोध्याजी के राजाको ऋष्यशृंग पुत्रेष्टियज्ञ करावेंगे तब परमेश्वर श्रीहरि एक साक्षात् देवताओं की स्त्रियों करके गाईगई हैं उत्तम कथायें जिनकी आप व तीन अपने अंशोंसे देवताओं की प्रार्थना से दशरथजी के यहां प्रकट होंगे २३ उनको भाई समेत विश्वामित्रमुनि जनकपुरीको लावेंगे तब अन्य राजाओं से बड़े दुःखसे भी न ग्रहण करने के योग्य हाथमें लियेहुये २४ धनुष रामचन्द्रजी उठालेंगे फिर तोड़भी डालेंगे बस धन्वा तोड़नेपर उनको सुमनोहर जनककी कन्या मिलजायँगी उनके साथ वे बड़ाभारी राज्य करेंगे २५ यह इतना व और भी हम दोनोंने वहांके रहनेवाले मुनियों से सुनाथा सो सब तुमसेकहा अब जानेकी इच्छा कियेहुये हम दोनों को छोड़दो २६ उन दोनों पक्षियों के वचन सुनकर उनसे फिर जानकीजी परमप्रीति से मनोहर बचन बोलीं २७ कि वे राम कहां हैं व किसके पुत्रहैं व कैसे उन सीताको ग्रहण करेंगे व सीताके सदृश रूप बरहैं कि नहीं २८ हमारे सब प्रश्नोंका उत्तर यथायोग्य हमारे आगे कहो फिर पीछे तुम दोनोंका सब मनोहर प्रिय करेंगी २९ यह सुनकर व शुकी कामसे पीड़ित जानकीजी को जानकर जानकीजी को सुनाकर सही पढ़नेलगा ३० सूर्य्यवंशध्वज महाबली राजा दशरथजी होंगे जिनकी सेवाकरके देवलोग सबओर से अपने शत्रुओं को जीतेंगे ३१ उनके तीन स्त्रियांहोंगी तीनों इन्द्रके भी मोहन करनेवाला रूप धारण करेंगी उन तीनों में महाबली चारपुत्र उनके होंगे ३२ सबसे बड़े पुत्रका रामचन्द्र नामहोगा व दूसरे को भरत

तीसरेका लक्ष्मण व सबसे छोटे चौथेका श्रीमान् सबसे बली शत्रुघ्न नामहोगा ३३ व रघुनाथ यह नाम महामनस्वी सबसे बड़ेका और नाम होगा क्योंकि हे सखि! उन महाबली श्रीरामचन्द्रजी के अनन्त नाम होंगे ३४ उन श्रीरामचन्द्रजी का सम्पुटित कमलके समान तो अतिसुन्दर मुखारबिन्द होगा व पङ्कज के तुल्य बड़े २ नेत्रहोंगे व ऊंची और मोटी मनोहर नासिका होगी व चीकनी टेढ़ी काली मनोहर भौंहैंहोंगी ३५ जानुपर्य्यन्त लम्बे मनोहर भुजहोंगे व शङ्खकेसमान चढ़ाउतार व छोटा गलहोगा व अच्छे किवाड़ के समान चौड़ी शोभायुक्त छाती उसमें यह सुन्दर लक्षण होगा ३६ कटिकी शोभासे युक्त अति सुन्दर ऊरुद्वय होंगी जो कि आत्मीय लोगों से सेवित होंगी व उन रघुपतिजी के अमल दोनों चरणकमलों की सेवा सम्पूर्ण अपने पराये सुर असुर किया करेंगे ३७ ऐसे रूपके धारण करनेवाले श्रीरामचन्द्रजी होंगे मैं कहांतक वर्णन करूं क्योंकि उनके रूप गुणों को सहस्रमुख के शेषजी नहीं कहसके फिर मेरे समान पक्षियों को क्या कहे ३८ जिसके रूपको देखकर ललित रूपिणी मनोहर शरीर धारिणी लक्ष्मी जी मोहित होगई थीं फिर पृथ्वीपर कौन स्त्री है जो देखकर न मोहितहो ३९ महाबल महावीर्य्य महामोहन रूपधारी श्रीरामचन्द्रजी का वर्णन कैसे करूं जो कि सब ऐश्वर्य्योंसे युक्त सदा बने रहते हैं ४० वे महा मोहन रूप धारिणी श्री जानकी देवी धन्य हैं जो उनके सङ्ग दश हज़ार बर्ष तक रमण करेंगी ४१ हे सुन्दरि! तुम कौनहो व तुम्हारा क्या नामहै जो कि हमसे बड़ी चतुरताके साथ श्रीरामचन्द्रजी का कीर्त्तन आदरसे पूँछतीहो ४२ इतनी वाणी सुनकर उन दोनों पक्षियोंसे जानकी अपना ललित मोहन जन्म कहती हुई बोली ४३ कि जो तुम ने जानकी बताया वे जनकपुत्री हमींहैं व श्रीरामचन्द्रजी जबयहां आकर सुमनोहररूप धारण किये हुये हमको प्राप्तहोंगे ४४ तबहम तुम दोनों को छोड़ेंगी अन्यथा नहीं क्योंकि हम तुम्हारे वाक्य से लोभित होगईहैं तबतक हमारे गृहमें रहकर लीला व सुखसे रहो व मधुरफल मनमाने खाते रहो ४५ यह वचन सुनकरकांपते हुये

वे दोनों भयभीत होकर परस्पर छटपटाकर जानकीजीसे बोले कि ४६ हे साध्वि! हमलोग पक्षी हैं बनमें रहते हैं व बनके पदार्थों को देखते रहतेहैं व अपनी इच्छासे सब कहीं घूमा करतेहैं इससे हम लोगोंको गृहमें सुख न होगा ४७ उनमें पक्षिणी बोली कि इसके विशेष मैं गर्भवतीहूँ अपने स्थानपर जाकर पुत्रोंको उत्पन्न करके फिर तुम्हारे स्थानपर आऊँगी यह वचन मैं सत्यही कहती हूँ ४८ उसने ऐसा कहा परन्तु जानकीजी ने उसे न छोड़ा तब वह पक्षी विनीत होकर बड़े प्रेमसे श्रीसीताजीसे उत्साह रहित बोलाकि ४९ हे सीताजी! छोड़देओ हमारी मनोहरी भार्य्याको क्यों पकड़ेहो हम दोनों अपने वनको चलेजायँ व सुखसे बनमेंबिचरें ५० हमारीमनोरम भार्य्यागर्भवतीहै हेशोभने! जबइसकेबच्चे होजायँगेतबहमदोनों फिर आवेंगे ५१ ऐसाकहनेपर पक्षीकोछोड़दियाव कहा कि तुम सुख पूर्वकचलेजाओ पर इस प्रियकारिणीको हम अपनेपास बड़ेसुखसे रक्खेंगी ५२ ऐसा कहनेपर दुःखित होकर वह पक्षी करुणापूर्व्वक जानकीजी से यह बचन बोला कि योगी लोग जो बचन कहते हैं वह सत्य व उचितही है ५३ कि न बोलना चाहिये न बोलना चाहिये सदा मौनहोकर बैठा रहै नहीं तो बोलने के दोषसे वह उन्मत्त बन्धनमें पड़ेगा ५४ हम लोग जो इस वृक्षके ऊपर बैठकर बातें न करते तो काहेको बांधे जाते इससे मौन रहना चाहिये ५५ यहकह कर फिर जानकीजी से बोला कि हे सुन्दरि! मैं बिना अपनी स्त्री के नहीं जीसक्ता इससे इसे छोड़दो हे मनोहरे! ५६ जब अनेक प्रकार के वाक्यों से उसने समझाया पर सीताजी ने उस शुकीको न छोड़ा तब कुपित होकर दुःखित उस भार्य्या ने जानकीजी को शापदिया ५७ कि जैसे तुम हमको हमारे पतिसे छुड़ातीहो ऐसेही तुमको भी इसी गर्भिणी की दशामें तुम्हारे पति रामचन्द्रजी छोड़ेंगे ५८ बार २ ऐसे वचन कहतीहुई व अत्यन्त दुःखित उसपक्षिणी के प्राणपतिके वियोगसे दुःखितहोकर प्राण निकलगये ५९ मरणकेसमय वह राम राम स्मरण करतीरही व मुखसे बार २ कहती भीरहीथी इसलिये दिव्य विमान आया उसपर चढ़कर वह पक्षिणी स्वर्ग में जाकर

शोभितहुई ६० उसके मरजानेपर उसका पति वह पक्षिराज शुक परम क्रोध करके जाय गङ्गाजी में दुःखितहोकर गिरपड़ा ६१ व गिरने के समय कहनेलगा कि जनोंसेपूरित श्रीरामकी नगरी में मैं ऐसाहोकर जन्मपाऊँ कि मेरे वाक्यसे उद्विग्न होकर यह सीता अत्यन्त दुःखितहो ६२ ऐसाकह अपनी स्त्रीके वियोग से दुःखितहो व कुपित भयभीत होकर कांपताहुआ गङ्गाजी के बड़े अगाध जल में गिरपड़ा ६३ सो मरणके समय क्रुद्धहोने से व दुःखित होने से सीताजी का अपमान करने से वह शुक आकर परम अन्त्यज रजक हुआ व क्रोधन उसका नामहुआ ६४ ॥

चौ० जो करिक्रोध महात्मन केरो । करत अनादर निजहिय हेरो ॥
छोड़त प्राणहोत सो अन्त्यज । सुनहुद्विजोत्तमबरुरक्षतअज १।६५
तासु रजककी उक्तिमलीनी । तासों निन्दित सीय प्रवीनी ॥
रजक पापसों भयहु वियोगा । सीता वनगवनी-युत शोगा २।६६
यह जो पूँछ्यहु जनककुमारी । वृत्त कहा तुमसन हम भारी ॥
अब सुनु अपर वृत्त जो भयऊ । कहत पुरान तनिकनहिंनयऊ ३।६७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेरजकप्राग्जन्मकथनं नामसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

दो० अट्ठावनयेंमहँ कह्यो जिमि सुनि सीता त्याग ॥
भरतादिक मूर्च्छित भये लगे लषन अराग १

शेषनाग जी वात्स्यायन मुनि से बोले कि भरत जीको मूर्च्छित देखकर दुःखित हो श्रीरघुनाथजीने द्वारपाल से कहा कि शत्रुघ्नको हमारेपास शीघ्रभेजो १ महाराजकी आज्ञापातेही वह शत्रुघ्नजीको जहां भरत सहित श्रीरामचन्द्रजी थे वहां क्षणमात्र में बुलालाया२ भरतको मूर्च्छित व श्रीरामचन्द्रजी को अति दुःखित देखकर प्रणाम करके शत्रुघ्नजी बोले कि यह क्या महा दारुणहै ३ तब श्रीरामचंद्र जी ने उस अन्त्यजाधम रजक के कहेहुये लोकनिन्दित वाक्य को अपने चरणसेवक शत्रुघ्नजी से कहा ४ व फिर नीचेको मुखकर दीन मनहो कांपतेहुये श्रीराघवेंद्रजी ने कहा कि हे भाई ! हमारा वचन

सुनो और आदर से शीघ्रही करो ५ जिसके करने से पृथ्वी पर गङ्गा के समान बिमलकीर्त्तिहो उस अन्त्यजके मुखसे सीताके विषय का अवाच्यसुनकर ६ कि तो हम अपनाशरीर छोड़ा चाहतेहैं कि तो इन जानकी को रामचन्द्रजी का ऐसा बचन सुनकर शत्रुघ्न जी ७ यद्यपि शत्रुओं के विदारण करनेवाले थे परन्तु अति दुःखित होकर थरथराकर कांपतेहुये पृथ्वीपरगिरपड़े ८ शत्रुघ्नजी ने कहा व फिर एक मुहूर्त्त भरमें जब मूर्च्छा जागी तो श्री रघुनाथजीसे बोले किहे स्वामिन्! यह जानकीजी के विषयमें क्या दारुण बचन आप कहते हैं भला पाखण्डी दुष्टचित्त सब धर्म्मोंसे बाहर कियेगयेहुये लोगों से ९ निन्दित होनेसे कहीं वेद श्रुतियां ब्राह्मणोंके ग्रहणकरनेवाली नहीं रहतीं गंगाजी सब लोगोंके पापोंको बिनाशती हैं व सब दुरितों का विध्वंस करती हैं १० पर पापी पुरुष मारे पाप के उनका स्पर्श नहीं करते तो क्या वे सज्जनोंके भी स्पर्श करने के योग्यनहीं रहतीं सूर्य्य सब जगत्‌भरके प्रकाश के लिये उदित होते हैं ११ पर उल्लू पक्षियोंके हितकारक नहीं होते तो इससे क्या हानि है इससे आप इनको ग्रहण करें ऐसी अनिंदित पतिव्रता शिरोमणि को न त्यागें १२ हे श्रीरामभद्रजी कृपा पूर्व्वक हमारा वचन कीजिये महात्मा शत्रुघ्नजीका बचन सुनकर १३ जो भरतसे कहाथा वही बचन फिर फिर रामचन्द्रजीने कहा बड़ेभ्राताके वैसेबचन सुनकर दुःख समूह से पूरित हो १४ मूर्च्छित होकर शत्रुघ्नजी पृथ्वीपर काटे हुये वृक्ष के समान गिरपड़े शत्रुघ्न भाई को मूर्च्छित होकर गिरेहुये देखकर अत्यन्त दुःखित होकर १५ द्वारपालसे कहा कि लक्ष्मणको हमारे समीप लाओ उसने लक्ष्मणजी के मन्दिर में जाकर यह बचनकहा द्वारपालनेकहा १६ कि हे स्वामिन्! श्रीरामचन्द्रजी आपको अति वेग बुलाते हैं वे रामचन्द्रजी का वेगसे बुलाना सुनकर १७ जहां पाप रहित उनके भ्राता श्रीरामचन्द्रजी भाइयों सहितथे वहां अति वेग से गये व भरतको मूर्च्छित देखकर व शत्रुघ्नको भी मूर्च्छित देख १८ और श्रीरामचन्द्रजी को दुःखार्त्त देखकर दुःखित होकर बचन बोले कि हे महाराज! यह दारुण मूर्च्छनादिक क्या दिखाई

देता है १९ इसका मुख्यकारण अतिवेग हमसे कहिये ऐसा कहते हुये लक्ष्मणजी से महाराजने सब वृत्तांत आदि से २० अतिशीघ्र कहा जो कि, पूँछकर दुःखसमूहसे युक्तहो पुलकित खड़े थे सीताजी के त्यागके विषय का बचन सुनकर २१ बार २ निश्वास लेते हुये लक्ष्मणजी बड़े उच्छ्वाससे अचल अंगसे होगये भाई को अचल गात्र बारबार कांपते हुये २२ व कुछभी न बोलतेहुये देखकर शोक से पीड़ित श्रीधर्म्ममूर्त्ति रामभद्रजी बोलेकि दुर्य्यशसे शङ्कितहोकर पृथ्वी पर स्थितहोकर अब हम क्या करेंगे २३ लोक की भीतिसे शोकवान् होकर अपना शरीरही छोड़देंगे क्योंकि ये हमारे सब भाई आज तक सदा हमारे वाक्य करने में विचक्षणही रहे जैसेही हम कुछ कहतेथे तुरंत करते थे २४ सो इससमय वे भी भाग्यवश से हमारे बचनके प्रतिकूल कररहेहैं कहां जायँ व कहीं जाकर क्या करें राजा लोग सब हमको भूतलपर हँसेंगे २५ जैसे कि कोढ़ी को रूपवान्नर हँसते हैं ऐसेही दुर्य्यश से लाञ्छित हमको सब हँसेंगे वैवस्वतमनुके वंश में पूर्व्वकालमें जितने राजा होते चले आये हैं सब एकसे एक गुणों में अधिकही होते आये २६ अब हमारे होने पर उसके विपरीत होगया श्रीरामभद्रजी को ऐसा कहते हुये देख कर २७ लक्ष्मणजी अत्यन्त बहतेहुये आंशुओंको रोककर अद्भुत विकलस्वर से बोले कि हे स्वामिन्! विषाद न कीजिये आपकी मति कैसे हतहोगई २८ अनिन्दित सीताजीको आप कैसे छोड़ते हैं हम अभी उस धोबीको बुलवाते हैं व पूंछते हैं २९ कि स्त्रियों में श्रेष्ठतम जानकी जी की निन्दा तूने कैसेकी आपके देश में कोई नीचजन भी बाधित नहीं होता है ३० इससे आपके मनकी प्रतीति जैसेहो वैसा कीजिये उस से पूँछ तो लियाजाय आप भीरुहोकर पतिव्रत धर्म्म में परायण को कैसे छोड़ते हैं ३१ मन बचन व कर्म्म से जानकी जी अन्य किसीको नहीं जानतीं इस से इनको ग्रहणकरो जानकी जी को न त्यागो ३२ हमारे ऊपर कृपा करके हमारे बचन को मानो ऐसा कहते हुये लक्ष्मण जी से धर्म्म के वाक्य समझते हुये व त्याग करनेही पर उद्यत शोक से कर्शित श्री रामचन्द्रजी

बोले ३३।३४ कि तुम हमसे कैसे कहतेहो कि अनिन्दित इनको न त्यागो हमलोकके अपवाद से डरकर इनको छोड़ना चाहते हैं और हमभी जानते हैं कि ये अपापिनीही हैं ३५ अपने यशके हेतु तो हम अपना शोभनदेह छोड़सक्ते हैं व जो लोकापवादसे निन्दित होजाओ तो तुम भाईकोभी छोड़दें ३६ फिर अन्यगृह पुत्र शोभन मित्रादिकों को क्या कहैं व अपने यशके कारण सब कुछ छोड़सक्ते हैं मैथिली के छोड़ने को क्या कहें ३७ जैसे हमको लोक में विश्रुत विमल अपनी कीर्त्ति प्रियहै वैसा न हम को भ्राता प्रिय हैं न स्त्री न कोई बान्धव ३८ इस समय अब उस धोबीसे कुछभी न पूँछना चाहिये काल पाकर आप यह वार्त्ता लोगों के चित्त को प्रसन्न करेगी ३९ जैसे कि कच्चे रोगकी चिकित्साकरने से वह कुछ भी अच्छा नहीं होता वही जब काल पाकर परिपक्क होजाता है तो औषधादिकों से नष्टहो जाता है ४० ऐसेही काल पाकर फिर जानकी का ग्रहण सम्भव है इस समय विलम्ब न करो कि तो इन पतिव्रताको बनमें छोड़ो कि तो खड्ग से हम को मारो ४१ इस वाक्यको सुनकर लक्ष्मणजी क्षण मात्र दुःखित होगये फिर शोकसे खिंचे हुये उन्होंने अपने मन में चिंताकी ४२ कि पिताकी आज्ञा से परशुरामजीने माताको तृणसम समझा बधही करडाला इस से चाहे योग्यहो वा अयोग्य गुरुकी आज्ञा उल्लङ्घन करने के योग्य नहीं होती ४३ इस से अब रामचन्द्रजी के प्रिय करनेकी इच्छा से इन जानकी जी को हम छोड़ आवें मन में यह अच्छे प्रकार विचार करके लक्ष्मण श्री रामचन्द्र जी से बोले कि ४४ लक्ष्मण जीने कहा अकर्त्तव्यभी करै पर गुरुकी आज्ञा का उल्लङ्घन न करै इससे हे सुव्रत! जो आप कहतेहैं वह आपका वाक्य हम करेंगे ४५ ऐसा कहते हुये लक्ष्मण जीसे रामचन्द्र जी बोले कि बहुत अच्छा बहुत अच्छा हे महाप्राज्ञ! तुम ने हमारा मन सन्तुष्ट किया ४६ इसी रात्रि में जानकी की इच्छा तपस्विनियों के देखने की हुई थी उसी बहाने से रथपर चढ़ाकर इन को छोड़ आओ हे महामतिवाले! ४७ ऐसा बचन सुनकर लक्ष्मण जी का मुख सूख गया रोदन करते हुये आंशुओं

को छोड़ते हुये अपने मंदिर को वे चलेगये ४८ व सुमंत्र को बुल-
वाकर उन से कहा कि अच्छे वस्त्र भूषणोंसे युक्तकर व उत्तम घोड़े
जोतकर हमारा रथ तैयार करो ४९ यह वाक्य सुनकर सुमंत्र रथ ले
आये आनेहुये उस रथको देखकर शोक से खिंचे हुये तो लक्ष्मण
बैठेही थे ५० परम दुःख को प्राप्त हुये व रथपर चढ़े निश्वासलेते
हुये जानकी जीके मंदिर को चले क्योंकि अपने बड़े भाईके सेवक
थे ५१ व श्रीरामचंद्र जी के अन्तःपुर में जाकर दुःख समूह से
युक्त निश्वास लेतेहुये श्री जानकी जी से बोले ५२ कि हे मातः
जानकि! हम को रामचन्द्र जी ने तुम्हारे मन्दिर को भेजा है
तुम अपने दोहद के लिये तापसियों को देखने चलो ५३ ल-
क्ष्मण जी के ऐसे बचन सुनकर जानकी जी परम हर्षितहुईं व
लक्ष्मण से बोलीं कि ५४ रामचन्द्र जी के चरणों के स्मरण करने
वाली हम मैथिली रानी धन्य हैं जिस के दोहद के पूरण करने
के लिये उन्हों ने लक्ष्मण को भेजा ५५ आज हम उन बने-
चरी पतिदेवता तपस्विनियों के नमस्कार करेंगी व उन मनोहरियों
को वस्त्रों से पूजित करेंगी ५६ इतना कहकर श्रीरघुनाथजीकी
प्रियकारिणी श्रेष्ठपत्नी श्रीजानकीजीने रम्य विविध प्रकारके वस्त्र
महात्माओंके धारणके योग्य भूषण नानाप्रकार के मणि बिमल
मोती कपूरआदि सुगन्धित वस्तु व चन्दनादि बिचित्र अनेक
प्रकार की वस्तु सब लिये ५७ । ५८ इन वस्तुओं को लेकर दा-
सियों के हाथों में देकर वे जैसे लक्ष्मण जी के समीप को चलीं कि
वैसेही देहलीपर फिसल कर गिर पड़ीं ५९ परन्तु मारे हर्ष के इस
अशकुनको न विचार कर प्रियकारी लक्ष्मणजी से बोलीं कि वहरथ
कहां है जिसपर चढ़ाकर हमको पहुँचाओगे ६० लक्ष्मणजीने नि-
श्वासभरके कहा यहरथहै चढ़ो सब सामग्री लेकर वे चढ़ीं लक्ष्मण
जीने सारथि से कहा घोड़े हांको ६१ उदासीन अश्रुवहते मुखसे
युक्त लक्ष्मणको बारबार देखते हुये उस सारथि ने घोड़े हांके ६२
जैसेही उसने चाबुक मारा है कि घोड़े पृथ्वी पर गिरपड़े व जब न
चले तो वह लक्ष्मणजी से बोला कि ६३ हे महाराज ! हम यत्न

से चलाते हैं पर घोड़े नहीं चलते क्याकरें घोड़ों के गिरनेका कुछ कारण नहीं जानते ६४ ऐसा कहतेहुये सारथिसे लक्ष्मणजी गद्गद स्वरसे कुछधैर्य धारण करके बोलेकि अच्छी तरह कोड़ोंसे ताड़ित करके घोड़ोंको चलाओ ६५ ऐसा सुनकर सारथि ने किसी युक्तिसे बाहनों को चलाया तब दुःख कहनेवाला जानकीजीका दहिनानेत्र फड़का ६६ तब जानकीजी के भी हृदयमें दुःख कहनेवाला शोक हुआ उसी समय पुण्यपक्षी जिनको सम्मुख वा दक्षिण ओर दिखाई देना चाहिये वे पीछे व बाईं ओर दिखाई दिये ६७ ऐसा देखकर जानकीजी देवरसे बोलीं कि तपस्विनियोंके दर्शनकी इच्छासे जाती हुई हमको ये पापकारक अशकुन कैसे हुये ६८ रामचन्द्रजी का कल्याणहो व भरतका कल्याण व तुम्हारे अनुज शत्रुघ्नका कल्याण हो व उनकी प्रजाओंमें बिपत्तियां नहों ६९ ऐसाकहतीहुई जानकी जी को देखकर वे लक्ष्मणजी रुद्धकण्ठहो व आंशुओंसे युक्तहोकर उन सीताजी से कुछ न बोले ७० इसप्रकार जातीहुई अपनी बाईं ओर घूमनेवाले मृगोंको दक्षिणओर घूमतेहुये दुःख समूहकरनेवाले देखकर लक्ष्मणजीसे बोलीं कि ७१ आज जो मृग दक्षिणओरके चलनेवालेथे वे हमारीबाईं ओर घूमतेहुये दिखाई देतेहैं व बाईं ओर वाले दक्षिण ओर सो योग्यहीहै क्योंकि हम रामचन्द्रजीके चरणों को छोड़कर जाती हैं ७२ ॥

चौ०।परमधर्म्मनारिनकरयेहू।निजपतिपदपूजहिंकरिनेहू ॥
सोतजि अनतजात मुहिं जोई। होइकछू अनुचितनाहिंसोई १।७३
इमिबिचार करती पथिमाहीं। सबपरमार्त्थ सहित शकनाहीं ॥
देखीजाय जाह्नवी देवी। सकल भांति मुनिवरजन सेवी २।७४
जहँपयसमपयबिशदबिराजत।ज्यहिलषितुरतपापसबभाजत॥
जहँ दिखातलहरी यकसंगा। मनहुस्वर्ग्ग सोपानक ढंगा ३।७५
जासुवारिकण छुअत तुरन्ता। महापाप सञ्चय बलवन्ता ॥
भागतकतहुँशरणनाहिंपावत।तिन्हेंसकलथलसमयदिखावत ४।७६
गंगातटपर पहुँचे लषनहूं। अति बिह्वलह्वै गुनत स्वमनहूं ॥
रथसंस्थित सीतासों कह्यऊ। अबउतरहुमारगनाहिंरह्यऊ ५।७७

तासुबचन सुनि जनककुमारी । उतरीं त्वरित न सकींसँभारी ॥
कण्टकगिरत लषन गहिहाथा । तहँ बैठायहुकीनसनाथा ६ । ७८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेजानक्यागंगादर्शनंनाम ऽष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥

उनसठवां अध्याय ॥

दो० । उनसठयें महँ परमदुख सीता अरु सौमित्र ॥
जिमि बनघोर कठोरलषि लहेकहे अतिचित्र १
पुनिबाल्मीकि सुआश्रमहि पाय जानकी दोय ॥
सुतजाये तिनसब पढ़ीं विद्यामुनिपहँ जोय २

शेषनाग वात्स्यायन मुनिसे बोले कि फिर लक्ष्मणजी नौकापर चढ़कर गंगाजीके उसपार जाकर जानकीजीके हाथपकड़कर नौका पर से उतारकर बनको गये १ जब जानकीजी मार्ग्ग में चलने लगीं तो उनका मुख सूखगया व कोमलचरणों में कण्टकोंके लगने से पद २ पर गिरनेलगीं २ परन्तु रामचन्द्रजीकी आज्ञाके बशीभूत लक्ष्मणजी ने उनको महाघोर दुःख दायक बनमें पैठाया ३ जहाँ कि महाघोर बबुर खैर धव बहेरा व चिलौल आदि वृक्षथे सो भी दावानलसे जरजानेके कारण बनाय सूखगये ४ व उनके खोथलों में अतिकोपकिये बैठेहुये सर्प्प फुफुकारछोड़रहे थे व घुघुवा जहां लोगोंके भयंकर घूशब्द करते थे ५ व व्याघ्र सिंघ शृगाल चीता आदि अतिभयंकर जन्तुभी जहां दिखाई देतेथे ये सब अपने स्वभावही से सदा कोपकियेरहतेहैं व मनुष्यों का भक्षणकरतेहैं ६ वन के भैंसे शूकर हाथीआदि अतिदुष्टशृंग व दांतोंवाले मदान्धहोकर प्राणियोंके मनको भयकरते हैं ७ ये सब वहां थे ऐसेबनको देखकर जानकीजीको मारेभयके ज्वरहोआया व कांटों से चरण छिदगये तब दुःखितहोकर लक्ष्मणजी से बोलीं कि ८ हे बीर लक्ष्मणजी ! ऋषियों मुनियों के सेवन करने के योग्य व नेत्रों को सुख देनेवाले आश्रमोंको हम यहां नहीं देखतीं न सुन्दर तपोधन उनलोगों की स्त्रियोंको ही देखती हैं ९ खालीभयानकपक्षी व सूखे वृक्ष व दावानल से जलाहुआ साराबन देखतीहूं १० व तुमको आंशुओं को

छोड़तेहुये दुःखसे पीड़ित देखतीहैं व हमको पद२पर सहस्रोंअश-
कुन होते चलेआतेहैं ११ सो हे वीराग्रय ! हमसे शीघ्रही कहो कि
महात्मा रामचन्द्रजी ने हमको कैसे दुष्टहृदय समझा जोकि परि-
त्याग किया इसकाकारण अतिवेगकहो १२ जानकीजी का ऐसावाक्य
सुनकर शोकसे सींचेहुये लक्ष्मणजी नेत्रों में आंसु भरकर कुछभी
उत्तर न दिया १३ फिर वे लक्ष्मण के संग चलतीहुई उसीप्रकारके
महाघोर बनको देखतीहुई दुःखसे पीड़ित होकर लक्ष्मणवीरसे बोलीं
१४ परन्तु तौभी उन्होंने कुछभी जानकीजीसे न कहा तब उन्होंने
बड़ाहठकरके फिर पूँछा १५ जब बड़ेही आग्रह से बार२ सीताजी
ने पूँछा तो मारे दुःख के गद्गदबाणी से लक्ष्मणजी ने त्याग करने
का बृत्तान्त कहा १६ हे मुनिसत्तम ! उनके बज्रपात समान बचन
सुनकर जड़कटेहुये वृक्षके समान वैदेहीजी पृथ्वीपर गिरपड़ीं १७
तब पृथ्वीने अपने ऊपर अपनी निष्पापिनी कन्या सीताजीको सँ-
भारलिया क्योंकि पृथ्वी को यह शंकाहुई कि जो हम न ग्रहणकरें
गी तो लोग कहेंगे कि देखो अपनी कन्या को इसने भी त्यागदिया
१८ वैदेहीजीको पतितदेखकर लक्ष्मणजी उत्सुक होकर पल्लवसे प-
वन करनेलगे व सावधान किया १९ इतने में चैतन्यहोकर सीता
जी बोलीं कि हे देवर ! हास्य न करो पापरहित हमको रघुबंशभूषण
जी कैसे छोड़ते हैं २० इसप्रकार बहुत बिलापकरके लक्ष्मणजीको
अत्यन्त दुःखितदेखकर महादुःखितहोकर मूर्च्छाको प्राप्तहोके फिर
पृथ्वीपर गिरपड़ीं २१ एकमुहूर्त्तभर में जब मूर्च्छामिटी तो अति
दुःखितहोकर व शोक से हतहो फिर रामचन्द्रजीके चरणोंका स्मरण
करतीहुई बोलीं कि २२ जिन महाबुद्धि श्रीरघुनाथजी ने हमारेअर्थ
समुद्र में वानरोंकेसाथ सेतुबांधा वेमहात्मा हमको कैसे छोड़तेहैं२३
जिन्हों ने ऐसा प्रयास हमारे लिये किया वे महात्मा केवल एक
महानीच धोबी के कहने से निष्पाप हमको काहेको त्यागते इसमें
कुछ हमारे भाग्यही की प्रतिकूलता है २४ ऐसा कहतीहुई वैदेही
जी फिर मूर्च्छित होगईं उनको फिर मूर्च्छितदेखकर विकृतस्वर से
लक्ष्मणजी रोदन करने लगे २५ फिर चैतन्यहोकर दुःखित श्रीजा-

नकीजी लक्ष्मणजीको अत्यन्त दुःख से आतुर व आंशुओं से युक्त और बाष्प से कण्ठ रुँधेहुये देखकर बोलीं कि २६ हे लक्ष्मण! अब धर्ममूर्त्ति व यशोनिधि रामचन्द्रजी के समीपजाओ परन्तु हमारा एकवाक्य उनसे तब कहना जब कि तपोनिधि बसिष्ठजीभी बैठेहों २७ वह यह है कि हमको विपापिनी जानतेहुये आपने जो छोड़ा सो यह अपने कुलकेयोग्य किया है अथवा यह बहुतशास्त्र ज्ञानका फल है २८ नित्य आपके चरण में अनुरक्त व नित्य आपका जूंठ भोजनकरती हुई हमको जो आपने त्यागा और इस में क्याकहें हमारा भाग्यही कारणहै २९ हे बीरबरोत्तम! तुम्हारा सर्वत्र कल्याण हो हम तबतक बनमें तुम्हारा स्मरणकरतीहुई प्राणधारण करेंगी ३० हे रघुबंशज! मनसा बाचा कर्मणा से आपही मुझको उत्तमहैं हमने अपनेमनसे अन्यसबोंको तुच्छकरदिया ३१ अब यही प्रार्थना करती हैं कि हे महीश्वर! जन्म२ में आपही हमारे पतिहों व आपहीके चरणके स्मरणकरने से हतपापहोकर पतिब्रत धर्म्मयुक्त ईश्वरी होवें ३२ हे लक्ष्मण! सब सासुओं से हमारा संदेशकहना कि पाप रहित मुझको रामचन्द्रजी ने महाभयानक बनमें छोड़दिया ३३ अब मृगगणों से युक्त इसबनमें तुम्हारे चरणों का स्मरण करतीरहेंगी रामचन्द्रजी ने महात्माहोकर भी गर्भवती हमको बन में छोड़ा ३४ बस लक्ष्मण हमाराबचन सुनो रामचन्द्रजी का कल्याण हो हम इसी समय प्राणछोड़देतीं पर क्याकरें रामचन्द्रजी के बीर्य्य की रक्षाकरती हैं ३५ और जोकि तुम रामचन्द्रजी का वचन सत्य करतेहो इससे तुम्हारा शुभहो क्योंकि रामचन्द्र के चरणकमल के सेवीहोने से तुमने परतन्त्रहोकर यह कार्य किया है ३६ अब तुम रामचन्द्रजी के समीपजाओ तुम्हारे मार्ग्ग कल्याणरूप हों हमारे ऊपर कृपाकरना व कभी २ हमारास्मरण करतेरहना ३७ इतना कहकर फिर लक्ष्मणके आगे मूर्च्छितहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ीं व जानकी जी को मूर्च्छितदेखकर लक्ष्मणजी अत्यन्त दुःखी हुये ३८ व बस्त्रोंसे पवन करनेलगे जब मूर्च्छाजागी तो लक्ष्मणजीने मधुर बचनों से बार २ बहुत समझाया व शान्तक्रिया ३९ लक्ष्मणजी ने

कहा कि अच्छा अब हम जाते हैं व जाकर रामचन्द्रजी से सब आपका सन्देश यथातथ्य कहेंगे व इतनी दूर वनमें लेआने का कारण यह है कि तुम्हारे समीपही बाल्मीकिजीका बड़ाभारी आश्रम है ४० ऐसाकहकर जानकीजी की प्रदक्षिणाकर अतिदुःखित बाष्प की कलाओं से युक्त आंशु छोड़तेहुये व दुःखसे व्याकुल लक्ष्मण रामचन्द्रजी के समीपको चलदिये ४१ जानकीजी अपने देवरको जातेहुये देखकर विस्मित लोचनहुईं कि ये महाभाग हमारे देवर लक्ष्मण हमको हँसतेहोंगे ४२ हाय प्राणों से भी अधिक प्रियतम व पापरहित हमको श्रीराघवजी ने कैसे त्यागा यह चिन्तना करती हुई लक्ष्मणजी को एकटक निहारतीरहीं ४३ जब देखा कि हमारे सत्यसहायक लक्ष्मण अब गङ्गाजी को उतरगये तो प्राणके सन्देह को पाकर मूर्च्छितहोकर गिरपड़ीं व बनाथ मृतकहीसी होगईं ४४ तब हंसोंने अपने पक्षों से जलले आ २ कर जानकीजी के ऊपर सींचा व पुष्पों के सुगन्धसे युक्त मधुरपवन बहनेलगा ४५ हाथी अपनी शूंड़ों में जल भर २ कर सबओरसे वहां आगये मानों धूलि लगेहुये महारानी जानकीजी के शरीर के धोनेहीकेलिये आयेथे वरन धोनेही लगेथे ४६ मृगगण उनकेसमीप आकर विस्मितदृष्टिहो खड़े होगये व बिना बसन्तऋतुकेही सब वृक्ष फूलउठे ४७ ऐसा होनेपर श्रीजानकीजी की मूर्च्छा फिर बड़ी देरपर जागी तब राम राम यह स्पष्टता पूर्वक कहतीहुई दुःखसे बिलाप करनेलगीं ४८ ॥

दो० । दीनबन्धु करुणाकरण स्वीयभरण हानाथ ॥
निरपराध कैसे तजत म्वहिं वनमें रघुनाथ १ । ४९

इत्यादि कहतीहुई व बार बार बिलाप करतीहुई इधर उधर देखती फिर फिर मूर्च्छितहोकर गिरती थीं कि ५० अपने शिष्यों समेत भगवान् बाल्मीकिजी वनमें आये व उन्होंने करुणास्वर से वहां रोदनसुना ५१ तब अपने शिष्यों से कहा कि देखो तो अति दुःखित स्वरसे ऐसे घोर महावनमें कौन रोदन करताहै ५२ मुनिके प्रेरित शिष्यगण वहांपहुँचे जहां कि नेत्रोंसे आंशु ढालतीहुई बाष्प समूहसे युक्त राम राम करती पुकारतीहुई जानकीजी तड़फड़ाती थीं

५३ उनको देखकर उत्साह से शिष्यों ने मुनिजी से जाकर कहा उसका वचनसुनकर तब मुनिराज भी वहां गये ५४ व तपस्याओं के राशि उन मुनिजीको देखकर पतिदेवता श्रीजानकीजी ने कहा कि बेदमूर्त्ति व ब्रतसागर मुनिराजके नमस्कार है ५५ ऐसा कहती हुई सीताजीको आशीर्वादों से युक्तकिया कि पतिके संग बहुतादि-नोंतक जीवो व उत्तम दो पुत्र पावो ५६ तुम कौनहो व क्यों ऐसे घोर वनमें आईं सो भी इस दशामें सब हमसेकहो तो तुम्हारे दुःख का कारण हम जानें ५७ तब थरथर कांपतीहुई निश्वास लेतीहुई राजराज श्रीरामचन्द्रजी की धर्म्मपत्नी जानकीजी करुणारस सानी बानी से उन मुनिराजजी से बोलीं कि ५८ अर्थयुक्त कहेहुये मेरे वचन सुनिये व मेरे दुःखका कारण भी सुनिये मैं राज राज श्रीरघु-पतिजी की सेवकीहूं ५९ व निरपराध मुझको छोड़ाहै मैं इस बिषय का कारण नहीं जानती श्रीराघवजी की आज्ञासे लक्ष्मण मुझे यहां छोड़गये हैं ६० ऐसा कहकर आंशुओं की कलाओं से पूर्णमुख प-ङ्कज धारणकियेहुई जानकीजी से उन कमललोचनी को समझाते हुये बाल्मीकिजी बोले कि ६१ हे वैदेहि! अपने पिताके गुरु बाल्मी-किमुनि हमकोजानो अब दुःख न करो हमारे आश्रमपर चलो ६२ हे पतिदेवते! इसको अपने पिताका दूसरास्थान समझो व ऐसा अ-विचार कर्म्म करने के कारण राजा रामचन्द्रजी के ऊपर हमारा रोष है ६३ ऐसा वचनसुनकर पतिदेवता जानकीजी दुःखकेमारे आंशुओं की धार छोड़रहीथीं पर कुछ सुखको प्राप्तहुईं ६४ शेषनाग वात्स्या-यनमुनि से बोले कि दुःख से पूर्ण आकुल नेत्रवती जानकीजी को समझाकर बाल्मीकिजी तपस्विनियों के समूह से भरेहुये अपने आ-श्रमपर लेगये ६५ तपोंकेनिधि बाल्मीकीजी के पीछे जातीहुई जा-नकीजी उससमय ऐसी शोभित हुईं कि जैसे कि चन्द्रमा के पीछे चलतीहुई कोई तारा शोभित होतीहै ६६ मुनियों से परिपूरित अ-पने आश्रमपर पहुँचकर बाल्मीकिजी ने तपस्विनियों से कहा कि ये जानकी हैं आश्रमपर आई हैं ६७ तब जानकीजी ने प्रसन्नचित्त होकर सब तापसियों के प्रणामकिया तब हर्षितहोकर वे सब इनसे

मिलीभेंटीं ६८ तब बाल्मीकिजी ने अपने शिष्यों से कहा कि जानकी के लिये एक अति मनोहर पर्णशाला बनाओ ६९ बाल्मीकिजीका मनोहर ऐसा वचनसुनकर काष्ठों के ऊपर पलाश साखूआदि के पत्रोंसें युक्तिपूर्व्वक आच्छादित करके उन लोगोंने अतिही मनोहर पर्णशाला बनाई ७० उसमें पतिव्रत में परायण वैदेहीजी बाल्मीकिजीकी परिचर्य्या करतीहुई व फलाहार करतीहुई रहनेलगीं ७१ व मन वचनसे राम राम जपतीहुई पति देवता श्रीजानकी वहां दिनोंको बितानेलगीं ७२ फिर समय पर मनोहर शरीर दोपुत्र श्रीरामचन्द्रजी के प्रतिनिधि उन्होंने उत्पन्नकिये वे दोनों मानों अश्विनीकुमारही के समानहुये ७३ जानकीजी के पुत्रोंका सम्भव तपस्विनियों से सुनकर अतिहर्ष से मन्त्रवित्तम मुनिजी ने सब जातकर्म्मादि संस्कारकिये ७४ कुशोंसे व दूर्व्वा के लवों से अर्थात् दूब के लेशों से मुनिजी ने सब संस्कारकिये इसलिये उन दोनों महाराजाधिराज कुमारोंका नाम कुश व लव प्रसिद्धहुआ ७५ जब महा निर्म्मल तपस्वि शिरोमणि बाल्मीकिजी ने अपने हाथों से पुत्रों के सब संस्कारकिये तब अत्यन्त हर्षितचित्त व सुमुखदृष्टि श्रीजानकीजी हुई ७६ व उसीदिन की सुन्दरी रात्रि में बाल्मीकिजी के आश्रमपर लवणासुरको मारकर थोड़ी सेना संगलिये शत्रुघ्नजी आये ७७ तब बाल्मीकिजी ने शत्रुघ्नजी को सिखादिया कि तुम जानकीजी के पुत्रों के होनेके समाचार रामचन्द्रजी से न कहना पीछे से हम आप जाकर कहेंगे ७८ ॥

चौ० । पुनिजानकीतनयद्वौसुंदर । बढ़नलगे नितअतिहि शुभङ्कर ॥
कंदमूल फल निज रुचि भोजन । करिभेपुष्ट महाबल ओजन १ । ७९
शुक्लपक्ष बिधु सम द्वौ बीरा । बढ़नलगे नित दिव्य शरीरा ॥
भोजन कन्दमूल फल करहीं । पर उन्मदता नित अनुकरहीं २ । ८०
करि उपनीत सांग सब वेदा । धनुर्व्वेदसरहस्य अखेदा ॥
अरु रामायण उभय पढ़ाया । बाल्मीकि मुनिकरिकै दाया ३ । ८१
बाल्मीकि द्वय धनुष अनूपा । स्वर्णविभूषित अतिहिसुरूपा ॥
सगुण अभेद्य श्रेष्ठ रिपुवारण । दिये दुहुनकहँ वैरि विदारण ४ । ८२

अक्षय बाण प्रपूरित दोई । इषुधि दीन रिपुगण के खोई ॥
दो करवाल ढाल बहुबर्म्मा । दिये अभेद्य मुनीश सुकर्म्मा ५ । ८३
धनुर्व्वेद पारग धनुधारी । विचरत मुनि आश्रम शुभकारी ॥
शोभित होत सदा तहँ दोई । जिमि अश्विनीकुमारक होई ६ । ८४
खड्ग चर्म्मकर धर सुत दोई । महावीर रणधीर न गोई ॥
देखि तहां जानकी मुदितमन । विरहदुःखतजिदीननपुनिभन ७।८५
यह जानकी तनय भव गाथा । मुनि तुमसन हम कही सनाथा ॥
अब सुनिये सो वृत्त अनूपा । बीरबाहुकृन्तन अनुरूपा ८ । ८६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेकुशलवोत्पत्तिर्नामैकोनषष्टितमोऽध्यायः ५६ ॥

साठवां अध्याय ॥

दो० सठयें महँ कह कालजित अरु लवकर संग्राम ॥
महाभयङ्कर जो भयहु कालजीत विश्राम १

शेषनाग वात्स्यायनमुनि से बोले कि शत्रुघ्नजी अपने वीरों के बाहु कटेहुये देखकर कुपितहो व रोषसे दांतों से ओठ चबातेहुये उनलोगों से बोले कि १ हे भटो ! तुमलोगों के बाहु किस वीरने काटडाले चाहे वह देवताओं से भी रक्षितहो पर हम उसके भी हाथ काटडालेंगे २ वह महामूढ़ रामचन्द्रजी का महाबल नहीं जानता इससमय हम अपने पराक्रमसे अपना बल उसे दिखावेंगे ३ वह वीर कहांहै व मनोरम घोड़ा कहां है वह कौन मूर्क्ख है जिसने विना पराक्रम जाने सोतेहुये सर्प्पोंको पकड़ा है ४ जब वीरों से उन्होंने ऐसा कहा तो वीरों ने विस्मित व अत्यन्त दुःखित होकर रामचन्द्रजी के प्रतिनिधि बालकको बतादिया कि एक बालकने ऐसा किया है ५ बालकने घोड़ेको पकड़लिया यहसुनकर रोषकेमारे लाल नेत्रकर कालजित् नाम अपने सेनापति से उत्सुकहोकर उन्होंने आज्ञादी६ कि हे सेनानी ! हमारी आज्ञासे सब सेनाके व्यूह बनावो क्योंकि इससमय यहवैरी महाबल पराक्रमवाला विदित होताहै वहां जाना है ७ यह बालक नहीं है हम जानते हैं कि घोड़े के पकड़नेवाले कि तो श्रीहरिजी होंगे अथवा त्रिपुरारिजी होंगे इन दोनों को

छोड़ अन्य कोई हमारे घोड़े को न हरता ८ इससे बली भी महा-
सैन्यका कदन अवश्यही होगा वह बालक निर्भयहोकर अपने मन
माने खेल कररहा है कुछ किसी को समझताही नहीं ९ इससे हम
लोगों को रिपुओं से दुर्ज्जय व सन्नद्धहोकर वहां जाना चाहिये यों
साधारण नहीं शत्रुघ्नजी का यह वचन सुनकर उस सेनापतिने १०
चतुरंगिणी सेनाको सजाकर बड़े दुःखसे जीतने के योग्य व्यूहरचे
शत्रुघ्नजीने चतुरंगिणी सेनाको सन्नद्ध व सजी देखकर ११ जहां
अश्व बांधनेवाला वह बालकथा वहांजानेके लिये आज्ञादी तबतो
वह चतुरंगिणी सेना चली १२ पृथ्वीतलको कँपाती हुई व बलसे
शत्रुओंको भयभीत करातीहुई चली सेनापतिने जाकर श्रीरामरूपी
उनबालक लवजीको देखा १३ श्रीरामचन्द्रजीकेही समान विचार
के हितवचनबोला कि हे बालक! बलशाली रामचन्द्रजीका श्रेष्ठघोड़ा
छोड़देवो १४ हम उन्हीं महाराजके अतिदुर्ज्जय कालजित् नाम
सेनापतिहैं तुमको रूपमें रामचन्द्रजीकेही समान देखकर हमारे
हृदयमें कृपाहोतीहै १५ नहीं तो जब हम तुम्हारेऊपर अप्रसन्नहोंगे
तो तुम्हाराजीना न होगा शत्रुघ्नजी के सेनापति का ऐसा वाक्यसुन
कर १६ लवजी प्रथम तो हँसे फिर कुछ कोपसे अद्भुत वचन बोले
कि चलेजावो हमने तुमको छोड़दिया अब अपने रामसे घोड़े का
पकड़ना जाकरकहो १७ हे वीर! नीतियुक्त वचनके बोलनेसेही तुम
से हम नहीं डरते हमारे यहां तुम्हारे से जो कोटिहों तो उनकी कुछ
गणना नहींहै १८ हमारी माताके चरणों के प्रसादसे सब रुई के
समानहैं इसमें कुछभी संशय नहीं है व जो यह तुम्हारा कालजित्
नामहै वह अपने मनमाना तुम्हारी माताका कियाहुआ है सार्थक
नहींहै १९ पके कुँदुरूके फलके समान वर्णसे कुछ काम नहीं चलता
केवल वीर्य्यसेही चलता है इससे अब इससमय अपना वीर्य्य दि-
खाकर तो अपने नामके बलसे चिह्नित होवो २० अपने काल हम
को जीतकर तब सत्यसत्य कालजित्नाम होवोगे यों नहीं शेषनाग
जीबोले कि वज्रकेतुल्य लवजीके वाक्यों से भिन्नहृदयहोकर सुभट-
शेखर कालजित्ने २१ हृदयमें अत्यन्त कोपकरके फिर वचन कहा

कि तुम किस कुलमें उत्पन्नहो व तुम्हारा नाम क्या है हम तुम्हारा नाम व कुल व शील व उमर नहीं जानते २२ हम रथमें सवार हैं तुम पैदल हो तुमको हम अधर्म से कैसे जीतें तब तो बड़ा कोप करके लवजी फिर बचन बोले २३ यह सुनकर लवजी बोले कि कुलसे शीलसे व नामसे सुन्दर हृदय मनसे क्या होता है हमारा लवनाम है इससे एक लवमात्रमें सब शत्रुसैनिकों को जीतलेंगे चाहे जितने हों २४ व अभी तुम वीरको हम अपने चरणों का वाहन करेंगे ऐसा कहकर उन बली लवजीने अपने धन्वापर पनच चढ़ाया २५ व प्रथम वाल्मीकिजी का स्मरण करके व अपनी माता श्रीजानकीजीका स्मरण करके धन्वापर लवजीने टंकोरदिया जिसके सुनतेही वीरलोग कांपने लगे २६ व फिर तुरंत प्राणापहारी अतितीक्ष्ण बाणोंको छोड़ा तब कालजित्‌ने भी कोपकरके अपने धन्वाको तैयार किया २७ व अतिवेगसे उस रणविशारदने लवजीको ताड़ितकिया परन्तु उसके बाणोंको अतिवेगसे एक क्षणमात्रमें कुशके छोटे भाई लवजीने सैकड़ों खण्ड करके २८ आठबाणों से सेनापतिको विरथ करदिया तब विरथ होजाने पर अपने भटोंसे हाथीमँगवाकर वह उस पर चढ़ा २९ जिस हाथीके दोनों नेत्र दोनोंकान दोनों गण्डस्थल व लिंग इन सात स्थानोंसे मद बह रहाथा व मदोन्मत्त व महावेगवान् था हाथीपर चढ़ेहुये उसे देखकर धनुषसे छूटेहुये दश बाणोंसे ३० सब रिपुगणों के जीतनेवाले लवजी ने कालजित्‌को मारा व कालजित् उनके पराक्रमको देखकर बहुत विस्मित हुआ ३१ लोहसे बनी हुई बड़ी भारी गदा चलाई उसको आती हुई देखकर ३२ कुशके छोटे भाई ने छूरे की भी धारसे तीक्ष्ण बाणोंसे बैरियोंके प्राण हरनेवाले अतितीक्ष्ण परिघको तीन खण्ड करदिया ३३ तब उसने दूसरा परिघ चलाया परन्तु अतिवेगसे लवजी ने उसे भी काटडाला व उस परिघको काटकर कोपसे नेत्रों को लालकरके ३४ हाथी पर चढ़ेहुये उसे देखकर बड़ा कोप करके खड्ग से उस गज की सूँड़ काटडाली ३५ व झट दोनों दांतों पर दोनों चरण धरकर हाथी के मस्तक पर चढ़ गये सेनापति के मुकुट के सौ खण्ड करके व कवच

के सहस्र खण्ड करके ३६ व शिरके बाल पकड़कर उस सेनापति को पृथ्वीपर पटकदिया व गजके ऊपरसे गिरे हुये उस सेनानी ने क्रोध से अत्यन्त कुपितहोकर ३७ लवजी के हृदयमें वज्रसमान दृढ़मूका से ताडित किया जब छातीमें मूकालगा तो लवजीने छूराकी धारसे भी तीक्ष्णबाणों को ३८ कुण्डलाकार धन्वाकरके अतिशीघ्र उसके हृदय में मारा व आप कुण्डलाकार झुँकाये हुये धन्वा को लिये हुये अतिशोभितहुये ३९ व शिरपर कुण्डीधरे देहमें कोटिशरोंसे भी अभेद्यकवचको धारणकिये विराजनेलगे व जब तीक्ष्णबाणोंसे वह मारागया तो लवजी के मारने के लिये उसने खड्ग लिया ४० व बार २ ऊपर नीचेको श्वासछोड़तेहुये दाँतोंसे दाँत कटकटानेलगा तब खड्ग हाथमें लिये आतेहुये शूर सेनापतिको देखकर लवजी ने ४१ खड्ग सहित उसके दक्षिणहाथको काटडाला इसलिये वह हाथ पृथ्वीपर गिरपड़ा तब खड्ग लियेहुये अपने हाथको कटेहुये देखकर अतिकोपसे उस सेनापति ने ४२ बायें हाथमें गदालेकर उससे लव जीको मारनाचाहा कि इतनेमें लवजीने बहूँटा व गदा सहित वह भी हाथ तीक्ष्ण बाणोंसे काटडाला ४३ तब प्रकुपितहोकर उस बीर सेनापति ने लवजीको दोनों लातोंसे मारा परन्तु उसके पादोंके लगने से लवजी रणभूमि में चलायमान नहीं हुये ४४ जैसे फूलकी माला से हतहोकर हाथी नहीं चलायमान होता व फिर लवजीने उसके दोनों पैरभी काटडाले तौभी वह अपने शिरसे लवजीको मारने पर उद्यतहुआ ४५ तब उस सैन्यनाथको महापौरुषी मानतेहुये लव जीने हाथमें कालाग्नि के समान प्रज्वलित कृपाण लेकर ४६ महा-मुकुट से शोभित उसका शिर काटडाला तब सेनापति के मारजाने पर बड़ाभारी हाहाकारहुआ ४७ व सब सैनिक लोग अत्यन्त क्रुद्ध होकर लवजीके मारनेको उपस्थित हुये परन्तु लवजीने अपने बाणों की मारसे उन सबों को भगादिया ४८ कोई तो छिन्नभिन्नहोकर रण-भूमिसे भागे कोई २ ऐसेही भागखड़ेहुये इसप्रकार सब योद्धाओं को रोंककर व भगाकर लवजी सेनामें इधरउधर दौड़कर मारने पी-टनेलगे ४९ और सेना में थहानेलगे जैसे प्रलय के महासागर में

बराहजीने इधरउधर थाहली व उसे मथा था हाथी कटकर दो २ खण्डहोगये उनकी गजमुक्ताओं से भूमिपूरित होगई ५० बीरों के आनेजानेको दुर्गमहोगई जैसे पर्व्वतों से आच्छादित भूमि दुर्ग्गम होजातीहै व रत्नों से और सुवर्णपत्रों से शोभित घोड़े रणमें ५१ पतितहुये व रुधिरके कुण्डों में पड़ेहुये शोभित होनेलगे रथीलोग हाथों में धन्वाबाण खड्गादि धारणकिये सुशोभित ५२ रथके ऊपरही मृतकहोकर शोभित होनेलगे जैसे देवगण स्वर्ग्ग में विमान पर शोभित होते हैं चबुरीबांधे बीरलोग टेढ़ीभौहें कियेहुये रणमें पड़ेथे ५३ जहां कि रणमें प्रवीण बड़े २ बीर पड़ेहुए दिखाई देते थे इस युद्धमें रुधिरकी महानदी बहचली जिसमें कटेहुये बहेजाते घोड़ोंके मस्तकही कछुयेथे ५४जो कि महाप्रवाहसे चलतेहुये बीरोंको भयकारक थे किसी २ केभुजकटगये थे किसी २ के पादअलग होगये थे ५५ किसी २ के कान कटगये थे किसी २की नाकें व किसी२के कुण्डल सहितकान इसप्रकारका कदन सेनापति केमारजानेपर कूद२ मारकर लवजीने किया ५६ सबबीर निपतितहोगये कोईभी जीते न रहे तब लवजी जयपाकर व बैरियोंके समूहको जीतकरके ५७ अन्यलोगों के आनेकी शङ्काकरके इधरउधर देखनेलगे इसरण के बीचसे जोकोई भाग्यसे उबरेथे ५८ वे यह उत्तमबृत्त कहनेके लिये शत्रुघ्नजी के समीपगये व जाकर उन्हों ने जो बृत्त रणमें हुआ सबकहा ५९ जैसे कि उनबालक लवजीने आश्चर्यकारी रणका उद्यम कियाथा कालजित् को माराथा वहसुनकर शत्रुघ्नजी बहुत बिस्मितहुये व उनसबों से बोले कि ६० ॥

चौ० । बालकहतसुनिसुमिरतबाजी । हँसतदन्तदन्तन गहिराजी ॥
कहरे बीरहु कामतवाले । वा छलवचन कहत यहि काले १ । ६१
किमि बालक माख्यो क्षणमाहीं । कालजीति रणदुर्म्मद काहीं ॥
जोरणमहँ रिपुबृन्द बिदारण । समरजयीबैरिन कहँमारण २ । ६२
त्यहि किमि जीत्योबालक एका । जोयमहूंको यमपुर देता ॥
सुनि शत्रुघ्न बचन सबबीरा । बोलेशोणित बहत शरीरा ३ । ६३
नहिंहमहैं मदमत्त न करहीं । छल अरुरोदन भयनहिं डरहीं ॥

महाराज लवसों सचमानहुँ । कालजीति मृतिमृषानजानहुँ ४ । ६४
अतुलबलीरण दुर्म्मदबाला । सकलसैन्य माखो ततकाला ॥
अब जोकरनयोग्य सोकरहू । ताहि न बालक निजउरधरहू ५ । ६५
समझि बाल जनि कीजैसाहस । महाराज नहिं कछुहै वाहस ॥
बीरन बचनसुने इमि भाषे । निजमनमहँ रिपुहन अतिमाषे ६ । ६६
बोलेसुमति सुमतिसों वचना । करिबहुभांति अनेकन रचना ॥
रणकारण पूँछन तब लागे । रोषसहितनहिं मनअनुरागे ७ । ६७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डे भाषानुवादेकुशलवयुद्धेसैन्य
पराजयकालजित्सेनानीमरणंनामषष्टितमोऽध्यायः ६० ॥

इकसठवां अध्याय ॥

दो० । इकसठयेंमहँ लवहत्यो सकल सैन्य पुनिसोय ॥
अतिरणकरिपुष्कलहिहनुमानहिमुछितकरोय १

शत्रुघ्नजी सुमतिनाम अपने मन्त्रीसे बोले कि हे महामन्त्रीजी ! जानते हो जिस बालक ने हमारा घोड़ा हरा व समुद्रसमान महान् हमारे सैन्यका बिनाशकिया १ सुमति मन्त्री बोले कि हे महाराज ! यह बड़ाभारी मुनियों में श्रेष्ठ बाल्मीकिजी का आश्रम है हे परन्तापन ! यहां क्षत्रियोंका तो बास है नहीं २ इन्द्रने आकर घोड़ा हराहोगा क्योंकि वे बड़ी ईर्षा करने वालेहैं अथवा महादेवजी ने हरलिया होगा अन्यथा आप के वाजीको यहां कौन हरसक्ता है ३ जिसने परमदारुण कालजित् सेनापति का बिनाश किया है महाराज ! उस के संग युद्ध करने को पुष्कलको छोड़कर और कौन जायगा ४ अथवा हे शत्रुनाशक ! तुम आप सबबीरों भटोंको संग लेकर व सब राजाओं से परिवारितहोकर बड़ी सेना लेकर वहां जाओ ५ व जाकर उसबीर बालकको जीताही पकड़लेओ जोकि खेलनेकी इच्छासे रण कररहा है उसे लेचलकर श्रीरामचन्द्रजी को दिखावेंगे हमारा तो यह मत है ६ ऐसाबाक्य सुनकर सब अन्यबीरों को शत्रुघ्नजी ने आज्ञादी कि तुम लोग बड़ीभारी सेना लेकर चलो पीछेसे हम भी आते हैं ७ महाराजकी आज्ञा पाकर सब बीर वहांगये जहां कि महाबली लवजी प्रत्यञ्चाचढ़ेहुये अपने

सुदृढ़ धन्वाको विस्फारित कररहेथे ८ बीरों से पूरित उस महासेना को आतीहुई देखकर महाबलशाली लवजी मनमें कुछभी न डरे ९ सिंहकासा शब्द करते हुये लवजी ने उन सब बीरोंको क्षुद्रमृगों के समान मानकर मारेरोष के धन्वा पर चढ़ाकर सहस्रों बाणों की वर्षा की १० वे सब बीर बाणों से पीड़ित होकर महारोष से पूरित हो महाबीर रणधीर लवजीको बालक मानकर उनके ऊपर को दौड़खड़े हुये ११ लव जी ने देखा कि ये सब बीर अपनी सेनाकी सातव्यटरी बनाये हुये चारोंओर से हमको घेरते चलेआते हैं इसलिये उन्होंने झटपट अपने धन्वापर बाण चढ़ाये व रोष से पूरितहोकर चलाये १२ उन में पहिलीपंक्ति जो लव के निकट थी वह सहस्र योद्धाओं की थी दूसरी जो उस के बाहरवालीथी वह दशसहस्र वीरोंकीथी तीसरी जो उस के बाहरथी वह बीससहस्र बीरों की ऐसेही चौथी पचाश सहस्र योद्धाओं की १३ पांचईं लक्षयोद्धाओं की छठीं एकलाखदशहज़ार बीरोंकी व सातईं दोलक्ष महारणधीर बीरोंकी इस प्रकार सातपंक्तियों के बीच में लव जी घिरगये १४ तब तो उन्होंने अग्निके समान बाणों को प्रज्वलित करके पंक्तिबद्ध एकदूसरी के पीछे खड़ीहुई पंक्तियों के जलाने का प्रारम्भकिया १५ किसी पंक्तिको तो तलवारों से तोड़डाला किसी को बाणों से किसी को प्रासोंसे किसी को भालों से किसी को पट्टों से व किसी को परिघोंसे इस प्रकार उन महात्मानें सातोपंक्तियों के बीरों को मार विदीर्णकरडाला १६ उन सातपंक्तियों से छूटकर कुशके छोटेभाई लव जी मेघवृन्दों से छूटेहुये शरदऋतुके चन्द्रमा के समान शोभितहुये १७ बीरोंको नानाप्रकार के प्रहारों से मारते हुये व बहुतसे हाथियों की शूंडें काटते हुये व बीरों के शिर मुख भौंहँसमेत अलग करते हुये लव जी रणके बीच में शोभित हुये १८ उन के बाणोंसे पीड़ित अनेकबीर समरमें गिरपड़े व अनेक मोहित हुये व बहुत कातरलोग समर से भागखड़े हुये व बहुतनष्ट हुये १९ तब लवजी के बाणों से पीड़ितहोकर अपनी सब सेना को भागती हुई देखकर पुष्कल बीर समर में युद्ध करने के लिये आये २० रोषसे पूरितनयन

पुष्कलबली सब शोभा से युक्त व उत्तम घोड़े जुते हुये रथ पर सवार खड़ेरहो खड़ेरहो ऐसा लव जी को कहते हुये आये २१ व परमात्म जाननेवाले पुष्कलजी लवजी से बोले कि सुन्दर घोड़ों से शोभित हमारे दिये हुये रथपर तुम चढ़ो २२ क्योंकि समर में तुम पैदर के साथ हम रथ पर चढ़कर कैसे युद्धकरें इससे रथपर चढ़ो पीछे हम आपकेसाथ युद्धकरें यहवाक्यसुनकर लवजी पुष्कलजीसे बोले २३ कि जो हम तुम्हारे दियेहुये रथपरचढ़कर समरमें युद्धकरें तो हमको पापहो व विजय की भी सन्देहहोवे २४ क्योंकि हे बीर! दानलेने में परायण ब्राह्मणलोग हम नहीं हैं किन्तु हमलोग क्षत्रियहैं जो नित्यदानकर्म्म की क्रियामें परायण रहते हैं २५ हम अभी कोपसे तुम्हारे रथको तोड़डालते हैं फिर आप भी तो पीछे पैदरही युद्धकरेंगे रथपर कैसे रहसकेंगे २६ ऐसा धर्म्म व धैर्य्य से युक्त वाक्य सुनकर पुष्कल अत्यन्त विस्मितहुये व देरतक चित्त में बिचारतेरहे फिर उन्होंने अपने धन्वापर रोदाचढ़ाई २७ उनको धन्वा चढ़ायेहुये देखकर कोपयुक्त होकर लवजी ने अपने बाणों के सन्धान से हाथमेंही टिकेहुये चापको काटडाला २८ व जबतक वे दूसरे धन्वापर पनच चढ़ाया चाहें कि तबतक हँसतेहुये बली लवजी ने पुष्कलबीरके रथको तोड़डाला २९ अपने रथको टूटा देखकर व धन्वाको भी उन महात्मा से काटा देखकर लवको महाबीर मानते हुये पुष्कलबीर भी पैदरही समरमें लवके ऊपरको दौड़े ३० दोनों बीर धनुर्द्धरथे व दोनों शरचलाने के कर्म्म में उद्धतथे दोनों अब रुधिरसे युक्तथे व दोनों के कवच बखतर आदि कटगये थे ३१ व परस्परके बाणों के घातसे दोनों के शरीर लक्षित होतेथे दोनों जय की इच्छासे एक दूसरेका बध चाहताथा ३२ इसलिये दोनोंका युद्ध जयन्त व कार्त्तिकेय के समान अथवा महादेव व त्रिपुरासुर के समानहुआ इसप्रकार रणभूमि में दोनों महारणधीरों ने युद्धकिया ३३ तब पुष्कलजी लवजीसे बोले कि हे शूरों के शिरोमुकुट! तुम्हारे समान कोई शूर शिरोमणि हमने नहीं देखा ३४ परन्तु अब हम तीक्ष्ण बाणों से तुमको रणमें गिराते हैं समरसे न भागना अब अपने प्राण

नचाओ ३५ ऐसाकहकर लवबीरको शरों के पिंजड़े में करदिया क्योंकि पुष्कलके चलायेहुये वाण सब पृथ्वी से आकाश पर्य्यन्त व्याप्त होगये ३६ तब शरपञ्जरके मध्यमें स्थित लवजी पुष्कलजी से बोले कि हे वीर! तुमने महाकर्म्म किया जो हमको बाणों से पीड़ितकिया ३७ यहकहकर व सबबाण समूहों को काटकर फिर शर सन्धान करने में परमचतुर लवजी पुष्कलजी से बोले ३८ कि अब समर में टिकेहुये अपनेको बचाओ क्योंकि हमारे बाणों के घातसे पीड़ित व रुधिरसे युक्त तुम पृथ्वीके ऊपरगिरोगे ३९ ऐसा वचन सुनकर पुष्कलबीर कोपयुक्त होकर महाबली लवबीर से युद्धकरने लगे ४० तब प्रकुपितहोकर लवजीने बैरिविदारण विषधर सर्प्प के समान व अतितीक्ष्णबाण क्षणमात्रही में तरकशसे निकालकर धारण किया ४१ व वह धन्वासे छूटाहुआ जाज्वल्यमान बाण जोकि पुष्कलजी के हृदयको विदीर्ण करनेको जाताथा पुष्कलने उसे अतिवेग अपने बाणसे काटडाला ४२ जब भरतजी के पुत्रने रणमें प्राणहारी अपने बाणसे लवजी के शरको काटडाला तो अत्यन्त कोपकरके उन्होंने एक अतिघोर शर अपने धन्वापर चढ़ाया ४३ व कानतक खींचकर बड़े बल से मारा उस महातीक्ष्ण बाण ने जाकर महारणमें पुष्कल जी के हृदयको विदीर्ण किया ४४ जब शीघ्र गामी बाण से बीरलवने उनके हृदयको भिन्नकिया तो महाशूर शिरोमणि पुष्कलजी धरणी पर गिरपड़े ४५ पुष्कलजीको गिरेहुये देखकर हनुमान्जी ने मूर्च्छितपुष्कलको उठाकर शत्रुघ्नजी को देदिया ४६ उन को मूर्च्छित देखकर शोकसे विह्वल मनहोकर व बड़े क्रोधसे युक्तहोकर हनुमान् जी को लव जीके बध करने की आज्ञादी ४७ तब महा कोप से जलते हुये हनुमान् जी एक शेमर का वृक्ष झट उखाड़कर समरमें महाबली लव के जीतने के लिये अतिवेग से चले ४८ व बली हनुमान् जी ने उस वृक्ष से लवजी के मस्तक में मारा परन्तु उस को बेग से आते हुये देखकर लव जी ने अति बेग से सौटुकड़े करके काटडाला ४९ उस वृक्षके कटजाने पर फिर क्रोपसे बहुतसे वृक्ष जड़से उखाड़े व महाबल से लवजी

के हृदय और मस्तकमें तानकर चलाया ५० परन्तु जिन २ वृक्षों को मारने के लिये पवन कुमार जी ने उठाया उन २ को अति वेग से बलवान् लवबीर ने अपने तीक्ष्ण बाणों से काटडाला ५१ तब हाथियों के समान शिलाओं को उठाकर मारुतनन्दन जी ने बड़े वेगसे लव जी के शिरपरगिराया ५२ जब वे शिलाओं से मारेगये तो धन्वाले उस पर अतितीक्ष्ण बाणचढ़ाकर उनसे उनको ऐसाचूर्ण करडाला जैसे कि धानइत्यादिके कनके मुशलों से टुकड़े होते हैं ५३ तब हनुमानूजी ने अत्यन्त कोपकरके लव महाबलीको अपनी पूंछसे संग्राम में अच्छीतरह लपेटलिया ५४ परन्तु अपने को पूंछसे लपेटे हुये देखकर अपनी माताजी का स्मरणकरके महाबली लवजी ने हनुमान्जीकी पूंछमें बड़ेबलसे एकमूका मारा ५५ उस मूकाके घात से व्यथित होकर हनुमानूजी ने झट उनको छोड़दिया जैसे वे महाबली पूंछसे छूटे कि बाणोंकी बर्षा करनेलगे ५६ दुर्वारण उन शरोंके आघातों से अत्यन्त पीड़ितहोकर बानरराज ने बाणवर्षाको अत्यन्त दुःखसे सहनेके योग्य माना ५७ व मनमें विचारनेलगे कि इस बिषय में हमको क्या करना चाहिये जो भागजावें तौ तो स्वामी के आगे जाकर लज्जाहोती है व यहां यह बालक बड़े बलसे हमको ताड़ित करता है ५८ ॥

चौ० ब्रह्मदत्त वरसों नहिं मेरे । मूर्च्छामरण आवहीं नेरे ॥
अरु दुस्सहशर पीड़ा भारी । कहाकरों अब हृदयबिचारी ।।५९
समर आय बालकसों रिपुहन । पैहहिंजयसंशयनहिंहैमन ॥
हम तब लग जय इच्छाकांक्षी । सोवेंछल मूर्च्छाके बांछी २ । ६०
इमिमन महँ करि पवन कुमारा । छलसोंमूर्च्छितभयहुअपारा ॥
सब वीरनके देखत संगर । गिरेधरणिपर मनहुँ भयन्धर३ । ६१
महाबली विक्रम हनुमानहिं । मूर्च्छित जानित्यागिअतिमानहिं ॥
सब राजनपर शर बरसावा । महावीर लव निजमन भावा ४।६२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेहनुमत्पतनंनामएकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

बासठवां अध्याय ॥

दो० । बासठयेंमहँ शत्रुहन अरु लव समर महान ॥
जहँबहुरणकरि रिपुदमन व्यथित लवहु मुरझान १

शेषनाग वात्स्यायन मुनि से बोले कि हनुमान् जी को मूर्च्छित सुन कर शत्रुघ्न जी शोक को प्राप्त हुये व मन में बिचारने लगे कि अब हम को क्या करना चाहिये यह बालक तो महाबली है १ फिर शोच बिचार कर सुवर्णके रथपर चढ़कर बहुत श्रेष्ठ वीरों को संगले युद्ध करने के लिये वहांगये जहां कि विचित्र रणकरने में परम चतुर लव जी थे २ व लवको बाल्यावस्थाको प्राप्त राम चन्द्रही के तद्रूप देखा जोकि धन्वा बाण हाथों में लिये समरमें वीरों के ऊपर बाण बरसारहे थे ३ अपने मन में तब उन्हों ने बिचार किया कि यह नीलकमल दल सम श्याम अतिअभिराम मनोहर शरीर धारणकिये रामचन्द्रजी के ही स्वरूपको धारण किये कौन है ४ बस यह जानकीजी का पुत्र है अन्यथा ऐसा रूप कभी न होता इस में कुछभी सन्देह नहीं है अब यह हम सबों को समरमें जीतकर सिंहसमान चलाजायगा ५ शक्तिरहित होनेके कारण हमलोगों का विजय होने वाला नहीं है क्योंकि यद्यपि हमलोग रणकर्म्म में परमचतुरहैं परन्तु शक्ति शिरोमणि जानकीजी से विहीनहैं इससे बिना शक्तिके समरमें क्या करसकेंगे ६ ऐसा अपने मन में विचारकर के फिर रणमें कौतुक करनेवाले व कोटिन महावीरोंके निपात करनेहारे उन बालक लवजी से बोले ७ कि हे बालक ! तुम कौन हो जो रणमें बलसे हमारे बीरोंको पृ-थ्वीपर गिरारहेहो क्या राक्षसोंके मर्द्दनकरने वाले श्रीरामचन्द्र जी का बल नहीं जानतेहो ८ हे महाबल ! तुम्हारी माता कौन है व पिता कौनहैं वे बड़े भाग्यवान्हैं जिन्हों ने तुमको बिजयरूप पाया बताओ तो लोक में प्रसिद्ध तुम्हारा क्या नाम हम जानें ९ घोड़ा छोड़दो क्यों बांधा है तुम्हारे बालक पनसे हमने सब अ-पराध क्षमाकिये आओ रामचन्द्र जी को देखो वे तुम को बहुत कुछ देंगे १० ऐसा सुनकर वहवीर बालक शत्रुघ्नजी से बोला

कि तुम को नाम से क्या है व पिता के जानने से क्या कुल और अवस्थासे भी क्या प्रयोजनहै ११ हे वीर ! जो तुम बलयुक्तहोओ तो समरमें युद्ध करो नहीं तो कुशवीर के चरणों में नमस्कार करके अपनी गली लागो १२ तुम तो रामचन्द्र के भ्राताहो और सब बलवानों में श्रेष्ठहो परन्तु हम दोनों भाइयों से श्रेष्ठ नहीं हो यदि हम से भी बलवान्हो और शक्तिहो तो अपने बल से घोड़े को छोड़ाओ न १३ इतना कह कर धन्वापर बाण चढ़ाकर परम उद्भट लव जी ने शत्रुघ्नजी के हृदय, मस्तक व दोनों हाथोंमें बाण मारे १४ तब प्रकुपित होकर राजा शत्रुघ्नजी ने धन्वा पर प्रत्यञ्चा चढ़ाई व उस को मानों बालक को भयभीत करातेही से उन्हों ने बड़े जोर से नादित किया १५ व बलियों में श्रेष्ठ शत्रुघ्न जीने असंख्य बाण छोड़े परन्तु लवजीने सबशर समूहों को अपने बलसे काटडाला १६ फिरलवके अनेक प्रकारसे छोड़ेहुये बाणोंसे सब पृथ्वीतलभर व्याप्तहोगया जैसे कि व्यतीपातयोगमें दानदेनेसे अक्षयहोकर सदाकेलिये स्थितहोजाता है १७ लवके चलाये हुये सब बाण आकाशमें भी व्याप्तहोगये व सूर्य्यमण्डलको आच्छादितकर के सब ओरसे प्रवृत्त होगये १८ उसबाण पंजर के मध्यमें पवन नहीं पैठतेथे फिर क्षणमात्र में प्राणों के सन्देहसे युक्त मनुष्योंकी कौन वार्त्ता कहे १९ उनके बाणोंको सर्व्वत्र व्याप्त देखकर शत्रुघ्नजी बहुत विस्मितहुये व उन्हों ने सैकड़ों सहस्रों बाणोंको चलाकर सब बाणों को काटडाला २० उन अपने सब बाणोंको काटेहुये देखकर लवजी ने राजा शत्रुघ्नजीका धन्वा अतिही वेगसे काटडाला २१ शत्रुघ्नजी ने और चापलेकर जबतक अन्यबाण चलाये तबतक उन्हों ने तीक्ष्ण ग्रन्थिवाले अन्य बाणोंसे रथ काटडाले २२ व अतिदृढ़ और प्रत्यंचा चढ़ेहुये उनके धन्वाको हाथही में काटडाला रणके मध्यवर्त्ती वीरोंने उनके इसकर्म्मकी बड़ीप्रशंसाकी २३ धन्वाघोड़े व सारथि के मारेजाने व टूटजानेपर अन्य रथपर चढ़कर बड़े वेगसे लवकेसंग युद्ध करने को शत्रुघ्नजी आये २४ व उन्होंने अनेकबाण लवजीकेभी मारे जिसके कारण शरीरसे रुधिर चूनेके कारण वसंतऋतुमें फूलेहुये टेसू

के समान रणके बीचमें शोभितहुये २५ शत्रुघ्नजीके बाणोंके लगनेसे अत्यंत कुपितहोकर बाणचलाने में चतुर लवजी ने अपने धन्वाको कुण्डलाकार किया २६ व शत्रुघ्नजीके देहपरके कवचको तिल२उड़ा दिया शिरको मुकुटहीन करदिया सबअंगों से रुधिरकेसोते बहवा दिये २७ तब शत्रुघ्नजीने अति क्रुद्धहोकर दशबाण चलाये जोकि अतितीक्ष्ण व प्राण संहारकारक थे २८ उन सबबाणों को अपने तीक्ष्ण बाणों से तिल २ काटकर लवजी ने शत्रुघ्नजीके छातीमें आठ बाणमारे २९ उन शरोंकी पीड़ा से अत्यंत पीड़ितहोकर लवको महाबली व दुस्सह मानतेहुये शत्रुघ्नजीने बाणोंकी बर्षाकी ३० तब लवजी ने शत्रुघ्नजीकी विशाल छाती में अर्द्धचंद्राकार तीक्ष्णधारसे शोभित बाण मारा ३१ उसबाण के लगनेसे दारुण पीड़ाको पाकर शत्रुघ्नजी धन्वा हाथ में लिये शोभितहोतेहुये अपने रथपर गिरपड़े ३२ शत्रुघ्नजी को मूर्च्छितदेखकर सुरथआदि सबराजालोग रणमें जय प्राप्ति के लिये उद्यतहोकर लवजी के सम्मुख दौड़े ३३ सुरथ विमलराजा वीरमणि राजा सुमद व रिपुतापादि सब प्रबलमहामहीप एकही संग दौड़पड़े ३४ कोई २ तो बड़े तीखे मुशलों से मारनेलगे कोई २ अतिदारुण बाणोंसे कोई प्रासोंसे कोईभालाओं से व कोईपरशुओं से समरमें प्रहार करनेलगे ३५ उनसबोंको अधर्म्म युद्ध करतेहुये देखकर सबवीरों के शिरोमणि लवजीने एकही संग दश २ बाण रणमें सबों के मारे ३६ रणके मध्यमें बड़े कोपसे बाणबरसाते हुये वे लोग जब लवजीके बाणोंसे मारेगये तोकोई २ तो रणमण्डल से भागखड़े हुये व कोई २ मोहितहोकर वहीं खड़े रहगये ३७ तबतक चैतन्यहोकर राजाशत्रुघ्नजी बहुतसी सेना संग लिये लववीरसे युद्धकरने के लिये संग्राममें आये ३८ व आकर लव जी से बोले कि तुम बालकरूप धन्यहो परन्तु हमारे मतसे बालक नहींहो कोई देवताहो हमको छलने के लिये यहां आयेहो ३९ क्यों कि किसी वीरने हमको आजतक रणमें नहीं पातित कियाथा परन्तु हमारे देखते २ तुमने हमको मूर्च्छित करदिया ४० ॥

चौ० परअब ममलघु वीर्य्य अपारा। रणमहँ पातनकरत तुम्हारा॥

एकबाण तुमसहहु हमारा । संगरसोंजनिभागहु प्यारा ॥ १ । ४१ ॥
यहकहि एक बाण रणमाहीं । लवहति हितकर लीन तहांहीं ॥
जोयमबदनसरिशअतिघोरा । जासोंहत्यो लवणबरजोरा ॥ २ । ४२
धनु चढ़ाय सो शर हदि माहीं । लवके मारन चह्यो तहांहीं ॥
जोवरवीर सहस्रनमाहीं । दाहकशिखिसम संशयनाहीं ॥ ३ । ४३ ॥
दशदिशिमाहिं ज्वलित सो बाना । करत प्रकाश महा भयदाना ॥
त्यहिलषिनिजमनकुश सुधिकीना॥वैरिनिपातनपरमप्रवीना॥ ४।४४
जो यहि समय महा बलवाना । ममभ्राता यहँ होत महाना ॥
तो शत्रुघ्न वीरसों नाहीं । होतकठिनभयतनिक यहांहीं ॥ ५ । ४५ ॥
इमि बिचार लवकरत सुरह्यऊ । महामहात्महि पुनि २ कह्यऊ ॥
लग्योहृदयमहँ शरअतिघोरा । कालानलसमान बरजोरा ॥ ६ । ४६
नृपति बाणहत मूर्च्छित भयऊ । महावीर लव समर मझयऊ ॥
सकलवीर शिरशोभित संगर । गिरयहुतहां सो धीरधुरन्धर॥ ७ । ४७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेलवमूर्च्छागमोनामद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

तिरसठवां अध्याय ॥

दो० । तिरसठयें महँ कह समर कुशअरु रिपुहन केर ॥
जहँ करि रण बहु रिपुदमन मूर्च्छा लही घनेर ॥ १ ॥

शेषनाग वात्स्यायनमुनि से बोले कि वैरियों के विदारण करने वाले लवको मूर्च्छित देखकर शत्रुघ्नजी ने समरमें विजयपाया १ कुण्डी कवचादि धारण किये मूर्त्ति से रामचन्द्रजी हीके स्थानापन्न मूर्च्छित लवजी को रथपर स्थापित करके शत्रुघ्नजी सेनाके निवेश स्थान को चलेगये २ व अपने मित्र लवको शत्रु से पकड़े गयेहुये देखकर अतिदुःखितहोकर अतिबेगसे जाकर बालकोंने सीतामाता से सबवृत्तांत कहा ३ बालक बोले कि हे माताजानकीजी! तुम्हारे पुत्र ने बलवान् मानी किसी भूप श्रेष्ठका घोड़ा बलसे हरिलिया ४ इसके पीछे उसराजाकी सेना से और तुम्हारे पुत्रसे महाघोर युद्ध हुआ तब तुम्हारे बीरपुत्रने सबको मार गिराया ५ व पीछे भी तुम्हाराही पुत्र जयको प्राप्तहुआ क्योंकि सबसे पीछे वहराजा युद्ध

करने आयाथा उसे भी मूर्च्छित करके तुम्हारे पुत्रहीने जयपाया ६ परन्तु मूर्च्छा जागनेके पीछे वह परमदारुण राजा कोपकरके फिर आकर तुम्हारे पुत्रको समरभूमि में गिरादिया ७ हम लोगों ने पहिलेही रोंकाथा कि यह उत्तम घोड़ा तुम न पकड़ो परन्तु वेदपारगामी हम लोगों को धिक्कार कर हठसे उन्होंने ग्रहणही करलिया ८ बालकोंका ऐसा दारुणवाक्य सुनकर श्रीजानकीमहारानी पृथ्वीपर गिर पड़ीं और दुःखित होकर रोदन करने लगीं ९ श्री सीताजी बोलीं कि वह राजाकैसा दयाहीन है जो हमारे बालकके साथ युद्ध करताहै वह दुर्बुद्धि बड़ा अधर्म्मकारीहै जिसने हमारे प्यारेबालक को मारडाला १० हे लववीर! आप अतिबलवान् कहांहो तुमने कृपारहित उस राजाकाघोड़ा क्योंहरा ११ तुमबालक ठहरे व वे लोग सबशास्त्र अस्त्रोंमें विशारदहोनेके कारणबड़े दुःखसे आक्रमण करने के योग्य होंगे व वे सब रथों पर चढ़े होंगे तुम विरथ ठहरे तुम्हारा उनका युद्ध कैसे बराबरहो १२ हे तात! हमने तुम्हारे संग के कारण रामचन्द्रजी के त्याग का दुःख छोड़ दिया था सो अब तुम्हारे बिना इस बनमें कैसे जीवेंगी १३ यहांआओ यज्ञका घोड़ा छोड़दो वह राजा आपचला जायगा अयप्यारे! हमारे दुःखको नहीं जानते आकरहमारा दुःख मिटाओ १४ जो आजबीरशिरोमणि कुश घरमें होते तो तुमको अभी उसराजाके पाससे छुड़ालेते १५ वे भी हमारे भाग्यसे समीप नहींहैं इससे हमक्याकरें यहांभी हमारे दुःखकाकारण भाग्यहीहै १६ इत्यादि बहुतबातें कह२कर श्रीमती जानकीजीने चरणकेअँगूठेसे पृथ्वी खोदतीहुई व दोनों नेत्रकमलों से जलकीधारा गिरातीहुई बहुत बिलापकिया १७ व फिर बालकोंसे कहा कि हेबालको! वहराजा कैसे हमारे पुत्रको रणमें मारकर कहां जाने पावेगा १८ प्रतिव्रता जानकीजी ऐसा बिलाप करतीहीथींकि महाकालजीकी पूजा शिवरात्रिको करके तबतक कुशजी उज्जयिनी पुरीसे ऋषियोंके साथ आगये व बहुतसे वरभी महादेवजीसेपाकर उज्जयिनी नगरी से आकर अपनी माता श्रीजानकी जी के निकट पहुँचे १९ । २० व नेत्रोंसे आंशू ढालतीहुई अतिविह्वल मारेशोक

के दुःखित अंगवाली श्रीसीताजीको देखकर बड़ी उत्सुकतासेबोले २१ जब तक अपनी मातासे पूँछा चाहें कि तब तक स्फुरित होकर उनके दक्षिण ओर के बाहुने युद्धकरने के समाचार को बताया व हृदयमें रणका उत्साह होआया यह सब अतिरथ कुशजीको हुआ २२ तब धीरमानसवाले कुशजी दुःखिनी दीनस्वरसे गद्गदबोलती हुई अति दुःखयुक्त अपनी जननी से बोले कि हे मातः! मुझसे पुत्र के उपस्थित होने पर तुमको दुःख कैसे हुआ २३ हमारे जीते जी तुम्हारे नेत्रों से आंशुओंके बूँद न गिरें आंशुओंसे खिन्न व दुःखसे गद्गद बचन बोलती हुई २४ दुःखित माताको जानकर कुशभी दुःखित हुये परन्तु धीरमनसे कहाकि वैरियोंके मर्द्दन करनेवाले हमारे भाई लव इस समय कहां हैं २५ सदा हमको आयेहुये जान कर हर्षित होते हुये निकटको आते थे वे बीर क्यों नहीं दिखाई देते क्या कहीं दूर खेलनेके लिये वे बीर चलेगये हैं २६ अथवा बालपनके कारण किसीके साथ हमको देखने तो नहीं चलेगये हे मातः! तुम रोदन क्यों करती हो लव कहां हैं २७ हमसे अपने दुःख का सबकारण कहो पुत्रके ऐसे बचन सुनकर दुःखित होकर वे जानकी जी कुशजी से बोलीं २८ कि लवको तो किसी घोड़ेके रक्षक राजा ने पकड़ लियाहै क्योंकि हमारे उस पुत्रने उसके यज्ञ क्रियाके योग्य घोड़ेको कहीं बांधदियाहै २९ व उस अकेले महाबलीने अनेक बहुतसे बलीबीरोंको प्रथम जीतभीलिया था फिर समरभूमि में आकर उस राजाने पीछेसे मूर्च्छित करकेफिर उनको बांधले गया ३० उनके साथ गयेहुये इन बालक लोगों ने हमसे यह कहाथा इसीसे लवको बँधुआ सुनकर हम दुःखित हुई हैं ३१ अब तुम समय पर आगये हो इससे उस राजा से लवको जाकर छुड़ाओ माताजी के ऐसे बचन सुनकर क्रोधसे युक्त कुशजी मारे रोषके दांतों से दांतों को पीसते हुये अपनी माता जी से बोले कि ३२ कुशजी ने कहा हे मातः, जानकी जी ! लवको पाश बन्धन से छूटेहुयेजानो क्योंकि हम अभी जाकर बाणोंसे सब बलवाहन समेत उस राजा को मारे डालते हैं ३३ जो कोई देवता वा औरही कोई अमर प्राणी होगा

अथवा शिवजी आप आयेहोंगे तो भी तीक्ष्ण बाणोंसे मारकर लव को छुड़ाये लेतेहैं ३४ हे माताजी ! रोदन न करो बीरों का रणमें मूर्च्छित होना कीर्त्तिके लिये होताहै व उनका समरसे भागना अकीर्त्तिके लियेही होताहै ३५ अब हमारा दिव्यकवच हमको देओ व गुण सहित दिव्यधन्वाभी देओ व शिरस्त्राणकुण्डी आदि देओ अति तीक्ष्ण महा कराल करवाल अर्थात् तलवार देओ ३६ अभी समरमें जाताहूं व सब सैन्यको बलसे गिराताहूं व मूर्च्छित अपने भाई को रणके बीचसे छुड़ाताहूं ३७ हे मातः ! जो आजही तुम्हारे पुत्रको रणसे न छुड़ावें तो हमारे ऊपर तुम्हारे चरण आजसे रुष्ट होजावें ३८ शेषनाग वात्स्यायनजीसे बोले कि ऐसे वाक्यसे शुभ लक्षणा श्रीजानकी जीने सन्तुष्ट होकर आशीर्वादों से युक्त करके सब वस्त्र अस्त्र शस्त्रादि लेकर कुशको दिये ३९ व कहा कि पुत्र अभी समरको जाओ व मूर्च्छित लवको छुड़ाओ बिलम्ब न होने पावे माताकी ऐसी आज्ञापाकर कवच कुण्डल मुकुट खड्ग ढाल व धन्वा धारण करके व अक्षय दो तरकस दोनों सिंह समान दोनों कन्धोंपर धारण करके ४० । ४१ माता के चरणों के प्रणाम करके महारथोंके अग्रगामी कुशजी गये जब तक बड़े बेगसे युद्धके लिये समरमें पहुँचेहैं ४२ कि वैसेही उन्होंने बैरिसमूहोंके निपातन करने वाले लवजीको देखा व सब उद्भटबीरों ने भी महाउद्भटबीर रणधीर कुशजीको आते हुये देखा ४३ सब बिश्वसंहार करनेके लिये प्राप्त हुये महाकराल कालके समान देखा व महाबली अपने भ्राता कुश जीको आतेहुये देखकर रणमें लवजी अत्यन्त प्रकाशित हुये जैसे कि प्रचण्ड पवन को पाकर अग्नि और भी अत्यन्त प्रचण्ड होजाताहै बस कुशतो सब सेनाकी पूर्व्व ओर आकर रणमें टिके हुये बीरोंको बिनाशनेलगे व लवजी कोपसे पश्चिम ओर आकर सेना को मारने लगे ४४ । ४६ इस प्रकार दोनों जनोंने मारा कि कुशके बाणों से पीड़ित व लव के शरोंसे निपीड़ित सैन्य के लोग लहरोंसे युक्त समुद्रमें भँवरकी तरह हुये ४७ कुश व लवके शर समूहोंसे पीड़ित सब बीरोंसे पूरित सैन्यने कहीं सुख न पाया ४८

बार बार भयभीत होकर सब सैन्य इधर उधर भागने लगी कहीं कोई भी रणमें एक स्थान पर स्थित होकर रण नहीं चाहता था ४९ इसी अवसरमें शत्रुओंके संताप करानेवाले राजाशत्रुघ्नजी लव की सदृश कुशजी से युद्ध करने को गये ५० व रामचन्द्रजीके समानही मूर्ति धारण किये हुये कुशजी को देखकर सुवर्णके रथ पर चढ़े हुये शत्रुघ्नजी बोले कि ५१ तुम कौनहो जो हमारे भ्राता रामचन्द्रजीकासा रूपधारण किये हो व जानो लवके भाईसे विदित होतेहो व उनसे भी महाबली जान पड़तेहो हे महावीर! तुम्हारा नाम क्याहै व तुम्हारे पिता कौनहैं व माता तुम्हारी कहां है ५२ व हे पुरुषश्रेष्ठ! मुनियोंसे सेवित इसवनमें तुम कैसे रहते हो सब हमसे कहो तो हम तुम महाबलीके संगयुद्ध करें ५३ ऐसा वचन सुनकर कुशजी राजासे मेघके नादके समान गम्भीर बाणीसे बोले रणमण्डलको शब्द कराते हुये ५४ कि हम दोनों को पतिव्रत परायण केवल श्री सीताजी ने उत्पन्न किया है व बाल्मीकि जी के चरणों की पूजा में तत्पर हम दोनों भाई इस बन में रहते हैं ५५ माता की सेवा में सदा उद्युक्त रहते हैं व सब विद्याओं में विशारद हैं व हे पाप रहित महीपाल! कुश और लव हम दोनों का नाम है ५६ व हे वीर तुम कौनहो जो रणमें प्रशंसा पाने के योग्य हो बताओ तो यह उत्तम घोड़ा तुमने किसलिये छोड़ाहै व सैन्य समेत रणमें तो आज तुम विजयी हुये हो ५७ सो हे महीपाल! यदि वीरहोओ तो हमारे सङ्ग युद्ध करो अभी आपको इसी समरभूमि में हम मारेंगे ५८ उन को रामचन्द्र जी से सीता जी में उत्पन्न जानकर शत्रुघ्न जी अपने मन में बहुत विस्मित हुये व फिर कोप करके उन्हों ने हाथ में धन्वा लिया ५९ फिर उन को धन्वा लिये हुये देखकर कोप युक्तहो कुशजी ने भी अपने अति दृढ़ धन्वाको बड़े बल से विस्फारित किया ६० तब सब शस्त्रास्त्रों के वेत्ता शत्रुघ्नजी ने बाण चलाये उन सब तीक्ष्ण बाणों को कुशजीने अपने शरों से एक लीला के साथ हँसते हुये काटडाला ६१ व फिर हे मुनिराज! कुशजी व शत्रुघ्नजी के बाणों से उस समय सब भुवन

भर व्याप्त होगया वह बड़े आश्चर्य्य का कर्म्म हुआ ६२ राजाके चलाये हुये अस्त्रोंको बली कुशजी ने अग्न्यस्त्र से अति बेग काट डाला व इन के चलाये हुये अस्त्रों को शत्रुघ्न राजा ने मेघास्त्र से शान्त करदिया ६३ उस पर्जन्यास्त्र को राजाने वायव्यास्त्र से अति शीघ्र काटडाला तब तो उस रणमण्डल में बड़ा तीक्ष्ण पवन चला तब कुशजी वायुके रोकने के लिये पर्व्वतास्त्र छोड़ा ६४ उस अस्त्रसे चलेहुये पत्थरोंको राजाने समरमें वज्रास्त्र चलाकर काटा तब उद्भट कुश वीरने नारायणास्त्र चलाया परंतु वह नारायणास्त्र राजा शत्रुघ्न जी को बाधित न करसका ६५ तब प्रकुपित होकर व महाकोप परायणहो कुशजी महाबली व महा पराक्रमी राजा शत्रुघ्नजी से बोले कि ६६ रणमें जयकारी व महावीर तुमको हमने जाना क्योंकि जो हमारा नारायणास्त्र महा भयानक भी तुमको बाधित न कर सका ६७ इससे हे नृप ! जो अभी तुमको तीनि बाणों से हम पृथ्वी पर न गिरादें तो हम यह प्रतिज्ञा करतेहैं सुनो ६८ जो कोटि जन्मों से दुर्ल्लभ मनुष्य शरीर को प्राप्त होकर मारे मोह के उसका आदर नहीं करता उसको जो पापहोताहो वह हमको हो ६९ ॥

चौ० सावधान भव रणमहँ भूपा । हम अपने मन महँ अनुरूपा ॥
तुम्हें गिरावतमहिपरअबहीं । यहकहिलीन शरासनतबहीं १ । ७०
कालानल कराल अतिघोरा । बाण चढ़ायहु उपर कठोरा ॥
विपुल कठोर महानृपछाती । तामहँ मार्यो बाण अघाती २ । ७१
परत्यहि शरकहँ सन्धितदेखी । रिपुहन करि अति कोप विशेखी ॥
कुशत्वच भेदक बाणसमूहा । छोड़ेनिशितबहुत करिऊहा ३ । ७२
परकुश प्रेरित घोर स्वरूपा । आशीविषसम अनल अनूपा ॥
शरनृपवक्ष विदारण काजा । चलतबहुत विधिसोंतहँआजा ४ । ७३
रामहिंसुमिरि भूपसो बाणा । काट्यहुलै निज हाथ कृपाणा ॥
इमिकुशमुक्तसुसायकतीक्षण । कटिभोव्यर्थलख्योनिजईक्षण ५ । ७४
शरकृन्तनसों कुश अति कोपे । अपरबाण लीनो अति चोपे ॥
महातीक्ष्ण सो चापचढ़ावा । रिपुहन मारण क्रर करिदावा ६ । ७५
जबलग तासु हृदय नहँभेदा । शरचलाय कुश वीर अखेदा ॥

तबलगरिपुहनताहिविखण्डा।यदपिकालशिखिसदृशप्रचण्डा७।७६
तब कुशमातु चरण मनमाहीं । करि सुमिरण बहुभांति तहांहीं ॥
तीसर बाण चाप सन्धाना । निजचितकरिदृढ़युत बन्धाना ८ । ७७
रिपुहन तासु छेद हित बाना । निज धनुपर कीन्ह्यो संधाना ॥
तबलग बाण विद्ध ह्वै सोई । गिरे धरणिपर मूर्च्छित होई ९ । ७८
हाहाकार भयहु अति भारी । रिपुहन पातित देखि दुखारी ॥
भेसबलोगविजयकुशपाई । निजभुजबल नहिंआनसहाई १० । ७९

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेशत्रुघ्नमूर्च्छे-
नेकुशजयोनामत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

चौंसठवां अध्याय ॥

दो० । चौंसठयें महँ कह समर कुशलव सँगजिमि वीर ॥
पुष्कल पवनज सुगल अरुसुरथादिक कियधीर १
परमूर्च्छितभे सब यहां कुशलव विजय अनूप ॥
परज्याये सीता सकल वाजि छुड़ाय सुरूप २

शेषनाग वात्स्यायन मुनि से बोले कि शत्रुघ्नजी को मूर्च्छित देखकर महाप्रबल राजा सुरथ मणिमय परम अद्भुत रथपर चढ़ कर युद्ध करने को गये १ व पुष्कलजी पूर्व समय में लवसे मूर्च्छित हुये थे इससे उनको बिचारते थे मूर्च्छा जागने पर फिर लव से रण करने को गये २ महावीर शिरोमणि राजा सुरथ समर में अनेकों बाणों को छोड़ते हुये कुशजीको पीड़ित किया ३ राजा सुरथको बड़े तीक्ष्ण दशबाणों से कुशजी ने पहुँचतेही विरथ किया व उनके अतिदृढ़ गुणपूरित धन्वाको भी वेगसे काटडाला ४ परंतु अस्त्र प्रत्यस्त्रों के परस्पर चलाने से क्षेपण के पीछे प्रक्षेपण करने से ऐसा तुमुल युद्ध हुआ जिसको देखकर बीरों के भी रोम खड़े होगये थे ५ जब दुर्जेय सुरथ राजा से अत्यन्त युद्ध हुआ तब कुशजी ने अपने मन में बिचारा कि हम को अब रण में क्या करना चाहिये ६ अच्छी तरह बिचार करके महा बल युक्त कुशजी ने अति तीक्ष्ण एक बाण राजा सुरथजी के मारडालने के बिचार से लिया ७व चलाया उस प्रलय के अग्नि के समान प्रज्ज्वलितबाण

को आतेहुये देखकर सुरथ ने काटनेका मन जबतक किया कि तब तक वह महाशर सुरथके लगीगया ८ इससे महावीर बली रणधीर सुरथ वीर मूर्च्छितहोकर रथपर गिरपड़े इसलिये सारथि उनको रण से बाहर लेगया ९ सुरथके पतित होनेपर विजयीकुशको रणभूमि में सबको भयभीत करतेहुये देखकर हनुमान्जी आपहुंचे १० प्रबल बानर पवनकुमारजीको आतेहुये देखकर कुशजी दांत दिखातेहुये उनको कोपकरातेही से हंसे ११ व हनुमान्जी से बोले भी कि तुम हमारे सम्मुख से चलेजाओ सहस्रों बाणोंसे हम तुमको मारेंगे व मर कर यमपुरीको जाओगे १२ यह सुनकर हनुमान्जीने जाना कि ये श्रीरामचन्द्रजीके पुत्र हैं व महाबली हैं परन्तु स्वामीका कार्य्य करना चाहिये यह बिचारकर कुशकीओर दौड़े १३ सैकड़ों शाखाओं का एक सांखूकावृक्ष झट उखाड़लिया व कुशजीकी छातीमें मारने के लिये दौड़े १४ सांखू का वृक्ष हाथमें लिये महाबली हनुमान्जी को आतेहुये देखकर चन्द्रमा के समान चमकतेहुये अतितीक्ष्ण तीन बाणोंसे हनुमान्जीकी छाती में मारा १५ बलशाली कुशने जब हनुमान्जीके बाण मारे तो मारेकोपसे दांतोंको पीसतेहुये हनुमान् जीने भी उनकी छातीमें शाल का वृक्ष फेंककर मारा १६ परन्तु उस शालके लगने से कुशजी कुछ भी न कम्पितहुये तब बीरों ने कुश बालककी बड़ी प्रशंसाकी १७ जब उनके शाल का बृक्षलगा तो कोपसेयुक्तहो परम अस्त्र जाननेवाले कुशजी ने बैरियों के संहारकरने के लिये संहारास्त्र धन्वापर चढ़ाया १८ व कुशके हाथसे छूटे हुये संहार अस्त्रको दुर्जय देखकर हनुमान्जी ने अपने मनमें भक्त विघ्न बिनाशके लिये श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान किया १९ परन्तु कुश का चलायाहुआ वह अस्त्र शीघ्रही आकर हनुमान्जी के हृदय में लगगया उससे वे फिर मूर्च्छितहोगये २० उन बानरश्रेष्ठको मूर्च्छित देखकर बलसंयुत कुशजीने तीक्ष्ण बाणोंसे सब सैन्यभरको मारा २१ उनके सहस्रों बाणों के चलने व लगने से सब चतुरङ्गिणी सेना इधर उधर भाग खड़ी हुई २२ तब बड़ेकोप से बानरोंके राजा सुग्रीव जी सेना के रक्षक होकर अनेक वृक्ष उखाड़ उखाड़ कुशजीके ऊपर

को फेंकते हुये उनके सम्मुख दौड़े २३ परन्तु हँसते हुये कुशजी ने उनके चलायेहुये सब बृक्षोंको काटडाला फिर भीतर पटक आतेहुये बृक्षों को महाबली कुशजीने क्षणमात्रमें काटडाला २४ व अनेक बाण सुग्रीवके मारे उनबाणों से व्यथित होकर सुग्रीवजीने कुशजी के मस्तक में मारने के लिये बड़ाघोर पहाड़ हाथ में लिया २५ व चलाया उसे आतेहुये देखकर कुशजीने बाणों से उसके अनेक खण्ड करडाले व फिर चूर्णीभूत करदिये जिसमें महारुद्रांग योग्य होगये २६ इनबालक कुशजीका रणभूमि में महाकर्म्म देखकर सुग्रीव जी जयकी आशासे निवृत्तहोगये जानलिया कि बस अब पराजय होगा २७ परन्तु बड़ा क्रोध करके रणमें दुर्जय कुशजी को अपनी पूँछसे लपेटलिया और उनके मारनेके लिये एक और बड़ाभारी वृक्ष उखाड़ा २८ इसप्रकार अपने मारने में सुग्रीव को उद्यत देखकर आदर से कुशजीने बहुतसे तीक्ष्ण धारवाले बाणों से उनको ताड़ित किया २९ जब बहुत प्रकारके बाणोंसे कुशजी ने मारा तो अत्यन्त पीड़ित होकर सुग्रीव कुशके मार डालने के लिये एक बड़ाभारी सांखू का वृक्ष उखाड़लाये ३० तब अत्यन्त कोप करके लवके बड़ेभ्राता कुशजी ने बरुणपाश चलाया व उससे सुग्रीवजी को बड़ीदृढ़ता से बांधलिया ३१ तब महाबली कुशबीर के चलाये हुये बरुणपाश में बँधकर महाबीरों से शोभित उस रणमण्डल के मध्य में सुग्रीवजी भी गिरपड़े ३२ सुग्रीवको पतितदेखकर अन्य सब वीर सब दिशाओं को भाग खड़ेहुये बस महाबीर शिरोमणि कुशजी ने विजयपाया ३३ तबतक लवजी भी पुष्कल अङ्गद प्रतापाग्र्य बीरमणि व अन्य भी जो अनेक राजा थे सबको जीतकर ३४ महा बिजय रण में पाकर अपने भाई कुशजी के पास आगये जोकि संग्राम में कोटि बैरी बीरों को मारकर विजय करनेवाले थे ३५ हे मुनिजी ! इस प्रकार विजयी होकर दोनोंभाई अतिहर्षित होकर परस्पर मिल लपट कर महाआनन्द से युक्त होकर परस्पर बातें करतेहुये शोभितहुये ३६ तब लवजी कुशजी से बोले कि हे भ्रातः ! तुम्हारे प्रसाद से समर सागरके पार उतरे अब चलो इस समय दोनोंजने समर भूमिका

शोधन करें ३७ इतना कहकर कुश व लव दोनों राजा शत्रुघ्न के समीप पहुँचे वहां कुशजी ने राजा का सुवर्ण से भूषित मुकुट उठा लिया ३८ व पुष्कल का मुकुट लवबीरने ले लिया व शत्रुघ्न और पुष्कल दोनोंके बड़े २ मोलके अङ्गद अर्थात् बहूँटेदोनों जनोंने ले लिये ३९ व शस्त्रलगने से व्याकुल पड़ेहुये हनुमान्जी व सुग्रीव जीके समीपजाकर उनदोनोंको बांधा ४० व लवजीने हनुमान्जी की पूँछ पकड़कर अपने भाईसे कहा कि इसको हमअपने स्थानपर ले चलेंगे ४१ इससे हमदोनों जनों की माताजी प्रसन्नहोंगी व मुनियोंके पुत्रोंके क्रीड़ाके लिये और हमारे खेलने के लियेहोगा ४२ यह लवका बचन सुनकर कुश उनसे बोले कि अच्छा हम इसबली पुष्टाङ्ग बानर को ले चलेंगे ४३ ऐसा कहते हुये उन दोनों महा बलवानों ने दोनों महाबली बानराधिप राजों को बांधकर व पूँछ पकड़ घसीटतेहुये अपने आश्रम परको चलदिये ४४ उन दोनों जनोंको अपने आश्रम पर को जातेहुये देखकर दोनों बानर श्रेष्ठ एक दूसरे से कांपतीहुई बाणी से बोले कि ४५ मारे भयके डरतेहुये हनुमान्जी बानरोंके राजा सुग्रीवजीसे बोले कि ये दोनों श्रीरामचन्द्रजीके पुत्रहैं इससे अपने आश्रम परको हम को तुमको ले जायँगे ४६ परन्तु हम जब पूर्व्व समयमें जानकीजी के समीप लङ्काको गये थे तब हमने बहुत अपूर्व्व कर्म्म किये थे इस लिये वहां श्री जानकी देवी हमारे ऊपर बहुत प्रसन्न हुई थीं ४७ वे वैदेही जी आज हमको बैरीके हाथोंसे पाशमें बँधे हुये देखेंगी तब वे हँसेंगी व हमको तब बड़ी लज्जाहोगी ४८ हम अब इस बिषयमें क्याकरें अबतो जानपड़ता है कि प्राणही छोड़ने पड़ेंगे व महादुःख आनकरपड़ा है नहीं जानते रामचन्द्रजी क्या करेंगे ४९ यह बचन सुनकर सुग्रीवजी ने कहा कि हे महाबानर ! हमारी भी यही दशा है कि जो हमको भी वहांतक लेजायँगे तो हमारा मरणही होजायगा ५० इसप्रकार भयभीतहोकर दोनों बानरेश आपस में वार्त्ता करतेजाते थे तबतक कुश लव दोनों मनोहररूप अपनी माता के भवन को गये ५१ उन दोनों जनों को आयेहुये देखकर उनकी माता सीताजी बहुत हर्षितहुई व

परस्पर परम प्रसन्नहोकर दोनों पुत्रोंको मिलीं भेंटीं ५२ व उन दोनों जनोंके पकड़े हुये दोनों हनुमान् व सुग्रीव कपीश्वरों को देखकर जानकीजी ५३ हँसीं व पाश में बँधेहुये दोनों बानरों को देखकर उन दोनों को छोड़ने के लिये कहतीहुई बोलीं कि ५४ हे पुत्रो ! इन दोनों महावीर व महाबली बानरोंको छोड़देओ क्योंकि जब ये बँधेहुये हमको देखेंगे तो मारे लज्जाके प्राण त्यागदेंगे ५५ ये तो हनुमान् वीरहैं जिन्होंने राक्षसों की पुरी लङ्काको भस्मकर डालाथा व ये भी सब बानर और ऋक्षों के राजा सुग्रीव हैं ५६ हे पुत्रो ! इन दोनों जनोंको किसलिये पकड़लाये व इनका अनादर क्योंकिया व जिस कारणसे इनकी पूँछें पकड़कर घसीटतेहुये लायेहो इसमें हमको विस्मय है ५७ माताके उत्तम वचन सुनतेही माताकीओर देखकर विनय में श्रेष्ठ व महाबली दोनों पुत्रों ने जाकर माता से कहा ५८ फिर अपनी मातासे लवजी बोले कि हे मातः ! कोई दशरथजी के पुत्र महाबली राजा रामचन्द्र हैं उन्हों ने मस्तक में सुवर्ण के पत्रसे सुशोभित करके एक घोड़ा छोड़ाहै ५९ सो हे मातः ! उस सोनेकेपत्र में उन्होंने लिखाहै कि हमारी माता एकवीर पुत्रके उत्पन्न करनेवाली है इसलिये जो क्षत्रियहों वेही इस हमारे घोड़ेको पकड़ें व नहीं तो आकर हमारे चरणोंकी पूजाकरें ६० सो हे पतिव्रते ! तब हमने अपने मनमें यह विचार किया कि आप क्या क्षत्रिय की कन्या और भार्य्या नहीं हैं और क्या वीरपुत्रों के उत्पन्न करनेवाली नहीं हैं यह हमने विचारा कि अवश्यही आप ऐसी हैं ६१ सो हमनें उस राजा की ढिठाई देखकर वह बड़ाभारी घोड़ा पकड़लिया और कुशभाई ने समरमें उसकी सब सेनाको जीतलिया व सेनाके स्वामीको भी जीतलिया व रणमें पातितकिया ६२ सो हे पतिदेवते ! यह मुकुट उसी राजाकाहै व यह भी अन्य महात्मा पुष्कल नाम वीरका मुकुट है ६३ जोकि मणियों व मुक्ताओं से विराजमान होरहा है और हमारे मनके हरनेवाला मनमाना मनोवेग यही घोड़ा उस राजाकाहै ६४ सो अब यह हमारे महाबली भाई के चढ़ने के लिये होगा व इन दोनों महाबलवानों में महाबली बानरोंको हम खेलनेकेलिये

लाये हैं ६५ क्योंकि इन दोनों ने हमारे संग संग्राम में बड़ा युद्ध किया है इस से तुम्हारे भी कौतुक के लिये हैं ऐसे वचन सुनकर पतिदेवता श्रीजानकीजी ६६ बार २ छुड़ाती हुई अपने पुत्रों से बोलीं कि तुम दोनोंजनोंने बड़ा अन्याय किया जोकि श्रीरामचन्द्र जी का घोड़ा हरलिया ६७ व अनेक वीरोंको मारकर डाल दिया और इनदोनों बानर राजोंको बांधलाये हे वीरो! यह तुम्हारे पिता का घोड़ाहै उन्होंने यज्ञ करने के लिये छोड़ाहै ६८ सो उत्तम यज्ञ का उनका भी घोड़ा तुम दोनोंने हरलिया अब इनदोनों बानरोंको छोड़देओ और इस श्रेष्ठ घोड़ेको भी छोड़देओ ६९ व राजा के भ्राता शत्रुघ्नजी से जाकर क्षमाकराओ माताके वचन सुनकर वे दोनों बलवान् उनसे बोले ७० कि हम दोनों ने क्षत्रियोंके धर्म्मसे उन बलवान् राजाको जीता है इससे क्षात्रधर्म्म से युद्ध करते हुये हमलोगोंको यह अन्याय न होगा ७१ हमलोगों के पढ़ते समय पहले बाल्मीकिजी ने कहाहै ७२ कि कण्वमुनि के आश्रमपर दुष्यन्त राजाके यज्ञका घोड़ा भरतने पकड़ाथा इस से पुत्र अपने पितासे भी युद्ध करसक्ताहै व भ्राता भ्रातासे भी ७३ व शिष्य गुरुके संग भी शास्त्रार्थ करसक्ता है इस से इस हमारे युद्ध में पापका सम्भव नहीं है पर हां तुम्हारी आज्ञासे अब हम दोनों जाकर उनको उत्तम घोड़ादेदेंगे ७४ व इनदोनों बानरों को भी छोड़देंगे क्योंकि हमको सब आपके वचन करने चाहियें इतना मातासे कहकर दोनों वीर रणको गये व दोनों कपीश्वरोंको ७५ छोड़दिया और यज्ञ क्रियाके योग्य उस घोड़ेको भी छोड़दिया तदनन्तर सीता देवीजीने अपने पुत्रों से मारीहुई सब सेनाको सुनकर ७६ श्रीरामचन्द्रजी को मन से ध्यान करके साक्षीके लिये सूर्य्यकी ओर देखा व कहा कि जो हम मनसा वाचा कर्म्मणा श्रीरघुनायक को ७७ भजतीहों व और को मन से भी कभी न भजतीहों तो ये राजा शत्रुघ्न जीआवें व यह सब बड़ी भारी सैन्यभी जीआवे जिसे कि बलसे हमारे पुत्रों ने मारडालाहै बस ये सब हमारे इस सत्यसे व जगत्पति श्रीरामचन्द्र जीकी कृपासे जीआवें ॥

चौ० पतिदेवता विदेहकुमारी । जैस्यहि इमि मुखबात उचारी ७८ । ७९
तैस्यहि सबसेना रणमाहीं । जिई मनहुँ मरिही कहुँ नाहीं १ । ८०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेसैन्यजीवनन्नाम चतुष्षष्टितमोऽध्यायः ६४ ॥

पैंसठवां अध्याय ॥

दो० । पैंसठयेंमहँ कहरिपुह मुख जिमिजी निजगेह ॥
बाजीलहि आयेमिले प्रभुसों सहित सनेह १
रघुपति पूँछ्यहु सुमतिसों मखहयगति वृत्तान्त ॥
सबबर्ण्योक्रमसहिततिनसुनिप्रभुमुदितनितान्त २

शेषनाग वात्स्यायन मुनि से बोले कि समरभूमि में शत्रुघ्नवीर ने एक क्षणमात्रमें मूर्च्छाको छोड़ दिया व और भी जो बलीवीर मूर्च्छित होगये थे सब अच्छी तरह से जीआये १ व शत्रुघ्नजी आगेखड़े हुये श्रेष्ठ घोड़े को देखा अपने को मुकुट कुण्डी आदिसे रहित देखकर व सब सैन्यको जीवित देखकर २ अपने मनमें बड़ा आश्चर्यकरके मूर्च्छासे रहित बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ सुमतिजी से बोले ३ कि कृपाकरके यज्ञ पूर्ण होनेके लिये बालकने घोड़ा देदिया अब अश्वके आनेकी राह देखतेहुये श्रीरामचन्द्रजी के समीपको अति वेग चलें ४ ऐसा कहकर रथपर चढ़कर यज्ञ के घोड़े को लेकर अति वेग से नगारे आदि के शब्दों से रहित उस आश्रम पर से दूर निकलआये ५ उनके पीछे वह चतुरङ्गिणी महा सेना अपने भार से फणीश्वरके शिरको लचाती हुई चली ६ बड़े वेग से आकर कल्लोलयुक्त जलकी पंक्तियों से युक्त गङ्गाजीको उतर कर अपने जनों से पूरित अपने देशमें आगये ७ पुष्कल और सुरथ समेत एकही मणिमय रथपर चढ़ेहुये राजा शत्रुघ्नजी महाधन्वा धारणकिये चलेआये ८ रत्नोंकी मालासे विभूषित व श्वेतछत्रमस्तकपर लगेहुये दो चामरों से भूषित उस यज्ञके घोड़ेको आगेकिये चले आते ९ जिनके संग अनेक सहस्ररथी महाबली राजालोग धन्वा चढ़ायेहुये व वीरनादोंसे भूषित चलेआते १० क्रमसे आते २ सूर्य्यवंशियोंसे विभूषित अनेक श्रेष्ठ पताकाओं से युक्त व दुर्गों

से विराजित अपनी नगरी अयोध्याजी के निकट पहुँचे ११ श्री रामचन्द्रजी ने सुना कि शत्रुघ्न वीर व पुष्कलवीर व अन्य अनेक वीर रणधीरों से युक्त यज्ञका अश्वनगरी के समीप आगया है आप भी अनेकप्रकार के आनन्द से युक्त होजातेभये १२ इसलिये चतुरंगिणी सेना साथकरके बलवानों में श्रेष्ठ अपने भ्राता लक्ष्मणजी को अगुआनी लेनेके लिये भेजा १३ सैन्यसहित लक्ष्मणजी वहां जाकर घाओंकी शोभासे शोभित अपने आयेहुये भाई शत्रुघ्नजीको बड़े हर्षसे भेंटे १४ व कुशल पूँछकर फिर कुछ वार्त्ता भी पूँछी शत्रुघ्नजी की भेंटसे लक्ष्मणजी परम हर्षितहुये व शत्रुघ्नजी उनकी भेंटसे १५ लक्ष्मणजी अपने रथपर भाई शत्रुघ्नको भी चढ़ाकर प्रसन्न मन होकर बड़ीभारी सेनाके साथ अपनी नगरीको लौटे १६ जिसके किनारे पुण्य जलसे भरी तीनोंलोकों को पवित्र करतीहुई रामचन्द्रजी के चरणों की धूलिसे पवित्र शरद् ऋतु के चन्द्रमा के समान चमकती हुई सरयूजी १७ हंस कारण्डवादि पक्षियों से युक्त चक्रवाकों से शोभित व विचित्ररंगके पक्षियों के नादसे अतिनादित सरयू नाम महा नदी है १८ उसके किनारे २ श्रीरामचन्द्रजी ने बहुतसे मण्डप बनवायेथे उनमें अलग २ पाठों में विवाद करनेवाले वेदवादी ब्राह्मणों के लिये अलग बनवायेथे १९ व धन्वा हाथोंमें लेनेसे सुशोभित प्रत्यञ्चाके टङ्कोरसे महीतलको नादित करातेहुये क्षत्रियलोग बहुतथे उनकेलिये भी स्थान बनेथे २० व ब्राह्मणलोग विचित्र मनोहर अन्न वहां भोजन करके परस्पर एक दूसरे को देखकर मनोहर वार्तायें करते थे २१ चन्द्रमा की क्रान्तिकेसमान अतिश्वेत दुग्ध, घृत, मधुयुक्त व शर्करा मिलेहुये पायसान्न बनेथे २२ व चन्द्रमा के बिम्बके समानऊँचे और गोलकपूर आदि सुगन्धित पदार्थोंसे वासित अति मनोहर अपूप बहुत बनेथे २३ जिलेबियाँ और वटक बड़े चीकने शतछिद्र युक्त विरन्ध्रक कचौरी और पूलियाँ शुष्कुलियाँ मीठे व मधुर अन्नोंसेयुक्त निर्म्माण कियेगयेथे २४ कुमुद के पुष्प के समान श्वेत व मूँगकी दालिके साथ कपूरआदि सुगन्धित पदार्थों से मिला हुआ अत्यन्त प्रीतिदायक भातबनाथा २५ व दही सहित ओदन

अलग भीमसेन युक्त बनाथा इनसबोंको स्वादु सहित दिव्य पाक-
कारों ने बनायाथा व चतुर परसनेवालों ने सबोंके आगे बड़ीयुक्तिसे
परसाथा २६ वहां कोई २ ब्राह्मणलोग पायसको अपने आगे आई
हुई देखकर आपस में बोले कि भाई यह दृष्टिसे क्या दिखाईदेतीहै
२७ क्या अन्धकारके भयसे आकाश से चन्द्रमाका बिम्ब तो नहीं
कहीं गिरपड़ा अथवा मृत्युनाश करनेवाला अमृत तो नहीं है जो
अद्भुत दिखाईदेता है २८ यह सुनकर मारे रोषके लालनेत्र करके
अन्य द्विजोत्तम बोला कि यह अमृत भराहुआ चन्द्रका बिम्ब नहीं
है २९ क्योंकि चन्द्रमाका बिम्ब तो एकही है फिर सब ब्राह्मणों के
पात्र २ में अलग २ कहांसे आया जो दिखाई देताहै ३० इससे
जानना चाहिये कि कितो यह कुमुदहोगा अथवा कपूर इसलिये इसे
श्वेत शोभासे युक्त चन्द्रमा न समझो ३१ तबतक रोषयुक्तहो अ-
पना शिर कँपातेहुये एक बोला कि स्वादके ज्ञानमें अनारी ये मूढ़
ब्राह्मण नहीं जानते ३२ यह ईषके रससे परिपक्क कियाहुआ मधुहै
अथवा शतपत्र नाम कमलके मधुर पुष्पहैं सबके आगे परोसे गये
हैं ३३ हे मुनिजी! इसप्रकार कन्दमूल फलखानेवाले ब्राह्मणलोग
प्रीतिपूर्व्वक तर्कणा करतेहुये रसके ज्ञानमें लोलुप होरहेथे ३४ तब-
तक अन्य ब्राह्मण बोला कि क्षत्रियोंका जन्म श्रेष्ठहै जो महापुण्य-
वान् लोगोंका बनायाहुआ ऐसा अन्न भोजन करते हैं ३५ तब उससे
एक और ब्राह्मणदेव बोले कि दानका फल ऐसाही होताहै जिन्होंने
पूर्व्वजन्ममें दानकर रक्खाहै वे लोग यहां आकर अपने वाञ्छितको
पाते हैं ३६ व जिन्होंने त्रिविधप्रकारके नैवेद्यों से बार बार श्रीहरि
की पूजा नहींकी उन लोगोंको कभी ऐसा भोजन नहीं दिखाई देता
३७ व जिन नरों ने ब्राह्मणों को विविध प्रकार के रसों से भोजन
कराया है वे लोग स्वादुयुक्तरस भोगते हैं व पापियों के नेत्रों को
तो वह त्यागता है ३८ इस प्रकार के विविध भाँति के मीठे भोजन
कियेहुये ब्राह्मणलोग वेदपाठ में अति विचक्षण मण्डप में बैठेहुये
वेद पढ़रहे थे ३९ कोई लोग नाचते थे कोई हँसते थे कोई आन-
न्दयुक्त गाते थे इस प्रकार से बड़ाभारी उत्सव होरहा था कि वहां

शत्रुघ्नजी आगये ४० व पुष्कलसहित आते हुये शत्रुघ्न को देख कर श्रीरामचन्द्रजी बढ़ेहुये हर्षको रोंक न सके वह बाहर निकल-पड़ा ४१ जबतक श्रीरामचन्द्रजी अश्व की रक्षा करनेवाले भाई को देखकर उठाचाहें कि तबतक भ्रातृवत्सल शत्रुघ्नजी आकर श्रीरामचन्द्रजी के चरणों में लगगये ४२ तब विनययुक्त भाईको चरणोंपरपड़ेहुये देखकर प्रसन्नहोकर श्रीराघवजी घावोंके चिह्नोंसे शोभित अंगवाले शत्रुघ्नजी को छातीमें लगाकर अत्यन्त प्रेमसे मिले ४३ व उनके शिरपर श्रीरामचन्द्रजी आनन्दके आंशु छोड़ते हुये अत्यन्त परम हर्षको प्राप्तहुये जिसकावर्णन बचनसे दूरहै ४४ फिर विनयसे विह्वल पुष्कलको अपने चरणोंपर झुँकेहुये देखकर श्रीराघवेंद्रजी ने अतिदृढ़तासे अपने भुजोंके मध्य में करके छपटा लिया ४५ फिर ऐसेही हनुमान्बीरको छपटाया फिर सुग्रीवको फिर अङ्गद बीरको जनकजी के पुत्र लक्ष्मीनिधि को राजा प्रतापाग्र्यको रिपुन्तपको ४६ सुबाहुको सुमदको बिमलबीरको नीलरत्नको स-त्यवान् को फिर बीरमणिको और फिर श्रीरामसेवकसुरथको छाती में लगाकर मिले ४७ ऐसेही श्रीरघुनाथजी अपने आप और भी चरणों में प्रणामकरतेहुये सब राजाओंको अच्छेमिलेभेंटे ४८ तब फिर सुमतिजी भक्तोंके ऊपर अनुग्रह करनेवाले श्रीरामचन्द्रजीको दृढ़ताकेसाथ मिलकर अत्यन्त प्रीतिपूर्वक उन्नतहो श्रीराघवेन्द्रजी के सम्मुख खड़ेहोरहे ४९ तब निकट आयेहुये अपने मन्त्री सुमति ब्राह्मणजी को देखकर बोलनेवालों में अतिश्रेष्ठ श्रीरघुनाथ जी परम प्रीतिसे मन्त्री से बोले कि ५० हे मन्त्रियोंमें श्रेष्ठ ! व वाणी जाननेवालोंमें अतिश्रेष्ठ सुमतिजी ! हमसे कहो तो ये सब राजालोग कौनहैं व यहां कैसे आयेहैं ५१ व घोड़ा कहां २ गया व किस २ ने बांधा व फिर महाबलशाली हमारे भ्राताने कैसे २ छुड़ाया ५२ शेषनाग वात्स्यायनजी से बोले कि जब ऐसे पूँछेगये तो मन्त्रियों में श्रेष्ठ सुमतिजी हँसते हुये श्रीराघवजी से मेघके समान गर्जती हुई वाणीसे महाबली श्रीरामचन्द्रजी से बोले ५३ सुमतिने श्रीरा-मचन्द्रजी से कहा कि सर्वज्ञ आपके आगे हम कैसे कहें क्योंकि

हम से तो लोककी रीति से पूँछतेहैं और सब आप जानतेहैं क्योंकि सर्व्वदर्शीहैं ५४ तथापि आपकी आज्ञा सर्व्वदा शिरपर धरके अब कहतेहैं हे सब राजाओंके शिरोमणि! सुनिये ५५ हे स्वामिन्! आपके आश्चर्य्यकारक प्रसादसे सब पृथ्वीभरमें मस्तकमें पत्रसे सुशोभित आपका घोड़ा घूमता रहा ५६ परन्तु अपने मान व बलके अहङ्कार से युक्त किसीने उसे नहींपकड़ा अपना २ राज्य देकर सबोंने आपके चरणारविंदके प्रणामकिया ५७ क्योंकि ऐसा कौन जरा मरणसे वर्जितहै जो बिजयकी इच्छासे रावणदैत्येंद्र के मारडालनेवाले आपका घोड़ा ग्रहण करे ५८ फिर स्वच्छन्द घूमताहुआ आपका वाजी अहिच्छत्रा नाम पुरीमें पहुँचा वहांके राजा सुमद आपके घोड़े को आये हुये सुनकर ५९ पुत्र सेना राज्य कोश घरबार सब लेकर उन्हों ने आपको समर्प्पण करदिया ६० जिन राजा ने जगतों की नेत्री जगदम्बिका माता को प्रसन्नकरके चिरञ्जीवित्व और अकण्टक राज्य पाया है ६१ वे ये सुमद नाम राजा सब प्रभुओं से सेवित आप के प्रणाम करते हैं इनको कृपा दृष्टि से ग्रहण कीजिये क्योंकि ये बहुत दिनों से आपके दर्शनकी आकांक्षा करते हैं ६२ इसके पीछे बलसे पूरित राजासुबाहुके नगरमें घोड़ापहुँचा उनके पुत्र दमन ने उत्तम घोड़ेको पकड़ लिया ६३ उस दमन के साथ महा युद्धहुआ परन्तु सुबाहुके पुत्रको मूर्च्छित करके पुष्कलजी ने विजयपाया ६४ तब राजा सुबाहु बहुत क्रुद्धहोकर रण में आकर आपके चरणकमल के सेवक व सब बलवानों में श्रेष्ठ पवनकुमार जी से बड़े बल से युद्ध करने लगे ६५ परन्तु इन हनुमान्जी के चरणप्रहार के होतेही ज्ञानको पाकर जोकि शाप के कारण छिपा हुआथा सब राज्यादि आपको समर्प्पणकरके फिर राजा इस आप के घोड़े का पालक होगया ६६ सो वही यह राजा सुबाहु ऊपरको अंग उठाये आपके प्रणाम करता है अब आप अपनी कृपादृष्टि से रणकर्म्म में परमकोविद सुबाहुको सींचिये ६७ फिर वहां से घोड़ा छोड़ा गया तो जाकर नर्म्मदानदी के एक बड़े अगाधकुण्ड में पैठ गया वहां जाकर महाबली शत्रुघ्नजी ने एक मोहनास्त्रपाया ६८

तदनन्तर शिवजी के वाससे विभूषित देवपुरमें वाजी अपनी राजी ले गया वहांके वृत्त तो आपजानतेही हैं क्योंकि वहां आपगयेथे ६९ इसके पीछे अश्व हरनेके कारण विद्युन्मालीनाम दैत्येन्द्र मारागया फिर सत्यवान् से सङ्गम हुआ व फिर सुरथके साथ जो युद्ध हुआ उसे तो आप जानतेही हैं क्योंकि वहां गयेहीथे ७० फिर उस कुण्डलपुरसे घोड़ा छोड़ागया सबकहीं फिरतारहा अपने बल और वीर्य्यके दर्प्पसे किसीने भी उसे नहीं बांधा ७१ जाते २ वाल्मीकि जीके रम्यआश्रम पर मनोरमघोड़ापहुंचा वहां जो वृत्तांत आश्चर्य कारी हुआ हे नरवरोत्तम ! उसे सुनिये ७२ वहां एक आपकी सारूप्यको धारणकिये बालक सोलहवर्षकी अवस्था का था उसने पत्र देखकर झटघोड़े को पकड़ लिया क्योंकि बलवानों में सत्तम था ७३ वहां कालजित् से महाघोर युद्ध हुआ परन्तु उस महावीर बालकने तीक्ष्णधारवाले खड्गसे इसनरोत्तम कालजित् का शिर काट डाला ७४ कहां तक कहें वहां पुष्कलादि महाबली अनेकबीर मारे गये फिर उसबीर शिरोमणि ने शत्रुघ्नजीको भी मूर्च्छित कर दिया ७५ तब राजाशत्रुघ्नजीने अपनेमनमें बड़ा दुःख बिचारके क्याकरें मारे कोपके सबबलियों में श्रेष्ठ उसवीरको रणमें मूर्च्छित करदिया ७६ सो जैसेही वह वीर राजासे मूर्च्छित हुआ कि वैसेही अन्यवीर आनपहुंचा उसने और उसके आतेही चैतन्यहोकर पहिले वाले ने भी सब आपकी सेना का नाशकर डाला ७७ ॥

चौ० अरु सब मूर्च्छित वीरन केरे । भूषण बसन उतारि घनेरे ॥
गहिसुग्रीव पवन सुत काहीं । निजआश्रमगे मुदित तहांहीं १ । ७८
पुनि करिकृपा यज्ञकर वाजी । दीन आय उन अपनी राजी ॥
मृतकक्कट पुनितिनकरि द्राया । अपनी मातासों जिलवाया २ । ७९
तब हम सबलै तुरग तुरन्ता । आये तवढिग श्री भगवन्ता ॥
यहहम्सब तुमसन कहनीके । यद्यपि प्रभुजानहु सब ठीके ३ । ८०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेसुमतिनिवेदनंनामपञ्चषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥

छासठवां अध्याय ॥

दो० छासठयें महँ बालमिकि राघवसों सब हाल ।
कहकुशलव जनि श्रुतिसकल शास्त्रपढ़े जिमि बाल १
सुनि सुतयुत सिय लेन हित लषनहि पठयहु राम ॥
परनहिं आई जानकी सुतपठये अभिराम २ ॥
पुनि सन्देश अनेककहि लषनहि तहां पठाव ।
अरु रामायण बनन विधि मुनिसों शेष बताव ३ ॥

शेषनाग वात्स्यायन मुनि से बोले कि सुमति जी के कहने से बाल्मीकि जीके आश्रमके वृत्तसुनकर अपने मनसे उन दोनों बालकों को अपने पुत्रजानकर श्रीरामचन्द्रजी उसी यज्ञमण्डपमें बैठेहुये बाल्मीकि जीसे बोले क्योंकि सबमुनि यज्ञमें आये थे इससे वे भी आये थे १ श्रीरामचन्द्रजी ने बाल्मीकिजी से कहा हमारी सारूप्य धारण किये सब बलवानों में श्रेष्ठ वे कौन बालकहैं व धनुर्विद्यामें विशारद वे दोनों वहां क्यों रहतेहैं २ मन्त्री के कहने से सुनकर हमको विस्मय होता है जो कि उन दोनों ने लीलापूर्व्वक शत्रुघ्न व हनुमान्को बांध लिया ३ इससे हे मुनिराज! उन दोनों बालकों के चेष्टित कर्म्म हम से सब कहो क्योंकि इस के सुनने व जानने में हमारी परम प्रीति हो रही है ४ धीमान् महाराजाधिराज के ऐसे वचन सुनकर बाल्मीकिजी स्पष्ट अक्षर समेत परमवाक्य बोले कि ५ बाल्मीकि जीने श्रीरामचन्द्रजी से कहा कि अन्तर्य्यामी आपके आगे हम लोग मनुष्यों को ऐसा ज्ञान कहां होसक्ताहै जो कुछ कह सकें तो भी आपके सन्तोषके लिये यहां कहते हैं ६ हे महाराज! सब बलवानों में श्रेष्ठ आपकी सारूप्य धारण किये व अपने मनोहर अंगोंसमेत सुन्दर शरीर धारण किये जो दो बालक हमारे आश्रम पर हैं ७ सो जब तुमने निरपराधिनी जानकी जी को बनमें त्यागा तो वे गर्भवती बेचारी अतिघोर बनमें बारबार विलाप करती थीं ८ तब हम कुररी पक्षिणी की नाईं दुःखसे पीड़ित तुम्हारी भार्य्या व जनकजी की कन्या और महापुण्यरूपिणी उन को देखकर अपने आश्रम पर लाये ९ उनके लिये मुनियों के पुत्रों से रम्यपर्ण-

कुटी बनवादी उसमें उन्होंने दशो दिशाओंको प्रकाशित करातेहुये दो पुत्र उत्पन्न किये १० उनमें एक का हमने कुशनाम धराया व दूसरे का लव ये दोनों शुक्ल पक्षके चन्द्रमाके समान निरंतर बढ़ने लगे ११ काल आने पर हमने उपनयनादि सबकर्म उनके किये फिर षडंगसहित पूरे चारों वेद हमने पढ़ाये १२ व सब सरहस्य और भी वेद हमने पढ़ाये सो हमारे मुखसे सुनो आयुर्वेद वैद्यकी विद्या धनुर्वेद अस्त्रशस्त्र चलानेकी विद्या व शस्त्रकी विद्या अलग भी पढ़ाई १३ फिर जालन्धरी मायाकी विद्या पढ़ाई व गाने की संगीत विद्या में महाकुशल किये इससे वे गंगाजी के तीरपर लता कुंजों में वनों में यथेष्ट गानेलगे १४ और सब विद्याओंमें विशारद होने के कारण वे दोनों बड़े चंचल और चलचित्त हुये तब हम अति सन्तुष्ट उन दोनों बालकों के ऊपरहुये १५ इसलिये हमने दोनों को सब अस्त्र देकर फिर उनके मस्तकों पर अपना हाथ फेरदिया दोनों को गान विद्या में अतीव कुशल देखकर सबलोग बहुत विस्मित होनेलगे क्योंकि वे षड्ज मध्यम व गान्धार इन तीन स्वरभेदों में अतिविशारद हुये हैं १६ दोनों को ऐसे देखकर हमने भविष्यज्ञान के योग से जो शुभ रामायण बनाया था वह मनोहर रामायण दोनों से गवाया १७ गाने के विशेष मृदङ्ग व ढोल बीणा आदि वाद्यों के बजाने में भी दोनों विशारद हैं इससे बन २ में गायकर खगों व मृगों को मोहित किया करते हैं १८ हे श्रीरामचन्द्र ! तुम्हारे कुमारों के अद्भुत गीतकी मधुरता सुनने के लिये एक दिन बरुणजी ने दोनों को अपनी विभावरी नाम पुरी में बुलाया १९ तब मनोहर अवस्था रूप व गानविद्या सागर के पारगन्ता उन दोनों कुमारों ने वहां लोकपाल वरुणकी आज्ञा से मधुर स्फुट शब्द से गाया २० व परम मधुर रम्य और पवित्र तुम्हारा चरित अपने कुटुम्ब व गायकों समेत वरुणने सुना २१ व हे रघुत्तम ! अमृत के रस से भी अधिक स्वादु युक्त तुम्हारे चरितको सुनकर मित्र सहित बरुण तृप्त न हुये २२ इसीसे गानके आनन्दके समूहों के लोभमें ऐसे उनके प्राण व इन्द्रियों की क्रिया लगगई कि उन्हों ने फिर तुम्हारे कुमारों को लौट

आने की आज्ञाही न दी २३ व नानाप्रकारके मनोहर महाभोगों से उन्हों ने दोनों बालकों को लोभित भी किया परन्तु वे दोनों अपने गुरु और माताके चरणकमलों के स्मरण से चलायमान न हुये २४ पीछे से हम भी उत्तम बरुण के स्थान को गये तब हे प्रभो! प्रेमसे गल २ होकर बरुण ने हमारी बड़ी पूजा की २५ फिर बालकों के जन्म कर्म पूँछते हुये सर्व्वज्ञ भी बरुण से हमने सब जन्म कर्म विद्यादि की प्राप्ति कही २६ तब सीताजी के पुत्र सुनकर बरुण देव ने वस्त्र भूषणों से बड़ा सत्कार किया वे ग्रहण नहीं करते थे परन्तु हम ने कहा कि देवता का दियाहुआ पदार्थ ग्रहण करने के योग्य होता है तो हमारे बचन के गौरव से २७ दोनों राजपुत्रों ने बरुण के दियेहुये पदार्थ ग्रहण किये जो कि उन्हों ने उन दोनों के गान विद्या व गुणों से प्रसन्न होकर दिये थे तब कुशली बरुणजी ने सीता जीका उद्देश्यकर के कहा था कि २८ हे राघव! पतिव्रता धुरन्धारिणी रूप, शील, गुणयुक्त बीर पुत्रों के उत्पन्न करनेवाली सीताजी कभी त्याग के योग्य नहीं हैं २९ हे रघुनन्दन! इनके त्यागकरने में बड़ीभारी हानि है क्योंकि ये तुम्हारी सब सिद्धियों की नाशरहित परम सिद्धि हैं ३० यदि महादूषित नीचों ने इनकी महिमा को न जाना तो हे पुण्यश्रवणकीर्त्तन श्रीरामचन्द्रजी! क्या हानिहुई ३१ इन के पावनचरितों के एकतो हमीं बड़ेभारी साक्षी हैं जिन्हों ने अपने ग्रन्थ में लिखाहै कि जो सीताजी के चरणों केचिन्तक हैं वे परमशुद्धि को प्राप्तहोते हैं फिर उनके शुद्ध होनेको क्या कहना है ३२ जिन सीता जीके सङ्कल्प मात्र से अनेक कोटि ब्रह्माण्डों के जन्म पालन व नाश आदि क्रिया नित्य हुआकरती हैं व यही सब व्यापार ईश्वरों के किये हुये होते हैं फिर सीता त्यागके योग्य कैसे होसक्ती हैं ३३ ये सीताजी मृत्युकी सुधा हैं यही तपती हैं यही समयपर बर्षाकरती हैं स्वर्ग,मोक्ष, तप, योग सबकुछ तुम्हारी जानकीही हैं ३४ ये सीता जी ब्रह्मा शिव व अन्य सब लोकपालों को सदा उत्पन्न करती रहती हैं व सबका पालन करती हैं केवल तुम्हारी स्त्रीही नहीं हैं ३५ व नहीं तो तुम सब लोकों के पिता हो और सीता सबकी माता हैं

इस से इनके बिषय में कुदृष्टिको आक्षेप करना कभी क्षेमके योग्य नहीं है ३६ व आपभी सर्व्वज्ञ भगवान् हैं इस से स्वयं जानते हैं कि सीताजी सदा शुद्ध हैं और भूमि की पुत्री हैं और इसी से आपको प्राण से भी अधिक अतिशय गुरु हैं ३७ इस से परम शुद्ध प्राणप्रिया जानकी जी तुम्हारे आदर करने व अङ्गीकार करने के योग्य हैं क्योंकि हे विभो! सीताजी में और तुममें शापकी पराभूति नहीं होसक्ती कि कोई कहदे कि ये निन्द्य हैं ३८ ये हमारे वाक्य जगतीपति श्रीरामचन्द्रजीसे तुमजाकर कहना हे मुनिसत्तमबाल्मीकिजी! ३९ यहसीताजी के संग्रहकरने कोलिये बरुणजीने वइसी प्रकार अन्य इन्द्रादि लोकपालोंने भी हमसे कहाहै इसलिये उनका संदेश हमने कहा ४० हां फिर तुम्हारे दोनों पुत्रों का अपूर्व रामायण का गान सब देवताओं व दैत्यों ने बरुणके लोक में अच्छे प्रकार जब सुना व सब गन्धर्व्वोंनेभी सुना तो सब कौतुकयुक्त हुये ४१ और सबकेसब प्रसन्न होकर तुम्हारे पुत्रोंकी प्रशंसाकरनेलगे क्योंकि उन दोनोंनें रूपगान अवस्था व गुणोंसे तीनोंलोकोंको मोहितकर दिया ४२ व जो कुछ लोकपालों ने दिया वह सब तुम्हारे पुत्रों ने ग्रहण किया व ऋषियोंसे दोनोंजनोंने वरग्रणकिये व अन्यलोगोंसे कीर्ति ग्रहणकी ४३ मुनियोंने प्रथम सब जगत्को एक रामसे युक्त देखा था अब तुम्हारे दोनोंपुत्रों के होनेसे सब तीनरामों से युक्त जगत् को देखते हैं ४४ व पूर्व्वसमय में लोगों ने एक कामका तिरस्कार शिवजी का कियाहुआ देखाथा अबतीनोंभाइयों समेत आपके होने से चारकाम जहां तहां सबको जीतरहे हैं ४५ हे राजेन्द्र! अन्यत्र सब कहीं प्रसिद्ध है कि कुश व लव श्रीरामचन्द्रजी के पुत्र हैं फिर परम विद्वान् आपने इसका संकोच क्योंकिया ४६ हे पुण्ययशों के शिरोमणि, रामचन्द्रजी! सीताजी के त्याग को छोड़कर अन्य सब कृत्यों में आपकी महास्तुति सुनीजाती है केवल इसीकी निंदालोग करते हैं जोकि निरपराधिनी सीताजी को तुम ने त्यागा है ४७ हे रामचन्द्रजी! यद्यपि तुम त्रिलोकी के नाथहो पर गृहस्थाश्रमका अनुकरण करतेहुये तुम को चाहिये कि विद्याशील गुणों से युक्त अ-

पने दोनों पुत्रोंको अंगीकार करो ४८ परन्तु वे दोनों अपनी माता को छोड़कर तुम्हारे समीप न रहेंगे इससे आपको चाहिये कि माता सहित उन दोनों पुत्रोंको बुलाओ ४९ सब तुम्हारी सेनाको उन्हीं सीताजीनेही प्राण दानकरके फिर जियायाहै इससे जो लोग पतित भी हैं उनको भी उन के पावनहोनेका दृढ़ विश्वासहोगया है फिर ज्ञानियोंको क्या कहें उनको तो सदासे विश्वासथाही ५० सो उनके शुद्धहोनेके बिषयमें न तो हम लोगोंकोही अज्ञानहै न देवताओंको ही न किसी अन्यही लोगोंको अर्थात् सब उन सीताजी को परम शुद्धजानतेहैं ५१ शेषनाग वात्स्यायनमुनि से बोले कि यद्यपि श्री रामचन्द्रजी सर्व्वज्ञ थे आप जानतेही थे कि सीता परमशुद्ध हैं पर जब बाल्मीकिजी ने ऐसा समझाया तो बाल्मीकिजी की स्तुतिकर फिर प्रणामकरके लक्ष्मणजी से बोले कि ५२ हे तात! इसी समय शुद्धचारिणी पुत्रसहित सीताजी के लेआने के लिये सुमित्रनामक सारथि समेत रथपर चढ़कर जाओ ५३ हमारे और मुनिके ये सब बचन सुनाकर व समझाकर अति शीघ्र सीताको इस अयोध्यापुरी को लाओ ५४ यह सुनकर लक्ष्मणजी ने कहा कि सब लोगों के स्वामी आपके सन्देश के कारण हम जायँगे परन्तु हमारी यात्रा तभी सफलहोगी जब कि श्रीदेवी सीताजी आवेंगी ५५ और वे हमारे पूर्व्व के दोषके वश से हमारे ऊपर अप्रसन्न तो होहींगी इस लिये यदि न आवें तो हमारे अपराधको आप क्षमाकरेंगे यही प्रार्थना है ५६ श्रीरामचन्द्रजीसे ऐसा कहकर लक्ष्मणजी महाराजकी आज्ञासे सुमित्रनाम सारथि व एक बाल्मीकिजी के शिष्यके साथ रथपर चढ़कर जानकीजीके स्थानपरको गये ५७ व मार्ग्ग में विचारते चले जाते थे कि भगवती श्रीसीताजी को हम कैसे प्रसन्न करेंगे क्योंकि वे हमारे पूर्व्व समय के दोषको जानती हैं परहां यह भी तो जानतीहैं कि इसने पराधीन होने से यह दोष किया था ५८ इसप्रकार सञ्चिन्तन करतेहुये हर्ष व सङ्कोचके बीचमें स्थित लक्ष्मणजी श्रमनाशकरनेवाले सीताजी के आश्रमपर पहुँचे ५९ व शीघ्ररथ परसे उतरकर आँशुओंसे नेत्रोंकोरुँधेहुये हे आर्य्ये, हे पूज्ये, हे भगवति!

हे शुभे ! ऐसा बारबार कहतेहुये ६० व थरथर कांपतेहुये उनके चरणोंपर गिरपड़े तब प्रीतिसे विह्वल उन देवी सीताजी ने लक्ष्मणको अपने हाथोंसे पकड़कर उठाया ६१ व पूँछा कि हे सौम्य! मुनिजनों के प्रियबन को कैसेआये कौसल्याशुक्ति मौक्तिक वेदेव कुशली तो हैं न ६२ और हमारेऊपर अबतो अरोषहैं न क्योंकि अबतो केवल कीर्त्तिसे युक्तहैं व सबलोग तो अब उन कल्याण व गुणसागरकी कीर्त्ति तो बहुत करतेहैं न ६३ और अब क्या अकीर्त्ति के भय से युक्त होकर तुमको हमारे त्याग करने को नियुक्त किया है सो कुछ संदेह नहीं जो ऐसा करनेपर लोगों के मध्य में उनकी अमलकीर्त्ति हो तो ६४ मरकर भी पतिकी सत्कीर्त्ति करतीहुई हमको बहुत अच्छा है क्योंकि हे देवर ! फिरभी पतिके समीपको पहुँच जायँगी ६५ उन्हों ने हमको छोड़भी दिया परंतु हमने अब भी कभी उनको नहीं छोड़ा फलतो साधना के आधीन है हेतु फलके बश नहीं है ६६ भला कौशल्याजी बधू शून्य होगई हैं हमारे ऊपर सदा कृपा करती हैं व कुशलिनी तो हैं न क्योंकि उनके पुत्र तीनोंलोकों के पालक हैं ६७ भरतादिक सब भाई बन्धु कुशली हैं व महाभाग्यवती सुमित्राजी तो कुशलिनी हैं न जिनको कि हम प्राण से भी अधिक प्रिय थीं ६८ भला हमारी नाईं लोगों में कीर्त्ति होने के लिये तुमकोभी तो नहीं छोड़दिया क्योंकि राजाधिराज को क्या दुस्त्यज है उनको तो अपना आत्माभी प्रिय नहीं है ६९ इसप्रकार जब बहुत उन्हों ने पूँछा तब लक्ष्मणजी उनसे बोले कि देवदेव श्रीरामचन्द्र जी कुशली हैं व तुम्हारी कुशल पूँछते हैं ७० हे देवि ! कौसल्या सुमित्रा व और भी जो राजाकी स्त्रियां हैं सबों ने आशीर्व्वाद कहकर तुम्हारी कुशल पूँछी है ७१ व कुशल पूँछने के पीछे शत्रुघ्न और भरतका किया हुआ आप के चरणों का अभिवादन आपको निवेदित करते हैं ७२ गुरुओं ने और गुरुपत्नियों ने सबों ने तुम को आशीर्व्वाद देकर तुम्हारी कुशल पूँछी है ७३ और उपकारी श्रीदेवदेव प्रसन्नता से तुमको बुलाते हैं क्योंकि तुमको छोड़कर अन्यत्र उनकी रति कहीं नहीं है ७४ हे जनकात्मजे ! तुम्हें बिना

उनको सब दिशा शून्यही दिखाई देती हैं इससे हमलोगों के नाथ श्रीरघुनाथजी सब दिशाओं को देख देख कर आप रोदन करते हैं व औरों को रोवाते हैं ७५ जहां तुम उनकी देवी रहती थीं उस स्थान को देखकर श्रीराघव यही स्मरण करते हैं कि यह स्थान शून्य नहीं है यहाँ वैदेही हैं ७६ वे कहते हैं कि हम मानते हैं कि जहाँ जानकी हैं यह वही वाल्मीकिजीका आश्रम है वह धन्य है जहां कि हमारी वार्त्ता से अपना काल बिताती हैं ७७ अब रोदन करते हुये हमलोगों के स्वामी ने जो कुछ तुम्हारे विषय में कहा है वह सुनो जो जिसके हृदय में होता है वह उसके मुखके देखने से प्रकट होजाता है अब यह उन की वार्त्ता तुम से है ७८ लोग हमको सब ईश्वरों के ईश्वर कहते हैं परन्तु हम कहते हैं कि इन सब ईश्वरों का स्वतंत्र कारण ईश्वर प्रारब्ध है ७९ क्योंकि जो सबोंका ईश्वर भी होता है वह भी प्रारब्धही के पीछे पीछे चलताहै यदि ऐसा न होता तो आज्ञा करनेवाले ईश्वर लोग समय समय पर सुख दुःख न पाते अपने मनमाना सुखही भोगते इससे भाग्यही प्रधान है ८० धन्वा का टूटना कैकेयी की मति का भ्रंश होना पिताजी का मरण होना हम लोगों का बनबास वहां तुम्हारा हरण समुद्र में सेतु बांधना ८१ फिर उस के उस पारको जाना व प्रत्येक रणों में बड़े बड़े राक्षसों का मारना व रावण का वध बानरों व ऋक्षों का हमारे सहायक होना ८२ तुम्हारे पाने की प्रतिज्ञा का पूरण होना फिर तुमको पाकर फिर सत्यता की परीक्षाका लेना हे पतिव्रताओं की शिरोमणि! फिर अपने बन्धुओं का सम्बन्ध होना व हे भामिनि! फिर राज्य का पाना ८३ फिर प्रिया का वियोग इन सबों का जो प्रारब्ध अवारण कारण हुआ अर्थात् उसी ने सबकुछ कराया वही प्रारब्ध अब हमारे तुम्हारे संयोग के कराने में प्रसन्नहुआ है ८४ संसारमें वेद व लोक दोनों मानेजाते हैं बरन लोक वेद को भी अन्यथा करदेता है इस से लोक वेद से अति बलवान् होता है इससे प्रथम तुम्हारे परित्याग के समय लोक के अनुगामी हुये ८५ और लोक प्रारब्ध का अनुगामी होता है वह प्रारब्ध बिना भोगेहुये मिटता नहीं सो तुम

मे बन में प्रारब्धको भोग लिया अब वह नष्ट होगया ८६ सो हे सीते! अब हमारा स्नेह तुम में बढ़ा है वही कारण है और वही अब लोक की दृष्टि का तिरस्कार करके तुमको आदरसे यहां बुलाता है ८७ चाहे दोषके कारण किसी का चित्त शंकित भी हो पर जब निर्म्मल स्नेह होता है तो उस दोषको शुद्ध करदेता है इससे फिर देवता व पण्डित लोग भी उसकी प्रशंसा करने लगते हैं ८८ और स्नेहकी शुद्धता प्रथम बिना किसी दूषणके नहीं होती सो हे भद्रे! हमने यह स्नेहकी शुद्धताकी है इसको अन्यथा न मानना चाहिये जो कहो कि हम में तो दोषथाही नहीं फिर तुमने दोषारोपणकरके क्यों स्नेहकी शुद्धता की तो सब शिष्टलोग लोक के पीछे चलते हैं हम भी चले उसकी तुमको रक्षा करनी चाहिये ८९ सो भी हमने यह स्नेहशुद्धि तुममें मनुष्यों की शुद्धता के लिये कीहै और इसका कुछ प्रयोजन नहींथा क्योंकि हम तुम सब अवस्थाओं में शुद्धहैं फिर हमारी तुम्हारी निन्दाकरने से भी लोगोंकी शुद्धि होती है नहीं तो मूढ़लोग जो ऐसा कर्म्मकरें महात्माओंकी रीतिपरचलें तो नष्टही होजावें ९० और हमारी तुम्हारी तो सदा उज्ज्वलकीर्त्ति है व हमारा तुम्हारा उज्ज्वल यश है व हमारा तुम्हारा वंश उज्ज्वलहै व हमारी तुम्हारी क्रिया उज्ज्वलहै ९१ इससे हमारी तुम्हारीकीर्त्तिके गानेवाले भूतल पर सब उज्ज्वलहोंगे जिनके हमारी तुम्हारी भक्ति है वे अन्त में संसारसागरको पार उतरजाते हैं ९२ हे सीताजी! आपसे उन्हों ने ऐसा कहा क्योंकि तुम्हारे सब शुभगुणों से सदा तृप्तरहते हैं अब आप पतिके चरणकमलों के दर्शन के लिये मन दयायुक्त करें ९३ रमणीयवस्त्र व बहुमूल्य बड़े२ भूषण व मनोहर सुगंधित अरगजादि अङ्गराग आप के लिये भेजा है ९४ वहां फिर रामचन्द्रजीकी प्रेरणा से उत्सवकेलिये आयेहुये छत्रचामर गज अश्व रथ व दासी भेजेहैं ९५ वहां सब द्विजश्रेष्ठ यज्ञ में तुम्हारी स्तुति करेंगे व सूत मागध बन्दीगण यश आदि गावेंगे पुरकी सब स्त्रियों से वन्द्यमान होओगी व योद्धा लोग सब ओर से सेवा करेंगे ९६ व देव देवियाँ पुष्पों से आच्छादित करेंगी और ब्राह्मणादिकों को धन देतीहुई

आप शोभित होंगी ९७ सो अब अपने दोनों कुमारोंको हाथीपर सवार कराय आगेकर व मुझ अनुचरको पीछे करके सबकी ईश्वरी आप अपनी अयोध्यापुरी को चलें ९८ क्योंकि जब तुम वहां पहुँचोगी व अपने प्राणप्रिय से मिलोगी तब सबओर से आई हुई राजाओंकी स्त्रियोंका ९९ व सब महर्षियोंकी नारियोंका व कौसल्यादि माताओं का यज्ञमें मङ्गलगीत गाने बजानेका बड़ाभारी उत्सवहोगा १०० शेषनाग वात्स्यायनमुनि से बोले कि इस विज्ञापनको सुनकर श्रीदेवीसीताजी लक्ष्मणजी से बोलीं कि हम राजाकी कीर्त्ति करनेवाली हैं नहींहैं क्योंकि हम खुद अपनी अपकीर्त्ति करनेवाली हैं १०१ धर्म्म काम अर्थसे शून्य हमसे राजाका कौन कार्य्य सिद्ध होगा व अभी हम चलें तो फिरभी आपके निरंकुशराजा का कौन बिश्वास है १०२ परन्तु हमसी पतिव्रता कल्याणगुण युक्त स्त्रीको अपने मन में टिकेहुये पति के दोष प्रत्यक्ष वा परोक्ष में न कहने चाहियें इससे हम कुछ नहीं कहसक्तीं १०३ बिवाहके समयमें जिस रूप के वे हमारे हृदयमें स्थितहुये थे उस रूप के वे हमारे हृदयसे कभी नहीं अलगजाते १०४ अब हे लक्ष्मण! उनके तेज के अंश से उत्पन्न वंश के अंकुर महाशूर धनुर्विद्या में विशारद इन हमारे दोनों कुमारोंको १०५ पिताके समीप पहुँचाकर प्रयत्नसे लालन करो और हम यहीं रहकर तपस्यासे यथेष्ट श्रीरामचन्द्रजी का आराधन करेंगी १०६ हे महाभागे! श्रीरघुनाथजीसे कहना कि जानकीजी ने तुम्हारे चरणोंके प्रणामकियाहै व जाकर सबसे हमारी कुशल प्रश्न कहना १०७ फिर सीताजी ने पुत्रोंको आज्ञा दी कि तुम दोनों पिताके समीपजाओ और उनकी शुश्रूषा करो क्योंकि वे तुमको अपना पद देनेवाले हैं १०८ माता की आज्ञाभीहुई परन्तु उन दोनोंकुशलव कुमारोंने यहां आनेकी इच्छा न की तब वाल्मीकिजी की जबानी उनके शिष्य के कहने से लक्ष्मणजी के संग दोनों कुमार अयोध्याजी को गये १०९ सो भी वे दोनों कुमार जाकर वाल्मीकिजीकेही चरणों के समीप बैठे व लक्ष्मणजी नेभी प्रथम जाकर मुनिकेही प्रणामकिया तब उन बालकोंनेभी प्रणामकिया ११०

फिर बाल्मीकि लक्ष्मण व दोनों कुमार ये मिलकर रामचन्द्र जी को सभा में बिराजमान जानकर सब उनके समीप गये १११ व हर्षशोकयुक्त सुधी लक्ष्मणजी ने प्रणामकरके सीताजी के सब वाक्य श्रीरामचन्द्रजी से कहे ११२ सीताजी के सन्देश के वाक्यों से श्री रामचन्द्रजी मूर्च्छित होगये फिर चैतन्यहोकर नीतिशास्त्र में निपुण लक्ष्मणजी से बोले कि ११३ हे मित्र! तुम्हारा कल्याणहो तुम फिर वहां जाओ और बड़े यत्न से हमारे ये वाक्य कहकर उनको शीघ्र यहां लाओ ११४ हे जानकि! वनमें तप करतीहुई तुमने क्या हमसे अन्य कोई गति चिन्तनाकीहै वा हमसे सुनी देखी है जो नहींआती हो ११५ तुम तो अपनी इच्छाही से यहां से मुनियों के प्रियबनको गईहो सो अब मुनिकी पत्नियोंकी पूजा करचुकी होओगी और मुनिगणोंकोभी देखचुकीहोगी ११६ तुम्हारा मनोरथ पूर्णहोगया फिर अब हे भामिनि! यहां क्यों नहीं आतीहो अपनी इच्छाके देखनेसे हममें तुमको दोष न देखना चाहिये ११७ हे वामोरु! आकर पतिकी सेवा करो क्योंकि स्त्रियों को पतिही गति है जो वह निर्गुणभीहो तो भी स्त्रीके लिये गुणोंका सागरहै फिर जो मनका वाञ्छितपतिहै उसको क्या कहें ११८ कुलकी स्त्रियोंकी जो जो क्रियाहोती हैं सो सो पतिके संतुष्ट करनेहीके लिये होती हैं सो पूर्व्वकालमेंभी तुम्हारी सबक्रियाओं से हम संतुष्टथे और अबतो अत्यन्त संतुष्टहैं ११९ व यज्ञ जप तप दान व्रत तीर्थ दयादिक और सबदेव हमारे सन्तुष्ट होने से सन्तुष्ट होतेहैं इसमें कुछभी संशय नहींहै १२० शेषनाग वात्स्यायन मुनिसे बोले कि सीताजीके प्रति जगत्पति श्रीरामचन्द्रजीका ऐसा सन्देश पाकरके लक्ष्मणजी श्रीहरिकी प्रार्थना और मानसे अपने ईश श्रीराघवजीसे बोले कि १२१ सीताजीके लेआनेकेलिये प्रसन्न होकर जो आपने कहाहै सब आपका वाक्य विनययुक्त हम कहेंगे १२२ यह कहकर और श्रीरघुनाथजी के चरणों के नमस्कार करके लक्ष्मणजी महा बेगवान् रथपर चढ़कर बेग से सीताजी के समीप को गये १२३ व यहां बाल्मीकिजी श्रीयुत महापराक्रमी व तेजस्वी दोनों रामचन्द्रजीके पुत्रोंको देखकर कुछ हँसकर मनोहरमुखकरके

बोले कि १२४ हे पुत्रो! तुम दोनों बीणा बजाते हुये मधुर स्फुट स्वरसे शोभित अद्भुत श्रीरामचन्द्रजीका चरित्र गाओ १२५ ऐसा कहने पर उन दोनों महाभाग्य वाले पुत्रों ने बहुत पुण्यदायक व सुन्दरवाक्य पदों से विचित्रित श्री रामचन्द्रजी का चरित गाया १२६ जिसरामचरितमें साक्षात् सबधर्म्म बिधिहै व पातिव्रतधर्म्म अच्छेप्रकारसे स्थितहै व जहां भाइयोंका बड़ा भारी महास्नेह वर्णितहै व गुरुभक्तिका बर्णन वैसेही बहुत है १२७ व जहां स्वामी और सेवकों की नीति तो मूर्त्तिधारण कियेहुये बिराजमान है व जहां अधर्म्म करनेवालों को श्रीरामचन्द्रजी की शिक्षा भलीबिधि से बर्णितहै १२८ उस रामायणके गानेसे सब जगत् व्याप्तहोगया उसके सुनने के लिये देवता लोगभी आकाश में स्थितथे व किन्नर लोगभी उस गाने को सुनकर मूर्च्छित होगये १२९ व तालमानसे शोभित बीणा का शब्द सुनकर सम्पूर्ण सभा वहांकी चित्रितहोगई १३० व रामचन्द्रादिक सब राजालोग मारेहर्षके आंशु छोड़नेलगे व उस पञ्चमस्वर के गानके आलापसे मोहित होकर चित्रशाला के लिखेसे होगये १३१ वहां रामचन्द्रजी ने दोनों पुत्रोंको महागान से बिमोहित करातेहुये देखकर उन दोनों को एक लाख २ दीनार अर्थात् अशरफियां दीं १३२ तब रामचन्द्रजीको देतेहुये देखकर मुनियों में सत्तम बाल्मीकिमुनि से हँसतेहुये व कुछ तिरछी भौंहैं करके कुश व लव दोनों बोले कि १३३ हे मुनिराज! ये राजा तो महाअन्याय करते हैं जो कि हमलोगों को लोभित करातेहुये सुवर्णमुद्रा देते हैं १३४ क्योंकि दानलेना ब्राह्मणों काही प्रशंसनीय कार्य्य है औरों का नहीं इससे दानलेने में तत्परराजा नरकही को जाता है अन्यत्र नहीं १३५ हम दोनोंने अपनी कृपासे छोड़ दियाहै उस राज्यको येराजा भोगतेहैं फिरकल्याणसे युक्तये कैसे हमलोगों को सुवर्णमुद्रा दिया चाहते हैं १३६ उन दोनों महाराज कुमारों को ऐसा कहतेहुये देखकर कृपासे युक्तहोकर बाल्मीकि जीने कहा कि इनको अपने पिता जानो हे नीतिनिधानो! १३७ मुनिके ऐसे बचन सुनकर दोनों बालक पिताके चरणोंपर लगे व बिनय संयुक्त

हुये क्योंकि माता की भक्तिसे अति निर्म्मल थे १३८ व रामचन्द्र जीने अपने अंग में छपटाकर हर्षित होकर मूर्त्तिमान् होकर आये हुये दोनों पुत्रोंको अपनी पतिव्रता स्त्रीके धर्म्म माना १३९ व सभा भी रामचन्द्रजीके पुत्रोंकी मुखकी मनोहरता देखकर अपने मन में करके जानकीजी की पति भक्तिताको सत्यमाना हे मुनीश्वर! १४० व्यासजी सूतसे बोले कि शेषनागके मुखसे ऐसा सुनकर सब धर्म्म युक्त रामायण सुनने की इच्छा करके वात्स्यायनमुनि ने शेषनाग जीसे पूँछा १४१ वात्स्यायजीने कहा कि हे स्वामिन्! किसकाल में यह बड़ाभारी रामायण मुनिजीने बनाया व क्यों बनाया और उस में बर्णन किसकाहै सब हमसेकहो १४२ शेषनागजी बोले कि एक दिन बाल्मीकि बिप्र बड़े भारी बनको गये जहां कि ताल तमाल शाल व पलाश पुष्पित होरहेथे १४३ व जहां अपने पुष्पोंकी रज से केतकी बनको सुगन्धित कररही थी व श्वेत रंगधारण किये चन्द्रमाकी प्रभाके समान प्रकाशित दिखाई देती थीं चम्पा मौनश्री कचनार और पीलेपुष्पकी पियाबासा वा कटसरैया आदि १४४ अनेकवृक्ष जिस शोभायमान बनमें फूल रहे थे व जो बन कोकिलाओं के कूजने से व भ्रमरों के गूँजने से १४५ व अन्य मनोहर पक्षियोंसे युक्तहोनेसे सब ओर से नादितहोकर मनोरम हो रहाथा वहां एक क्रौञ्ची क्रौञ्च का जोड़ा अतिमनोहर कामबाणसे पीड़ित होकर १४६ परस्पर हर्षितहो बड़ी कोमलताके साथ छपटा हुआ क्रीड़ा कर रहाथा वहांपर मांसखानेके लोभी महानिर्दयी किसी एक व्याध ने आकर उन दोनोंमें से एक मनोहर पक्षी को १४७ मांस खानेके लोभसे किसी निर्दयीने मारडाला तब क्रौञ्ची अपने पतिको व्याध से मारेहुये देखकर दुःखित होकर १४८ व महादुःख युक्त शब्द बड़े ऊंचेस्वर से पुकारती हुई अत्यर्थ बिलाप करनेलगी तब कोपयुक्त होकर मुनिजीने क्रौञ्चके मारनेवाले उस निषादको १४९ पापनाशक व पुण्यदायक नदीके जलका आचमन करके शापदिया कि ॥ श्लोकः ॥ मानिषादप्रतिष्ठान्त्वमगमश्शाश्वतीस्समाः ॥ यत्क्रौञ्चपक्षिणोरेकमवधीःकाममोहितम् अर्थात् हे निषाद! जिससे कि तूने

इनक्रौञ्चपक्षियोंमें से काम से मोहित एक पुरुष पक्षीको मारडाला है इससे बहुत बर्षोंतक निरन्तर तू प्रतिष्ठाको न पावे तब अन्य ब्राह्मणों ने उसे आठ आठ अक्षरों के चारपादों से युक्त श्लोक छन्द जानकर १५० । १५१ हर्षितहो अच्छा २ कहतेहुये मुनिजीसे बोले कि हे स्वामिन् ! शापदेनेवाले आपके वाक्य में सरस्वतीने श्लोक बनादिया है १५२ यह अत्यन्त मोहनश्लोक उत्पन्नहुआ हे मुनि-सत्तम ! हे ब्राह्मणश्रेष्ठ ! तब मुनि प्रहृष्टात्मा हुये व उसीसमय अपने पुत्रोंसमेत ब्रह्माजी वहां आकर १५३ बाल्मीकिजी से बोले कि हे मुनीश्वर ! तुम धन्यहो क्योंकि तुम्हारे मुख में स्थितहोकर भारती श्लोकता को प्राप्तहुई १५४ इससे अब तुम मधुरअक्षर समेत रामायण श्लोकों मेंही बनाओ जिससे तुम्हारी बिमलकीर्त्ति कल्पपर्य्यन्त होगी १५५ क्योंकि पवित्रमुखमें रामनामसे युक्तबाणी धन्यहोतीहै व अन्य काम कथा मनुष्यों के मुख से निकलने से सूतककी अशुद्धताको प्रकट कराती है १५६ इससे तुम लोकमें विख्यात श्रीरामचन्द्रजी का चरित्र बनाओ जिससे कि पापियों के पापों की हानि पद २ पर होगी १५७ ऐसा कहकर सब देवोंसमेत ब्रह्माजी अन्तर्द्धान होगये तब मुनिने चिन्ताकी कि अब कैसे हम रामायण बनावें १५८ तब मुनि ने उसी नदी के मनोहरतीर पर ध्यानलगाया तब उनके मनमें ये मनोहर श्रीरामचन्द्रजी प्रकटहुये १५९ तब अपने हृदयमें नीलकमलदल श्याम राजीवलोचन श्रीरामचन्द्रजीको देखकर उनकी कृपासे उनका जितना चरित भूत भविष्यत व बर्त्तमानथा १६० फिर मुनि ने अत्यन्त हर्षितहोकर मनोरमपदोंसे युक्त बहुतप्रकारके छन्दोंसे रामायण बनाया १६१ हे पापरहित ! जिसरामायण में अतिरम्य छह काण्ड हैं बाल आरण्य किष्किन्धा सुन्दर १६२ युद्ध और उत्तर बस येही छह काण्ड उस रामायण में हैं इस रामायण के उन पुण्यकाण्डों को जो कोई मनुष्य सुने वह सब पापोंसे छूटजाय १६३ उस बालकाण्डमें राजाधिराज दशरथजी ने पुत्रेष्टियज्ञ में सन्तुष्टहोकर आयेहुये श्रीसनातनब्रह्म श्रीहरि से साक्षात्परब्रह्मरूप चारपुत्रपाये १६४ उनमें सबसे बड़े

श्रीरामचन्द्रजी विश्वामित्रके यज्ञ में जाय उसकी रक्षाकर जनकपुर में सीताजी का बिवाहकरके परशुरामको जीतकर अपनीपुरीमें आकर यौवराज्यपदवी को प्राप्तहोनेलगे १६५ परन्तु फिर अपनी सौतेलीमाता कैकेयी के कहने से वनको चलेगये वहां गंगाजी को उतरकर अपनी स्त्री सीता लक्ष्मण समेत चित्रकूटनाम पर्वतपर जाबसे १६६ तब उनके भाई नीति निधान भरतने अपने ज्येष्ठ भ्राताको बनमें सुनकर वहांकी यात्रा की परन्तु वहांसे उनको राज्यकराने के लिये न पाकर आप आकर नन्दिग्राम में बसे १६७ बस इतना बालकाण्डहुआ अब आगे आरण्यकाण्ड सुनो उसमें मुनियों के आश्रमोंपर का जाना व तहां तहां बास कहागया है १६८ फिर शूर्पणखा की नाक काटीगई और खरदूषणका बध हुआ फिर मायावीमारीच का बध व राक्षसराज से सीताजी का हरना १६९ फिर मनुष्यों के चरितको धारणकरके बिरहयुक्त होकर बनमें श्रीरामचन्द्रजी का भ्रमणकरना कहाहै फिर कबन्धको देखकर उसके बतायेहुये मार्गपर चलना है १७० हनुमान्‌जी से मुलाकातहुई बस यह आरण्यकाण्ड हुआ अब आगे संक्षेपरीति से कहेंगे १७१ सात तालके बृक्ष एकबाणसे काटेगये फिर अद्भुत बालीका बधहुआ फिर सुग्रीव के राज्यपाने व उनके गर्ब्बहोनेका वर्णनहै १७२ फिर लक्ष्मणजी द्वारा सुग्रीवको राज्यसे निकाल देने का सन्देश व फिर सीताजी के ढूंढ़ने के लिये बानर सेनाकाभेजना १७३ फिर सम्पाति गृध्रका देखना समुद्रका लांघना व समुद्र के उसपार हनुमान्‌का पहुंचजाना बस इतना किष्किंधाकाण्डहै १७४ अब सुन्दरकाण्ड सुनो जिसमें अद्भुत श्रीरामचन्द्रजी की कथा है प्रतिगृहमें बानर का घूमना व नानाप्रकारके आश्चर्य्योंका देखना १७५ फिर वहां सीताजी का देखना और जानकीजी और हनुमान्‌जी की बार्त्ता व फिर बन भंगकरने के कारण कोपकरके राक्षसों से हनुमान् का बन्धन १७६ फिर लंकाका दाहकरना व लौटकर फिर बानरों से मिलना फिर रामचन्द्रजी को जानकीजी का चूड़ामणि देना व सैन्यका लंकापर चढ़ना १७७ समुद्र में सेतु बांधना व

शुकसारण नाम दो दूतोंका आना यह सुन्दरकाण्ड कहा युद्धकाण्ड में बड़े समरके पीछे सीताजी का मिलना है १७८ फिर उत्तर में ऋषियों का सम्बाद और यज्ञका प्रारम्भहै वहां फिर सुननेवालों के पापोंके नाशकरनेवाली अनेक श्रीरामचन्द्रजी की कथायेंहैं १७९ ॥

चौ० । इमिषटकाण्डकहाहमनीके । द्विजहत्यानाशकअतिठीके ॥
पर संक्षेप रीतिसों गावा । परम मनोहर तुम्हें सुनावा १ । १८० ॥
चौबिससहस पद्ययुतयेहू । अरुक्षाकाण्डसहितकरिनेहू ॥
कथितमहापातकचयनाशन । यहरामायणनामप्रकाशन २ । १८१ ॥
सोरामायणसुनिश्रीरामा । निजमनधरिसुतअतिअभिरामा ॥
करिपरिरंभणअतिदृढ़रीती । जनकसुताहिसुमिखहुकरिप्रीती ३ । १८२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेरामायणगानंनाम षट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥

सरसठवां अध्याय ॥

दो० । सरसठयेंमहँ लषनसँग सीतापुरमहँ आय ॥
सबनमिलींत्यहिसंग मख रामकीनहरषाय १
मखहयरघुपतिकरकुअत सुरह्वैकहिनिजवृत्त ॥
हरिपदगोमुनिवचनसुर मखआयेयुतनृत्त २

शेषनाग वात्स्यायनमुनिसे बोले कि लक्ष्मणजी जानकीजी के समीप पहुँचकर बारम्बार प्रणाम करके प्रेमके कारण गद्गद्-बाणीसे श्रीरामचन्द्रजी की कहीहुई बाणीको कहतेहुये बोले १ व सीताजी विनययुक्त लक्ष्मणजी को आयेहुये देखकर व उनकेमुख से श्रीरामचन्द्रजी का सन्देश सुनकर लज्जितहो उन से बोलीं २ हे लक्ष्मण! हम कैसेचलें प्रथम तो इस महावन में श्रीरामचन्द्रजी करके छोड़ीगईं इससे अब श्रीरामचन्द्रजी का स्मरणकरती हुई वाल्मीकिजी के आश्रमहीपर रहतीहैं ३ उनके मुखके कहेहुये वाक्यको सुनकर लक्ष्मणजी बोले कि हे मातः! हे पतिव्रते! रामचन्द्र जी ने बार२ तुमको बुलाया है ४ व पतिव्रतापतिके कियेहुये दोषको हृदयमें नहींलातीं इससे आओ हमारेसाथ उत्तम रथपर चढ़ो ५ इत्यादि लक्ष्मणके बहुत बचन सुनकर पतिदेवता जानकीजी मन

के रोषको छोड़ लक्ष्मणके साथ रथपर आरूढ़ हुईं ६ व सब ताप-
सियोंके व वेदोंके धुरन्धर सब मुनियोंके नमस्कारकरके और मनसे
रामचन्द्रजीका स्मरणकरतीहुई रथपर स्थितहो अयोध्यापुरीको चलीं
७ व क्रमसे आते २ महामोल के आभरणोंसे युक्त अयोध्या नगरी
को प्राप्तहुई फिर सरयूनदीके तीरपरपहुँचीं जहां कि श्रीरामचन्द्रजी
आप बिराजमान थे ८ लक्ष्मणके साथ रथपरसे उतरकर परमल-
लित पातिव्रत में परायण श्रीसीताजी रामचन्द्रजी के चरणों पर
लगीं ९ रामचन्द्रजी ने उनको आईहुई देखकर कहा कि हे साध्वि!
अब तुम्हारे साथ यज्ञ समाप्त करेंगे १० तब वे बाल्मीकिजी के
नमस्कारकरके व और सब प्रिय सत्तमोंके भी नमस्कारकरके माता
के चरणोंके नमस्कार करनेमें उत्सुकहो वहांको गईं ११ कौसल्या
जी बीरपुत्रोंके उत्पन्न करनेवाली परमप्रिय जानकीजी को आईहुई
देखकर आशीर्वादसे युक्तकरके अनेकप्रकार के हर्षकोप्राप्तहुईं १२
फिर बैदेहीजी को अपने चरणोंके नमस्कार करतीहुई देखकर कैके-
यीजीने यह आशीर्वाददिया कि पति और पुत्रोंसहित बहुतकाल
तक जीतीरहो १३ व सुमित्राजी ने पुत्रवती जानकीजी को अपने
चरणों में झुकीहुई देखकर उनको पुत्र पौत्र देनेवाली आशिषा दी
१४ व और सबों के नमस्कार करके और बहुतों से नमस्कार पाकर
श्रीरामभद्रजी की परमप्रिया पतिव्रता शिरोमणि सीताजी अत्यन्त
हर्षित हुईं हे बिप्र! १५ तब श्रीरामचन्द्रजी की धर्म्मपत्नी को आ-
ईहुई देखकर अगस्त्यजी ने व बशिष्ठजी ने सुवर्णकी पत्नीका धि-
क्कारकरके कि जिसके संग सीताजी के वहां न होनेके कारण ग्रन्थि-
बन्धन हुआथा उन धर्म्मचारिणी सीताजी के संग ग्रन्थिबन्धन
करदिया १६ उन सीताजी के साथ श्रीरामचन्द्रजी यज्ञके बीचमें
ताराकेसाथ शोभित शरद्कालके प्रकाशित चन्द्रमाके समान शो-
भितहुये १७ फिर मनोरम समय आनेपर उन धर्म्मचारिणी सीता
जी के साथ सबपाप दूरकरनेवाले यज्ञके प्रयोगका प्रारम्भ श्रीराम-
चन्द्रजी करनेलगे १८ सीताजी के सङ्ग श्रीरामचन्द्रजी को यज्ञकर्म्म
करने में उद्यतदेख सबलोग एक कौतुकके साथ अत्यन्त हर्षितहुये

१९ जब प्रायः सब यज्ञकर्म्म होगये तो श्रीरामचन्द्रजी ने सुन्दर मतिवाले वशिष्ठजी से पूँछा कि हे स्वामिन्! अब इसके पीछे हमको क्या कर्त्तव्यहै २० रामचन्द्रजी के वचन सुनकर महामति गुरुजी बोले कि अब ब्राह्मणों की ऐसी पूजायें करनी चाहिये जिनसे उनका सन्तोषहोवे २१ जैसे कि पूर्व्वकाल में राजा मरुत्तने सब सामग्री समेत यज्ञकियाथा जिसमें नानाप्रकारके धनादिकों से उससमय ब्राह्मणलोग सन्तुष्टहुये थे २२ यहांतक अत्यन्त धन राजानेदिया कि ब्राह्मणलोग उसे लेही न जासके धनका भार जब न सहसके तो हिमवान्पर्व्वतके समीप उन्होंने फेंकदिया २३ इससे हे नृपसत्तम! तुमभी तो राजाओं में अग्रगण्यहो ब्राह्मणोंको ऐसा दानदेओ जिससे उनकी उत्तम प्रीतिहो २४ इतना सुनकर राजाओं में सबसे प्रथम गणना करनेकेयोग्य श्रीराघवजी ने सबसे प्रथम ब्रह्माजी के पुत्र फिर घटसे उत्पन्नहुये वशिष्ठजीको पूज्य मानकर प्रथम उन्हींकी पूजा २५ अनेक रत्नों के सम्भारों से व अनेक सुवर्ण की सामग्रियों से व जनों से परिपूर्ण अत्यन्त प्रीतिदायक देशों से की २६ फिर वैसेही विविधप्रकारके रत्नों सुवर्णों व जनोंसे पूर्ण देशों से पत्नीसहित अगस्त्यजी की मनोहर बड़ीभारी पूजाकी २७ फिर उसीप्रकार सत्यवती के पुत्र व्यासजी की पूजाकी व फिर भार्य्यासहित च्यवनमुनि की पूजा बहुत रत्नादिकोंसे की २८ फिर अन्य सब तपस्याओं के निधि मुनिलोगों की व सब ऋत्विजों की बड़ी पूजाकी सबोंकी पूजा अनेक सुवर्ण व रत्नों के भारों से महाराजने की २९ इसकेपीछे महाराजाधिराज श्रीरघुराजजी ने भूयसी दक्षिणा जितने ब्राह्मण यज्ञमें आयेथे सबको लक्ष २ सुवर्ण मुद्राकी प्रत्येक को बांटी ३० फिर ब्राह्मणोंको छोड़ अन्य जिसी किसी वर्ण के दीन अन्धे लूले पँगुले कृपणथे उनको अनेकरत्न सुवर्णादि जिसका जिस पदार्थ से सन्तोषहुआ उसको वही दिया ३१ नानाप्रकारके विचित्र वस्त्र व नानाप्रकारके मधुर कोमल भोजन वहांपर शास्त्रकीरीति से उसको वही दिया जो जिसको सन्तोष कारकथा ३२ इसलिये क्या स्त्री क्या पुरुष क्या बालक क्या वृद्ध जो कोई उस यज्ञमें आयेथे सब वर्णके

सबलोग अत्यन्त हृष्टपुष्टहुये ३३ इसरीति से उस महायज्ञमें दीनादिकों को भी अत्यन्त दान देतेहुये श्रीरामचन्द्रजी को देखकर बसिष्ठजी अत्यन्त प्रसन्नहुये ३४ और मुनिराज ने अश्वके स्नान करानेकेलिये जललानेको स्त्री सहित चौंसठ राजाओंको बुलाया ३५ उनमें श्रीरामचन्द्रजी महाराज आप सीताजीकेसङ्ग अमृतोपम जल लेनेको सुवर्णका सब शोभासे शोभित कलश हाथमें लेकरचले ३६ ऐसेही लक्ष्मणजी उर्म्मिलानाम अपनी स्त्रीकेसाथ व भरत माण्डवी के साथ शत्रुघ्न श्रुतिकीर्त्तिकेसङ्ग व पुष्कल कान्तिमती के साथ ३७ सुबाहु सत्यवतीकेसङ्ग सत्यवान् वीरभूषाके साथ सुदम सत्कीर्त्तिके सङ्ग विमल राजा राज्ञीकेसाथ ३८ व राजा वीरमणि अतिमनोहरी श्रुतवतीकेसङ्ग लक्ष्मीनिधि कोमलाकेसङ्ग रिपुताप अङ्गसेनाके ३९ बिभीषण महामूर्त्ति के प्रतापाग्र्य प्रतीताके उग्राश्व कामगामाके व नीलरत्न अधिरम्याके साथचले ४० राजा सुरथ सुमनोहारी के सुग्रीव मोहनाके साथ इत्यादि सब सस्त्रीक राजाओंको बसिष्ठमुनि ने आज्ञादी ४१ व बसिष्ठजी भी पुण्य जलोंसे भरीहुई सरयूजीकेतीरपर पहुँचे व उन वेदज्ञमुनि ने वेदमन्त्र से जलको अभिमन्त्रित किया ४२ अभिमन्त्रित करने के पीछे फिर मुनिने जलकी प्रार्थनाकी कि हेजल ! अपने मनोहर उदक से सबलोकों के मुख्य रक्षक श्रीरामचन्द्रजी के यज्ञके अर्थ स्थापित इस घोड़ेको पवित्रकरो ४३ इस प्रकार मुनि के अभिमन्त्रित कियेहुये जलको श्रीरामचन्द्र आदि सब राजालोग सुवर्णके घड़ोंमें भर २ कर यज्ञमण्डपको लाये ४४ फिर उन चौंसठकलशों के जलों से दुग्ध के समान श्वेत वर्ण के उसघोड़े को स्नान कराकर बसिष्ठजी ने श्रीरामचन्द्रजी के हाथ से घोड़ेका स्पर्शकराया व उनसे फिर यह मन्त्र पढ़वाया ४५ ॥

दो० । यहि द्विजवर्य्य समाज महँ हय मुहिं करहुपुनीत ॥
तवमखसों सब देवगण तोषि लहहीं ईत १ । ४६

ऐसाकहकर सीतासहित श्रीरामचन्द्रजी ने उसघोड़ेका स्पर्श किया तब सब ब्राह्मणोंने बड़े कुतूहलके साथ आश्चर्य्यमाना ४७ व सब आपस में बोले कि जिन श्रीरामचन्द्रजी के नाम के स्मरण

मात्र से मनुष्य सब पापोंसे छूटतेहैं वे श्रीराघवजी यह क्याकहते हैं कि हे अश्व! हमको पवित्र करो यह तो बड़े आश्चर्य्य की बात है ४८ जब रामचन्द्रजी ने उस अश्वसे ऐसा कहा तो वसिष्ठजी ने खड्ग अभिमन्त्रित करके श्रीरामभद्र के करमें देदिया ४९ व जैसेही राघवजी ने खड्गलेकर उस के शिरमें किञ्चिन्मात्र स्पर्शकराया कि उस महायज्ञमें वह तुरन्त पशुशरीर छोड़कर दिव्यरूप होगया ५० व एक दिव्य विमानपर जाचढ़ा वहां सब अप्सरालोग उसके चामर डुलाने लगीं वैजयन्ती माला उसको धारण करनेको मिली ५१ तब अश्वत्वकोछोड़ दिव्यरूप धारण किये उस पुरुषको देखकर उस यज्ञमें सबलोग बहुत विस्मितहुये ५२ तब यद्यपि आप अच्छे प्रकार जानतेथे परन्तु सबलोगों को जनातेहुये परमधर्म्मात्मा श्रीरामचन्द्रजीने दिव्यरूपमें टिकेहुये उस देवपुरुषसे पूंछा कि ५३ दिव्य शरीर पायेहुये तुमकौनहो व तुम अश्व कैसेहोगये थे अब देवस्त्रियों समेत कैसे होगये व अब क्याकरना चाहतेहो हमसे कहो ५४ श्रीरामचन्द्रजी का वचन सुनकर वह देव हँसताहुआ सबलोगों के मनोंको हरनेवाली बाणीको धारणकिये श्रीराघवेन्द्रजी से बोला कि ५५ बाहर भीतर सबकहीं विद्यमान आपको कुछभी अज्ञात नहीं इससे इसे भी जानतेहो तथापि पूंछतेहुये आपसे सब जैसाका तैसा कहते हैं ५६ हे श्रीरामचन्द्रजी! मैं पूर्ब्बजन्म में परमधार्मिक एक ब्राह्मण था परन्तु हे रिपुतापन! मैंने वेदके विरुद्ध कर्म्मकिया ५७ एक समय पापोंको कँपानेवाली सरयूनदी के तीरपर मैं गया जोकि अनेक वृक्षों से सुललित और मनोहरथा ५८ वहां स्नान करके पितरों को तृप्त करके व विधिपूर्ब्बक दानदेकर फिर वेदमें लिखीहुई रीतिसे आपकाध्यान वहां बैठकर करनेलगा ५९ तब हे महाराज! वहां बहुतसे लोग आये उन के छलने के लिये दम्भसे मैंने मौन व्रत धारण करलिया ६० अनेकयज्ञोंकी सामग्री से मेरा अँगनाभर गया व नाना प्रकारके वस्त्रों से व चषालादिकों से पूरितहोगया ६१ व अग्निहोत्रकरनेका धूम आकाशतक पहुँचा व मेराशरीर अत्यन्त चित्र विचित्र होगया ६२ व मैं अनेक प्रकारके तिलक श्री लगाकर

हाथ में कुशधारण करके पाखण्डमूर्तिधारण करके बैठेरहनेलगा ६३ ये सब कर्म्म लोगों के ठगनेही के लिये करताथा कुछ सत्य २ नहीं सो इसीप्रकार मैं एक दिन बैठाथा कि अपनी इच्छासे पृथ्वीपर्यटन करतेहुये दुर्वासाजी वहीं सरयूजीकेतटपर मेरेस्थानपर आगये ६४ व मुझको दम्भसे मौनव्रत धारण कियेहुये उन्हों ने देखा न तो मैंने अर्घ्य पाद्यादि कुछ उनको दिया न आगत स्वागतका बचन ही कहा ६५ मुझे ऐसा देखकर पूर्णमासीके दिनके समुद्रहीके समान क्रुद्धहोकर उमड़े व मुझ दम्भीको उन महामतिने कठिन शापदिया ६६ कि जिससे कि तू सरयूकेतीरपर बैठकर दम्भकररहाहै इससे हे तापमाधम! जाकर पशुत्वको प्राप्तहो ६७ ऐसामुनिकादिया शापसुनकर मैं बहुत दुःखीहुआ और दुर्वासामुनिकेचरण उठकर मैंने पकड़ लिये ६८ तब हे श्रीराम! मुनि ने मेरेऊपर अनुग्रहकरके कहा कि अच्छा अब राजाधिराज श्रीरामचन्द्रजी के यज्ञकाघोड़ा जाकरहो हे तापस! ६९ पीछेसे उनकेहाथके स्पर्शहोनेसे मनोहर दिव्यशरीर धारणकरके दम्भसेरहितहोकर उनकेदिव्यपरमपदको चलाजायगा ७० उन्हों ने शापभी दिया परन्तु मेरे लिये अनुग्रहहोगया क्योंकि मुझको आपके मनोहर करकमलका स्पर्शहुआ ७१ जोकि हे रामचन्द्रजी! देवादिकोंको बहुत जन्मों में भी दुर्ल्लभहै सो वह आपके करकमलका स्पर्श मैंनेपाया ७२ अब हे महाराज! आज्ञा दीजिये जिससे कि आपके प्रसादसे मैं अब महान्होकर दुःखादि वर्जित आपके निरन्तर सदा विद्यमान परमपदको जाऊं ७३ जहां न तो शोकरहताहै न जरा न मृत्यु न कालका विभ्रम सो अब हे नराधिप! उस आपके दिव्यलोकको जाऊँ ७४ इतना कहकर श्रीरामचन्द्रजी की प्रदक्षिणा करके अनेक रत्नों से बनेहुये व देवताओं से बन्दित विमानपर फिर जाकर चढ़ा ७५ व रामचन्द्रजी के चरणों के प्रसाद से शोक मोहरहित वहाँ पहुँचकर फिर कभी लौटने से वर्ज्जित निरन्तर विद्यमान परमस्थानको वह चलागया ७६ उसकेमुखसे ऐसे वचन सुनकर श्रीरामचन्द्रजी को छोड़ अन्य सबजन विस्मय को प्राप्तहुये व परस्पर एक दूसरेकीओर देखनेलगे ७७ हे विप्र! सुनो

जो कोई दम्भसे भी श्रीहरिका स्मरण करताहै तो उसे वे मोक्षदेते हैं फिर जो दम्भरहित कोई स्मरणकरे तो क्याबात है ७८ इससे जैसे कैसे श्रीरामचन्द्रजीका स्मरण करना चाहिये जिससे कि देवादिकों को भी दुर्ल्लभ परमपदको स्मरण करनेवाला पाताहै ७९ उस आ-श्चर्य्यको देखकर मुनिलोगों ने अपनेको कृतार्थमाना क्योंकि वे लोग तो रामचन्द्रजी के दर्शन व उनके करके स्पर्शसे पवित्रही होरहेथे ८० जब वह अश्वका रूप धारणकियेहुये पूर्व्वजन्मका ब्राह्मण देवरूप होकर श्रीरामचन्द्रजी के दिव्यलोकको चलागया तब रामचन्द्रजी वेदविद्या जाननेवालों में उत्तम तपोनिधि सब मुनियों से बोले कि ८१ हे ब्राह्मणो ! अब हमको क्याकरना चाहिये घोड़ा तो नष्टहोकर सुखसे चलागया अब आगे होनेवाला सब देवताओं को तृप्त क-रानेवाला होम कैसेहोगा ८२ ॥

चौ० । यथा सुरस सुरतृप्तिसुहोई । जिमि ममसखउत्तमविधि जोई ॥
तिमिसबमुनिजनकरहुउपाई । जिमि विधियुतमखकर्म्मसुहाई १ । ८३
सुनि यहवचन बसिष्ठमुनीशा । सकल देवमन विज्ञमतीशा ॥
बोलेवचन महामुनि ज्ञानी । धर्म्मकर्म्म ज्ञाता वखानी २ । ८४
बहु कर्प्पूर मँगावहु आसू । जासों देव लहैं शुभ बासू ॥
स्वाहिलहिसुरममवचनप्रप्रेरित । गहिहहिंभागसुनतममटेरित ३ । ८५
सुनि इमि वचन कपूर बहूता । राममँगायहु जो अतिपूता ॥
देवप्रीतिकारक शुभगन्धा । आयहु त्वरितहि होत प्रबन्धा ४ । ८६
तब प्रसन्नह्वै मुनि विज्ञानी । देवअवाहन कीन सुबानी ॥
निज परिवारसहित सबदेवा । आये त्वरित तहाँ तजिभेवा ५ । ८७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेयज्ञप्रारम्भोनाम सप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७ ॥

अड़सठवां अध्याय ॥

दो० । अड़सठयेंमहँ पूर्णहुति करि अवभृथ असनान ॥
कीनसपरिजन नृपनयुत श्रीरघुनाथ महान १
सकल बिदाह्वैकै गये भूपति निज २ धाम ॥
दशअवतारनके जनम कहे शेष अतिबाम २

शेषनाग वात्स्यायनमुनि से बोले कि इन्द्र वहां श्रीरामचन्द्रजी की देखीहुई अतिमधुर व शुद्धखीर भोजनकरके यज्ञमें सब देवोंसमेत तृप्तिको न प्राप्तहुये १ ऐसेही श्रीनारायण महादेव चारमुखके ब्रह्मा वरुण कुबेर व अन्य सब लोकपाल २ बसिष्ठजीकी बनाईहुई अतिस्वादुयुक्त हवि भोजनकरके न तृप्तहुये जैसे कि क्षुधासे पीड़ित ब्राह्मणलोग भोजनसे नहीं तृप्तहोते प्रेमसे खातेही चलेजाते हैं ३ इसप्रकार सब देवताओंको हव्यसे तृप्तकरके करुणानिधि श्रीरामचन्द्रजी ने वसिष्ठजीकी प्रेरणासे जो कर्त्तव्य था सबकुछ आदरपूर्व्वक किया ४ इसप्रकार ब्राह्मणलोग दासनसे सन्तुष्ट होकर श्रेष्ठ देवलोग हव्यसे सन्तुष्टहोकर व सबतृप्तहो हो कर अपना २ भाग लेकर अपने२ स्थानोंकोगये ५ व होताआदि चार ब्राह्मणोंको चारों दिशाओंका राज्यदेदिया तब उन ब्राह्मणों ने सन्तुष्ट होकर श्रीरामचन्द्रजीको असंख्य आशीर्व्वाददिये ६ तदनन्तर पूर्णाहुति करके बशिष्ठजी ने सुभग स्त्रियोंसे कहा कि यज्ञमूर्त्तिकारी श्रीरामचन्द्रजी को अक्षतादिकोंसे बर्द्धितकरो ७ उस वचनको सुनकर उनसब स्त्रियों ने लाई लेकर सुन्दरता से कन्दर्प्प को भी जीतेहुये व महामणियों से विभूषित श्रीराघवेन्द्रजी के ऊपरछोड़ा ८ तब बसिष्ठजी ने अवभृथ स्नानके लिये श्रीरामचन्द्रजीको प्रेरणाकिया तब अपने सब लोगोंकेसङ्ग सरयूजी के उत्तमतीरपरको गये ९ अनेककोटि पैदर राजाओंके साथ आपभी पैदरही नानापक्षियों से सेवित नदियों में श्रेष्ठ सरयूजीपर पहुँचे १० जैसे चन्द्रमा सब अश्विन्यादि अपनी भार्य्यादि ताराओं से शोभितहोताहै वैसेही उत्तम प्रभासेयुक्त श्रीरामचन्द्रजी सब राजाओंसे शोभितहुये ११ इस उत्सवको जानकर सबलोग बड़ेवेगसे वहाँआये व सीतापतिजी के दर्शनकरनेमें निश्चलीभूत लोचनहुये औरओर का देखनाही भूलगये १२ बहुत दिनोंसे दर्शनकी लालसा कियेहुये लोग सीताजीकेसङ्ग सरयूजीपर जातेहुये देखकर अतिहर्षितहुये १३ व सबलोगोंसे नमस्कार किये गये महाराजाधिराजके पीछे २ अनेकनट व गन्धर्व्वलोग उज्ज्वल यश गाते चलेजाते थे १४ व नाचनेवाली वेश्यादि नाचती हुई व

यतिनके मनको चलायमान करातीहुई सबके ऊपर पिचकारियों से जलके फुहारे छोड़तीहुई श्रीरामचन्द्रजीको अत्यन्त भिगोती चली जातीथीं १५ व फिर वेलोग हरिद्रा कुंकुमादि महाराजाके अङ्गों में दौड़ २ कर लगातीहुई व परस्पर भी एक दूसरेके लगातीहुई अति हर्षकोपाती चलीजातीथीं १६ व सब नाचनेवालियोंने दोनोंकुचोंके ऊपर मोतियोंके हारके लटकानेसे शोभित व दोनों कानों में सुवर्ण के कुण्डलोंसे अतिशोभित होकर १७ अनेक नर नारियोंसेयुक्त मार्गको अत्यन्त सङ्कीर्ण करदियाथा इसप्रकार कल्याणदायक पुण्यजलसे भरीहुई सरयूजीपर सबजापहुँचे १८ वहां जाकर श्रीजानकीजी के सङ्ग श्रीरामचन्द्रजी बसिष्ठादि मुनियों के साथ धीरे २ पुण्यजलके भीतरपैठे १९ फिर लोगोंसे वन्दित व श्रीरामचन्द्रजी के चरणोंकी रजसे अत्यन्त पवित्र उसजलमें पीछेसे सब राजालोग पैठे व उनकेपीछे अन्य सब साधारण लोगपैठे २० व पिचकारियोंसे परस्पर जलसबों के अङ्गोंपर सब छोड़नेलगे इसकारण सबों के नेत्र अरुणहोगये व सबोंने अपने मनसे अधिक हर्षपाया २१ सीताजी के सङ्ग श्रीरामचन्द्रजी बहुत समयतक स्नानकरके व जलके कल्लोलों में क्रीड़ाकरके धर्म्मसंयुत जलके बाहर निकले २२ ॥

हरिगीतिका ॥

सुदुकूल अतिअनुकूल कुण्डल मुकुट केयूरराजई ।
वरकर सुकङ्कण अतिशुभम्मण जटिल मणिगण भ्राजई ॥
कन्दर्प दर्प अदर्पकारक परम श्रीसों शोभई ।
नृपनिकर सेवित राम सब सुखधाम जनमन लोभई ॥ १ । २३
इमि यागयूप अनूपरूप सुवर्णसों रचिकै भले ।
सरयूसुतीर पुनीतनीर प्रसन्न मन ह्वै निर्म्मले ॥
त्रैलोक्य श्रीरघुराजराजधिराज निज करसों लही ।
औरन सुदुर्लभ पाय बहुविधि मुदितभे मनमें सही २ । २४

इसप्रकार श्रीजानकीजीकेसङ्ग तीन अश्वमेधकरके श्रीरामचन्द्रजी ने तीनोंलोकोंमें देवताओंकोभी दुर्लभ अतुलकीर्त्तिकोपाया ३ । २५

चौ० । रामकथा पूँछ्यहु जो ताता । तुमसन हमवर्णी शुभदाता ॥

अश्वमेध करिकै विस्तारा । कहा अपरका पूँछहु प्यारा १ । २६
जे करि हरिकी भक्ति पुनीता । रामचन्द्र सम्मुख सु विनीता ॥
सुनहिं ब्रह्महत्या क्षणमाहीं । खोय निरन्तर ब्रह्महिं जाहीं २ । २७
असुत लहै बहु पुत्र विनीता । निर्द्धन धनपावै सुपुनीता ॥
रोगीहोय रोगसों हीना । बन्धनगत निर्बन्ध प्रवीना ३ । २८
जासु कथासुनि श्वपचहु पावै । तासु परमपद निज मनभावै ॥
रामभक्तिरत जो नर होई । कहै तासु फल किमि बुधकोई ४ । २९
रामसुमिरि पापिष्ठ अघखोई । परपद लहत तनिक नहिं गोई ॥
जो पद दुर्ल्लभ सब सुरकाहीं । पावत सो पामर शक नाहीं ५ । ३०
जे सुमिरहिं रघुनाथहि प्राणी । ते अतिधन्य मृषा नहिं बाणी ॥
वे तरि भवसागर क्षणमाहीं । जाहिं परमपद संशय नाहीं ६ । ३१
प्रत्यक्षर द्विज हत्याहारी । यामहँ जो सब लिखे करारी ॥
तिन्हैं सुनावत जो मतिधीरा । गुरुसमान पूजहु त्यहि बीरा ७ । ३२
सुनिकै कथा वाचकहि देहू । युगल धेनु यहतुम सुनिलेहू ॥
भूषण वस्त्र विभूषित कैकै । पत्नीयुतहि सुपूजहु नैकै ८ । ३३
सीतारामभूर्त्ति दुइ नीकी । स्वर्ण विनिर्मित सब विधि ठीकी ॥
कुण्डलकटकमुद्रिकाराजित । अन्यबिभूषणयुतअतिभ्राजित ९ । ३४
करि वाचक द्विज कहँ जो देई । सुनहु विप्र सो बहुफल लेई ॥
तासु देव अरुपितर सदाहीं । बसैंजाय हरिपुर शकनाहीं १० । ३५
तुम पूंछी रघुनायक गाथा । सो हमकही सुन्यहु मुनिनाथा ॥
अबका कहीअपरतवआगे । विप्रकहहुसो अतिअनुरागे ११ । ३६
जे यह कथा सुनहिं मनलाई । द्विजहत्या नाशिनि जो गाई ॥
ते सुरदुर्ल्लभ परपदजाहीं । यामहँ द्विजवर संशय नाहीं १२ । ३७
गोघाती सुतघाती पापी । गुरुतल्पग अरु जौन सुरापी ॥
क्षणमहँ होतपुनीत न शङ्का । कहतविप्रदैकै हम डङ्का १३ । ३८

इति श्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेश्रवणपठनपुण्यवर्णनन्नामा
षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६८ ॥

उनहत्तरवां अध्याय ॥

दो० । उनहत्तरयें सों कहत वृन्दाबन माहात्म्य ॥

अस्सीके अध्यायलग जासों कृष्णतदात्म्य १
तहँ उनहत्तरयें महें द्वादशबन प्रस्ताव ॥
षोड़शदलमाथुरविषय कहि कर्णिकाबताव २
कृष्णपरत्वबखानकिय बहुत प्रमाण लखाय ॥
अरुराधिकामहात्म्यकछुकह्योनहींअधिकाय ३

ऋषियोंने सूतजी से प्रश्नकिया कि हे महाभाग! तुमसे रामाश्वमेध हमने अच्छे प्रकारसे सुना अब इससमयमें महात्मा श्रीकृष्णचन्द्र जी का माहात्म्य कहो १ प्रश्नसुनकरके सूतने ८८ हजार ऋषियों से कहाकि हे मुनिसिंहो! जोपार्बतीजी ने महादेवजीसे पूंछा है वह महात्मा श्रीकृष्णजीका चरित्र अमृतरूप हम तुमसे कहते हैं २ एक समय पार्बती सन्देहयुक्त मन करके व नम्रता से प्रणाम करके यह वचन कहती भयीं ३ पार्व्वतीजी ने महादेवजी से पूँछा कि अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड हैं व उनके बाहर भीतर बहुतसे स्थान हैं परन्तु उनमें विष्णुका स्थान जो सबोंसे प्रधान उत्तम व श्रेष्ठहो ४ व उससेपरप्रिय स्थान अतिमनोरम कृष्णचन्द्रजीको अन्य नहो वह सब हम सुना चाहतीहैं हे महाप्रभुजी! कहो ५ ईश्वरजी बोले कि सबगुप्तस्थानोंसे परम गुप्ततम व परम आनन्द करनेवाला अतिअद्भुत व सब रहस्योंका रहस्य परम श्रेष्ठ ६ व दुर्लभों में परमदुर्लभ परममोहन सर्ब शक्तिमय व सब स्थानोंमें गुप्तरखने के योग्य हे देवि ! ७ व सत्त्वगुणी स्थानों के शिरों के ऊपर रहनेवाला विष्णु भगवान् का अत्यन्तदुर्लभ ब्रह्माण्ड के ऊपर स्थित नित्य रहनेवाला वृन्दाबन नाम स्थान है ८ वह पूर्णब्रह्मके सुख व ऐश्वर्य्य से युक्त नित्य आनन्ददायक नाशरहित है व बैकुण्ठआदि स्थान उस के अंश के अंशहैं व वही अपने अंशसे भूतलपरभी बृन्दाबनहीके नाम से प्रसिद्ध है ९ व गोलोकका जो ऐश्वर्य्य है उस से भूतलपरका सब गोकुल प्रतिष्ठित है व वैकुण्ठादि लोकोंका जो बैभवहै उस से द्वारकापुरी प्रकाशितहै १० व जो ब्रह्मका परम ऐश्वर्यहै वह बृन्दाबन के नित्य आश्रय रहता है वह कृष्णचन्द्रका धाम बनों के मध्य में विशेष है ११ इससे प्रथम तो तीनोंलोकों के बीचमें पृथ्वी सबोंसे

धन्य है क्योंकि उस में विष्णु भगवान्को अत्यन्तप्रिय माथुर देश है १२ उस माथुरदेश में भी जिसका मधुबन नामहै वह विष्णुको अधिक प्रियहै उस में भी उस के बीच में विविधप्रकार के अतिगुप्त स्थान स्थितहैं १३ यह माथुरमण्डल सहस्रदल कमल के आकार काहै इस अद्भुत धामके ऊपर सदा विष्णुका सुदर्शनचक्र फिरता रहताहै १४ व उस कमलकी कर्णिका व पत्रोंका विस्तार बड़ाहै व उन के बीच २ में रहस्य स्थानहैं परन्तु उस माथुर देशभरमें १२ बन प्रधानहैं उनका माहात्म्य इस क्रमसे कहागया है व नाम इस क्रमसे हैं १५ भद्रबन १ श्रीबन २ लौहबन ३ भाण्डीरबन ४ महाबन ५ तालबन ६ खदिरबन ७ बकुलबन ८ कुमुदबन ९ काम्यबन १० मधुबन ११ व वृन्दाबन १२-१६ ये बारहबन हैं उनमें सात यमुनाजीके पश्चिमतटपर हैं व पांच यमुनाकी पूर्वओर हैं उनमें भी तीनबन अत्यन्त गुप्त व उत्तमहैं १७ एक गोकुलमें महाबन दूसरा मथुरामें मधुबन व तीसरा वृन्दावन अन्य उपबनहैं पर उनमेंभी कृष्ण चन्द्रजीकी क्रीड़ारसके स्थानहैं १८ व इन बारहको छोड़कर और भी बहुतसे उपवन हैं जैसे कि कदम्बबन-खण्डकबन-नन्दबन नन्दीश्वरबन-नन्दनन्दनखण्डबन-पलाशबन -अशोकबन-केतकीबन १९ सुगन्धिमादनबन- केलिबन- अमृतभोजनस्थल सुखप्रसाधनबन बत्सहरणबन- शेषशायिकबन- २० श्यामपूर्य-उदधिग्राम- बक्रबन भानुपुर- संकेतद्विपद- बालक्रीड़- धूसर २१ कैमद्रुम- सुललित -उत्सुकबन -नानाविधरसक्रीड़ाबन- नानालीलारसस्थल २२ नगबिस्तारबिष्टम्भ-रहस्यद्रुम इत्यादि सब उपबनहैं व गोकुल सहस्रदल कमलपर परमउत्तम स्थानहै २३ उसीकमलकी सब कर्णिकाओंपर गोविन्दजीके उत्तम २ स्थान बने हैं व मध्यमें मुख्य गोकुलस्थान है उसमें मणियोंका मण्डपहै उसके मध्यमें सुवर्णका सिंहासन विराजमानहै २४ व सब कर्णिकाओंकी चारोंदिशाओं में व चारोंउपदिशाओं में एक२ पत्रलगेहैं उनमें जो दलकर्णिकाकी दक्षिण ओरहै वह परमउत्तमहै २५ उसदलपर महासिंहासन है जोकि चारवेद छ शास्त्रोंको भी बहुतदुर्लभहै व योगीन्द्रोंको भी बड़े दुःखसे पहुँचने

के योग्यहै क्योंकि वह दल गोकुलकासर्व्वांतमाहै २६ दूसरादल आ-
ग्नेय कोणमें है उसका रहस्यदलहै संकेत द्विपद दो कुटी तिस कुलमें
स्थितहै २७ व तीसरा दल उत्तम प्रधानस्थान पूर्व्वदिशा में ये दोनों
स्पर्शकरने से गङ्गादि सब तीर्थोंसे सौगुनाफल देते हैं २८ व चौथा
दल ईशान कोणमें है यह स्थान सिद्धपीठ है व उस पत्रपर व्यायाम
कियेहुये नवीन कृष्णचन्द्रजीको गोपियों ने पतिपायाहै २९ क्योंकि
वस्त्र भूषण सब गोपियों के उसी दलपर हरेगये हैं व उत्तरमें पांच-
वांदल है यह सब दलों से उत्तम है ३० इसी कर्णिका तुल्य दलपर
द्वादश आदित्य एकसमय स्थित हुये थे वायव्य कोणमें छठादल
है उसीपर कालिय कुण्ड है ३१ यह दल उत्तमोत्तम है व प्रधान
स्थानकहाता है व पश्चिम में सातवांदल है यहभी सबदलों में उ-
त्तमोत्तम है ३२ व यहीं यज्ञपत्नी गणोंको वाञ्छित वर दियागयाहै
व अघासुर भी वहीं देवताओं को भी दुर्लभ गतिको प्राप्तहुआ ३३
व ब्रह्माजीको मोह भी वहींहुआ व इसी से वहां ब्रह्मकुण्ड भी है
व नैर्ऋत्य कोणमें आठवांदल है जहां कि श्रीकृष्णचन्द्रजी ने व्यो-
मासुर का बधकिया है ३४ व शंखचूड़का भी बध वहींहुआ व नाना
प्रकार के अन्य भी क्रीड़ारस वहांहुये इसप्रकार बृन्दाबन के मध्य
के आठ दल हमने वर्णन किये सो तुमने सुने ३५ अब मुख्य श्री-
बृन्दाबनका वर्णन करते हैं यह यमुनाकी दक्षिणओर है इसमें गो-
पीश्वर नाम शिवजीका लिंग स्थापित है ३६ व इसके बाहर शोभा
से पूर्ण षोड़शदल कमल और बिराजमान है व दक्षिणावर्त्तकी रीति
से श्रीबृन्दाबन की सब दिशाओं में यथाक्रम विद्यमान है ३७ म-
हापद महाधाम स्वधाम अधामादि के नामों से प्रसिद्ध हैं उनमें
प्रथमदल सब से श्रेष्ठ है व उसकी कर्णिका के समान उसका माहा-
त्म्य भी बहुत है ३८ उसी दलपर लक्ष्मी के निवासका स्थान अति
रम्य गोबर्द्धन पर्व्वत है जिसपर कृष्णचन्द्रजी ने महालीला की है
इससे लीलारसका गह्वर वह स्थान होगया है ३९ जहां कि नित्य
श्रीकृष्णचन्द्र जी बृन्दावन के पति होकर बिचरते रहते हैं बहुत
और कहनेसे क्याहै जहां कृष्णचन्द्रजी का गोबिन्द नाम धरायागया

है ४० व तृतीयदल भी सब दलों से उत्तमोत्तम है व चौथादल महा अद्भुतरसका स्थान वर्णन कियागया है ४१ वहीं नन्दीश्वर बनहै व वहीं नन्दजी का स्थान है व कर्णिका दल माहात्म्य नाम पांचवांदल कहाता है ४२ इस दलके अधिष्ठाता धेनु पालनमें तत्पर गोपालजी हैं व जो छठादल कहाता है वहां आनन्द बनहै ४३ तालबन है व सातवां बकुलारण्यहै यह दल बहुतरम्यहै व आठयें दलपर ताल बनहै यहां पर धेनुकासुर का बधहुआ है ४४ व नवयें दलपर कुमुदबन अति मनोहर है व दशयें दलपर कामबन है यह सब कारणों का प्रधान स्थान है ४५ यहांपर ब्रह्मप्रसाधनभी है व विष्णुभगवान् का छल प्रकटहुआ है व कृष्णचन्द्रजीकी क्रीड़ाके रसका प्रधानदल कहाजाता है ४६ व भक्तों के अनुग्रहका कारण ग्यारहवां दलहै यहांपर श्रीकृष्णचन्द्रजी ने सेतुबन्धन नाम क्रीड़ाकी है यहां नानाप्रकारकेबन हैं ४७ व बारहयें दलपर भाण्डीरक नाम बन है जोकि रम्य व मनोहर है यहां पर कृष्णचन्द्रजी ने श्रीदामादि गोपों के साथ बड़ी भारी क्रीड़ाकी है ४८ व तेरहयें दलपर भद्रबन है यह भी अतिश्रेष्ठ है व चौदहवांदल सब सिद्धियों के देनेवाला है व यहांपर श्रीबन है ४९ जोकि सब ऐश्वर्य्योंका कारणहै वह मनोहर श्रीबन कहलाता है यह कृष्णक्रीड़ा मय दल है व श्रीकान्ति और कीर्ति को बढ़ाता है ५० व पन्द्रहवांदल श्रेष्ठकहाता है जहां कि लोहबन है इसप्रकार षोड़शदल हमनेकहे इन सबों का माहात्म्य इनके दलों के कर्णिका के समान है ५१ महावनमें श्रीकृष्णचन्द्रजी ने बहुत गीतगाये हैं इस से वह स्थान बहुत गोप्य है वहांपर वत्सों व वत्सपालों के साथ श्रीहरिने बालक्रीड़ाकी है ५२ पूतनादिकों का बध व दो अर्जुनके वृक्षोंका भञ्जन वहींहुआहै वहां के अधिष्ठाता पांचवर्षकी अवस्था के बालगोपालजी हैं ५३ जिनका नाम दामोदर है व प्रेमके आनन्द रसके समुद्र हैं बस ये प्रसिद्ध व श्रेष्ठ सबदल हमने कहे ५४ ये सब कृष्णचन्द्रकी क्रीड़ा के किञ्जल्कदल हैं व सिद्धप्रधान के किञ्जल्कदल कहेजाते हैं इससे इसको विहारदल कहते हैं ५५ पार्वती जीने पूंछा कि वृन्दाबन का माहात्म्य अद्भुत व रहस्य जो है वह

हम सुनाचाहती हैं हे महेश्वरजी ! कृपाकरके हमसे कहिये ५६ ई-
श्वरजी बोले कि हे प्रियतमे ! हमने तुमसे गुप्तसे गुप्त व उत्तम से
उत्तम रहस्यों का रहस्य व दुर्लभों का दुर्लभ जो स्थान है वह
कहा ५७ वह स्थान तीनों लोकों में गुप्तरखने के योग्य है व सब
देवेश्वरों से अच्छेप्रकार पूजित है व ब्रह्मादि देवताओं को बांछित
देता है व सुर सिद्धादिकों से सदा सेवित रहता है ५८ योगीन्द्र व
मुनीन्द्रलोग सदा उसके ध्यान में तत्पर रहते हैं व जहां अप्सरा-
ओं का नाच व गन्धर्बोंका गान निरन्तर होतारहता है ५९ सो पूर्ण
आनन्द के रसका आश्चर्यरम्य वृन्दाबन बहुत प्रकारके चिंतामणि
प्रस्तरों के तुल्य है व अमृतरस से भराहुआ रहता है ६० इस वृ-
न्दाबन में जितने वृक्षहैं सब अगुरुके वृक्षों के समान हैं व सुगन्ध
के समूह से सेवित हैं व वहां जितनी स्त्रियां हैं सब लक्ष्मीरूप हैं
व पुरुष सब बिष्णुरूप हैं क्योंकि सब स्त्री पुरुष लक्ष्मी व विष्णुही
के अंशों के अंशों से उत्पन्न हैं ६१ जिस वृन्दाबन में किशोर अ-
वस्थाको प्राप्त नित्यआनन्दशरीर नटवर गति कथालाप करतेहुये
निरन्तर मन्द मन्द मुसुक्यातेहुये ६२ शुद्धसत्त्वगुणी प्रेमपूर्ण बैष्णवों
से सेवित पूर्णब्रह्म सुखमें मग्न देदीप्यमान मूर्त्तिसे युक्त ६३ मत्त
कोकिल भ्रमरादिकों के कूजन व गुञ्जार से मनोहर कबूतर शुकों के
सांगीत रागसे युक्त व सहस्रों उन्मत्त भ्रमरोंसे युक्त ६४ व सैकड़ों
मयूरोंके नृत्यसे युक्त व सब आनन्दों से भरा व नानारंगों के पुष्पों से
युक्त व पुष्प धूलिसे परिपूर्ण ६५ पूर्ण चन्द्रमाकी अभ्युदयसे नित्य
युक्त सूर्य्य के मन्द किरणों से सेवित दुःखरहित व दुःखनाशक व
जरामरण से वर्जित ६६ क्रोध व ईर्ष्या रहित प्राणियोंसे युक्त नाना
आश्चर्य समेत पवित्र अहङ्कार रहित पूर्णानन्दामृत रस से युक्त व
पूर्ण प्रेमरसकासागर ६७ सत्त्वरजस्तमो गुणोंसे हीन महाधाम पूर्ण
प्रेमस्वरूप व जहां वृक्षादिकों के पुलकोंसे प्रेमानन्द के आंसुओं की
वर्षा सदाहुआकरती है ६८ फिर चैतन्यों कोक्याकहना है व फिर वि-
ष्णु भक्तोंको क्याकहाजाय व गोबिंदजी के चरण रजसे पृथ्वीपर वृ-
न्दाबन स्पर्शित होता है ६९ इससे यह वृन्दाबन सहस्र दलकमल

को कौड़ीके समान समझता है क्योंकि जिसके स्पर्श मात्रसे तीनों लोकों में यहपृथ्वी धन्य कहाती है ७० सो यह गुप्तसे गुप्त वृन्दावन पृथ्वी के मध्यमें विराजमानहै व अक्षर परमानन्दगोबिन्दजीका नाश रहित परमस्थान है७१ गोविन्दके देहसे अभिन्न व पूर्णब्रह्मकेसुखका आश्रय व उसकी धूलके स्पर्श से मुक्ति होतीहै फिर ऐसे वृन्दाबनका माहात्म्य हम कैसे कहें ७२ इससे हे देवि! सबप्रकार से उस बनको अपने हृदयमें टिकाओ व उस वृन्दाबनमें विहारकरते हुये किशोर अवस्था को प्राप्त श्रीकृष्णचन्द्रजीका ध्यानकरो ७३ व जिस वृन्दावन की कर्णिकाकी प्रदक्षिणा सदा यमुनाजी करती हैं जिनका कि नीलगहिरा सुगन्धित व मोहन परमपुनीत जलहै ७४ व आनन्दामृत मिश्रित पुष्प रसयुक्त जलहै व कमल आदि नाना प्रकारके उज्ज्वल पुष्पों से समुज्ज्वलित रहता है ७५ व मधुरबाणी बोलनेवाले चकई चकवाआदि पक्षियोंके शब्दोंसे शोभितहोताहै व अतिमनोहरतरंगों से शोभित होताहै ७६ व उसके दोनों तट शुद्ध पक्के सुवर्ण से रम्य दिखाई देते हैं व जिसके जलके स्पर्श से कौड़ी भी कोटि गङ्गाजल के स्पर्शसे अधिक पवित्र होजातीहै ७७ व जिसके तीरकी कर्णिका पर श्रीहरि नित्य कोटिनलीला करतेरहतेहैं इससे यमुनाकी कर्णिका श्रीहरिहीके तुल्य है श्रीकृष्णजीका रूपहै ७८ यह सुनकर पार्व्वती जी ने प्रश्नकिया कि गोविंदजीकी सुन्दरता व आकृति कैसी आश्चर्य्यदायिनी है वह हमारी सुननेकी इच्छाहै हे दयानिधान! आप कहें ७९ ईश्वरजी बोले कि रम्य वृन्दाबन के मञ्जु मञ्जीरों से शोभित मध्यभागमें शाखा पल्लवों से भूषित योजनभरकी लम्बाई चौड़ाई में एक वृक्ष है ८० उस के नीचे एक अतिमनोहर भवन विराजमान है उस में एक योगपीठ है वह आठकोणों का बना है व नाना प्रकारसे प्रकाशित होनेसे मनोहर है ८१ उस के ऊपर माणिक्य व रत्नोंसे बनाहुआ स्वच्छ सिंहासन है उस में आठ दल का दिव्यकमल है उस के मध्यमें सुखका आश्रय ८२ गोविन्दजी का परमउत्कृष्ट स्थान है फिर उसकी महिमा कैसे कहें उस स्थान पर गोपियों से सेवित श्रीगोविन्दजी सदा विराजते हैं ८३ जिनकी

दिव्य अवस्था व दिव्यरूप कृष्ण वृन्दावन के ईश्वर निरन्तर ऐश्वर्य्य से युक्त व व्रज के बालकों के एक बल्लभहैं ८४ व यौवन से किशोर अवस्थाको उद्भिन्न कियेहुये व अवस्थासे अद्भुत शरीरको धारणकिये रहतेहैं व आप अनादिहैं परहैं सबके आदि ऐसे नन्दगोपके पुत्रहैं ८५ जोकि श्रुतियों के ढूंढ़ने के योग्य अज गोपीजनों के मन के हरनेवाले परमधाम परमरूप द्विभुज गोकुल के ईश्वरहैं ८६ ऐसेगोपीनन्दनका ध्यान करनाचाहिये जोकि निर्गुणके एक मुख्यकारणहैं व श्रीमान् नवीन स्वच्छ श्याम तेजसे युक्त मनोहर रूपहैं ८७ व नवीन मेघकेतुल्य श्याम चिक्कण मञ्जु कुण्डलधारण किये फूलेहुये कमल के समान नेत्रों से युक्तसुखदायक स्पर्शवाले व सुखपहुँचानेवालेहैं ८८ घोटेहुये अञ्जन के समूहचमकीले रूप से युक्त चिक्कण श्याम मोहनकारी अतिचीकने नील कुटिल सुगन्धित घुँघुवारे बारों से युक्त ८९ उन केशों के ऊपर दक्षिण ओर मनोहर चूड़ामणि को धारणकिये रहते व नानाप्रकारके रंगोंसेयुक्त शोभित मयूरपिच्छके खण्डसे भूषित ९० मन्दार से भी मञ्जु गोपुच्छाकार चोटी गुहाये हुये सुन्दर त्रिभूषण धारणकिये व कभी २ मयूरके पंखोंकेमुकुट से भूषित ९१ व कभी २ अनेकमणिमाणिक्यों से बने हुये किरीट से भूषित व चलायमान कुण्डलों से युक्त व कोटि चन्द्रसमान प्रकाशित मुखवाले ९२ मनोहर गोरोचन व कस्तूरी के तिलकको लगाये हुये अत्यन्त शोभित नील कमल के समान चिक्कण व दीर्घ लोचन वाले ९३ नाचतीहुई टेढ़ी भौंहों के कारण तिरछीदृष्टि से युक्त सुन्दर विस्तृत सुन्दरता युक्त नासिका के अग्रभाग से मनोहर ९४ नासिका के अग्रभागमें गजमुक्ता धारण करने से बशीभूत हैं तीनोंलोक जिनके सिंदूरसमान अरुण व चिक्कण नीचे ऊंचे के ओष्ठों से मनोहर ९५ व नाना वर्णोंसे उल्लसित सुवर्ण के मकराकार कुण्डल धारणकिये व उसकी किरणों के समूह से चमकते हुये दर्पणके समान प्रकाशित ९६ कानों में कमल व पारिजातके पुष्पों से भूषित किये श्रीबत्स व कौस्तुभमणि छातीमें धारणकिये व मोतियोंका हार पहिने ९७ जिसमें कि बीच

बीचमें माणिक्य व सुवर्णकी गुटिकामिश्रित हाथों में कङ्कण व ब-
जुल्ला धारण किये कटिमें क्षुद्रघण्टिकासे शोभित ९८ व सुन्दर
पैंजनी से श्रीमच्चरण विराजित कपूर अगरुकस्तूरी से बिलसच्च-
न्दनादि ९९ व गोरोचन मिश्रित अरगजादि अङ्गों में लगायेहुये
चिक्कण अपने पादतलों से खञ्जनकी चञ्चलताकोभी निन्दित क-
राते हुये १०० गहिरीनाभि से युक्त व रोमोंकी पंक्ति से फूलोंकी
मालाको नमित कराते हुये सुन्दर गोल चढ़ाउतार मोटी जङ्घाओं
से युक्त पाद पद्मोंसे मनोहर १०१ ध्वज वज्र अंकुश कमल आदि
चिह्नोंसे कर व चरण शोभित व अपने नखचन्द्रकी किरणोंकी पंक्ति
से पूर्णब्रह्म के मुख्य कारण १०२ व कोई २ कहते हैं कि उन्हींके
अंश से अद्वय ब्रह्मचिद्रूपहोताहै व उन्हींके अंशके अंश से उत्पन्न
महाविष्णुको बुद्धिमान् लोग बतातेहैं १०३ व सनकादि योगीन्द्र
लोग उन्हींको हृदयमें चिन्तना करतेहैं व उदरमें त्रिबलीसे शोभित
सम्पूर्ण निर्म्माणके सारांशसे निर्म्मित १०४ तिरछी ग्रीवासे शोभित
व अनन्तकोटि सुन्दर कन्दर्प्पसे सुन्दर व बामकंधेपर सुन्दर सुवर्ण
के कुण्डलसेप्रकाशितकपोलधरेहुये १०५ कटाक्षसहितमंद२मुसुकाते
हुये व कोटि कामों से भी सुन्दर व सिकोड़ेहुये ओष्ठसे मनोहर
शब्दों से बंशी बजाकर १०६ तीनों जगतोंको प्रेमके सुखसागर में
डुबाकर मोहित करातेहुये श्रीहरिका ध्यानकरे श्रीपार्व्वतीजीने पूँछा
कि कृष्ण जिनका गोबिन्द नाम है वे परमकारण हैं व उनका महत्
पद है१०७व वृन्दाबनकेईश्वरहैं वनित्यहैं व निर्गुण हैंएक कारणहैं
सो उन ईशका जो माहात्म्यहो व जो सुन्दर ऐश्वर्य्यहो १०८ हे
देवदेवेश ! वहकहो हे प्रभो ! हमारे उसके सुननेकीइच्छाहै ईश्वर
जी बोले कि हे देवि ! जिसके चरण नखों के किरणोंकी महिमा भी
नहीं कही जाती १०९ फिर पूरामाहात्म्य कैसे कहाजाय परन्तु कुछ
उनका माहात्म्य कहते हैं सुनो अनन्तकोटि ब्रह्माण्डों में अनन्त
तीनों गुणोंकी उच्चता है ११० व उनमें उन्हींके कियेहुये उन्हींके
अंशसे कोटि कोटि ब्रह्मा विष्णु महेश्वर होते हैं व सृष्टि पालन नाश
करतेहुये उनमें ठहरेरहते हैं परन्तु ये सब उन्हीं से उत्पन्नहैं १११

व ये तीनों उनकी कोटि कोटियोंके अंश हैं व उन्हीं के कोटियों अं-
शोंसे कामका शरीरबना है वहसब प्राणियों के मध्यमें स्थितहोकर
संसारभरको मोहित करताहै ११२ व उन्हींके देह की बिलसित शोभा
के कोटि कोटि अंशसे चन्द्रमा बनाहै व उन्हीं के प्रकाश के कोटि
अंशोंके किरणोंसे सूर्य्यका शरीर बनाहै ११३ व उन्हींके अपने देह
किरणों से जोकि उत्कृष्ट आनन्दके रस अमृत के तुल्य हैं व परमा-
नन्द चैतन्यरूप निर्ग्गुणके मुख्य कारण हैं ११४ व उन्हीं के अंश
के कोटि कोटि अंश किरणरूप होकर जीतेहैं व उन्हीं के चरण क-
मल युगल के नखोंके चन्द्रमणिकी प्रभाको ११५ पूर्ण ब्रह्मका भी
कारण कहतेहैं जोकि वेदको भी अतिदुर्ग्गम हैं ॥

चौ० तासु अंश सौरभ सों सारे । मोहत बिश्व कोटि इकबारे ११६
तासु स्पर्शसुमन गंधादिक । नानासौरभकरुत्यहिभाविक १ ।
अरुत्यहि आदिप्रकृति हैं राधा । कृष्ण प्राणप्रिय गतिसब बाधा ११७
तासु कलाकोटिनअंशांशा । दुर्ग्गादिकत्रिगुणात्मिक बंशा २ ।
अरु राधिका चरण रज पर्शत । कोटि बिश्व प्रकटत यह दर्शत ११८
यह श्रीहरि राधिका महातम । तुमसन हमभाषाकरिकैकम ३ ।११९

इति श्रीपातालखण्डेभाषानुवादेवृन्दावनमाहात्म्येकृष्णचरित्रेएकोन-
सप्ततितमोऽध्यायः ॥६९॥

सत्तरवां अध्याय ॥

दो० सत्तरयें महँ कह सखी पार्षद परिषद आदि ॥
सखास्थान गोपालके जो सब बसत बनादि १
वासुदेव अरु रामप्रद्युम्ना निरुधनिवास ॥
भाष्यो क्रमसों भक्तयुत जो रक्षकनिजदास २

पार्व्वतीजीने महादेवजी से पूँछा कि जैसा इन कृष्णचन्द्रजी का
आचरणहै व जो इनके सभासद और पार्षदहों हे दयानिधान ! ह-
मारे सुननेकी इच्छाहै कहो १ ईश्वरजी बोले कि राधाजीके साथ
श्रीगोविन्द जी सुवर्णके सिंहासनपर पूर्व्वोक्त रूप सुंदरता से युक्त
व दिव्य भूषण पुष्पमाला धारण किये २ मनोहर चीकनी त्रि-
भङ्गीको धारणकिये गोपियों के लोचनों के तारक उसके बाहर स्वर्ण

के सिंहासनों से घिरेहुये योग पीठपर स्थित हुये ३ उनकी सब ओर कृष्णचन्द्रजी की परमप्रिय अंग अंग प्रति अतिउत्साह से युक्तप्रधान श्रीकृष्णजी की प्रकृतिका अंश ललितादिक सखियां स्थित रहतीं कि जिनकी मूल प्रकृति श्रीराधिकाजीहैं ४ इन राधिका कृष्णके सम्मुख तो ललिता देवी स्थित रहती व श्यामला बायुकोण में श्रीमती उत्तरमें धन्यानाम सखी व ईशानकोण में श्रीहरि प्रिया नामसखी ५ ऐसेही बिशाखासखी पूर्व्वदिशामें व शैव्या आग्नेय-कोण में पद्मा दक्षिणदिशा में व पश्चिमओर क्रमाणिकानाम सखी स्थितरहती है ६ व योगपीठकी कर्णिका के अग्रभागमें चारुचन्द्रा-वतीनाम प्रियासखी ये आठ पुण्यप्रकृतियां अतिप्रिय हैं व सबोंमें प्रधानहैं ७ परन्तु इनसे भी प्रधान चन्द्रावलीनाम आदि प्रकृति है यह राधाजी के समानहै व चन्द्रावली-चित्ररेखा चन्द्रा-मदनसुन्दरी ८ प्रिया-श्रीमधुमती चन्द्ररेखा-हरिप्रिया-बस ये सब सोलहप्रकृतियां कृष्णचन्द्रजी को अतिप्रिय हैं ९ इनसबों में वृन्दाबनकी स्वामिनी श्रीराधाजी व चन्द्रावली इनके गुण सुन्दरता रूप लावण्यादि सब समान हैं इससे आश्चर्य्यरूप दिखाईदेती हैं १० व इनके विशेष और भी मनोहर मुग्धवेषधारिणी किशोरअवस्थाको प्राप्त लावण्य युक्त सहस्रों गोपकन्या राधाकृष्णजीके आगे खड़ीरहती हैं ११ जि-नकेशरीरोंका रङ्ग तपायेहुये पक्के सुवर्णकासा व जो सदा सुप्रसन्न चित्त रहतीं व सब सुन्दरनेत्रवाली हैं व सब कृष्णचन्द्रजी के रूपको अपने अपने हृदय में आरूढ़रखतीं व सब श्रीहरि के श्लेषणकरने में समुत्सुकरहतीं १२ व सब श्यामके अमृतरसमें मग्नरहतीं व सबोंके मनमें श्रीहरिका भाव प्रकाशित होता व सब नेत्रकमलों से पूजित कृष्णचन्द्रजी के चरणकमलों में अपने २ चित्तोंको अर्पण कियेहुई १३ कान अपने सब कृष्ण चन्द्रके बचनसुनने में लगाये हुई इसप्रकार की सहस्रों सखियां दाहिनीओर उपस्थित रहतीं सब संसारकी ओरसे मुग्ध व हृदयमें टिकेहुये कृष्णचन्द्रजी में लालसा कियेहुई १४ व नानाप्रकार के मधुरस्वरोंका आलाप करतीहुई व तीनोंलोकों को मोहित करातीहुई व प्रेममें बिह्वलहोकर उन कृष्णचन्द्रजी के

गुप्तरहस्योंको गातीं १५ व इन्हीं के मध्य में देवकन्यायें भी अनेक सुन्दरवेष धारणकिये स्नेहको प्रकाशित करनेवाली अनेक तरह के हावभाव से व दिव्यभाव के भारसे युक्त १६ उपस्थितरहतीं व सब ये सखियां व देवकन्यालोग कृष्णचन्द्रजीके सब अंगोंके स्पर्शकरने में निर्लज्जरहती हैं व उनके भावमें अपने मनोंको मग्नकरके तद्रूप बनीरहतीहैं १७ व मन्दिरके बाहर अपनी२ प्रियाओं से युक्त उनके भावमें मनको डुबायेहुए हँसतेहुए देखतीहुई १८ समानवेष अवस्था को धारणकिये समान बल पौरुषवाले व समानगुण कर्म्मवालेतथा समान भूषण प्रिय करनेवाले १९ व समान स्वरसे गीतगा२कर वंशी के बजानेमें तत्पर सखालोग रहते उनमें श्रीदामानाम सखा पश्चिम द्वारपर व बसुदामा उत्तरद्वारपर २० व सुदामा पूर्वके द्वारपर व किङ्किणीनाम दक्षिणके पर व उन द्वारपालों के द्वारों से बाहर सुवर्णके मन्दिरों से घिरेहुये २१ सुवर्ण केपीठपर सुबर्णकी वेदीकेमध्यमें सुवर्णही के भूषणोंसे भूषित स्तोक कृष्ण अंशुभद्रआदि लक्षों गोपोंसे आच्छादित २२ जोकि शृंगी वंशी वेत्रधारण किये अवस्था आकृति वेष व स्वरसे समान थे उनसे युक्त व उनके गुण ध्यानमें संयुक्त व रससे बिह्वलहोकर गातेहुये २३ चित्रमें मानो खिंचेहुए विचित्ररूप के व सदा आनन्दके आंशु बरसातेहुये पुलकावली से सबअंग छायेहुये योगीन्द्रोंके समान बिस्मित २४ व दुग्ध चूतीहुई असंख्य धेनुओंसे आच्छादित है उसके बाहर कोटि सूर्य्यसम प्रकाशित सुवर्ण के प्राकारसे घिरेहुये २५ सुन्दर सुगन्धित वृक्षोंसे युक्त वाटिका से चारोंदिशाओं से घिरेहुये उसकी पश्चिमओर सामने शोभासेयुक्त पारिजातके वृक्ष लगेहुये २६ उन वृक्षोंकेनीचे सुवर्ण के आभूषणोंसे भूषित सुवर्णके पीठपर व उसीके मध्यमें मणियों माणिक्यों से बने हुये दिव्य प्रकाशवान् सिंहासनपर २७ परानन्द श्रीवासुदेव विराजमान रहतेहैं जोकि जगत्के प्रभु तीनोंगुणों से अतीत चैतन्य रूप सब कारणों के कारणहैं २८ व इन्द्रनील मणिकेतुल्यनील घुँघुवारे बालोंसेशोभित व कमलपत्रके समान विशालनेत्रवाले व मकरके डौलके कुण्डल धारणकरते हैं २९ व चतुर्भुजी मूर्त्तिको धा-

रणकियेरहते एक भुजामें चक्र दूसरीमेंखड्ग तीसरीमें गदा व चौथी में शंख व कमल दोपदार्थ धारणकियेरहतेहैं व आदि अन्तसेरहित नित्य प्रधान पुरुषोत्तमहैं ३० ज्योतिस्वरूपमहातेजवाले पुराणपुरुष बनमालाधारणकिये पीताम्बरओढ़े चीकनारूप दिव्यभूषणों से भूषित ३१ दिव्य चन्दनादि अनुलेपन लगाये चमकतेहुये चित्र बिचित्ररूपसे सबोंके मनोहर रुक्मिणी सत्यभामा नाग्नजिती लक्ष्मणा ३२ मित्र विंदा अनुविंदा सुनन्दा व अतिसुशीला जाम्बवती इन आठपट्टरानियों से शोभित श्रीवासुदेवजी विराजितहोतेहैं ३३ दे दीप्यमान सभासद् भक्तिमें तत्परहोकर विद्यमानरहतेहैं उसस्थान की उत्तरओर एक हरिचन्दनबृक्षोंकी बड़ीभारी बाटिकाहै ३४ उस के मध्यमें मणियोंसे भूषित मण्डपहै उसकेनीचे सुवर्णका चबूतराहै उसके बीचमें मणियोंसे निर्मित सिंहासनहै ३५ उस सिंहासनपर रेवती नाम अपनीभार्यासमेत हलमुशल हाथोंमें धारणकिये बलदेव जी विराजमान् रहतेहैं ये ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्रजी के प्रिय अनन्तजी की मूर्त्ति उनसे अभिन्न गुण रूपीहैं ३६ ये शुद्धस्फटिक मणि के समान प्रकाशित रक्तकमलकेसे लालनेत्रवाले नीलाम्बर ओढ़े चीकने दिव्य भूषण पुष्पोंकीमाला धारणकिये रहतेहैं ३७ मधुकेपान करने में सदा आसक्तरहते हैं इससे मधुसे नेत्र घूमते रहते हैं व उनके दक्षिणभाग में मनोहर नाभि के बीच में ३८ सन्तान बृक्षके नीचेही एक मणियों का मन्दिर शोभित है व उसके मध्यमें मणियों व माणिक्यों से बनाहुआ एक प्रकाशित दिव्य सिंहासन है ३९ उसके ऊपर देव देव प्रद्युम्नजी सुखपूर्व्वक स्थितरहते हैं जोकि जगन्मोहन सौन्दर्य्य सारश्रेणी के रससे भरेहुयेहैं ४० ये श्याम कमल पुञ्जके समान प्रकाशित व अरबिन्द दलसम विस्तृत नेत्र वाले दिव्य अलङ्कार भूषणोंसे युक्त दिव्यगन्धोंका अनुलेपन किये ४१ व अपने शरीर की सुन्दरतासे सम्पूर्ण जगत् को मुग्ध किये रहतेहैं व उसकी पूर्व्व ओर एककल्प वृक्षोंकी बाटिका है ४२ उसके नीचे एक सुवर्णका चबूतरा है उसके ऊपर स्वर्णहीका मण्डपछाया है उस के मध्य में एक अति चमकताहुआ सुवर्णका सिंहासन है ४३ उस

के ऊपर ऊषा अपनी देवी के साथ जगत्पति श्रीअनिरुद्धजी स्थित रहते हैं जोकि सजल जलद श्यामस्वरूप अतिचीकने नील घुँघुवारे बालों से युक्त रहते हैं ४४ व सुन्दर उन्नत भौंहें सुन्दर कपोल सुन्दर नासिका सुन्दर कण्ठ सुन्दर छाती व मनोहरसे भी मनोहर रूप ४५ किरीट कुण्डल कण्ठ भूषणादिकों से भूषित मनोहर मञ्जीरकी मधुरतासे व सुन्दरतासे शोभित शरीर वाले हैं ४६ व प्रिय भृत्य गणोंसे आराधित व यन्त्रयुक्त सङ्गीत शास्त्र के प्रिय पूर्णब्रह्म सदानन्द शुद्ध सत्त्वगुण स्वरूपी ४७ व इनचारों मूर्त्तियों के ऊपर अन्तरिक्षमें सर्वईश्वरों के ईश्वर श्रीविष्णुभगवान् जोकि अनादि आदि चिद्रूप चिदानन्द परविभु ४८ तीनोंगुणों से अतीत अव्यक्त नित्य अक्षय व अव्यय हैं व मेघपुञ्जकी मधुरता व सुन्दरता से युक्त श्यामशरीर ४९ नील घुँघुवारे चीकने बालोंसे युक्त अरविन्द समान दीर्घ व मनोहर सुन्दर नेत्रों से युक्त ५० किरीट कुण्डलसे युक्त शुद्ध सत्त्वस्वरूप चिद्रूप आत्मा रामहैं उनकीमूर्त्तिके ध्यानमें तत्पर ५१ हृदय उनके ध्यानमें आरूढ़ कियेहुये नासिकाके आगे दृष्टिलगाये हुये भक्तलोग अहेतु की भक्ति निरन्तर देह हृदय वृत्ति व बचन से कियाकरते हैं ५२ व इन आत्माराम वैष्णवोंकी बाईं ओर यक्ष गन्धर्व्व सिद्ध विद्याधर आदिकों के कियेहुये मनोहर अप्सरा समूहों के गीत वाद्यादि सुनतेहुये ५३ व उनके प्रिय भजनोंकी इच्छा कियेहुये व कृष्णचन्द्रकी लालसा कियेहुये उनके आगे मुख्य वैष्णव लोग अन्तरिक्ष में सुखासनपर बैठेहुये ५४ प्रह्लाद नारदादिक शुक सनकादि वैष्णवलोग देदीप्यमान भाववाले जनकइत्यादिक मानो हृदयके बाहर भजनमें तत्पर ५५ स्थितरहते हैं व सर्वांग में जिनकी पुलकावली छाईरहती है व रहस्यअमृत से सींचेहुये रहते हैं सदाढाई अक्षरका ॐक्लीम् ५६ यहमन्त्र जपते रहते हैं क्योंकि यह मन्त्र मन्त्रचूड़ामणि कहाता है व सब मन्त्रों का मुख्य कारण है व सब देवों के मन्त्रोंका कैशोरमन्त्र हेतु है ५७ व सब कैशोरमन्त्रों का हेतु चूणामणिमन्त्र है सो इस मन्त्रको वे लोग मनसे जपतेरहते हैं इससे सदा सुखीरहते हैं ५८ व उन्हींके पद

कमल में निश्चलप्रेम चाहतेहैं और इन वैष्णवादिकों के बाहर स्फटिक मणि आदि उत्तम मणियों से बनेहुये ऊँचे अतिमनोहर ५९ चारोंओर से कुंकुमादि से रँगेहुये समुज्ज्वलप्राकारों से युक्त द्वारोंपर श्रीविष्णुहीकी एक एक मूर्त्ति द्वारपालताभी करती है जैसेकि पश्चिम द्वारपर शुक्लवर्ण चतुर्भुजी मूर्त्ति धारणकिये श्रीविष्णुरहते हैं ६० वे शङ्ख चक्र गदा पद्म व किरीटादि से बिभूषित रहते हैं व रक्तवर्ण चतुर्भुज कमल शङ्ख चक्र गदा धारण कियेहुये ६१ किरीट कुण्डल धारण किये उत्तरद्वार के द्वारपालक हैं व गौरस्वरूप चतुर्भुज शङ्ख चक्र गदा पद्म धारणकिये विष्णुही ६२ किरीट कुण्डलादिकों से शोभित वनमाला धारणकिये पूर्व्वद्वारके द्वारपालक हैं गौरवर्ण विष्णु कहेजाते हैं ६३ व कृष्णवर्ण चतुर्बाहु शङ्ख चक्रादिकों से भूषित दक्षिण द्वार के द्वारपालक श्रीविष्णु कृष्णवर्णही हैं ६४ ॥

चौ० । यह श्रीकृष्ण चरितनर जोई । ह्वै पवित्रपढ़ि है जो कोई ॥
अरुजोसुनिहिभक्तिसोंप्राणी । कृष्णभक्तिपाइहिसचवाणी १ । ६१

इति श्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेवृन्दावनमाहात्म्येश्रीकृष्णचरित्रेसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

इकहत्तरवां अध्याय ॥

दो० । इकहत्तरयें महँ कह्यो जिमि वृन्दावनमाहिं ॥
नारद गे शिशुरूपहरि राधालख्यो तहाँहिं १
पुनि राधास्तुतिबहुकरी लखी किशोरीरूप ॥
पुनि अशोकमालिनिसखी वार्त्ताभई अनूप २

इतनी कथा सुनकर पार्व्वतीजीने पूँछा कि हे भगवन्! हे सर्व्वभूतेश! हे सर्व्वात्मन्! हे सर्वसम्भव! हे देवदेव! हे महादेव! हे सर्वज्ञ! व हे करुणाकर! १ तुमने मेरेऊपर बड़ी अनुकम्पाकी व अब फिर अनुकम्पासेही त्रैलोक्यमोहन बहुतसे मन्त्र तुमने मुझसे कहे २ अब यह कहिये कि महामोहनरूपी उनदेव गोपालजीने गोपियोंके साथ किस विशेषसे क्रीड़ाकी ३ महादेवजी बोले कि मुनियोंमें श्रेष्ठ नारद जी एकसमय बीणाबजातेहुये कृष्णचन्द्रजी के अवतार को जानकर नन्दगोकुल को गये ४ व वहां जाकर महायोगमाया के ईश विभु

अच्युत बालनाट्य धारण कियेहुये श्रीहरिको नन्दजी के मन्दिर में देखा ५ जोकि अतिकोमल रेशमीवस्त्र बिछेहुये सुवर्णके पलँग के ऊपरलेटेहुये आनन्दपूर्वक गोपकन्याओं से देखे जाते थे ६ व जिन के अंग अतीव सुकुमार थे व मुग्ध चीकने भाव सहित देखना व नील टेढ़े घुँघुवारे जिनके केशथे ७ जोकि कुछ २ मुसुक्यारहे थे इस से एकहीदांत जमाथा वह कलीकी तुल्य दिखाई देताथा व अपनी प्रभासे मन्दिरभरको जो प्रकाशित करातेथे ८ ऐसे श्रीहरिको नग्न लेटेहुये देखकर मुनि अत्यन्त हर्षितहुये व धेनुओं के स्वामी नन्द जीसे सम्भाषणकरके सबके व हरिके प्रिय उनसे बोले ९ कि नारायण में परलोगोंका जीवन अतिदुर्लभ है इननारायणका अतुल प्रभाव कोईभी नहींजानते १० महादेव व ब्रह्मादिकभी इनसे अपनी निरन्तर भक्ति सदा चाहतेहैं इससे इनबालकका चरित सबको हर्षितकरता है ११ व सब लोग इनके चरितको हर्षसे सदा गाते सुनते व अभि- नन्दित करतेहैं हे नन्द! इन तुम्हारे अचिन्त्य प्रभाववाले पुत्रमें सब का मन स्निग्धहोकर १२ सदा न रहे ते वे सब इस संसारको तरजा- यँगे व अन्तमें बिनाप्रयास संसारसागरको उतरेंगे १३ इससे हे नन्द! तुमभी एकांतभावसे इन अपने बालकमें प्रीतिकरो तुमभी संसारके पारको जाओगे ऐसाकहकर नन्दजी के मन्दिरसे मुनियोंमें श्रेष्ठ नारद जी निकले १४ व विष्णुकी बुद्धिसे नारदजी की पूजाकरके जब नन्द- जीने बिदाकिया तब महा भागवत मुनिने विचारांशकिया कि १५ इन भगवान् श्रीहरि नारायणजीकी भार्या भगवती लक्ष्मीजी हैं सो इनके साथ क्रीड़ाकरने के लिये १६ अवश्य गोपियों में उत्पन्नहुई होंगी इसमें कुछभी संशय नहींहै सो अब हम व्रजबासियोंके प्रत्येक गृहमें उन भगवतीको ढूढ़ेंगे १७ यहविचार करके मुनिवरजी व्रज- बासियों के गृहोंमें अतिथिबनके घुसे वहां विष्णुकीतुल्य पूजाकियेगये १८ सब बल्लवादिकों की नन्दके पुत्रमें श्रेष्ठरति देखके नारदजीने सबके मनसे प्रणाम किया १९ गोपालोंके घरमें गौरस्वरूप कन्या देखा व देखकर तर्कणा किया कि निस्सन्देह यही लक्ष्मीजी हैं २० जाते २ नन्दके सखा महात्मा किसी गोपश्रेष्ठ वृषभानुनामके गृहमें

पैठे २१ उस गोपने विधिपूर्व्वक मुनिराजकी पूजाकी तब प्रसन्नहो-कर मुनिजीने उससेपूँछा कि हे साधुजी! तुम पृथ्वीपर धर्म्मनिष्ठकरके प्रसिद्धहो २२ क्योंकि तुम्हारे हम धन धान्यादि सब समृद्धि देखते हैं किसी वस्तुकी कमी नहींदेखते भला तुम्हारे कोई योग्यपुत्र वा शुभ लक्षणयुक्त कन्याहै २३ कि जिससे तुम्हारी अतुलकीर्त्ति लोक भरमें व्याप्तहोगी जब मुनिवर्यने ऐसाकहा तो वृषभानु अपने पुत्रको लाये २४ जोकि महातेजस्वी व दक्ष था व लाकर नारदजीको नमस्कारकराया पृथ्वीपर रूपमें अद्वितीय उसपुत्रको देखकर मुनिवरजी २५ बहुतप्रसन्नहुये जो बालक पद्मपत्र विशालनयन सुंदरकण्ठवाला व सुंदरभौंहवालाथा सुंदर जिसके दांत सुंदरकान व सुंदर सब अंग थे २६ उसको भुजोंसे छातीमेंलगाकर व अस्नेहरूपी आंशुओंको छोड़तेहुये उस बालकको देखकर प्रेमसे गद्गदस्वरहोकर महामुनिजीबोले २७ नारदजी ने कहा कि यह तुम्हारा पुत्र रामकृष्णका सुंदर सखाहोगा व उन दोनोंजनोंके साथ निरालसहोकर रात्रिदिन विहारकरेगा २८ तब उस गोपश्रेष्ठसेकहके मुनिश्रेष्ठजी जैसेहीं चलनेपरहुये कि वैसेही वृषभानु फिर मुनिसेबोले २९ कि हे देव! एक देवियोंसेभी अतिरूपवती मेरेकन्याहै वह इसबालकसे छोटीहै जोकि जड़ अन्धी बहरी आकृतिकीहै ३० उसकोभी आशीर्व्वाददेकर बढ़ाइये व प्रसन्नदृष्टिसे देखदीजिये क्योंकि आपकी प्रसन्न दृष्टिमात्र से वह कन्या सुस्थिरहोजायगी ३१ ऐसावाक्य सुनकर कृष्णचन्द्रमें मनलगायेहुये नारदजीके वृषभानुके मन्दिरमेंपैठकर भूमिपर लोटतीहुई उसकी कन्याको देखकर ३२ उठाकर अपनीगोदीमें बैठाकर स्नेहकेमारे विह्वलमनहोगये तब भक्तिसे नम्रहोकर वृषभानुभी मुनिवरके समीपआये ३३ तब भागवतोंमें श्रेष्ठ मुनिराज श्रीकृष्णचन्द्र के प्रियतम उस कन्याका परमउत्तम अद्भुतरूप जोकि न कभी देखाथा न सुनाथा देखकर ३४ हरिकेप्रिय महामुनि अभूत पूर्वसमोहितहोगये व परमानन्दके एकरस समुद्रमें स्नानकरनेलगे ३५ यहांतक कि दोमुहूर्त्ततक कन्याको अपनीगोदीमें लियेहुये शिलाकेसमान अचल होगये तदनन्तर जबमुनीशजीजागे तो धीरेसेनेत्र खोलकर ३६ महा-

विस्मयको प्राप्तहोकर चुपचापस्थितरहे व हृदयके मध्यमें अपनी महाबुद्धिसे यह विचारकरनेलगे कि ३७ स्वच्छन्दचारी हमने सब लोकघूमडाले परन्तु इसकन्याके रूपके समान दूसरीकहीं नहींदेखी ३८ब्रह्मलोक रुद्रलोकव इन्द्रलोकमें हमारी गतिहै परन्तुकहीं इसकी शोभाके कोटिअंशवालीभी कन्या वा स्त्री हमने नहींदेखी ३९ हमने महामाया भगवती पर्व्वतराजपुत्री पार्व्वतीजीकोभी देखाहै कि जिसकेरूप से चरअचर सहित सब विश्वमोहित होजाता है ४० वेभी इनसुकुमारांगीके रूपको कभी नहींपासक्तीं व न लक्ष्मीजीही किसी प्रकारसे इसकी समानताको नहीं पासक्ती हैं ४१ एकको कौनकहै लक्ष्मी सरस्वती कान्तिविद्यादिक जो अतिश्रेष्ठ स्त्रियां हैं इसकन्याकी छायाका स्पर्शभी कभीनहीं करसक्तीं फिर रूपादिकी समानताको कौन कहै और कौनकहे विष्णुभगवान्‌जीने जो मोहनरूप धारणकियाथा जिससे कि श्रीहरजी मोहितहोगयेथे४२सो हमने वहरूपभी देखाथा हमारीजान वहभी रूप इस रूपहीके तुल्यहोतोहो वा न होतो वह भी नहो इससे अब इसके निश्चय जाननेकी शक्ति हमको किसीप्रकार नहींहोसक्ती ४३ सो हमारीही शक्ति क्या हमतो जानते हैं कि इसहरिप्रियाके जाननेकी शक्तिअन्यभी कोई नहीं रखता व इसके सन्दर्शनमात्रहीसे गोविन्दजीके कमलरूपी चरणारविन्दमें ४४जो प्रेमसमृद्धि हमकोहुई वह पूर्व्वकालमें कभी नहींहुई हे भगवति! तुम्हारे विभवको देखकर हम एकान्तमें नमस्कारकरते हैं ४५ जिससे कि वहरूप देखकर हम कृष्णचन्द्रजीको सन्तुष्टकरें ऐसामनमें विचारांश करके मुनिश्रेष्ठने गोपश्रेष्ठ वृषभानुजीको कहीं भेजकर ४६ आप एकान्तमें दिव्य रूपिणी उसबालिकाकी स्तुति करनेलगे ॥

चौ०। महायोगमायेश्वरिदेवी। महाप्रभे अधिदेव सुसेवी ४७
महामोह दिव्याङ्गिनि माये। महा मधुरता बर्षिणि काये १।
महाद्भुतामृतआनँद पूरित। शिथिलीकृतमानसगत दूरित ४८
नहिंजानतक्यहि महाभागसों। मम लोचनगोचरनुरागसों २।
अन्तस्सुखद दृष्टितव देवी। नित्यविभाविन होतसुसेवी ४९
महानन्दतवअन्तबिराजत। परितृष्णासम सबकहँ भासत ३।

मधुरप्रसन्नसौम्य मुखमण्डल । यहतवदेवि कुरूपकखण्डल ॥ ५०
प्रकटकरत आश्चर्य्यसमूहा । परम सुखोदयरचत अनूहा ४
रज सम्बन्धिकलित तवमाया । शक्तितुम्हारिप्रकट सबठाया ॥ ५१
सृष्टि स्थिति संहारस्वरूपिणि । देविसदा कबहूँन विरूपिणि ५
तुमसों शुद्धरूपिणी आना । विद्याशक्ति न अपरमहाना ॥ ५२
परमानन्द समूह महाना । तुम धारत वैष्णवपद नाना ६
तवऐश्वर्य्यविभव जो भाना । ब्रह्म रुद्र दुर्ग्गम बलवाना ॥ ५३
नहिंयोगीन्द्रध्यानपथआवत । तवस्वरूपयद्यपि नितध्यावत ७
इच्छाशक्ति ज्ञानवर शक्ती । क्रियाशक्ति तवकरत सुभक्ती ॥ ५४
ममगतिसों केवल ये तीनी । हैं तवांशसों यह हम चीनी ८
तवअचिन्त्य माया सुविभूती । माया शिशुतनुकेरि प्रसूती ॥ ५५
महापरेश विष्णु सुकलाहू । हैं तवकला कला न सदाहू ९
तुम आनन्दरूपिणी शक्ती । परमेश्वरी न संशय वक्ती ॥ ५६
निश्चय वृन्दावन नितचारी । विहरतकृष्ण नमृषाउचारी १०
तुमकौमाररूपसों सबजग । मोहत देवि न अलग धरतपग ॥ ५७
जबतारुण्यरूपतुमधरिहौ।नहिंजानतकाअद्भुतकरिहौ ११
तवलावण्य निरन्तर पेखी । लीलाहास्य मधुरमुख देखी ॥ ५८
मानुषतनु धरिहरि भगवाना । लोभितह्वैहैं परम सुजाना १२
हरिवल्लभे तोर वह रूपा । देखन चहत अबहिंह्वैचूपा ॥ ५९
जासों नन्दतनय भगवाना । मोहित ह्वैहैं परम महाना १३
अबनिजकरुणासों निजरूपा । मोहिंलखाउ महेश्वरिभूपा ॥ ६०
प्रणतप्रपन्नजानि म्वहिंनीके । देवि दिखाउ रूप वहठीके १४
इमिकहिमुनिवरकीनप्रणामा । तद्गतमानसकरित्यहिठामा॥६१।६२
बार बार माहेश्वरि केरे । करत प्रणाम दीनबच टेरे १५
पुनि गोविन्दओर चितकैकै । स्तुतिवरकरनलगे मुनिनैकै ॥
कृष्णमनोहरजयजय तेरी । वृन्दावन प्रियजयह्वम टेरी ॥ १६।६३
जयभ्रूभंगललितव्रजमोहन । वेणुरवाकुल जयरसदोहन ॥
वर्ह शिरोभूषण जय होई । गोपी मोहन जय तव सोई १७।६४
कुंकुम लिप्त देह जय तेरी । रत्न विभूषण जय हमटेरी ॥

कबहुम तवप्रसादसों मोहन । देखबतुम्हें राधिकागोहन १८।६५
नवतारुण्य रूपधर दोऊ । ममलोचन गोचर कबहोऊ ॥
तबहमधन्यहोबनँदलाला । लखबकिशोरउभयजेहिकाला १९।६६
इमिमुनिविनयकीनततकाला । त्वरितराधिकारूपविशाला ॥
अतिमोहनअतिदिव्यस्वरूपिणि । चतुर्दशाब्दबयोअनुरूपिणि २०।६७
तासुसमानवयसिब्रजबाला । अपरअनेकआयत्यहिकाला ॥
दिव्यविभूषणबसनसवांरी । तासुसकलदिशिकररखवारी २१
सोलषिमयहुमुनीन्द्रअचेष्टित । प्रेममग्नअरुमोहविचेष्टित ६८।६९
तबसबबालापरमकृपाला । निजस्वामिनीचरणजलमाला २२
लैसींच्यहु मुनिवरकहँनीके । लगींजगावनपुनिविधिठीके ॥ ७०
महाभाग मुनिवरयोगेश्वर । धन्यधन्यतुमहौयहिअवसर २३
परमभक्तिसोंतुमभगवाना । श्रीहरिअवराध्यहुविधिनाना ॥
भक्तकाम पूरक सो आजू । तुमपर भो प्रसन्न सुखसाजू २४
जासों ब्रह्म रुद्र मुखदेवा । सिद्ध मुनीशकरहिंज्यहिसेवा ॥ ७१।७२
अन्यमहाभागवतकरारी । तिनकहँ यह दुर्दर्श हमारी २५
अत्यद्भुतयहरूपविमोहिनि । हरिवल्लभाभाग्यसन्दोहिनि ॥
दीनतुम्हें दर्शनक्यहिभागा । दृष्टिमार्गगतयुतअनुरागा २६
अब धरिधीर उठहु मुनिराया । विप्रवर्य्यगतह्वै सबमाया ॥७३।७४
करहुप्रदक्षिण याके नीके । पुनि प्रणवहुपदकमलसुठीके २७
देखतनहिंव्याकुलइवताही । लनिक विचारकरतअबनाही ॥ ७५
क्षणमहँ अन्तर्द्धान यहांही । निश्चयहोइहि मुनिमनमाही २८
तव सल्लापन याके सङ्गा । मुनिवरहोइहिकरिमनचङ्गा ७६
पुनि दर्शनहु न ह्वैहैं याके । ब्रह्मज्ञानि मुनिक्योंनहिं ताके २९
किन्तु महामुनि बृन्दावनमें । शुभा अशोकलताबनघनमें ॥ ७७
सबऋतुमहँफलपुष्पसमेता । सबदिशिसौरभअतिमुददेता ३०
गोबर्द्धन गह्वरमहँ जोई । सुसखी नदी सकलश्रम खोई ॥ ७८
तहँहु अर्ध निशिमहँमुनिराया । लषिहहुपायस्वामिनीदाया ॥
स्नेहविवशालिनकेसुनिवचना । मुनिवरचकितभयहुगुनिरचना ३२
जबलगकरि परदक्षिणनारद । अरुदण्डवतकीनअघगारद ।

दुइमुहूर्त्त बीते इतनोई । दर्शन कीन भलीविधि सोई ३२ । ८०

इतना चरित होताही था कि वृषभानुजीको नारदजी ने आकर पुकारा व यह कहा कि तुम्हारी कन्या ऐसे प्रभावकी है कि देवताओं के भी साधन करने के योग्यनहीं है ८१ जौन२ घर इसके चरणोंके चिह्नों से भूषितहोंगे वहां नारायणदेव माधवजी खुद बसते हैं ८२ व सबसिद्धियोंकोसङ्गलिये लक्ष्मी वहां नित्य निवासकरती हैं इससे सब भूषण वस्त्रों से भूषितकरके इस बरारोहा अपनी कन्याको ८३ बड़ेयत्नसे घर मेंदेवीके समान रक्षाकरो ऐसा कहकर महाभागवतों में उत्तम नारदजी मनसे ८४ उसका रूप स्मरण करतेहुये बड़े गहन बन को चलेगये व अशोक लताके नीचे पहुँचे ८५ वहां बैठकर रात्रिमें देवी राधिकाजी के आगमन की प्रतीक्षा करनेलगे व प्रेममें मग्नहोके कृष्णजीका भी आगमन वहांहीं चिंतना करनेलगे ८६ होते होते जब आधीरात्रि बीती तो प्रथमकी देखीहुई परम युवतियां परम अद्भुतरूप धारणकिये व अन्यभी चित्र विचित्र भूषण बसन धारणकिये ८७ बहुतसी वहांआईं मुनि उन सबोंको देखकर सम्भ्रांत चित्तहोकर दण्डवत् पृथ्वीपर गिरपड़े व मुनिको सबओरसे घेरकर वेसब खड़ीहोगईं ८८ मुनिकी इच्छाहुई कि हम इनसे इनकी स्वामिनीके समाचारपूछें परन्तु उनके प्रेमरूप सौन्दर्य्य व भाषासे ऐसे प्रधर्षित हुये कि कुछभी न बोल सके ८९ केवल हाथ जोड़े भक्तिभावसे नीचेको मुखकिये खड़ेरहगये तब अति विनीत प्रेम बिह्वल शिरझुकायेहुये मुनि से ९० करुणायुक्त एक सखी अशोकमालिनी नाम जोकि अशोक बन की देवी थी बोली ९१ कि हे महामुने ! हम इस अशोक कलिका में बसती हैं और नित्य रक्तवस्त्र धारणकिये रहती हैं व लाल पुष्प व लाल अनुलेपन धारणकरती हैं ९२ व रक्तही सिन्दूर लगाती हैं व रक्तही कमल के पुष्प शिरपर धारणकरती हैं लालही माणिक्य का बहूँटा बांधती हैं मुकुट आदि भी सब रक्तमाणिक्यों के ही धारण करती हैं ९३ एक समय अपनी प्रियाकेसंग बिहार करनेकी इच्छा से बसन्त ऋतुमें चित्रविचित्रकपड़े पहने बहुतसी गोपोंकीबालिका थीं ९४ तब मैंने अशोककी मालाओं से गोपवेषधारी श्रीहरिको व

लक्ष्मीरूपिणी उन सब सखियोंको अच्छेप्रकार पूजा ९५ तबसे मैं इन सबोंके मध्यमें सदारहतीहूँ व बिबिधप्रकारके भूषणोंसे श्रीरमापति की पूजाकरके ९६ पर अपर सबको यहीं टिकीहुई मैं जानतीहूँ व गो गोप गोपिकाओंका रहस्यभी जानतीहूं ९७ इससे मैं जानतीहूं तुम्हारे जो जानने की इच्छाहै वह हमारे हृदयमें कही हुईजानो कि तुम अद्भुताकार अद्भुतआनन्द देनेवाली ९८ सुवर्ण के समान रंगकी व हीराके समान प्रकाशित मुद्रिका धारणकिये चञ्चलनयनों-वाली उन देवी श्रीहरिप्रिया राधिकाजी को कैसे देखें ९९ व उनके पदकमलों की आराधन भक्ति से कैसे करें हे ब्रह्मन् ! यह तुम्हारे बिचारहै इस विषयमें तुम से हम महात्माओं का वृत्तान्त कहती हैं १०० जोकि मानसरोवर में टिककरके तीव्रतप करतेहैं व सिद्ध मंत्र जपते हैं हरि ईश्वरका ध्यान करते हैं १०१ व राधिकाजी के पदा-म्बुजका ध्यान निरन्तर करते हैं वे सब इकहत्तर सहस्र हैं व बड़े तेजस्वी हैं १०२ बनकेबिषे परमरहस्य हम तुमसेकहेंगी १०३ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेवृन्दावनमाहात्म्येश्री राधाकृष्णमाहात्म्येएकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय ॥

दो० बाहत्तरयें महँ कह्यो हरिवनितनके वृत्त ॥
पूर्वजन्म भव बहुत बिधि मनहुँकरतसबनृत्त १
जोजो जपिकै मन्त्रवर करितप पहिलेजन्म ॥
यहां भई हरिबल्लभा भाषेसब गुनि मन्म २

महादेवजी पार्व्वतीजी से बोले कि हे वरानने ! हे देवि ! एकमन होकर सुनो अतिदृढ़व्रत करनेवाले उग्रतपा नाम एकमुनि हुये १ वे सदा अग्निहोत्र यज्ञकरते व अग्निही भक्षणकरतेहुये महाउग्र तपकरते व पन्द्रहअक्षर का परममन्त्र जपतेरहते २ क्लींक्लींक्लीं वर-प्रदकृष्णाय स्वाहा क्लींक्लींक्लीम् यह परमसिद्धि देनेवाला १५ अक्षर का मन्त्र है ३ व श्याम वर्णके रास क्रीडा करने में उत्सुक कृष्णच-न्द्रजी का ध्यान करते जोकि पीताम्बर ओढ़े हाथमें लिये बांसुरी मुखमें लगाये ४ नवीनयुवावस्थाको प्राप्त हाथसे अपनी प्रियाको

खींचरहेथे इस प्रकारके ध्यानमें नित्य तत्पर रहते सैकड़ोंकल्पके अन्तमें देहको छोड़ते ५ इन्हीं सुनन्दनामगोप मुनिके एक सुनन्दा नाम कन्या उत्पन्नहुई वह सुनन्दानाम बीणा नित्य हाथ में धारण कियेरहती ६ व एक और सत्यतपा नाम महाव्रतधारी मुनिथे वे शुष्कपत्र भक्षणकरते श्रेष्ठमनुको जपतेथे ७ स्वाहा अन्तमें व क्लीम् आदिमें ऐसा दशअक्षरका अर्थात् क्लीन्नमोवासुदेवाय स्वाहा इस मन्त्रको जपते व चित्रवेषधारी श्रीहरिकाध्यान करते ८ जोकि अपने दोनों हाथों से कङ्कणोंसेदेदीप्यमान लक्ष्मीजी के दोनों हाथ पकड़ेथे व बार २ नाच २ करउनको उन्मत्ततासे छपटतेथे ९ व बड़े ऊंचे स्वरसे हँसते थे व आनन्दकी लहरोंसेयुक्त थे वंशी धारणकिये जानुपर्य्यन्त वैजयंतीमाला पहिने थे १० व अपने मुखके पसीने से अपनी बनिताके मुखको सींचते थे सो ऐसे श्रीहरिकाध्यान वह महामुनि करताथा कि देहको छोड़कर ११ दशकल्पके पीछे नन्दवनमें वहमुनि सुभद्रनाम गोपकी सुभद्रानाम कन्या हुआ १२ जिसकन्याकी पीठमें दिव्यव्यजनका चिह्नबनाथा व एकहारिधामनाम कोई मुनिहुये १३ उन्होंने बड़ा तीव्र तपकिया कि नित्य वृक्षोंके एकपत्तेको खाते थे व शीघ्र सिद्धिकरनेवाले बीसअक्षरका मन्त्र नित्यजपते थे १४ जिस मन्त्रमें प्रथम कामबीज फिर मायाबीज फिर दो परमहंसपद १५ फिर वही दशाक्षरमन्त्र इसप्रकार बीसअक्षर होते हैं व माधवीलता के नीचे वृन्दावन में बैठेहुये कृष्णचन्द्रजीका ध्यान करते थे १६ जोकि कोमल पल्लवोंको बिछायेहुये उत्तानहोकर लेटेहुये बिराजतेथे व कभी किसी उन्मत्त गोपी को देखकर कामरक्तहोगये थे १७ व झट उस के दोनों कुचोंको अपने करकमलों से ढांक लियाथा व उसके मुखको चूँबकर फ़िर कपोलको तृप्तहुये ओठों से चूँबते थे १८ व फिर दोनों हाथोंसे उसअपनी प्रियाको अद्भुत आनन्दसेहासकरतेहुए एकान्त स्थानको खींचेलियेजातेथे सो वे मुनि बहुत देहोंको छोड़कर पीछे तीन कल्पके बाद १९ रङ्ग नाम गोपकी शुभलक्षण युक्त कन्याहुये तब रंगबेणी नामहुआ चित्रकारीके कर्ममें वहकन्या बहुत निपुण हुई २० जिसके दन्तोंमें सुवर्णके बिन्दु चित्रविचित्र दिखाई देते थे

व एक वेदवादी जाबालिनाम कोई बड़े मुनिहुये २१ वे योगी पृथ्वी पर तपकरतेहुये सदा घूमतेरहतेथे एकदिन घूमते २दशहजार योजन विस्तारवाले महाबनमें आये २२ अपने मनसे भ्रमण करतेहुये उन्होंने एकबड़ी सुन्दरबावली देखी जोकि सर्वत्र स्फटिक मणिसे जड़ी व स्वादिष्ठजलसे युक्तथी २३ जोकि फूलेहुये कमलोंकी सुगन्ध युक्त वायुसे युक्तथी उसके पश्चिमओर एक बरगदके नीचे २४ दारुण तपकरतीहुई किसी तापसीको देखा वह तरुणता को प्राप्तथी व रूपसे देखनेवालेके मनकोहरेलेती थी २५ चन्द्रमाके किरणके समान प्रकाशितथी व सब अंग उसके सुन्दरहीथे वाम हाथतो कटिकेनीचे कियेथी व दहिने हाथसे २६ ज्ञानमुद्राको धारणकिये थी व पलक नहीं मारतीथी एकटक देखतीही रहतीथी आहार व विहारको छोड़कर निश्चलहोकर ठहरीथी २७ उसके समाचार जाननेकी इच्छासे जाबालिमुनि सौवर्षतक वहां ठहरेरहे सौवर्ष के पीछे जब वह एकदिन उठकर वहांसे चली तब विनयपूर्वक मुनिने २८ उससे पूँछा कि तुम कौनहो व इस आश्चर्यरूप तप व रूपसे क्या कियाचाहती हो यदि कहना योग्यहो तो कृपासे हमसे कहनेके योग्यहो २९ यह सुनकर वह तपसे अतिदुर्बल बाला बोली कि जिसको योगीन्द्रलोग भी ढूंढ़तेरहतेहैं हम वही ब्रह्मविद्याहैं ३० सो हमने श्रीहरिके चरणकमलके पानेकी इच्छासे यह तपकियाहै व अबभी उन्हीं पुरुषोत्तमजीका ध्यानकरतीहुई ३१ इस घोरवनमें फिरती हैं व ब्रह्मानन्द से हम पूर्णहैं इससे प्रसन्न हमारीबुद्धि आनन्दितहै यद्यपि ऐसा है तथापि रविरूप कृष्णचन्द्रकीरति विना हम अपने आत्माको शून्य मानतीहैं ३२ अब इससमय हम इस देहके विसर्ज्जनकरनेमें अति विरक्तहोगईहैं व चाहती हैं कि इस पुण्यवापीमें इस शरीरको छोड़दें ३३ उसका ऐसावचन सुनकर मुनि अत्यन्त विस्मितहुये व उसके चरणोंपर गिरके कृष्णचन्द्रजीकी उपासनाका शुभविधान ३४ पूँछा तब परम प्रसन्नहोकर उसने अध्यात्मध्यान छोड़कर बताया व एक मन्त्रबताया उसका कहाहुआ मन्त्र जानकर मुनि मानस सरको चले गये ३५ वहां सबको विस्मय करानेवाला दुश्चर तपकिया एकपैरसे

खड़ेहोकर विना पलकमारे सूर्य्यकीओर देखतेरहे ३६ व उसका बताया हुआ २५ अक्षरका मन्त्र जपतेरहे व उसके बतायेहुये ध्यान से आनन्दरूपी श्रीकृष्णचन्द्रजीको ध्यावतेरहे ३७ ब्रजकीगलियोंमें अपनी लीलापूर्व्वक विचरतेहुये नन्दनन्दनजीका ध्यानकरते जोकि ललितपाद विन्यासोंसे पैंजनीको बजारहेथे ३८ व चित्रविचित्र कन्दर्पकी चेष्टाओंसे विस्मितहोकर कटाक्षोंको छोड़तेथे व सम्मोहिनी नाम वंशीसे पञ्चमस्वरका आलाप कररहेथे ३९ व वह वंशी कुन्दुरूके समानलाल ओष्ठोंको चूँबरहीथी व अपनेशब्दसे ब्रजकी स्त्रियों के मन हरतीथी ४० यहांतक कि शब्दके सुनतेही स्त्रियोंकी नीवी ढीलीहोजाती गिरती परती आकर माधवजीको लपटजातीथीं व आप दिव्यमाला वसन धारणकिये व दिव्यअनुलेपन लगायेहुयेथे ४१ श्यामअंगकी पूरीप्रभासे तीनोंलोकोंको मोहितकरातेथे इसप्रकार उन मुनिने बहुतदिनोंतक उनकृष्णचन्द्रजीकी उपासनाकी ४२ होते २ नव कल्पके पीछे मुनि गोकुलमें दिव्यरूपिणी कन्याहुये सो अतियशस्वी प्रचण्ड नाम गोपकी ४३ चित्रगन्धा इसनामसे प्रसिद्ध सुकुमारी शुभमुखी कन्या मुनिहुये व वह कन्या अपने अंगोंके गन्धोंसे दशदिशाओंको मोदित करातीथी ४४ व मधुपीनेवाली कल्याणयुक्त उसको देखके झुण्डके झुण्ड उसके अंगोंमेंमारे सुगन्धके भ्रमरसमूह उड़ २ कर लपटतेथे ४५ व उसके स्तनोंमें छपटजाते व हारसे सब दबकर मरजाते व वक्षस्थलसे चूतेहुये विचित्र गन्धके साथ गिरपड़तेथे ४६ व निरन्तर पवित्रमनवाले और भी मुनिश्रेष्ठलोग तप करते वायुभक्षणकरके परममनुको जपते ४७ ये कृष्णचन्द्रजीका परमोत्तम क्लींकृष्णायकामात्तिकालादिवृत्तिशालिने इस १५ अक्षरकेमंत्र को आग्नेयी सहितकरके जपते ४८ व दिव्यभूषण वस्त्र धारणकिये श्रीकृष्णचन्द्रजी की मूर्त्तिका श्रेष्ठमुनि ध्यानकरते व दिव्य चित्रविचित्र रेशमीकपड़ेसे जिनकी कटिभरीहुई ४९ व मयूरपिच्छोंसे शिरकेबाल गूँथेहुयेथे श्रेष्ठकुण्डल धारणकिये बाईंजांघके ऊपर दाहनेकमलरूपी चरणको धरेहुये ५० हाथमें दोकमल लियेहुये गोकुलमें भ्रमण करने लगे कन्याके रूपमें बगलमें एकबांसुरी दबायेरहती व उसे बजाकर ५१

गोपियों के नयनों व मनोंको आनन्दित कराती व परम आश्चर्यरूप से एकसमय रंगमण्डपमें प्रविष्टहुई ५२ उसके ऊपर सब ओरसे सब गोपियोंने पुष्पोंकी बर्षाकी इसप्रकार वे मुनिलोग व वह गोप-कन्या देहान्तरमें फिर वृन्दावनमें उत्पन्नहुई ५३ हे पार्व्वति! वे वेही हैं जिनके कानोंमें रत्नोंसे बनेहुये ताटङ्क नाम भूषण लटकते देखती हो व कण्ठोंमें रत्नोंकी माला व वेणियों में रत्नोंके पुष्प देखतीहो ५४ व एक मुनिका शुचिश्रवा दूसरेका सुवर्ण नाम था. ये दोनों वेदपार-गन्ता थे व कुशध्वज ब्रह्मर्षिके पुत्रथे ५५ दोनों ऊपरको पादकर तपकरते व तीनअक्षरका मन्त्र जपते ह्रींहंसः यही तीनअक्षर का मन्त्र है जिसे वे दोनों मुनिपुत्र निश्चलमनकरके जपते थे ५६ व गोकुलमें बिहरतेहुये दशबर्ष के बालकृष्णका ध्यान करते जोकि तरुणतासे ललितकन्दर्प्पसमरूप से युक्त ५७ व देखती हुई बिम्ब फलसमान लालओष्ठवाली व्रजबालाओंको मोहितकरातेथे वे दोनों मुनि एककल्पके पीछे शरीरछोड़कर ब्रजमें जन्मे ५८ व सुबीरनाम गोपकी परमशोभन दो कन्याहुये हे पार्व्वति! जिन दोनोंके हाथों में हरिद्राकी लकीर दिखाईदेती है ५९ जटिल-जंघ-पूत-घृताशी-कर्बुर वे वेही दोनों हैं व बाल जिनके पक्के जम्बूके फलों से भी कालेहैं व चार और ये मुनिलोग इसलोक व परलोक दोनोंमें धन्यहैं निस्पृह हैं ६० ये गोपीनाथजी के केवल एकभावहीसे प्रसन्नरहतेहैं व इन लोगोंने जलके भीतर बुड्डीमारकर बहुतदिनों तक मानससरमें तप कियाहै व उत्तम मनुको जपाहै ६१ रमात्रयसे संपुटितस्मराद्येत दशअक्षरका मन्त्रजपाहै व गोपियोंके संग वनवनमें फिरतेहुये ६२ व नाचते गातेहुये व मनोहररूप धारणकियेहुये गोपालजीका ध्यान करते थे व चन्दन सर्व्वांगोंमें लगायेहुये दुपहरीके पुष्पोंको शिरो-भूषण बनाये थे ६३ व कमलके पुष्पोंकी मालाधारण कियेव नील-पीतवसनसे आच्छादितथे सो वे चार मुनि तीन कल्पके पीछे गो-कुलमें उत्पन्नहुये व शुभलक्षण युक्तहुये ६४ सो हे पार्व्वति! जो ये नीचे को भौंहेंकिये उत्तम आगेबैठीहैं वेहीहैं व जिनके बाल्यावस्था के कङ्कण जोकि रत्नादिकोंसे चित्र विचित्रहैं प्रकोष्ठमें शोभायमान

होरहे हैं ६५ व दिव्य मुक्ताफलों के हारोंसे शोभाहोरही है व एकपूर्व्व कल्पमें दीर्घतपानाम मुनिहुये ६६ उनके पुत्रका शुक ऐसानाम हुआ ये शुकजी मुनियोंमें श्रेष्ठ व सुबुद्धि थे वेभी महाप्राज्ञजी बालभावहीसे श्रीकृष्णचन्द्रजी के पदोंकास्मरण करनेलगे ६७ पिता व माताको विरहमेंडालकर कृष्णचन्द्रके ध्यानकरने के लिये वनकोचलेगये व मानस तीर्थमेंजाकर दिव्यपूजा सामग्री से रात्रिदिन ६८ अनाहाररहकर गोपरूपी महेश्वर श्रीकृष्णचन्द्रजीकी पूजाकरनेलगे व श्रीम् इस लक्ष्मीबीजसे सम्पुटितकरके अष्टादशाक्षर मन्त्र जपने लगे ६९ व परमभावसे सुवर्ण के वृक्षकेनीचे बैठेहुये श्रीहरिकाध्यान करनेलगे जोकि सुवर्णके मण्डपमें सुवर्णही के सिंहासनपरबैठेहुये ७० सुवर्णकी बंशी सुवर्णरूपीहाथमें लिये थे व दहिनेहाथमें सुवर्णकाकमल लिये नचारहेथे ७१ व सुवर्णकापानी प्रियाजी अन्यचित्रविचित्र बस्तुओं समेत अंगों में लगाती थीं व हर्षसे हँसतेजाते थे व अपने आश्रमको देखतेजाते थे ७२ आनन्द रूपी आंसूबहरहे थे देहमें पुलकावलीहोरहीथी हे स्वामी! प्रसन्नहो ऐसा उच्चप्रकारसे कहतेहुए त्रैलोक्यनाथके प्रणामके वास्ते कांपते हुए पृथ्वीपरलेटगये ७३ भक्तिकीकामनासे पृथ्वीपरपड़े हुए से हम आगये यह उच्चस्वरसे कहतेहुए दण्डप्रणाम करतेहुए के दोनोंहाथ पकड़कर आनन्द दृष्टिसे देखतेहुए उसको स्पर्शकिया ७४ व प्रिया रूप धारणकियेहुए शुकसे भगवान् बोले कि हे भद्रे! तुमहमारे अतिप्यारीहो इससे सदा हमारेपास टिकीरहो ७५ व हमारे रूपका ध्यानकरतीहुई हमारे प्रेमपदको प्राप्तहोगी व दो मुख्यतम गोपियां भी उन्हींकीअवस्थाकी ७६ व उनमें एकका एकव्रता एकनिष्ठा व दूसरी का एकनक्षत्रा नाम था व तीसरी और सुवर्णके रङ्गवाली तडित्प्रभा नामकी थी ७७ उनमें एकतो औंघारहीथी व दूसरी सुन्दर विस्तृतनेत्र किये देखरहीथी व वह परमभक्तिसे श्रीहरिका दहिना हाथपकड़े पूजाकररही थी ७८ सो ऐसे हरिके ध्यान करनेवाले वे मुनि कल्पान्तमें देहछोड़कर गोकुलमें महात्मा उपनन्दकी कन्या जिस की नील कमलदलकीसी छबिहै हुई ७९ वही यह श्रीकृष्णचन्द्रजी

की वनिता हुई जो पीतरंगकीसारी पहिनेहै व सुवर्णकुम्भ सम स्तनों पर लालरंगकी चोली धारणकियेहुये है ८० व लाल सिन्दूर धारण किये व सर्व्वाङ्गों से शोभित होरहीहै व सुवर्णके कुण्डल कपोलोंपर चमकते हैं ८१ व सुवर्णके कमलोंके पुष्पोंकी माला पहिने स्तनोंमें कुंकुम लगाये बैठीहै व जिसके हाथपर कृष्णचन्द्र का दियाहुआ पानकाबीड़ा धरा है ८२ व बेणुबजाने में अति निपुणहै व इसी से केशवको अति सन्तुष्ट करतीहै व कभी गानेमें सन्तुष्ट होकर श्रीकृष्णचन्द्रजी ने ८३ व प्रसन्न होहोकर शङ्खाकार चढ़ाउतार इसकेगले में घुँघुचियोंकी माला हरिने पहिनादी है व कृष्णचन्द्रजीके परोक्ष में यह कृष्णचन्द्रकी कांताकामसे पीड़ितहोकर ८४ गाती बजातीहुई सखियोंकेसाथ सुन्दरस्वर मिलाकर अपनेप्रियकावेष बनाकर इसबधू को नचाती है ८५ व बार२ इसको गोविंदके भावसे आलिङ्गनकरके चूँबती है यहसब गोपियोंको भी प्रियहै व कृष्णचन्द्रजीको तो अत्यन्त प्रियहै ८६ व श्वेतकेतु का कोई वेदवेदांग पारग पुत्र सबको छोड़कर प्रचण्ड तपकरनेलगा ८७ व मुरारिके सेवितपद सुधासम मधुर शब्द करनेवाली श्रीगोविन्दजी की शक्तिका ध्यानकरनेलगा जोकि ब्रह्मरुद्रादिकों को भी दुर्लभ है ८८ व एक भाव से मनोहर लक्ष्मीको भजतीहै सो ऐसा ध्यानकरके ११ अक्षरका मन्त्र जपनेलगा ८९ सर्व हास्य करके अपनी कान्तिसे सर्वत्र नगनको सुगन्धित करातीहुई व वनमार्गमें हंसतीहुई ९० इसप्रकार जपते जपते दो कल्पके पीछे सिद्धहोकर व मन्त्रकीचिन्तना करते करते उसनेभी इस गोकुल में जन्म पाया ९१ वह बालावान्की पुत्रीहुई जिस के अङ्ग अतिकृश हैं व कुण्डलाकार गोलस्तन हैं गलेमें मुक्ताओंकी माला धारण करती है व शुद्धरेशमी वस्त्र धारणकियेहै ९२ व मोती गुहेहुये कङ्कण बहूंटे व पैंजनी मुद्रिका पहिनेहै व अमृत चूतेहुये दिव्य कुण्डल धारणकिये ९३ व कस्तूरी का तिलक लगाये है उसके बीचमें सिन्दूरका बिन्दु लगायेहै व चन्दनके बिन्दुओं के साथ मस्तकपर चित्रबिचित्र मकरिकापत्र बनाये है ९४ यह जो दिखाईदेतीहै बस परमपद कृष्णचन्द्रहीको जपाकरती है एक अति प्रिय दर्शन चन्द्र-

प्रभनाम राजर्षि हुये ९५ उनके कृष्णचन्द्रजी के प्रसाद से मधुर आकृतिका चित्रध्वजनाम पुत्रहुआ जोकि कुमार अवस्थाहीसे वैष्णव हुआ ९६ अपने उस बारहवर्षकी अवस्थाके उस पुत्रको उस राजा ने ब्राह्मणोंको बुलाकर १८ अक्षरका मन्त्र सुनवाया ९७ व अमृतमय मन्त्रोंसे पवित्रजलसे अभिषेक करवाया उससमय अश्रुयुक्त नेत्रोंसे युक्त उसपुत्रने प्रेमसे राजाको नमस्कारकिया ९८ व राजा उस दिन अपने पुत्रको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ व उसदिन जब वहबालक पवित्रवस्त्र धारणकरके हार नूपुर ग्रैवेयक अङ्गदादि भूषणोंसे ९९ भूषितहुआ व श्रीहरिकी अमल भक्तिसे भूषितहोने के कारण और भी शोभितहुआ व विष्णुके मन्दिरमें जाकर एकान्त में चिन्ताकरनेलगा १०० कि गोपियों को मोहनेवाले उन कृष्णचन्द्रजी को मैं कैसे भजूं व यमुनाके तीरपर वनमें गोपवधूटियों के सङ्ग क्रीड़ा करतेहुये उनको कैसेदेखूं १०१ इसमति से आकुलमतिहो वह बालक चिन्तनाकरनेलगा व स्वप्न में उसने परमविद्या पाई १०२ व उसी विष्णुमन्दिरमें कृष्णचन्द्रजी की एक शुभ प्रतिमा थी वह शिलामयी प्रतिमा शुभलक्षणों से लक्षित थी १०३ वह इन्दीवर दल तुल्य श्यामहोगई व नीकनी सुन्दरता से युक्तहुई त्रिभंग ललित आकार से युक्त मयूरपिच्छको भूषण बनाये १०४ सुवर्णकी बीणा ओठोंपर धरके मधुरशब्द निकालनेलगी व उसमूर्त्तिके दक्षिण बाम ओर दो सुन्दरियां सेवा करतीहुई दिखाईदीं १०५ व कृष्णमूर्त्ति उनदोनों स्त्रियोंको चुम्बन श्लेषणादि से कामको बढ़ातीहुई दिखाई दी चित्रध्वजइस वेषको धारणकिये कृष्णचन्द्रजी को बिलास करतेहुये देखकर १०६ लज्जितमन होकर शिर भुकाकर आगे खड़ाहोरहा तब दहिनी ओर खड़ीहुई अपनीप्रिया से हंसतेहुए श्रीहरि बोले १०७ कि लज्जा सहित यह पुरुष जो आगे खड़ाहै इससे अपने शरीर के तुल्य शरीरवाला बनादेओ जिसमेंतुम्हारेही समान इसका भी दिव्य युवतीका अद्भुत रूपहोजाय १०८ हे मृगलोचने! इसके व हमारे शरीरमें भेद न समझो व जैसे तुम इसका स्पर्श करोगी वैसेही यह तुम्हारे रूपकाहोजायगा १०९ यह सुनकर वह कमलनयनी चित्रध्व-

जके समीपको गई व अपने अङ्गोंसे उसके अङ्गों की अभेदताका ध्यान करतीहुई उसमें मिलकर खड़ीहुई ११० बस उस युवतीके सबतेज चित्रध्वजके अङ्ग २में प्रविष्टहोगये उसीकेस्तनोंके आकार के पीन सुन्दर स्तनहोगये १११ व उसीकेसे पश्चाद्भाग भारीहोगये व श्रोणि तटादिक सब उसीके ज्योतिसे तुल्यहोगये उसके केशोंकी ज्योति से वैसेही केशहोगये व हाथोंके तेजसे हाथ पैरोंके तेजसे पैर ११२ बहुत कौनकहे सबअङ्ग सबभूषण वस्त्र उसके तेजसे उसीके समान चित्रध्वज के होगये व उसकी सब कलाओं में व सुन्दर आत्मायुक्त भी वह चित्रध्वजरूपिणी स्त्री कुशलहुई ११३ जैसे दीपकसे जला-कर दूसरादीपक उसीस्थानपर रखने से देखने में एकसाही होजाता है ऐसेही वह राजकुमार पृथ्वीमें स्त्री रूप होगया अब चित्रध्वजभी लज्जा पूर्वक मन्द मन्द मुसुकाकर मनोहर शोभा को प्रगट करने लगा व ११४ प्रेम से उसकेहाथ पकड़कर वह प्रियसखी खींचकर आनन्दसे श्रीकृष्णचन्द्रजी के समीपको लेगई व गोविन्दजीके वाम पार्श्वमें स्थितहोकर व प्रियाको छपटकर ११५ बोली कि यह आपकी नईदासी आईहै इसका कुछ नाम धराइये व अपनी रुचिके अनु-सार इसप्रियाके लिये कुछ सेवाभी बताइये जो यह करतीरहै ११६ तब कृष्णचन्द्रजीने कहा इसका चित्र कलाओंसेयुक्त अपने तेजसे चारुविपञ्चिका नामहै व सेवाकेवास्ते विपञ्चिका को पकड़कर कहा ११७ बस बीणाहाथमें लिये सदाबिविध स्वरोंसे हमारे निकट ठ-हरीहुई गानकरतीरहै तब उससखीने चित्रध्वजसे कहा कि बस हे गुणात्मन्! अब तुम हमारे प्राणनाथ के गुणगायाकरो यही तुम्हारे लिये विधि विहित है ११८ इसकेपीछे श्रीमाधवजी के वह चित्रध्व-ज नमस्कारकरके व आज्ञालेकर व चरणों की रज उसप्रियाके स-काश से लेकर ११९ व फिर उसने अति मधुरगीत कृष्णचन्द्र व उनकी प्रिय सखी के आनन्दका कारणगाया तब आनन्दमूर्त्ति श्री-कृष्णचन्द्रजी ने अपने सर्व्वाङ्गों में उसके सर्वाङ्ग यथोचित मिला-लिये १२० बस वह जैसेही इस सुखसमुद्र में मग्न हुई कि वैसेही जागउठी मानो सोगई थी व फिर चित्रध्वज पुरुष महाप्रेमसे वि-

हाल कामसेव्याकुल होगया १२१ व उन परमानन्दका स्मरणकरके बड़ेऊँचे स्वरसे रोदन करनेलगा व तबसे हरिकेसङ्ग उसी रीति से विहार करने के लिये रोदन करतारहा १२२ पिता आदि कोई कुछ पूँछेंभी पर वह कुछभी उत्तर न देवे इसप्रकार एक मासभर अपने घर में रहा पर चित्त कृष्णचन्द्रहीमें लगायेरहा १२३ व मासभरके पीछे अर्द्धरात्रमें गृहसे निकलकर बनको चलागया व मुनियों को भी दुष्कर तप करनेलगा एककल्पकेपीछे तपकरके अपने शरीरको छोड़कर वह महामुनि १२४ वीर गुहनाम गोपकी कन्याहुआ व चित्रकला उसका नामहुआ जिसके कांधेपर मनोहर १२५ विपञ्ची नित्य दिखाईदेती है व निषादादि सातस्वरों से भूषित बीणा सदाहाथ में लिये वह सदा कृष्णचन्द्रजीके बाईंतरफ बैठीहै १२६ व दाहनेहाथ में रत्नयुक्त ग्रहधारणकिये है और ये पूर्वसमयमें सब तपस्वियों से वन्दितथे १२७ बामओर खड़ीहै व दहिनेहाथसे सुराहीसे थोड़ा२ जलछोड़ती हैं यह पूर्वजन्म में कश्यपके वंशमें सब धर्मकाजानने वाला पुण्यश्रवा नाम मुनिथा इसका पिता बड़ा शैवथा नित्य शतरुद्रीय पढ़ताथा १२८ व विश्वेश भक्तवत्सल देवदेव महादेवकी स्तुतिकरताथा उसके ऊपर पार्व्वती सहित भगवान् शंकरजी प्रसन्नहुये १२९ चतुर्दशीकी अर्द्धरात्रमें प्रत्यक्षहोकर उन्होंने उसे वर दिया कि तेरापुत्र बालावस्थाही से श्रीकृष्णचन्द्रजीका भक्तहोगा १३० सोआंठयें बर्षमें उस अपने पुत्रका यज्ञोपवीत करके जो हम सिद्ध यह २१ अक्षरका मन्त्र तुमसे कहते हैं वह उसे सुनवादेना १३१ क्लीं ह्रीं श्रीं ह्रैं ऐं नमो भगवते गोपीशाय ऐं ह्रैं श्रीं ह्रीं क्लीं मोम् । बसयह २१ अक्षरका मन्त्र है बाणीका सिद्धिदायक गोपाल विद्यानाम यह मन्त्र है यह अद्भुत लीलाचरित्र जिह्वाके अग्रसे साधनयोग्य है १३२ क्योंकि इससे अनन्तमूर्त्ति बरदान देनेवाले आपहीआते हैं काममाया लक्ष्मीकण्ठ इन्द्रादिकों सहित देदीप्यमान दामोदर १३३ बीचमें दशाक्षरी कहिके फिर उसेकहते हैं अब दशाक्षरीमें कहाहुआ जो इसका ऋष्यादि ध्यानहै उसेकहते हैं १३४ पूर्ण अमृत समुद्रके मध्यमें ज्योतिर्म्मय द्वीपका स्मरण करे उसके

बीचमें यमुना से घिरेहुये वृन्दाबननाम बनका ध्यानकरे १३५ जो कि सब ऋतुओंमें पुष्प झरनेवाले वृक्षलताओं से सदा भरारहता है व जिसमें मत्तमयूर नाचते रहते व कोकिल भ्रमरगाते रहते हैं १३६ उसके मध्यमें एकबड़ाभारी कल्पवृक्ष है वह शाखा उपशाखाओंके बिस्तारोंसे सौ योजनका ऊँचाहै १३७ उसके विमल नीचे धेनुओंका मण्डल चारों दिशाओंसे घेरेहुये है उसके मध्यमें बन्शी शृंगादि बजानेवाले बालकोंका मण्डल है १३८ उसके बीचमें व्रजबासियोंकी सुन्दर भौंहोंवाली स्त्रियोंका रुचिर मण्डलहै जोकि नानाप्रकारके उपायनोंकी वस्तु अपने हाथोंमें लिये हुये हैं व मद से चित्त विह्वल है १३९ हाथजोड़े सब उजले वस्त्र धारणकिये हैं व शुक्लही सब भूषणभी धारणकियेहुये प्रेमसे विह्वल होरहे हैं उनका मण्डलहै १४० उनके बीचमें सैकड़ों गातीहुई कन्याओंका स्मरणकरे व रत्नोंकी वेदीपर बैठेहुये रेशमी कपड़े पहने श्रीहरिका ध्यानकरे १४१ व राधाजीकी केलाकेवृक्षकी तुल्य ऊरुपर शिरधरे शयनकरते हुए व राधिकाजीका ध्यानकरे १४२ व कुछ सिकोड़े हुये बायें चरणको बन्शीसहित बायें हाथसे अपनी प्रियतमाको आलिंगित करके उसका चिबुक छूतेहुये १४३ श्रीहरिका ध्यानकरे मनोहर चन्द्राकार मुस्कीयुक्त मुखदेखतेहुये श्रीकृष्णचन्द्रजीका जोकि महामरकत मणिकीनाईं रंगके व मुक्ताओंकी माला धारणकिये कमलदल समान विशालनेत्रवाले व पीत निर्म्मलवस्त्रपहिनेहों १४४ व मयूरपिच्छका मुकुटबनाये मनोहर गजमुक्ताओंका हार धारणकियेहों व जिनके गण्डस्थलोंपर मकराकृत सुन्दर कुण्डल चमकतेहों १४५ व गलेसे चरणपर्य्यन्त तुलसीकीमाला धारणकिये व कङ्कण अङ्गदादि पहि मुँदरियों व पैंजनियोंसे क्षुद्रघण्टिकासेशोभित १४६ कुमारतनु वा किशोरअवस्थाको प्राप्त हरिकीपूजा सदा उसीपूर्व्वोक्त दशअक्षरके से करनीचाहिये १४७ इतनाकहकर देवदेव महादेव व गिरिजा व दोनों अन्तर्द्धान होगये व मुनिने आकर अपने पुत्रसे जैसा महादेजीने बताया वैसाही उपदेशकिया १४८ व पुण्यश्रवा मुनिने उस शवजीके पुण्य मन्त्रका ग्रहण किया व सब मुनीश्वरोंसे सबको जं

कर इसमन्त्रका वर्णनकिया १४९ जैसा कि भगवान्‌का रूप लावण्य युक्त अपूर्व्व सौन्दर्य्य लक्षणसेयुक्त श्रीकृष्णचन्द्रजी का रूप महादेवजी से सुना व फिर देखकर बालक बहुत हर्षित मनहोकर गृहसे निकल खड़ाहुआ १५० व वायुभक्षण करतेहुये तीसकल्प तक तप करतारहा उसके पीछे गोकुलमें नन्दके भाईके गृहमेंआकर १५१ लवंगानाम उसकी कन्याहुआ जबसे वह कन्या उत्पन्नहुई सब चेष्टा व निरीक्षण कृष्णचन्द्रहीमें लगायेरही सो जिसके हाथमें मुखपोंछने का यन्त्र दिखाई देताहै १५२ यह वही लवंगा है हे पार्व्वति! इस प्रकार कोई २ प्रधान कृष्णचन्द्रजी की वल्लभाओं की कथा हमने तुमसे कही १५३ ॥

चौपै० । व्रज वरगत नारी विविध विहारी वरमुखधारीगीता ।
युतयह अध्याया तजि सब माया जोनर पढ़िहि पुनीता ॥
अथ भक्ति दृढ़ाई जो नरभाई काहु पढ़ाइहि नीके ।
वहनरवर ज्ञानी हरिजनिधानी जाइहिसबविधिठीके १५४

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेवृन्दावनमाहात्म्ये द्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय ॥

दो० । कह्यो तिहत्तरयें महँ कृष्ण व्यास सम्वाद ॥
जहँ प्रधान निजरूप हरिमुनि लषावगतवाद १

ईश्वरजी पार्व्वतीजीसे बोले कि जो आश्चर्य्य तुमने पूँछा हमने सब क्रमसेकहा परन्तु जिस आश्चर्य्यमें ब्रह्मादि देव मोहित होतेहैं वहां कौन नहींमोहितहोता १ यद्यपि कृष्णचन्द्रजीके रहस्योंकाकहना कठिनहै पर जिसरीतिसे महर्षिजी ने विष्णु व शिवकी भक्तिसे भूषित महाराज अम्बरीषजीसे कहाहै हम उसीरीतिसे कहते हैं २ बदरिकाश्रममें जाकर बैठेहुये जितेन्द्रिय वेदव्यासजी के प्रणामकरके विष्णु धर्म्मजाननेके विचारसे राजाअम्बरीषजीने ३ पुरुषोत्तम वेदव्यासजीसेपूँछा कि मुझकोतुम दुष्पारसंसारसे पवित्रकरने के योग्य हो ४ मैं सब विषयोंसे विरक्त होगयाहूं इससे सबसंसार के सम्पूर्ण विषयोंके नमस्कार करताहूं जो अनुद्विग्न सच्चिदानन्द रूप परमपद

है ५ जिसकोपरब्रह्म पर आकाशअनाकाश अनामयकहते हैं व जिस के साक्षात्कार होनेसे मुनिलोग भवसागरको तरतेहैं ६ मैं वहां नित्य मनकी कैसे गतिपाऊं इसका उपाय कोई आप मुझसे कृपापूर्व्वक बतावें वेदव्यासजी बोले कि तुमने तो अति गोप्यवस्तु हमसेपूँछा जोकि हमनेकभी और किसकोकहें कभी अपने परमप्रिय पुत्र शुका-चार्य्यसेभी नहीं ७ कहा परन्तु हे हरिप्रिय! अब तुमसे कहेंगे यह विश्व जिसका रूपहै व जिसमेंही यह सब प्रविष्टहोजाताहै ८ व उस अव्याकृत नाश व व्यथारहित ईश्वरमयको सुनो हमने पूर्व्वकालमें बहुत सहस्रोंवर्षोंतक तपकिया ९ फल मूल पत्र जल व वायुकाही आहार करतेथे तब अपने ध्यानमें निरत जानकर श्रीहरि हमसे बोले कि १० हे महामते! किस अर्थके करनेकी तुमको इच्छा है वा क्या जाननेकी इच्छाहै हम प्रसन्नहैं जो चाहो बरदेनेवालोंमें श्रेष्ठ हमसे बरमांगो ११ हमारे दर्शनहीतक यह संसारजीवको होताहै यहतुम से सत्यही कहतेहैं तब हम पुलकित शरीरहोकर कृष्णचन्द्रजीसे बोले कि १२ हे मधुसूदन! हम तुमको अपने दोनों नेत्रोंसे देखना चाहतेहैं परजो आपकारूप सत्य परब्रह्म जगज्ज्योति जगत्पति कहाताहै १३ व वेदवादीलोग कहतेहैं कि वह अरूपहै पर हम अपने नेत्रोंसे देखा चाहते हैं सो वह अद्भुतरूप कौनसाहै श्रीभगवान् बोले कि पूर्व्व-काल में ब्रह्माने भी हमसे ऐसेही प्रार्थना किया व पूँछा था १४ सो जो हमने उनसे कहा था वही तुमसे कहते हैं कोई कोई तो हमको प्रकृति कहते हैं व पुरुष और ईश्वर कहतेहैं १५ व कोई २ धर्म्म कहतेहैं कोई धन कोई मोक्ष व कोई अकुतोभय कहते हैं कोई शून्य कहते कोई अभाव कोई शिव व कोई सदाशिव कहतेहैं १६ व अ-न्यलोग वेदके शिर पर स्थित एक सनातन कहतेहैं व कोई सद्भाव बिकारहीन सच्चिदानन्द शरीर कहतेहैं १७ परन्तु तुमदेखो जो वेदों में भी गुप्तहमारा शरीरहै वह तुमको दिखातेहैं इतनाकहतेही हे भूप! हमनेसजल जलदश्यामगोप कन्याओंकेबीचमेंखड़े गोपोंके बालकों के साथ गोपरूप हँसतेहुये कृष्णचन्द्रजीको कदम्बके १८ नीचेबैठेहुये अद्भुतपीताम्बरओढ़े १९ देखा फिर नवीनपल्लवोंसेमण्डित बृन्दाब

नाम वनदेखा जोकि कोकिल व भ्रमरोंके शब्दोंसे कामके भी मनको हररहाथा २० फिर उसके किनारेपर बहतीहुई इन्दीवर नाम कमल के रंगकेश्याम निर्म्मल जलसे पूर्ण यमुनानाम नदीकोदेखा व फिर कृष्णरामके हाथोंसे उठायाहुआ गोबर्द्धननाम पर्व्वतकोदेखा २१ जोकि महेन्द्र के अहङ्कारके नाशने के लिये गौओं व गोपालोंको सुखदेरहाहै फिर उसीगोबर्द्धनपर अबलाओंकेसंग हर्षितबंशीबजाते हुये गोपालजी को २२ देखकर जोकि सब भूषणोंसे भूषित थे अ-त्यन्त हर्षितहुये तब वृन्दावनमें बिचरतेहुये श्रीभगवान् हमसे आप बोले २३ कि जो यह सनातन दिव्यरूप तुमने हमारा देखाहै जो कि निष्फल व निष्क्रिय व शान्त सच्चिदानन्दविग्रह २४ पूर्ण पद्मपत्र विशालनयन है बस इससे परतर अन्य कोई हमारा रूप नहींहै इसीरूपको वेद सबकारणों का कारण कहतेहैं २५ यही सत्य पर आनन्दरूप अविच्छिन्न निरन्तर व शिवरूप है व नित्य इस हमारी मथुरापुरी व बृन्दावन वनकोजानो २६ व यमुना गोप कन्या तथा गोपालों के बालक इनसबोंको नित्यहीजानो व हमारा यह अवतार नित्य है इस विषयमें संशय न करना २७ व हमको राधा सदा इष्टहैं व हम सर्व्वज्ञ परसेभी परहैं व सबके कारण सबके ईश सबके आनन्द परसेपर २८ व हममें यह सब विश्व मायाविजृम्भित दिखाईदेता है इसके पीछे जगत् के कारणोंके कारण देवदेवसे हम बोले २९ कि ये गोपियां पूर्वजन्मकी कौनहैं गोप कौनहैं व ये वृक्ष कौन हैं व कोकिलादिकोंसेयुक्त यहबन क्या है यह नदीक्याहै व यहपहाड़ कौनहै ३० व लोककी आनन्द का एक महाभाग्यवाला पात्र यह वंशीकौनहै तब भगवान् प्रसन्न कमल रूपी मुखहोकर हमसे बोले ३१ कि ये सब गोपियां वेदोंकी श्रुतियांहैं व सब गोपकन्या ऋचायेंहैं हे राजेन्द्र! जेमुक्तिकीइच्छाकरके तपकरतेहैं उनको देवकन्या जानो ३२ व गोपसब बैकुण्ठ आनन्दमूर्त्ति मुनिलोग हैं जितने कदम्बके वृक्ष इस बनमें हैं वे सब परमानन्दकापात्र कल्पवृक्षहैं ३३ व यह बन आनन्दनाम महापातकनाशन वनहै व सिद्ध साध्य गंधर्वादिक इसवनमें कोकिलादिक हुयेहैं उनमें कोई २ आनन्दरूपी नो साक्षात्

यमुनाके तनुहैं व यह अनादि पर्वत गोबर्द्धन पूर्वजन्मका हरिदास है इसमें कुछ संशय नहींहै ३४।३५ व जो यह बेणुहै हे विप्र! सुनो तुम कोभी विदितहै यह पूर्वजन्मका शान्तमनवाला व तपस्या व शांति में परायण एक ब्राह्मणहै ३६ कर्म्मकाण्डमें बड़ा विशारद था व देवव्रत इसका नाम था वह क्रियापर वैष्णव जनों के बीचमें ३७ हे राजन्! उसने कभी यह सुना कि यज्ञेश कोईहै दैवयोग से उसके गृहमें हमारी भक्ति में निश्चय कियेहुये एक हमाराभक्त आया ३८ वा उसके गृहमें उसने तुलसीदल जल में डालकर हमारी पूजा की व फल मूलादि हमारे अर्पणकिया ३९ थोड़ासा चरणामृत व नैवेद्य लगायेहुये फल मूल प्रीतिपूर्वक उस ब्राह्मणको भी दिया परन्तु उस ब्राह्मणने अश्रद्धा से हँसता हुआ उसकाग्रहण किया ४० उसी पापसे अतिदारुण बांसहुआ परन्तु जोकि उस ने तुलसीदल मिश्रित हमारा चरणोदक व नैवेद्य के फल मूलखाये उसके पुण्य से हम को बांसकी जाति में बहुतप्रिय हुआ ४१ इसीसे इस बन में यह बांस सब बृक्षोंसे ऊँचा विराजता है अभी नहीं युग के अन्त में यह विष्णु में तत्पर होकर ब्रह्ममें लीन होजायगा ४२ बड़े आश्चर्य्य की बात है कि दुराशयवाले मनुष्य इस सनातनी सुरेन्द्र नागेन्द्र व मुनीन्द्रों से सेवित मनोरम हमारी मथुरापुरी को नहीं जानते ४३ यद्यपि काशी आदि और भी पुरियांहैं परन्तु उनके मध्यमें मथुरापुरीही धन्यहै जोकि जन्मलेने यज्ञोपवीतकरने मरने व दाहकरने से मनुष्योंको चारप्रकारकी मुक्तिदेती है ४४ जब पुरुष तपस्या ध्यान ज्ञानादिमें तत्परहोकर विशुद्ध होजाते हैं आशय शुभ होजातेहैं जिनके निरन्तर ध्यानही धनहोजाताहै तभी हमारी इस मथुरापुरीको देखतेहैं अन्यथा सैकड़ों कल्पतक नहीं देखते हैं ४५ मथुराबासी धन्यहैं व देवताओंको भी मान्यहैं क्योंकि उनकी असंख्य महिमाहै व साक्षात् सब हमारी चतुर्भुजी मूर्त्तियां हैं ४६ व मथुराबासियोंके जो मनुष्य दोष देखते हैं उनके दोष सहस्रजन्मतक यमराज देखा करते हैं ४७ व दरिद्री पुरुषभी धन्यहैं जो मथुराका स्मरण करते हैं जहां कि भूतेश्वरदेव पापियोंको भी मोक्षदेते हैं ४८ ये भूतेश्वरदेव

हमारे प्रियतमहैं जोकि हमारी प्रीतिके लिये इसपुरीको कभी नहीं छोड़ते ४९ जो दुष्कर्म्म करनेवाला मनुष्य इसपुरीमें स्थित भूतेश्वर के न नमस्कार करताहै न उनका पूजन व स्मरणकरताहै वह इस महापुरी मथुराको नहींदेखता जोकि अपनेही से प्रकाश पर देवरूप विराजतेहैं ५० वहपापी पुरुषकैसे हमारी भक्ति पासक्ता है जोकि हमारेपरमभक्त शिवकी पूजा नहींकरता ५१ जो भूतेश्वरके न नमस्कार करतेहैं न उनका स्मरणकरतेहैं न उनकीस्तुति करते हैं प्रायः उन अधमपुरुषोंकी बुद्धि हमारी मायासे हतहोजाती है ५२ बालक ध्रुवभी जिस मथुरापुरीमें आकर हमारे समाराधन में तत्परहोकर परमशुद्ध स्थानको प्राप्तहुये जोकि उनके पितामह राजा स्वयम्भूमनु को भी यत्नसे युक्त हुआथा ५३ ॥

चौ० त्यहिमथुरा पुरवरको पाई। जो सबविधि सुरदुर्लभगाई॥
अन्ध खञ्ज वा पूरुषप्राना। तजतलहत ममधाममहाना १। ५४
महाभाग सुनि वेदव्यासा। नहिं संशयकसुँ करब प्रकासा॥
जो रहस्य तुमसनहमभाषा। बहुतदिनन सो निजचितराषा २। ५५
यह श्रीहरिभाषितअध्याया। शुचि ह्वै जो पढ़ि है गतमाया॥
अथवा भक्तिसहित जो सुनिहै। नैरन्तरिकमुक्तिसो गुनिहै ३। ५६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवृन्दावनमथुरामाहात्म्ये नामत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३॥

चौहत्तरवां अध्याय॥

दो० चौहत्तरयें महँ कह्यो उद्धव सनत्कुमार॥
मिलिरहस्य श्रीकृष्णकर जोसबभांति अपार १
तहँ अर्ज्जुन हरिकी रहसि जाननगे भे नारि॥
करि बिहार गोलोकमहँ हरिसँग बहुतप्रकारि २
वृन्दावन गोलोकगत वर्णित सहित समाज॥
परसंक्षेप विचारसों कह्यो व्यास महराज ३

ईश्वरजी पार्व्वतीजीसेबोले कि एकसमय भगवान्‌केप्रिय श्रीमान् उद्धवजीने एकान्तमें सनत्कुमारजीसे अपनेप्रभु श्रीकृष्णचन्द्रजीके रहस्यकी बातपूँछी १ कि जहां नित्य २ गोपांगनाओंकेसाथ गोविन्दजी

देवलोकमें क्रीडाकरतेहैं वहस्थान कहां है व कैसाहै २ व उसक्रीडाके जो २ वृत्तान्त अद्भुत आपजानतेहों यदि हममें आपका स्नेहहो तो वहसबहमसे कहिये ३ सनत्कुमारजीबोले कि किसीसमय विहारकरने के पीछे किसी एकवृक्षके नीचे बैठेहुये सदाचार युक्त भगवान्के पार्षद व सखा ४ महात्मा कुन्तीजीके पुत्र अर्ज्जुनजीने जोकुछदेखा व किया वह सब हमसे उन्होंने कहाथा ५ वहहम तुमसे कहतेहैं सदा एकाग्र चित्तहोकर सुनो परन्तु यह जहांकहींहोकभी इसका प्रकाश न करना ६ अर्ज्जुनजी कृष्णचन्द्रजीसेबोले कि हे कृपासागर! जो आपकारहस्य कभीब्रह्मादि व शङ्करादि देवताओंनेभी न देखाहो न सुनाहो हे कृपा-सागर! कृपाकरके वह सब हम अपनेपरमप्रियसे कहिये ७ आपकी प्रियतमाआभीरियांअभी आपसे क्याकहतीथीं व इनके विशेष और भी कोई आपकी वल्लभाके प्रकारकी हैं वा नहीं हैं तो कितनी हैं ८ उनके नाम कितनेहैं व कहां २ कितनी २ रहती हैं व उन सबोंके कितनेकर्म्महैं व अवस्था क्याहै वेष कैसाधारणकियेरहती हैं हे प्रभो! ९ व किनके साथ कहां आप नित्य एकान्तमें विहार करतेहैं व नित्य २ नवीन विभवयुक्त सुखसे किस २ वनमें आप किन २ स्त्रियोंके संग विहरतेरहते हैं १० वहस्थान कैसाहै व कहांहै निरन्तर सदाबनारहताहै वा नहीं परम उत्कृष्टहै वा साधारणही है जो हमारेऊपरभी वैसेही कृपाहो जैसी कि उन अपनी प्राणप्रियाओंमेंहै तो सबहमसे कहो ११ व जो अज्ञानसे हमने पूँछाभी न हो व कोई रहस्य और भी होतो वहभी कहो हे आर्तिहरण महाभाग! हमसे सबकुछ आप कहनेके योग्यहैं १२ श्री-भगवान्जी बोले कि वह स्थान व वे हमारीवल्लभायें व वैसाहमारा विहार जो सत्यसत्य हमारे प्राणों के समानभी पुरुषहैं वेभी नहीं देख सके १३ हे वत्स! फिर उनके देखने की उत्कण्ठा तुमको कैसे हुई व जो पदार्त्थ ब्रह्मादिकों को भी अदृश्यहै फिर अन्य किसी को क्या कहैं १४ इससे हे वत्स! तुम इसपदार्त्थ के देखने सुनने से विराम करो उसके विना तुम्हारा क्या अकार्य्य है अपने भगवान्का ऐसा अति दारुण वचनसुनकर १५ दीनहोकर श्रीहरि के युगल चरणों के ऊपर अर्ज्जुन दण्डवत्पतित होगये तब बहुत हँसकर अपने दोनों

हाथोंसे उनको उठाकर श्रीभगवान् १६ भक्तवत्सल अपने भक्त से परम प्रेमसे बोले कि अबउसके कहने से क्याहै जो तुम उसको देखनाही चाहतेहो तो १७ जिससे यह सबउत्पन्न हुआहै व जिसमें इससमय भी सब टिकाहै व जिस में फिर यह सब लीनहोजायगा उस श्रीमत् त्रिपुरसुन्दरी देवी की १८ आराधना परम भक्तिसे करके उससे निवेदन करो क्योंकि बिना उसके हम यहपद किसीको कभी नहीं देसक्ते हैं १९ श्रीभगवान्का ऐसा वाक्य सुनकर हर्ष से युक्त नेत्रहोकर अर्ज्जुन जी श्रीमती त्रिपुरसुन्दरी देवी के स्थानको गये २० वहां जाकर नानाप्रकारके रत्नों से सोपान बनी हुई अति शोभित श्रीचिन्तामणि वेदीको उन्होंनेदेखा २१ वहां नानाप्रकारके फल पुष्पोंसे नीचेको झुकाहुआ कल्पवृक्ष सब ऋतुओंमें बहतेहुए मधु के बिन्दु गिरते थे २२ व सब वायु से चलायमान पल्लवोंसे उज्ज्वल होरहेथे व उसवृक्ष में शुक कोकिल मैना कबूतर ठौर ठौर विराजते थे २३ व लीला के चकोरादि अन्य अनेक प्रकारके पक्षियों से शब्दायमान होरहा था व गूंजते हुये भ्रमरोंके कोलाहलसे समाकुल हो रहाथा २४ उसके नीचे प्रकाशित चमकतेहुये मणियोंसे देदीप्यमान दावानलकी तुल्य मनोहर महाअद्भुत श्रीरत्नमन्दिर बनाथा २५ उसमें देखते मोहित करनेवाला रत्नजटित सुवर्णका एक दिव्य सिंहासन विराजमान था उसपर प्रातःकाल के सूर्य्य के समान प्रकाशित नानाप्रकारके वस्त्र भूषणोंसे भूषित २६ नवयौवनको प्राप्त अंकुश पाश धन्वा व बाण चार भुजलताओं में धारणकिये सुप्रसन्नमुखी व मनको हरती हुई २७ व ब्रह्मा विष्णु महेशादि देवताओं के किरीटों के मणियों के किरणोंसे प्रकाशित चरणारविन्दों से युक्त व अणिमादि सिद्धियों से घिरीहुई २८ प्रसन्नमुखी वरदेनेवाली भक्तवत्सल देवीको देखकर मैं अर्ज्जुनहूं ऐसाकहकर बार बार प्रणाम करके २९ हाथजोड़कर भक्ति युक्तहोकर अर्ज्जुनजी एकान्तमें खड़े होरहे तब उनकी उपासनाको जानकर प्रसन्नता से युक्तहोकर वह कृपानिधि ३० देवी तिनके स्मरण से विह्वल होकर कृपापूर्वक अति मधुर वाणीसे बोली कि हे वत्स ! तुमने किसी सत्पात्रके लिये

कौनसा दुर्लभ दानकियाहै ३१ व किस दुर्लभ यज्ञसे देव पूजन कियाहै अथवा कौनसा उग्र तपकियाहै अथवा भगवान्की कौनसी अमल भक्ति अच्छे प्रकारउपार्जनकीहै ३२ अथवा इस लोकमें कौनसा दुर्लभ शुभ कर्म कियाहै जिससे कि यह अनान्द युक्त प्रसाद तुम्हारे विषयमें ३३ श्रीभगवान् ने कियाहै जोकि गूढ़मेंभी गूढ़ व जो किसीके ऊपर आजतक नहीं किया वह तुम्हारेऊपर कियाहै ऐसा प्रसाद मर्त्यलोक भूतलादि के बासियों के ऊपर ३४ व स्वर्गबासी देवादिकों के ऊपर तपस्वियों व योगियों के ऊपर व न सब भक्तों के ऊपर कभी नहीं किया ३५ हे वत्स! जैसा प्रसाद विश्वात्माने तुम्हारे ऊपर किया है इससे यहां आओ इस हमारे कुण्ड युक्त सरकी सेवाकरो ३६ यह सब काम देनेवाली देवी तुम्हारे आगे खड़ीहै इसी के सङ्ग जाओ व इस सरमें बिधिपूर्व्वक स्नान करके शीघ्र हमारे समीप लौटआओ ३७ तब उस देवीके साथ अर्ज्जुन उस सरोवरको गये व स्नान न्यास मुद्रादि करके तुरन्त वहां पर लौटआये ३८ जब स्नानकरके अर्ज्जुनजी आये तो उस देवीनेउनके दक्षिणकान में तुरन्त सिद्ध करनेवाली बाला त्रिपुर सुन्दरी की विद्याकही ३९ जिस विद्यामें प्रथम आधा हकार है फिर रकार फिर ईम् अर्थात् प्रथम ह्रीम् यहपदहै सो यह त्रिपुर सुन्दरीका मंत्र सुनाकर ३९ अनुष्ठान पूजा व लक्षसंख्यक जप ४० व लक्ष कँदैलके पुष्पोंका हवनकराके मंत्र को सिद्धकरादिया इसप्रकार सबकर्म्मसे निवृत्तकराके परमेश्वरी कृपा से यह बचनबोली ४१ कि बस इसीविधानसे हमारी उपासना तुम करो तब हम तुम्हारे ऊपर अनुग्रह करतीहुई प्रसन्नरहेंगी ४२ तब तुमको श्रीभगवान्के सब रहस्योंके देखने जानने का अधिकारहोगा यह नियम पूर्व्वकालमें भगवान्ने अपनेआप कियाहै ४३ यहसुनकर अर्जुनजीने उसीमार्गसे उस त्रिपुरसुन्दरीकी पूजाकी व पूजा जपादि सब करनेकेपीछेदेवीको प्रसन्नकिया ४४ व शुभ होमकरके फिर विधि विधान से यज्ञान्त स्नान किया व अपने को समझा कि हम सब कार्य करचुके प्रायः सब मनोरथपाचुके ४५ व हमारे हाथमें सब सिद्धि आगई ऐसा अर्जुनजीने माना तब उस अवसरमें मन्द मन्द

मुसुक्याती हुई देवी वहांआकर ४६ अर्ज्जुनसे बोली कि हे वत्स ! इस समय अब इस गृहके भीतरको जाओ तब अर्जुनजी ऐसा सुनकर बड़ी जल्दीके साथ उठकर आनन्दितहोकर ४७ व असंख्यहर्षोंसे युक्तहोकर उन्होंने दण्डवत् पृथ्वीपर गिरकर देवीजीके प्रणामकिया व फिर देवीकी आज्ञासे उसके प्रणामकरके अर्जुन ४८ राधापतिके उस स्थानको गये जोकि सिद्धोंकोभी कभी दिखाई नहीं देता उसमें जाकर गोलोकके भी ऊपर स्थित ४९ सदास्थिर वायुके बलसे ठहरे हुये नित्य सबसुखोंके स्थान नित्य वृन्दावन नाम जिसमें नित्य रासक्रीड़ाका महोत्सव होतारहताहै ५० उसपूर्ण प्रेमरससे भरेहुये परमगुप्तस्थानको देखा व उस त्रिपुरसुन्दरी के कहनेसे दिव्यदृष्टिको पाकर उस एकान्तस्थलको देखकर ५१ बढ़ेहुयेप्रेमसे विह्वलहोकर व विवशहो अर्जुनजी वहांगिरपड़े व मूर्च्छितहोगये तब उसदेवी त्रिपुरसुन्दरीने अपने हाथोंसे पकड़कर होशमें आयेहुये जानकर उठाया ५२ व मुख आदि पोंछा उसके ऐसा सान्त्वन करनेसे किसीप्रकार से स्थिरताको पहुँचे व देवीसे बोले कि अब हमको और क्या तपकरनाचाहिये वहभी कहो ५३ तब देवीने जाना कि इनको अब राधामाधवकेदर्शनकीइच्छाहै तबउसदेवीने इनका दहिनाहाथ पकड़कर व दहिने चरणके उठानेका ५४ सङ्केत किया व यह वचनकहा कि हे पार्थ ! अब तुम स्नानकरनेके लिये इस बहुत जलवाले सरमें पैठो ५५ यहसर सहस्रदलवाले कमलों से सुशोभित है यह सर चौकोना व चारद्वारों से संयुक्तहै व आश्चर्य युक्तजलसे भराहुआ है ५६ इसके बीचमें पैठकर तुम कुछ विशेष वस्तु देखोगे व इसकी दक्षिणओर यह और सरोवरहै ५७ इसका मधुमाध्वीकपान नामहै व मलयपर्व्वतपरसे इसमें झरना झरताहै व इसीके समीपयह प्रफुल्लित पुष्प युक्तवृक्षोंकी बाटिकालगीहै जहां नित्य वसन्तऋतुकी विद्यमानताके कारणकामको उत्सव सहित रहनाहोताहै ५८ व जहां गोविन्दजी वसन्तके पुष्पोंके उचित कार्य्यकरतेरहतेहैं व जहां कृष्णचन्द्रजीके अवतारकी स्तुति नित्य रात्रदिन हुआकरती है ५९ जिसके स्मरणसे हे मुने ! हृदयमें कामका अंकुरहोताहै इससे पहिले इस सरमें

स्नानकरके फिर उस पहलेसरकेकिनारेजाकर ६०उसकेजलमें आच-
मन व स्नानकरके अपने मनोरथको साधो देवीका ऐसा वचनसुनकर
उस सरके जलमें ६१ जोकि कल्हार कुमुद अम्भोज व रक्तकमलों
से शोभायमानहोरहाथा व पुष्परसोंसे रँगाहुआथा व पुष्परसों के
बिन्दुओंसे सुगन्धितहोरहाथा ६२ तुन्दिल व कलहंसादिकोंके शब्दों
से युक्त व शब्दायमान होरहाथा व रत्नयुक्त मणियोंकी सिड्ढियोंसे
चारों किनारोंसे बँधाथा पवनसे जो तरंगित होरहाथा ६३ जबऐसे
जलमें जाकर अर्जुनजी ने स्नानकरने के लिये बुड्डीमारी वैसेही वह
देवी वहीं अन्तर्द्धान होगई जब उसमें स्नानकरके फिरचारोंओर दे-
खकर अपनी सहाय सुन्दरहास्य करनेवाली देवीको न देखातो वे
बड़े सम्भ्रान्त चित्तहुये ६४ व अपनेको देखातो तुरन्त तपायेहुये
सुवर्णके रंगकेरोमोंसे शरीर युक्तहोगया व किशोर अवस्थाको प्राप्त
सुन्दरी स्त्रीका रूपहोगया मुख शरदृतुके चन्द्रमाके आकारका ६५
व केशअति नील चीकने टेढ़े व विचित्र कुण्डलोंसे कानयुक्त होगये
व ललाट सिन्दूर बिन्दुसे शोभित होगया ६६ व भौंहें ऐसी तिरछी
कटाक्ष करनेवालीहोगईं कि उन्होंने कामके चापकी व्यढ़ाईको भी जीत
लिया मेघकेसमान देदीप्यमान खण्डरैचाकेसेनेत्रहोगये६७व मणियों
केकुण्डलोंके तेजसे कपोल मण्डल मण्डितहोगयेव कमलकी कोमल
नाड़ीकेसमान चमकतेहुयेआश्चर्य्य दायकभुजोंसे शरीर युक्तहोगया
६८व शरदृतुके कमलकी शोभासे शोभित करपल्लव होगये व चतुर
स्त्री की पहिनाईहुई क्षुद्रघण्टिकाओं से कटिभाग शोभितहुआ ६९
व शब्द करतेहुये क्षुद्रघण्टिकासे देदीप्यमान जघनदेश होगया व
भ्राजमान रेशमी वस्त्रसे युगल नितम्ब आच्छादित होगये ७० व
चरणकमल मधुरध्वनि करतीहुई पैंजनियों व नूपुरादिकोंसे युक्तहो-
गये व स्फुरित विविधप्रकारकी कलाओंकी कुशलतासे कन्दर्प
सर्वांगोंमें प्रकट दिखाईदेनेलगा ७१ इसप्रकार सुन्दरीस्त्रीकेसबल-
क्षणोंसे सम्पन्न व सब आभरणोंसे भूषितहोगई इसप्रकारकी आश्च-
र्य्यरूपिणी स्त्रीके स्वरूपमें अपनेको अर्ज्जुनजी ने देखा ७२ व जो
कुछ पूर्व्वदेहके चिह्नथे सबको वे भूलगये यहगोपिका प्राणनाथकी

मायासे ऐसा हुआ ७३ व फिर उसके आगे अन्यकर्त्तव्यतामें वह परम सुन्दरी मूढ़ व विस्मययुक्त होगई इसीअवसरमें आकाशसेधीर मधुर ध्वनि अकस्मात्हुई ७४ कि हे सुन्दर भौंहोंवाली ! इसमार्गसेहोकर पूर्व्ववाले सरोवरको चलीजावो व उसके जलमें स्नानकरके अपने मनोरथको साधो ७५ हे वरवर्णिनि! उससरमें तेरीबहुतसीसखियांहैं अब तू कष्टित न होवै वे सब वहां जो कुछ तुम्हारे वाञ्छाहोगी सब पूर्णकरेंगी ७६ ऐसी आकाशवाणी सुनकर व पूर्ववाले सरोवर पर जाकरदेखा तो वहसरोवर नानाप्रकारके अपूर्व प्रवाहोंसेयुक्त व नाना प्रकारके पक्षियों से समाकुल होरहाथा ७७ व स्फुरित कुमुदिनी कह्लार इन्दीवरादि कमलोंकी अनेकजातियोंसे शोभितहोरहाथा व पद्मरागमणियोंसे निर्मितसिढ़ियोंसे शोभायमानहोरहाथा ७८ व विविधप्रकारके पुष्पोंके गुच्छोंसे व मनोहर कुञ्जलताओं व वृक्षोंसे चारोतीर विराजतेथे ऐसेसरोवरमें आचमनादिकरके वह नवयौवना कुछसमयतक स्थितहुई ७९ व वहां जलकेभीतर बाजतीहुई क्षुद्रघ-ण्टिका और पैंजनीनूपुर कङ्कणादिकोंकी झनझनाहट कर्णपुटों में सुनाईदी ८० फिर आश्चर्ययौवनको प्राप्त स्त्रियोंकाझुण्ड आश्चर्य युक्त भूषणोंसे भूषित व आश्चर्यआकारोंसे युक्त व आश्चर्यदायक मधुर प्रिय वचनोंसेयुक्त ८१ व अद्भुत चालसे चलेआतेहुये आ-श्चर्यके हावभावादि विभ्रमोंसे युक्त वचित्रसम्भाषण व चित्रहास्य निरीक्षणादिकोंसे युक्त ८२ व मधुरअद्भुत सौंदर्यसे शोभित वसब मधुरताओंसे सेवित व चित्रलावण्यतासे युक्त व आश्चर्यके कुलसे सुन्दर ८३ आश्चर्य युक्त स्निग्धता व सौंदर्य व आश्चर्यकर अनु-ग्रहादिकोंसे शोभित सबआश्चर्योंकी अभ्युदयसे व आश्चर्यसहित अवलोकनादिकोंसे युक्त ८४ यह परम आश्चर्य देखकर यह अर्ज्जुन के स्थानापन्न स्त्री हृदयमें चिन्तनाकरतीहुई पादके अँगूठेसे पृथ्वीपर खींचतीहुई नीचेकोमुखकरके स्थितरही ८५ तबतक उन सबकी दृ-ष्टियोंका आपसमें सम्भ्रमहुआ कि यह हमलोगोंकी जातिकी कौन सी सुन्दरी है जो बड़ीदेरसे कौतुक युक्तखड़ी है ८६ यहसबोंने वि-चारांशकरके किइसको जाननाचाहिये यह कहकर एकक्षणमात्र ठह-

गईं व पूंछनेमें बड़ी चतुर तो थीं हीं मारे कौतुकके आगे आ-
गईं ८७ व उनमेंसे एक जिसकानाम प्रियमुदाथा आकर प्रीतिसे
मधुरवाणी से वहमनस्विनी इसनवयौवनासे बोली कि ८८ तुमकौ-
नहो व किसकी कन्याहो व तुम किसकी प्राणवल्लभाहो व कहां
उत्पन्नहुईहो व यहां तुमको कौनलायाहै अथवा अपने आप इसवन
में आईहो ८९ यह सब हमसे कहो चिन्ताकरने से क्याहै क्योंकि
भला इसपरमानन्दयुक्त स्थानमें किसीको क्या कुछ दुःखहै जो तुम
चिन्ताकरतीहो ९० जब उसने ऐसापूंछा तो यह अर्ज्जुनके स्थाना-
पन्नवाली विनयसे बनाय झुकगई व उन सबोंके मनोंको मोहितक-
रातीहुई सुन्दर आवाज़से बोली ९१ अर्जुनने कहा कि हम कौनहैं
व किसकी कन्याहैं व किसकी बल्लभाहैं व कौन हमको यहांलायाहै
अथवा हम अपने आप यहां आगईहैं ९२ यहकुछ हमनहींजानती
हैं हांहमको एक देवी जानती है परउससे क्याहै अब जो हमारेवाक्य
का तुमको विश्वासहो तो हमारा कहा हुआ सुनो ९३ इसी सरोव-
रकी दहिनी बगलमें एकसरोवरहै हम उसमें स्नान करनेको आईथीं
वहां स्नानकरके कुछदेर ठहरीरहीं ९४ फिर हमको विषम उत्कण्ठा
उत्पन्न हुई इससे सब दिशाओंको देखने लगीं तब एक आश्चर्य्य
युक्त आकाश से शब्द सुनाईदिया ९५ कि हे सुभ्रु! इसी मार्ग से
पूर्व्व के सरोवर को चली जाव उसके जलसे आचमन करके अपने
मनोरथ को सिद्धकर ९६ हे वरवर्णिनि! इसमें तेरी सखियां हैं क-
ष्टित न हो वे तेरे अभीष्ट वरको सिद्धकरेंगी व सब कार्य्य सम्पादित
करदेंगी ९७ सो उसबाणीका ऐसावचन सुननेसे हम यहां आईहैं व
बिषाद हर्ष दोनों से युक्तहैं व चिन्तासे भी युक्तहैं ९८ आकर इसके
जलका स्पर्शकरके जैसे खड़ीहुई हैं कि भूषणोंके शुभशब्द सुनाई
दिये उसके पीछे फिर आपलोगों को देखा ९९ बस हम देह व मन
व बाणीसे इतनाही जानती हैं व हे देवियो! हमने यह सबकहा अब
तुमको जो रुचे करो १०० अबहम तुमलोगों से पूंछती हैं कि तुम
कौनहो व किनकी कन्याहो व किसकी अब बल्लभाहुई हो यह उसका
वचन सुनकर प्रियमुदानाम सखी बोली १०१ कि हे शुभे! हम इन

की सखियां हैं व इन्हीं बृन्दाबन कलानाथके सुखपूर्व्वक बिहारकरने की स्त्रियां हैं १०२ सो हम सब लोग ब्रजबासिनी स्त्रियां हैं इनसे मुदितहोकर यहां आई हैं व ये इतनी स्त्रियां वेदोंकी श्रुतियाँ गोपियांहुई हैं व ये सब मुनिगण हैं १०३ व हम लोग आभीरों की स्त्रियां हैं अपने स्वरूपसे यहां प्राप्तहुई हैं व ये सब राधापतिके अङ्गोंसे उत्पन्नहुई हैं इससे एकसे दूसरी उनको अतिशय प्रेयसी है १०४ ये सब नित्य हैं व नित्य बिहारिणी हैं व नित्यकेलिकी भूमियां हैं इस देवीका पूर्णरसानामहै व इसका रसमन्थरा १०५ व इसका रसालया नामहै व इसका रसवल्लरी नामहै इसका रसपीयूषधारा नामहै व यह रसतरङ्गिणी कहाती है १०६ यह रसकल्लोलिनी कहाती है व यह रसवापिका के नाम से प्रसिद्ध है इसका अनङ्गसेनानाम है व इसका अनङ्गमालिनी १०७ इसका मदयन्ती इस का रसविह्वला और यह ललिता नामहै व इसका ललितयौवना नामहै १०८ यह अनङ्गकुसुमा कहाती है और यह मदनमञ्जरी कहाती है यह कलावती के नामसे प्रसिद्धहै व इसका रतिकला नाम है १०९ इसका कामकला नाम व इसका कामदायिनी व इसबाला का रतिलोला नामहै व यहबाला रतोत्सुका कहातीहै ११० व यह रतिसर्व्वस्वाहै व यह रतिचिन्तामणि कहलाती है इनमें कोई कोई नित्यानन्ददायिनी हैं व नित्य प्रेमरस देती हैं १११ इनके पीछे ये सब श्रुतिगण हैं भक्तिसे स्त्री होगई हैं इनमें किसी किसीका नाम हमसे सुनो इसका उद्गीता व इसका सुगीता व यह कलगीता होनेके कारण हरि को प्रियहै ११२ इसका कलस्वरा नामहै व यह बाला कलकण्ठिका कहातीहै यह विपञ्ची कहातीहै यह क्रमपदा व यह बहुहुता कहाती है ११३ यह बहुप्रयोगा व यह बहुकलावला कहाती है इसका कलावती नाम है व यह क्रियावती कहीजाती है ११४ इस के पीछे ये सब मुनिगण हैं उन में कुछ एकका नाम सुनो इसका उग्रतपा नामहै व इसका बहुगुणा ११५ यह प्रियव्रतानाम है व इसका सुव्रता नामहै यह सुरसा कहाती है यह सुपर्व्वा यह बहुप्रदा कहाती है ११६ यह रत्नरेखा कहातीहै व यह मणिग्रीवा कही जातीहै यह

सुपर्णचयिका यह आकल्पा यह सुकल्पा यह रत्नमालिका कहीजा-
तीहै ११७ यह सौदामिनी व यह कामदायिनी यह भोगदा व यह
सती विश्वमता कहातीहै ११८ यह आधारिणी यह धात्री यह सु-
मेधा व यह कान्ति कहातीहै यह अपर्णाहै व यह दूसरी सुपर्णा है
व यह सुलक्षणा कहाती है ११९ इसका सुदती व इसका गुणवती
व यह सौकलिनी कहाती है यह सुलोचनाके नाम से प्रसिद्ध है व
यह सुमना कहातीहै १२० यह अश्रुता यह सुशीला व यह रतिसु-
खप्रदायिनीहै इसके आगे हमसब जो यहां आई हैं गोपबाला हैं
उनमें हम ऐसब हैं १२१ उनमें किसी किसी का नामभी कहती हैं
सुनो इसका चन्द्रावली नामहै व इस शुभाका चन्द्रिका नामहै १२२
यह चन्द्रावली चन्द्ररेखा व चन्द्रिका ये तीनों समान हैं यह चन्द्र-
माला कहातीहै व यह चन्द्रालिका दूसरी है १२३ यह चन्द्रप्रभा
कहाती व यह अबला चन्द्रकला कहाती है यह वर्णावली व यह
वर्णमाला और यह मणिमालिका १२४ यह वर्णप्रभा कहाती है व
यह उग्रप्रभा व यह मणिप्रभा कहाती है इसका हारावली नाम है
यह तारामालिनी यह शुभा कहाती है १२५ यह मालिनी यह यूथी
यह वासन्ती यह नवमल्लिका कहाती है यह मल्ली यह नवमल्ली यह
शेफालिका कहातीहै १२६ इसका सौगन्धिका व इसका कस्तूरी प-
द्मिनी व इसका कुमुद्वती नामहै यह रसोल्लासा यह चित्तवृन्दा क-
हातीहै १२७ इसका रम्भा व इसका उर्व्वशी नामहै यह सुरेखा व
यह स्वर्णरेखिका कहातीहै यह काञ्चनमाला व सन्ततिका १२८ और
बहुतसी हैं जिनको जानचुकीहो इनसबोंकी परिचय अच्छीतरहसे
सबओर देखकर करलेओ क्योंकि इन्हींसबों के सङ्ग तुमकोभी वि-
हार करना होगा १२९ हे सखि! आओ पूर्व्व के सरके किनारे आओ
वहां तुमको विधिसे स्नानकराके फिर सिद्धिदायकमन्त्र देवेंगी १३०
इसप्रकार अर्ज्जुन के स्थानापन्नाकोलेकर विधिसे स्नानकराके वृ-
न्दावन कलानाथप्रेयसी राधिकाजीका उत्तम मन्त्र १३१ दीक्षावि-
धिको संक्षेपरीति करके ग्रहणकराया इस मन्त्र में वह्निबीज अग्रे
सरके वरुणबीजयुक्त १३२ चौथेस्वरसे मिलाहुआ व नादबिन्दुसे

विभूषित आदिअन्तमें दो ओंकारोंसेयुक्त जोकि त्रैलोक्य में अतिदुर्लभहै १३३ इसमन्त्रके ग्रहणकरनेहीसे सम्पूर्णसिद्धियां मिलती हैं पुरश्चरण व होम तर्पण का विधान सब बताया १३४ व ध्यान यह बताया कि तपाये हुये सुवर्ण के समान गौरांगी नानाप्रकार के अलङ्कारोंसे भूषित ऐश्वर्य रूप लावण्यसे युक्त सुप्रसन्नचित्त वर देनेवाली १३५ कह्लार कँदैल व अन्य चंपा व कमलोंसे अन्य सुगन्धित पुष्पोंसे व चन्दनादि सुगंधित द्रव्योंसे १३६ व वृन्दासखी की लाई हुई दिव्य तरह तरह की नैवेद्योंसे १३७ व पाद्यार्घ्याचमनीयादिकोंसे व मनोहर धूपदीपादिकों से व हे सखि! विविधप्रकारके मनोहर नैवेद्यों से पूजाकरके लक्षबार मन्त्रजपो व विधिपूर्व्वक होमकरके फिर पृथ्वीपर दण्डवत्प्रणाम करो १३८ उनसब स्त्रियोंके कहने से अर्ज्जुनरूपिणी स्त्रीने वैसीही स्तुति पूजाकी तबभगवती रासेश्वरी राधिकाजी अपनीछाया मायासे कल्पित करके १३९ निकट प्यारीको जोरावरी स्थापितकरके क्योंकि सखियोंके साथकीहुई पूजाजपादिकोंसे सन्तुष्टहुईथीं १४० व स्तुतियोंसे भक्तिपूर्व्वक प्रणामोंसे प्रसन्नचित्तहुई थीं प्रथम छायारूपसे प्रकटहुईं फिर कृपासे साक्षात् प्रकटहुईं जोकि तपायेहुये पक्के सुवर्ण के रूपकी व विचित्र आभरणों से युक्तथीं १४१ अङ्ग प्रत्यंगों में लावण्य व लालित्य से मधुर आकृति से युक्तथीं निष्कलङ्क शरद् ऋतुकी पूर्णमासीके चन्द्रमाके समान मुखवाली १४२ मन्द मन्द मुसकानेसे तीनोंलोकों के मनको हरतीहुई व अपनी प्रभासे दशोंदिशाओं को अत्यंत प्रकाशित करातीहुई १४३ वे देवी वरदानदेनेके लिये भक्तोंके ऊपर कृपाकरतीहुई बोलीं देवीजीनेकहा कि हमारी सखियोंका वचन सत्य होताहै इससे तुम हमारी प्रिया सखीहुई १४४ अब जो चाहो वर मांगो हम तुम्हारा इष्टकार्य्य सिद्धकरेंगी तब देवीजीका वचन सुनकर अर्ज्जुनके स्थानापन्न यह नारी अपना अभीष्ट विचारकरके १४५ पुलकाङ्कितहोकर व आंसू नेत्रोंमें भरकर देवी के चरणपर गिरपड़ी व फिर प्रेमसेविह्वल होगई १४६ तब श्रीराधिकाजीने अपनी प्रियंवदानाम सखीसेकहा कि इससखीको हाथपकड़कर समझातीहुई

हमारे पासको लाओ १४७ तब प्रियंवदा अच्छा कहकर बड़ी शी-
घ्रतासे इसको उसीरीतिसे समझातीहुई हाथपकड़कर श्रीराधिका
जीके समीपको लेगई १४८ प्रथम उत्तरके सरके तीरपर विधानसे
स्नानकराकर व संकल्पादि पूर्वक जलादिकी पूजा कराकर १४९
श्रीगोकुल कलानाथजीके सिद्धिदायी मन्त्रको कृपाकरके राधाजीने
ग्रहणकराया १५० उन्हों ने कहा हां अब गोकुल नाथ नाम मन्त्र
इससखीने ग्रहणकिया जो अतिभूषित व सबको मोहित करता है
सबसिद्धि देनेवाला व सब तन्त्रोंमें छिपायाहुआ है १५१ गोविन्द
जीके कहने को जाननेवाली उसने स्थिरभक्तिभी दी अब इसमन्त्र
का ध्यानभी कहा यह मन्त्रराज मोह करनेवाला १५२ जो ध्यान
मोहन तन्त्रमें प्रसिद्धहै व उसके विषयकी स्मृति भी सिद्धिदेनेवाली
है वह ध्यान यहहै कि नीलोत्पल दलश्याम व सब अलङ्कारों से भू-
षित १५३ कोटि कन्दर्पोंके लावण्य से युक्त श्रीहरिका ध्यानकरे रा-
सके रससे आकुल प्रियंवदासे यह रहस्य पवित्रकरनेकी इच्छा से
कहा १५४ श्रीराधिकाजी बोलीं कि हे सखि! जबतक इस सखीका
यह मन्त्र सिद्ध न होजाय तबतक इसकी रक्षा औरसखियोंके साथ
मिले सावधानी से करती रहना १५५ इतना कहकर श्रीराधिकाजी
श्रीकृष्णचन्द्रजी के चरणकमलोंके समीप को चलीगईं व अपनी
छाया अपनी सब सखियोंके समीप स्थापित करआईं १५६ व कृ-
ष्णवल्लभा राधिकाजी अपनीछाया से पूर्ववत् सखियोंमें स्थितरहीं
व यहां प्रियंवदा के आदेश से अष्टदल शुभ कमल १५७ गोरो-
चना से बनाकर उसके ऊपर कुंकुम लगाया व अन्य सुगन्धित
चन्दनादि पदार्थों व और बहुत तरहकी द्रव्योंसे मिलाकर सिद्धि-
दायक १५८ यन्त्रराज लिखकर फिर उसपर उत्तम शुद्धमन्त्र लिखा
फिर विधिपूर्वक अंगन्यासादि व अर्घ्यपाद्य करके १५९ व ऋतुओं
में उत्पन्न फूलोंसे व कुंकुम चन्दन धूपदीप नैवेद्य मुखसुगन्धिके वास्ते
ताम्बूलोंसे १६० व कपड़ा ज़ेवर माला इत्यादिसे सवाहन सायुध श्री-
हरिका पूजनकरके सब परिवार सहित १६१ नमस्कारकिया फिर चित्त
से स्मरणकिया तब भक्तिके वशीभूत यशोदानन्दन श्रीप्रभुजी १६२

हँसकर कृपाकटाक्षसे युक्तहोकर व प्रेमपूर्व्वक अपनी प्राणप्रिया राधिकाजी से बोले कि हे देवि राधिके! उस सखीको यहां शीघ्र ले-आवो १६३ ऐसी श्रीहरिकीआज्ञा पाकर शारदा व अपनी सुरसा सखीको भेजकर इससखीको वहांलेगई १६४ परन्तु श्रीकृष्णचन्द्र जीके आगे पहुँचते २ यह नवीनसखी प्रेमसे विह्वलहोगई व सब अद्भुत देखतीहुई दण्डवत् पृथ्वीपर गिरपड़ी १६५ फिर बड़े कष्ट से किसीप्रकार उठकर धीरेसे नेत्रउघारव पोंछकर पसीना व आंसु-ओंसे युक्त पुलकांकितहो कांपतीहुई १६६ इसने प्रथम मनोरम स्थलकाचित्रदेखा कि एककल्पवृक्ष दिखाईदिया जिसकेमरकतमणि के तो पत्रथे १६७ वमूँगाके पल्लवोंसे युक्तव कोमल सुवर्णके दण्डोंसे युक्तथा व स्फटिकमणि व मूँगाकी जड़ेंथीं व कामकी सम्पदोंसे युक्त सबकामोंको देरहाथा १६८ प्रार्थनाकरनेवालेके अभीष्टफल का देनेवालाथा उसके नीचे रत्नोंसे बनाहुआ मन्दिर दिखाईदिया उस में फिर रत्नोंका सिंहासन फिर उसपर अष्टदल कमल १६९ उस सिंहासनकी दहिनी बाईंओर शङ्ख व पद्मनाम दोनिधि टिके दिखाई दिये व उसकी चारोंदिशाओंमेंसबबहुतसी कामधेनु स्थितथीं १७० व उनके सबओर नन्दननाम उद्यानवउसमें मलयाचलसे सुगन्धित पवन चलरहाथा व सबऋतुओंके मनोहरपुष्पोंके १७१ सुगन्ध से सुगन्धित होनेसे कालागुरुको पराजित कररहा था व पुष्परसों के कणोंकी वृष्टिसे शीतलहोनेके कारण अति मनोहर १७२ व पुष्पों के रसों के आस्वादनसे मतवाली भ्रमरियोंकेझुण्डोंसे संकुलित वउन कीगुञ्जारसे शब्दायमान १७३ व कोकिल कपोत सारिका शुकोंकी स्त्रियोंके व अन्य पक्षियोंकी स्त्रियोंके मधुर स्फुटशब्दोंसे निनादित १७४ व नाचतीहुई मतवाली मयूरियों से आकुल होने के कारण कामको बढ़ारहाथा व रसयुक्त जलसे उत्पन्न अंजनकी तुल्य देदी-प्यमान १७५ अच्छे चीकने नील व कुटिल व कषायरंगसे वासित केशोंसेयुक्त मदसेमतवाले मयूरोंसे युक्त व मयूरोंके पिच्छोंसे चूड़ा-बँधेहुये १७६ वभृंगोंसे सेवित पुष्पोंका शिरोभूषण बनाये चलायमान चूर्णी कुन्तलोंसे विलासित दर्पणवत् कपोलोंसे प्रकाशित १७७ व

विचित्र तिलककी शोभासे विराजित मस्तकवाले व तिलके पुष्पके समान मनोहर गरुड़की चोंचकी तुल्य नासिकावाले १७८ व सुन्दर कुंदुरूके पकेहुये फलकेसमान अरुणओठोंवाले व मन्द २ मुसुकाने से कन्दर्पको उद्दीपितकरातेहुये व बनके पुष्पोंकीमालामे शोभितकण्ठवाले १७९ व मदसे उन्मत्त भ्रमणकरतीहुई सहस्रों भ्रमरियोंसे सेवित कल्पवृक्षके पुष्पोंकीमालासे मुग्धमोटे दोनों स्कन्धोंसे विराजतेहुये १८० व मोतियों के हारसे प्रकाशित व वक्षस्थल में कौस्तुभमणि से भूषित व श्रीवत्सके लक्षणसे लक्षित छाती से युक्त व जानुपर्य्यन्त लम्बे बाहुओं से मनोहर १८१ गम्भीरनाभिवाले व सिंहकी कमरसी पतली कटिवाले होनेसे अति मनोहर व कदलीके स्तम्भके समानचढ़ा उतार जानुवाले १८२ कङ्कण अंगद मंजीर आदि बहुमूल्य भूषणोंसे भूषित व पीताम्बरकी कलासे नितम्बादिकोंको आच्छादित करनेसे सुशोभित १८३ व सबप्रकारकी सुन्दरताओंसेभी सुन्दरहोनेके कारण कोटि कन्दर्पों के दर्पके जीतनेवाले व वंशीबजाकर मनोहर गीतों के गानेसे १८४ तीनोंलोकों के जनोंको सुखके सागरमेंडुबातेहुये व प्रत्येक अंगोंमें कामके वेषको धारणकिये व रासके रसमेंलीन १८५ चामर व्यजन माला गन्ध चन्दन ताम्बूल दर्प्पण पानपात्र ताम्बूलचर्व्वण करनेके पात्रसे सुशोभित १८६ यहांपर सब क्रीड़ाओंसे उत्पन्न अलग २ सब चेष्टायें प्रकाशित होरहीथीं व सब क्रीड़ासामग्रीसब सखियां आदरसे लिये विद्यमानथीं १८७ व अपने २ स्थानपर नियुक्तहोकर उनके मनकी चेष्टाओंको देखरहीथीं व उनकेमुखकमलमें दृष्टि दियेहुई क्रमसे चंचलता युक्त खड़ीथीं १८८ व श्रीमतीराधिकादेवीश्रीकृष्णचन्द्रजीकेबामभाग में सम्भ्रम सहित स्थितथीं व आपभी ताम्बूल भक्षणकररहीथीं व अपने पतिकोभी खिलारहीथीं १८९ ऐसे कृष्णचन्द्रजीको देखकर स्त्रीरूपधारी अर्ज्जुन जैसेही कामके आवेशसे विह्वलहुये कि वैसेही उनको उस दशाको प्राप्तजानकर सर्ववेत्ता हृषीकेशजी भी वैसेही होगये १९० व अर्ज्जुन रूपिणी स्त्रीका हाथ पकड़कर क्रीड़ावनको लेगये व जैसा चाहिये एकान्त में वैसा बिहार करतेरहे यद्यपि महा

योगेश्वरभी थे १९१ तदनन्तर उसके स्कन्ध देशपर अपना भुज पल्लव धरके आकर शारदादेवी से श्रीहरि बोले कि इसपश्चिमवाले सरोवर में १९२ इस क्रीड़ासे थकीहुई मन्द मन्द मुसुकातीहुई तन्वङ्गीको शीघ्र स्नानकराओ तब उसको शारदादेवीने उसक्रीड़ाके सरोवरमें १९३ लेजाकर कहा इस में स्नानकरो व थकीहुई उन्हों ने वैसेही किया जैसेही जलके भीतर बुड्डीमारीहै कि वैसेही वह फिर अर्ज्जुन होगई १९४ व उठकर बाहरआये तो जहां देवेश वैकुण्ठनाथथे वहीं आगये तब उन अर्ज्जुनको उदासीन बिषण्णमन देखकर श्रीकृष्ण चन्द्रजीने १९५ मायासे हाथपकड़लिया व फिर ज्योंका त्यों करदिया व फिर अर्ज्जुनजीसे कृष्णचन्द्रजी बोले कि हे धनञ्जय! तुम शंका न करो आप हमारे प्रियसखा हैं १९६ व तुम्हारेसमान हमारे रहस्य का जाननेवाला तीनोंलोकोंमें और कोई नहीं है व जो रहस्य तुमने देखा व फिर जिसका अनुभव किया १९७ वह जो किसीसे कहना तो तुमको हमारी शपथहै इससे किसी से न कहना सनत्कुमारजीने कहा यह प्रसादपाकर व शपथों से उसका निर्णयपाकर १९८ हर्षित मनहो अद्भुत स्मरणकरतेहुये अर्ज्जुन अपने स्थानको चले गये सनत्कुमारजी उद्धवजीसे बोले कि ॥

चौ० यहरहस्यतुमसनहमभाखा। यदपिगुप्तपरहमनहिंराखा १९९
यह गोबिंदरहस्य अनूपा। जनिकहुंकह्यहु शपथभवचूपा १।

ईश्वरजीने कहा कि यह उनके बचन सुनके औपगविसिद्धिको पाके २०० नर नारायणके बास बृन्दाबनको चलेगये वहां श्रीकृष्ण चन्द्रजीकी लीला व विहारको जानतेहुए आजभी वहीं प्राप्तहैं २०१ इससे जो रहस्य अर्ज्जुनने पाई व पाकर फिर अपने रूपको प्राप्त हुए यहरहस्य नारदजीसे पूँछनेपरभी हमने नहीं कहा २०२ जोकि रहस्य स्नेहकेकारण तुमसे हमनेकही इससे हे भद्रे! जैसे औरतें अपनी योनिको छिपाती हैं वैसेही इसको छिपाना किसी से कहनानहीं २०३॥

यहहरिभक्ति महिम अतिअद्भुत। पढ़िहिसुनिहिजोनरशुभमनयुत॥
सोहरिमहँरति पाइहिनीकी। सबप्रकारसब बिधिसों ठीकी २।२०४

इति श्रीपाद्मे अर्जुन्यनुनयोनामचतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

पचहत्तरवां अध्याय ॥

दो०। कह्यो पछत्तरयेंमहँ नारद नारी रूप ।
ह्वैरहस्यअनुभवकियो जोसबभांतिअनूप १

पार्व्वतीजीने महादेवजीसे पूँछा कि बृन्दावनको रहस्य नारदादिकोंने बहुतप्रकारसे कहीहै सो किस पुण्यविशेषसे नारदजी प्रकृतिको प्राप्तहुए हैं १ ईश्वरजी बोले कि एकसमय पूर्व्वकाल में हमने भी आश्चर्य्य का बृत्तांत जानना चाहा था तब कृष्णचन्द्रजीके मुखारविन्द से सुनाहुआ गुप्त ब्रह्माजी ने कहाथा २ नारदजीने हमसे पूछाथा तब हमने इसको पायाथा कि वृन्दाबनका माहात्म्य हम किसीप्रकारसे नहीं कहसक्ते३ क्याकरें स्वप्नमेंभी जिसको स्मरणकरके मनमें कष्टितहोते हैं यह हमारे वचन सुनके जब वे उदास होगये ४ हमसे यों कहकर फिर ब्रह्माजी को बुलाकर उन्होंने आज्ञादी कि तुमने जैसा पहिले हमसे कहाथा वैसा फिर नारदजीसे कहो ५ तब ब्रह्माजी हमारे वचन सुनके नारद सहित कृष्णजीके निकट जाकर व विधिसहित नमस्कार करके यही पूछा ६ ब्रह्माजीने कहा कि हे प्रजानाथ ! क्या इस वृन्दावन में ३२ वन हैं यदि हम सुनने के योग्यहों तो हमसेकहो ७ श्रीभगवान्जी बोले कि यह रम्य वृन्दावन केवल हमाराही धाम है जिस वृन्दावन में रहनेवाले पशु पक्षी वृक्ष कीटादि देवता हैं ८ जो कोई इसमें बसते हैं मरने पर सब हमारे समीपको जाते हैं इसमें जो गोपोंकी कन्या हमारे स्थान में बसती हैं ९ वे सब योगिनियां व हमारे परायण देवता हैं यह पांच योजन बर्ग्गात्मक सें वृन्दावन सब हमारा रूपही है १० व यह यमुना परम अमृतबाहिनी सुषुम्णानाम नाड़ी है इसमें जो प्राणी बसते हैं सब देवगण हैं अपने अपने सूक्ष्मरूपसे बसेहैं ११ व इस बनमें हम सबकहीं व्याप्त रहते हैं कभी किसी अवस्था में भी इस बनको नहीं त्यागते हैं उत्पन्नहोना व नाशहोना युग युग में सबका होतारहता है १२ पर इस बृन्दाबनको व रहस्य हमारे प्रभाव को युगमें देखो यह तेजोमय स्थान है परन्तु चर्म्मचक्षुवालों को नहीं दिखाई देताहै १३ सो ब्रह्मादि देवताओंको भी यह कभी वृन्दावन

नहीं दिखाईदेताहै महादेवजीने कहा कि यह सुनके नारदजी कृष्ण- चन्द्र व ब्रह्माजीके नमस्कारकरके १४ भूर्लोकमें मिश्रित व नैमिषारण्य को आये वहां शौनकादिक मुनीश्वरों से बड़ीप्रतिष्ठा को प्राप्तहुए१५ व शौनकादिक ऋषियोंने पूछा कि हे ब्रह्मन्! इससमयमें तुम कहांसे आतेहो सोकहो यह सुनकर नारदजीने कहा किहम गोलोक से आते हैं १६ श्रीकृष्णजी के कमलरूपी मुखसे श्रीवृन्दावन की रहस्य सुनके नारद जी ऋषियों से बोले कि इसप्रकारसे नानारीतिके प्रश्न और२श्री कृष्णचन्द्र जीने ब्रह्माजीसे कहे १७ व वहांपर सबमनुयोगभी हमनेसुने सो उनके प्रश्नोत्तरके अनुसार हमसब तुमसेकहेंगे १८ यहसुनकर शौनकादि ऋषिलोगों ने पूँछा कि वृन्दावनका जो रहस्य ब्रह्मा जीने तुम से कहाहो जो हमलोगों के ऊपर कुछ कृपाहो तो कहो १९ नारदजी बोले कि एक समय सरयू नदी के तीरपर हमलोगों ने गौतमऋषिको देखा वे मनस्वी महादुःखी व चिन्तासे आकुल मन थे २० हम को देखकर गौतमदेव प्रणाम करतेहुये भूतलपर गिरपड़े तब हे वत्स ! हे वत्स! उठो २ उनसे हमने यह कहा २१ कि आप तो बड़े मनस्वी हैं पर दुःखी कैसे हैं यदि कहना रुचे तो हम से आप कहें गौतम बोले कि तुम्हारे मुख से हमने कृष्णचन्द्र जी का तत्त्व वैसा बहुत सुना २२ जोकि द्वारकाके सम्बन्धकाहै वा मथुराके सम्बन्धकाहै परन्तु वृन्दावनका रहस्य तुम्हारे मुखारविंद से कभी नहीं सुना २३ सो हे सद्गुरो ! बिना तुम्हारे कहने से उस विषय में हमारे मनको स्थिरता नहींहोती है नारदजी बोले यह प- रमगुह्य रहस्यसे भी अति रहस्य २४ वृन्दावनका माहात्म्य पूर्व काल में ब्रह्माजी ने हमसे कहा है जब कि हमने उनसे पूंछाथा कि हे जगत्पितः! वृन्दावनकारहस्य हमसे कहो २५ हमारे इस प्रश्नको सुनकर ब्रह्माजी एकक्षणमात्र मौनीहोरहे फिर बोले कि हे हमारेप्रिय! इस विषयके पूँछनेकेलिये तुम महाविष्णुजी हमारे स्वामी के समीप को जाओ २६ व हमभी वहां तुम्हारे साथ चलेंगे इसमें संशयनहीं है यह कह हमाराहाथपकड़कर ब्रह्माजी महा विष्णुजीके स्थानको गये २७ व महा विष्णुजी से हमारा कहा वचन कहा सो सुनकर

महाविष्णुजीने ब्रह्माजीको आज्ञादी कि २८ तुम नारदमुनिको हमारी आज्ञासे लेजाकर अमृतसरमें स्नान कराओ २९ महा विष्णुजीकी आज्ञासे ब्रह्माजी ने हमको वैसाही किया तब हमने उस अमृतसर में पैठकर स्नानकिया ३० बस स्नान करतेही हम सरकेपार अपूर्व स्त्रीरूप होगये जब सब लक्षणसम्पन्न स्त्री हम होगये तो बिस्मित हुये ३१ हमको देखकर वहां और भी बहुतसी स्त्रियां आगईं व बार बार पूंछनेलगीं कि तुम कौन हो व कहां से आई हो और विस्मित कैसेहो ३२ उन लोगोंकी प्रिय अपने विषयकी स्त्रीलिंगकी वार्त्ता सुनकर हमने जो कहा वह सुनो हम कहां से आये व कौन हैं व कैसे स्त्रीके आकारके होगयेहैं ३३ यह सब स्वप्नसा देखाई देता है क्या हम भूतलपर मूढ़होगयेहैं यह सुनकर मधुर स्वरोंसे एक सखी उनमें से बोली ३४ इसपुरीका वृन्दावननामहै व सदा कृष्णचन्द्रजी के प्यारी है व हम ललितादेवी हैं जोकि चौथी निष्फल है ३५ यह कहकर वहमहादेवीकरुणासे आर्द्रमन होकर हमसे फिर उसमहादेवी ने कहा कि तुम हमारे संगआओ ३६ व और भी कृष्णचन्द्रजी के चरणोंमें परायण बहुतसी स्त्रियांथीं उन सबों ने हमसे कहा कि हां तुम इन्हींके साथ २ आओ ३७ इसके पीछे उसने कृष्णचन्द्रजीका चौदह अक्षरोंका मन्त्र कृपापूर्व्वक हमसे कहा सो उस देवीकी महिमासे ३८ जैसेही ग्रहणकिया था कि उसीक्षण उनकी समता को प्राप्तहोकर देवोत्तम का रूप हमारा होगया व उन सब स्त्रियोंके संग हम वहांगये जहां कि सनातन कृष्णचन्द्रजी थे ३९ जोकि केवल सच्चिदानन्द रूप अपने आप स्त्री रूप थे व स्त्रियोंके आनन्द के दाताथे हमको देखकर बार २ कहा ४० कि हे प्रिये ! हे कान्ते ! हमारे समीपआओ व भक्तिसे हमारे संग आलिंगनकरो सो हे ब्राह्मणो ! ऐसा कहकर हमारे संग क्रीडाकरनेलगे व वर्षभर दिनरात्रि करतेरहे ४१ तदनन्तर विहारके पीछे उन्होंने राधिका देवी से कहा कि यह हमारी प्रकृतिहै जोकि नारदरूपिणी स्त्री होकर आईहै ४२ सो अब इससे कहो कि यह जाकर अमृतसर में स्नानकरे व यही प्रियबात विहारके अन्तमें हमसे भी कही ४३ हम ललिता देवी राधिकाकी सखी कहाती

हैं व हम वासुदेव नामहैं जोकि नित्य कामकलारूपहैं ४४ व सत्य २ हमभी स्त्रीरूपहैं क्योंकि हम सनातनी स्त्रीहैं हम व ललिता देवी सब पुरुषहैं व कृष्णरूप हैं ४५ हे नारद ! हम कृष्णचन्द्रमें व तुममें कुछअन्तर नहीं है यह सत्यहै सत्यहै इसरीति से जोहमारे तत्त्वको व समयको तथा मन्त्रको जानताहै ४६ व समाचारसहित हमारे संकेतको जानताहै वह हमको ललिताकी तुल्य बहुतप्रियहै व यह वृन्दावन हमारा रहस्य स्थानहै इससे यहभी हमाराशरीरहीहै ४७ तुम इसबातको कहीं किसी पशु आचरण करनेवाले से न कहना जैसे कि अन्य गुप्तअंगछिपायेजातेहैं वैसेही गुप्तरखना इसके पीछे फिर राधिकादेवी हमको उस अमृतसर में लेगईं ४८ व आप फिर कृष्णचन्द्रके चरणोंके निकटखड़ी होकर फिरचलीगईं हमने फिर उसमें स्नानकिया व स्नान करतेही हम फिर नारदहोगये ४९ व बीणाहाथ में लेकर कृष्णचन्द्रके रहस्य उसी सरोवर के किनारेपर बार बार गानेलगे व उस सरके तटपर ब्रह्माजीको व फिर विष्णु भगवान् के पार्षदोंको व गौको नमस्कारकरके ५० व फिर ब्रह्माजीको देखकर हमने उनसे कुछनहीं कहा सो हे वत्स ! गौतम यद्यपि यह बहुत गोप्यथा परन्तु तुमसे हमने कहा ५१ परन्तु तुमभी केवल कृष्णचन्द्रजी के रहस्यस्थान का स्मरणही करना और प्रयत्न से गुप्तरखना जैसे कि माताके जारपुरुषकी बात गुप्तरखतेहैं ५२ ऐसेही इस रहस्य को जानकर हमने जैसे शिष्य गौतमसे सहित रहस्यके कहा वैसेही गोपितभी इसबातको आपसे सब कहा ५३ ॥

चौ० मुनिपुंगव यदि कबहुँ कहूसों । यहप्रकाश करिहहुमुखहूसों ॥
तबहोइहि तुमकहँ अतिभारी । शापकृष्णकर कहतपुकारी १ । ५४ ॥
यह हरिलीला युत अध्याया । उत्तम पावन जो हम गाया ॥
जोयहिपढ़त सुनत नरनारी । सो होवत परपद अधिकारी २ । ५५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवृन्दावनमाहात्म्येनारदीयानुनये नामपञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

छिहत्तरवां अध्याय ॥

दो० कह्यो छिहत्तरयें महँ कृष्ण चरित संक्षेप ॥
जाहि सुनत युत प्रेम हरि भक्तनके उरवेप १

ईश्वरजी पार्वतीजी से बोले कि शिशुपालको माराहुआ सुनकर दन्तवक्त्र श्रीकृष्णचन्द्रजी के साथ युद्ध करने के लिये मथुरा पुरी में आया १ व उसको आयेहुये सुनकर कृष्णचन्द्रजी रथपर चढ़कर उसके संग युद्धकरने के लिये मथुराको गये २ व उसको मारकर यमुनाउतरकर नन्दके व्रजमें जाकर मातापिताके अभिवादन करके उनको समझाबुझाकर उन दोनोंको मिलेभेंटे व फिर सकल गोप वृद्धोंको मिल भेंटकर व उनको आशा भरोसा देकर बहुत वस्त्र भूषणादिकों से वहांके रहनेवाले सबलोगोंको सन्तर्पितकिया ३ व यमुनाजीके रम्य पुलिनमें पुण्यवृक्षों से युक्त गोपोंकी स्त्रियोंके साथ तीन रात्रिदिन सुखसे आनन्दित क्रीड़ाकरतेहुये वहां बसे ४ व उस स्थानपर नन्दगोपादि सब जन अपने २ पुत्र स्त्री पशु सहित आये व पशुपक्षी मृगादिक भी वहां श्रीवासुदेवजीके प्रसादसे दिव्यरूपधारी होगये व सबकेसब दिव्य विमानोंपर आरूढ़ होकर परम वैकुण्ठलोकको चलेगये ५ व श्रीकृष्णचन्द्रजी नन्दगोप व्रजवासियोंको अपना निरामयपद देकर देव देवगणोंसे स्तुति कियेजातेहुये श्रीमती द्वारकापुरीको चलेगये ६ वहां वसुदेव उग्रसेन बलभद्र प्रद्युम्न अनिरुद्ध अक्रूरादिकोंकेसाथ बसकर सबोंसे पूजितहोकर परमानन्दित हुये व फिर सोलहसहस्र एकसौआठ स्त्रियोंकेसंग विश्वरूप धारणकियेहुये दिव्य रत्नमय लतागृहोंके बीचमें कल्पवृक्षके पुष्पोंसे रतिकरी शय्या बनाकर व दिव्य पर्य्यङ्कोंपर सबोंकेसंग विहारकरते रहे ७ इसप्रकार सबदेवताओंके हितकेलिये सब पृथ्वीकाभारउतार नाश करके यदुवंश में अवतार लियेहुये सकलराक्षसोंका विनाश करके व महा भूभारको दूरकरके नन्द व्रजबासी व द्वारकावासी स्थावर जंगम सबोंको भवबन्धनसे छुड़ाकर परम निरन्तर योगियों के ध्यान करनेके योग्य स्थान में स्थापित किया व नित्य दिव्यस्त्रियोंसे सेवित होकर श्री वासुदेवजी सब लोगोंसे बोले कि ८ यह सब अ-

प्रकट ब्रह्मरूपथा फिर दृष्टिके पाषाणके समान एकत्र होगया था अब फिर अपने प्राकृतिक गुणोंको छोड़कर द्रवीभूत होकर स्वर्ग को जाताहै ९ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवृन्दावनमाहात्म्येपार्वती शिवसंवादेनामषट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६ ॥

सतहत्तरवां अध्याय ॥

दो० सतहत्तरयेंमहँ कह्यो राधाकृष्ण स्वरूप ॥
हरगिरिजासों बहुतविधि निजमन के अनुरूप १

इतनी कथा सुनकर पार्व्वतीजी ने महादेवजी से पूँछा कि ईश्वर श्री कृष्णचन्द्रजी के मन्त्रों के अर्त्थ व उनके पदों का गौरव विस्तार से कहो व उनका स्वरूप और स्थान व विभूतियां कहो १ व विष्णु भगवान् का परमधाम व्यूहों के भेद व निर्व्वाणपद हम से निश्चय करके कहो हे सब सुरेश्वरों के ईश्वर ! २ ईश्वरजी बोले कि वृन्दावन में कोटि गोपियों के बीचमें बैठेहुये श्री कृष्णचन्द्रजी सार हैं व वहां गंगा पराशक्ति है व उनका आनन्दबन है ३ जोकि नाना प्रकारके पुष्पों के आमोदसेयुक्त वायुसे सुगन्धितहै व यमुनाके दिव्य तरङ्गों के सङ्गसे शीतल रहता है ४ व सनकादि भागवतों से व अन्य मुनिश्रेष्ठों से युक्त रहता है व आह्लादित मधुरशब्दों से युक्त गोवृन्दों से भूषित रहता है ५ व रम्यमाला भूषण युक्त नाचते हुये बालकों से आच्छादित रहताहै उस आनन्दबन में सुवर्णकी छालसे युक्त दिव्यकल्पवृक्ष है ६ जोकि नानाप्रकारके रत्नोंके पल्लवों से युक्त व नानाप्रकारके मणियोंके फलोंसे विराजित रहताहै उसके नीचे रत्नके किरणोंसे प्रकाशित रत्नोंकी वेदी बनीहै ७ उसके ऊपर वेदमय रत्नों का उत्तम सिंहासन है उसके ऊपर तीनों गुणोंसे अतीत नाशरहित श्रीजगन्नाथ विराजते हैं ८ जोकि कोटि चन्द्रमा समान प्रकाशित व कोटि सूर्य्य समान प्रकाशित होते हैं व कोटि कन्दर्प्पोंकी सौंदर्य्य से युक्त व अपनी प्रभासे दशदिशाओंको प्रकाशित कराते हैं ९ तीन नेत्र द्विभुज गौर स्वरूप व तपायेहुये सुवर्ण के रङ्गके शरीरसे शोभित होरहे हैं व सब ओरसे स्त्रियां जिनको लपटी हैं व सब ओरसे सुन्दर

प्रकाशित होतेहैं १० ब्रह्मादिक देवताओंसे व सनकादि मुनियोंसे ध्यान कियेगयेहुये व भक्तों के वशीभूतहैं व हर्ष से घूर्णितनेत्रवाली महोत्सवसे नाचतीहुई ११ व चुम्बन करती व हँसतीहुई व बार २ छपटती हुई इस प्रकार देह धारण कियेहुई कोटि २ युवतियों से श्रुतियोंसे आच्छादित १२ व उनके चरणारविन्दोंके मधुसे मत्त युवतियों से सब तरफ सेवित व उन सब स्त्रियों के मध्यमें जो देवी तपायेहुये सुवर्णके रंगकी चमकके समान प्रकाशितरंगवाली १३ व अपनी प्रभासे सबदिशाओंको प्रकाशित करातीहुई व बिजुलीसेभी अधिक उज्ज्वलमूर्त्ति धारणकियेहुई वा जोप्रधान भगवती है जिससे यह सब विश्व विस्तृत होरहा है १४ व जो सृष्टि स्थिति व अन्त-रूपाहै व विद्याअविद्या वेदत्रयी रूपिणी है व स्वरूपा शक्तिरूपा मायारूपा चैतन्यमयी है १५ व ब्रह्मा विष्णु शिवादिकोंके देहों के कारणोंकी भी कारणहै व जिसकी माया से यह चराचर जगत् सदा परिरम्भित रहताहै १६ उनका वृन्दावनेश्वरी राधिकानाम है जोकि ब्रह्माकीभी कारण रूपाहैं सो ऐसी राधाको आलिंगन कियेहुये वृ-न्दावनके ईश्वर वृन्दावन में बसते हैं १७ व परस्पर चुम्बन करने व लपटनेके मदके आवेशसे विघूर्णित ऐसे देवदेव के ध्यानकरनेसे सब संसिद्धियोंको पुरुषपाता है १८ मन्त्र जाननेवाला यह मन्त्रराज तिन कृष्णचन्द्रजीका गुप्त रखनेके योग्यहै क्योंकि जो उसको जपता है वा सुनताहै वह महात्मा दुर्लभ होताहै १९ व उसके ऊपर जिन का राधिका चित्ररेखा चन्द्रा मदनसुन्दरी श्रीप्रिया श्रीमधुमती शशिरे-खा हरिप्रिया २० सुवर्णशोभा सम्मोहा प्रेमरोमाञ्चराजिता वैवर्ण्य स्वेदसंयुक्ता भावासक्ता प्रियंवदा २१ सुवर्णमालिनी शान्ता सुरासर-सिका सर्व्वस्त्रीजीवना दीनवत्सला विमलाशया २२ निपीतनाम पीयूषा नामहै वे राधाकहीजाती हैं व उन्हींका नाम सुदीर्घ स्मित सय्युक्ता तप्तचामीकर प्रभा है २३ व उन्हीं का सूच्छेत्प्रेमनदीराधा बरणलोचनाञ्जना माया मात्सर्य्यसय्युक्ता दानसाम्राज्यजीवना २४ व जिनकानाम सुरतोत्सवसंग्रामा चित्तरेखा कहाजाताहै व गौ-रांगी नातिदीर्घा सदावादन तत्परा है २५ व जिनका दैन्यानुराग

नटना मूर्च्छारोमाञ्च जिह्वला हरिदक्षिणपार्श्वस्था व सन्देमन्त्र प्रिया नाम है २६ व अनंगलोभ माधुर्य्या चन्द्रा कहाजाता है सलीलमन्थरागतिः मंजुमुद्रितलोचनाकीर्णा प्रेमधारोज्ज्वला २७ व दलिताञ्जनशोभना नामहै व कृष्णानुरागरसिका रासध्वनिसमुत्सुका २८ हरिके चित्तको मोहती है जितेन्द्रिया जितक्रोधाभी वह प्रिया कहीजाती है अहङ्कारसमायुक्ता व मुखनिन्दितचन्द्रमा नाम है व विविक्तरासरसिका श्यामा श्याममनोहरा प्रेम व प्रेमकटाक्ष करने के कारण वैचित्र्यमधुराकृति भी नाम है व सुन्दरासित सय्युक्ता मदनसुन्दरी नाम है मधुरालापचतुरा व जितेन्द्रिय शिरोमणि नाम है सुतप्तस्वर्णगौराङ्गी लीलागमनसुन्दरी भी नाम है स्मरोत्थप्रेम रोमाञ्चा मुखनिन्दितचन्द्रमा भी कहीजातीहै २९ । ३३ व मधुमती प्रेमरोदनतत्परा सम्मोहज्वररोमाञ्चा व प्रेमधारासमन्विता नाम है ३४ व नादधूलि विनोदा रासध्वनि महानटी शशिरेखा व गोपालप्रेयसी ३५ कृष्णात्मा उत्तम श्यामा मधु पिङ्गललोचना तिनके चरणोंके प्रेमके मोहसे पुलकचुम्बिता ३६ व जिनका शिवकुण्ड में शिवानन्दा नामहै व देहिकानदीके तटपर नन्दिनी नामहै व द्वारावतीमें रुक्मिणी व वृन्दावन में राधानामहै ३७ मथुरामें देवकीरूप से परमेश्वरी हुईं व चित्रकूटपर सीता व विन्ध्याचलपर विन्ध्यनिवासिनी ३८ वाराणसीमें विशालाक्षी व पुरुषोत्तमतीर्थ में विमला व श्रीमान् कृष्णचन्द्रजी ने जिनको प्रसन्नहोकर वृन्दावन की स्वामितादीहै ३९ इससे अन्य वनोंमें देवीकहाती हैं व वृन्दावननाम वनमें राधानामहै व जो कृष्णचन्द्र अशरीरी कहेजाते हैं उनकी ये नित्यानन्द तनुहैं ४० ये वायु अग्नि आकाश व भूमि इनके अङ्गोंकी अधिष्ठात्री देवताहैं व ब्रह्म और गोविन्द दोनोंके शरीररूपिणी हैं ४१ जैसे कि सूर्य्य कर चरणादि इन्द्रियोंसे युक्तहैं पर तेजसे उनके अङ्गनहीं लक्षितहोते ऐसेही कृष्णचन्द्रभी कान्तिसेयुक्त होनेके कारण समयमें मोहित करतेहैं ४२ परन्तु उनकी प्राकृती मूर्त्ति नहींहै जोकि मेदामांस व हड्डियोंसे उत्पन्नहोतीहै किन्तु वे योगी ईश्वर सर्व्वात्मा नित्यशरीरहैं ४३ व देवयोगसे उनके शरीर में जो कठिनता है वह

वर्षाके उपलोंकीसी है नहीं तो अमिततत्त्ववाले श्रीकृष्णचन्द्रजी के कर चरणादि व देवता नहीं हैं ४४ अबहम वृन्दावनकी रजकी बन्दनाकरतेहैं जिसमें कि कोटि विष्णु उत्पन्न होते हैं आनन्दरूप किरणोंसे आच्छादित विश्व पूर्णचन्द्ररूप कृष्णचन्द्रजी हैं ४५ अमृत रूप गुण तो आत्मामें रहतेहैं व जीव सब उनके किरणरूपहैं कृष्णचन्द्र सदा द्विभुज रहतेहैं व चतुर्भुज कभी नहीं रहते ४६ व एक गोपी राधिकाकेसाथ सदा क्रीड़ा कियाकरतेहैं गोविन्दही पुरुषहैं व ब्रह्मादि स्त्रियां हैं ४७ तैसे स्वभाव यानी स्त्रयम्भुत्र प्रकृतिका भाव ईश्वरहै वृन्दावनेश्वर व राधा येही दोनोंपुरुष व प्रकृति हैं४८व प्रकृतिका बिकार सबहै वृन्दावनेश्वर कृष्णचन्द्रको छोड़कर ४९ जैसे जो उत्पन्नहै उसीसे यह उत्पन्न होताहै जैसे उसके विनाशसे भेदको प्राप्त होजाताहै जैसे सुवर्णके कङ्कणादि भूषण बनायेजाते हैं व उनके विनाशसे सुवर्णका विनाशनहीं होताहै ऐसेही मत्स्यादि अवतारोंके बिनाशसे कृष्णचन्द्रजीका नाशनहीं होताहै ५० कृष्णचन्द्रजी वृन्दावनविहारीका यह त्रिगुणादि प्रपञ्चहै जैसे समुद्रसे लहरें उठती हैं कुछ लहरोंसे समुद्र नहींहोता ५१ राधिकाजी की बराबर दूसरी स्त्री नहींहै कृष्णजी की तुल्य पुरुष नहीं है किशोरअवस्थासे श्रेष्ठ और अवस्था नहीं है व स्वभाव प्रकृतिसे परहै ५२ पर किशोरअवस्था को प्राप्तही कृष्णचन्द्रका इससे ध्यानकरना चाहिये व वृन्दावनका भी ध्यान करनाचाहिये व आदिदेव कृष्णचन्द्रजीका श्यामहीरूप परहै इससे उसीका ध्यान होनाचाहिये ५३ पांचयें वर्षतक बाल्यावस्था कहातीहै व छसे दशतक पौगण्डावस्था व ग्यारहसे तेरहतक कैशोरावस्था पन्द्रह से ऊपर फिर यौवनकी अवधि होतीहै ५४ व यौवनसे कैशोर उद्भिन्न होजाने के कारण फिर नवयौवन कहाती है वह अवस्था सर्वस्वहै इतर अवस्था प्रपंचजानो ५५ बाल्य पौगण्ड कैशोरअवस्था बन्दनाकेयोग्य होतेहैं व मनोहरहोतेहैं इससे बालगोपाल गोपाल जोकि कामरूपीहैं उनका स्मरणकरनाचाहिये ५६ व कैशोराकार अद्भुत मदनगोपालकी हम वन्दना करते हैं जिनको कि यौवनोद्भिन्न श्रीमन्मदनमोहन कहते हैं ५७ कैशोररूपी श्रीपति

जी की गूढ़ वपु अखण्ड अतुल अमृत रसानन्द महार्णव अवस्था की जयहो ५८ एकनाशरहित स्त्रियों के समूहके बीचमें रहनेवालेपूर्व होनेवाले ध्यानगम्य श्रीकृष्णचन्द्रजी को पृथक्बुद्धिवाले अपनी २ रुचिके माफिक अलगअलग देखते हैं ५६ जिनके चन्द्रमाकी तुल्य तेजवाली नखोंकी दीप्तिको ब्रह्मकीतुल्य ब्रह्मादिक देवता ध्यान करते हैं जोकि तीनोंगुणों के अतीतहै ऐसे वृन्दावनविहारीकी बन्दना करते हैं ६० वृन्दावनको श्रीगोविन्दजी कभीनहीं छोड़ते अन्यत्र जो उनका रूपहै वह कृत्रिम है इसमें शक नहीं है ६१ यह ब्रजनारियों कोही सुलभहै व मुमुक्षुलोगों को दुर्ल्लभ है हम उन नन्दनन्दनको भजतेहैं जिनके नखोंके तेजसे परममन्त्र उत्पन्न होताहै ६२ इतना सुनकर पार्व्वतीजी बोलीं कि ॥

चौ० भुक्तिमुक्तिबाञ्छातिपिशाची । जबलगहृदयमांझनितनाची ॥
तबलग प्रेम सुखोदय कैसे । होयहृदयमहँ भाषहु तैसे १ । ६३
कहशिव पूँछ्यहुसाधुभवानी । जो हमनितअपनेमनजानी ॥
सो सब कबह न कछु सन्देहा । सावधान ह्वै सुनहु सनेहा २ । ६४
हरिगुण सुनि त्यहिनाम उचारै । मन रंजन तासोंकरिडारै ॥
तवआत्मा सों आत्मा जानै । ताहि प्रेमगतकरि पहिचानै ३ । ६५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवृन्दावनमाहात्म्येभाषानुवादेपार्व्वतीशिवसंवादेश्रीकृष्णरूपवर्णनन्नामसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७॥

अठहत्तरवांअध्याय ॥

दो० अठहत्तरयें महँ कह्यो वैष्णवधर्म्म महत्त्व ॥
शालग्राम शिलाहुके लक्षणबहुत सतत्त्व १

पार्व्वतीजी ने महादेवजी से पूँछा कि वैष्णवोंका जो धर्म्महो यथातथ्य हमसे कहो कि जिस को करके सब मनुष्य भवसागर को तरतेहों व तरें १ ईश्वरजी बोले कि वैष्णवों को द्वादश शुद्धियां हैं भगवान् के मन्दिरका गोमयादिकोंसे उपलेपन व श्रीहरिके मन्दिर को नित्यजाना २ भक्तिसे प्रदक्षिण करना यह चरणों का शोधन है पूजाकेलिये पत्रपुष्पों का हरिकेलिये भक्तिसे तोड़ना ३ यह दोनों हाथोंकी शुद्धिहै व सब शुद्धियों से विशेष है व भक्तिसे हरिके नाम

का कीर्त्तन व उनके गुणोंका भी कीर्त्तनकरना ४ यह श्रीकृष्णचन्द्र जीकी भक्तिसे वचनकी शुद्धिकहाती है व उनकी कथाका श्रवणकरना कानोंकी शुद्धि कहाती है व श्रीहरिके उत्सवों के दर्शनकरना नेत्रों की शुद्धिहै व उनके पादोदक और उनकी पहिनी हुई मालाओं का धारण करना ५ । ६ भगवद्दासके शिरकी शुद्धि है व भगवान् के ऊपर चढ़ेहुये पुष्पादिकों के व अन्य तुलसीआदि उनके ऊपरके चढ़ेहुये पदार्थोंके ऊपर धरलेने से ७ नासिकाकी व हृदयकी शुद्धि होतीहै क्योंकि पत्र पुष्पादिक जो कुछ कृष्णचन्द्रजीके युगल चरणों में अर्पित कियाजाता है ८ लोकमें वही सबसे अधिक पावन है व इसी से सबको शुद्धकरताहै पूजा भगवान् की पांचप्रकारकी होतीहैं उनके भेदोंको हमसे सुनो ९ अभिगमन उपादान योग स्वाध्याय व मूर्त्तिका अर्च्चन क्रमसे इन पांचों को तुमसे कहते हैं १० उनमें अभिगमन देवताके स्थानके मार्ज्जन करनेको कहते हैं व फिर उसके उपलेपनकरने और उनके ऊपरकी चढ़ी वस्तुओं को एकान्त शुद्ध-स्थलों में धरनेको भी अभिगमनही कहते हैं ११ व गन्ध पुष्पादि इकट्ठे करनेको उपादान कहते हैं व मन्त्रार्थ का अनुसन्धान पूर्वक जप व सूक्त इत्यादि स्तोत्रोंका पाठ करना व हरिका नामलेना स्वाध्याय कहा जाता है १२ । १३ अपने देवताका स्वात्मा करके आत्मभावना व तत्त्वादि शास्त्रोंमें अभ्यास करनेको स्वाध्याय कहते हैं व अपने देवकी पूजाको इज्या कहतेहैं व यथोचित पूजन को भी इज्या कहते हैं १४ हे सुव्रते! यह पांचप्रकार की पूजा हमने तुमसे कही ये पांचप्रकारकी पूजायें क्रमसे सार्ष्टि सामीप्य सालोक्य सायुज्य व सारूप पांच प्रकारकी मुक्तियों को देती हैं १५ चार भुजोंसे जो युक्तहैं केशव इत्यादि मूर्त्तियां उनके दक्षिण ऊर्ध्वकरके क्रम से अब पूजन के प्रसंग से शालग्राम शिलाका पूजन कहते हैं १६ सो शङ्ख चक्र गदा पद्म धारणकिये हुये केशव नाम गदाधरदेव अथवा गदा कमल शङ्ख चक्र धारणकिये गोविन्द नाम गदाधरदेवहैं व पद्म गदा चक्र शङ्ख आयुध क्रमसे धारण किये नारायण नाम १७ व चक्र शङ्ख पद्म गदाकरके माधव नाम व गदा कमल शंख

चक्र धारणकिये गोविन्दनाम गदाधर देवहैं १८यह ध्यानका श्लोक पढ़कर फिर पद्म शङ्ख चक्र गदा धारणकियेहुये विष्णुरूप तुम्हारे नमस्कार है व शंख पद्म गदा चक्र धारणकिये मधुसूदनमूर्त्तिवाले तुम्हारे नमोनमः है १९ व गदा चक्र शंख पद्म इस क्रमसे धारण किये त्रिविक्रममूर्त्तिके नमस्कार है व चक्र कौमोदिकी पद्म शंख इस क्रमसे इन आयुधोंको धारणकियेहुये वामनमूर्त्तिके नमस्कारहै २० व चक्र कमल शंख गदाके धारणकरनेवाली श्रीधरमूर्त्तिके नमस्कार है व चक्र गदा शंखपद्म धारणकरनेवाले हृषीकेश तुम्हारे नमस्कार है २१ व पद्म शंख गदा चक्रके क्रमसे धारणकिये पद्मनाभ के नमस्कारहै व शंख गदा चक्र पद्म क्रमसे धारणकिये दामोदर के नमस्कारहै २२ व चक्र शंख गदा पद्मके क्रमसे धारणकियेहुये वासुदेवके नमस्कार है व शंख पद्म चक्र गदाके क्रमसे धारणकिये सङ्कर्षणजी के प्रणामहै २३ व शंख चक्र गदा कमलइसक्रमसे धारण कियेहुये प्रद्युम्नकी मूर्त्तिके नमस्कारहै व गदा शंख पद्म चक्र क्रमसे धारणकिये अनिरुद्ध के नमस्कारहै २४ व पद्म शङ्ख गदा चक्रके क्रमसे आयुध धारणकिये पुरुषोत्तम के नमस्कार है व गदा शङ्ख चक्र पद्म धारण किये अधोक्षज के नमस्कार है २५ व पद्म गदा शङ्ख चक्र धारण किये नृसिंहजी के नमस्कार है व पद्म चक्र शङ्ख गदा धारणकिये अच्युतमूर्त्ति के प्रणाम है २६ व गदा पद्म चक्र शङ्ख धारणकिये श्रीकृष्णजी के नमस्कारहै व शालग्राम व जिस शालग्रामशिला में दोचिह्न द्वारवती में उत्पन्न गोमतीचक्रकेहों २७ व सुन्दर मस्तक में एकरेखासे शोभितहों वे गदाधरदेवहैं व जिन शालग्रामशिला में दो गोमतीचक्रों के चिह्नहों व पूर्वभाग पुष्कल रक्तवर्णहो २८ वे सङ्कर्षणस्वरूप हैं व जिनमें सूक्ष्मचक्रका चिह्नहो व पीतवर्णकेहों वे प्रद्युम्न कहाते हैं व जो बड़े छिद्रसेयुक्तहों व चीकनेहों व वर्त्तुलाकार हों वे अनिरुद्धजीहैं २९ व नीलवर्णहों और तीनरेखाओंसे चिह्नित हों यहभी चिह्न अनिरुद्धहीका है व नारायणरूप शालग्राम अति श्याम व मध्यमें गदाके आकारकी रेखासेयुक्त व नाभिमें उन्नत कमल से युक्तहोते हैं ३० व बड़ेचौड़े चक्रसेयुक्त नृसिंह होतेहैं व कपिल

तीन बिन्दुके होतेहैं अथवा ब्रह्मचारी पांच बिन्दुओं की पूजाकर सक्ता है ३१ व वराहमूर्त्ति त्रिलिङ्ग व बिषम दो चक्र चिह्नों से युक्त होतीहै व नीलवर्ण तीनरेखायुक्त स्थूल व बिन्दुसहित कूर्म्म मूर्त्ति होतीहै ३२ व कृष्णवर्ण वर्त्तुलाकार पाण्डुवर्ण पीठमें धारण कियेवा श्रीधरमूर्त्ति होतीहै पांच रेखाओंसे युक्त गदा धारणकियेहुये बनमालापहिने होतेहैं ३३ व मध्यमें नीलवर्णके चक्रसेयुक्त नीलवर्ण गोल बामनजी होतेहैं व नानावर्ण अनेकमूर्त्ति नागचिह्नों से युक्त अनन्तरूपी शालग्राम होतेहैं ३४ मध्यमें चक्रचिह्नित नीलवर्ण स्थूलमूर्त्ति श्यामस्वरूप दामोदर होतेहैं व संकर्षणजी रक्षाकरतेहैं लोहितवर्ण ब्रह्मा होतेहैं ३५ व बड़ीलम्बी रेखासेयुक्त व सुषिर एक चक्र व पद्मसेभीयुक्त मोटे व बड़ेचौड़े छिद्रसेयुक्त स्थूलचक्र चिह्नित कृष्णजी बिन्दुरहित बिन्दुमान् कहाते हैं ३६ कौस्तुभमणि सहित पांचरेखाओं से युक्त अंकुशा के आकारके हयग्रीव होतेहैं व श्याम स्वरूप आमलकवद्वर्त्तुलाकार व एक चक्रयुक्त वैकुण्ठ होतेहैं ३७ व पाण्डुवर्ण बड़ी रेखाओं से युक्त दीर्घ कमलाकार मत्स्यजी होते हैं व चक्रादि चिह्नसहित श्यामस्वरूप दक्षिणावर्त एकरेखा से युक्त श्रीरामचन्द्रजी होतेहैं ३८ द्वारकामें रहनेवाले गदाधारणकिये शालग्रामके नमस्कारहै व जो एकगदा व सुदर्शन धारणकिये वे गदाधर कहाते हैं वे रक्षाकरें व दो चक्रोंसे युक्त लक्ष्मीनारायण कहाते हैं व तीनचक्रों से चिह्नितहोनेसे त्रिविक्रम कहजातेहैं व चारचक्रोंसे चतुर्व्यूह व पांचसे बासुदेव कहलाते हैं ३९ । ४० छ से प्रद्युम्न व सातसे सङ्कर्षण व आठ चक्रोंसे चिह्नित होनेसे पुरुषोत्तम कहलाते हैं व नवसे नवव्यूह कहलाते हैं ४१ व दशचिह्नों से युक्त दशमावतारी अनिरुद्ध तुम्हारी रक्षाकरें व द्वादश से युक्त द्वादशात्मा व ऊपरको जिनका मुख होताहै वेभी अनन्त कहाते हैं ४२ उच्चाकार चार मुखों से युक्त व कमण्डलु दण्ड पुष्पमाला धारण किये हुये ब्रह्मा कहाते हैं व पांचमुखों से युक्त महेश्वर व दशबाहुओं से युक्त वृषध्वज कहाते हैं ४३ जैसे जिनके आयुध होतेहैं वैसेही व गौरी चण्डिका सरस्वती महालक्ष्मी मातृगण पद्महस्त दिवाकर ४४

गजानन गजस्कन्ध षण्मुखआदि अनेक गणहैं येसब मकानमें स्थित हों इनसबों की स्थापना पूजा कीजाय ४५ तो धर्म्म काम अर्थ मोक्षादि सब पुरुषों को देते हैं ४६ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेवृन्दावनमाहात्म्ये शालग्रामनिर्णयोनामाष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥

उन्नासीवां अध्याय ॥

दो० उन्नासी महँ है कहो शालग्राम सुचीन्ह ॥
अरु तुलसी तिलकादिकर वरमहात्म्य कहिदीन्ह १

ईश्वरजी पार्व्वतीजी से बोले कि शालग्रामकी शिलामें मणि में यन्त्रमें व मण्डल में प्रतिमाओं में श्रीहरिकी पूजा नित्यहोती है व केवल मन्दिरमें पूजा नहीं होती है १ गण्डकी नदी के एकदेश में शालग्राम का महास्थल है उसमें से जो पाषाण उत्पन्न होते हैं वे शालग्राम कहाते हैं २ शालग्राम शिलाके स्पर्शकरने से कोटिजन्मों के पापोंका नाशहोता है व फिर जहां उनका पूजनहोता है वहांको क्या कहना है वहांतो श्रीहरिकी सान्निध्यहीका कारणहोजाता है ३ एक शालग्रामकी पूजाकरने से सौ शिवलिङ्ग पूजने का फलहोताहै उसमें भी जब बहुतजन्मोंकी पुण्य इकट्ठी होती है तब कृष्णरंग की शालग्रामशिला मिलती है ४ वहभी जो गोपद के चिह्नसे चिह्नित हो क्योंकि ऐसी शिलाके पूजनसे फिर प्राणीका जन्म नहीं होताहै प्रथम शालग्राम शिलाकी परीक्षाकरनी चाहिये क्योंकि श्याम व चीकनी शिला श्रेष्ठहोती है ५ व कुछ कृष्ण शिला मध्यम कहाती है व जो कहीं कहीं बहुतश्याम व कहीं कहीं अल्पश्याम होतीहै वह मिश्रा शुभ अशुभ मिलाहुआ फलदेती है काष्ठमें सदा अग्निरहता है पर मन्थन करनेसे प्रकाशित होताहै ६ ऐसेही हरिसर्व्वत्र व्यापी हैं परन्तु शालग्राम शिलामें प्रकाशित होतेहैं ७ प्रतिदिन जो पुरुष शालग्रामकी बारहशिला द्वारवती की गोमती चक्रसे युक्त पूजताहै वह वैकुण्ठमें जाकर पूजितहोता है जो मनुष्य शालग्राम शिलाओं के समूहका दर्शन करताहै ८ उसके पितर तृप्तहोकर कल्पान्त पर्य्यन्त स्वर्गमें टिकते हैं जहां द्वारवतीकी शिला रहती है वहां वैकुण्ठ

भवन सदा रहताहै ९ इससे वहां मरनेसे मनुष्य विष्णुपुरको जाता है क्योंकि वह स्थान तीन योजन पर्य्यन्त तीर्थ तुल्य रहताहै इससे शालग्राम के समीप जप होम पूजा जो कुछ कियाजाता है वह कोटि गुण अधिक होजाता है १० व शालग्रामकी शिलाके चारोंओर कोश मात्रतक अभीष्ट मनकेकाम होतेहैं इससे जो शालग्राम की शिलाके समीप कोशभरतक कोई कीड़ामकोड़ा भी मरताहै वह वैकुण्ठ भवन को जाताहै ११ फिर चैतन्य मनुष्यको क्या कहनाहै व जो दुष्ट म-नुष्य शालग्रामकी शिलाके दामोंको उद्घाटित कराता है व जो बेंचताहै व जो मोललेना अंगीकार करताहै व जो परीक्षा करके दाम लगाताहै व जो उसका अनुमोदन करताहै १२ वे सब नरकको जाते हैं व जब तक सूर्य्य व कल्पान्त होता है तबतक नरकमें पड़ेरहते हैं इससे शालग्राम शिला का बेंचना व मोललेना दोनों वर्जित हैं १३ शालग्राम शिला व जो देव द्वारवतीमें उत्पन्न होते हैं अर्त्थात् गोमतीचक्र इन दोनों का जहां संगम होताहै वहां मुक्ति होती है इसमें संशय नहींहै १४ द्वारकामें उत्पन्न चक्रसेयुक्त व बहुत चक्रों से चिह्नित व चक्रासन शिला के आकार के शालग्राम चित्स्वरूपी निरंजन आप हैं १५ ॐकार रूपी तुम्हारे नमस्कार है तुम सदा आनन्दस्वरूपीहो हे शालग्राम महाभाग! भक्तके ऊपर अनुग्रहकरो १६ हेप्रभो! तुम्हारी दया चाहताहूं व ऋणसे ग्रसितहूं इसके पीछे आनन्दसे अब तिलक करने का विधान कहतेहैं १७ जिसको सुन-कर सब मनुष्य विष्णुकी सारूप्यको प्राप्तहुये हैं व होंगे ललाटमें तिलक करनेके समय केशवका स्मरणकरे क्योंकि वे वहांके तिलक पर सदा स्थित रहतेहैं व कण्ठमें श्रीपुरुषोत्तमका स्मरणकरे १८ व नाभिमें नारायण देवका व हृदयमें वैकुण्ठजीको सुमिरे व बामपा-र्श्वमें दामोदरजीका स्मरण व दक्षिणमें त्रिविक्रमजीका १९ व शिर के ऊपर हृषीकेशका व पीठमें पद्मनाभका स्मरणकरे व कानोंमें य-मुना गंगाका स्मरणकरे व दोनों बाहोंमें कृष्णहरिका स्मरण करना चाहिये २० इन द्वादश स्थानोंमें तिलक लगानेसे बारह ये देव तृप्त होतेहैं जब तिलक करनेलगे तो इन बारहनामोंको पढ़े २१ तोसब

पापों से विशुद्धात्मा होकर विष्णुलोकको जावे ऊर्ध्वरेखा से युक्त ऊ-र्ध्वपुण्ड्र जिसके ललाटपर दिखाईदेताहै २२ वह चण्डालभीहो तो शुद्धात्मा होजाताहै व पूजाकरनेकेयोग्य होजाताहै इसमें संशय नहीं है जिसपुरुषके ललाटपर ऊर्ध्वपुण्ड्र न दिखाईदेताहो २३ उसको न दे-खनाचाहिये यदि किसी कारणसे उसके ऊपर दृष्टिपड़जाय तो उस पापके मिटानेकेलिये सूर्यकीओर देखनाचाहिये मुख्यकरके जिस ब्रा-ह्मणके मस्तकपर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक न दिखाई देवे २४ उसको देखकर अथवा स्पर्शकरके सवस्त्रस्नान कर डालनाचाहिये ऊर्ध्वपुण्ड्र अन्त-रालसहित श्रीहरिके चरणके आकारका ललाट पर लगानाचाहिये २५ क्योंकि जो विप्राधम बिना अन्तरालका ऊर्ध्वपुण्ड्र लगाता है उसके ललाटपर निरन्तर कुत्तेका पैर बनाहै इसमें संशय नहीं है २६ नासि-काकीजड़से अर्थात् भौहोंके मध्यसे शिरके केशोंतक सुन्दर ऊर्ध्वपुण्ड्र लगाना चाहिये व उसके मध्यमें छिद्रहोना चाहिये क्योंकि ऐसेही ऊर्ध्व पुण्ड्रका हरिमन्दिर नामहै २७ ऊर्ध्व पुण्ड्रमें जो दो रेखा खड़ी लगाईजाती हैं उनमें वामभाग वालीपर तो ब्रह्माजी स्थित रहतेहैं दक्षिणभाग वाली पर सदाशिवजी व मध्यमें विष्णुजीको जानना चाहिये इससे मध्यमें न लेपनकरे २८ स्वच्छ दर्पणमें देखकर अ-थवा शुद्धजलमें देखकर यत्नसे जो तिलककरता है वह महाभाग परमगति को जाताहै २९ अग्नि जल वेद चन्द्रमा सूर्य्य पवन ये सब नित्यविप्रों के दहिने कानमें टिके रहते हैं ३० व गंगा दहिने कानमें व नासिकामें अग्नि सदा टिकेरहते हैं इससे दहिनाकान व नासिकादोनों के स्पर्शकरने से तुरन्त शुद्धहोजाता है ३१ श्रीहरिके स्नानकराने का शुद्धजल शंखमेंकरके व तुलसी मिश्रितकरके महा-त्मा वैष्णवोंको देनाचाहिये व पीनाचाहिये व शिरसे उसकीवन्दना करनी चाहिये ३२ फिर अपने पुत्र मित्र स्त्री आदिको पियाना चा-हिये व सबके शिरोंपर छिरकना चाहिये क्योंकि विष्णुके पादोदक के पीनेसे कोटिजन्मों का पाप नष्ट होजाता है ३३ परन्तु भूमिपर एक बिन्दुभी गिरपड़नेसे उसका अठगुना पाप होताहै व शुद्धजल शंखमें भरकर हाथमें करके स्तुति नमस्कार करके व विष्णुके ऊपर

प्रदक्षिण क्रमसे घुमाकर ३४ जो निरन्तर वहजल अपने शिरपर धारणकरलेता है वा और किसीके ऊपर छोड़ता है वह जन्मलेनेका फल पाजाताहै जिसके गृहमें शंखनहीं होता अथवा गरुड़की मूर्त्ति से युक्त घण्टा नहीं होता है ३५ वह कलियुग में वासुदेवजी का भागवत नहीं है किसी सवारीपर चढ़कर वा जूताखराऊँ पहिनकर भगवान् के मन्दिरके भीतरजाना ३६ देवता के उत्सवमें उत्सव न करना व सेवा न करनी व भगवान्के आगे जाकर प्रणाम नकरना व अपवित्रताकी दशामें जूंठेमुख आदि में अशौच में भगवान् की वन्दना आदिका करना ३७ एक हाथसे प्रणाम करना व उनके आगे वा दहिनी ओर पादका फैलाना व ऐसेही भगवान् के आगे पर्य्यङ्कपर बैठना ३८ वा शयन करना व कुछ वस्तु उनके सम्मुख भक्षण करना व मिथ्या बोलना व भगवान् के आगे बहुत ऊँचे स्वर से बोलना व आपस में उनके आगेही बहुत बकबक करना रोदन करना वा किसीसे विग्रह करना ३९ वा किसी के ऊपर कोप करना अथवा अनुग्रह करना व स्त्रियोंको दुर्वचन कहना व केवल आवरणसे पराई स्तुति करना व पराई निन्दाकरना ४० व अश्लील कहना व अधोवायु छोड़ना व शक्तिहोने पर भी गौणारीति से पूजनादि करना व विनापरमेश्वर के निवेदन किये पदार्थ का भक्षण करना ४१ व जिसकाल में जो फलादिक होतेहैं उसमें उनका न निवेदन करना व अपने वा अन्य किसी के कार्य्य में लगाने से बचेहुये व्यञ्जनादिका भगवान् के समर्पण करना ४२ व सब के आगे स्पष्टता पूर्वक भक्षणकराना व पराई निन्दा वा स्तुति करना व गुरुके गुणोंके कहने में मौनरहना अपनी स्तुति करना व किसी देवताकी निन्दा करना ४३ इसीतरह विष्णुके ३२ बत्तीस अपराध भी कहेगये हैं ४४ कि हे मधुसूदन! मैं रात्रि दिन सहस्रों अपराध किया करताहूं परन्तु मुझको अपना समझकर क्षमाकरो ४५ इस मन्त्रका उच्चारण करके दण्डवत् भूमिपर गिरकर प्रणाम करे तो श्रीहरि उसके सहस्रों अपराधोंको क्षमा करतेहैं ४६ ब्राह्मण क्षत्रिय व वैश्योंका भोजन वेदके लिखने के अनुसार प्रातःकाल व सन्ध्या

कालमें होनाचाहिये इसके विपरीत अन्य समय में भोजन करने से अपराध होताहै परन्तु विष्णुको निवेदनकरनेसे अवशिष्टभोजन करने से दिनके भोजनका पाप मिटजाताहै ४७ अन्न ब्रह्माहैं व रस विष्णुहैं महादेवजी ने कहा कि हे देवि ! यह उच्चारण करतेहुये भोजनकरे ऐसा जानकर जो भोजनकरताहै वह अन्नके दोषोंसे नहीं लिप्तहोताहै ४८ गोललौकी व बकले सहित मलुढ़ी व ताल उजला व भांटा जो मनुष्य वैष्णवहो कभी न भक्षणकरे ४९ बरगद पीपल मदार वा अकौवा के पत्तों में व बहेरा और बड़हरके पत्तोंमें कचनार और कदम्ब के पत्तोंमें भी वैष्णव मनुष्य न भोजनकरे ५० श्रावणमास में किसी वस्तुका शाक न खाय व भाद्रपदमें दही वा मट्ठा न खाय व आश्विन मासमें दूध व कार्त्तिकमें जो आमिष कहाता है न खाय ५१ थोड़ी जलाहुआ अन्न व जँभीरीनिम्बू व जो पदार्थ विष्णुको निवेदित न कियागयाहो व विजौरानिम्बू व सनकाशाक व किसी वस्तुके साथ प्रत्यक्षमें लवण वैष्णव न भक्षणकरे ५२ यदि भाग्यवश से कभी इन पदार्थोंका भक्षणहीकरे तो भगवान्‌के नामका स्मरणकरे क्योंकि उसके स्मरण करने से उनके भक्षण का पाप मिटजाता है मोथी शर्करा सजाव दही धान मूँग तिल यव ५३ कयराव काकुन तिनी पसाढ़ी मरसा पलाकीकाशाक कालेदानेका शाक बथुई उजलीमूली व अन्य सब आलू घुइयां आदि मूल ५४ लोनोंमें सैन्धव व समुद्र से बनाहुआ लोन व गौका दधि और घृत व साढ़ीसहित दुग्ध कटहल आम्र हर्रे ५५ पिप्पली जीरा नारंगी केला हर्फारेवड़ी आमलकी व गुड़को छोड़कर सब ऊखसे उत्पन्न मिठाई ५६ व जो अन्न तैलमें न पकायागयाहो इनसबोंको मुनियोंने हविष्यान्न कहाहै इससे वैष्णव इनका भक्षणकरे जो मनुष्य तुलसी के पत्र पुष्प काष्ठकी माला धारणकरताहै ५७ उसको भी विष्णुही जानना चाहिये यह हम तुमसे सत्य २ कहतेहैं व आमलकी का वृक्ष लगाकर मनुष्य विष्णुकेतुल्य होजाताहै ५८ व जहां वह लगीरहती है उसकी सब ओर साढ़ेतीनसौ हाथतक कुरुक्षेत्र तीर्थ जानना चाहिये तुलसीके काष्ठकी गुटिका रुद्राक्ष के आकार की बनवाकर ५९ उसकी माला

गलेमें पहिनकर विष्णुका पूजनकरना चाहिये व ऐसेही अवँरा के फलोंकी माला व कमलाक्ष की मालाको ६० कण्ठमें विष्णुपूजकको चाहिये कि यत्नसे धारणकरे भगवान् की चढ़ीहुई तुलसीके पत्रोंकी माला वैष्णवको चाहिये कि अपने शिरपर धारणकरे ६१ व उनके ऊपरके चढ़ेहुये जूँठे चन्दनसे केशवादि नामोंका उच्चारण करके बारहों अंगोंमें तिलककरे व ललाट में चन्दन से गदाका चिह्न भी करनाचाहिये व शिरपर धन्वाबाण व ६२ हृदय में नन्दक नाम खड्ग व दोनों भुजाओंपर शङ्ख चक्रसे अङ्कित ब्राह्मण यदि श्मशानभूमिमें भी मृतकहो ६३ तो प्रयागमें मरनेसे जो गतिहोती है वही उसकी श्मशानमें मरने से होतीहै विष्णुके पूजनादि में तत्पर जो पुरुष तुलसीपत्र शिरपर धरके ६४ सबकार्य्य करताहै वह अक्षय फलपाताहै व तुलसी काष्ठकी मालासे भूषितहोकर ६५ पितरों व देवताओं का कर्म्म जो कोई करता है वह करने से कोटिगुण अधिक होजाताहै व तुलसी के काष्ठकी माला बनाकर केशवभगवान् के अर्प्पण करके ६६ फिर उनका प्रसादकरके जो भक्तिसे धारण करताहै उसके सबपाप नष्टहोजाते हैं व अर्घ्यपाद्यादिकों से श्री भगवान्जी की पूजाकरके फिर यह मन्त्रपढ़े ६७ ॥

शार्दूलविक्रीडितच्छन्दः ॥

देखेसों सब पापपुञ्जहरती छूतेतनु शोधती ।
रोगोंकोनतिसों विनाशकरतीसींचेयमैरोधती ॥
आरोपेहरिकेसमीप करती पादार्प्पणे कृष्णके ।
मुक्तीको पहुँचावती तुलसिका ताकेनमोविष्णुके १ । ६८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवृन्दावनमाहात्म्येभाषानुवादे तिलकादिनिर्णयोनामएकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥

अस्सीवां अध्याय ॥

दो० । अस्सी के अध्याय महँ वैष्णव कृत्य अनेक ॥
कृष्णनाम माहात्म्य कछु भाष्यो सहित विवेक १

पार्व्वतीजीने शिवजीसे पूँछा कि विषयरूपी ग्राहसे संकुल घोर कलियुग प्राप्तहोनेपर फिर उसमेंभी स्त्री धन पुत्रादिमें पीड़ितपुरुष

कैसे इस संसारमें अपने प्राणोंको धारणकरे १ व कौनसा कर्म्मकरे जिससे परलोकको जावे हे कृपानिधि! महादेवजी इसका उपायहमसे कहिये महादेवजी बोले कि हरिकानाम हरिका नाम हरिका नामही केवल २ व हरे राम हरे कृष्णकृष्ण २ यह मंगल रूप मंत्र है जो लोग इसको नित्य पढ़ते हैं उनको कलियुग नहीं बाधित करताहै ३ जोकुछ कर्म्म करे बिना रामके स्मरण किये न करे व जो करेभी तो पीछे रामजी का स्मरणकरे व कृष्ण कृष्ण कृष्ण यह कृष्ण यह जो कोई बारबार कहता रहताहै ४ अथवा महादेवजी कहते हैं कि हमारा नाम व हे पार्वतीजी तुम्हारा नाम बीच २ में लिया करता है वहभी पापसे छूटजाता है जैसे रुईकी राशि में लगकर अग्नि शीघ्र उससे निवृत्त होजाता है ५ जय शब्द के आदिमें वा जय शब्द अन्तमें अथवा श्री शब्दको प्रथम कहकर फिर हमारामंगल नाम लेताहै जैसे कि शिवजय जयशिव श्रीशिवजय ऐसा वा कोई कहताहै वहभी पापसे छूट जाताहै ६ दिनमें व रात्रिमें व उनदोनों की सन्ध्याओं में व सब कालों में रात्रि दिन जब कभी हो हरिका स्मरण करने से अपने नेत्रोंसे प्राणी कृष्णचन्द्रको देखने लगताहै ७ चाहे अपवित्रहो वा पवित्र सब कालोंमें व सब प्रकारसे जैसे कैसे बने नामके स्मरण करनेसे क्षणमात्रमें प्राणी संसारसे छूट जाताहै ८ नाना प्रकारके अपराधों से युक्तभी प्राणीहो तो उसको चाहिये कि राम कृष्णादि नामों का स्मरण करता रहे क्योंकि कलियुग में अङ्गों सहित यज्ञव्रत तप दान नहींहोसक्ते ९ बस कलियुगमें तरने के दोउपाय मुख्यहैं एक गंगास्नान करना व दूसरा हरि नामलेना क्योंकि १० हज़ारों हत्यायें सहस्रों उग्रपाप व कोटि गुरु स्त्रियों के संग सम्भोग चोरी करना ऐसेही और भी बड़े छोटे पाप श्रीहरिके प्रिय गोविन्द इस नामसे सब दूर होजाते हैं ११ अपवित्रहो वा पवित्र चाहे जिस किसी अवस्थाको प्राप्तहो जो कोई पुण्डरीकाक्ष परमेश्वरका स्मरण करता है वह बाहर भीतर सब कहीं से पवित्र होजाताहै १२ व नामके स्मरण करनेसे जैसे बाहर भीतर सब कहीं से शुद्ध होजाताहै ऐसेही नामके अर्थके चिन्तना करने से भी शुद्ध

होता है सुवर्ण की वा चांदी की वा पित्तल की वा पीठाकी अथवा पुष्पादिककी भगवान्‌की मूर्त्ति बनवाकर १३ उसमें पादादि चिह्न करवाके तब उसकी पूजाका आरम्भ करे जो भगवान्‌की मूर्त्ति दहिने चरण के अँगूठे के मूलमें चक्रको धारण करती है १४ उसके आगे नमस्कार करनेवाले जनकी इच्छा संसार के छेदन करनेही के लिये होती है व जो अच्युत भगवान् चरणकी मध्यकी अंगुली के मूलमें कमलका चिह्न धारण करतेहैं १५ वे ध्यान करनेवाले के चित्त रूप भ्रमरोंकी सुन्दरी लोभनाको प्राप्त होतेहैं व कमलकेनीचे जो भगवान् सब अनर्थों के जीतने के लिये ध्वजरूप ध्वजचिह्न को १६ कनिष्ठाके मूल स्थान में धारण करते हैं वह भक्तों के पाप समूहके भेदन करने के लिये होताहै व अपने पार्श्व के मध्यमें जो अंकुश धारण करतेहैं वह भक्तोंको चैतन्य व वेगित करनेका कारण है १७ व अंगुष्ठके पर्व्वोंमें जो सम्पदारूपी यव चिह्न धारणकरतेहैं वह भक्तोंको भोग करानेका लक्षण है व करकमलमें जो गदा धारण करतेहैं वह सब प्राणियोंके पाप पर्व्वतों के भेदन करनेवाली है १८ व जिस गदा को भगवान् धारण करतेहैं वह सब विद्याओं का भी प्रकाश करतीहै ऐसेही पद्मादिक सबचिह्न भी जो दाहिने में धारण करतेहैं १९ वामपदमें करुणानिधि के बसतेहैं वे भक्तोंकी भक्तिको बढ़ातेहैं इससे गोविन्दजीके माहात्म्य सुन्दर रसामृतको २० कर्णपुटसे पानकरे अर्थात् सुने व नित्यकीर्त्तन करे तो संसारसे निर्म्मुक्त होजाय इस में संशय नहीं है अब विष्णुकी प्रीति कराने वाले सब मासोंके कर्म्म कहतेहैं २१ ज्येष्ठमास में श्रीविष्णु भगवान् को बड़े यत्नसे स्नान करावे जिससे कि पक्ष मास ऋतु व बर्षसे उत्पन्न २२ पाप प्रतिदिन ज्ञान अज्ञान से किये हुये ब्रह्महत्यादि सहस्रों पाप नष्ट होते रहें व सुवर्ण चोराने मदिरा पानकरने सहस्रों गुरुशय्या पर बैठने व गुरु स्त्रियों के संग भोगकरने के व २३ अन्य उपपातकों के करने के कोटि कोटि सहस्रपाप सब पौर्णमासी के दिन नष्ट होजावें २४ इससे पुरुष सूक्त मन्त्रसे पवित्रकारी कलशके जल से भगवन्‌की मस्तक छिन के २५ नारियलके जल से व ताल फलों

के जल से रत्नमिश्रित जल से व गन्धमिश्रित पानीय से तथा पुष्पयुक्त जलसे २६ जैसा त्रिमंत्र विस्तारहो वैसा पञ्चोपचार से आराधना करे घंघण्टायैनमः इसमन्त्रसे घण्टानाद भगवान् के निवेदन करे २७ व ऐसी प्रार्थना करे कि महान्धकार पापसञ्चय में पतित व संसारसागर में गिरतेहुये मुझपापीकी रक्षा व उद्धार करो २८ जो शुचि श्रोत्रिय विद्वान्ब्राह्मण ऐसा करता है वह सब पापोंसे छूटताहै व विष्णुलोकको जाताहै २९ व आषाढ़के शुक्लपक्षकी एकादशी को विष्णुशयन का महोत्सव करे व आषाढ़ में रथयात्राभी करनी चाहिये वह श्रावण में जब तक श्रवण नक्षत्र न आवे तब तक होनी चाहिये अर्थात् श्रावणी पूर्णिमातक ३० व भाद्रमें जन्माष्टमी व वामन द्वादशी को उपवास में तत्पर होनाचाहिये व शयन किये हुये भगवान् का परिवर्त्तन भाद्रपद की शुक्ल द्वादशी को करावे व आश्विनभर परिवर्त्तनही माने ३१ व श्रीहरि का उत्थानकरे नहीं तो विष्णुद्रोही ठहरेगा व उसी आश्विनके शुक्लपक्ष में महामायाकी पूजाकरे ३२ सो महामायाकी मूर्त्तिचाहे सुवर्णकीहो वा चांदीकी परन्तु विष्णुरूपा महामाया को बलि न देवे क्योंकि धर्मात्मा विष्णु पूजक हिंसा व द्वेष न करे ३३ पुण्यमास कार्त्तिक में यथेष्ट पुण्यकरे व दामोदर जीके लिये चारहाथ ऊँचेपर दीपकदानकरे ३४ दीपक सातबातीका चारअंगुल चौड़ा होनाचाहिये व कृष्णपक्षके अन्तमें अमावास्या को शुभ दीपमालिका करनी चाहिये ३५ मार्ग्गशीर्षके शुक्लपक्षकी षष्ठीको श्वेतवस्त्रों से जगदीशजीकी पूजाकरे व ब्रह्माजीकी तो विशेष पूजाकरे ३६ पौषमास में पुष्पजल से भगवान्का स्नान चन्दन वर्जितहै व माघमासमें संक्रान्तिकेदिन गुड़मिश्रित तण्डुल व तिल अवश्य भगवान्को देवे ३७ जब विष्णुको नैवेद्य देवे तो यह मन्त्र पढ़े कि भगवन् इस नैवेद्यसे प्रसन्नहोकर मेरे पापहरो व फिर देवदेवके आगे बैठाकर भक्तिसे ब्राह्मणोंको भोजन करवावे ३८ पर ब्राह्मण भगवद्भक्तहों व उनकी पूजा प्रथम भगवद्बुद्धि से करके तब भोजनकरवावें भगवद्भक्तही ब्राह्मणोंको भोजन करानेको इसलिये कहाहै कि एकभी भगवद्भक्त विप्रके भोजनकराने

से कोटि विप्र भोजित होजाते हैं ३९ व विप्रके भोजनमात्रसे किसी कर्ममें जो व्यङ्गता होती है वह सांगता होजातीहै माघशुक्लापञ्चमीको केशवजीको स्नानकराके ४० आम्रपल्लव संयुक्त विधि से पूजा करके फिर से पूजाकरे फल व तरह तरहके चूर्ण सुगन्धितसे सुन्दर रेशमी कपड़ोंसे ४१ व इस मासमें दीपदानसे शोभित कृत्रिम वन रमणीय करना चाहिये जैसे कि मुनकेकेवृक्ष ऊष, केला, जँम्भीरीनिम्बू, नारंगी, सुपारी ४२ नारियल, आमलकी, कटहल, हर्र व सब ऋतुओंमें पुष्पोंसे युक्त रहनेवाले अन्य वृक्षोंसे भी ४३ ऐसे ही नानाप्रकार के पुष्पित फलित वृक्षों से शोभितकरे व पुष्पों से भरकर व जलसे पूरितकर बहुत से घट उसी वाटिका में धरे ४४ आम्रोंकी शाखा उपशाखाओं से छत्रचामरोंसे शोभितकरे फिर जयकृष्ण ऐसा स्मरणकरके प्रथम सबकी प्रदक्षिणाकरे ४५ इसप्रकार दोलोत्सवकरे इसका करना सब युगों में उचित था पर कलियुग में तो विशेष दोलोत्सव करना चाहिये व फाल्गुनमास की चतुर्दशी को अठयें पहरमें ४६ अथवा पौर्णमासी में जब प्रतिपत्का सँय्योग होजाय तबभक्ति से विविधप्रकार के चार तरह के फल्गुचूर्णोंसे पूजन करे ४७ व श्वेतरक्त पीत गौर चारप्रकार कर्पूरादि मिश्रित चूर्णोंसे व हरिद्राके रंगके योगसे रंगरूपमनोहर पदार्थोंसे ४८ व और भी रंग रूपोंसे परमेश्वर को तृप्तकरे एकादशी से इस दोलोत्सवका आरम्भकरके फिर पञ्चमी को समाप्त करे ४९ अथवा पांच दिन वा तीन दिन दोलोत्सवकरनाचाहिये दोलापर चढ़ेहुये दक्षिणको मुख किये हुये कृष्णचन्द्रजी को मनुष्य एकबार भी ५० देखकर अपराधसमूहों से छूटजाते हैं इसमें संशयनहीं है व वैशाख मासमें जलके पात्रमें बैठाकर ५१ सुवर्णके पात्रमें वा चांदीके में वा ताम्रके में अथवा मृत्तिकाके पात्रमें जलभरके उसजल में स्थापितकरके शालग्राम मूर्त्ति भगवान्की पूजाकरे ५२ तो हे महाभागे! उसकी पुण्यकी गणना नहीं होसक्ती दमनारोपण करके सब श्रीकृष्णचन्द्रको समर्प्पण करे ५३ सो वैशाखमें श्रावणमें अथवा भाद्रपदमें कृष्णके अर्प्पणकरे दमनादिक कर्म्मों में पूर्व्ववायुके होनेही पर ५४

विधानसे सबकरनाचाहिये क्योंकि अन्यथा यह निष्फलहोजाता है व वैशाखमास की शुक्ल तृतीयाको जलके मध्यमें बैठाकर श्री हरिकी विशेष पूजाकरनी चाहिये ५५ अथवा यह दमनारोपण मण्डल में करे वा मण्डप में अथवा किसी बड़े वनमें सो सुगन्धित चन्दनसे प्रतिदिन अङ्ग पुष्ट करताजाय ५६ जैसे कि दुर्व्वल को बड़े प्रयत्न से पुष्टिद अन्न खिलाकर पुष्ट करते हैं चन्दन अगरु ह्रीवेर कालागुरु कुंकुम रोचना ५७ जटामांसी व मुरी बस यही विष्णुका गन्धाष्टक कहाताहै इन आठोंको अन्य सुगन्धित वस्तुओंसे युक्त करके विष्णुके अङ्गों में लगावे ५८ फिर हरिचन्दन के पंकसे हरिके अङ्गोंको लेपे तुलसी काष्ठ पत्थरपर घिसकर उसमें कपूर व अगरु मिलाकर अथवा केसर वा नागकेसर मिलादेनेसे हरिचन्दन कहाताहै ५९ व यात्राकालमें जो मनुष्य कृष्णचन्द्रजी को भक्तिसे देखते हैं उनकी फिर स्वर्गादिसे आवृत्ति कोटिशतकल्पोंतक नहीं होतीहै ६० सुगन्धमिश्रित जलमें वे देवदेवको स्थापन करते हैं अथवा पुष्पों के मध्यमें देवदेव जगदीश्वरको स्थापित करे ६१ व वहांपर वृन्दावन फललेकर जावे व सुन्दर फललेकर किसी विष्णु भक्तको भोजन करावे ६२ नारियल वा उसकाबीज अर्थात् गिरी निकालकर देवे व पनसआदि वस्तु देवे कोशसे निकालकर ६३ व घृतमें परिपक्क करके दही मिलाकर सबप्रकारके अन्नदेवे व घृतसे परिपक्क करके अपूपदेवे ६४ अथवा तिलके तेलमें पकाकर व तिल मिलाकर देवे कहांतक गिनावें जो २ पदार्थ अपनेको प्रसन्नहों वे सब परमेश्वरकोभी देवे ६५ नैवेद्य व वस्त्र देकर फिर कुछ और न देनाचाहिये व जो विधिसे विपरीत कुछ होजाय वह वैष्णव से विशेषकरके कहदेवे कि अमुक कर्म्म रहगयाहै ६६ ॥

चौ० । यह तुमसन संक्षेप भवानी । दानआदि सबकहा बखानी ॥
अरु हरिचरित कहा अतिपावन । अति रहस्यहरिभक्त जुड़ावन ॥
गुप्तयोग्य अति गोपनलायक । निजसुयोलिसमगोप्यकहायक ६७
यासों गुप्त राखिये याही । गुप्तबात भाषत कोउ नाहीं ॥
कृष्णरूप गुण वर्णनमाहीं । बोधहोय अहिमहँ लो नाहीं ॥

अन्य प्रयोजन है कछु औरा। यह हरकह्यो सुनावत गौरा॥
जो हरिभक्ति माहिं मनराचा। तोका कामिनि रसमन नाचा ६८
यासों यह हरिचरित्र सुखारी। पढ़हिं सुनहिं नरवर अघहारी॥
जो हरि भजहिं बालतनुधारी। वृन्दावन यमुनातट चारी॥
अरु कालिन्दी सुमिरहिं नीरा। मुदितहोहिं अपने मनधीरा॥
श्रीहरिपदरज जो नित ध्यावें। गुरुबन्दन मुख किमि तिनभावें॥
यासों हरिपद धूलि बड़ाई। सबसे अधिक धर्म्म हमगाई ६९

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवृन्दावनमाहात्म्येभाषानुवादेऽशीतितमोऽध्यायः ८०॥

इक्यासीवां अध्याय॥

शौनकादि ऋषियोंने कहा कि हे सूत! हे साधो! बहुतकाल जीवो क्योंकि भक्तों का भवतारण श्रीकृष्णजीका अमृतरूपी चरित्र तुमने प्रकाशित किया १ अब आनन्ददायी श्रीकृष्णजी की सम्पूर्ण लीला कहिये जिसके करनेसे हे साधो! श्रीकृष्णजी में भक्ति बढ़े २ हे महाभाग! आपतो हमारे परममित्रहैं इससे गुरू व शिष्य व मंत्र का बिधान व लक्षण अलगहमसे कहिये ३ सूतजीने कहा कि एक समय यमुनाजी के किनारे बैठेहुये जगत्गुरु सदाशिवजी से नमस्कार करके नारदजी ने कहा ४ नारदजी बोले कि हे देवदेव महादेव सबके जाननेवाले जगत्के ईश्वर भगवान् की तत्त्व व धर्म्म के जाननेवाले कृष्णजी के मन्त्र जाननेवालों में श्रेष्ठ! ५ कृष्णजीके मन्त्र आपसे मैंने जाने जिनको पहले पितासे जानाथा व उन मन्त्रराजाओंको यत्नसे साधनभी कियाहै ६ परञ्च हजारों वर्ष शाक मूलफल व सूखे पत्ते व वायुआदि खाने व कभी न खाने से ७ व स्त्रियोंके न देखने व बात चीत न करनेसे व पृथ्वीपर सोने से व कामादिषट्गुणोंके जीतने व बाह्य इन्द्रियोंके निवृत्त करनेसे भी ८ हे शङ्करजी! इन सब बातोंको किया पर हमारी आत्मा संतुष्ट नहीं होती इससे आप कहें कि जिसमें बिना संस्कारों के सिद्धिहोजाय ९ क्योंकि एक बार भी उच्चारण करने से उत्तमफल देताहै इससे हे देवेश! जो मैं कहने के योग्य होऊं तो कृपाकरके कहिये

१० यह सुनकर सदा शिवजी बोले कि हे महाभाग ! लोकके हित-
कारी तुमने बहुतअच्छा प्रश्नकिया अब हम तुमसे गुप्त रखनेके
योग्य भी मन्त्र चिन्तामणि तुमसे कहेंगे ११ जो कि रहस्यों का
रहस्य गुह्यमें उत्तम गुह्य जिसको कि हमने न देवीजी से कहा न
तुम्हारे बड़ोंसेही पहले कभी कहा १२ अब उत्तम श्रीकृष्णजी के
दोनोंमन्त्र तुमसे कहेंगे मन्त्र चिन्तामणि व दोनोंयुगल १३ इस
मन्त्र के पर्यायहैं व पंचपदी भी गोपी जनपदोंके प्यारे चरणयुक्त
१४ तुम्हारी शरण में हूँ यह पञ्चपदात्मक व मन्त्र चिन्तामणि
कहागया है इससे बाह्य सोलह और हैं यह महामनुने कहाहै १५
गोपीजनों के नमस्कार है यह कहकर वल्लभों के लिये कहे यह दो
पदका मन्त्र दशार्ण कहाजाताहै १६ इस पञ्चपदीको चाहे भक्ति
से जपे चाहे बिना भक्ति के एकबार भी जपे वह कृष्णजीके प्यारे
जिसलोक में जाते हैं वहां निस्संदेह जायगा १७ इस में न तो पुर-
श्चरण का कामहै न न्यास ध्यान का काम है न उत्तम स्थान उत्तम
समय का नियमहै न शत्रु व मित्र का बिचार है १८ इसके जपने
के स्त्री शूद्र जड़ गूंगे लँगड़े व चाण्डाल पर्य्यंत हे मुनीश्वर ! सब
अधिकारी हैं १९ व और भी हूण किरात पुलिन्द पुष्कस आभीर
यवन कंकर खसादि व जितने पापयोनिहैं २० पाखण्डी अहंकारी
पापी चुगुल गौ व ब्राह्मणके मारनेवाले व और बड़ेबड़े उपपातकों
से युक्त २१ वे जे लोग ज्ञान वैराग्य से हीनहैं व भगवत्कथादिकों
को नहीं सुनते जे और भी बहुतसे जिनको नहीं गिनाया सब इस
के अधिकारी हैं २२ हे मुनिसत्तम ! जो इनसबों की सर्वेश्वरेश्वर
श्रीकृष्णजी में भक्ति होवे तो सब अधिकारी हैं नहीं तो नहीं २३
चाहे यज्ञ करनेवाला हो व हमेशह दान देता हो व सब तन्त्रों का
जाननेवालाहो व सत्यबादीहो व सन्यासीहो व वेद वेदाङ्गका जानने
वालाहो २४ व ब्रह्मनिष्ठहो व कुलीनहो व तपस्वीहो व व्रतकरने
वालाहो परञ्च श्रीकृष्णजीकी भक्ति नहीं है तो इस मन्त्र का अधि-
कारी नहीं होसक्ता २५ इससे जिसके कृष्णजी की भक्ति न हो व
कृतघ्नहो व अभिमानीहो व भक्तिरहितहो व नास्तिक हो २६ व बड़ों

की सेवा न करताहो व सम्बत्सरकी बातको न मानताहो उससे यह न कहना चाहिये व जोकि श्रीकृष्णजी के भक्तहैं व दम्भ लोभसेरहित हैं २७ व कामक्रोधसे रहितहैं उनकेअर्थ जरूर यत्नसे देनाचाहिये इसकेऋषि ब्रह्महैं व छन्द इसकी गायत्रीहै २८ व देवतावल्लवीकान्त हैं इस मन्त्रके सप्रियस्य हरेर्दास्ये यह बिनियोग कहागया है २९ आचक्रादि मन्त्रों से पंचांग कल्पना करे व अपने बीजसे करन्यास व अङ्गन्यास करे ३० मन्त्र पहला वर्णबिन्दुसे मस्तक भूषितकरे वग यह भी बीजहै जिसको नमःसक्ति कहते हैं ३१ अन्तिमार्णइत्यादि से दशांगों की चन्दन पुष्पादिकोंसे पूजाकरे जो चन्दनादि न मिले तो जलही से पूजाकरे ३२ भगवान्‌की प्रसन्नताके लिये पहिले कही हुई विधिसे न्यासकरे क्योंकि इसीलिये इस मन्त्रके न्यासादि और लोगकहते हैं ३३ जोकि एकबारभी कहनेसे कृतार्थ करदेताहै परञ्च जपके लिये दश प्रकार से नित्य न्यासकरे ३४ अब हे द्विजोत्तम! इस मन्त्रका ध्यान कहतेहैं पीतवस्त्र धारणकिये मेघवर्ण दो भुजा व वनमाला धारणकिये ३५ मोर पंखोंका उत्तंस किये कोटिन चन्द्रमा की तुल्य प्रकाशमान मुखवाले घूर्णित नेत्रधारण किये कर्णिकाओं का कर्णाभरण धारण किये ३६ अंगों में सर्वत्र चन्दन व मध्य में केशरकी बिन्दी लगाये व मस्तकमें गोलतिलक लगाये ३७ दो पहरके सूर्य्यकी तुल्य प्रकाशमान कुण्डलों से बिराजमान कपोल पसीना के बिन्दु से शीशाकी तुल्य झलकरहे हैं ३८ व प्यारीजी के मुखकीओर देखरहेहैं लीलापूर्वक उन्नत भौंहवाले व मोतियोंका माला धारणकिये देदीप्यमान उच्चनासिकायुक्त ३९ दांतोंकीदीप्ति कुंदरूकी तुल्य शोभायमान ओंठ धारणकिये बजुल्ला कङ्कण रत्नजड़ी मुंदरी हाथोंमें शोभायमान होरहीहैं ४० व बाम करमें मुरलीलिये व पत्रको भी कमर करधनी व पैरोंमें घुंघुरू धारण किये ४१ रतिक्रीड़ा के रसके आवेशसे चलायमान चञ्चलनेत्रवाले प्रियाकेसाथ हँसते व प्यारीजीको हँसाते ४२ इसतरहसे कल्पवृक्ष के नीचे रत्नों के सिंहासन में वृन्दावन में प्रियाजी के साथ बैठेहुये श्रीकृष्णजीका ध्यानकरे ४३ तिन श्रीकृष्णजी के बाईंओर बैठीहुई

राधिकाजी का स्मरणकरे जोकि नील चोलक धारणकिये व तपायेहुये सोनेकी तुल्य प्रभायुक्त है ४४ रेशमी कपड़े से अञ्चलको झांपेहुये सुन्दर मस्कीसे युक्त कमलरूपी मुखारविन्द धारणकियेहुये जोकि चकोरकीतुल्य चंचलनेत्रों से श्रीकृष्णजीके मुखारविन्दको देखरही हैं ४५ व अंगूठा व तर्जनी से लेकर लगायाहुआ ताम्बूल अपने स्वामी श्रीकृष्णजीके मुखमें खिलारही हैं ४६ मोतियों के हारसेस्थूल उन्नत स्तन शोभित होरहे हैं व किङ्किणी जालसे पतलाकमर व दीर्घ-कटि पश्चात् भाग आभूषित होरहा ४७ रत्नयुक्त ताटङ्क व बजुल्ला व मुँदरियां व कङ्कण धारणकियेहुये व शब्दायमान कमर में क्षुद्रघ-ण्टिका व चरणों में बिछुआ इत्यादि पहनेहुयेहैं ४८ व लावण्ययुक्त चिक्कन अङ्ग व सुन्दर सबअङ्गों से शोभायमान होरही हैं आनन्द रसमें मग्न इससे अतिप्रसन्न होरहीहैं व नवीन युवावस्थाको प्राप्त हैं ४९ व उन्हींकी तुल्य अवस्था व रूप गुणवाली सखियां भी चँवर व पङ्खाडुलाकर श्रीराधिकाजी की सेवाकररही हैं ५० इसकेबाद हे नारदजी! मन्त्रकेलिये कहते हैं सो सुनो मायादि शक्तियों से अ-पने अंशोंकरके प्रपंचके पहले ५१ व चेतनादि नित्य विभूतियों करके पीछेसे श्रीकृष्णजी की प्यारी राधिकाजी गोपन से गोपी क-हाती हैं व देवी परदेवता राधिकाजी कृष्णमयी कहीगई हैं ५२ व सर्व लक्ष्मीस्वरूप सो राधाजी कृष्णजीको सदा आनन्ददायिनी हैं हे विप्र! इसीसे मनीषीलोग राधाजीको ह्लादिनी कहते हैं ५३ उनकी कलाओं के कोटि २ अंशयुक्त त्रिगुणात्म दुर्गादि देवी हैं व सो राधाजी तो साक्षात् महालक्ष्मी हैं व कृष्णजी साक्षात् नारायण हैं ५४ हे मुनिसत्तम! इनदोनों मूर्त्तियों में कुछभी भेदनहीं है क्योंकि जो राधाजी को दुर्गाजानो हरिको रुद्रजानो जो कृष्णजी को इन्द्र मानो तो राधाजी को इन्द्राणी मानो ५५ जो ये सावित्री हैं तो हरि ब्रह्मा हैं जो राधाजी धूमोर्णा हैं तो हरि यमराज हैं हे मुनि! बहुत कहने से क्याहै इनदोनों के बिना कुछ भी नहीं है ५६ चिदचित लक्षणयुक्त सब जगत् राधाकृष्णमयी है हे नारद! इसीतरह सब तिन दोनोंकी विभूतिही जानो ५७ जो कहाचाहै तो हम इसको

कोटिनसे वर्षमें भी नहीं कहसक्ते जैसे कि त्रैलोक्य में पृथ्वीपूज्यहै उसमें भी जम्बूद्वीप श्रेष्ठहै ५८ उसमें भी भारतवर्ष श्रेष्ठ है तिसमें भी मथुरापुरी श्रेष्ठहै मथुरापुरी में भी वृन्दावन नाम श्रेष्ठ है उसमें भी गोपीकदम्ब श्रेष्ठ है ५९ वहांभी राधाजी की सखियों का समूह श्रेष्ठहै उनमें राधिकाजी श्रेष्ठहैं सानिध्यकी अधिकता से तिनकी यथाक्रम आधिक्यता जानो ६० पृथ्वी इत्यादि में ऐसा कोई नहीं यहां कहागया जोकि इन गोपी राधिकाजी व तिनके जन सखीगण ६१ व सखीगणके प्राणप्यारे राधाकृष्ण हैं उनके चरण की शरण के आश्रयीभूत हैं ६२ अत्यर्थ दुःखित जीव मैं शरण में प्राप्तहूं वही मैंहूं जो शरणमेंहूं जो कुछ मेरेहै वहसब राधाकृष्ण के अर्पण है ६३ सम्पूर्ण जो कुछ है उन्हींकेलिये है न मैंहूं न मेराहै जो कुछ भोग्यहै सब उन्हींकाहै हे विप्र ! यह मन्त्रका अर्थ संक्षेप से कहागया ६४ युगुलार्थ व न्यास व प्रपत्ति व शरणागति व आत्माका अर्पणकरना ये पांच पर्याय हमने वर्णन किया ६५ यही रात्रदिन आलस्य छोड़कर चिन्तना करने के योग्यहै ६६ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवृन्दावनमाहात्म्ये एकशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥

बयासीवां अध्याय ॥

श्रीशिवजीबोले कि हे नारद ! अबहम दीक्षाविधि कहते हैं सो सुनो जिसको विधान बिना सुननेही मुक्तहोजाताहै १ ज्ञानीको चाहिये कि ब्रह्मापर्य्यन्त सब जगत्को नश्वर जानकर व आध्यात्मादि तीनोंदुःखों का अनुभव करके २ व हे मुनिसत्तम ! सम्पूर्ण सुखों के अनित्यत्वसे यानी यह समुझै कि सुख तो कुछ भी नहीं है सब दुःखही दुःखहै यह विचारकर दुःख सुखसे बर्ज्जितरहै ३ जन्म मरण की हानिसे विरक्तहोकर साधनों की चिन्तनाकरें व उत्तमसुखकी भी प्राप्तिसे निवृत्तरहै ४ बुद्धिमान् मनुष्योंको दुष्कर जानकर हे विप्र ! उससे आर्त्तहोकर गुरुरूप मेरीशरणमें आवे ५ शान्तहोकर क्रोधरहित निष्प्रयोजन कृष्ण में भक्तिकरे किसी कामनाको न विचारे काम लोभसे बाहररहै ६ केवल श्रीकृष्णजी के रसतत्त्वको जाने व

कृष्णहीजी के मन्त्रकोजाने व कृष्णहीके मन्त्रका आश्रयीहोवे मन्त्र हीमें भक्तिरक्खे व सदा पवित्ररहे ७ सतधर्म्मका शासनकरे व नित्यही सदाचार में युक्तरहे व सत्संप्रदाय युक्तरहे कृपारक्खे व विरागीहो ऐसा गुरू कहाजाताहै ८ व बहुधा ऐसेही गुणयुक्त व गुरूके चरणोंकी सेवामें रुचि व गुरूकी नित्यही भक्तिकरना व मुक्तिचाहने वाला ऐसा शिष्य कहाजाताहै ९ जो भगवद्भक्त होकर साक्षात् प्रेम से गुरूकी सेवाकरता है वेदवेदाङ्गके जाननेवाले प्राज्ञलोग उसीको मोक्षकहते हैं १० गुरूके चरणोंके निकट जाकर अपना वृत्तान्त कहै व सन्देहों को छोड़ाकर बारम्बार बोध करके ११ अपने चरणों में प्रणत व शान्त व अपने चरणोंकी सेवाकी इच्छा कियेहुये व अति प्रसन्न मनवाला होकर गुरूजी शिष्यको परम मन्त्र पढ़ावे १२ व हे विप्र! पहले चन्दन व मिट्टीसे वामबाहु मूलमें शंख व दक्षिणमें चक्र बनावें १३ फिर विधान से मस्तकादि में ऊर्ध्वपुण्ड्रकरे फिर दाहने कानमें दो मन्त्र पढ़ावे १४ व यथायोग्य पहले से शिष्यके अर्थ मन्त्रका अर्थ कहे फिर दशशब्द युक्त करके नामधरे यत्नसे १५ फिर बड़ी भक्ति से स्नेह सहित बुधः वैष्णवों को भोजन करावे व श्री गुरूजी को वस्त्र व गहना इत्यादि से पूजनकरे १६ जो कुछहो वह सब गुरूके अर्थ निवेदनकर देवे व हे मुने! आधाही देवे शिष्यको चाहिये कि अपनी देहभी गुरूजीके अर्थ अर्पणकरके आप अकिंचन होकेरहै १७ यो विद्वान् इनपांचों संस्कारों से संस्कृतहोता है वह कृष्णजी दास्यका भागी होताहै इसके बिना कोटिन कल्पतक भी नहीं दास्यभागी होसक्ता १८ अंकन व ऊर्ध्वपुण्ड्र व मन्त्र व नाम धरना व पांचवां याग ये विद्वानोंने संस्कार कहे हैं १९ शंख चक्र बनाने को अंकन कहते हैं व छिद्र सहित पुण्ड्र कहाताहै दास शब्द युक्त नाम कहाताहै व युगल संज्ञक मन्त्र कहाता है २० व गुरूजी व वैष्णवों की पूजा याग कहाती है शिवजी ने कहा कि हे नारद! ये परम संस्कार हमने तुमसे कहे २१ अब हे नारद! शरणागतों के धर्म कहेंगे जिनको करके कलियुगमें मनुष्य हरिधाम को जाते हैं २२ गुरूजी से इसप्रकार मन्त्रलेकर व गुरूकी भक्तिमें तत्परहोके

व गुरूजीकी सेवा करताहुआ विद्वान् गुरूजीकी कृपाका अभिलाष करे २३ फिर शरणागत सत्पुरुषोंके धर्म विशेष करके सीखे व अपना इष्टदेव जानकर वैष्णवों को परितोषितकरे २४ जैसे कि ताड़न व भर्त्सन आदि भोग्यत्व करके स्त्रियां ग्रहण करती हैं उसीतरह बुधोंको चाहिये कि वैष्णवभी ग्रहण कियेजायँ २५ ऐहिक्य मुष्मि की चिन्ता कभी न करना चाहिये क्योंकि ऐहिक तो पूर्वजन्म किये कर्मसे सदा होनेके योग्यहै २६ आमुष्मिक कृष्णजी आपही करेंगे इससे उसके वास्ते यत्न करना मनुष्यों करके सर्वथा त्याज्यहै २७ जैसे पतिव्रता स्त्री जिसका पति बहुतरोज परदेशमें रहताहै तो वह सब उपाय छोड़कर कृष्णका ध्यान करती है उसीतरह आत्माकरके कृष्णजी का पूजा करना चाहिये २८ प्रियानुरागिणी दीनार्ति सम्पत्ति के संगकी साक्षिणी पतिहीके गुणोंको नित्य भावना करती है व गातीभी है व सुनती है २९ इसीतरहसे श्रीकृष्ण गुण व लीलादि को स्मरण व ध्यानार्चन उसीतरह करे तो फिर साधनत्व से कुछ प्रयोजन नहीं है कभी ३० जैसे कि बहुतकाल विदेश में रहकर आयेहुये पतिको जैसे कान्तबुद्धि से स्त्री चुम्बती है व लपटती है व नेत्रोपानसाकरती है ३१ ब्रह्मानन्द में प्राप्तही होकर परमआनन्द से सेवनकरती है इसीभान हरिपूजा विधानसे परिचरणकरे ३२ न और की शरणहोवे न और साधनकरे और की साधना भी न करे न और प्रयोजन रक्खे ३३ और देवकी न पूजाकरे न नमस्कार करे न स्मरणकरे न देखे न गानकरे न कभी निन्दाहीकरे ३४ न और का जूंठा भोजन करे न और का भेषधारण करे व अवैष्णओं से बात चीत व उनके नमस्कारादि भी न करे ३५ शैव व वैष्णओं की निन्दा कभी न सुने कान मूंदकर चलदेवे जो सामर्थ्य होवे तो निन्दा करनेवाले को दण्डदेवे ३६ हे द्विज ! देहपात पर्यंत चातकी यानी पपीहा की वृत्तिका आश्रय करके दोनों मन्त्रों के अर्थकी भावना करके टिके हमारी तो यही मति है ३७ जैसे कि पपीहा तड़ाग समुद्र नदी इत्यादिकों को छोड़कर प्यासों मरता है परन्तु तड़ागादिकों से नहीं मांगता केवल मेघों सेही मांगताहै इसी तरह

मनुष्य कोभी चाहिये ३८ इसीतरह प्रयत्नसे साधनोंकी चिन्तना करे व अपने इष्टदेवसे सदा मांगे कि हमारी गति तुम्हीं होओ ३९ हे अपने इष्टदेव! हम तुम्हारेहैं इससे गुरूसे भी ज्यादह कृपाकरना चाहिये कभी प्रतिकूल न होना चाहिये ४० मैं शरण होके तिन दोनोंके कल्याण गुणोंके भावको कहताहूं यह स्मरणकरके विश्वास करे कि ये दोनों मुझे उद्धार करेंगे ४१ हे शरणागतकी भयभंजन करनेवाले! हे नाथ! मित्रपुत्र गृहादिकोंसे आकुल इस संसारसे तुम्हीं हमारी रक्षा करनेवालेहो ४२ मैं व मेरा जो कुछ इसलोक व परलोक में है वह सब तुम्हारे चरणों में समर्पित है ४३ व मैं तो अपराधों का स्थानही हूं व साधन भी नहीं करसका व गति रहितहूं तुम्हीं दोनोंजन हमारी गतिहोओ ४४ हे राधाजीके प्यारे! मैं मनसावाचा कर्मणासे तुम्हारा दासहूं हे कृष्णकी प्यारी! हे राधे! मैं तुम्हारा हूं तुम्हीं दोनोंजन हमारी गतिहो ४५ मैं तुम्हारी शरणमें हूं तुम तो दयासागर हो इससे मेरे दुष्ट अपराधी दास के ऊपर प्रसन्न होओ ४६ इससे हे मुनिसत्तम ! जो थोड़ेही समय राधाकृष्णकी दास्य चाहे तो ऐसाही पद्यपंचक जपता हुआ भजन करता रहे ४७ शिवजीने कहा कि बाह्य धर्म संक्षेपसे वर्णन किया अब शरणागतों के परम धर्म्म कहतेहैं ४८ कि कृष्णजीकी प्यारी राधाजी की सखीन का भाव यत्नसे करके रात्र दिन निरालसहोके मन से राधाकृष्णकी सेवा करे ४९ कहा हुआ जो मन्त्रहै व उसके अंग व अधिकारी व धर्म्म व उनसे मन्त्रोंके फल हे सुरर्षे! ५० हे नारद! जो तुमभी इन में टिकोगे यानी इसीतरह राधाकृष्णकी आराधना करोगे तो निःसंदेह स्वाधिकारके अन्तमें राधाकृष्णकी दास्यपाओगे ५१ मैं तुम्हाराहूं यह एक बार भी राधाकृष्ण से कहता है तो उस के लिये अपनी दास्य भगवान् जरूर देते हैं इसमें कुछ विचार नहीं है ५२ अब परम अद्भुत रहस्य तुमसे कहतेहैं जिसको साक्षात् कृष्णजीके मुखसे सुनाहै ५३ हे मुनिसत्तम! यह आन्तर धर्म तुम्हारे अर्थ हमने कहा जो कि गुप्तसे गुप्त है व यत्न से गुप्त रखने के योग्य है ५४ मन्त्र रत्नको जपतेहुये कैलास पर्व्वतपर सघनबन में

नारायण को ध्यान करते हुये वास किया ५५ तब तो भगवान् प्रसन्न होकर बर मांगो यह कहते हुये मेरे प्रकटहुये तब मैंने आंखें खोलकर ५६ राधाजी सहित गरुड़पर सवार श्रीकृष्णजी को देखा तब बरदानदेनेवाले कमलापति से नमस्कार करके मैंने कहा ५७ कि हे कृपासिन्धो! जो परमानन्ददायक व सब आनन्दोंका आश्रयी नित्यमूर्त्तिमान् सबसे अधिक तुम्हारा रूप ५८ निर्गुण व निष्क्रिय व शान्त जिसको बुधजन ब्रह्मकहते हैं हे परमेश्वर! उस रूपको हम अपने नेत्रोंसे देखना चाहते हैं ५९ तब तो शरणागतमें प्राप्तमुझ से लक्ष्मीजीके प्यारेभगवान् बोले कि जो तुम्हारे मनमें है वह रूप अभीदेखोगे ६० अब तुम यमुनाजीके पश्चिमतटवाले हमारे वृन्दा-वनको जाओ यहकहके लक्ष्मीजी करके सहित जगत्पति भगवान् अन्तर्द्धानहोगये ६१ व मैं भी उक्त शुभयमुनाजी के किनारे गया व वहां सब देवताओं के स्वामी श्रीकृष्णजी को देखा ६२ जोकि गोपबेष धारणकिये व सुन्दर किशोर अवस्थाको प्राप्त प्यारीजी के कन्धेपर मनोहर बायांहाथधरे हुए ६३ गोपियों के झुण्डमें आप हँसते व राधाजी को हँसाते कल्याण गुणका स्थान चिक्कण मेघसमान दीप्ति धारण किये हुये ६४ शिवजी ने कहा कि कृष्णजीने हँस करके अमृत रूपी बचन से हमसे कहा कि हे रुद्र! तुम्हारा वाञ्छित जान करके हमने तुमको दर्शन दिया ६५ जो इस समय मेघस्वरूप अ-मल प्रेम युक्त सच्चिदानन्द विग्रह तुमने अलौकिक हमारा जो रूप देखा ६६ निर्दय निर्गुण व्यापक क्रियाहीन परापर जिस हमारेरूप को उपनिषत् समूह अनघ कहते हैं ६७ प्रकृति उत्थगुणाभावात् व अनन्तत्वसे ईश्वर कहतेहैं व हमारे गुणों के असिद्धत्व से हमको नि-र्गुण कहतेहैं ६८ चर्मचक्षु पुरुष हमारे इस रूपको नहीं देखते [illegible] हे महेश्वर! सम्पूर्ण वेद हमारे इस रूपको अरूप कहतेहैं ६९ [illegible] चैतांश से व्याप्त होने के कारण बुधजन मुझे ब्रह्म कहतेहैं व [illegible] के अकर्तृत्वसे मुझे निष्क्रिय कहतेहैं ७० हमारे अंश माया के गुणों से सृष्टि रचना व पालन करना व संहार करना करतेहैं परंच मैं अपने आप कुछ नहीं करता यानी न सृष्टि रचूं न पालन करूं न

हे शिव! संहार करूं ७१ हे महादेव! मैं तो इनगोपियों के प्रेम से इनके वशीभूत होकर क्रियान्तर कोभी नहीं जानता व हे नारद! आत्मा कोभी नहीं जानता ७२ प्रेम से इनके वश होके इनके साथ विहार करताहूं व इन हमारी प्रिया राधिकाजी को पर देवता जानों ७३ हे रुद्र! इन राधाजीके सब देखो सैकड़ों हज़ारों सखियां विद्यमान हैं सो ये सब नित्य हैं जैसे मैं नित्यशरीरहूं वैसेही ये गोपियां भी हैं७४गोप व गौवें व गोपियां व सदा हमारा बृन्दावन ये सबनित्य हैं व चिदानन्दरसात्मकहैं ७५ यह हमारा वृन्दावन आनन्द कंद नाम है जिस वृन्दावन में केवल आनेही से मनुष्य जन्म मरणसे छूटजाता है ७६ श्रीकृष्णजी ने कहा कि हे महादेवजी! जो मनुष्य हमारे बृन्दावनमें आके फिर अन्यत्र जाताहै वह आत्मनाशक होता है यह हम सत्य २ कहतेहैं ७७ क्योंकि हम वृन्दावन छोड़ के कहीं जातेही नहीं हम इन राधाजी सहित इस बृन्दावन में सर्वदा रहते हैं ७८ हे रुद्र! जो तुम्हारे हृदयमें है वह सब हमने कही अब हम से कहिये और क्या सुना चाहते हो ७९ महादेवजी ने कहा कि हे नारद! तबतो हमने भगवान्से कहाकि ऐसे रूपसे तुम कैसे मिलोगे वह उपाय हमसे कहो ८० तब तो भगवान् ने हमसे कहा कि रुद्र तुमने बहुत कहा यह बात अतिगुप्त है व यत्नसे गुप्त रखने के योग्य है८१भगवान्ने कहाकि हे शिव! जो नर सबउपायोंको छोड़कर शरण में आकर एक बार भी गोपीभावसे उपासना करता है वह हम को प्राप्तहोताहीहै ऐसे नहीं ८२ व जो एक बारभी हम दोनों जनोंकी शरण में आताहै व केवल एकही प्यारी राधाजीको अनन्य भावसे सेवन करता है वह निस्सन्देह हमको प्राप्तहोताहै ८३ यह भी हम कहते हैं कि जो हमारी शरण में आता है व हमारी प्यारीराधाजीका सेवन नहीं करता वह हमको कभी नहीं प्राप्त होता ८४ जो हम तुम्हारे शरणागत हैं यह एक बारभी कहताहै वह बिना साधन के ही निस्सन्देह हमको प्राप्तहोताहै ८५ इससे सब यत्नों से हमारी प्यारीजीके शरण में जावै व हे रुद्र! तुम भी हमारी प्रियाजी के आश्रितहोके हमको वश करने के योग्य हो ८६ यह परमरहस्य हमने

तुम्हारे अर्थ कहा व हे महादेव! तुम भी इसको यत्न से गुप्तरखना ८७ व तुमभीहमारी बल्लभा राधाजीके आश्रयीहोके व हमारे दोनों मन्त्रों को जपतेहुए हमेशह हमारे स्थानमें टिको ८८ शिवजी ने कहा कि दयानिधिकृष्णजी यह कहके व हमारे दाहने कानमें परम मन्त्रदेके व संस्कारोंको करके ८९ हमारे देखतेहीदेखते गण सहित अन्तर्द्धानहोगये व हमभी तबसे निरन्तर यहां ही टिकेरहते हैं ९० यह सब अंगसहित तुमसे कहा अबकहिये हे विप्र! इससमय फिर क्या सुना चाहतेहो ९१ ॥

इति श्रीपाद्मपुराणेपातालखण्डेवृन्दावनमाहात्म्येद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥

तिरासीवां अध्याय ॥

नारदजी ने कहा कि हे भगवन्! जो जो हमने पूंछा वह सब आपने कहा हे गुरो! अब इस समय उत्तमभावमार्ग सुनाचाहतेहैं १ शिवजीने कहाकि हे विप्र! सबलोकके हितकरनेवाले तुमने बहुत अच्छा पूंछा अब रहस्यभी कहेंगे सो कहते हुए हमसे वहभी सुनो २ हे मुनिश्रेष्ठ! दासी व सखा माता पिता व हरिकी प्रिया ये सब नित्यहैं कृष्णजी के गुणोंकी तुल्य होके ये सब वृन्दावन में रहते हैं ३ जैसे २ पुराणोंमें लीलाप्रकट कही गई हैं उसीतरह नित्य लीलामें वृन्दावन में इसपृथ्वीतल में बसतेहैं ४ व दैत्यों का मारना छोड़कर वयस्य यानी अपनी उमरवालों के साथ गौवेंचरातेहुए अबभी बन गोष्ठीमें आया जायाकरते हैं ५ करकीय अभिमानयुक्त व कृष्णजी की प्रियाजन गुप्तभावसे अपने प्यारेजीको रमाते हैं ६ तिनके मध्य में रूप व यौवन से सम्पन्न व किशोर वयुक्त स्त्री रूप मनोरम अपनी आत्माको चिन्तना करे ७ नानाप्रकारकी शिल्पकलाके जाननेवाले कृष्णजी के भोगके अनुरूप कृष्णजी जिनकी प्रार्थना करते हैं परन्तु भोगकरने के लिये नहीं स्वीकार करतीं ८ व कृष्णजी व राधिकाजी में अधिक प्रेमकरतीहुई व सेवा में परायण राधाजी की सखियों का ध्यानकरे ९ व प्रीति से हररोज यत्न से राधाकृष्ण संगम करनेवाली उनके सेवनसे जो सुखपूर्वक आनन्दहै उसके भावसे सुखको प्राप्त १० यह आत्माको चिन्तना करके तहां सेवाकरे ब्राह्ममुहूर्त्त से ले-

कर जबतक महानिशाहो ११ यहसुनकर नारदजी ने कहा कि भगवान् की दैनन्दिनीलीला सुना चाहते हैं क्योंकि बिना लीलाजाने मनसे कैसे हरिका सेवनकरें १२ शिवजीने कहा कि हे नारद! हरि की लीला हमभी तत्त्वसे नहीं जानते इससे यहां से बृन्दादेवी के पास जाओ वे तुम्हारेअर्थ लीला कहेंगी १३ यहांसे थोड़ी दूर पर केशीतीर्थ के निकट सखियोंके समूहसेयुक्त गोविन्दजीकी परिचारिका वृन्दादेवी हैं १४ सूतजीने कहा कि जब ऐसा कहे गये तब तो बड़े आनन्दसे परिक्रमा व बारम्बार नमस्कारकरके नारदजी बृन्दाश्रमको गये १५ बृन्दाजी भी नारदजी को देखकर बारम्बार प्रणाम करके बोलीं कि हे मुनिश्रेष्ठ! तुम्हारा आगमन कैसेहुआ १६ नारदजी ने कहा कि तुमसे भगवान् का नित्य चरित्र सुना चाहते हैं सो हे शोभने! जो हम जाननेके योग्यहों तो आदिसे हमसे कहो १७ वृन्दा ने कहा कि हे नारद! तुम कृष्णजीके भक्तहो इससे रहस्य भी तुमसे कहेंगी परंच यहबहुत गुप्तहै सो तुम किसीसे कहनानहीं १८ पचास कुञ्जों से आभूषित मनोरम वृन्दावनके बीच में कल्प वृक्षोंके निकुंजों में दिव्यरत्नमयी गृहमें १९ परस्पर आलिंगन किये हुये शय्यामें लेटेहुये सोतेहैं पीछेसे हमारे आज्ञाकारी पक्षी उनको जगातेहैं २० परंच गाढ़ आलिङ्गन से प्राप्त आनन्दको नहींछोड़ते इससे शय्यासे उठने का कुछभी मननहीं करते २१ तब शुकसारिकाओंके समूह चारों ओर तरह २ की बाक्योंसे जगातेहैं तब दोनों जन अपनी शय्यासे उठते हैं २२ उनको शय्यामें उठकर बैठे हुये देखकर आनन्द युक्त सखियां आकर उससमय के योग्य उनकी सेवा करती हैं २३ फिर सारिकाके बचनसे दोनोंजन अपनी शय्यासे उठकर कुछ डरकी शंकासे अपने २ घरको चले जातेहैं २४ फिर प्रातःकाल मातासे जगाये हुये जल्दी शय्या से उठकर दन्तधावन करके श्रीकृष्णजी बलदेवजी सहित २५ व सखाओं सहित माता से अनुमोदित गोशालाको जातेहैं व राधाजी भी सखियोंके जगाने से अपनी शय्यासे उठकर २६ दन्तधावन करके अभ्यंग यानी उबटन इत्यादि लगातीहैं फिर स्नान बेदी में जाकर उनकी सखियां

स्नान कराती हैं २७ फिर आभूषण करनेवाले गृहमें जातीहैं वहां भी सखियां तरह २ के दिव्य भूषणोंसे व सुगन्धित माला व इत्तर फुलेल व भूषणोंसे आभूषित करतीहैं २८ फिर इसके बाद यशोदा जी सखी जनों के द्वारा उनकी सासुसे यत्नसे पूंछकर सुन्दर भोजन बनानेके लिये बुलातीहैं २९ यह सुनकर नारदजीने कहाकि भोजन बनानेके लिये सतीरोहिणी इत्यादिकोंके विद्यमान होनेपर राधिका जीको यशोदाजी भोजन बनानेके लिये क्यों बुलातीहैं ३० वृन्दा ने कहा कि हमने कात्यायनी के मुखसे यह सुनाहै कि पूर्वही दुर्वासाने उनके अर्थ बरदान दिया था ३१ कि जो अन्न तुम पकाओगी वह अन्न हमारी अनुग्रह से मीठा व अमृत के तुल्य व खाने वाले की आयु बढ़ाने वाला होगा ३२ इसलिये पुत्रवत्सला यशोदाजी उस को नित्य बुलातीहैं कि जिसमें हमारा पुत्र स्वादिष्ठ अन्नके खानेसे आयुष्मान्होवे ३३ स्वत्वसे अनुमोदित व आनन्दको प्राप्त वे भी नन्दजी के स्थान को जातीहैं व सखी समूहों से युक्त वहां भोजन बनातीहैं ३४ व कृष्णजी भी गौवें दुहकर व पिताके कहने से कुछ गौवें और जनोंसे दुहाकर सखों के साथ घरको आते हैं ३५ फिर अभ्यंग लगाकर दासलोग स्नान करातेहैं फिर धुलाये कपड़ापहन-कर व माला धारणकरके अंगमें चन्दन लगाकर ३६ बालोंकोझार कर व बांधकर देदीप्यमान ग्रीवा व मस्तक युक्त व चन्द्रमाकेतुल्य शोभायमान मस्तकमें तिलक लगाकर ३७ कंकण व बजुल्ला व के-यूररत्नोंकी मुन्दरियां हाथमें पहनके मोतियों का माला वक्षस्थलमें धारणकरके व मकराकृतकुण्डल पहन कर ३८ बारम्बार माताके बुलाने पर भोजन के स्थानमें जाकर सखाका हाथ पकड़ कर बल-देवजीके सहित ३९ भाई व सखाओंके साथ सखाओंको हँसाते व आपभी हँसते हुये तरह २ के अन्न भोजन करतेहैं ४० इस तरह भोजन करके व आचमन करके क्षणमात्र विश्राम करके सेवकोंका दिया हुआ पान खाके व सबको खिला कर ४१ कृष्णजी गोपवेष धारण करके व गौवोंका गरोह आगे करके प्रीति से ब्रजवासीजनों के साथ मार्ग में जाते हुये ४२ माता पिताको नमस्कार करके व

आंखोंकी संज्ञासे उन सबके नमस्कार करके व और कोभी लौटाल कर बनको जाते हैं ४३ व बन में जाकर सखन सहित क्षणमात्र क्रीड़ा करके फिर तरह २ के बिहारोंसे बनमें आनन्दसे क्रीड़ा करते हैं ४४ इसके बाद सब सखाओं को छोड़कर केवल दो तीन मित्रों के साथ प्यारीजीके दर्शनकी लालसा से हर्ष से संकेत बनको गये ४५ व प्यारीजीभी कृष्णजीको बनमें आये हुये देखके अपने मंदिर को चलीगईं व वहांसे फिर सूर्य्यादि पूजाकेबहाना से व फूल चुनने के व्याजसे ४६ अपने बड़ों से छिपकर प्यारेजी के संग करने की इच्छासे बनको जातीहैं इसतरह दोनों जने बहुत उपायोंसे बन में मिलके तिसकेबाद ४७ तरह २ के बिहारोंसे दिनभर बनमें क्रीड़ा आनन्दसे करतेहैं कहीं २ सखालोग राधाकृष्णजी को झुलुवा में चढ़ाकर झुलाते हैं ४८ व कहीं हाथसे गिरीहुई बंशीको जो कि प्यारी जी करके उपहृत है प्रिया गुणोंसे विप्रलब्धहोकर ढूंढ़तेढुँढ़ाते हुये उपालब्ध होते हैं ४९ व तिनसे बहुत हास्यों से हँसाते हुये टिकते हैं व कभी २ बसन्त वायु से युक्त बन खण्ड में आनन्द से ५० प्रवेशकरके चन्दन व कुंकुमयुक्त जलसे पिचकारियों के द्वारा छिनकतेहैं व परस्पर पंकभी चलाते हैं ५१ इसीतरह सखाभी छिनकते हैं व उनके ऊपर राधाकृष्णजी भी छिनकते हैं इसतरह बसन्तऋतु की वायुसे सेवित बनखण्डों में सर्वत्र ५२ उसकालके योग्य विहारों से गणोंसहित कभी वृक्षोंकेनीचे जाकर हे मुनिसत्तम ! दोनोंजन बिश्राम करते हैं ५३ व सुन्दर आसनोंमें बैठकर मधुपान करते हैं फिर मधुपीकर मत्तहोजाते हैं व निद्रासे आंखें मूंदकर ५४ काम बाणके वशहोके राधाकृष्ण परस्पर हाथपकड़ के मत्तता से बाणी व मनसे स्खलित रास्तामें कुंजों में जाकर रमते हैं ५५ जैसे कि करिणी यूथप क्रीड़ा करते हैं उसीतरह आपभी क्रीड़ाकरते हैं व सखा भी मधुकरके मत्त निद्रासे पीड़ित नेत्र ५६ सर्वत्र मनोरम कुञ्जोंमें सब शयनकरते हैं व अलग एक शरीरसे कृष्णजी भी साथही ५७ प्यारीजी की प्रेरणासे सबके निकट जातेहैं व जैसे कि हाथी व हथिनी रमते हैं इसीतरह सबको रमाकर ५८ प्यारीजी व तिन सखियोंस-

हित क्रीड़ाकेवास्ते सरोवर में जाते हैं वहाँ परस्पर जल छिनछ २ कर गणोंसहित क्रीड़ा करते हैं ५९ फिर वस्त्र माला चन्दन व दिव्य भूषणोंको धारण करते हैं व वहांही सरके किनारे दिव्य रत्नमयी गृहमें ६० हे मुने! पहलेही से मेरेलायेहुये फलमूलों को कान्ता करके परिवेष्टित हरिजी पहले खाके ६१ फिर दो व तीन सखियों से सेवित फूलोंसे रचीहुई शय्या में जाते हैं वहाँ कोई पानखिलाती हैं कोई पङ्खाझुलाती हैं कोई चरणदाबती हैं ६२ इसतरह सखियों से सेव्यमान हँसते व प्यारीजीको स्मरण करतेहुये आनन्दको प्राप्तहोते हैं व राधाजी भी भगवान्को सोजानेपर गणसहित हृदयसे आनन्दित ६३ कृष्णहीजी में प्राणोंको अर्पण कियेहुये उनका जूंठा भोजनकरती हैं व थोड़ा साखाकेशय्यागृहको जाती हैं ६४ पतिका मुखांभोज देखनेको जैसे कि चकोर चन्द्रमाको शयन स्थानमें जाती हैं व वहांकी सखियोंकरके दियाहुआ श्रीकृष्णजीका ताम्बूलचर्वित ६५ व ताम्बूल भी खाती हैं व प्रिय सखियों को भी बांटती हैं व कृष्णजी भी उनके इच्छानुकूल बाक्य सुनने की इच्छासे ६६ सोतेसे जानपड़ते हैं व जागतेहुये भी वस्त्र ढांकलेते हैं इसतरह वे सखियां क्षणमात्र क्रीड़ाकरके फिर अनुमान से कहीं ६७ दांतों से रसनाको काटती हैं व परस्पर मुखदेखती हैं फिर मानो लज्जा के समुद्रमें डूबीहुई क्षणभर कुछ बोलती भी नहीं हैं ६८ फिर क्षणमात्रही में उनके अङ्गसे वस्त्रखींचकर बहुत अच्छाहुआ जो सोगये यहकहकर हँसाती व हँसती हैं ६९ इसतरह गणोंसहित तरह२ की हास्यों से रमतेहुये हे मुनिसत्तम! क्षणमात्र सोकेसुखपूर्वक ७० फिर आनन्द से विस्तृत दिव्य आसनमें बैठकर परस्पर हार चुम्बन व आलिङ्गन को करके ७१ फिर हँसौआ करतेहुये पाँशाखेलते हैं प्यारीजी से पराजित होनेपर भी हमजीते हैं यह कृष्णजी कहते हैं ७२ तब श्रीकृष्णजी राधाजीकेहार इत्यादि पकड़नेपर उद्यतहुये तब राधाजी ने ताड़ितकिया जब इसतरह राधाजी करके कृष्णजी मुख कमलमें करसे ताड़ितहुये तो ७३ खिन्नमन करके चलदेनेका विचारकिया व कहा कि हे देवि! जो तुमने हमको जीतलिया तो जो कुछ बाजी

हुई हैं वह लेलीजिये ७४ हमने तुमको चुम्बनादि दियाहै यहसुनके कृष्णजी की टेढ़ीभौंहैं व क्रोधयुक्त वचन देखने व सुननेकेलिये वैसाही करतीभई ७५ इसकेबाद पक्षियों का शब्दसुनके व घरजाने का विचारकरके उसस्थान से निकले ७६ व कृष्णजी प्यारीजी को आज्ञादेके आप गौवों के सम्मुखगये व राधाजी भी सखीसमूह से युक्त सूर्य्यमन्दिरको गईं ७७ थोड़ीदूर जाके फिर लौटकर हरिजी को ब्राह्मणका वेषवनाके फिर सूर्यालयको गईं ७८ वहाँ जाकर परिहासयुक्त उसीसमय प्रकल्पित वेदोंसे सखीजनों के कहनेपर कृष्णजीने सूर्य्यनारायण की पूजाकिया ७९ तवतो वे सखियां चतुर अपने कहनेपर चलतेहुये कृष्णजीको जानके सब आनन्दसागरमें डूबजातीभईं उससमय अपना व पराया कुछ न समुझती भईं ८० इसतरह ढाईप्रहर तरह २ के विहारकरके स्त्रियां तो घरको व कृष्ण जी गौवोंकोगये ८१ सखोंकोमिलकेव गौवोंको इकट्ठाकरके हे मुने ! मुरलीको वजातेहुये आनन्दसे कृष्णजी ब्रजकोचले ८२ तवतो नन्दादिक भगवान् की वंशीका शब्दसुनके व आकाश गोधूलिसे आच्छादित देखकर ८३ स्त्री व वालक व वृद्ध सव अपना २ कार्य्य छोड़कर दर्शनोंकी लालसा से कृष्णजीके सम्मुख जातेभये ८४ राजमार्ग में व ब्रजद्वारमें व जहाँ सवब्रजवासीथे कृष्णजी भी यथायोग्य सवकोमिलके ८५ दर्शनस्पर्श व वाणी व मुसकातेहुये देखने से व किसीको शिरझुकाके व किसीको मुखसे इसतरह गोपवृद्धों के नमस्कार करके ८६ व माता पिता व रोहिणीजीको हे नारद ! अष्टाङ्गपातसे प्रणामकरके व प्यारीजी को विनय व नेत्रोंकी संज्ञासे ८७ इसतरह यथायोग्य ब्रजवासियों से पूजितहोके व गोशाला में गौवों को छोड़के फिर ८८ माता पिताके कहनेसे भाईसहित अपनेघरको जातेहैं वहाँ स्नान पानकरके व कुछ भोजनकरके मातासों अनुमोदित ८९ फिर गौवोंका दूध दुहनेकेलिये गोशालाको जातेहैं वहाँ उनगौवोंको दुहकर व दुहाकरव किसी २ के बछड़ोंको पिलाकर ९० माता पिताकेसाथ घरकोजाते हैं वहाँ सैकड़ोंभावों के अनुग पिता व चाचा व उनके लड़के व वलदेवजी के साथ ९१ चर्व्य चोष्य-

दिक तरह २ के अन्न भोजनकरते हैं व कृष्णही में जिनका चित्त लगाहै ऐसी राधाजी कहने से पहलेही उसीसमय ९२ सखियों के द्वारा कृष्णजी के मन्दिरको पक्वान्न भेजती हैं उनको भगवान् पित्रादिकों के साथ सराहतेहुये भोजनकरके ९३ बन्दीजनों से सेवित फिर सभागृहको जातेहैं व पक्वान्नलेकर जो सखियां पहलेआई थीं ९४ उनको यशोदाजी ने बहुत पदार्थदिये व कृष्णजीका जूंठा भी कुछदिया उसको लेकर वे सखियां ९५ सबलेकर राधिकाजीको देतीहैं व राधाजी भी सखीसमूहयुक्त यथायोग्य भोजनकरके ९६ सखियों से आभूषित होकर चलने में उद्यतहोके टिकती हैं वृन्दाने कहा कि हम यहांसे किसी सखीको भेजती हैं ९७ उसकरके अभिसारित यमुनाजी के समीप कल्पवृक्षके कुंजोंमें सुन्दर रत्नमयी गृहमें ९८ उजाली अँधियारी रातकेयोग्य बेषकरके सखियोंसहित आतीभई व कृष्णजी भी तरह २ का कौतूहल देखके फिर ९९ मनोज्ञ संगीत कात्यायनी से सुनके व धनधान्यसे विधानपूर्वक उनको प्रसन्नकरके १०० जनों से आराधित मातासहित सखीकेस्थान को जातेहैं भोजनकराके माताको घरके जानेपर १०१ प्यारीजी सहित छिपकर सङ्केतवनको जाते हैं वहाँ दोनोंमिलके व वनरानियों में क्रीड़ाकरके १०२ रासलास्ययुक्त तरह २ के विहारों से रात्रिके ढाई प्रहर व्यतीत करके १०३ सोनेकी इच्छासे पक्षिणियों से भी गुप्त होके कुंजोंमें प्रवेश करतेहैं व एकान्त में मनोहर फूलों से बनीहुई केलि शय्यापर १०४ अपनी सखियों से सेव्यमान शयन करतेहुये टिकते हैं यहसब नित्यचरित्र भगवान्का तुमसे कहा १०५ हे नारद ! इसके सुनने से पापी भी मुक्तहोजाते हैं नारदजी ने कहा कि मैं धन्यहूं हे देवि ! तुमनेबड़ी अनुग्रहकी इसमें सन्देह नहीं १०६ जोकि हरिकी दैनन्दिनी लीला तुमने हमारे अर्थ प्रकाशितकी सूतजी ने कहा कि यहकहके व वृन्दाकी परिक्रमा करके व वृन्दा से आपभी पूजितहोकर १०७ हे ब्रह्मन् ! मुनिश्रेष्ठ नारदजी अन्तर्ध्यान होगये हमने भी इसको पहले से सम्पूर्ण वर्णनकिया है १०८ इन दोनोंमन्त्रोंको जोकि उत्तमोत्तमहैं प्रयत्नसे नित्यजपे इसको कृष्णजी

के मुखसे रुद्रजीने यत्नसे पहले सुनाथा १०९ रुद्रजी ने नारदजी से कहा नारदजी ने हमसेकहा व संस्कारों को करके हमने तुमसे कहा ११० यह परम अद्भुत रहस्य तुमको गुप्तरखना चाहिये शौनकजी ने कहा कि हे गुरो! साक्षात् तुम्हारे प्रसादसे मैं कृतार्थ हुआ १११ क्योंकि रहस्याओं का रहस्य तुमने हमारे अर्थ प्रकाशितकिया सूतजी ने कहा कि इन धर्मों में टिकतेहुये व रात्र दिन मन्त्रको कहतेहुये ११२ हे शौनक! थोड़ेही कालमें भगवान्‌की दास्य को पाओगे इसमें सन्देह नहीं है हे ब्रह्मन्! मैंभी नित्य भगवान् के स्थानको जाताहूं ११३ हे गुरो! हे गुरो! यमुनाजी के किनारे व गोपीश्वर के निकट ११४ यह परमपवित्र महानुभाव चरित्र महेशजी ने कहाहै इसको ये भक्तियुक्त मनुष्य सुनते हैं वे नित्यही अच्युत हरिपदको जाते हैं ११५ यह धन्यहै व यशकरनेवाला आयु देनेवाला रोगदूरकरनेवाला वाञ्छित सिद्धि देनेवाला स्वर्गदेनेवाला व मोक्षदेनेवाला व सम्पत्ति करनेवाला व पापनाश करनेवाला ११६ विष्णुमें तत्परहोकर ये मनुष्य भक्ति से रोजपढ़ते हैं वे विष्णुलोक से कभी फिर बाहर नहीं जाते ११७ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेश्रीवृन्दावनमाहात्म्ये त्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥

समाप्तं वृन्दावनमाहात्म्यम् ॥

चौरासीवां अध्याय ॥

दो० । कुशलकरण जनभयहरण रामचरणशिरनाय ॥
पाद्मराध माहात्म्यअनु वाद करत मनभाय १
चौरासिय अध्यायमहँ अम्बरीष महिपाल ॥
नारदसों हरियजनविधि पुँछ्यहुपरमविशाल २
नारदपुनि वर्णन कियो पूजन विधि सामग्रि ॥
पुष्पादिकके भेदसों द्विजहरियजन समग्रि ३

शौनकादि ऋषियोंने सूतजी से कहा कि हे सूत! हे महाभाग! रोमहर्षणजीके पुत्र तुमने लोकआनन्द देनेवाली रम्यकथा कही १ हे महाभाग! तुम्हारा कहाहुआ महा अद्भुत श्रीकृष्णजी का सब

चरित्र सुना जिससे निवृत्ति प्राप्तहुई २ हे महाभाग! श्रीकृष्णजी की माहात्म्य तो भक्तोंको गति देनेवाली है ही इससे उस माहात्म्य से को न तृप्ति को प्राप्तहो ३ इससे और भी व्रतदान अर्हणादिक श्रीकृष्णजी का चरित्रसुना चाहते हैं ४ व हे महाभाग! स्नानभी जिसप्रकार से जिसने कियेहो पहिले वह सब बिस्तारसहित कहो जिसेसुनकर हमको निबृत्तिहो ५ यह सुनकर सूतने कहा कि भोद्विज श्रेष्ठ तुमने लोकों के तारनेकेवास्ते बहुत अच्छा प्रश्नकिया क्योंकि तुमतो भक्तिसे कृतार्थ व सम्पूर्ण मानसहीहो ६ इससे हे द्विजश्रेष्ठ! श्रीकृष्णजी का चरित्र साधुजनों को परमहर्ष देनेवाला व उत्तम व्याख्यानसहित हम कहेंगे ७ एकसमय में भगवत्प्रिय नारदजी लोकोंमें घूमतेहुए मथुराजीमें राजा अम्बरीषको जोकि श्रीकृष्णजी के आराधन में तत्पर है ८ ऐसे महाभाग व्रतयुक्त राजा अम्बरीष को नारदजी ने देखा व राजाअम्बरीषनेभी मुनिको आये जानकर बहुत सत्कारकरके भक्तिसे खुशीमन होकर जैसा तुम हमसे पूंछतेहो उसीतरह राजा अम्बरीष ने नारदमुनि से पूँछा कि जो ये परब्रह्म वेदवादियों से कहेजाते हैं ९। १० व पुण्डरीकाक्ष देव सबसे श्रेष्ठ अपने आप नारायणजी हैं व अमूर्त्तिमान् पर मूर्त्तिमान् विदित होते हैं ईश हैं सबकहीं प्रकटहैं व गुप्ततो हैंहीं हैं व सनातन हैं ११ सर्व्वभूतमय व अचिन्त्यहैं वेहरि कैसे ध्यानकरने के योग्यहों जिनमें यहसब विश्वपटमें तन्तुओं के समान इधर उधर से ओतप्रोत है १२ जो अप्रकट एक परमात्मा के नामसे प्रसिद्धहैं व जिनसे इस जगत् की उत्पत्ति पालन नाश होतेहैं व जिहोंने अपने आप ब्रह्मा को उत्पन्नकरके १३ फिर उनको अपनेभीतर टिकेहुये वेद निकाल करके दिये योगियोंको भी अगम्य सब पुरुषार्थ देनेवाले उन श्री हरिकी आराधना कैसे कीजाय सो कृपाकरके कहो क्योंकि जो गोविन्द की आराधना नहीं करते वे हितके उदयको नहींपाते १४।१५ व न कियेहुये तप दान यज्ञोंका फल पाते हैं व जो लोग गोविन्दजी के चरणकमलके रसकास्वादु नहीं लेते १६ वे मनोरथ मार्ग के प्राप्त करनेवाले समृद्धफलको नहीं प्राप्तहोते हरिके आराधनको छोड़कर

पापसमूह निवारण करनेवाला १७ प्रायश्चित्त प्राणियों के लिये हम और नहीं देखते जिनकी भृकुटी के विलाससे सम्पूर्ण सिद्धियां उत्पन्न होती हैं १८ उन क्लेशनाशन केशवजीकी आराधना कैसे कीजाय सो उन नारायण भगवान् की उपासना पुरुष कैसेकरें १९ व स्त्रियां कैसेकरें संसारके हितकेलिये हमसेकहो भक्तिप्रिय ये भगवान् भक्तिसे कैसे प्रसन्नहोते हैं २० व इनमें भक्ति कैसे होतीहै व सब लोग कैसे आराधना करें तुम वैष्णवहो व उन हरिके प्रिय और परमार्थवेत्ताहो २१ हे ब्रह्मन् ! इसमें वेद व ब्रह्म जाननेवालों में उत्तम तुमसे पूँछते हैं श्रोता वक्ता व पृच्छक पुरुष को श्रीहरि का २२ प्रश्न पवित्रकरता है जैसे कि गङ्गाजल स्नान पान स्पर्श करनेवालेको पवित्रकरता है इसीसे तुमसे पूँछते हैं यह क्षणमात्र में नाशहोनेवाला मनुष्योंका देह दुर्लभ है २३ उसमें भी भगवद्दासों का दर्शन हम दुर्लभतर मानते हैं इस संसार में आधे क्षणभर भी सत्सङ्गहोना मनुष्यों २४ को परमनिधि है क्योंकि उससे अर्थ, धर्म्म, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थ सिद्धहोते हैं हे भगवन् ! आपकी यात्रा सर्व्वदा सब प्राणियों के कल्याणकेलिये होतीहै २५ जैसे कि बालकोंकेलिये माता पिताकी यात्रा स्वस्तिकेलिये होतीहै सो आप अकेलेही की नहीं जितनेलोग भगवद्दासहैं सबोंकी यात्रा पुरुषों के कल्याणही केलिये होतीहै दैवका चरित्र सबप्राणियों के सुखके व दुःख के लियेभी होताहै २६ परन्तु तुम ऐसे अच्युतके आत्मा साधुओंका चरित्र सबके सुखही के लिये होताहै जो जिसप्रकारसे देवताओं को भजते हैं परन्तु देवतालोगभी उनको वैसेही भजते हैं २७ परन्तु दीन वत्सल साधुलोग छायाके समान कर्म केसचिव होतेहैं वे यह नहीं विचारते कि इसने थोड़ी सेवाकी है इसे थोड़ाही फल देवें इससे हे भगवन्! तुम हमसे वैष्णवधर्म कहो २८ क्योंकि उस उपदेशदानसे वाञ्छित फल मिलताहै नारदजी बोले कि हे महीपाल! एक माधवकी सेवारूप परमधर्म्म जानतेहुये व बिष्णुकी भक्तिवाले तुमने बहुत अच्छा पूँछा २९ क्योंकि श्रीमाधवजी की सेवा रूप एक धर्म तुम जानतेहो कि जिन विष्णुभगवान्की आराधनासे विश्वभर आराधित होजाताहै ३०

व जिनके सन्तुष्टहोनेसे चराचर सन्तुष्टहोता है क्योंकि श्रीहरि सर्व्वदेवमयहैं जिन विष्णु भगवान्‌के स्मरणमात्र से महा पातकों का समूह ३१ क्षणमात्रमें नष्टहोजाता है वेहरि सेवा करनेके योग्यहैं हे राजन्! ऐसा कौन चैतन्यप्राणी हैं जोकि मर्त्यलोकमें ऋषियों व देवताओंके उपासनीय श्रीमुकुन्दके चरण कमलको न भजै क्योंकि हे बीर! सद्धर्म्मसुनने से पढ़ने से ध्यानकरने से आदर करने व अनुमोदन करनेसे ३२ । ३३ विश्वभरके द्रोह करनेवालेभी लोगों को तुरंतही पवित्र करदेता है जो जनार्द्दन भगवान् कारण कार्य्यादि के परम कारणहैं ३४ व अनन्त कारण योगीहैं व संसार के जीवन व जगत्मय हैं सबसे छोटे व सबसे बड़े सबसेकृश व सबसे स्थूल निर्गुण गुणी व महान्‌हैं ३५ जिनका किसीसे जन्म नहीं होता व जन्मनाशके आवर्त्त से दूररहते हैं वे श्रीहरि सदा ध्यान करने के योग्य हैं हे पुरुषश्रेष्ठ! आपने यह अच्छा बिचारांश किया है ३६ जो कि बिश्वको करानेवाले भागवत धर्म्मों को पूँछतेहो सज्जन पण्डितों के संगसे आत्मा मनकर्ण के सुखदेनेवाली कीर्त्तन करने के योग्य कृष्णचन्द्रकी कथायें होतीहैं ये देव भगवान् भावसे साध्यहैं यह आप जानते हैं ३७ । ३८ तथापि जगत्‌के हितके लिये और तुम्हारे गौरवसे हम कहेंगे जिसको परमब्रह्म प्रधानपुरुषसे भी पर कहतेहैं ३९ व जिसकी मायासे यहसब संसार विस्तृतहै व जो सब कुछदेतेहैं वे अच्युत भगवान् पुत्र स्त्री दीर्घायुर्बल राज्य स्वर्ग मोक्ष औरभी ४० सबवाञ्छित पदार्त्थ जब भक्तिसे अच्छे प्रकार पूजित होते हैं तब देते हैं इससे कर्म्म मन बचनसे जो नर उन्हीं में लग-जाते हैं ४१ उनकी प्रीति के लिये हे भूपसत्तम! हमैं व्रत कहते हैं अहिंसासत्य चोरी न करनाब्रह्मचर्य रहना शुद्धरहना ४२ ये श्रीहरि के सन्तुष्ट होनेके लिये मानसीव्रत कहेगये हैं एकबार भोजन करना सन्ध्यासमय खाना उपवास करना बिनामांगाहुआ अन्न खाना ४३ बस यह कायिकव्रत मनुष्योंके लिये कहागया है वेदोंका पढ़ना विष्णुका कीर्त्तनकरना सत्यबोलना ४४ किसी की चुगुली न करना इस धर्मको वाचिक व्रत कहते हैं चक्रधारी श्रीहरिके नामोंका कीर्त्तन

सदा व सब कहीं करना चाहिये ४५ क्योंकि उनके कीर्त्तनकरने में कभी सूतकादिकों में भी अशौचता नहीं होती क्योंकि वे सबको पवित्र करते हैं वर्ण आश्रमोंके आचारों में युक्त पुरुषको परमपुरुष ४६ श्रीविष्णुकी आराधना सदा करनीचाहिये क्योंकि अन्य कोई उनके सन्तुष्ट करनेका कारण नहीं है पतिके प्रिय व हित आचारों से व मनवचनशरीरके संयमोंसे ४७ व अन्यव्रतोंसे स्त्रियोंको दयानिधि श्रीवासुदेवकी आराधना करनीचाहिये स्त्रियोंको व शूद्रोंको शास्त्रके मार्ग से श्रद्धासहित श्रीविष्णुकी पूजा करनीचाहिये ४८ ब्रह्मरूप श्रीकृष्णचन्द्रकीपूजा तीनवर्ण यानी ब्राह्मण क्षत्री वैश्य वेद मार्गसे करें ४९ व शूद्रलोग व स्त्री केवल नामही से देवताकी पूजा करें न पूजा से न यज्ञों से न व्रतों से माधवजी ५० प्रसन्नहोते हैं क्योंकि वे तो भक्तिसे प्रसन्नहोते हैं यह कहागयाहै पतिव्रतास्त्रियों के पतिहीदेवता है ५१ इससे स्त्रियां विष्णुकी भक्तिसे पतिको हृदय में चिन्तना करके मनसा वाचाकर्मणासे व विष्णुकी भक्तिसे पतिही की पूजाकरें ५२ शूद्रोंकोभी नाम से देवता की पूजा करनीचाहिये व शास्त्र व वेदमार्ग से करें ५३ जो स्त्रियां अपने पतिके प्रिय करने में सदालगी रहती हैं उनको विष्णुकी आराधना करने का भी अधिकार है व जो अपने पतिका प्रिय नहीं करती हैं उनको हरिकी पूजा करने का अधिकार नहीं है यह सनातनी श्रुतिहै ५४ धर्म्मके अनुसार जिसके लिये जो व्रतकहा है उस अपनी जातिके धर्म्मके व्रतको जो करताहै उसीसे केशवजी सन्तुष्ट होजातेहैं ५५ अग्निमें हरिकी पूजा हव्यसे जलमें पुष्पों से हृदयमें ध्यानसे व जपसेसूर्य्य मण्डल में नित्य पण्डितलोग करतेहैं ५६ प्रसिद्ध मालती आदिके पुष्पोंको तो पुष्प कहतेही हैं परन्तु अन्यभी पुष्प गिनाते हैं उनसे भी पूजाकरनीचाहिये अहिंसाप्रथम पुष्प है दूसरा सबइन्द्रियों को अपने वशमें रखना तीसरा सबप्राणियोंके ऊपरदया करना व चौथा सबसेविशेष शान्तरहनापुष्पहै ५७ पांचवां इन्द्रियोंका दमन करना पुष्पछठां शमन अर्थात् इन्द्रियोंको शान्त करदेना पुष्प व सातवां ध्यान पुष्प आठवां सत्यपुष्प बस इन सब पुष्पों से केशव सन्तुष्ट

होते हैं ५८ सो इनआठपुष्पोंसे पूजितहोने से श्रीहरि सन्तुष्टहोते हैं हे मनुष्योत्तम! और भी बाह्य पुष्पहैं ५९ जोकि भक्तिसे कियेजाते हैं व जिनके पूजन से श्रीहरिसन्तुष्टहोते हैं जल वरुणका पुष्प है इससे वारुणकहाता है दही दूध घी ये सौम्यपुष्प कहाते हैं ६० अन्नादि प्राजापत्यपुष्प धूपदीप आग्नेयपुष्प व फल पुष्पादिक वानस्पत्य पांचवां पुष्पकहाते हैं ६१ कुशमूलादि पार्थिवपुष्पहैं गन्धचन्दनादि वायव्यपुष्प श्रद्धारूप वैष्णवपुष्प कहाताहै बाह्य यह विष्णुका पद है ६२ बस इनपुष्पों से भी पूजित होने से विष्णुप्रसन्नहोते हैं हे राजन्! ये तुम से बाहरी व भीतरकेभी पुष्प हमने कहे सूर्य्य अग्नि ब्राह्मणलोग गौ वैष्णव आकाश पवन जल ६३ पृथ्वी आत्मा व सबप्राणी ये भी श्रीहरिके पूजन के स्थानहैं सूर्य्य में मन्त्रजपने से अग्नि में हविष्यसे ६४ श्रेष्ठ ब्राह्मण में आतिथ्य से गौओंमें घासादिकों के ग्रासव रसादिकों से वैष्णवमें अपने बन्धुके समान सत्कारसे हृदयमें ध्यानकी निष्ठासे ६५ वायुमें मुख्य बुद्धिसेजलमें जलपुष्प चन्दनादिकों से स्थण्डिलमें मन्त्रसे हृदयमें भोगोंसे आत्मामें आत्मासे ६६ सब प्राणियोंमें परमेश्वर बुद्धि से समतारखने से श्रीहरिकी पूजाकरे इन सब स्थानोंमें शङ्ख चक्र गदाकमल धारण कियेहुये ६७ चतुर्भुज विष्णुजीके शान्त शरीरका ध्यान करते हुये पूजनकरे इनमेंभी ब्राह्मणोंकी पूजाकरनेसे श्रीहरि पूजितही होजातेहैं इसमें कुछ संशय नहीं है ६८ व हे भूप! ब्राह्मणोंका अपकारकरनेसे हरिअपकारित होजातेहैं इसमें भी सन्देह नहीं है जिनब्राह्मणोंमेंही सबवेद व धर्म शास्त्ररहते हैं ६९ वे ब्राह्मण परमपावनी वैष्णवी मूर्त्तिहैं ७०॥

चौ०। जगमें सुखसारे मिलत सुधारे धर्म्महिंसों नहिं औरे।
सबधर्म्ममहाना शास्त्रबखाना सोजानहुकरिगौरे॥
उनके अधिकारी बिप्रकरारीहैं नहिं यामहँशङ्का।
यासोंद्विजपूजे हरिहुसुपूजे होतकहत दै डङ्का॥१।७१
नहिंयज्ञसुयोगा नहिं तपभोगा योगयुक्तिसोंनाहीं।
नहिं निजलहि पूजा तजि सबदूजा हरिप्रसन्न मनमाहीं॥

जिमि द्विजकी अर्चाकी लहिचर्चा माधवहोत सुतोषे ।
यहहम करिखोजा नै जमनोजा तुमसनकहा सुचोषे २ । ७२
ब्रह्मण्यसुदेवा कृत द्विजसेवा ब्रह्मवेदि भगवाना ।
ब्राह्मणकर पूजन लहि मधुसूदन होत प्रसन्न न आना ॥
जासों द्विज प्यारे हैं हरि प्यारे यासों द्विजके पूजे ।
ह्वैजात प्रसन्ना विगत विपन्ना और किये नहिं दूजे ३ । ७३
जाके दुइकुलके पुरुषपुलके नरकबसैंहों प्रानी ।
जैसे सुत ताको करि चितपाको पूजत हरिहि अमानी ॥
तैसे सबजाहीं स्वर्गमझाहीं यामें शक कछु नाहीं ।
इमि श्रीहरिअर्चा जो करि चर्चा करतधरत मनमाहीं ४ । ७४
क्या तिनको जीनो अतिहि मलीनो पशुसमान जगमाहीं ।
जिनको चितपावन अतिमनभावन चीन्ह्यों हरिपद नाहीं ॥
व्यापक संसारा सबसों न्यारा जगमय सब जगस्वामी ।
यासों त्यहिध्याओ चित्तलगाओ अरुहोओ अनुगामी ५ । ७५

नारदजी राजा अम्बरीषजी से बोले कि अब हम श्रीहरिका निर्म्मलरूप कैवल्यध्यान कहते हैं सुनो जिसे कि किसीने कभीनहीं देखा ७६ हे महामते! जैसे पवनरहित किसी स्थानपर स्थित दीपक जलताहै तो सब अन्धकार को नाशताहै ७७ ऐसेही दोषसे विहीन आत्मा निरामय होताहै नतो वह किसीकी आशा करता है व निश्चल रहताहै उस बीरके न कोई शत्रुहै न मित्रहै ७८ न शोक हर्ष विस्मय लोभ मत्सर भ्रम हैं व सम्भ्रम आलाप मोह सुख दुःखादिकों से वह छूटसक्ताहै ७९ व वह सब इन्द्रियों के विषयों से विमुक्त रहताहै व सदा केवल ज्ञान कैवल्यको प्राप्तहोताहै ८० ज्वाला कर्म के प्रसङ्गसे दीपक तेलको शोषताहै जब कि वत्ती के आधार से निःद्वन्द्व वायुसे वर्जितहोता है ८१ व हे महामते! पीछे से तेलको नष्ट करके वत्ती कज्जलको उगिलती है तब दीपक के आगे कालीरेखा दिखाईदेती है ८२ वह आप तैलको खींचती है व तेजसे निर्म्मल होती है ऐसेही कार्य अन्तःकरण में स्थितहोकर कर्म्मतैल को शोषतीहै ८३ सब विषयोंको कज्जलकरके प्रत्यक्षोंको प्रकाशित कराता

है व ज्वालाके समान निर्म्मलहोकर अपने को प्रकाशित करता है ८४ क्रोध लोभ काम पवनों से वर्जित वाञ्छारहित निर्म्मलहोकर तेज अपनेआप प्रकाशित होताहै ८५ व अपने में स्थित तीनों लोकोंको अपने तेजसे देखताहै वह परमेश्वर केवल ज्ञानरूप है सो हमने तुमसेकहा ८६ अब श्रीविष्णुका दो प्रकारका ध्यान तुमसे कहते हैं जिसे कि कोई २ ज्ञानदीप नेत्रों से देखते हैं ८७ जिस सर्व्वज्ञ सर्व्वदर्शीको ज्ञानयुक्त महात्मा परमार्त्थ में परायण मुनीन्द्र लोग देखते हैं ८८ परन्तु वह हस्त पादसे विहीनहै तोभी सबकुछ करताहै व सबकहीं चलता पहुंचता है व सब स्थावर जङ्गम विश्व को ग्रहण करताहै ८९ व हे महीपाल ! मुख नासासे विहीन है पर खाता व सूँघता है कान नहीं हैं पर सुनता सबकुछ है व वह जगत्पति सबोंका साखीहै ९० है वह अरूप परन्तु रूपमें बंधाहुआहै व रूप रसादि पांचोंके वशीभूतसा रहता है व सबलोगों का प्राण है और सचराचरों से पूजित होताहै ९१ है वह जिह्वारहित परन्तु वेदशास्त्रादि की द्वारा सबकुछ कहताहै है त्वचाहीन परन्तु सबों के स्पर्शका ग्रहण करताहै ९२ सदा आनन्द से युक्त रहताहै व एकान्त में बैठकर सबकुछ करता है व एकरूप आश्रय रहित है निर्गुण व निर्मम निर्म्मल सगुण व्यापक व निष्पाप है ९३ आप अवश है पर सब आत्मा उसके बशीभूत हैं व सबकुछदेता सब जानता सब सहताहै उसका प्रमाण जाननेवाला नहीं है पर वह विभु सर्व्वमय है ९४ जो महात्मा हैं इसप्रकार सर्व्वमय ध्यानको जो अनन्यबुद्धि देखते हैं वह अमृतोपम मूर्तिरहित परमस्थान को जाते हैं ९५ अब हे महामते ! दूसरा ध्यान कहते हैं सो सुनो कोई मूर्त्तिमान् कोई साकार कोई निराकार निरामय ९६ जिससे कि उसकी बासना से सब अतुल ब्रह्माण्ड बसायाहुआ है इससे हे राजकुमार ! वह वासुदेव कहाताहै ९७ बरसेहुये मेघका जैसा बर्णहोताहै वैसाही उसका रंगहोताहै व सूर्य्यके तेजके समान प्रकाशित चतुर्भुजरूप सब देवताओं का ईश्वर है ९८ हेवीर ! उस महात्माके दहिने हाथमें सुगन्ध युक्त व शोभायमान महापद्म सदा कमलों की श्री से युक्त

सुवर्ण रत्नोंसे विभूषित शंख शोभितहोताहै बड़े बड़े दैत्यों को न श करनेवाली कौमोदकी गदा ९९ बामहाथ में शोभित होतीहै ... महात्माके हेवीर! व दहिनेही हाथमें आयुध सहित शोभित होता है व वे शङ्ख समान तीनरेखायुक्त चढ़ा उतार १०० । १०१ गलेवालेहैं मुख उनकागोलहै नेत्र कमलपत्रसमान विस्तृतहैं व रत्नतुल्य दांतों से हृषीकेशजी शोभितहोतेहैं व जिनके ओष्ठ मूँगोंके समान लालहैं १०२ व पुण्डरीकाक्षजी अति चमकते हुये मुकुटसे शोभितहोते हैं व बिशाल छाती व बिशालरूप से अंग शोभितहोता है १०३ व कौस्तुभमणिसे चिह्नित जनार्दनजी शोभित होते हैं व सूर्य्य के तेजके समान प्रकाशित कुण्डलोंसे भी शोभितहोते हैं १०४ व पुण्य श्रीबत्सचिह्नसे सदा हरि शोभितहोतेहैं केयूर कङ्कण हार व ऋत्ताकारमोतियों से भी विराजते हैं १०५ व अपने शरीरसे दीप्तिमान् जीतने वालों में श्रेष्ठ श्रीहरि शोभित होतेहैं व वेही गोविन्दजी सुवर्णके रंगके वस्त्रसे चमकतेहैं १०६ व मुँदरियों से युक्त अंगुलियों से शोभितहोतेहैं सब आयुधों व सब भूषणों से भी श्रीहरि शोभितहोते हैं १०७ गरुड़पर आरूढ़ लोकों के कर्त्ता जगत् के प्रभु ऐसे श्रीहरिको अनन्यमनसे जो मनुष्य ध्यानकरता है १०८ वह सब पापोंसे छूटजाताहै व विष्णु के लोकको जाता हैं यह सब जगत्पति श्रीहरिके ध्यानकाभेद हमने तुमसेकहा १०९ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेनारदांबरीषसंवादेवैशाखमाहात्म्येभगवद्ध्यानवर्णनंनामचतुरशीतितमोऽध्यायः ८४ ॥

पचासीवां अध्याय ॥

राजा अम्बरीषने कहा कि हे मुनिश्रेष्ठ ! हे लोक के ऊपर दया करनेवाले! आप बहुत अच्छेहैं २ क्योंकि जो आपने सगुणनिर्गुण विष्णु का ध्यान कहा १ अब इस समयमें हे साधुओंके ऊपर कृपा करनेवाले! आप भक्तिका लक्षणकहैं जैसी जहां जिस समयमें जिसने कीहो २ सूतने कहा कि ऐसे उत्तम राजाके बचन सुनके खुशहोकर नारदजी राजा अम्बरीषसे बोले कि हे राजन् ! समग्र पापोंको नाश करनेवाली भगवान्की भक्ति हम तुमसे कहतेहैं सो सुनो ३

अब पापनाशिनी त्रिविध प्रकारकी भक्ति कहेंगे क्योंकि कायिकी
वाचिकी मानसी के भेदसे भक्ति त्रिविध प्रकारकी कही जाती है ४
व ऐसेही लौकिकी वैदिकी व आध्यात्मिकी येभी भेदहैं सो ध्यानकी
धारणाकी बुद्धिसे जो वेदोंका स्मरणहै ५ वह विष्णुकीप्रीति करानेवाली मानसी भक्ति कहातीहै व मन्त्र वेदमन्त्रों के कहने से व निरंतर विचिन्तना करने से ६ जपकरने बनमें जाकर वाचिकी भक्ति
कहाती है व्रत उपवास नियम व पांचों इन्द्रियोंके जीतनेसे ७ सर्व
अर्थ को देनेवाली कायिकी भक्ति कही जातीहै सुवर्णके भूषण रत्न
व विचित्र बाणियोंसे ८ कपड़ा व सूत्रसे व अग्नि व्यजनादिकों से
नृत्य वादित्र गीतोंसे सब प्राणियोंके उपहारों से ९ भोज्य भक्ष्यादि अन्न पानादिकोंसे जो पूजा मनुष्य करते हैं सो भी नारायणजी
के समुद्देश से बस यह लौकिकी भक्ति कहाती है १० व इसी सब
अर्थों के साधन करनेवाली भक्तिको कायिकी भी कहते हैं व ऋक्
यजुः साम अथर्वण की संहिताका पढ़ना पढ़ाना ११ जो विष्णु
के उद्देश से कीजाती है वह भक्ति वैदिकी कहाती है व जो क्रिया
वेदमन्त्रों से हव्यकी आहुति देकर कीजाती है वह वैदिकी कहाती
है १२ अमावास्या व पौर्णमासी को जो अग्निहोत्र कियाजाता है
भोजन कराकर दक्षिणा दान कियाजाता है वह पुरोडासचरुक्रिया
कहाती है १३ इष्टि, धृति, सोमपान आदि सब याज्ञिक कर्म्म व अग्नि, भूमि, वायु, आकाश, तेज, शङ्कर, सूर्य्य १४ इनके उद्देश से
जितने कर्म्म कियेजाते हैं सबों के विष्णुही देवहैं व जो त्रिविध प्रकारकी ब्रह्मकी भक्तिहै उसको आध्यात्मिकी भक्ति कहते हैं १५ अब
हे भूप ! सांख्यनाम योगशास्त्र सुनो प्रधानआदि चौबीस तत्त्वहोते
हैं १६ वे सब अचेतन भोग्य वस्तुहैं उनका भोक्ता पच्चीसवां पुरुष
है वह पुरुष चेतनहोकर भोगकरता है उनकर्मोंका कर्त्ता वह पुरुष
है १७ पुरुषही आत्मा नित्य अव्यय अधिष्ठान प्रयोजक है पुरुष
नित्यअव्यक्तका कारण व महेश्वर कहाता है १८ तत्त्वसर्ग भावसर्ग व भूतसर्ग ये सब तत्त्वसेही होते हैं संख्या व परसंख्या का
प्रधान गुणात्मक होताहै १९ इनके साधर्म्य वैधर्म्य व विधर्म्मिको

प्रधान जानना चाहिये व ब्रह्मके कारणत्वको कामित्व कहते हैं २०
प्रधान की प्रयोज्यत्व को वैधर्म्य कहते हैं व सबते ब्रह्मकर्तृता व
पुरुष की अकर्तृता है २१ व अचेतन के प्रधान से यह समत्व क-
हीजाती है तत्त्वान्तर व तत्त्वों का कार्य्य कारण २२ प्रयोजन व
प्रयोजत्व तत्त्वोंकी संख्यासे जानकर सब तत्त्वों के जाननेवाले प-
ण्डितलोग उसीको संख्या कहतेहैं २३ इसरीतिसेइसके सद्भावको
जानकर व तत्त्व से तत्त्वसंख्या को भी जानकर व ब्रह्मतत्त्वसे अधिक
भूततत्त्वको पण्डितलोग जानते हैं २४ सो सांख्य करनेवालोंने इस
भक्तिको आध्यात्मिकी भक्तिकही है बस इसीका आध्यात्मिकी भक्ति
नाम है राजन् अब तुमसे योगजा भक्ति भी कहते हैं सुनो २५
नित्य प्राणायाम में परहोकर ध्यानवान् व जितेन्द्रियहोवे भिक्षा
द्रव्य भक्षणकरे व्रतीरहै सब प्रत्याहारों से इन्द्रियों को जीते २६
हृदयमें धारणाको करके महेश्वरका ध्यानकरे जोकि मनःकमलकी
कर्णिकापरआसीन पीताम्बर ओढ़े सुन्दर नेत्रधारी २७ प्रकाशित मु-
खवाले व कटि पर्य्यंत ब्रह्मसूत्र धारणकिये श्वेतवर्ण चतुर्बाहु बरदेने
व अभयकरने के लिये हाथ उठायेहुये परमेश्वरको देखता रहै २८
बस यही योगजामानसी सिद्धिविष्णुकी पराभक्ति कहातीहै जो इस
प्रकारदेवमें भक्तिमान् होताहै वह विष्णुभक्तकहाता है २९ हे नृप
नन्दन! इसप्रकार बिबिधप्रकारकी भक्तिहमने तुमसे कही सात्त्विकी
राजसी व तामसीके भेदसे ये सब तीन २ प्रकारकी भक्तियांहैं ३०
सो अमित तेजस्वी बिष्णुभगवान्की ये नानाप्रकारकी भक्तियां हैं
जैसे अच्छेप्रकार प्रज्वलित अग्नि इन्धनों को भस्म करडालता है
३१ वैसेही क्षणमात्रमें पापोंको भगवान् की भक्ति भस्म करती है
३२ जबतक मनुष्य पृथ्वीपर विष्णुकी वार्त्ता सुधारसका सम्पूर्ण
रसके एक सारको नहीं सुनता तबतक जरामरण जन्मादिके सैकड़ों
घातोंके दुःख बहुत देहोंसे उत्पन्नपाताहै ३३ जैसेही कोई भगवान्
अनन्तका कीर्त्तन करता है हृदयमें उनकी कीर्त्तिकी चिन्तना करता
है व वे उसके अनुभावको सुनते हैं वैसेही सब ओरसे पापकानाश
करदेते हैं जैसे कि बायु मेघों को व सूर्य्य अन्धकारको दूरकरता है ३४

जैसे भगवान् अनन्तजीके हृदयमें निवास करनेसे अन्तरात्मा विशुद्धिको पाता है वैसे दान देवपूजन यज्ञ तीर्थस्नान शास्त्र पढ़ने आचार करने तपस्या व क्रियाकरने आदिसे नहीं विशुद्धिको पाता है ३५ हे राजन्! वही कथा विशुद्ध व वहीसत्य तरनेके लिये पथ्य व वही भगवान्की कथा योग्य होती है जिसमें कि पवित्र मूर्त्ति प्रसिद्ध साधुकीर्त्ति श्रीहरिका कीर्त्तनहो व जिसमें उनके यशका श्रवण हो ३६ राजाओंके धर्म्मके धुरन्धर वीरधीर तुमधन्यहो जो कि श्रीहरिके ध्यानमें निष्ठहोने के कारण वैष्णवों के धुरन्धरहो व तुम्हारी नैष्ठिकी मतिके कारण यह सौभगकी शोभाहै जो कि श्रीकृष्णनाथ के सुकृत सुननेसे समृद्धहुईहै ३७ वरद अव्यय विष्णुकी आराधना बिना भक्तिके किये हुये हे तात! अभिमानी पुरुष कल्याणको कैसे पावें ३८ मायाओं के जन्म के स्थान माया रहित ये श्रीहरि माया रहित भक्तिसे पुरुषोंसे साध्यहैं इसबात को खुद आप जानतेहैं ३९ हे नृप! ऐसा कोई धर्म्मतत्त्व नहीं है जिस को तुम न जानतेहोओ तथापि फिर भी हमसे पूँछतेहो क्योंकि विष्णुकी कथाका रस बार २ पूँछनेहीसे वैष्णवका गौरवहोताहै ४० परस्पर पुण्यदायक व उचित इससे अधिक परमतत्त्व विशेष योग अन्य नहीं है जो कि सज्जन लोग हठसे गुरु मुखारबिन्दसे कल्याण निधि परमेश्वरको जानकर अधिक भावको भोगतेहुये भजते हैं ४१ ब्राह्मणलोग धेनु सत्य श्रद्धा यज्ञ तप श्रुतिस्मृति दया दीक्षा व शान्तियां ये सब श्रीहरिकी मूर्त्तियां हैं ४२ सूर्य्य चन्द्रमा वायु पृथ्वी जल आकाश दिशा ब्रह्मा विष्णु व रुद्र बस इन सब भूतोंसे युक्त श्रीपरमेश्वरहैं ४३ आप विश्वरूप हैं इससे इस सचराचर जगत् को अपने आप उत्पन्न करते हैं व ब्राह्मणोंमें प्रविष्टहो सदा अन्नका उपभोग करतेहैं ४४ इससे हे महीपाल! तीर्थास्पदीभूत इन ब्राह्मणों के चरणोंकी रजका स्पर्श करो क्योंकि भूमिपर के देव येही लोगहैं येही परात्मा परमेश्वरकी सिद्धि लक्ष्मी हैं क्योंकि सर्व्वभूत निवासी श्रीहरिके निवासके स्थान विप्र होहैं ४५ जो कोई विद्वान् साधु ब्राह्मणको विष्णुकी बुद्धिसे देखता है वही अपने कार्य्यका एक नैष्ठिक वैष्णव कहाता है ४६ कुछ रह-

स्य हमने तुमसे कहा अब हमको अधिक अवकाश नहीं है क्योंकि अब हम गंगा स्नान करनेको जाते हैं ४७ क्योंकि माधवको बल्लभ यह पुण्यकारी बैशाखमास प्राप्तहुआ है इस मासकीभी शुक्लपक्षकी सप्तमी गंगाजी में बहुत दुर्लभ है ४८ क्योंकि बैशाख शुक्लपक्षकी सप्तमीको जह्नुमुनिने क्रोधसे गंगाजी को पीलिया था व उसी दिन फिर अपने दहिने कानके छिद्रसे बाहर निकाल दिया था ४९ इस बैशाख शुक्ल सप्तमीको जोकोई पुण्यात्मा गंगामें जाकर स्नानकरता है विधानसे व गगनमेखल गङ्गाजी को पूजन करता है वह पुरुष धन्य व सुकृतीहै ५० व उस तिथिमें जो गंगा स्नान करके देवता पितर मनुष्य ऋष्यादिकों का तर्पण करता है गंगाजी उस स्नान किये हुये को साक्षात् पापरहित देखतीहैं ५१ न तो बैशाखके समान कोई मास है न गंगाके समान कोई नदीहै सो बैशाखमें गंगा का सँयोग दुर्ल्लभहै यह हरिकी भक्तिही से मिलता है ५२ विष्णु के पादोदक से उत्पन्न ब्रह्मलोक से आईहुई तीनस्रोतों से युक्त ये गंगा तीनोंलोकों को पवित्रकरती हैं ५३ स्वर्ग्ग के आरोहण की निश्रेणी निरन्तर आनन्दकारिणी व अनेक पापोद्वारहारिणी दुर्ग्गतारिणी ५४ श्रीमहेशजटाजूटवासिनी दुःखनाशिनी भजन करनेवालेजनोंके हृदयके पापोंको नाशकरनेवाली ५५ सगरके वंशवालों कीमोक्षकारिणी धर्म्मधारिणी त्रिमार्ग्गचारिणी लोगोंको अलंकारकारिणी ५६ दर्शन स्पर्शन स्नान कीर्त्तन ध्यान सेवन से सहस्रों पुण्यात्मा अपुण्यात्मा नरोंको पवित्रकरतीहुई देवी हैं५७ गङ्गागङ्गा गङ्गा जो कोई तीनोंसंध्याओं में तीन २ बारकहताहै उसके दूरही से तीनजन्मोंके इकट्ठे कियेहुयेपाप गंगा नष्टकरदेती हैं ५८ व सहस्रयोजन दूररहकरभी गंगाजीका स्मरणकरने से पुरुष चाहे पापी भी हो तो परमगतिको पाताहै ५९ व वैशाख शुक्ल सप्तमीको तो गंगा विशेषकरके दुर्ल्लभहैं हे भूपाल ! इसतिथि में गंगाश्रीहरि व ब्राह्मणों के प्रसादहीसे मिलती हैं ६० न माधव अर्थात् वैसाखसमान कोई मास है न माधवके समान कोई समर्त्थदेवहै क्योंकि जो पापसागर में डूबतेहुये जनकेलिये जहाजरूपहैं ६१ भक्तिसे जो वैशाखमासमें

दियाजाता जपाजाता हवनकियाजाता स्नानकियाजाता है हे भूप! वह पुण्यरूपहोकर माधवको प्रियकरताहुआ सैकड़ों कोटि अधिक फलदेताहै व अक्षयहोजाताहै ६२ जैसे सब देवोंमें विश्वात्मा नारायण विभुहैं व जैसे सब मन्त्रोंमें गायत्रीहै व सब नदियोंमें जैसे गंगाजी हैं ६३ जैसे सब स्त्रियोंमें पार्व्वतीजी हैं व तपनेवालों में जैसे भास्कर हैं लाभोंमें जैसे आरोग्यका लाभहै दो पैरवालोंमें जैसे ब्राह्मणहैं ६४ पुण्यों में जैसे पराया उपकारहै विद्याओंमें जैसे वेदविद्या है मन्त्रों में जैसे ॐकारहै व जैसे ध्यानों में आत्मचिन्तनहै ६५ जैसे सत्यबोलना अपने धर्म्मपर चलना व तपकरनेवालों में जैसे श्रेष्ठहै शौचों में जैसे अर्थशौच व दानों में जैसे अभयदान ६६ गुणोंमें जैसे अलोभ मुख्य अक्षयगुण कहाता है ऐसेही सब मासोंमें वैशाख मास अतिप्रवर है ६७ इस मासमें जो यज्ञदान श्राद्ध उपवास तप वेदाध्ययन पूजादि कियाजाता है वह अक्षय फल होजाता है ६८ सब पापोंका अन्त वैशाखमें होजाता है व सूर्य्योदय में अन्धकारोंका अन्तहोजाता है व परोपकार न करने चुगलीकरने से पुण्यका अन्तहोजाताहै ६९ हे राजन्! तुलाराशिमें टिकेहुये कात्तिक मासके सूर्य्यमें जो कुछ स्नान दानादि कियाजाता है वह परार्द्धगुण अधिक होजाता है ७० व उससेसहस्रगुण अधिक माघमें मकरकेसूर्य्यमें होता है व उससे भी सौगुणाअधिक फल वैशाखमें मेषके सूर्य्यमें करने से होताहै ७१ ॥

चौ० ते नर धन्य पुण्यकी खानी। जो वैशाखमास महँ प्रानी॥
विधिसों प्रातनहाय महाना। पूजहिं नारायण भगवाना १। ७२
प्रातनहान दान मख माधव। व्रत हवि ब्रह्मचर्य्य गत बाधव॥
सकल पापनाशक न संदेहू। यह हम कहा भूपकरिनेहू २। ७३
पुनि कलियुग महँ यह महिपाला। परम गुप्त होइहि यह हाला॥
अश्वमेध से अधिक महातम। जासोंमाधव मासक सत्तम ३। ७४
अश्वमेध सम पुण्य न दूजा। कलियुग महँ है पाठ न पूजा॥
केवल यह वैशाख महातम। अश्वमेधसमहै न तनिककम ४। ७५
स्वर्ग्ग मोक्षप्रद पुण्य अपारा। अश्वमेधकर कलिमहँ सारा॥
परपापीअघबुद्धि कुमानव। नहींभोगहिंगे जिमिसब दानव ५। ७६

ताहि त्यागि पापी नरनरकी । कहैंजिमि सब कुमति कुतरकी ॥
यासोंकलिनहिं तासुप्रचारा । कोयकचिरललहैफलसारा ६ । ७७

इति श्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेवैशाखमाहात्म्येपंचाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

छियासीवां अध्याय ॥

दो० । छीयासी अध्यायमहँ देवशर्म्म सुमनाक ॥
हैं संवाद ऋणादि सम्बन्धि पुत्रपरिपाक १
न्यासहरैया अरु ऋणीके सुतहोत धनीहु ॥
बर्णन तिनको कीनहै जानहु स्वीय मनीहु २

सूतजी शौनकादिकोंसे बोले कि महात्मा नारदजीका ऐसावचन सुनकर राजर्षि अम्बरीषजी ने विस्मितहोकर यह नारदजी से पूछा कि १ अम्बरीषजी ने कहा कि हे महामुने ! पुण्य मार्ग्गशीर्षादिक मासों को छोड़कर सब मासों से अधिक बैशाखमासकी क्यों प्रशंसा करतेहो २ सब मासों से अधिक श्रीमाधवजीको यह माधवमास कैसेप्रिय हुआ इसमास का क्या बिधानहै व इसमें कौन दान किया जाताहै व क्यातप व किस देवताका पूजन होताहै ३ हे मुने ! तुम्हारे चरणारविन्द की धूलिसे पवित्र हमको उपदेश देनेसे प्रसाद करने के योग्य तुमहो ४ सब धर्म्ममार्ग्गों के धर्म्मज्ञहो व सबके समुद्धर्त्ता महामुनि तुम्हींहो व तुम्हीं एक सम्पूर्ण धर्म्मोंके व तत्त्वों के वेत्ता व उपदेश करने वालेहो ५ सब धर्म्म कार्य्योंका कर्त्ता उपदेश करने-वाला अनुमानकरनेवाला व मानने वाला प्रेरणाकरने वाला ये सब हे मुनिश्रेष्ठ ! शास्त्र जाननेवालोंकरके समभागी समझे जातेहैं ६ व्रत यज्ञ तप दानोंसे जो फल मिलताहै वह सब धर्म्म उपदेश करने से मिलता है ७ तीर्थ स्नान तप यज्ञ कर्म्म हे मुने ! जो कुछ किया जाता है व जो फल मिलता है वही सबलोगों को क्रिया करने की प्रेरणासे प्रेरकको भी मिलताहै ८ श्रेष्ठलोग जिस २ कर्म्म का आ-चरणकरते हैं उन्हींको देखकर इतर मनुष्य करते हैं व श्रेष्ठ जिस बातका प्रमाण करतेहैं लोगभी उसीका अनुकरण करतेहैं ९ इससे आप अद्भुत धर्म्म उपदेश करनेके योग्यहैं क्योंकि गुरु सम्बोध होने बिना देशकाल की उपपत्तियां दुर्लभ हैं १० राज्य लाभादिक कोई

भाव हमारे चित्तको नहीं शीतल करते जैसे कि तुम्हारा आगमन शीतल करताहै ११ सूतजी बोले कि ऐसा सुनकर मन्द २ मुसुकाकर देदीप्यमान दांतोंकी कांतिसे युक्त नारदमुनि ने अपनी भारती का प्रकाश किया व राजा अम्बरीषजी से कहा कि १२ हे राजन्! सुनो जगत्के हितकेलिये व तुम्हारे हितकेलिये बैशाखमास का विधान कहेंगे जो कि हमने प्रथम ब्रह्माजी के मुखसे सुनाहै १३ भरत खण्ड में जन्म दुर्ल्लभ है मनुष्यता उससेभी दुर्ल्लभ है मनुष्य होनेपरभी अपने २ कर्म्म में प्रवृत्त होना और भी दुर्ल्लभ है १४ उस से भी हे भूपाल ! वासुदेव में भक्ति अति दुर्ल्लभ है उसमें भी बैशाखमास श्रीहरिको अत्यन्त प्रिय होनेके कारण बहुतही दुर्ल्लभ है १५ उस बैशाखमास को पाकर जो लोग स्नान दानजपादि करते हैं सो भी बिधिपूर्ब्बक करते हैं वे मनुष्य धन्य और पुण्यात्मा हैं १६ उनलोगों के दर्शनमात्र से पापीलोगभी अपापी होजाते हैं व भगवान्के सद्भावसे भावितहोकर धर्म्म कांक्षी होजातेहैं १७ हे अम्बरीष! महत्फल मिलनेके लिये निरीक्षण करो बैशाखमास में जिन लोगोंने नियम सँय्युत होकर प्रातःकाल स्नान किया हो व कोटिन बर्षपर्य्यन्त नन्दनबन में क्रीड़ा करते हैं १८ जैसे समुद्र की तुल्य संसारमें कोई जलाशय नहीं है वैसेही बैशाख की बराबर दूसरा महीना भगवान् के प्यारा नहींहै १९ तबतक मनुष्योंकी देहमें पापरहते हैं जबतक पापनाशक वैशाख महीना नहीं आता २० तिस बैशाख के पीछे के एकादशी से लेकर पूर्णमासी पर्य्यन्त ५ दिन बाकीके सब मासके तुल्यहोतेहैं २१ हे राजेन्द्र! ये लोग नाना प्रकारकी सामग्रियोंसे बैशाखमासमें मधुदैत्यके मारनेवाले माधवजी की पूजाकरते हैं वहीलोग जन्मका फलपातेहैं २२ बैशाखमासमें भगवान्को स्नान करानेसे व पूजाकरने से क्या २ दुर्लभवस्तु नहीं मिलती २३ जिनलोगोंने सब पापके नाश करनेवाले नारायणका ध्यान नहीं किया उसने मानों कभी न दानकिया न हवनकिया न जपकिया न तीर्थ में देहछोड़ी २४ द्रव्यहोने परभी यो मनुष्य कृपणहोता है हे राजन्! उन मनुष्योंका जन्मलोक में निष्फल जानना चाहिये २५

क्योंकि जो बिना दानकिये मरता है उसकी द्रव्य व्यर्थ समझना चाहिये क्योंकि तीर्थ में स्नानकरने व तपकरनेसे अच्छे कुलमें जन्महोता है २६ इससे हे राजन्! बिना दानकिये कुछभी नहीं मिलता बैशाखके अन्तके पांचदिनकेभी स्नान करनेसे २७ सत्कुलमें जन्महोता है व तरह२का ऐश्वर्य्य होताहै व सुन्दरपुत्र सुन्दर कुल धन धान्य व हे राजन्! श्रेष्ठस्त्री मिलती है २८ सुन्दरजन्म व मरण व सुन्दर भोग व सुख दानमें सदा अधिकप्रीति व उदारता व उत्तम धीरज २९ हे राजन्! तौनजेदेव महात्मा नारायण हैं उन विष्णुके प्रसादसे उत्पन्न होतीहैं व वाञ्छित सिद्धियांभी मिलती हैं ३० इससे कार्त्तिक व माघ व बैशाख में जोकि माधवजीके प्रियहैं स्नानकरके भक्तिसे दामोदर माधव मधुसूदनजी को ३१ विशेषता से पूजन करके व यथाशक्ति दानदेकरके इसलोकका सुख भोगकरके मनुष्य हरिपदको चलाजाता है ३२ हे राजन्! ब्रह्माजी ने हमसे यहकहा है कि जैसे सूर्य्य के उदयहोतेही सब अन्धकार नाशहोताहै वैसेही माधवजी के स्नानकराने से अनेकों जन्मके इकट्ठाभये हुये पापोंकी पंक्तियां नाशहोजाती हैं ३३ विष्णुजी ने बैशाखमासका बड़ा प्रचारकिया है यमराजको गुप्तहै यह वचनसे विचारके मनुष्यलोकमें लाकर करदियाहै ३४ इससे इस बैशाखमासको आया जानके वैष्णवोंको चाहिये कि मनुष्यों के पवित्र करनेवाले गङ्गाजी के पुण्यकारी जलमें स्नानकरके ३५ हे महाराज! या सूर्य्योदय में नर्मदा व यमुना व शारदा में प्रातःकाल विधान से हे राजन्! ३६ देवेश मुकुन्द मधुसूदनजी को पूजनकरके पुत्र नाती धन व कल्याण व मनोवाञ्छित सुख ३७ व तपका फलपाके अक्षय स्वर्गको जाता है नारदजी ने कहा कि हे राजा अम्बरीषजी! यह जानकरके आप भी मधुसूदनजीकी पूजाकरो ३८ अच्छीतरह विधानसे बैशाखमास में विशेषता से स्नानकरके व अनामय गोविन्दनारायणजी को पूजन करके ३९ सुख व पुत्र व धन व हरिपदको पाओगे इससे देव देव पापनाशन माधवजी को नमस्कार करके ४० यम नियम में युक्त होकर व यथाशक्ति कुछ दानकरके चैत्रकी पूर्णमासी को इसव्रतका

प्रारम्भकरे ४१ इसव्रत में हविष्यान्न भोजनकरे व भूमिपर शयन करे व ब्रह्मचर्य्ययुक्त होकर व्रत में स्थितहोवे व तपस्या के क्लेश से दुर्बल शरीर हृदय में नारायणका ध्यान करताहुआ ४२ इसतरह करतेहुये जब वैशाखी पूर्णमासी आवे तब मधु व तिलादिकों का दानदेकर व श्रेष्ठ ब्राह्मणों को भोजन व भक्तिसे दक्षिणासहित गोदानदेकर ४३ फिर स्नानमें जो कुछ न्यूनताहुईहो उसको ब्राह्मणों से प्रार्थनाकरें हे राजन् ! जैसे माधवजी के लक्ष्मीजी प्यारी हैं ४४ उसीतरह वैशाखमास मधुसूदनजी के वल्लभ है इसीविधि से १२ वर्ष स्नानकरके ४५ मधुसूदन की तृप्तिकेलिये उद्यापनकरें यह वैशाख मास की माहात्म्य हमने तुमसे कही ४६ हे राजन् ! जैसे पहले ब्रह्माजी के मुखसे सुनाथा ४७ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवैशाखमाहात्म्ये
षडसीतितमोऽध्यायः ८६ ॥

सत्तासीवां अध्याय ॥

सूतजी ने कहा कि भो ऋषयः ! ऐसे नारदजी के वचनसुनके राजा अम्बरीषजी विस्मयको प्राप्त नमस्कार के मनसे भगवान् की चिन्तना करतेहुये १ राजा अम्बरीषजी बोले कि हे मुने ! कैसे मोहरूपी आत्मासे थोड़ीमेहनत करके खाली स्नानमात्र से अति दुर्लभ फलको पातेहैं २ यहसुनकर नारदजीने कहा कि हे राजन् ! तुमने सत्यकहा जो कि थोड़ेपरिश्रम से बड़ेफलको पातेहैं यह विधिसे कहते हैं सो सुनो ३ धर्म्मकीगति सूक्ष्महै जिनको ईश्वर भी नहीं जानसक्के हरिकी कृत्य व शक्ति अचिन्त्य हैं जिसमें विद्वान् लोग भी मोहको प्राप्तहोते हैं ४ हे राजन् ! देखो विश्वामित्र इत्यादिक क्षत्री हैं सो धर्महीकी अधिकता से ब्राह्मण्यता को प्राप्तहुये हैं इसीसे धर्मकीगति सूक्ष्म है ५ हे राजन् ! यह सुनागया है कि अजामिल दासीपति भयाहै उसने अपनी धर्मपत्नी को छोड़दिया था व हमेशह पापमार्ग में स्थित रहताथा ६ परन्तु मरने के समय में पुत्रके स्नेहसे अपने नारायणनाम पुत्रको हे नारायण ! ऐसा कहके बुलाया इसीसे वह अतिदुर्लभ भगवान् के पदको पहुंचगया ७

जैसे धोखेमें छूजाने से अग्नि जलाही देताहै ऐसेही चाहे जैसे गोविन्दका नाम लियाजावे शीघ्रपापको नाशही करदेता है ८ भाई की स्त्रीको भोगकरनेवाले कानीनमुनिके पौत्र गोलक पण्डुके पुत्र कुण्डादिक अपने आप ९ हे राजन्! पांचो पाण्डवा द्रौपदी में रतरहे हैं देखो उनकी कैसी पुण्यकीर्त्ति हुई है इससे धर्म्मकी गति सूक्ष्महै १० कर्मविचित्र हैं व भूतभावना भी विचित्रहैं व प्राणी भी विचित्रहैं व कर्मशक्तियां भी विचित्रहैं ११ कभी सुकृतके वास्ते जो कर्म कियाजाता है वह दुष्कृतकेलिये होजाताहै व हे राजन्! किसी कर्म से शुभकेलिये बढ़ता है १२ व किसीजन्म में बड़े फलकोदेता है जैसे कि सूक्ष्म भी धर्म्म अतिगहन नहीं अनुमान कियाजाता वैसेही १३ हे राजन्! यह ऐसे फलकोदेगा यहनहीं निश्चयहोता इससे जो कुछ सुकृतकर्म पापों से मूंदाभी होताहै १४ वह कभी किसी स्थानमें आकर अपने फलको देताहै इससे पुण्यकरो व पाप करो उसका नाशनहींहोता जैसा कियाजाताहै वैसा भोगनापड़ता है हे राजन्! जो आपने कहा कि परिश्रम से आधिक्यता होती है क्योंकि बहुत पुण्यसे पाप नष्टहोजाता है १६ इससे बड़ी पुण्यका कारण हमसे सुनो जोकि थोड़ेमें थोड़ी मिहनत व बड़ेमें बहुत परिश्रम पड़ता है १७ इससे जानाजाता है कास्तकारलोग हमेशह बड़ी पुण्य करनेवाले होतेहैं व सिंहादिकोंके मन्त्रोच्चार में परिश्रम ज्यादह है इससे १८ हमको व्रताङ्गत्व से पंचगव्य प्रशस्त जान पड़ती इसी कर्त्तव्यता की बाहुल्य से महत्त्वता व अल्पता जानो १९ इससे यह थोड़ाहै वा यह बहुत है यह नियम नहीं है क्योंकि व्रत्तान्त से जल व अग्निके प्रवेशसे प्रशक्त होताहै २० राजन् इससे जो फल शास्त्रमें कहाहै वही बड़ाहै जैसे बड़ोंका छोटों से नाशहोताहै व कहीं छोटोंका बड़ोंसे नाशहोताहै २१ जैसे कि थोड़ीसी अग्निकी चिनगारी से तृणका बड़ाभारी ढेर भस्म होजाता है २२ जैसे कि दशहज़ार हत्या और हज़ारों तरहके बड़े २ पापहो गुरु की स्त्रीके सेवन करनेवाले इत्यादि इसीतरह के कोटिन पापहों व चोरीकरने के भी पाप व बिनाजाने जितने पापहैं उन सबको श्री

कृष्णचन्द्रजी के भक्त नाशकरदेते हैं २३ इससे हे राजन्! विद्वान्
साधु विष्णुका भक्त जो थोड़ाभी सुकृत करताहै वह कभी नहीं ना-
शहोता २४ इससे सन्देह न करना चाहिये जोकि बैशाखमास में
मनुष्य भक्तिसे श्रीमाधवजी का सेवनकरके मनोवाञ्छित फलपाता
है २५ पुत्र धन व रत्न व स्त्री व महल व घोड़े हाथी नानाप्रकार के
सुख बैकुण्ठ व मोक्ष ये कोई पदार्थ भगवान् की भक्ति करनेवालेको
दूरनहीं हैं सब पदार्थ हरिभक्त पाताहै २६ इसमें सन्देह नहीं है
कि शास्त्रकी विधि से थोड़ेभी परिश्रम से बहुत बड़े २ पाप नाश
होजाते हैं व सुकर्म वृद्धिको प्राप्तहोते हैं २७ इससे हे राजन्! जो
अच्छेभाव व सुकृत से मनुष्य करता है उसमें फल अधिक होताहै
क्योंकि धर्मकीगति सूक्ष्म है इसको ज्ञानीही लोग जानसक्ते हैं २८
महात्मा माधवजी के बैशाखमास अतिप्रिय है जो एक भी मासका
अनुष्ठान जो मनुष्य करते हैं उनको सम्पूर्ण फल देताहै २९ नारदजी
ने कहा कि हम तो यही जानते हैं कि चाहै सुन्दरीपर्वों में व अच्छा
तीर्थादि स्नानमें व पुण्यकारी गङ्गाजी के जलमें स्नान करतारहाहो
व जन्मपर्यन्त दान करतारहाहो परन्तु भावसे रहितहो तो वह शुद्धि
को नहीं पाता ३० क्योंकि गङ्गा इत्यादि तीर्थोंमें बहुतसे जीवरहते
हैं व मन्दिरों में नित्य बहुत से पक्षियों के झुण्ड के झुण्ड बसते हैं
निकट रहनेपर भी नाशहीको प्राप्तहोते हैं क्योंकि उनमें कोई भा-
वतो ईश्वरमें है नहीं इससे उत्तमगतिको नहींपाते ३१ इससे अपने
हृदयमें भावकरके बैशाखमहीनामें भक्तिसे जो श्रीमाधवजीका पूजन
करताहै व शुद्धहोकर स्नान नित्यकरता है उसकी पुण्य कहवे को
हमको शक्ति नहीं है ३२ जिसके भाव नहीं है वह न अच्छाफल
पाताहै न स्वर्गको जाताहै चाहै घी तेल अग्नि में छोड़कर उसको
जलाकर व उस अग्निमें बैठकर भी भस्म होगयाहो परन्तु बिना-
भाव उत्तमगति नहीं पाता ३३ इससे हे राजन्! तुम बैशाखमास
के फलके वास्ते श्रद्धाकरो क्योंकि थोड़ाभी शुभकर्म सैकड़ों विकर्मों
को नाशकरता है ३४ जैसे कि हे राजन्! भगवान् के नामके डरसे
सम्पूर्ण पापों के समूह नाश होजाते हैं वैसेही बैशाखमास में मेष-

राशि के सूर्य्यों में तीर्थ में प्रातःकाल स्नानकरने से व हरिकीस्तुति करने से सबपाप नाशहोजाते हैं ३५ जैसे गरुड़के डरसे सर्प भागते हैं बैशाख में प्रातःकाल स्नानकरनेसे निश्चयसे सबपाप भागजाते हैं ३६ इससे गङ्गाजी में व नर्मदाजी में मेषके सूर्य्यों में स्नानकरके जो मनुष्य भक्तिभावसे पापनाशक भगवान्‌का स्तोत्रपढ़ी ३७ चाहें एक समय व दोबार व तीनों सन्ध्याओं में हे राजन्! वह सबपापोंसे छूटकर परमपदको चलाजाताहै ३८ इससे हे अम्बरीष! महापुण्य प्राप्तिकेवास्ते बैशाखमासमें प्रातःकाल नियमयुक्तहोकर करो व देखो ३९ जो फल आनन्दपुरमें बसनेवालों को कोटिवर्षमें मिलताहै वह बैशाखमास में प्रातःकालके एकमासके स्नानमात्रसे मिलताहै ४० इस अर्थ में जो पूर्व्वकालका वृत्तान्तहै राजन् उसकोसुनो जिसमें कि भार्य्याके साथ देवशर्म्मा नाम ब्राह्मणका सम्बाद है ४१ नर्म्मदानदी के तीरपर सुपुण्यदायक अमरकण्टक तीर्थ में कौशिक के पुत्र एक देवशर्म्मा नाम द्विजोत्तम हुआ ४२ वहधन पुत्र बिहीन बहुत दुःखोंसे युक्त दारिद्र्यके दुःखसे सदा प्रपीड़ित रहाकरता था ४३ पुत्र व धनहोने का उपाय दिनरात्रि शोचाकरता था एकसमय सुमनानाम उसकी भार्याने ४४ चिन्ताकरते हुये नीचेको मुखकिये अपने पतिको देखा व उसकान्तको अच्छेप्रकार देखकर वह यशस्विनी उससे बोली कि ४५ असंख्य दुःखजालों से तुम्हारा चित्त प्रधर्षित होरहा है व व्यामोहसे प्रमूढ़होरहे हो इससे हे महामुनि जी! चिंताको छोड़देवो ४६ हमसे दुःखका कारणबताओ स्वस्थ व सुखीहोओ शरीर सुखानेके लिये चिंताके समान और कोई दुःख नहींहै ४७ जो चिंताको छोड़कर कर्म्ममें प्रवृत्त होताहै वह सुखसे हर्षित होताहै हे विप्र! चिंता का कारण हमारे आगे कहो ४८ नारदमुनि अम्बरीषसे बोलेकि अपनी प्रियाका बचन सुनकर महामति वह देवशर्म्मा दुःखित भी था पर अपनी पतिव्रता से प्रसन्न होकर यह बचन बोला कि ४९ हे भद्रे! जो तुमने विचारा कि चिन्ता दुःखका कारण है वह सब तुमसे कहतेहैं सुनकर उसको बिचारो ५० हे सुव्रते! नहींजानते किस पापसे हम धनहीनहैं व ऐसेही पुत्र

हीन भी हैं बस यही दुःख का कारणहै ५१ यह सुनकर सुमना बोली कि सुनो हम उपदेश का स्वरूप सब विज्ञानों का कारण व सब सन्देहों का नाशक कहती हैं ५२ सन्तोष परमपुण्य व सुखका कारणहै व असन्तोष के समान अन्य पाप भी नहीं है यह भगवान् श्रीहरि ने कहा है ५३ व लोभ पापका बीज है व मोह पापका मूल है व असत्य उसके स्कन्ध हैं व उस वृक्षकी बड़ी बड़ी विस्तारयुक्त शाखाहैं ५४ मद व कुटिलता पत्र हैं व कुबुद्धिसे वह वृक्ष सदा पुष्पित रहताहै अनृत उसकी सुगन्धिहै अज्ञान फलहै ५५ छल पाखण्ड चौर कूट क्रूर व पापी ये सब उस मोह वृक्षके पक्षीहैं ये सब मोहवृक्षकी साखामें रहते हैं ५६ अज्ञान उसका फलहै व अधर्म्म उस फलकारसहै भाव जलसे वहबढ़ाहै व श्रद्धा उसका प्रियऋतुहै ५७ अधर्म्मरूप जो उसका रसहै उसमें उकिलाई आतीहै वही मधुरतासी जानपड़ती है ऐसे फलोंसे यह लोभ वृक्ष फलित होरहा है ५८ सो उसवृक्षकी छायामें बैठकर जो नर परिवर्त्तन करता है व उसके दिन २ पकेहुये फलोंको वही खाताहै ५९ वह फलों के अधर्म्म रससे पालाहुआ पुष्टहोता है व जब अच्छेप्रकार मनुष्य पुष्टहोजाता है तब गिरने पर उद्यतहोता है ६० हेस्वामिन्! इससे चिन्तामें आश्रितहोकर अब लोभ न करो धन पुत्र स्त्री इन एककी भी चिन्ता न करो ६१ हे कान्त! जो विद्वान्होता है वह मूर्खोंके भक्ष्यको नहीं रात्रिदिन मोहितहोकर मिथ्या चिंताकरता ६२ जो यह चिन्ताकिया करताहै कि कब सुन्दर धन पावेंगे व कब सुपुत्र धनपावेंगे दिन रात्रि ऐसेही विमोहितहोकर चिन्ताकियाकरता है ६३ वह क्षणमात्र चिन्ताकेबीच में महा सुखदेखता है जब चैतन्यहोजाताहै तो फिर महादुःखसे पीड़ितहो जाता है ६४ इससे हे द्विज! चिन्ता व मोह दोनोंको छोड़ो व उस ईश्वरका अनुवर्त्तनकरो हे महामते इससंसारमें किसीके साथ किसी का सम्बन्ध नहींहै ६५ मित्रबान्धव पुत्र पितामाता कन्या व स्त्रियां ये सब अपने २ सम्बन्ध से होतेजातेरहते हैं ६६ देवशर्म्माने पूछा कि हे भद्रे! सम्बन्ध कैसाहोता है सो हमसे विस्तार से कहो जिससे कि धन पुत्र बान्धवादि सब उत्पन्नहोते हैं ६७ सुमनाबोली कि हे

स्वामीजी ! पुत्र पांचप्रकारसे उत्पन्नहोते ह उनका तुमसे कहती हैं
एकन्यासापहारक दूसरा ऋणसम्बन्धी ६८ तीसरा शत्रुपुत्र चौथा
लभ्य पांचवां उदासीन बस इन्हीं पांच सम्बन्धों से पुत्रहोते हैं हे
ईश ! इनके लक्षण अलग २ कहती हैं ६९ पुत्र मित्र प्यारी भार्य्या
पिता माता व बान्धव पृथ्वीपर अपने २ सम्बन्धसे उत्पन्न होते हैं
७० जो किसीकी धरोहर कोई हरलेताहै तो उस न्यास अर्थात् ध-
रोहर धरने का स्वामी रूपवान् गुणवान् पुत्र होकर पृथ्वीपर होता
है ७१ जिसने उसका न्यास हरलियाहै उसीके गृहमें होताहै इस
में कुछ संशय नहीं है धरोहर हरलेनेवालेको महादारुण दुःखदेकर
चलाजाता है ७२ धरोहर धरनेवाला धरोहर हरनेवाले का सुन्दर
गुणवान् रूपवान् सब लक्षणसम्पन्न पुत्र होकर ७३ वह प्रतिदिन
पुत्रभक्ति दिखाता रहताहै प्रियवचन बोलता मधुर सम्भाषण करता
व बहुत स्नेह दिखाताहै ७४ ऐसेही अपना सब धन लेकर व
अतुल प्रीतिको उत्पन्न कराके चलाजाताहै जैसे उसने उसकी धरो-
हर हरके उसे दुःख दियाथा कि जिससे उसको प्राणनाशक महा-
दारुण दुःख हुआथा सो वैसेही दुःख उसको पुत्रहोकर अपने महा-
गुणोंसे देकर ७५ । ७६ अल्पायुहोकर मरजाताहै इससे पिताको
भी मरण समान दुःखदेजाता है ऐसा दुःखदेकर बारबार जबतक
अपना सब धन नहीं लेलेता आता जाता रहताहै ७७ तब पुत्र २
करके वह बड़ारोदन करताहै तब वह पुत्र हँसता है कि कौन किसका
पुत्र है ७८ इसपापीने हमारी धरोहर हरली है इससे अब हमने
भी इसका धन प्राण हरलिया द्रव्यके हरनेहीसे मन प्राण धन सब
इसके गये व ऐसेही बड़े दुःखसे हमारे भी प्राण पूर्व्वकालमें गये थे
ऐसेही हमभी इसे वैसाही दुःखदेकर व अपना सब धनलेकर
जाते हैं ७९ । ८० ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवैशाखमाहात्म्येभाषानुवादेसप्ताशीति
तमोऽध्यायः ८७ ॥

अट्ठासीवां अध्याय ॥

दो० । अट्ठासीमहँ कहसकल तनय पांचविधनीक ॥
उनकी कथा बनायबहु बर्णौ दैकै ठीक १

सुमना बोली कि अब हम तुम्हारे आगे ऋणसम्बन्धी पुत्र कहतीहैं जो कोई किसीका ऋणलेकर बिनादिये हुये मृतकहोजाताहै १ तो धनी उसका पुत्रहोकर वा भ्राता वा पिता वा प्रिय वा मित्र रूपसे प्राप्तहोताहै पर अन्तःकरणमें सदा उसके दुःखही बनारहता है २ वह पिताके गुणको नहीं देखता सदा क्रूर स्वभाव रहताहै व निष्ठुर आकृति किये रहता है वचन भी सदा निष्ठुरही बोलता है सो पिताही से नहीं सब अपने जनोंसे निष्ठुरही बोलताहै ३ मीठी मीठी वस्तु खाता है व नानाप्रकार के भोग भोगता है व जुआ नित्य खेलता है चोरी करनेमें प्रसन्नरहताहै ४ गृहकेधनको चुराता है रोंकनेपर कोपकरता है पिता माताकी प्रतिदिन निन्दा कियाकरता है ५ छलतारहता भयभीतकरता बहुत निष्ठुर वचनकहता इस प्रकार अपने द्रव्यको लेकर गृहमें सुखसेरहता है ६ जातकर्म्मादिकों में कोई ऐसा दारुण योग लगादेताहै कि बहुतसा धन लगजाता है फिर बिवाहादि संयोगों के भेदसे बहुतसाधन खर्चकरादेताहै ७ इसप्रकार सब द्रव्य नाशकरता रहता है व ऐसा कहता रहता है कि घर खेतआदि जो कुछहै सबहमाराहै इसमें संशय नहीं है ८ व पिता माताको इसप्रकार प्रतिदिन दारुणदण्ड देता मूसर लोहदण्डादिकों से व शिरके बार उखाड़ने से ताड़ित करता रहता है ९ व जब पिता मरजाता है तो मातासे निष्ठुरता करनेलगता है निस्स्नेहहोजाता है व निष्ठुर बनजाताहै इसमेंभी कुछ सन्देह नहीं है १० श्राद्ध कर्म्म व दानादि पिताके नामसे वह कभी नहीं करता इसप्रकारके प्रियपुत्रपृथ्वीपर होतेहैं ११ हे द्विजसत्तम! अब तुम्हारेआगे शत्रुपुत्र के लक्षण कहेंगी वह बाल्यावस्थाही में सदाशत्रुता करताहै १२ खेलते २ पिता माताको जिसी किसी पदार्थ से पाताहै ताड़ित करताहै ताड़ित करके बार बार हँसताहुआ एकान्त में चलाजाताहै १३ व फिर वहां आकर पिता माताको क्रुद्धहोकर

नित्य निन्दित करताहै १४ इस रीतिसे सदा वैरिकर्म्ममें लगारहता है पिताको मारकर फिर माताको मारता है १५ वह दुष्टात्मा सब कार्य्य पूर्व्वके वैरानुसारही करताहै अब उसपुत्रको कहूंगी जिससे लभ्य होताहै १६ यहपुत्र उत्पन्न होते २ नानाप्रकारके खेलों से माता पिताका प्रिय करताहै फिर जब अवस्था अधिकहोती है तो भी माता पिताका प्रियही करता रहताहै १७ भक्तिसे आप सन्तुष्ट रहताहै व अपनी माता पिताको भी सन्तुष्ट रखता है स्नेह वचन बोलने से प्रियसम्भाषण करनेसे प्रसन्नरखता है १८ जब माता वा पिता मरजाते हैं तो उनकेलिये स्नेहसे बहुत रोदन करता है व श्राद्धकर्म्म पिण्डदानादि क्रिया करता है १९ व बहुत दुःखीहोजाताहै उनकेलिये अन्नादि बड़े प्रेमसे देता है ऐसापुत्र पिताको तीनोंऋणोंसे छुड़ाता है २० हे कान्त ! जो कुछ कहींसे पाताहै पिता माताके अर्थ देताहै इसमें संशय नहींहै पुत्रहोकर लभ्यपुत्र इस प्रकार आनन्द देताहै २१ हे प्रिय ! अब इससमय तुम्हारे आगे उदासीन पुत्रके लक्षण कहती हैं वह पुत्र सदा उदासीन भाव से रहताहै २२ न कुछ देताहै न लेताहै न क्रोध करता है न कभी सन्तुष्ट होताहै व न कहीं उदासीन पुत्र पिता माताको छोड़कर जाताहीहै २३ व सेवक घोड़े हाथी बैल गाय भैंस दास दासी आदि ऋणसम्बन्धी होतेहैं अपने २ सम्बन्धके अनुसार फल दिखातेहैं २४ हम दोनोंने पूर्व्वजन्म में किसीका कुछ ले नहीं लिया व न किसीकी धरोहर भी मारली है २५ व न हमाराही कोई कुछ धरता है न हम किसी का कुछ चाहती हैं व पूर्व्वजन्म का किया हुआ वैर भी किसी के साथ हम लोगों का नहीं है २६ व हे विप्रेन्द्र ! हमने उस जन्ममें पतिका त्यागभी नहीं किया ऐसा जानकर समताको प्राप्तहोओ और अनर्थ करनेवाली चिंताको छोड़ो २७ व तुमनेभी न किसीका कुछ हरलियाहै न पूर्व्वजन्ममें किसीको कुछ दियाहीहै फिर तुम्हारे धन कैसे आवे विस्मय न करो २८ व बड़ेभारी प्रयत्न से पृथ्वीपर धनकी रक्षा मनुष्य करतेहैं परन्तु जो जानेपर होता है वह चलाही जाता है यह जानकर सुखसे रहो व अनर्थकी चिन्ता

छोड़ो २९ किसकेपुत्र व किसकी प्रियभार्य्या किसके स्वजन बांधव किसीका कोई इससंसार में सम्बन्धी नहीं है हे द्विजोत्तम ! ३० ॥

चौ० । मायामोह मूढ़सबमानव । पाप चेतभाषत जिमि दानव ॥
यहगृहममयहपुत्रहमारा । यहभार्य्यांममइमिसंसारा ११३१
यहसंसार बन्धसुतस्वामी । अन्तलखात नकबहुँमुदामी ॥
सबभावनाअनृतयहअहई । कृष्णअराधनसत्यसुकहई२।३२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवैशाखमाहात्म्येभाषानुवादेऽष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

नवासीवां अध्याय ॥

दो० । नव्वासी अध्यायमहँ देवशर्म्म जनि पूर्व ॥
कथाकहीसबशूद्रभव मुनिवसिष्ठद्विजधूर्व १

नारदजी बोले कि द्विजोत्तम देवशर्म्मा विप्रसे जब उसकी भार्या ने ऐसाकहा तो फिर वह अपनी ज्ञानबर्त्तिनी भार्य्यासे बोला कि १ हे भद्रे ! तुमने सत्यकहा इससे सबसन्देहों का नाशहुआ परन्तु तो भी साधु पण्डितलोग सदा बंशकी इच्छाकरतेहैं २ हे प्रिये ! हमको जैसी पुत्रकी चिंताहै वैसी धनकी नहींहै इससे जिसीकिसीप्रकारसे हम पुत्र उत्पन्नकरेंगे ३ सुमनाबोली कि हां पुत्रसे लोकों को लोग जीततेहैं व पुत्र कुलको तारताहै व हे महाभाग ! सत्पुत्रसे मातापिता जीतेहैं ४ हे कांत ! एकगुणीपुत्र श्रेष्ठ निर्गुणी सहस्रोंसे क्याहै एक बंशको तारताहै अन्य सन्तापकारीहोते हैं ५ यह जानो पहिलेही कहचुकी हैं कि अन्य सबपुत्र सम्बन्धभागी होते हैं बस पुण्य से पुत्र मिलताहै पुण्यहीसे कुल मिलता है ६ व पुण्योंसेही सुन्दर गर्भ मिलता है व पापों से मृत्यु होती है ७ हे कान्त ! सुख समूह मिलने का उपाय सत्य २ हम कहतीहैं ब्रह्मचर्य्य रहने से सत्य बोलनेसे तपकरने से नित्य सुमार्ग्ग चलने से दानकरने से नियमों से क्षमाकरने व शौचसे रहनेसे ८ अहिंसा करनेसे व अपनी शक्ति के अनुसार चोरी न करनेसे बस इनदश अंगोंसे धर्म उत्पन्न होताहै ९ जैसे सब अंगोंसे गर्भ संपूर्ण पेटमें होताहै वैसेही सबदश अंगों से धर्म्म सम्पूर्ण होता है तीन प्रकारके कर्म्मोंसे धर्म्मात्मा धर्म्म को

उत्पन्नकरताहै १० व धर्म्म प्रसन्न होकर उसको पुण्य व सुख देता है धर्म्म करनेवाला पण्डित जिस २ बातकी इच्छाकरताहै उसी २ को पाताहै ११ देवशर्म्मा बोला कि हे देवि! तुमने सब उत्तमधर्म्माख्यान कहा अब बताओ गुणसम्पन्न वैष्णवपुत्र कैसे हम पावें १२ हे सुव्रते ! हे महाभागे ! जो जानतीहोओ तो हमसे कहो हे भद्रे ! तुमने सब धर्ममार्ग पूर्व्वकालमें अपने पितासे पायाहै १३ हेकांते! हमको यह विदितहै कि आप वेदवादिनी हैं क्योंकि च्यवन जीके प्रसादसे तुम्हारे ऊपर श्रीविष्णु प्रसन्न हुयेथे १४ सुमनाबोली कि अब धर्म्मज्ञ वसिष्ठजी के पासजाओ व उन महामुनि से प्रार्त्थना करो उनके कहने से धर्म्मज्ञ धर्मवत्सल पुत्र तुमपाओगे १५ ऐसा बचन कहने पर द्विजोत्तम देवशर्म्मा ने कहा हे कल्याणि! तुम्हारा यह मतहमकरेंगे इसमें कुछ संशयनहीं है १६ ऐसा कहकर द्विजों में उत्तम देवशर्म्मा सब जाननेवाले दीप्यमान तपस्वियोंमें श्रेष्ठ बसिष्ठजीके समीपगये १७ जो कि गंगाजी के तीरपर स्थित पुण्य आसनपर विराजमान मुनियोंके ईश्वरथे व तेजकी ज्वालासे समाकीर्णहोनेके कारण दूसरे सूर्यहीके समान प्रकाशितथे १८ व द्विजों में उत्तम ब्रह्मवादियोंमें श्रेष्ठ महात्मा शोभायमान होरहेथे सो ऐसे मुनिके देवशर्म्माने भक्तिसे बारबार दण्डाकार नमस्कार किया १९ व उन ब्रह्मपुत्र पापरहित से महातेजस्वी बसिष्ठ जी बोले कि हे महामते! सुखसे इसपवित्र आसनपर हमारे समीप बैठो २० नारद जी अम्बरीष महाराजसे बोले कि बैठेहुये देवशर्म्मा तपोधनसे फिर बसिष्ठजी बोले कि हे वत्स! तुम्हारेगृहमें पुत्रोंमें स्त्री व सेवकोंमें सदा २१ क्षेम है व तुम्हारे सब पुण्यकर्मों में व अग्नियों में कुशल है व सब अंगोंसे निरामयहोकर अपने धर्म्मका पालनतो करतेहो न २२ इसप्रकार पूँछकर महाप्राज्ञ बसिष्ठजी ने फिर कहा कि हे द्विजोत्तम बताओ तुम्हारा क्या प्रिय कियाजाय २३ नारदजी बोले कि ऐसा ब्राह्मण से शुभ वचन कहकर बसिष्ठजी विश्रामकररहे तब वह महाभाग ब्राह्मण मुनियों में श्रेष्ठ व तपस्वियों में उत्तम महात्मा बसिष्ठजी से बोला कि हे भगवन् बसिष्ठजी ! सुप्रसन्न चित्तसे

हमारा वृत्तांत सुनो प्रश्नके सन्देहको खण्डन करो हे द्विजोत्तम! २४ । २५ हमने कौनसापाप किया है जिससे दरिद्रता सदा बनी रहतीहै व पुत्रका सुखभी नहीं है सो हे तात! हमारे इस संशयको मिटाओ किस पापसे ऐसाहुआ २६ हे द्विज! हमतो महामोह से सम्मूढ़ होगये थे पर अपनी स्त्री से सम्बोधित हुये व हे तात! उसी के भेजे हुये हम यहां तुम्हारे समीप आये हैं २७ अबसब सन्देहों का नाशक सब हमसे कहो इस संसार बन्धन से मुक्तिदेनेवाले होओ २८ वसिष्ठजी बोले कि पुत्र मित्र भ्राता व सर्वस्वजन बांधव पुरुष के ये सब पांचप्रकार के सम्बन्ध से होते हैं २९ सो वे पांचप्रकार के सम्बन्धी सुमनाने तुम्हारे आगे प्रथमही कहेहैं हे द्विजोत्तम! जितने ऋण सम्बन्धी हैं सब कुपुत्रहैं ३० अब पुत्रका पुण्यलक्षण तुम्हारे आगे हम कहते हैं जिसका आत्मा पुण्य में लीन रहता है धर्म्म में व सत्यमें रतहोकर सदा रहता है ३१ उसके बुद्धिमान् ज्ञानसम्पन्न तपस्वी बाणी जाननेवालों में श्रेष्ठ सब शुभकर्म्मों से आच्छादित वेदपढ़ने में तत्पर ३२ सब शास्त्र जाननेवाला देवता ब्राह्मणोंका पूजक सब यज्ञोंका करनेवाला दाता त्यागी प्रियवादी ३३ नित्य विष्णु के ध्यान में तत्पर शान्तचित्त इन्द्रियों को दमनकियेहुये सुहृद् पिता माता में पर व अपने सब लोगों के ऊपर वत्सल ३४ कुलकातारक विद्वान् अपने कुलकापोषक ऐसे गुणोंसेयुक्त सुपुत्रको पाता है जो सब सुखदायक होताहै ३५ अन्य सम्बन्धी पुत्र शोकसन्ताप के देनेवाले होते हैं व उदासीन पुत्रसे भी कुछकार्य्य नहींहोता क्योंकि वह फलहीन होताहै ३६ ये सब सम्बन्धीपुत्र दारुण ताप देकर बार २ आया जाया करते हैं हे द्विजसत्तम! ये सब इस संसारमें पुत्ररूपसे आकर दुःखहीदेते हैं ३७ पूर्व्वजन्म में जिस कर्म्मको करके उसका प्रतिपालन तुमने कियाहै वह सब तुमसे कहेंगे हे द्विजसत्तम! वह अद्भुत सुनो ३८ वसिष्ठजी बोले कि आप पूर्व्वजन्ममें शूद्रथे हे महाप्राज्ञ! अन्य कोई न थे कृषी करतेथे ज्ञानहीनथे व महालोभसे संयुक्तथे ३९ एकही तुम्हारे स्त्रीथी पुत्र बहुतथे सदा सबअप्रीति रखतेथे किसीको कुछ

देतेनहींथे धर्म्मको जानतेही न थे सत्यबोलनेमें निष्ठाही नहींरखते ४० तुमने कभी दान नहींदिया शास्त्र कभी तुमने सुनाही नहीं कोई तीर्थ तुमने नहीं किया हे महामते ! न किसी तीर्थकी यात्राकिया ४१ इसप्रकार तुमने बार २ खेतीका कर्म्मकिया पशुओंका पालन भीबहुत किया ४२ पशुओं में भैंस घोड़ोंकापालन बार २ तुमने किया हे द्विजसत्तम! ऐसाकर्म्म तुमने पूर्व्वजन्ममें अपने आपकिया ४३ व लोभसे बहुतसाधन तुमने इकट्ठाकिया उसका खर्च पुण्य में तुमने कभी नहींकिया ४४ किसी सुपात्र को दान कभी नहीं दिया अथवा किसी दुर्व्बलको दान नहीं दिया व खेती करतेही थे परन्तु आपने धन किसीको कुछभी नहीं दिया ४५ व गो महिषी आदि पशुओंका संचय बहुतथा उनसबों को बेंचकर तुमने बहुतसा धन इकट्ठा कियाथा ४६ मट्ठा घृत दुग्ध व दधि सदा बेंचाकरते थे व विष्णुकी मायासे मोहितहोकर तुम सदा दुर्भिक्षपड़ने की चिन्ता कियाकरतेथे ४७ हे ब्राह्मणसत्तम ! इसप्रकार बहुतसा धन इकट्ठा किया पर उसमें से दान कुछभी न दिया मुख्यकर ब्राह्मण को तो कुछभी नहींदिया ऐसे निर्द्दयीथे कि तुमने किंचिन्मात्र भी दान कभी नहींदिया ४८ हे विप्र! आपने देवताओं का पूजन कभी नहींकिया पर्व्वोंको पाकर भी ब्राह्मणोंको द्रव्य कभी नहीं दिया ४९ श्राद्धकाल आजानेपर श्रद्धासे कभी श्राद्ध नहीं किया तुम्हारी पतिव्रता भार्य्या कहतीथी कि आज श्राद्धका दिनहै ५० हे महामते! आज श्वशुरका श्राद्धहै आज श्वश्रूकाहै तुम इसको सुनकर गृहसे भाग जातेथे ५१ धर्ममार्ग तुमने न कभी देखा न कभी सुना बस लोभही माता लोभही पिता लोभही भ्राता व स्वजन बान्धव लोभही को समझते थे ५२ धर्म्मको छोड़कर एक लोभहीका पालन तुमने कियाथा इससे आप सदा दुःखी रहते हैं व दरिद्रता से पीड़ित रहतेहैं ५३ तुमको उस शूद्रयोनि में प्रतिदिन महातृष्णा बढ़तीजातीथी जैसे २ जब२ तुम्हारे गृहमें धन आताजाताथा व बढ़ताथा ५४ तब २ तृष्णा से जलतेहुये तुम सदा लोभही की चिन्ता करतेथे रात्रिमें जब सोजाते थे तबभी लोभही की अधिक चिन्ता करते थे ५५ व दिनकोपाकर

सदैव महामोहों से व्याप्तहोतेथे यही शोचतेथे कि कब सहस्रलक्ष कोटि व अर्ब्बुदतक धन हमारेहोगा ५६ व कब खर्व्वतक होगा व निखर्व कब हमारेगृहमें होगा इसप्रकार सहस्रलक्ष कोटिअर्ब्बुद ५७ खर्व निखर्वतक भी धनहुआ परन्तु तुम्हारी तृष्णा न गई यहांतक कि काल बीतते २ तुम वृद्धहुये ५८ परन्तु हे विप्र! तुमने नतो कभी दिया न हवनकिया न आप खाया न किसीको खिलाया पुत्रोंसे छिपा-कर वह सबधन तुमने पृथ्वी में गाड़दिया ५९ व द्रव्य आनेकेलिये अन्यउपाय करनेलगते थे व धन बढ़नेही का उपाय सबसे बुद्धि-मानीसे सदा पूँछा करते थे ६० कि किसप्रकार से कहां खोदकर गाड़ना चाहिये जिसमें कोई जाने न पावे वार्त्ता किसप्रकारकी धन रक्षाके लिये करनी चाहिये तृष्णासे परिमोहित होकर ऐसा पूँछते हुये सदा घूमाकरते थे ६१ पासही में सदा चिन्ता करते कि यदि कल्पवृक्ष कहीं मिलजाता तो अच्छाहोता चिन्तामणिनाम मणिखो-जनेकेलिये पर्व्वतोंके विवरोंमें पैठकर पूँछते थे ६२ इसप्रकार तृष्णा अग्निसे जलेहुये सुखको न पाया हाहाभूत विचेतनहोकर तृष्णारूप अग्निसे प्रदीप्त ६३ हे विप्रेन्द्र! तुम कालके वशीभूतहोगये तुम्हारी स्त्री व पुत्रोंने मरणकेसमय पूँछा कि सबधन द्रव्य कहांहै ६४ परन्तु उनको कुछ नहींदिया व न कुछ कहा मरगये व यमपुरमें पहुँचे इस प्रकार हमने तुमसे सब वृत्तान्त कहा ६५ हे विप्र! इसीकर्मसे तुम निर्द्धन व दरिद्री हुयेहो इससे इस संसार में जिसके सत्पुत्र सदैव पिताकेभक्त ६६ सुशील ज्ञानसम्पन्न व सत्य धर्म्मरत होतेहैं जान-नाचाहिये इसके ऊपर श्रीविष्णु बहुत प्रसन्नहैं ६७ व धनधान्य स्त्री पुत्र पौत्रादि जिसकेहों मृत्युलोकमें जानो विष्णुहीकी प्रसन्नता इसके ऊपरहै व इनसबों का भोग मर्त्यलोक में वही प्राणी करताहै जिस के ऊपर विष्णुभगवान् प्रसन्नहोते हैं ६८ विना विष्णुकेप्रसाद स्त्री पुत्रादि व धन नहीं होते ॥

चौ०। सर्व्वैश्वर्य्य अतुलधन जोई। विविधभांति परिजनसुखहोई॥
सुकुलजन्मसबविधिप्रभुताई। विष्णुप्रसादहिसोंअधिकाई६९

इति श्रीपाद्मेवैशाखमाहात्म्येएकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

नब्बेवां अध्याय ॥

दो० । नब्बे के अध्याय महँ देवशर्म द्विज केरि ॥
पूर्व्वजन्मकी है कथा मुनि वसिष्ठ कहहेरि १

देवशर्म्मा ब्राह्मण बसिष्ठजी से बोले कि आपने हमारे पूर्व्वजन्म का पाप बताया जोकि शूद्र होनेपर हमने धनइच्छा सवाकिया १ सो हे द्विजसत्तम ! जबकि शूद्रतामें हमने ऐसा कर्म्मकिया तो ब्राह्मण किसकारण से इस जन्ममें हुये आप ज्ञान विज्ञानके पण्डित हैं इस सबका कारण हमसेकहें २ क्योंकि भरतखण्ड में जन्महीहोना दुर्लभ है उसमें फिर मनुष्यहोना मनुष्य में भी ब्राह्मणहोना ब्राह्मणों में भी कुलीनता ३ उसमें भी इसप्रकार की भार्य्या जोकि सबकुछ जानती है व परमेश्वर व वेदको भी अच्छेप्रकार जानती है पतिव्रता सब गुणोंसेयुक्त अत्यन्त दुर्लभ भार्य्या इस जन्ममें हमारी कैसेहुई ४ वसिष्ठजी बोले कि हे द्विज ! पूर्व्वजन्म में जो तुमने धर्म्मयुक्त कर्म्मकियाथा वह हम कहेंगे जो मानतेहो तो सुनो ५ एक धर्म्मात्मा सदाचाररत पण्डित विष्णुभक्त नित्य विष्णुपरायण नित्यधर्म्म करनेवाला ब्राह्मणथा ६ वह अकेला तीर्थों के स्नानकेलिये पृथ्वी पर्य्यटन कियाकरताथा घूमते २ वह महामति ब्राह्मण एकदिन तुम्हारे घरको आया ७ उसके दर्शन मात्रसे तुम्हारे सुन्दर बुद्धि उत्पन्नहुई क्योंकि पण्डित महात्माओं के घरमें आजाने से धर्म्मउदय होताही है ८ हे विप्र वैष्णव ! विप्रकी सेवासे क्या २ नहीं मिलता जो २ पदार्थ लोकमें दुर्लभ हैं सब मिलतेही हैं व मोक्षकास्थान भी मिलता है ९ उस ब्राह्मण ने रहनेकेलिये तुमसे एकस्थान मांगा तब तुम्हारी भार्य्याने तुम्हारे व तुम्हारे पुत्रोंसमेत उसको रहने के लिये स्थानदिया १० तुमलोगों ने उससे कहा आइये आइये द्विजसत्तम सुखसे हमारे गृहमें विराजिये वैष्णव ब्राह्मणके आनेसे पुण्यहोती है आइये आपहीका घरहै ११ सुखसे यहां ठहरिये यह घर आपहीका है हे विप्र ! आजहम धन्यहैं व आज जानों हम तीर्थ को गये १२ हे विप्र ! तुम्हारे दर्शनसे आज हमने तीर्थका फल पाया यह कहकर तुम्हारी स्त्रीने पुण्यस्थान गोशालामें उस ब्राह्मणको टिकादिया १३

गन्ध अक्षतों में पत्नकरके फिर उसके चरण तुम्हारी स्त्रीने दाबदिये और जलसे अच्छीतरह धोदिये व तुमने फिर उसविप्र के पादोदकसे स्नान किया १४ व फिर तुरन्तका घृत दधि दुग्ध व मीठाअन्न उस ब्राह्मणकोदिया यहसब भाग्यकी प्रेरणासे तुमने दियाकिया १५ इस प्रकार भार्य्यासहित तुमने ब्राह्मणका सन्तोष किया व अपने पुत्रों समेत उस वैष्णव महाभाग ज्ञानवान् पण्डितकी सेवाकी १६ जब विमल प्रातःकालहुआ तो वह ब्राह्मण वैशाखमास होनेकेकारणगङ्गा स्नानकरने को चला सन्तुष्टहोने के कारण उसको दया अधिकहो आई १७इससे उस ब्राह्मणने वैशाख स्नान माहात्म्य तुमसेकहा व न्यायपूर्व्वक पुत्र स्त्रीसमेत तुमसे बैशाख स्नान नियम कराया १८ जैसे कि लोकमें समुद्रके समान और कोई जलाशय नहीं है ऐसेही सब मासोंमें माधवका प्रिय बैशाखके समान कोई मास नहीं है १९ तबतकनिश्शंक सबपाप मनुष्योंके शरीरमेंरहते हैं जबतक कि कलि-मलध्वंसी बैशाखमास नहींआताहै २० उस ब्राह्मणका ऐसा वाक्य सुनकर तुमलोगों ने भी बैशाखमें स्नानकिया व हे विप्र ! सन्तुष्ट मनसे मधुसूदनका पूजन तुमने किया २१ बैशाखमास के केवल पांचही दिन बाकी रहगये थे इससे एकादशीसेलेकर पूर्णमासीतक विधिसे स्नान किया २२ ब्राह्मणके प्रसंगसे सूर्य्य निकलते २ तुमने नर्मदामें भी स्नान किया है विप्र ! बैशाखके उन पांचदिनों में बड़े बड़े भावसे प्रातःस्नानकिया २३ व देव देवेश मधुसूदन भगवान् की पूजाभी तुमने भलीविधिकी प्रथम नहीं सुनाथाइससे सब मास-भर स्नान तुमने नहीं किया था २४ इसप्रकार तुमने पांचदिनतक जो प्रातःस्नानकिया उसके पुण्यकेप्रभाव से व ब्राह्मणकी विशेष संगतिसे २५ व गोविन्दके प्रसादसे तुमशूद्रयोनिसे आकर ब्राह्मण हुये व उसमासके योगसे इस बड़ेकुलमें हुये २६ सत्य धर्म्मयुक्त यह कुल ब्राह्मणोंके कुलमें भी उत्तम है व सब गुणवती पतिव्रता भार्य्याभी इसीप्रभावसे तुमनेपाई २७ च्यवनकेगृहमें उत्पन्नसबकुछ जाननेवाली वेदवादिनी स्त्रीपाई हे मुने ! स्त्रियोंका परम प्रथमएक रूप भूषणहै व २८ दूसराभूषण शीलहै व तीसराभूषण सत्य है व

सदाचारत्व चौथाभूषण है पांचवांपुण्य भूषण है २९ मधुरता छठां भूषण शुद्धता सातवां भूषणहै व बाहर भीतर सबभावसे स्त्रियोंका भूषण यहभी सातवांहै ३० पतिमें निश्चल भाव यह आठवां भूषणहै व पतिकी सेवा नववां भूषणहै सहन शीलता दशम भूषणहै वरति ग्यारहवां भूषणहै ३१ व हे विप्रेन्द्र ! पतिव्रताहोना स्त्रियोंका बारहवां भूषणहै सो ब्रह्मवादिनी तुम्हारी यह साध्वी भार्य्या इनबारहो भूषणों से सम्भूषितहै ३२ सो ऐसी सुन्दरी पतिव्रता भार्य्या तुमने बैशाखके स्नानके योगसे पाईहै इस बैशाखमासमें प्रातस्स्नानकरने से क्या २ दुर्ल्लभ पदार्त्थ नहीं मिलताहै ३३ सो परमेश्वरके पूजन से और प्रातस्स्नानही से यह ऐसी भार्य्यामिलीहै व मोहसे मोहित होने से तृष्णामें तुम्हारा मन व्याप्तहोगया था ३४ इसी से तुमने पूर्व्वजन्म में धन इकट्ठा कियाथा न तो तुमने ब्राह्मणोंको दिया न दीन अन्यलोगोंकोही दिया ३५ न बन्धुवर्गकोदिया न पुत्रोंको व स्त्रियोंकोही कुछदिया मरनेके समय केवल आप लोभही में पड़ेरहे ३६ न तुमने किसीको दिया न होमकिया न जपकिया न तीर्त्थ में मरणकिया व सबके पापहारी नारायण देवका ध्यान भी नहींकिया ३७ जो मनुष्य द्रव्य विद्यमान होनेपर भी कृपणहोता है विनादा-नहीके मरताहै फिर उससे अधिक दुःखकी कौनसी बातहै ३८ तीर्थ स्नानके बलसे ब्राह्मणके उत्तम कुलमें जन्मही पाया सो हे विप्र ! विनादिये अन्य धनादिक कुछनहीं मिलता है ३९ बस उसीपापके भावसे दारिद्र्यतुमको प्राप्तहुआ व अपुत्रवान् भी आपहुये व निरन्तरदुःखसे पीड़ितरहते हैं ४० बैशाखस्नान माहात्म्यसे जोकि पांचदिन प्रातस्स्नान कियाथा व तभीके हरिपूजन के व ब्राह्मणकी संगतिके प्रभाव से ४१ जन्म पाकर ब्राह्मणदेव तुम विप्रहुये जोकि होना बड़ा दुर्ल्लभहै सुपुत्र कुल विद्या धन धान्य व श्रेष्ठस्त्रियां ४२ सुन्दरजन्म व सुन्दरमरण सुन्दरभोग व सुख सदादान देनेमें अधिक बुद्धि उदारता उत्तम धैर्य्य ४३ ये सब महात्मा देव देव विष्णुहीके प्रसाद से होतेहैं व हे विप्र ! उन्हीं नारायणहीके प्रसादसे सब वाञ्छित सिद्धियां भी होती हैं ४४ कार्त्तिक मासमें माघमास में व

बैशाखमास में जोकि माधवजी के प्रियहैं स्नान करके भक्तिसे दामोदर माधव मधुसूदन देवकी ४५ विशेष पूजाकरके व अपनी शक्तिके अनुसार दानदेकर जन यहांकेसुखोंकोपाकर फिर हरिकोप्राप्त होताहै ४६ बैशाखमें प्रातस्स्नान करनेसे अनेक जन्मकी इकट्ठी कीहुई पापावली नष्टहोजाती है जैसे किसूर्य्योदयहोनेपर अन्धकार कीपंक्ति नष्टहोजाती है ब्रह्माजीकावचन हमारे हृदय में प्रवेशकरता है ४७ यमराजके कहने से एकबार विष्णुभगवान्‌ने भी इसएक बैशाखमासको विधिपूर्व्वक साफ़ विचार किया व यमराजका गुप्त भी मनसे विचारकर मनुष्य लोकभरको वे स्वर्ग को लेगये थे ४८ इससे जब यह वैष्णवमास बैशाखआवे तो प्रातःकाल नदी आदि किसी पुण्यजलमें स्नान करके ४९ व विधानसे मुकुन्द मधुसूदनकी पूजाकरके पुत्रपौत्रधनकल्याण बाञ्छितसुखपाकर ५० व उन सबों के सुखका अनुभवकरके अन्तमें तुम स्वर्गको जाओगे व पूर्व्वजन्ममें जो तुमने सब चेष्टाकियाहै ५१ सो सब हे विप्र! हमने तुम्हारे आगे कहा ऐसा जानकर हे महाभाग ! बैशाख में विशेष करके ५२ स्नानकरके विधिपूर्व्वक मधुसूदनकी पूजाकरो अनामय गोविंद नारायणदेवकी आराधना करके ५३ तुमसब सुख पुत्र धन पाओगे व अव्यय श्रीहरिको प्राप्तहोओगे ५४ नारदमुनि बोले कि वह महानुभाव विप्रवर्य्य जब बसिष्ठजी से इस प्रकारसे परिबोधित हुआ तो हर्षसे युक्तहोकर महानुभाव वह भक्तिसे बसिष्ठके प्रणाम करके ५५ व उनसे पूँछकर अपने गृहको गया व हर्षसहित अपनी सुमनाभार्य्या से बोला कि हमारे पूर्व्वजन्म का सब वृत्तांत बसिष्ठजीने तुम्हारे प्रसादसे कहा ५६ हे भद्रे! बसिष्ठजीने हमारेपूर्व्वजन्मका वृत्तांत कहकर हमारे मोहको नष्टकर दिया अब बैशाख मासमें तुम्हारे-साथ स्नानकरके भक्तिसे मधुसूदनजीकी आराधनाकरेंगे ५७ नारदमुनि अम्बरीषजीसे बोले कि परमपवित्र सुमंगल मंगलका हेतु अपने पतिका बाक्य सुनकर हर्ष से युक्तहोकर अपने स्वामी से बचन बोली कि हे विप्र !तुम धन्यहो जो बसिष्ठजीसे समझायेगये व समझगये ५८॥

इति श्रीपाद्मेवैशाखमाहात्म्येदेवशर्म्मोपाख्यानेनवतितमोऽध्यायः ९०॥

इक्यानबेवां अध्याय॥

नारदजी बोले कि महाप्राज्ञ देवशर्म्मा उस अपनी सुमना के साथ गंगाजीके कनखल तीर्थमें जो कि हरिद्वारमेंहै १ बैशाखमास में मेषके सूर्य में जाकर विधि से स्नान किया व मधुसूदन अच्युत भगवान्‌की पूजा बिधिसेकी २ यम व नियमों से युक्तहोकर अपनी शक्तिके अनुसार कुछ दानदेकर हविष्यान्न भोजनकर भूमिमें शयन करतेहुये ब्रह्मचर्यव्रतमें स्थितहुये ३ व कृच्छ्रादि तपकरनेसे बनाय दुर्बलहोकर नारायणजीको हृदयमें ध्यानकरतेहुये बैशाखीपूर्णमासी को पाकर उसदिन तिल व मधु दान देकर ४ व अपनी शक्तिके अनुसार विप्रोंको भोजनदेकर व भक्तिसे दक्षिणासमेत एकधेनु देकर ब्राह्मणोंसे उस व्रतस्नानकी अछिद्रतामांगी ५ व पतिभक्तिमें परायण पतिव्रता सुमना भी स्नान करके व केशव भगवान् की पूजाकरके नित्य पतिकी शुश्रूषा करनेलगी ६ इसके पीछे जब बैशाखमास समाप्तहुआ तो उनदोनों स्त्री पुरुषोंने हर्षितहोकर अपनेको कृत कृत्यमाना व खुसीसे अपने घरको गये ७ उसीपुण्यके प्रभाव से कुछकाल के पीछे उनदोनों की चारोंओर अमित धन धान्यादि सम्पदायें होगईं ८ व चारपुत्र विनययुक्त बेदपाठीहुये जोकि धर्म्मज्ञ वैष्णव नित्य पिता माताकी सेवामें परायणहुये ९ व अमितबुद्धिमान् पुरुषार्थ समझनेवाले विधितत्त्वजानने के कारण विख्यात ब्रह्मज्ञ ब्रह्ममें तत्परहुये १० समग्रगुण सम्पत्तिवाले व सम्प्रतिष्ठित कीर्त्तिहुये ११ व दोनों स्त्री पुरुष देवशर्माविप्र पुत्र व समग्र समृद्धि सुखको व पुण्योदयको बहुत दिनोंतक भोगकर भक्तिसे बैशाखमें स्नान करनेके सुकृतसे श्रीमाधव अच्युतजी के परम स्थानको प्राप्तहुये १२ जैसेमाधवजीको साक्षात्‌लक्ष्मीजी व सरस्वतीजी प्रियहैं वैसेही यह माधव अर्थात् बैशाखमासभी श्रीमधुसूदनजी को बल्लभहै १३ ॥

चौ०। यह बैशाखमहात्म्यकरारी । संक्षेपहि सों कहापुकारी ॥
जोनिजजनकब्रह्ममुखसोंहम । सुनाकहातुमसनसबकरिश्रम १।१४

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवैशाखमाहात्म्येभाषानुवादे
एकनवतितमोऽध्यायः ९१ ॥

बानबेवां अध्याय ॥

दो० । बानबे अध्यायमहँ भाव सहित कृतथोर ॥
देतबहुत फलभाव बिन बहुत थोरयहशोर १

सूतजी शौनकादिऋषियों से बोले कि नारदमुनिके ऐसे वचन सुनकर राजा अम्बरीष मनसे हरिका स्मरण करतेहुये प्रणाम करके विस्मितहोकर बोले १ अम्बरीषजीने कहा कि हे मुनिजी! यह कैसी बातहै हमतो इसमें मोहितहैं जोकि थोड़े से यत्नसे पापसमाचार शूद्रनेउत्तम ब्राह्मणतापाई २ हे तात! ब्राह्मणतातो विविध प्रकारकी पुण्योंसेभी दुर्ल्लभ है सो केवल बैशाखमास के स्नानमात्रही से उस अधमशूद्रको कैसे मिलगई ३ न यज्ञदानों से न उग्रतपोंसे न अन्य पुण्य समूहोंसे भी हमारे तुल्यसमर्थ भूपाललोग बड़े बड़े धनवान् होनेपरभी द्विजताको नहीं पाते हैं ४ देखो विश्वामित्र राजाने बहुत दिनोंतक विविधप्रकारकी तपस्याओंसे घोर अनशनव्रतकिया तो बड़े कष्टसे किसीप्रकार सहस्रोंवर्ष के पीछे ब्राह्मणतापाई ५ सो कैसे उस वर्णाधम पापी धर्म्महीन धनवान् होने से कृपण मदान्ध शूद्रने इस थोड़ीसी अनायाससे कीहुई पुण्यसे ब्राह्मणताको पाया इसमें हमको बड़ाही सन्देह है ६ नारदजी बोले कि हे राजन्! तुमने सत्य कहा ब्राह्मणता अत्यन्तदुर्लभहै तथापि धर्म्मकी सूक्ष्म गतियां बड़े दुःख से जानने के योग्य हैं ७ कर्म्म विचित्र हैं व भूतभावना विचित्र है सब प्राणी विचित्रहैं व कर्मशक्तियां विचित्रहैं ८ कभी२ शुभकर्म जो अच्छप्रकार नहीं कियेजाते वे किसी कर्म्मसे शुभकरके बढ़ते हैं ९ व जाकर उसी जन्ममें फिर बड़ा फलदेदेते हैं यह धर्म्म बड़ा गहन व सूक्ष्म है इससे जैसाका तैसा नहीं फल देता न चलता है १० धर्म्मके फलदान के कालका निश्चय नहीं होता कि कब होगा जो कुछ पुण्यकर्म्म पापोंसे मूंदा होताहै ११ कुछका कुछ फल देताहै परन्तु कोई तुरन्त फल देताहै कोई पीछेसे क्योंकि चाहे शुभहो वा अशुभहो कियाहुआ कर्म्म विना भोगकिये नष्टनहीं होसक्ता १२ तथापि बहुत पुण्योंसे पाप मिटभी जाताहै हे राजन्! जो तुमने कहा कि पुण्यका फल अधिक परिश्रमसे होताहै १३ इस बिषयमें हमारा

कहा सत्यवचन सुनो यदि अनायास व महायास अल्पता व महत्त्व के कारणहों तो १४ किसानलोग बड़ाभारी परिश्रम खेती में करते हैं वे बड़ेपुण्यात्मा होजावें व बड़े व्रतकरनेवाले होजावें व सिंह व्याघ्रादि भी बड़ाप्रयासकरते हैं वेभी बड़ेपुण्यात्मा समझेजावें १५ देखो व्रतके अङ्गों में पञ्चगव्यसे प्रशस्त और कुछनहीं है सो कर्त्तव्यता की बाहुल्य हैकि थोड़े २ पदार्थमिलकर बड़ी पुण्यको उत्पन्न कराते हैं १६ जल अग्नि आदि में प्रवेशकरने मात्रसे बहुत से व्रत होजाते हैं इसीरीति से थोड़ेसे बहुत बहुत से थोड़ा इस विषयका प्रमाण मिलता है यह नियम अधिक व न्यून श्रमके अनुसार नहीं होता १७ किन्तु शास्त्रमें जिसका फल अधिक कहागया है उसका अधिक समझाजाता है जैसे कि थोड़ेसे बहुतका नाश होजाता है व बहुतसे थोड़ेका १८ देखो एक अग्निकी चिनगारी क्या पदार्थ है परन्तु उससे तृणोंका ढेरकाढेर नष्टहोजाता है देखो अजामिल एक ब्राह्मणथा व दासीका पति होगयाथा १९ अपनी धर्म्मपत्नीका त्यागकरदियाथा व नित्य पापकर्म्म कियाकरताथा परन्तु मरने के समय नारायण ऐसा कहकर अपने पुत्रको पुकारा २० सो जानकर नाम नहीं लिया केवल व्याजमात्र से नारायण के नामके ग्रहण से दुर्ल्लभपद उसने पाया जैसे कि अनिच्छासे भी जो अग्निछूजाता है तो जलादेता है २१ ऐसेही गोविन्दका नाम जो व्याज से भी मुखसे निकले तो पापोंको भस्मकरदेता है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है २२ दशसहस्र हत्या अत्युग्रसहस्र पाप व एक नहीं कोटि गुरु स्त्रियों के सङ्ग भोगकरना अनेकप्रकारकी चोरियां गोविन्द के प्रिय हरिनाम के उच्चारण से तुरन्त नष्ट होजाते हैं २३ हे वीर! विष्णुकी भक्तिसेयुक्त पुरुष जो कुछ थोड़ाभी पुण्यकर्म्म करता है वह सुकर्म्म साधु पण्डितका कियाहुआ अक्षय फल होजाताहै २४ इससे इस विषयमें सन्देह न करना चाहिये बैशाखमास में मनुष्य भक्तिसे माधवजी की आराधना करके वाञ्छित फल पाताहै २५ क्योंकि हरिकी भक्ति जिसमें होतीहै उसको सन्तान धन स्त्री पृथ्वी नानाप्रकार के हर्म्यादि घोड़े हाथी सुख स्वर्ग्ग मोक्ष ये कोई दुर्लभ

नहीं हैं २६ ऐसेही शास्त्रोक्त विधि से जो थोड़ाभी सुकृतकरे तो बड़ेभारी भी पापका नाशहोजाता है इसमें सन्देह नहीं है २७ हे विद्वन्! फलकी अधिकता बड़ा परिश्रम करने से नहीं होती धर्म्म कीगति सूक्ष्महै उसे देवलोग भी बड़े दुःखसे जानसक्के हैं २८ इससे यह बैशाखमास महात्मा माधवजीको प्रिय है जो एक मासकीसेवा विधिपूर्व्वक कीजाय तो सब वाञ्छित फलदेवे २९ पुण्य गङ्गाजल से किसी उत्तमकालमें हरिद्वार प्रयाग काशीआदि पुण्य देश में जो किसीप्रकार से स्नानकरे सो जन्म पर्य्यन्त भावरहित होकरही करे तो कभी न शुद्धहो यह हमारा मतहै ३० अग्निको बारकर उसमें बहुतसा घृत काष्ठादि डालकर अग्निको प्रज्वलितकरे पर कुत्सरीति से नहीं केवल भावकी दुष्टताही से तो ऐसे हवन से न स्वर्गही मिलताहै न औरही कोई फल मिलता है ३१ क्योंकि गङ्गादितीर्थों में जो देवलोग बसते हैं व देवालय में जो पक्षी बसते हैं व उपवासादिकरके वहीं मरते हैं परन्तु भावसे त्यागे हुये होते हैं इससे वे कुछ फल नहीं पाते ३२ इससे अपने हृदयकमल में भावस्थापित करके बैशाखमास में भक्ति से श्रीमाधवजी की पूजा जो करता है व प्रातःकाल स्नान करके विशुद्धात्मा होताहै उसकी पुण्य का फल हमलोग नहीं कहसक्के ३३ नारदजी अम्बरीष राजा से बोले कि हे महीपाल! इस अर्थ में पूर्व्वका वृत्तान्त सुनो कर्म्मका कुछ विचित्र फलकहेंगे ३४ जैसे कि किसी व्यभिचारिणी भी ब्राह्मणीने बैशाखमासके प्रसादसे व श्रीहरिके प्रसाद से शुभफल पाया है ३५ एक दिवोदास नाम काञ्चीपुरी का ईश्वरथा उसके सबस्त्रियों में उत्तम एककन्या रत्नरूप उत्पन्नहुई ३६ वह गुणशीलरूपयुक्त चारुमंगल मूर्त्ति दिव्यादेवी नामसे प्रसिद्धरूप में अद्वितीय हुई ३७ पितानें देखा कि अब यह रूपलावण्य से युक्तदिवोदासने दिव्यादेवी कन्या को देखकर ३८ सो दिवोदासने विचारा कि अब हम किस महात्मा सुन्दर वरको यह अपनी दिव्यादेवी नाम कन्यादेवें इस चिन्तामें युक्तहोकर नरोंमें उत्तम उसने ३९ कामरूपदेश के राजाको अच्छा समझा उस राजाका चित्रसेन नाम था व बड़ा महात्मा था दिवो-

दास राजाने उसे बुलाया व ४० धीमान् चित्रसेनको अपनी कन्या विधिविधानसेदेदी परंतु जब उसका बिवाहहोनेलगा तो ४१ काल-धर्म्म से युक्त होकर चित्रसेन उसीक्षण मृतक होगया तब धर्म्मात्मा दिवोदास राजाने बड़ी चिन्ताकी ४२ सब ब्राह्मणोंको बुलाकर उस नृपनन्दनने पूँछा कि इसके विवाह के कालमें चित्रसेन स्वर्ग को चलागया ४३ अब इसका कैसा कर्म्म होगा हमसे सबलोग कहो ब्राह्मणलोग बोले कि हे राजन् ! जो कन्या का बिवाह विधि बिधानसे हो ४४ व पति मरजावे व त्यागकरे धर्म्मशास्त्रमें लिखाहै कि कुष्ठादि महा आधिव्याधिसे युक्तहोकर जो पति स्त्रीको त्यागकर कहीं चलाजाय वा संन्यासी होजाय तो जब वह स्त्री रजस्वला हो जायतो उसको और पति करनेका अधिकार है ४५ । ४६ पिताको चाहिये कि विधान से उसका निस्सन्देह बिवाह करदेवे हे राजन् ! धर्म्मशास्त्रमें ऐसा शुभजनों ने कहा है ४७ इस से इसका बिवाह फिरसे करो यह ब्राह्मणों ने राजा से कहा तब धर्म्मात्मा दिवोदास ने ब्राह्मणों की प्रेरणा से ४८ बिवाह करने के लिये मन किया हे महाराज ! तब दिव्या देवी को फिर राजा ने पुण्यात्मा पुष्पसेन नाम राजा को जो बड़ा महात्मा था दे दिया परन्तु बिवाह होने के ही समय पुष्पसेन भी मृतक होगया ४९ । ५० इसप्रकार जबजब दिव्यादेवी का बिवाह राजाने किया कि दुःखसे उद्योग करतेही ५१ पति मृतक होजाने लगा बस जैसेही लग्न का काल आवे कि वैसे ही भर्त्ता मृतक होजाने लगा यहां तक कि बिवाह कालहीके समय इसी प्रकार २१ पति उसके मरगये ५२ तब महा प्रसिद्ध राजा दिवोदास बहुत दुःखित हुये तब राजाने सब अपने मन्त्रियों को बुलाकर स्वयंबर करनेकी युक्तिकी व बड़ीबुद्धि का खर्च उसमें किया व राजा दिवोदास के बुलाये हुये देश देश के धर्म्मज्ञ धर्म्मतत्पर राजालोग उसके स्वयंबरके लिये वहां आये व उसके रूपकेलोभी राजालोग मृत्युकी प्रेरणा से तो वहां आयेही थे इससे आपस में युद्धकरके सबके सब मृतक होगये इस प्रकार उन क्षत्रियों की क्षय होगई हे नरेश्वर ! ५३ । ५६ व दिव्यादेवी दुःख से पीड़ित होकर

करुणापूर्वक रोदन करनेलगी व अति दुःखित बारबार रोदन करती हुई अपनी कन्याको देखकर राजा दिवोदास ५७ सर्वज्ञ ज्ञानवान् अपने पुरोहित तपस्वी जातूकर्ण्यजी के चरणों में शिर झुकाकर प्रणामकरके ५८ बोला कि आप प्रसन्न होकरकहें इसका क्यापापहै जिससे कि हमारीपुत्री दिव्यादेवीकी यह दुर्दशाहुई ५९ जातूकर्ण्य जी बोले कि हे बीर ! इस दिव्यादेवी का चेष्टित तुमसे हम कहतेहैं इसके पूर्व जन्म का कियाहुआ कर्म कहते हुये हमसे सुनो ६० जो पापनाशिनी बाराणसी पुण्यानगरीहैउसमें महाप्राज्ञ सुवीरनाम ६१ वैश्यजाति में समुत्पन्न धन धान्य से युक्त रहता था हे महाप्राज्ञ ! उसकी भार्य्याका चित्रानामथा ६२ वह मन्द मन्द मुसुकायाकरती थी व कुलाचारको छोड़कर दुराचारमें प्रवृत्तहुई अपने पतिको वह नहीं मानतीथी प्रतिदिन रौद्रकर्म में प्रवृत्तरहती ६३ पुण्यकार्य से बिहीनहोकर वह दुर्मति नित्य पापकर्महीकरने में प्रवृत्तरहती अपने भर्त्ताकी निन्दा नित्य कियाकरती व आप व्यभिचारिणी व कलह प्रियाथी ६४ व नित्य परायेघर में बसतीथी व अधिकभ्रमण किया करती व ऐसीदुष्टा होगई थी कि परायेअवगुण सदा देखतीरहती थी ६५ साधुओं की निन्दामें पर पापिनी बहुत सदा हँसनेवाली कुसंगति में रत सब उसके बुरे आचारथे व दुराचारीजनों को अतीव प्रियथी ६६ व धूर्त्तधर्मवाले जनोंसे सदा द्वेषकरतीथी मिथ्या सदा बोलती सो ऐसी इस दुष्टाको जानकर उस बीरनामक वैश्यने दूसरी स्त्रीके संग अपना बिवाह करलिया ६७ व उस नवीन भार्य्याकेसाथ बार २ वह बीर अपने मनके प्रिय सब इन्द्रियों के सुख भोगनेलगा व सब प्रियकरनेलगा ६८ धर्मके आचारसे वह पुण्यात्मा सत्यपुण्यमति बीर अपनी नवीन सुमतिवाली सतीसे आराधितहोकर शोभितहोनेलगा ६९ व उस विचित्रवरोंके अंगीकारकरनेवाली चित्राको गृहसे उसने निकालदिया इससे स्वैरिणी स्त्रियोंके संसर्ग से धर्म्मसे विशेष बैर करनेलगी ७० व घूमते घूमते बहुतलोगों से भोगकीगई इससे उसके सबआचार जातेरहे व निर्लज्ज होगई व पापरतजनों से ऐसी संसक्तहुई कि दूतीहोकर विकर्म में लिप्तहोगई ७१ फिर जब

कुछ अवस्था अधिकहुई तो कुट्टनी के कर्म्म में निरतहुई जिस से कि नरोंकी स्त्रियोंको अन्यपतिके संगको लेजानेलगी इसप्रकार उस कुटिल मनवाली ने बहुतसे घर उजाड़दिये ७२ पतिव्रता स्त्रियोंको बुलाकर पाप वाक्योंसे लुभातीहुई हास्यकी नानाप्रकारकी कथा कहकर विश्वास दिलाकर ७३ पुरुषों व स्त्रियोंकेभी मनों को पापकी ओर चलायमान करनेलगी साधुओंकी भव्य सदाचारिणी स्त्रियों को बहँकाकर और दुराचारियों के पास लेजानेलगी ७४ धर्मसमूह छोड़ेहुये कपटही कराती थी इसतरह सैकड़ों वर्ष भोगकरके पीछेसे वेश्याकी तरह स्थितहुई ७५ इसप्रकार कुकर्म्म करतीकराती कालके वशीभूतहोकर मृतकहुई वही दिवोदासजी तुम्हारे गृहमें दिव्यादेवी के नामसे विख्यात होकर तुम्हारी कन्या हुई ७६ यहां पूर्व्वजन्म के भाग्य से बहुतसुन्दरी रूप सम्पन्न हुई नारदजी बोले कि जातूकर्ण्य का ऐसा वचनसुनकर दिवोदास बहुतही विस्मित हुआ व हे राजन्! जातूकर्ण्य से मधुरवचन दिवोदास बोले ७७ कि जो ऐसी दुरित प्रचारकरनेवाली व सदा दुराचाररता उत्पन्नहुई तो महाकुलीन वैष्णव हमारी कन्या यह कैसे आकरहुईहै ७८ विशाल राजकुलमें जन्महोना दुर्लभहोता है फिर धनवान् वेदशास्त्रयुक्तकुलमें जन्मतो अत्यन्तधन्यहै सो हे मुने! वह अपवित्र कर्म्म करनेवाली चित्रा इस हमारे विचित्र कुलमें कैसे उत्पन्नहुई ७९ नारदमुनि राजाअम्बरीष से बोले कि राजाके ऐसे वचन सुनकर जातूकर्ण्य जी विवादके जाननेवाले प्रेमसे सत्य वचन बोले ८० कि जब चित्रा विचित्र सुरतोंकी कथाओं से परमकामीपुरुषोंको धनके लिये छलती हुई बड़े प्रसिद्ध नागपुरमें मदिरा पानकरके वेश्याहुई थी तब उस प्रसिद्ध नगरकी चारोंओर वह घूमा करती थी ८१ एकदिन एकथका थकाया ब्राह्मण घूमते २ वह मूढ़ नागपुरमें सन्ध्याकेसमय पहुँचा ८२ उस मूर्खने अन्यस्थान न देखा भाग्यवश वह चित्रावेश्याके गृहमें पैठा व भाग्यकी प्रेरणासे उस वेश्याने उस ब्राह्मणका बड़ा सम्मान किया ८३ पहुँचतेही पैर धोदिये स्नानकराया ताम्बूलखिलाया दिव्य आसन पर बैठाकर भोजनकराया फिर विलासोंसे तोषितमनहोकर

वह ब्राह्मण कामके वशीभूत हुआ ८४ तब विचित्र सुरतके नाना-प्रकार के शृंगारों से अदृष्ट बुद्धिही से उसने उस विप्रकी सेवा की व उसने उसके सङ्ग नानाअंगप्रसङ्गोंसे आनन्दपूर्व्वक रात्रिबिताई ८५ जब प्रातःकाल उठकर वह ब्राह्मण चलने लगा तो चित्रा में अनुरक्तचित्त होकर उससे बोला क्योंकि भावसहित चरित्रों से व सुन्दर वचनोंसे व अपने स्त्री भावसे उसने ब्राह्मणको सन्तुष्ट किया था ८६ ब्राह्मणने कहा कि अब तुम्हारे साथ कुछ प्रत्युपकार हमको भी करनाचाहिये क्योंकि तुमने हमको सन्तुष्ट किया है अपना दृढ़ दुःख कहेंगे ८७ अब हमने नर्म्मदानदी के किनारे कथा कहते हुये ब्राह्मणों के मुखसे जो सुनाहै वह सब पापनाशक शुभचरित आदरपूर्व्वक सुनो ८८ मेषराशिके सूर्य्य में वैशाखमास में सूर्य्योदय के प्रथम जो कोई बहुत नहीं तीनदिन भी स्नानकरता है वह भी पापसमूहों से छूटजाता है ८९ व जो सम्पूर्ण वैशाखमास भर विधिसे गृहकेबाहर नद्यादि जलाशयों में स्नानकरता है व बिधि से माधव देव देवकी पूजाकरता है वह तो पापोंका हन्ता होताही है ९० कहीं प्रातःकाल स्नानकरने से ऐसा होताहै पुण्य तीर्थ में विशेषकरके स्नान दानादि क्रियाकरने से वैशाखमास में मनुष्य सबपापों से छूटताहै ९१ तभीतक महापापोंका ढेर प्राणियों के शरीर में निश्शङ्कहोकर टिकता है जबतक कि मेषराशि के सूर्य्य में वैशाखमास में मनुष्य प्रातःकाल स्नान नहींकरता ९२ ऐसा हमने उन विप्रोंको कहतेहुये वैशाखमासका सब पापनाशक माहात्म्य सुनाहै जोकि अनेक पापसागर के उतरनेका जहाज कहाजाताहै ९३ व समीपही यहांपर नर्म्मदानदी शिवजी की देहरूप नदियों में श्रेष्ठ विद्यमान है सो हम महा पापसमूह के नाशकेलिये वहीं स्नानकरने को जातेहैं ९४ हे कान्ते! यदि तुमको रुचताहो व तुम्हारामन अब इस विषयवासना से विरक्तहुआहो तो हमारे साथचलो व वैशाखस्नान नर्म्मदामें करो ९५ यह जीवन अनित्य है व सुन्दर यौवन भी बहुतही शीघ्र चलाजाता है इसका कुछ ठीकही नहीं है व काम नरकवासका मुख्यहेतु है ९६ तुमने हमारी ऐसी आराधना की कि

पापसागर में लेकर गिरादिया यहबात हमने आज सत्यजानी कि कन्दर्पका निवारण महात्मालोग भी नहीं करसक्ते ९७ बहुत कहने से अब क्याहै हमारीजान अब क्षणमात्र भी विलम्ब करनेका अवसर नहींहै जो तुम्हारे हृदयमें अब इस संसारसे विरक्ति आईहो तो आपका उद्धार हम अभी करेंगे चलो ९८ चित्राबोली कि हे स्वामिन्! भाग्यके योगसे धर्म्मद्वाराही तुम्हारी संगति हमको होगई यह होनेवालीथी नहीं तो अब हमारे चित्त में कामके विषय में पूरी विरक्ति है ९९ जो शास्त्रमें सुनाईदेता है कि निश्चय साधु कासंग तुरन्त फलदेता है सो आज सत्यहुआ आपके संग ने तुरंतही हमको फलदिया कहां मैं ऐसीपापिनी कहां ऐसा साधुसंगम इस अचिन्त्य अर्थ के लिये नमस्कार है मैं अब इस कर्म्म से निवृत्तहुई १०० जातूकर्ण्यजी राजा दिवोदास से बोले कि ऐसाकहकर वह चित्रावेश्या उस ब्राह्मण के संग चलखड़ीहुई जो कुछ धन उसके पास थोड़ासाथा वहभी उसने लेलिया १०१ इसके पीछे चलकर वह ब्राह्मण चित्राके साथ उस वैशाखमास में नर्मदा के तीरपहुँचा व स्नानकरके उस दयालुनें उस चित्रावेश्याको भी वहां स्नानकरने की आज्ञादी १०२ व परमदयालु उस विप्रने उसे भी अच्छीतरह स्नानकराया जैसा कुछ विधान शास्त्रमें लिखा है उचितभाषिणी चित्राको उसीप्रकार से स्नानकराया १०३ वहांपर पौराणिकलोग ठौर २ वैशाखमाहात्म्य की कथा कहरहेथे चित्राने परमहर्ष से उसे आदरपूर्वक सुना १०४ जिसके श्रवणमात्र से पापसागर का नाश होताहै जैसे कि सूर्योदय से तिमिरकासमूह नष्ट होजाता है १०५ सो कल्याणदेनेवाले नर्मदा के जलमें विधान से उसने स्नानकिया जिसमें स्नानकरने से फिर कामादि वासना की इच्छा नहींहोती सो उसमें स्नानमात्र से विमल मानसोदया चित्राहोगई व सूर्य्यकीसी कान्ति झलकनेलगी क्योंकि रविके उदयके पूर्व उसमें उसने स्नान किया १०६ व उस नर्मदामें स्नानकरके विविधप्रकार हरिकी सेवा करतीहुई वैशाखमासमें नानाप्रकार के लोकालोकोंको लांघकर जानेकेलिये चित्राने देखा १०७ जो कोई सुखदेनेवाली इस नर्मदा

नदी में अपना अतिअशुद्ध भी शरीर धोते हैं उसमें भी वैशाखमास में विशेषकरके वे मनुष्य लोकके अधिप श्रीविष्णुलोक की लीलाजा-कर करते हैं १०८ जन्मपर्य्यन्तका पाप नर्म्मदा स्मरणमात्रसे नष्ट करती है व दर्शनकरने से दशजन्म के उत्पन्न पापको नाशती है व किसी प्रकारसे स्नानकरने से सौजन्मका पाप नष्टकरतीहै व अच्छे प्रकार से सेवाकरनेसे रुद्रलोक देती है १०९ उस चित्राने इसप्रकार सम्पूर्ण वैशाखमासभर नर्म्मदाजलमें स्नानकिया व अपनी शक्तिके अनुसारनित्य कुछ ब्राह्मणोंको दानदिया ११० व सबपाप हरनेवाला हरिकास्तोत्र नित्यसुना क्योंकि उस ब्राह्मण के संगसे उसी स्थानपर सबविप्रोंको पढ़तेहुये सुनतीथी १११ उस नर्म्मदाके जलमेंवैशाख मासभर नित्य स्नानकरके व अपनी शक्ति के अनुसार ब्राह्मणों को कुछ दानदेती हुई निर्विघ्न विधिपूर्वक चित्राभी वहीं निवास करती थी ११२ व वहां नवीन छोटीसी कुटी बनाकर सुदेवनाम उस ब्रा-ह्मणने भी नित्य नर्मदाजलमें स्नानकरके वहीं बास किया व चित्रा को बराबर उपदेश दिया ११३ फिर कुछ कालमें सुदेव ब्राह्मण न-र्म्मदाहीके तटपर मृतकहुआ विप्रके मरनेके पीछे शीघ्रही चित्राभी वहीं मृतकहुई ११४ सो उसी बैशाखमासकी पुण्यसे चित्रा आकर तुम्हारी पुत्रीहुई यमयातनाको इसने नहीं देखा ११५ व उसी कर्म का यह फल है जो राजाके कुलमें आकर उत्पन्नहुई उसमें भी इस पापहारक बैष्णव कुलमें हुई जो कि पापियों को बहुतही दुर्लभ है ११६ हे नृप ! दिवोदासजी वही दिव्यादेवी के श्रेष्ठनामसे प्रसिद्ध होकर चित्रा तुम्हारी कन्या हुई व जो उसने उस ब्राह्मणको अन्न दिया व भोग सौख्य सुखादि दिया ११७ जब कि वह वेश्या थी व विप्रके संग भोग किया था व फिर बैशाखमासमें स्नानकरके जो कुछ नित्यदान उसने किया ११८ उसी दानका व स्नानके फलके उदयको अब भोगकरती है शीतल जल पानकरतीहै व मीठा अन्न रोज भोजनकरती है ११९ व दिव्य भोगों को भोगतीहुई तुम ऐसे पिता के गृहमें निवासकरती है विधिकी बशते दुःख व शोकादि पीड़ित भोगती है १२० ॥

चौ० पूर्वजन्ममहँ जोकियभंगा । नरनारिनके भवनप्रसंगा ॥
तासुकर्मकरयहफलपाया । जोकुछदुखदेखतअगुआया १।१२१
माघवस्नानमहात्म्यहिपाई। यमयातनाबिना यहँआई ॥
महापापिनीहती त्यहूंपर । नृपतवसुताभई सबशुभकर२।१२२
तवपुत्री चेष्टित तुमपाहीं । यहसब कहा भूप शकनाहीं ॥
पूर्ब जन्मभव दुष्कृतकर्मा । याके कहे और शुभधर्मा ३ । १२३

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवैशाखमाहात्म्येचित्रोपाख्यानेद्विनवतितमोऽध्यायः ९२ ॥

तिरानबेवां अध्याय ॥

दो० । तिरानबे अध्यायमहँ पञ्च प्रेत इतिहास ॥
जोद्विजहत्यागुरुहनन गुरुतल्पगकियखास १
वेश्या के परसंगसों मद्यपभो यक जौन ॥
चौर्य्यादिकबहुपाप किय पँचयेंने धरिमौन २
येसबमुनिशर्म्माद्विजहिमिलेकहिनिनिजपाप ॥
पुनिनिजअघनाशनलियेकियप्रार्थनाअलाप ३

नारदजी राजा अम्बरीषजीसे बोले कि जातूकर्ण्य के आश्चर्य्यदायक वचन सुनकर नमस्कारकरके राजा दिवोदास बड़े आदरसे ज्ञानी उन मुनिसे बोले कि १ हे विप्रदेव! अब इस दुःखसे यहकैसे छूटे जातूकर्ण्यजी बोले कि हे राजन्! सुनो यक कर्म्म तुमसेकहते हैं जिससे कि यह सुखिनीहोगी २ बहुधा जो प्रकाश करनेके योग्य भी नहींहै वह तुमसे कहेंगे थोड़ाभी अद्भुत कर्म्म सैकड़ों विकर्मोंको नष्ट करताहै ३ जैसे हरिके ध्यानके बलसे समग्र महापाप विनाश होजाताहै वैसेही वैशाखमास में प्रातःकालके स्नान व दानसे घोर पाप विनष्टहोजातेहैं ४ व जैसे सिंहके भ्रमण करने के भयसे हाथी भाग जातेहैं वैसेही वैशाखमास में मेषके सूर्य्यमें प्रातःकाल स्नान करने से व हरिकी स्तुति करने से सब पाप समूह नष्टहोजातेहैं ५ जैसे गरुड़ के तेजसे सर्प्प भागजाते हैं वैसेही सब पाप वैशाखमें प्रातस्समय स्नान करनेसे भागते हैं ६ इससे हे भूपाल! यहदिव्या देवीभी फिर अपनेआप वैशाखका नियमकरके व हरिकास्तोत्र सुन

कर ७ भर्त्ता के सँय्योग को पाकर सुख सम्भोगकी भागिनी होगी वह सुदेव ब्राह्मण भी पाण्ड्यदेशका बलीराजाहोकर उत्पन्नहुआहै ८ क्योंकि उसनेभी तो वैशाखमासमें नर्म्मदाके जलमें प्रभातसमय मास भरतक स्नान कियाथा इससे स्नान करनेसे शुद्ध अपनी इस कन्या को उसी पाण्ड्यदेशके राजाको देओ ९ वैशाखमें स्नानकरने व माधव के स्तोत्रके सुननेसे इसविषयमें संदेह न करो हेभूपाल! इस विचित्र प्रभावको देखो १० यहां व स्वर्ग्ग में पुण्यकर्म्मका फल समानहोता है इससे हे राजन्! दिव्यादेवी अपनी कन्या से यहव्रत करवाओ ११ नारदजी अम्बरीषजी से बोले कि यह सुनतेही राजादिवोदास ने जातूकर्ण्य के कहने के विधान से सब वैशाखमासका स्नानादि अपनी पुत्री से करवाया फिर पांड्यदेशके राजा वीरसेनके साथ १२ जोकि पूर्व्वजन्मका दिव्यादेवी का सुहृद्था उस अपनी कन्या का बिवाह कराया तब पूर्व्वजन्म के सुहृद् वीरसेन के साथ विवाहित होकर दिव्यादेवीने बहुत दिनोंतक नानाप्रकारके भोग विलास व राज्यसुख किये १३ जोकि वीरसेन सुहृदने पूर्वजन्म में कियाथा हे अम्बरीष! यह तुमसे संक्षेपरीति से कुछ वैशाखस्नान माहात्म्य कहा अब और क्या सुनाचाहतेहो १४। १५॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवैशाखमाहात्म्ये चित्रोपाख्यानेत्रिनवतितमोऽध्यायः ९३॥

चौरानबेवां अध्याय॥

राजा अम्बरीष बोले कि पाप प्रशमननाम वह स्तोत्र हम सुना चाहते हैं जिसे स्नानकेपीछे दिव्यादेवी ने श्रवणकिया जिसके श्रवणकरने से पापराशि नष्टहोजाती है १ हम धन्यहुये व अनुग्रहयुक्त हुये जो शुभविधिको आपसे हमनेसुना क्योंकि उसके श्रवणमात्रसे विकर्म से उत्पन्न दोष जातारहता है २ श्रीमधुसूदन देवता के इस वैशाखमास के सुनने से जो बहुत पुण्यहोती है तो कौन आश्चर्य्य की बातहै इस मासमें स्नानकरने से तो सम्पूर्ण पापोंकी राशि नष्ट होतीहै व उसका नाम पढ़ने से माधवजीका लोक मिलताहै ३ वही पुण्य परमपवित्र है कि जिससे गोविन्द के गृहको जानेका यत्नहो

सो तो हम एक वैशाखमासका नाम वा केशवके नामका सार जानतेहैं सुकृतसे लाभहोताहै ४ व मधुसूदनजी के मनमें स्थितहोनेके कारण वह धन्यहै इससे उसी वैशाखके माहात्म्य के बिषयका कुछ पवित्र चरित्र फिर हमसे कहो जो विश्व के उत्पन्न करनेवाला ५ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि हरिके प्रिय राजा अम्बरीष के वचनसुनकर प्रसन्नहोकर महामुनि नारदजी वैशाखस्नान करनेपर उत्सुक भी थे तथापि श्रीमाधव की कथा के रसोंको कहनेलगे ६ नारदजी बोले कि हे महीपाल ! सत्यहै हम मुकुन्द की कथा रसके आलापन करनेवाली विधिको शुद्धमानते हैं व हरिकेभक्त तुम्हारे साथ वैशाखमासके स्नानका धर्म्म अधिक शुद्धहै ७ जिसका जीवन धर्म्मके अर्थहो व धर्म्म हरिके अर्थहो व दिनरात्रि पुण्यके अर्थहो हम निश्चय उसीको पृथ्वी पर वैष्णव मानते हैं ८ अब हे राजन् ! कुछ वैशाखमास से उत्पन्न फल स्नान करने का तुम से कहेंगे क्योंकि विस्तारसहित वैशाखस्नानकाफल तो हमारे पिता ब्रह्माजी भी नहीं कहसक्ते फिर औरकी कौन गणनाहै ९ जिस वैशाख में प्रातःकाल स्नानमात्रसे पापिष्ठ प्रेतलोग मुक्तिको प्राप्त हुये जिन्होंने वैशाखमें नर्म्मदाके जलमें स्नानकियाथा १० कोई ब्राह्मण तीर्थ के प्रसंगसे पूर्व्वकालमें घूमताहुआ जो कि धर्म्मात्मा सत्य बोलनेवाला व पवित्रथा व मुनिशर्म्मा उसका नामथा ११ शम दमसे युक्त शान्ति व सन्तोषसे युक्तथा व पितृकार्य्यों में युक्त रहताथा सब श्रुतिस्मृतिकेही विधानसे कर्म्म करताथा १२ मधुरबाणी बोलनेमें युक्तथा व हरिकेपूजनमें भी युक्तथा वैष्णवोंके संसर्गमें युक्त व त्रिकालके ज्ञानसेयुक्त मुनिथा १३ अपने ब्राह्मण के कर्म्ममें निरत धीर दयालु तपस्या प्रिय परमकृपालु अति मेधावी तत्त्ववेत्ता व ब्राह्मणोंका प्रियथा १४ सो वह ब्राह्मण वैशाख मासमें नर्म्मदा में स्नानकरने को जारहाथा कि उसने अतिदुःखित आगे पांच पुरुषोंको देखा १५ जोकि परस्पर एक दूसरेको नहीं छूतेथे सबके सब अत्यन्त काले २ थे व एक बरगदकी छाया में व्याकुलचित्त होकर बैठे थे १६ पापसे उद्विग्न चित्तहोकर सब दिशाओं की ओर

देखरहेथे उनको देखकर उस ब्राह्मण श्रेष्ठने बड़ी चिन्ता की व फिर बिस्मित भी वहहुआ १७ व विचारनेलगा कि यहां ये महा भयभीतरूप कौनहैं जो बनमें दीन चेष्टाकररहे हैं क्या संगमें हिस्सा लेने देने वाले भयानक बेष चोर हैं १८ परस्पर एकदूसरे से बोलते हैं व सब दुर्ब्बल व काले शरीरके हैं जब तक धीर बुद्धिवाला वह श्रेष्ठ ब्राह्मण बिचारकरे १९ तबतक वे सब यद्यपि दूरथे पर आकर आदर से मुनिसे हाथ जोड़कर व प्रणाम करके पांचके पांचो यह बोले २० कि बड़े कल्याण की वार्त्ता है कि तुम पुरुषोत्तम के चरित्र से युक्त व प्रकाशित हो इससे हम लोग तुमको पूज्य व दयालुओं में मुख्य मानतेहैं अब हमलोगोंकी बाणी सुनो क्योंकि हमलोगोंके मित्रहो २१ पण्डित सज्जनलोग दीनोंकी प्रतिष्ठाहैं जोकि दैवके बशसे बड़ेबड़े पापी हैं ऐसे दुःखियोंके दुःखके हर्त्ता हैं सो यों नहीं दर्शन मात्रसे साधुलोग दीनोंके दुःखहरते हैं २२ मैं पाञ्चाल देशका वीरवाहन क्षत्रियहूं सो शब्दवेधी बाणसे मारमोहके मैंने ब्राह्मणको मारडाला २३ इससे अब शिखासूत्रबिहीन होकर व तिलकसे भी बर्जितहो-कर इस पृथ्वी पर घूमता रहताहूं सो मैंने ब्राह्मण माराहै यहकहते हुये २४ ब्राह्मणके मारनेवाला पापी आता है भिक्षा हमको देओ ऐसा सबतीर्थों में कहता घूमता हुआ मैं यहां आया हूं २५ परन्तु हे मुनिसत्तम ! अबभी वह ब्रह्महत्या नहीं जाती ऐसाकरते २ मुझ को एक बर्ष बीतगया २६ व शोकसे आकुलित चित्तहोकर पापसे भस्म होताजाताहूं व हे ब्राह्मण! जो यहदूसरा देखाईदेताहै इसका चन्द्रशर्म्मा नाम है यह विप्र है २७ हे ब्रह्मन् ! मोहसे जिसकामन आकुल होरहाहै सो यह गुरुघाती है परन्तु मोहसे आकुलचित्त होने के कारण अब यह गुरुघातक कहाताहै २८ यह मगधदेशमें रहता था पर अब इसके स्वजनों ने छोड़ दिया है सौभाग्य से यहभी घू-मता २ यहां आगयाहै २९ शिखासूत्रसे विहीन होनेके कारण विप्रके चिह्नोंसेभी विवर्ज्जितहोगया है मैंने जो इससे इसका वृत्तान्त पूंछा तो सत्यसत्य इस ब्राह्मणने कह दिया ३० कि मैं गुरुकेघरमें रहता था एकदिन क्रोधसे व्याकुलहोकर महामोहमें प्राप्तहोकर मैंने जैसे

अपने गुरुको मारडाला ३१ बस इसी पापसे जलताहुआ यह शोक से पीड़ित होरहाहै व हे स्वामिन् ! यह तीसरा बेदशर्म्मा के नामसे प्रसिद्धहै ३२ सो मोहित होकर एकदिन वेश्याके प्रसंग से ब्राह्मण होकर इसने मदिरापानकरलिया मैंने जो पूँछातो इसने भी अपना जैसाथा वैसा यह चरित मुझसे कहा ३३ सो अपनेही किये हुये पापसे यह मन के तापसे पीड़ित है इसको सब लोगोंने व भार्य्या बन्धुजनोंने भी गृहसे निकाल दिया ३४ उसी पापसे लिप्त होकर घूमते २ यहभीयहां आगयाहै इस चौथेका बिधुर नामहै यह बैश्य जातिकाहै मोहसे गुरुतल्पग होगयाहै ३५ क्योंकि तीन मास तक वेश्याभूत अपनी माताके सङ्ग जो कि विदेह नगरमें रहतीथी भोग करतारहाहै इसके बाद ज्ञाततत्त्व होकर ३६ घूमतेहुये सो इसीदुःख से दुःखितहोकर बहुत दिनोंसे पृथ्वीपर घूमताहुआ यह यहां आया है व यह पांचवां महापापी पापसंसर्गकारी है ३७ प्रतिदिन धनके लोभसे इसने चोरीआदि पापकिये हैं फिर वैश्यहोकर पापों से युक्त हुआ तब स्वजनों ने भी इसे त्यागदिया ३८ तबसे निर्विण्ण मन होकर भाग्यवश नन्द इसका नामहै सो यहभी यहां आकर मिला इसरीति से पांचपापी एक स्थानपर इकट्ठेहोगये हैं ३९ पर भोज-नाच्छादनादिकों से कोई किसीका मेल मिलाप नहीं करता है पर आपस में सब वार्त्तालाप करते हैं भोजनादि व्यवहार एक सङ्गनहीं करते हे महाभाग ! हे द्विजोत्तम ! ४० न तो एक आसनपर बैठते हैं न एक बिछौनेपर सोते हैं इसरीति से दुःखयुक्त होकर हम सब नाना तीर्थों में गये ४१ परन्तु हे मुनिसत्तम ! उन तीर्थोंके जानेसे हमारा घोरपाप नहीं दूरहुआ सो आपको देदीप्यमान देखकर हम लोगों के मनप्रसन्न होगये हैं ४२ इससे हे साधुजी ! तुम्हारे पुण्य दर्शनसे हमलोगों के पापका नाशहोगा यहसब हमलोग कहते हैं हे स्वामिन् ! जैसे हमलोगोंके पापका नाशहो वैसा उपाय कहो ४३ क्योंकि हे वेदार्थ जाननेवाले ! हे विप्र ! आपके करुणा बहुत होतीहै ॥

चौ० । आरत मार्ग्गमाण बहु पापा । तदनु बहुत पछितात सदापा ४४

पात्रा पाप मोहवश सारो । अब हमकहँ द्विजदेव उबारो १

नारदमुनि राजा अम्बरीष से बोले कि उन प्रेतों के ऐसे वचन सुनकर करुणासागर मुनिशर्मा मुनि ४५ विचारकरके दयासागर यह वचन बोले कि मुनिशर्मा ने कहा कि सत्यभाषी तुमलोगों ने अज्ञानसे पापकिये हैं ४६ व पीछेसे पछिताते भीहो इससे इससमय तुमलोग मुझसे अनुग्रह के योग्यहो अब हमारा सत्यवचन सुनो ऊपरको हाथ उठाकर कहते हैं ४७ जोकि हमने मुनियों के समागम में पूर्वसमय अङ्गिराजी से सुना है व वेद व शास्त्रों में देखा है व गुरु के मुखसे सुनाहै ४८ जोकि प्रथम विष्णुकी आराधना तत्त्वसे करता है वह पापों से आप छूटजाता है भोजन करने से और कोई तृप्ति नहीं होती व पितासे अधिक और कोई गुरु नहीं है ४९ व ब्राह्मणों से अधिक और कोई पात्र नहीं है ऐसेही केशवसे परे कोई देव नहींहै व भार्य्या के समान कोई मित्र नहीं है व दयाके समान कोई धर्म्म नहीं है न स्वतन्त्रता के समान कोई सुख है व न गृहस्थाश्रम से श्रेष्ठ कोई आश्रम है न गङ्गाकेसमान कोई तीर्थ है न गोदान के समान कोई दानहै न गायत्री के समान कोई जाप्य है न द्वादशी के समान कोई व्रतहै न सत्यसेपर आचार है न सन्तोष के समान सुखहै ५० । ५२ न वैशाख समान महापाप हरनेवाला कोई मासहै परन्तु जब विधिसे अनुष्ठान कियाजाय तो यह मधुसूदनका प्रिय मास ५३ यहमास गङ्गादिक शुभतीर्थों में विशेष दुर्लभ है द्वादशाब्दादि प्रायश्चित्त ५४ तबतक गर्ज्जते हैं जबतक कि वैशाख मास नहींआता जो हरिमें तत्परहोकर सम्पूर्ण वैशाखमासभर स्नान करताहै ५५ पवित्र हृदयवाला सोभी हरि के पादसे उत्पन्न विमल जलवाली गङ्गाजीमें वही सब्रपापोंका हन्ता पापियों से देखागयाहै ५६ बस अपनेपापके मिटानेकेलिये इससे अधिक और क्या कहना है ५७ सो वैशाखमासमें मेषराशिके सूर्य्यमें प्रतिदिन जो सुख कल्याणकेदेनेवाले नर्मदा के जलमें स्नान करताहै वह पापों से छूटजाताहै क्योंकि वह पापका निवारण करताहै ५८ वैशाखमासमें सब महानदियां दुर्लभहैं उनमें भी गङ्गा यमुना व नर्म्मदा अत्यन्त दुर्लभ हैं ५९ इन तीनोंमें से एक किसीको भी पाकर आदरसहित वैशाख

मासमें जो कोई प्रातःकाल स्नानकरताहै वह पापरहितहोकर हरिपुर को जाताहै ६० इससे हमारे साथ पुण्यके एक साररूप मुनि मनुष्य देवादिकोंसे सेवित नर्म्मदाके निकट जाकर व उसके बड़ी भाग्यसे मिलनेवाले जलमें पाप किये हुये तुम लोग स्नान करनेकेलिये हर्ष से चलकर सब पापके मिटाने के लिये स्नान करो क्योंकि वह सब पापोंको नाशताहै ६१ ऐसा सुनकर तदनन्तर सब पांचों प्रेत हर्षित होकर उस मुनिकेसाथ अपने अद्भुत भाग्यकी प्रशंसा करते हुये मुनिके पीछे २ गये ६२ मुनि शर्म्मा मुनिके पीछे २ वे सब चले जाते थे कि उन्होंने भयभीत आठ पिशाचोंको और मार्ग्ग में देखा जोकि अत्यन्त भयानक रूपथे ६३ व इधर उधर घूमतेहुये बिबिध प्रकारके शब्द कररहेथे व जिनके ऊपरको खड़े आंधे लालेबाल थे व दांत काले व दुबले पेटथे ६४ व वृक्षजल वर्ज्जित व कण्टकयुक्त बनमें सम्मुख दौड़तेहुये चलेआतेथे उनको देखकर मुनिशर्म्मा ने भयसे संविग्नमनसे ६५ नमोनारायणाय यह कहकर रक्ष रक्ष यह कहा ६६ नारायणायनमः ऐसा कथन सुनकर जोकि धर्म्मका एक बड़ा मुख्य निधानहै वे पिशाच मनसे अन्यभावको प्राप्तहोगये सो अपने भाग्यकेही बशसेयोंनहीं ६७ तब विनयसेयुक्त मनवाले उन सबों को देखकर मुनिशर्म्मा ब्राह्मण मधुरबाणी बोले कि तुम लोग कौनहो जो विकृत पुरुषहो ६८ किसने कौनकर्म्म क्रिया है जिससे विकृतताको प्राप्तहुयेहो कैसे तुम सब ऐसे दुःखी व भयंकररूपहो ६९ प्रेतलोग बोले कि हमलोग नित्य क्षुधा व पिपासासे पीड़ित रहतेहैं व नानाप्रकारके दुःख समूहोंसे व्याकुलहैं हे कृतबुद्धे ! हृदय में क्रूरहोगये हैं ज्ञाननष्ट होगयाहै इससे चैतन्यता जातीरहीहै ७० हम कहीं यह नहींजानते कि यह कौनसी दिशाहै व ऐसे मूढ़हैं कि मनुष्यों को मारा करते हैं यह दुःख हमने कहाकि फिर हमको यही दुःख होताहै ७१ जब सूर्य्य दिखाई देतेहैं तो प्रभातसा विदितहोने लगता है पर जबसे नारायणायनमः यह तुमलोगोंका कोमल भाषित सुनाहै ७२ व हे विप्र ! तुम्हारा दर्शन कियाहै तबसे हमलोग शुद्धभावको प्राप्तहुयेहैं हे विप्र ! तुम्हारे दर्शन से व हरिके नाम के

सुननेसे ७३ हम लोग भावान्तरको पाकर दयालु होगयेहैं क्योंकि वैष्णवकादर्शन मनुष्यों के अपयशको विनाशताहै व कुबुद्धिको भी नष्टकरताहै यानी बुद्धिको प्रवीण करताहै ७४ व मनुष्योंको वैष्णवों का दर्शन अधिक प्रतिष्ठित करता है मेरा पर्य्युषितनाम है व इस दूसरे का सूचक नाम है ७५ इसका शीघ्रग व उसका रोधग नाम है व इस पांचयें का लेखक नामहै व इस छठेंका वाग्दुष्टनाम है व सातयें का विदैवतनाम है ७६ व इसका नित्ययाचनक नाम कहाजाताहै आठयें का कष्टदायक नामहै यह सुनकर मुनिशर्म्माने कहा कि कर्म्मसे प्रेत होनेके कारण तुमलोगोंके प्रेतोंके नाम कहांसे आये ७७ इसका क्या कारणहै जिससे कि तुमलोग नाम वालेहो प्रेत लोग बोले कि मैंने आप स्वादुयुक्त अन्नादि सदाखाया व ब्राह्मणको सदा पर्य्युषित अर्थात् बासी जूंठा दिया ७८ व घृत होने परभी बिना घृतके खिलाया इससे मेरा पर्य्युषित नामहुआ व यह मिथ्या वा अमिथ्या पर अवगुणोंको अपने स्वभावसे ढूंढ़ाकरताथा ७९ सबसे सूचितकिया करताथा इससे यह सूचककहाताहै व यह भूखे ब्राह्मणके मांगनेपर शीघ्रही छिपरहताथा ८० हेद्विजसत्तम! इसी कारणसे यह शीघ्रग कहाताहै व यह पापी सदा अपने कोठे के ऊपर बैठकर अकेलेही स्वादु अन्नका भोजन किया करताथा ८१ इसी कारणसे यह कुमनवाला रोधक कहलाता है व जब कोई कुछ इससे मांगता तो यह मौनहोकर पैरके अँगूठे से पृथ्वी खोदने लगताथा ८२ इससे यह पापिष्ठ लेखक कहलाताहै हम लोगों में भी मिलगया व यह गुणीके गुणका द्वेषकरताथा व निर्ग्गुणीको गुणज्ञ कहताथा ८३ जो संज्ञासे रहित हो उसको योगी कहताथा इससे वाग्दुष्ट कहाताहै व यह देवतापितृ मनुष्योंमें सदा नास्तिकभावरखता था ८४ व सत्कर्म्मको कभी नहीं मानताथा इसपापसे यह विदैवत कहाता है व यह सदा मिथ्या याचना किया करता व मिथ्या सदा दुर्ग्गति दिखाता रहताथा ८५ व सबसे अप्रीति रखताथा व लोभी बड़ाथा इससे याचनक इसका नामहुआ इन पूर्व्वकृत पापोंसे नरकयातनाको भोगकरके ८६ हमसब प्रेतलोग तुम्हारे दर्शनसे आज

सुस्थिर हुये यह अपने वृत्तांत का सब सम्भव तुमसे हम लोगों ने कहा ८७ अब जो और कुछ पूँछनेकी तुमको श्रद्धाहोतो पूँछो तुम से सब कुछकहेंगे ब्राह्मण मुनिशर्म्मा बोलेकि पृथ्वीपर जो जीवरहते हैं सब कुछपै कुछ आहार करतेहैं ८८ इससे तुम लोगोंकाभी आहार हम निश्चय करके सुना चाहते हैं प्रेत बोले कि सब प्राणियों के आहार से निन्दित हमलोगों का आहार सुनो ८९ जिसको सुनकर विप्र तुम बारबार नित्य हमलोगोंकी निन्दाकरोगे खखार मूत्र मल व स्त्रियों के भग बगल आदिके मैल व रजसे ९० व पवित्रता रहित गृहों के कूड़ाकरकटसे प्रेतोंका नित्य आहार चलता है जहां स्त्रियां अपने बाललेकर फेंकदेतीहैं व जहांकहीं अच्छीतरह गृहकी सामग्रीधरी नहीं रहती यत्रकुत्र छितराई रहतीहै ९१ व मलिनवस्तुओंके ठौर २ पड़े रहनेसे मलिनता रहतीहै बस वहां प्रेतभोजन करतेहैं जहां माधवजी की पूजा नहीं करते व गृहों में स्त्रियों काही पुरुषार्थहै ९२ व जिन घरोंमें दया व शान्ति नहींहोती बस वहांप्रेत लोग नित्य भोजन करतेहैं जिन घरोंमें बुरी बातें हुआ करती हैं व जहां स्त्रियां पवित्र नहीं रहतीं ९३ व जहां रोज लड़ाई हुआकरती है वहां प्रेत भोजन करतेहैं व जिन घरोंमें जामातृ लोगोंका अच्छी तरह सन्मान होता है व जहां श्रेष्ठ स्त्रियां नहीं रहतीं ९४ व जहां दुर्जनोंकाही संसर्गरहताहै बस वहां हमलोग भोजन करतेहैं जहां हरिकी सेवा पूजा नहींहोती व जहां वैष्णवीकथा नहींहोती ९५ व जहां वैष्णवी प्रीतिनहीं होती प्रेत वहीं भोजन करतेहैं जिनके गृह में इस रीति से नित्यप्रेत भोजन करतेहैं ९६ वे लोगभी शीघ्रही पापसे प्रेतहोजातेहैं व अपने वंशका नाश करतेहैं हे ब्रह्मन् ! अपना भोजन कहनेमें हमको लज्जा आतीहै ९७ क्योंकि इससे पाप तर अन्य कुछ नहीं कहसक्ते अब प्रेतभावसे हम निर्विण्णहुये हैं इससे तुम दृढ़व्रतवालेसे पूँछतेहैं कि ९८ जैसा करनेसे प्राणी प्रेत न हो वा जो करने से प्रेतत्व छूटजाय वह यत्न हम से बताओ मुनिशर्म्मा ब्राह्मणदेव बोले कि एकादशी आदि पुण्यव्रतोंसे अच्युतके कीर्त्तनों से ९९ देवता अतिथियोंकी पूजाओंसे व प्रतिदिन गुरुकी

पूजाओं से व श्रुतिस्मृतियों के कहेहुये आचार व साधुचरितों से १०० इसी तरह श्राद्ध क्रिया दानों से जो कि प्रथम विधिपूर्वक किये जातेहैं दया दान क्षमा शान्ति शील चेष्टा व प्रणामादिकों से १०१ इत्यादि धर्म्मों के करनेसे प्रेत उस कुलमें कभी होतेही नहीं इसमें कुछभी सन्देह नहींहै धेनु विप्र तीर्थ देवता पर्वत अग्निनदी नद पिप्पलवृक्षोंके अनेक प्रकारसे १०२ व वन्दना करनेके योग्य जनों की जो प्रसंगसे भी जाकर वन्दनाकरताहै वह मनुष्य इसलोक में कभी प्रेत नहीं होताहै व जो तुला मकर मेषके सूर्यों में अर्थात् कार्त्तिक माघ वैशाखमासों में विधान से प्रातस्नान करताहै व भक्तिसे दामोदर माधव मधुसूदन देवकी पूजा ५८ क्रमसे जो कोई मनुष्य विशेषरीति से करता है १०३ सो भी गङ्गादि पुण्य तीर्थों में करताहै उसकी अनन्त पुण्यहोती है हज़ारों वर्षमें भी हम सामर्थ होकर उसका माहात्म्य नहीं कहसक्तेहैं १०४ उसके दर्शनमात्र से प्रेतत्वसे मुक्तिहोजाती है कार्त्तिक बलकारी मासहै व दामोदरका प्रियहै १०५ व सब तपस्याओं से उत्तम माधवका प्रिय माघमास है माधवनाम यह वैशाखमास है व इसके देव मधुसूदनजी हैं १०६ यह सबमासों में उत्तम है यह मुनिलोग कहते हैं इस वैशाखमास के सिद्धकरने से सबकार्य्य सिद्धहोते हैं १०७ यह ब्रह्मविद्या है व विश्वकारिणी लक्ष्मी है व इसमास में (मा) लक्ष्मीका वासहै इससे वैशाखका माधव भी नाम है १०८ जैसे सब देवों में माधवके समान कोई देव नहीं है यह निश्चय है ऐसेही सब मासों में माधवमास से श्रेष्ठ और माधवजी के प्रिय कोई मास नहीं है १०९ मुनिशर्म्मा ब्राह्मण प्रेतोंसे बोले कि इस वैशाखमासका माहात्म्यही सुनकर प्रेतयोनि से छूटजाता है पर जो भक्तिसे सुने व विधान से तो क्याकहना है ११० सज्जनों से सम्भाषण करनेसे पुण्य तीर्थ के सेवनकरने से नारायण यहनाम पढ़ने से व उस नामके सुनने से १११ भक्तिपरायण जन सबपापों से छूट जाताहै इससे हे प्रेतो ! आपलोगों की मुक्तिकेलिये हम यत्नकरेंगे ११२ परोपकार से बढ़कर पुण्य नानाप्रकार के यज्ञों से भी नहीं

होती इससे हम हे प्रेतो ! वैशाखमास में नर्म्मदा के जलमें स्नान करनेको वैशाखमें जायँगे ११३ क्योंकि वैशाखमें मेषराशि के सूर्य्य में जो नर इन मनुष्यों के साथ नर्म्मदानदी में प्रातःकाल स्नान करते हैं वे पांचों फिर सबपापों से छूटजाते हैं चाहे मोहसे बहुत से पापोंका ढेर कियेहों ११४ तुमलोग व पांच ये हमारे साथवाले सब नर्म्मदामें दयाकरके स्नानकरने को चलो ११५ तबतक तुम लोग हमारे कहने से शोक छोड़कर इस वनमें टिको जबतक जाकर हम श्रीनर्मदाजी के जलमें अपनी स्नानविधि करके ११६ दया युक्त होकर कुशके नामयुक्त पुरुष बनाकर वैशाखमास में विधि से नर्मदानदीके जल में डुबाकर शुद्धकरदेवें ११७ इसतरह करने से तीनही दिनमें प्रेतयोनि से मुक्ति होजायगी कुशमयी बटुकों के स्नान मात्रही से मुक्ति निस्सन्देह होजायगी ११८ नारदजी ने कहा कि इसतरह कहके व उन प्रेतों से पूजित होकर व उन पांचोंको पीछे चलतेहुये जातेभये ११९ व वहाँ जाकर प्रातःकाल स्नानकरके व नित्यक्रिया करके नामयुक्त कुशके प्रेतबनाकर स्नानकराया १२० देखो पुण्यवान् मुनिके नामयुक्त तीर्थमें स्मरणकीन्हे व स्नानकराने से जल्दी प्रेतयोनि से छूटकर स्वर्गको चलेगये १२१ हे राजन् ! वे पांचो पापी जिससमय जलमें मुनिके वचनसे निमग्नहुये वैशाख मासमें जल्दी विवर्णदेह होकर सुवर्णकीसी दीप्तिसे शोभितहोनेलगे १२२ फिर मुनिशर्म्माने पापनाशक स्तोत्रसुनाया जिससे सबजनों के देखतेही देखते उत्तम कान्तियुक्त होगये १२३ स्नानमात्र से निर्मल देहवाले प्रेतोंको वहाँके मनुष्य पापलगने की शंकासे उनका स्पर्श न करतेभये १२४ तब मुनिशर्म्मा के अनुरोधसे धर्मशास्त्र के प्रमाणयुक्त यह आकाशबाणीहुई कि ये निष्पापहैं १२५ वैशाख में भगवान् में ध्यानलगाकर इन्होंने स्नानकिया है व आदरपूर्वक पापनाशक स्तोत्रसुना है १२६ क्या चित्रहै जोकि ये पापसमूह से छूटगये यह तो सब पापोंका प्रायश्चित्त है १२७ जो प्रातःकाल वैशाखमास में तीर्थमें पैठे फिर प्रेतपापिष्ठ तो नाममात्र से स्नान करायेगये हैं १२८ व पुण्यात्मा मुनिशर्म्मा ने प्रेतभाव से छुटादिया

है १२९ ऐसी अद्भुत आकाशवाणी सुनके उसीक्षण मनुष्य पांचों प्रेत व मुनि व वैशाखमास व नर्मदा की प्रशंसा करनेलगे १३० इसके बाद राजा पापनाशक स्तोत्रसुनके कि जिसको सुनकर मनुष्य पापसमूहों से छुटजाता है १३१ व जिसके सुननेही से पापी शुद्ध होजाते हैं और भी अज्ञान सम्भव इस पापने मुक्तहुये हैं १३२ परस्त्री परधनलेने व जीवहिंसादि पापोंका प्रायश्चित्तस्तुतिहै १३३ अब स्तोत्र कहते हैं विष्णवे विष्णवे विष्णवे विष्णवे विष्णवे नित्य नमस्कार है व चित्तमें टिकेहुये अहङ्कार में प्राप्त विष्णुके प्रणामहैं १३४ अनन्त, ईश, अव्यक्त, व्यक्त, अपराजित, ईड्य, अनादि, अनिधन, विभु विष्णुके प्रणाम है १३५ जो विष्णु हमारे चित्तमें प्राप्तहैं व जो विष्णु अपने आप बुद्धिमें गतहैं व जो विष्णु अहङ्कार में टिकेहैं व जो विष्णु हममें स्थितहैं १३६ व जो विष्णु स्थावर जङ्गम सबके भीतर टिकेहुये कर्तृरूप होकर सबकार्य्य करते हैं उन विष्णुकी चिन्ताकरने से तीन पाप नाशहोवें १३७ ध्यान करने से जो विष्णु पाप हरते हैं व स्वप्नमें जो भावनाको हरते हैं उन उपेन्द्र प्रणत पीड़ाहरनेवाले हरिविष्णुके प्रणाम करते हैं १३८ इस निरालम्ब जगत् में डूबतेहुये लोगोंको व अपनाहाथ अवलम्बन कराने वाले परसेपर अच्युत मधुसूदन उन विष्णुके प्रणाम करते हैं १३९ हे सर्व्वेश्वर ! हे विभो ! हे परमात्मन् ! हे अधोक्षज ! हे हृषीकेश! हृषीकेश हृषीकेश तुम्हारे नमस्कारहै १४० नृसिंह, अनन्त, गोविन्द, भूतभावन, केशव, दोबारका कहा दोबारका किया पाप नाश करो तुम्हारे नमस्कारहै १४१ अपने चित्तके बशीभूत हमने जो दुष्ट कर्म्म चिंतितकिया है उस महाउग्र न करने वाले कर्म्म को खींचो व क्षमाकरो हे केशव! १४२ हे ब्रह्मण्यदेव गोविन्द परमार्थपरायण जगन्नाथ! जगद्धातः! हे अच्युत! हमारे पापको शान्तकरो १४३ जो अपराह्ण सायाह्ण मध्याह्ण व रात्रि में काय बचन मनसे बिना जाने हुये हमने पापकियाहो १४४ व हे हृषीकेश माधव! जो जानकरभी कियाहो वह तुम्हारे नामोच्चारण से सब हमारा पाप क्षय होजावे १४५ हे हृषीकेश! शरीरसे कियेहुये हमारे पापको तुम नाशकरो व

मानसपापको पुण्डरीकाक्ष तुमनशाओ व माधव तुम बाचक व भीतरका पापनशाओ १४६ खाते हुये पीतेहुये सोतेहुये ठहरेहुये जागतेहुये जो पाप मन बचन बाणी से हमने कियाहो १४७ चाहे बहुत हो वा थोड़ाहो वह दुर्य्योनि नरकमें पहुँचानेवाला पाप बासुदेव यहनाम कीर्त्तनकरनेसे सब नष्ट होजावे १४८ परब्रह्म परंधाम परमपवित्र इन विष्णुके कीर्त्तनकरने से वहपाप नष्ट होजावे १४९ जिस गन्ध स्पर्शादिवर्जित विष्णुपद को पाकर पण्डित लोग नहीं निवृत्तहोते उसपदको सबको पहुँचाओ हे हरे! वह सबपापोंको नाश करे १५० यह पाप प्रशमन स्तोत्र जो नर पढ़े वा सुने वह शरीर मन बचनसे कियेहुये पापोंसे छूटजाय १५१ व पाप ग्रहादिकों से निकलकर विष्णुके परमपदको जावे इससे पाप करनेपर इसस्तोत्र के जपकरनेसे सबपापोंका मर्द्दन होताहै १५२ यहस्तोत्र पापकरने वालेके पापसमूहोंका परमप्रायश्चित्त है सो उत्तम मनुष्योंको पढ़ना चाहिये व स्तोत्रमय प्रायश्चित्तोंसे स्तोत्रोंसे व व्रतोंसे पापनष्टहोता है १५३ इससे भुक्ति मुक्ति के लिये व कार्य्योंकी सिद्धिके लिये सब स्तोत्रमय प्रायश्चित्त करने चाहिये इससे पूर्व्वजन्मके इकट्ठेकियेहुये यहांवहांके पाप १५४ इसस्तोत्रके श्रवणमात्रसे नष्ट होजातेहैं यह स्तोत्र पापवृक्षके काटनेके लिये कुठारहै व पाप इन्धनके लिये दावानल है १५५ व पापराशि अन्धकार समूहके ध्वंसकरने को यह स्तोत्र सूर्य्यहै यह हमने तुम्हारे हितके लिये व लोगोंकी अनुकम्पा के लिये प्रकाशित किया है १५६ यहस्तोत्र रहस्य हमने अपने पिताके मुखमे पाया है यह पुण्य इतिहास जो मनुष्य सुनता है हे राजन्! १५७ उसकी पुण्यका माहात्म्य अपने आप श्रीहरिकहने को समर्थ हैं हे महाराज! तुम्हारा कल्याणहो हम अब शीघ्र गंगा स्नानकरनेको जातेहैं १५८ क्योंकि यहमहान् वैशाखमास आगया है जो श्रीमाधव को अत्यन्त प्रिय है १५९ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवैशाखमाहात्म्येभाषानुवादेनारदअम्बरीषसंवादेप्रेतोपाख्यानेपापप्रशमनंनामचतुर्नवतितमोऽध्यायः ९४ ॥

पंचानबेवां अध्याय ॥

दो० । पंचानबे महँ स्नान विधि हरि पूजन प्रस्ताव ॥
कह्यो विष्णु मन्दिर रचनफलसबभांति बनाव १

सूतजी शौनकादिकों से बोले कि चलनेपर उद्यत नारद मुनिके नमस्कार करके राजा अम्बरीषजी ने वैशाख के स्नानदान क्रियाके उचित विधि पूँछा १ कि हे मुनिजी! इस वैशाखमासमें कौन विधि है व कौन अधिकतप है कौन दान है स्नान कैसे कियाजाता है व केशवका पूजन कैसे होताहै २ हे विप्रर्षे! कृपासे कहो क्योंकि तुम सर्व्वज्ञहो व हरिके प्रियहो व विशेष रीतिसे पूजाविधि व तीर्थतप कहो ३ नारदमुनि बोले कि वैशाखमास में जब मेषकी संक्रान्तिके सूर्य्य आवैं तो यत्नसे किसी महानदीमें वा किसीकुंडमें वा तड़ागमें वा किसी झरनेमें ४ अथवा किसी देवखातमें जैसा कुछ जलाशयप्राप्त हो स्नानकरे डिग्घी कुआं बावली आदिमें नियतात्मा होकर हरिका स्मरण करतेहुये स्नानकरे ५ चैत्रमासकी शुक्ला एकादशी को उपवासकरे अथवा उसी चैत्रकी पूर्णमासीको उपवासकरे अथवा जिस दिन मेषकी संक्रांतिहो उस दिन व्रतकरे ६ उसी दिन से ब्राह्मणों की आज्ञासे वैशाखस्नानके नियमकरे प्रथम प्रातःकाल स्नानकरके मधुसूदनजी की पूजाकरे ७ मेषकी संक्रान्ति में सब वैशाखमास हम प्रातस्स्नानकरेंगे इससे मधुसूदनजी प्रसन्न होवें ८ मधुसूदन के प्रसादसे व ब्राह्मणोंकी अनुग्रहसे प्रतिदिन वैशाखस्नान की पुण्य-हमारी निर्विघ्नहो ९ हे मुरारे! मधुसूदन वैशाखमें मेषराशिके सूर्य्य में प्रातस्स्नानसे यथोक्तफल देनेवाले होओ हे हमारे नाथ! १० हे मधुसूदनजी! जैसे तुमको वैशाखमास प्रिय है वैसेही इसमें प्रातस्स्नान करने से फलदायकहोओ व पापनाशकहोओ ११ ऐसा उच्चारण करके प्रथम उस तीर्थ के तीरपर पादधोवे मौनरहकर नारायणदेवका स्मरण करताहुआ विधान से स्नानकरे १२ जब तीर्थकी प्रकल्पना करनेलगे तो बुद्धिमान्‌को चाहिये कि यह मूल मन्त्रपढ़े ॐनमो नारायणाय बस इसी मूलमन्त्रको पढ़े १३ हाथों में कुश धारण कियेहुये प्रयतहो आचमन करके प्रथम शुद्धहोवे चा-

रहाथका लम्बा व बारही हाथका सबओरसे चौड़ा तीर्थ कल्पित करे १४ उसमें हाथ धोकर मनुष्य इस मन्त्रसे गङ्गाजीका आवाहन करे कि तुम विष्णुभगवान् के पाद्से उत्पन्नहुईहो विष्णुसे सँय्युक्त होकर तुम वैष्णवी १५ जन्मसे लेकर मरण पर्य्यन्तके पापसे हमारी रक्षाकरो वायुदेवने कहाहै कि तुममें साढ़ेतीनकरोड़ देवतालोग बसते हैं १६ आकाश भूतल व अन्तरिक्षमें जितने देव हैं हे गङ्गे ! तुममें सब निवास करते हैं नन्दिनी आदि तुम्हारे नाम प्रसिद्ध हैं देवताओं के यहाँ नलिनी भी नामहै १७ दक्षा पृथ्वी विहगा विश्वगाथा शिवप्रिया विद्याधरी महादेवी व लोकपावनी १८ क्षेमावती जाह्नवी शान्ता शान्तिप्रदायिनी इतने पुण्यनाम स्नानके काल में कीर्त्तनकरे १९ तो त्रिपथगामिनी गङ्गाजी वहाँ सन्निहितहोवें दोनों हाथजोड़कर इन नामोंको सातबारजपे २० फिर वह जल शिरपर चार पांच वा सातबार छोड़े फिर विधानपूर्व्वक अङ्गों में मृत्तिका लगाकर स्नानकरे २१ मृत्तिका लगानेका यह मन्त्र है कि अश्वक्रान्तेरथक्रान्तेविष्णुक्रान्तेवसुन्धरे । मृत्तिकेहरमेपापंयन्मयादुष्कृतं कृतम् ॥ अर्थात् हे वसुन्धरे ! तुम घोड़ों से दबाईगईहो व रथोंसे दबाईगईहो व विष्णुसे दबाईगईहो इससे अपनी मृत्तिकासे हमारे कियेहुये दुष्कृत पापोंकोहरो २२ फिर यह मन्त्रपढ़े कि उद्धृतासिवराहेणविष्णुनाशतबाहुना। नमस्तेसर्व्वलोकानाम्प्रभवारिणिसुव्रते ॥ अर्थात् सौ बाहों से विष्णु वाराहजी ने तुमको उठाया है हे सुव्रते ! हे सब प्राणियों के उत्पन्न करनेकेलिये अरिणीरूपिणि ! तुम्हारे नमस्कार है २३ इसप्रकार प्रार्थनाकरके स्नानकरे फिर विधानसहित आचमन करके बाहर निकलकर शुद्ध धोती अँगोछा धारणकरे २४ तदनन्तर तीनोंलोकों के तृप्तहोने के लिये तर्प्पणकरे तदनन्तर आचमन करके विधिसे जिसमें पहले ब्रह्माको तृप्तकरे फिर विष्णुको फिर रुद्रको फिर प्रजापतिको २५ फिर देवताओं को व यक्ष व नाग व गन्धर्व व अप्सरा व असुर व क्रूर व सर्प्प व सुपर्ण व तरु व जन्तु व खग २६ व विद्याधर व जलंधर व आकाशमें चलनेवाले व जे जीव निराधार हैं व जे पापकर्म में रतहैं २७ तिनके तृप्तिकेलिये हम जल

देतेहैं देवताओं को यज्ञोपवीतवाला व तर्पणकरे व जिसका यज्ञोपवीत न भयाहो व मनुष्य २८ मनुष्योंको भक्तिसे तर्पण करसक्ता है फिर ब्रह्माके पुत्र ऋषियों को सनक सनन्दन तीसरे सनातन को २९ सनत्कुमार व कपिल व आसुरि व बोढु व पञ्चशिखा इन सबको जलदेकर तृप्तकरे ३० फिर मरीचि, अत्रि, अङ्गिर, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, प्रचेता, बसिष्ठ, भृगु, नारद ३१ इसतरह देवता व ब्रह्मऋषियों को सब सव्यसे जलदेकर तृप्तकरे व इसकेबाद अपसव्य होकरकरे सव्यगांठि पृथ्वी में स्पर्शकरके ३२ फिर अग्निष्वाता व सौम्य व हविष्मान् व उष्मप व कव्यानल व बर्हिषद व आज्यप ३३ इसतरह तिल जल चन्दन से भक्तिकरके पितरों को तृप्तकरे फिर यमराज व धर्मराज व मृत्यु व अन्तक ३४ फिर वैवस्वतको व काल व सर्वभूतक्षय व उदुम्बर व दध्न व नील परमेष्ठी ३५ व वृकोदर व चित्र व चित्रगुप्तके अर्थ जलदेकर फिर कुशग्रहण हाथमें करके पितरोंको तृप्तकरे ३६ परन्तु पित्रादिकोंको व मातामहादिकोंको नाम व गोत्रकहकर इसतरह विधिसे तर्पणकरके फिर यह मन्त्रपढ़े ३७ ये बन्धुहैं व ये बन्धु भाइयों से हीनहैं व हमसे जललेने की कांक्षा करते हैं वे सब सम्पूर्ण तृप्तिको प्राप्तहोवें ३८ आगे कमलका पत्र लिखे उसपर अक्षत सुन्दर पुष्प जल लालचन्दन से ३९ यत्नसे अर्घ्यदेकर सूर्य्य के नामोंका कीर्त्तनकरे जैसे कि विष्णुरूप तुम्हारे नमस्कार है ब्रह्मरूपी तुम्हारे नमस्कार है ४० सहस्र किरणवाले तुम्हारे नमस्कारहै सब तेजवाले हे सूर्य्य! तुम्हारे नमस्कारहै रुद्र शरीर भक्तवत्सल तुम्हारे नमस्कार है ४१ कुण्डल व बहुंटाको धारणकरनेवाले हे पद्मनाभ! तुम्हारे नमस्कार है व हे सोतेहुओं के जगानेवाले! हे सर्व लोकेश! तुम्हारे नमस्कार है ४२ हे सत्यदेव! तुम्हारे नमस्कार है हे भास्करजी प्रसन्नहोवो! क्योंकि सुकृत व दुष्कृत सबसदा तुमदेखते रहतेहो ४३ दिनके करनेवाले व प्रकाशके करनेवाले तुम्हारे नमस्कार है इसतरह सूर्य्य के नमस्कार करके प्रदक्षिणाकरे ४४ फिर ब्राह्मण व गौ व सुवर्णको स्पर्श करके अपने घरकोजावे वहाँ आश्रम के रहनेवालों को पूजन करके फिर

प्रतिमाओं की पूजाकरें ४५ पहले नियतात्मा गृहस्थ भक्तिसे गोविन्ददेव की यथाबिधि उभयत्र पूजाकरे ४६ व जो कोई वैशाखमास में मधुसूदनजीकी विशेष पूजाकरताहै तो जबतक वर्ष समाप्तहोताहै तबतक मानों माधवजी की पूजाकरता है ४७ वैशाखमास में मेषराशि के सूर्य्य होनेपर केशव भगवान् के लिये केशवव्रतोंका सञ्चय करे ४८ तिल घृतादि अनेक दानदेवे जोकि कोटि जन्मों से उत्पन्न पापों के नाशक होतेहैं ४९ मनोवाञ्छित फल सिद्धिके लिये जल अन्न शर्करा गौ तिल धेनु इत्यादि दान वित्तकी शठता छोड़कर देवे ५० वैशाखमासभर जो प्राणी प्रातस्स्नान करके जितेन्द्रिय रहता है व जपकरतेहुये हविष्यान्न खाताहै वह सबपापों से छूटता है ५१ व जो एकबार भोजन करताहै अथवा नक्तव्रत करताहै व अयाचित अन्नादि खाताहै वह निरालस वैशाख में ऐसाकरके सब वाञ्छित पाताहै ५२ वहभी पापोंसे छूटजाताहै वैशाखभर बाहर नद्यादिकों में जो स्नानकरताहै व हविष्य भोजनकरता है ब्रह्मचर्य्यसे रहताहै भूमिपर शयन करताहै व नियमसे रहताहै ५३ व्रत दान जप होम व मधुसूदनका पूजनकरता है वह सहस्रजन्मों के उत्पन्न भी पापसमूहको भस्मकरताहै ५४ जैसे माधवजी के ध्यानसे पापनष्ट होजाते हैं वैसेही वैशाख में नियमसे स्नानकरनेसे नष्टहोते हैं ५५ पर जहांतक हो किसी तीर्थ में सूर्य्योदयके प्रथम प्रतिदिन स्नानकरे व तिलसहित जलसे तर्प्पणकरे व धर्मघटादिकोंका दान देवे व मधुसूदनका पूजन करे ५६ यहराब मधुसूदनकी सन्तुष्टताके लिये वैशाखमास में करे तिल जल सुवर्ण अन्न शर्करावस्त्र व आभरण ५७ आसनजूता छत्र जलकुम्भ ब्राह्मणों को देवे व भक्तिसे तीनों सन्ध्याओं में ईश मधुसूदन देवकी पूजाकरे ५८ तो वह विमल लक्ष्मीसे साक्षात् युक्तहो जाय सुवर्ण तिल व पात्रों से अपनी शक्तिके अनुसार ब्राह्मणों को प्रतिदिन तृप्तकरे ५९ व जलपात्रों से भी तो ब्रह्महत्याको नष्टकरे वैशाखमासमें जो एकाग्रचित्तहोकर नद्यादिक में प्रातःकाल स्नान करके ध्यानसे ६० इस तरह भगवान्को ऋतुमें हुये फल पुष्पोंसे पूजन करके फिर पाखण्ड व बकवाद छोड़कर शक्तिके माफिक ब्रा-

ह्मणोंकी पूजाकरे ६१ वस्त्र गोदानरत्नधनसञ्चयोंसे ब्राह्मणोंको तृप्त करे व थोड़े धनवाला यथाशक्ति थोड़ा२ देतारहै ६२ व जो बनाय निर्द्धन पुरुषहो वह माधवमासमें माधवकी पूजा फूलों से योंहीकरे ६३ वह सब पापोंसे विनिर्म्मुक्तहोकर अपने सौ पुस्तके पितरों को तारे व सैकड़ों सहस्रों जन्मोंतक शोकभागी वह न होवे ६४ न उस को व्याधिसे भयहो न दरिद्रता न बन्धनसे भयहो व वह जन्म २ में विष्णुभक्तहोकर धन्य कहावे ६५ व हे वीर! जबतक युगोंके एक सहस्र एकसै आठ वर्षबीतें तब तक स्वर्ग्ग में वास करे फिर जन्म पाकर राजाहोवे ६६ व राजा होने पर सुखपूर्व्वक विविधप्रकार के भोगोंको भोगकर माधवके प्रसादसे फिर माधवमें लीनहोजावे ६७ हे राजन्! सुनो संक्षेप से माधवका पूजन कहते हैं जो कि वैदिक तांत्रिक व मिश्रितके भेदसे तीन प्रकारका है व सब पापनाशक है ६८ अनन्तपार अनन्तके पूजाकाण्डका अन्त नहीं है इससे संक्षेप रीतिसे यथावत् क्रमसे वर्णनकरेंगे ६९ वैदिक तांत्रिक व मिश्र श्री विष्णुका तीनप्रकारकायज्ञ है सो तीनोंबाञ्छित विधियों से हरिकी पूजा करनीचाहिये ७० वैदिक व मिश्रिक ब्राह्मणादिकोंको करना चाहिये व जो शूद्र विष्णुका भक्तहो तो वह तांत्रिक पूजन करे ७१ वेदके कहनेके अनुसार ब्राह्मणत्वपाकर पुरुष विधिसे ब्रह्मचर्य्य हो कर व ध्यानसे जैसे उन विष्णु भगवान्‌को पूजे ७२ स्थण्डिलमें व अग्निमें व सूर्य्य में व हृदयमें व ब्राह्मणमेंपूजनकरे व भक्तिसे द्रव्य करके गुरुकी पूजाकरे फिर गुरुकी आज्ञासे ७३ दांत धोकर सब अंगशुद्ध करनेके लिये प्रथम विधिपूर्व्वक स्नानकरे सो वेद वेदांगों के मंत्रों से व तन्त्रके मन्त्रोंसे अथवा गुरुसे सुनेहुये अन्यमंत्रों से मृत्तिका ग्रहणादि करके स्नानकरे ७४ व वेद वा तन्त्रके कहे हुये मन्त्रों से सन्ध्योपासनादिक कर्म्म करे फिर पूजा के अन्तमें सबके पावन करनेवाला संकल्पकरे ७५ (शैली) पत्थरकी (धातुमयी) सुवर्ण चांदी पित्तलादिकी (लौही) लोहकी (लेप्या) दीवारआदि मेंलिखीहुई (लेख्या) चन्दनादिसे पत्रादि परखिंचीहुई (सैकती) मृत्तिका बालूआदिकी (मनोमयी) मानसी (मणिमयी) पद्मरा-

गादि मणियोंकी वस प्रतिमा ये आठ प्रकारकीहोती हैं ७६ स्थापितकी गई व जीव मन्दिर चल व अचल दोप्रकारकी पूजाहै माधवजीके पूजन में स्थिर मूर्त्ति में आवाहन व बिसर्ज्जन नहीं होता ७७ व चलमें बिकल्प है व स्थण्डिलमें दोनों होतेहैं जो अविलेप्य है उसमें स्नान कराया जाताहै व अन्यत्र परिमार्ज्जन होताहै ७८ निष्कपट होके प्रतिमादिकोंमें प्रसिद्ध द्रव्योंसे पूजाकरे व भक्तको चाहिये यथा लाभसे केवल भक्ति भावसे पूजाकरे ७९ स्थण्डिलमें भी यही बिधिहै व अग्निमें साकल्य घीखीर से पूजाकरे ८० सूर्य्य में अभ्यर्हण श्रेष्ठहै व स्थण्डिलमें जलादिकोंसे व हरिको जो भक्त श्रद्धासे जलही देदेवे तो वही श्रेष्ठ है ८१ जो चन्दन व धूपदीप व पुष्प व अन्नादिकों से हरिकी पूजाकरे तो क्या कहनाहै शुचिहोकर सामग्री इकट्ठाकरके कुशासनमें बैठकर ८२ उत्तरपूर्व मुख बैठकर सम्मुखसे पूजाकरे न्यासकरके स्थापिताकी हुई हरिकी पूजाकोहाथ से स्पर्श करे ८३ कलश व प्रोक्षणीपात्र यथा योग्य धरे फिर जल से देवताका स्थान व सामग्री व अपने को ८४ सिंचन करके तीन पात्रोंमें धरीहुई सामग्रीको जलसे सिंचनकरे फिर पाद्यअर्घ्य आचमनके वास्ते तीन पात्रदेवे ८५ फिर शिर व शिखाको गायत्री से अभिमंत्रितकरे व वायु अग्निसे सिद्ध पिण्डमें हृदय कमलमें टिकी मूर्त्तिमें ८६ नादान्तमें सिद्ध भावनाको प्राप्त सूक्ष्म कलाको ध्यान करे व आत्मभूत होकर पिण्ड में व्याप्त होजाने पर तन्मय होकर पूजनकरे ८७ इसतरह आवाहन करके व पूजादिकोंमेंस्थापनकरके अङ्गन्यस्तकरके पूजनकरे व पाद्यअर्घ्य स्नान अर्हणादि उपचार कल्पितकरे ८८ फिर नवधर्म्मादिकोंसे भगवान्का आसन कल्पना करके हे भूपाल ! स्नान भूषण श्रेष्ठ ये प्रतिमामेंही होसक्ते हैं पूजा के समय में अष्टदल कमल बनावे उसकी कर्णिकाकी किञ्जल्क से उज्ज्वल ८९ वेद तन्त्र दोनोंसे श्रीहरिकी सिद्धि के लिये सुदर्शन पाञ्चजन्य गदा खड्ग बाण धनु हल ९० मुशल कौस्तुभमणि वैजयन्ती माला श्रीवत्स इनकी पूजाकरे नन्द सुनन्द गरुड़ प्रचण्ड व चण्ड ९१ महाबल बल मुकुन्द कुमुदेक्षण दुर्ग्गागणेश व्यास विष्वक्सेन

गुरु व देवतालोग ९२ इनको अपने २ स्थान पर विष्णुकी ओर मुखकिये बैठेहुये प्रोक्षणादिकोंसे पूजे व चन्दन खसखस कपूर कुंकुम अगुरु से सुगन्धितकरे ९३ जो विभवहो तो इत्यादि वस्तुओं से मिलेहुये जल से मन्त्रपढ़कर स्नानकरावे मन्त्रोंसे स्वर्ण घर्म्मानुवाक महापुरुष विद्यासे पूजे ९४ पुरुषसूक्तसे व सामवेद केनीराजनादिकोंसे वस्त्र उपवीत भूषण तुलसीपत्र पुष्पमाला सुगंध लेपनसे ९५ प्रेम व विष्णुभक्ति से यथोचित भूषितकरे पाद्य आचमनीय गन्ध पुष्प अक्षत ९६ व विशेष गन्ध पुष्पादिपूजा सामग्री आदि श्रद्धा से पूजकदेवे गुड़ पायस घृतशष्कुली मालपुआ व लड्डू ९७ खीर दधि नूतन घृत इत्यादिकी नैवेद्यलगावे फिर उबटन उन्मर्द्दन दर्प्पण दन्तधावन अभिषेक ९८ अन्नादि गीत नृत्यादि ये सर्व्वदा दिन रात्रि होने करने चाहिये फिर बिधिसे कुण्ड बनाकर व उसके आगे मेखला से आच्छादित वेदी रचे ९९ फिर कुण्ड में अग्नि स्थापन करके हाथके जलसे आवरणकरे फिर परिस्तरण करके पर्य्युक्षण करके विधिपूर्व्वक समिधा धरे १०० उसका क्रम यों है कि प्रोक्षणी के जलसे सब सामग्री को सींचकर व फिर प्रोक्षणी से घृत छिनके फिर तपायेहुये सुवर्ण के समान चमकतेहुये व शङ्ख चक्र गदा पद्मों से १०१ युक्त चतुर्भुज शान्त कमल के किञ्जल्कके रंगकावस्त्र ओढ़े प्रकाशित किरीट करक करधनी श्रेष्ठअङ्गद १०२ श्रीवत्स से शोभित वक्षस्स्थल कौस्तुभमणि से शोभित वनमाला पहिने सदा हविष्य व घृत निवेदनकरके देवता का ध्यान करे १०३ प्रथम आज्यभाग दुग्धजल देकर फिर आज्याहुति हवि देवे इसप्रकार पूजन करके व नमस्कारकरके फिर पार्षदों के लिये बलिदेवे १०४ सो सब गणोंको मूल मन्त्रोंसेही देवे ॐ नमोनारायणाय यह मूलमंत्र है फिर आचमनदेकर बचाहुआ उच्छेष जल विष्वक्सेन को देवे १०५ फिर मुखको सुगन्धित करनेके लिये विधिपूर्व्वक कर्प्पूरादि सुगन्धित बस्तुयुक्त ताम्बूलदेवे व समीप गाय बजाकर स्पष्ट शब्दोंसे १०६ व हरिकी कथा सुनाते सुनतेहुये एक मुहूर्त्तभर स्थितहोवे फिर ऊँचे नीचे पौराणिक व प्राकृत स्तोत्रों से

१०७ स्तुतिकरे व कहे कि हे भगवन्! इस स्तुतिको सुनकर प्रसन्नहोओ यह कहकर दण्डवत्प्रणाम करे शिर अपना उनके पैरोंपर धरदेवे दोनों हाथ आपसमें मिलाकर कहे कि १०८ हे ईश! मृत्यु ग्रह संसार सागर से भयभीत व प्रपन्न मेरी रक्षाकरो ऐसाकहकर शिरपर अञ्जलिधरके श्रीहरिको पुष्पाञ्जलि देवे १०९ फिर जो उद्वास न करने के योग्य मूर्त्तिहो तो उद्वास न करे ज्योति में ज्योति मिलादेवे व जो शैलीआदि प्रतिमाहो तो श्रद्धावान्होकर जबतक चाहे पूजे ११० व सबप्राणियों में आत्मा में स्थित श्रीविष्णु की पूजा सदाकरे इसरीति से क्रियायोग के मार्गों से पुरुष वैदिक व तांत्रिक मन्त्रोंसे १११ हरिकीपूजा करतेहुये वाञ्छितसिद्धिको पाता है यदि विभवहो तो उसीप्रतिमाको कोई दृढ़ मन्दिरबनवाकर उस में स्थापितकरदेवे ११२ उस मन्दिरके निकट पुष्पबाटिकारम्य लगावे व पूजादिक यात्रा चलने के लिये कुछ महाधन इकट्ठा करदेवे जिससे वह महापर्वों में व हमेशह चलीजावे ११३ खेत बाजार पुर ग्रामादि दे देवे जिससे उस मन्दिरकी जीविका चलती रहे व वह पुरुष भगवान् के निकट प्राप्तहोता है क्योंकि प्रतिष्ठासे सार्व्वभौम होता व मन्दिरबनादेने से तीनोंभुवन का फलपाताहै ११४ पूजादि करनेसे ब्रह्मलोकको जाताहै व तीनों करनेसे हरिकी समताको प्राप्तहोताहै व यह सब निरपेक्ष भक्तियोगसे मिलता है ११५ व जो इसप्रकार हरिकी पूजाकरता है वह भक्तियोगको पाता है ११६ ॥

नारदजी राजा अम्बरीष से बोले कि जो शरीर कृष्णचन्द्र के आगे प्रणामकरनेसे धूलिलगजानेसे धूमिलहोजाता है वह शुभहै व तप करनेसे पायेहुये सुन्दर रुचिर वे नेत्रहैं जिनसे श्रीहरि देखे जायँ व वहबुद्धि विमलचन्द्र व शङ्खकेसमान धवलहै जो माधव में व्याप्तहै व हे राजन्! व वहीजिह्वा मृदुभाषिणीहै जो बार बार नारायणकी स्तुतिकरती है ११७ मूलमन्त्रसे व गुरुके बतायेहुए मार्ग से स्त्री शूद्रादिकभी पूजनकरें व वैष्णव अन्यमार्गोंसे पूजाकरे ११८ यहसब पावन माधवजी का पूजन तुमसे कहा इससे हे राजन्! तुम वैशाखमास में विशेष पूजन करो ११९ सूतजी बोले कि इसप्रकार

नारदजीका पवित्र पुण्य व बिचित्र बचनसुनकर हाथजोड़ प्रणाम करके भागवत्प्रधान कौतुकी राजा अम्बरीषजीने पूँछा १२० अम्बरीषजी ने कहा कि हम समस्त भूमण्डल के महाराजाधिराज हैं इससे हमारी आज्ञा कहीं हतनहींहोती व सबदेवों में मुख्य श्रीविष्णुके सेवी हैं व गोविन्दके पादमें चित्तदियेरहते हैं व अपने चित्त से सब ब्राह्मणोंको सन्तुष्ट कियेरहते हैं १२१ व विख्यातराजाओं के उचित हमारावंश रत्नहै व निरन्तर हमारी धर्ममें रुचिरहती है व यशस्वी हैं सुन्दरता शूरतादिक व दान देनेका हमारा स्वभाव है व हमारे सुपुत्र हैं व शत्रुवर्गको हमने जीतलिया है १२२ सो किसपुण्य से हम ऐसे पवित्रबुद्धि हुयेव ऐसे गुणशोभाके व श्री अधिकारीहुये व फिर लक्ष्मी के समान पुण्यमूर्त्ति यह दीप्तिमती कान्ता हमने कैसे पाई १२३ यह सब हमारासुकृत पूर्व्वजन्मका कियाहुआ है दयानिधान मुनिजी! हम से बताओ तुम सर्वज्ञहो किसपुण्यसे यह सब हुआ १२४ नारदजी बोले कि यह अन्यजन्म में रूपवती नाम वेश्या थी अब इससमय तुम्हारी भार्य्याहुई है जोकि सत्यबाणी बोलती है व अति सुन्दरी है १२५ यह अपने भाग्यसे पायेहुये वेश्याधर्म्म से निर्व्वाह करती थी व एकद्विजकी आज्ञासे सदा विमल शुभधर्म कियाकरती थी १२६ व देवदास इस नामसे प्रसिद्ध आप स्वर्णकारथे सो पूर्व्व जन्ममें उसकी रुचिके भुजङ्गम भर्त्ताहुयेथे १२७ यह आपको अपनीरुचि से भजतीथी व आप बड़ीरूपवतीथी व द्रव्यके अर्थ अन्य पुरुष भी इसके भर्त्ताथे क्योंकि वेश्याकी तो अन्य पुरुषों से जीविकाही होतीहै १२८ एकसमय उस वेश्याने वैशाखस्नान से सम्भवधर्मको सुनकर जाय मेषके सूर्य में धर्म्मवती नाम नदीमें स्नान किया १२९ व वहाँ उसरूपवती परमचतुर वेश्याने दान भी बहुत दिया व ब्राह्मणों के आदर भक्तिसमेत बहुत नमस्कार किया १३० व उसीकी प्रेरणा व समझाने से मारेस्नेह के देवदासनाम आपने भी आदरपूर्वक स्नानकिया वैशाख जानो वह मास थाही १३१ तब त्रेतायुग की आदिमें वैशाखशुक्लतृतीयाको वह रूपवतीवेश्या देवदास नाम स्वर्णकार से बोली १३२ वेश्याने कहा कि तुम एक सुवर्णकी

उत्तम मूर्त्ति मधुसूदनजी की बनाओ हम यवों से पूजाकरके व पत्रों से अग्निकी पूजाकरके १३३ ब्राह्मणों की आज्ञासे किसी ब्राह्मण को देंगी क्योंकि यहदान इस अक्षयतृतीया को पुराणों में अक्षय कहागया है १३४ हमने बहुत ब्राह्मणों से सुना है कि यह वैशाख के शुक्लपक्षकी तृतीया अक्षय तृतीया कहाती है व अक्षयफलको देतीहै १३५ इसमें हम सुवर्ण से निर्म्मित मधुसूदन की मूर्त्तिदेवेंगी नारदमुनि अम्बरीषजी से बोले कि उसका ऐसा मधुरवचन सुनकर उस स्वर्णकार ने १३६ श्रीहरिकी सुवर्ण की उत्तम प्रतिमा बनाई सत्यके भावसे व धर्म्म के अर्थ बनाया इससे उसमें चोरीनहीं की १३७ सो सुवर्णकी वह सुन्दरी सुलक्षणयुक्त प्रतिमा स्नानकरके उस सुन्दरी ने विधानसे ब्राह्मणको विधियुक्त चन्द्रशुद्धि विचराकर दी १३८ उस अक्षय तृतीयाको अच्छीतरह प्रतिमा व विप्रकी पूजा करके उसने प्रतिमादी १३९ कुछकाल में धर्म्मनिष्ठिता वह वेश्या मृतकहुई व धर्म्मात्मा वह देवदास भी अपनी आयुके क्षयहोनेपर मृतकहुआ १४० उसी पुण्यसे वह स्वर्णकार अन्य जन्ममें भूपाल हुआ महाराज वे सम्पूर्ण गुणयुक्त राजा तुम्हीं हुयेहो १४१ व वह रूपवती वेश्या उसी धर्म्मसे कान्तिमती नाम तुम्हारी कान्ताहुई जोकि प्रेमसे सदापरिप्लुत रहती है १४२ हे वीर ! कर्म्मोंकी पूर्व्वसम्भव विविध प्रकारकी बासना होतीहै हे तात ! विचित्र गतियां हैं उनको पण्डितलोग भी नहीं जानते १४३ इस माधवमासको प्रतिकार्य्यके अर्थ परमेश्वरने उत्पन्न किया है इसमें कुछ संशयनहीं है इसको देवदेव माधवजी व ब्रह्माजी ने गुप्तरक्खा है १४४ व माधवजी ने भी यह माधवमास असाधुओं के समूहोंको विना विद्या पढ़ेहुओंको असंगतोंको व आश्रम धर्म्महीनों को तीर्थसेवा न कियेहुओंको न व्रतकरनेवालों को देनेको नहींकहा १४५ गोविन्द केशव मुकुन्द हरे मुरारे लक्ष्मीनिवास मधुसूदन कृष्णविष्णो जिन लोगोंकी श्रेष्ठ बाणी ऐसा कहातीहुई मुखमें नहीं बसती वैशाखमासका नियम उनको नहीं घटितहोता १४६ जो लोग हितकेलिये कहेहुये साधुओं के अच्छे वचन नहीं सुनते व हरिके चरितामृत नहीं सुनते व जो

कमलापति के बदरिकाश्रम अयोध्या मथुरादि स्थान नहीं देखते वे लोग वैशाखमासका नियम नहीं पाते १४७ जिन लोगों ने माता पिताआदि गुरुजनों की सेवानहींकी व जिन्होंने श्रेष्ठ कन्या भूषण वस्त्रों से भूषित करके विवाहसमय में नरको नहींदी व जिन्होंने अपने पुत्रोंको विनयादि धर्म नहीं पढ़ाया वे वैशाखमासके नियम को नहींपाते १४८ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि ॥

चौ० । इमिकहि मुनि राजासों बाणी । अरु तासोंह्वै बिदासुप्राणी ॥
तासों लहि पूजन बहुभांती । माधव स्नानहि गङ्गाजाती १ । १४९
मुनिप्रणीत विधि माधवमासी । कीन महीपति वर शुभरासी ॥
निजपत्नी सँग सो विधिशोधे । पुण्य बुद्धिसों अघगणमोचे २ । १५०

इति श्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेवैशाखमाहात्म्येभाषानुवादे नारदाम्बरीषसंवादेपंचनवतितमोऽध्यायः ९५ ॥

छानबेवां अध्याय ॥

दो० । छानवयें महँ कह्यो यज्ञदत्त द्विज और ॥
धर्म्मराज सँव्वाद अघ पुण्य बखानरा गौर १
अमुक पापसों नरकगति अमुक पुण्यसों स्वर्ग ॥
होत बहु वर्णनकियो करि निर्णय तिनवर्ग २

ऋषि लोगोंने सूतजीसे पूँछा कि हेसूत! हेसूत! हे महाप्राज्ञ! सौ वर्ष जियो जोकि तुमसे उत्तमपुण्यसमय हम लोगोंने जगत्के हितके लिये सुनपाया १ इससे अब फिर अपना अमृतवचनकहो हेसूत! उत्तम तुम्हारे बचनामृतको आदरसे पानकरके हमलोग नहीं तृप्त होतेहैं २ सूतजी जगदीश व जगत्के आदिकारण बोले कि इस विषयमें यह पुरातन इतिहास कहा जाताहे जिसमें कि पृथ्वी और आदि वाराहजीका सँव्वादहै ३ छः सहस्रयोजनकी ऊँची व तीन सहस्र योजनकी चौड़ी इसप्रकारनवसहस्र योजनकी लम्बी पृथ्वीको बनाकर ४ बाम दांतपर धरके आदि वराहजीने धरणी को ऊपरको उठाया व देवताओं के सहस्रवर्षतक पृथ्वी को दाढ़पर उठाये रहे ५ उसी समय में धर्म्मके आख्यान के प्रसंगसे पृथ्वी वराहजी से बोली कि हे केशव ! ये बारहमास होते हैं व वर्ष में तीनसैसाठ

दिन होतेहैं ८ इनमें कौन उत्तम पुण्यदायक व तुमको प्रियहै तुला के सूर्य्यसे युक्तकात्तिक मास पवित्रहै ७ व मकरके सूर्य्यमें माघमास पुराणोंमें पवित्र कहागया है व मेषराशिके सूर्य्य में बैशाख मासको पण्डितों ने पुण्यदायक कहा है ८ व मार्गशीर्षभी मासों में पावन कथितहै इसतरहसे ये मास पवित्रकहे गये व दिन कौनकहे गयेहैं ९ व युगादि तथा युगान्त ऐसेही कल्पादिक इस रीति से ये सब कल्पादिक मास पवित्रकहे गयेहैं परन्तु इनसबोंसे सारपावन मास कहो १० सर्वयज्ञमय श्रीमान् एकको निश्चयकरके हमसेकहो आदि वराहजी बोले कि हे पृथ्वि! विधिसे व बिना विधिसे जो अधम नर निरंतर पूजाकरतेहैं ११ बैशाखमें हमारी पूजा भक्तिसे करतेहैं उन से हम सदाकेलिये पूजित होजाते हैं क्योंकि हे बरारोहे हमने हिर-ण्याक्ष व मधुनाम दैत्योंको इसीबैशाख मासमें माराहै १२ सो इन दोनों आदि दैत्यों को तो माराही है व हे देवि ! तुम्हारा उद्धारभी इसी बैशाखमासही में हमने किया है व त्रेतायुग में तीनों वेदों का धर्म्मभी इसी बैशाखमासही में हुआहै व ज्ञान ब्राह्मणादि वर्ण व्य-वस्था भी इसीमें हुईहै १३ इसीसे बैशाखमास सब मासोंसे हमको अधिकप्रियहै व त्रेता युगमें बैशाखकी शुक्लतृतीयाको १४ सर्वत्रयी धर्म्म प्रवृत्तहुये हैं व वृद्धिको प्राप्तहुये हैं इसीहेतुसे वह बैशाखके शुक्लपक्षकीतृतीया अक्षय तृतीया कहातीहै व हरिको बहुत प्रियहै १५ इसतिथिमें स्नान, दान, पूजन, श्राद्ध, जप, तर्प्पणकरके जो लोग विष्णुकी पूजा यवों से करते हैं व यवसे श्राद्ध करते हैं १६ उनको सम्पूर्ण मनोबाञ्छित हमदेते हैं व उस तिथिमें दानदेतेहैं वे धर्म्मा त्मानर धन्यहैं १७ हे धरे! ये मनुष्य तरह२की यज्ञों से बैशाख में हमारी पूजाकरतेहैं उनको उससे अधिक फलजानो १८ क्योंकि स्नान दान, जप, होम तप, यज्ञ, व्रतादिक बैशाखमें जो कियाजाता है हे देवि ! उसकी पुण्यका फलसुनो १९ जन्म व बारहें व अठयें दशपांच सात मन्वन्तरकोटि तक वे लोग हमारे शरीरमें गतरहते हैं व सब दुःखोंसे वर्जित रहतेहैं २० व यद्यपि सबग्रह क्रूरता करते हैं पर बैशाखमें प्रातस्स्नानकरनेसे सबसौम्यग्रह होजातेहैं २१ व बैशाख

मासमें भक्तितत्परहोकर जो विप्रों को भोजन कराता है एक सीथ सीथपर उनकी संख्याके समान युगों तक पितरोंकी तृप्तिहोती है २२ जो लोग बैशाखमें अधिक मधुरभोजन देते हैं व जो यवतिल युक्त दिव्यभोजन देतेहैं व छत्र वस्त्र उपानह देते हैं वे लोग धन्य हैं क्योंकि उनके इन दानों से हरि सन्तुष्टहोतेहैं २३ इस बैशाख में विशेष करके मधुसहित तिल देने चाहिये क्योंकि इनके देने से धर्म्म होताहै व बड़े लम्बे चौड़े पाप क्षयहोते हैं २४ ऐसा करनेसे जोपुण्य पुरुषपातेहैं उसकी गणना कोटि सैकड़ोंबर्षों सेभी कौन करसक्ताहै २५ ऐसा करने से पुत्र पौत्रादि सम्पत्ति दीर्घायु तथावांछित यहां वहां पाताहै व हम हरिको प्राप्तहोता है २६ बैशाखमें स्नान करनेसे अनेक जन्मकी इकट्ठी की हुई पातकावली बिलाजाती है उसमें भी जो प्रातःकाल किसी पुण्य तीर्थ में विधान सहित करेतो क्या कहना है २७ जो बैशाखको छोड़ कर अन्य कोई ब्रत करताहै वह हाथमें के महारत्नको छोड़कर मिट्टीका ढीला मांगता है २८ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि इसप्रकार आदिदेव वराहजीने बैशाखमासके उद्देशसे ऐसा पृथ्वीसे कहा २९ इससे हे ब्राह्मणों अब बहुतकहनेसे क्याहै ऐसी कोई अप्राप्यबस्तु ही नहींहै जो बैशाखमें माधवजीके पूजनसे न मिले ३० हे विप्रो! इसविषयमें ब्राह्मण व यमराजके संवादका एक पूर्व्वकालका परम अद्भुत वृत्तांत सुनो ३१ मध्य देशमें एक ब्राह्मणोंका महाग्राम गंगा यमुनाके बीच में यमुनोत्तरी पर्व्वत के नीचेथा ३२ उसमें बहुत से विद्वान्ब्राह्मणलोग रहतेथे यमराजजी एक कृष्ण पिङ्गलरङ्गके किसी पुरुषसे बोले ३३ जिसके नेत्र लाल लाल थे ऊपरको रोमथे काकजङ्घाके समान नेत्र व नासिकाथी कि तुम ब्राह्मणों के ग्रामको जाओ व जाकर ब्राह्मण को यहां लेआओ ३४ वसिष्ठगोत्री यज्ञदत्त नाम अपने धर्ममेंनिष्ठ ब्राह्मणको यहां लाओ बिद्वान्है यज्ञकर्म में चतुरहै ३५ उसीके पास उसीके गोत्रका उसी नामका एक और है उसको न लाना वह इसके तुल्य अध्ययन अध्यापन कर्म्म में है ३६ आकृति व चिह्नादिकों में वह श्रेष्ठ उसीके समानहै इससे तुम उसी

प्रथम कहेहुये महापण्डितको लाना क्योंकि उसकी हमको पूजा करनी है ३७ वह दूत जाकर जिसको यमराजने नहीं कहाथा उसीको लाया यमराजके कहनेके विपरीत कार्य्य उसने किया ३८ यमराज ने उसकी बड़ी पूजा उसको उठाकर की क्योंकि धर्म्म के वेत्ताथे फिर दूतसे कहा इसको लेजावो उस अन्य को लावो ३९ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि जब धर्म्मराजने ऐसा वचन कहा तो जाने से उदासीन होकर वह ब्राह्मण यमराजजीसे बोला कि ४० ब्राह्मणने कहा हम यहां क्योंलायेगये व अब फिर हमको क्यों भेजतेहो हे प्रभो ! अब हम मर्त्यलोकको फिर नहीं जासक्के ४१ यमराज बोले कि यहां आयुर्हीन पुण्यवान् लोगोंका वासहोताहै क्योंकि यह हम धर्म्मराजका लोकहै व धर्म कहागया है ४२ यह सब सुखकी भूमि है व धर्म्मराज हम इसके ईश्वरहैं पुण्य अपुण्यके अनुसार जन्तुओंको सुख व दुःख देतेहैं ४३ पापी मनुष्यों के लिये हम यमरूप हैं इस से उनको नरकदेते हैं व ऐसेही पुण्यवानोंको सुख स्वर्ग देते हैं व धर्म्ममूर्त्तिधारी दिखाई देते हैं ४४ इससे हे विप्र ! तुम अभी जैसे आयेहो अपनेस्थानको जावो अभी तुम्हारी दशवर्ष और आयु शेषहै ४५ आयु क्षयहोनेपर तुमको इसीलोककी प्राप्तिहोगी और जो चाहतेहो कहो तुम्हारा कौनकार्य्य हमकरें ४६ यह सुनकर ब्राह्मणबोला कि जो महापुण्य करनेसे स्वर्ग होताहो वह हमसे कहो क्योंकि धर्म्म अधर्म्म के विनिश्चयमें सबकेप्रमाण तुम्हींहो ४७ हे देव ! यदि अब हमको अपने मन्दिरके जानेहीकी आज्ञाहै तो जायँगे पर यह बताओ कि किसकर्म्म से नर नरकमें गिरते हैं ४८ व किस कर्म्मसे स्वर्गको नरजाते हैं कृपाकरके वह हमसे कहो यमराजजी बोले कि कर्म्म मन व वचनसे जो नर धर्म्म से विमुखहोते हैं ४९ व जो विष्णुकी भक्तिसे विहीनहोते हैं वे नर नरकगामी होते हैं व जो मनुष्य ब्रह्मा शङ्कर व हरिको भेदबुद्धिसे देखते हैं ५० व विष्णु विद्याओं में विरक्तहोते हैं वे नर नरकगामी होते हैं व कुलदेशके धर्म्मको छोड़कर जो अन्य कर्म्मकरताहै ५१ चाहे कामसे अथवा मोहसे वह नर नरकगामी होताहै जो यज्ञ करानेके अयोग्य लोगोंसे यज्ञ कराते हैं

व यज्ञ करानेवालों से वर्जित रहते हैं ५२ व विष्णुविद्यासे विरत रहते हैं वे नर बहुतसे नरकों को भोगते हैं पितर देवता ब्राह्मण व भृत्य बन्धुवर्गोंको बिना दियेहुये ५३ जो धनवान् मृतकहोजाता है वह बहुतसे नरकोंको जाताहै सब अन्नों के सिद्धहोजानेपर जो पाक में भेद करताहै ५४ बिना बैश्वदेव कियेही भोजन करताहै वह बहुत दिनोंके लिये नरकको जाताहै हे द्विज ! जो लोग प्राणियों का बड़ा द्रोहकरके धन इकट्ठा करते हैं ५५ वे धनवान् नरकगामी दाम्भिक व दुःखभागी होते हैं नास्तिक्य से अथवा लोभसे वा मोह से कहेहुये कालपर ५६ भक्तिसे जो श्राद्ध नहीं करते वे लोग नरकों में पचित होते हैं जो कोई ब्राह्मणोंको धन देने लगताहै उस में जो पाप करताहै ५७ कोई विघ्नकर खड़ाहोताहै वह नर नरकगामी होता है व सब लोगोंकी सामान्य दक्षिणालेकर विमोहसे जो एकही ग्रहण करलेता है ५८ व नास्तिक्यभावमें निरत रहताहै वह नर नरकको जाताहै बिना किसी कारणके दूसरेके गुणों को न सह सकनेसे ५९ महापाप उत्पन्न होताहै जो कि नरक का कारणहोताहै जो सुहृद निर्दोष अपनी भार्य्याको छोड़कर आप अलग चलाजाता है ६० व उसका पालन पोषण नहीं करता वह नर नरक को जाताहै जो मोह के बशहोकर अधर्म्मको धर्म्म कहताहै ६१ व किसी हेतुसे जो नास्तिक होजाताहै वह नर नरकको जाताहै मनसे जिसके और भाव रहता है व वचन से अन्यभावका प्रकाश करता है ६२ व अपने हृदय से सदा पापही करताहै वह नर नरक को जाताहै ये मनुष्य भगवान् के कीर्त्तनको अनादर करके चलेजाते हैं ६३ धर्म्मराज जी फिर यज्ञदत्त विप्रसे बोले कि भगवान् के कीर्त्तन का जो नर अपमान करते हैं वे उस पापकर्म से नरकको जाते हैं नाम शास्त्र से जिसमें परिच्छेदहै ऐसा भगवान्का द्वार देखतेहुये६४उनके प्रणामादि नहीं करते वे नरकको जातेहैं व जे बिना अपराध किये हुये स्त्रीको दण्ड देतेहैं वेभी नरकको जातेहैं ६५ व जे अपनी उत्तमास्त्री को छोड़देते हैं वे नर नरकको जातेहैं व जो नर गुरुवाक्य व धर्म शास्त्रको नहीं सुनता ६६ व और लोगोंके चित्तको क्लेशदेता है वह

नर नरकगामी होताहै बन्धुओं व बालकोंके देखतेहुये जो अकेला ही कुछ मीठीवस्तु भोजनकरताहै ६७ वह लोभसे केवल अपना पेट भरनेवाला नरक को जाता है तुला मकर व मेषराशिके सूर्य्य में जो प्रातःकाल स्नान नहीं करता ६८ सो भी नास्तिक्य के कारण नद्यादिकों में नहीं करता उसको घर नरक होता है विष्णुका जन देखकर जो अभ्युत्थान नहीं करता ६९ न प्रेम व आदर करताहै वह नर नरकका अतिथिहोताहै काष्ठोंसे शलाकाओं से शूलोंसे वा पत्थरोंसे ७० जो लोग मार्ग रूंधतेहैं वे निश्चय नरकगामी होते हैं आद्यपुरुष ईशान सर्व्वलोकमहेश्वर ७१ श्रीविष्णुकी चिन्तना जो लोग नहीं करते वे नर निश्चय नरकगामी होते हैं खेत जीविका गृह व प्रीतिका छेद जो नर करते हैं ७२ व जे आशा काटते हैं वे नर नरकनिवासी होतेहैं व वृत्तिसे पीड़ित भोजनकेलिये आये हुये ब्राह्मणकी ७३ परीक्षा जो मूढ़ात्मा करता है वह नरकका अतिथि जानने के योग्यहै अनाथ वैष्णव दीन रोगी व वृद्धके ७४ ऊपर जो दया नहीं करते वे मूढ़ नरकगामी होते हैं नियमों को ग्रहणकरके जो अजितेन्द्रिय पुरुष छोड़देते हैं ७५ व उनको फिर लोप करदेते हैं वे नर निश्चय नरकगामी होतेहैं हे विप्र! सुनो जैसे दयालु प्राणी स्वर्गको जातेहैं ७६ संक्षेपरीति से कुछ तुम्हारे गौरवसे हम कहते हैं जो लोग हरि देव विष्णु जिष्णु सनातन नारायण प्रभु अज कृष्ण विष्वक्सेन चतुर्भुज की पूजा करते हैं व दिव्य पुरुष का ध्यान करतेहैं अच्युतका स्मरण करतेहैं ७७।७८ वे अच्युत के स्थानको पातेहैं यह सनातनी श्रुति है जो कि दामोदरजीका कीर्त्तन है यही मांगल्य है व यही धनका इकट्ठा करना है ७९ व जीवनका फल भी यहीहै कि जो दामोदरजी का कीर्त्तनकरे अमित तेजस्वी देवदेव श्रीविष्णु के कीर्त्तनमात्र से ८० पाप ऐसे विलाते हैं जैसे सूर्य्योदय में अन्धकार नष्टहोते हैं जो नर अतिभक्तिसे वैष्णवी गाथाओं को नित्य गाते हैं ८१ व नित्य वेदाध्ययन करने में निरत रहते हैं वे नर स्वर्गगामी होतेहैं सबक्लेशों को छोड़कर जो जन विष्णुही की स्तुति करते हैं ८२ व अपने धर्म में निरत होकर धर्म

बनेरहतेहैं वे नर स्वर्गगामी होतेहैं व हे विप्र ! वासुदेवकी जप में लगेहुये पापी भी लोगों के समीप भयानक यमदूत नहीं आते व जो हरिकीर्त्तनको छोड़कर प्राणियोंमें अन्य नहींदेखते हैं ८३ । ८४ हे द्विजोत्तम! यह सब पापों का प्रायश्चित्त है व पापों का नाशक है व जे मनुष्य किसी के मांगनेपर खुशीहोते हैं व देकर प्रियवचन कहते हैं ८५ व जे लोग दानदेकर फलकी वाञ्छा नहीं करते वे नर स्वर्ग को जाते हैं व जे दिनको सोते नहीं हैं व सब सहसके हैं ८६ व जे पर्व में आश्रयीभूत होते हैं वे नर स्वर्गगामी होते हैं जो कभी शत्रुओं के भी दोष अपने मुखसे नहीं कहते ८७ व गुणोंको कहते हैं वे नर स्वर्गगामी होतेहैं जे नर शत्रुओंकी भी लक्ष्मीको देखकर ईर्ष्या से तापको नहीं प्राप्तहोते ८८ खुशहोकर सरहते हैं वे मनुष्य स्वर्गको जाते हैं प्रवृत्ति व निवृत्ति में भी जो नर वेदशास्त्र के कहेहुये के अनुसारही ८९ आदर करते हैं व विश्वास रखते हैं वे नर स्वर्गगामी होते हैं जो लोग सदा पवित्र चित्त रहतेहैं व कर्म मन वाणी से परस्त्रियों के संग भोग नहीं करते वे नर स्वर्गगामी होते हैं जिसकिसी कुलमें उत्पन्नहुयेहों पर दयावान् व यशस्वीहों ९० व सबकेऊपर अनुग्रह करतेहों व अपने कुलका आचार करतेहों वे नर स्वर्गगामी होतेहैं जे पवित्र नर मन, वचन व वाणी से पराई स्त्रियों को ९१ नहीं भोगते व सतोगुणी हैं वे नर स्वर्गको जाते हैं जे मनुष्य योग्य व शास्त्रविहित कर्म सदा करते हैं ९२ अपनी शक्तिको जानकर निन्दितकर्म्म जो लोग नहीं करते वे नर स्वर्गगामी होते हैं मन वचन कायके धर्म्म में जो सदा श्रद्धा करता है ९३ व साधुओंका सम्मत होताहै वह देवलोक में जाकर बसता है वचन का वेग मनका वेग उदरकावेग९४ व शिश्न इन्द्रियका वेग जो सहलेता है वह नर स्वर्गमें पूजितहोता है जिनको गुणों में सन्तोष होताहै व शास्त्रपढ़ने व मानने में जिनको प्रीति होतीहै ९५ व परमार्थमें जिनकी मति होतीहै वे नर स्वर्गगामी होते हैं जो नर कोपसे व्रत की रक्षा करता है व मत्सरता से लक्ष्मीकी रक्षा करता है ९६ मान व अपमान से विद्याकी रक्षा करता है व अपनी रक्षा प्रमाद से

करताहै व मतिकी रक्षा लोभसे करताहै व मनकी रक्षा कामसे ९७ व दुस्संगसे धर्म्मकी रक्षा करता है वह मनुष्य स्वर्गनिवासी होताहै जो नर शुक्ल कृष्ण दोनों पक्षोंकी एकादशियों को विधिपूर्वक उपवास करते हैं वे नर स्वर्गगामी होतेहैं यह एकादशी तिथि सब बालकों के जैसे माता हितकारिणी होतीहै व रोगियों को जैसे औषध ९८। ९९ ऐसेही यह सब लोगोंकी रक्षाके लिये एकादशी बनाईगई है एकादशी के समान कुछ पापरक्षाके लिये नहीं है १०० इससे विधिसे उसका व्रतरहकर पुरुष स्वर्गगामी होतेहैं एकादश इन्द्रियों से जो पाप कियाजाता है १०१ उस सबको दूर करके मनुष्य स्वर्गगामी होताहै सहस्र अश्वमेध व सौ राजसूय यज्ञ १०२ एकादशी के उपवासकी सोलहवीं कलाकोभी नहींपाते एकओर सब यज्ञ सबतीर्थ सबतप १०३ गो भू आदि महादान व एक ओर वैष्णवीव्रत सब वैष्णवी व्रतोंका धर्म्म व यज्ञादिकों से उत्पन्न सब धर्म्म १०४ इन दोनोंको ब्रह्माजीने एकतुलापर धरके तौलाथा पर वैष्णव व्रतही गरुये ठहरे हे विप्र ! एकादशी व्रत करनेवालों के व अच्युत अनन्त कहनेवालोंके १०५ शासनकरनेवाले हम नहीं हैं क्योंकि उनसे हम हे विप्र ! भयभीत होते हैं जिनके पुत्र व पौत्र एकादशी का व्रतरहते हैं १०६ व आप भी रहताहै वह पुरुष अपने सहित सौ पुरुषोंको बलसे उद्धार करताहै इससे पुरुष दोनोंपक्षों की एकादशियोंका व्रत करे १०७ क्योंकि एकादशीका व्रत भुक्ति व मुक्तिका एक भाजन है जया विजया जयन्ती पापनाशिनी १०८ त्रिस्पृशा व्यञ्जुली पक्षसंवर्द्धिनी श्रेष्ठ तिलदग्धा अखण्डा द्वादशी १०९ मनोरथा भीमाद्वादशी इत्यादि द्वादशी के अनेक भेद हैं ११० इन सब व्रतों में जो लोग सक्त रहते हैं वे ब्रह्ममें स्थितकहे व जानेजाते हैं धर्म्मशास्त्रों केश्रोता व धर्म्ममें विश्वास करनेवालों के सङ्गी १११ व बालकोंके प्रियकरनेवाले ये सब स्वर्गलोकको जाते हैं प्रतिमास में अमावास्या के दिन जो श्राद्धकरते हैं ११२ उनके पुरुषा तृप्त होते हैं इसलिये वे पुरुषभी धन्य हैं व स्वर्गगामी होते हैं जो लोग भोजन तैयारहोनेपर आदर से अतिथियों को व गृहवालों को भी

भोजन देते हैं ११३ व उनके मुखमें कुछ विकार नहींहोता अलसाते नहीं हैं वे शिष्ट नर स्वर्गगामी होते हैं ११४ जे सत्यको धारण किये हैं व नारायण मधुसूदन अखिल स्वामी के भक्तिमान् हैं रजोगुण छोड़े हैं वे अनन्त पुण्यवाले स्वर्गको जाते हैं ११५वेतसी, यमुना, सरयू, पुण्या, गोदावरी इन नदियों की सेवा स्नान दान में परायण होकर जो लोग करते हैं ११६ वे नरक का मार्ग कभी नहीं देखते प्रीतिसे ब्राह्मणका चरण जो कोई धोताहै व जो ब्राह्मण के पादके अँगूठेका जल सदा पीताहै उनलोगोंको यमलोककी कथा भी नहीं सुनाईदेती फिर दर्शनको क्याकहै व जो लोग सुख देनेवाली नर्म्मदा नदी में स्नान करते हैं व उसके दर्शनसे सन्तुष्ट होते हैं ११७ वे पापरहित होकर महेशके लोकको जाते हैं व वहां बहुत दिनोंतक क्रीड़ा करते हैं ११८ जो चर्म्मण्वती के जलमें विधिसे तीनदिन स्नान करते हैं उसमेंभी व्यासजीके आश्रमके समीप वे नर स्वर्गी कहाते हैं ११९ गङ्गाके जलमें सर्व्वत्र वा प्रयागमें केदारमें पुष्करमें व्यासाश्रम में प्रभासतीर्थ में जो लोग मृतकहोते हैं वे विष्णुमें लीन होजातेहैं १२० द्वारावती व कुरुक्षेत्रमें जो लोग योगाभ्यास करके मृतक होते हैं व मरणसमय में जो हरि ये दो अक्षर कहकर जहांकहीं मरते हैं उनका जन्म फिर इस संसारमें नहींहोता १२१ हे विप्र! तीनरात्रि तकभी जो द्वारकापुरी में स्थितहोकर गोमतीके जलमें स्नान करते हैं वे केशव केप्रिय मनुष्य धन्य हैं १२२ जे लोग मृत्युलोकमें नन्दा में स्नान करके तीनरात्रि नरनारायणके स्थानमें बासकरते हैं वे केशवजीके प्यारे धन्य हैं १२३ व जे छहमास तक द्वारकामें पुरुषोत्तमजी के निकट निवासकरते हैं वे लोग निश्चय अच्युतमूर्त्तिही होजाते हैं व देखने से सबके पापहरलेते हैं १२४ व अनेक जन्मसे इकट्ठी कीहुई पुण्यसे जो लोग काशीमें मणिकर्णिका के जलमें स्नानकरते हैं व देवदेव विश्वेश्वरजी के नमस्कार करते हैं वे हम करकेभी वन्द्य हैं व सदा स्वर्ग में बसते हैं १२५ जे लोग पृथ्वीपर कुशतिलों से हरिकीपूजा करके व तिल लोहफैलाकर दुग्धयुक्त गौ देकर १२६ व जे लोग पुत्रोंको उत्पन्नकरके पिता व

पितामहादिकों के पदपर स्थापितकरके हे विप्र! विधिपूर्वक मृतक होते हैं वे नर स्वर्गी होते हैं १२७ व जे निर्मोह व अहङ्कार-रहित हैं वे मरकर स्वर्ग में जाते हैं जे लोग जन्मपर्य्यन्त किसी की कुछ बस्तु नहीं चोराते व अपने धनसे सन्तुष्टरहते हैं १२८ व अपनी भाग्य से जीविका करके जीते हैं वे नर स्वर्गगामी होते हैं ॥

चौ० सत्यबचनआधारविहीना।मधुरबचन अघरहितप्रवीना १२९
आगत स्वागत करतपराया । ते नरवर स्वर्गी द्विजराया ॥
शुभवाअशुभकर्म्मफलसञ्चय।करतभलीविधिकरित्यहिनिश्चय १३०
अरु परिणामहि शोचत नीके । स्वर्गगामि ते होत सुठीके ॥

धर्म्मराजजी फिर बोले कि दानधर्म्म करने पर उद्यत व धर्म्म मार्ग्गपर चलनेवाले मनुष्योंको १३१ जो लोग सदा प्रोत्साहित कर-ते रहतेहैं वे सदा स्वर्ग्गमें मोदितहोतेहैं हेमन्तमें जो अग्नि जला कर लोगोंको तपाताहै व जो ग्रीष्मकालमें जलदानकरताहै १३२ व बर्षामें रहनेको स्थानदेताहै वे सब नर बहुत दिनतक स्वर्ग्गमें वास करतेहैं सब पुण्यकालों में व नित्य नैमित्तिकादिक कार्य्यों में १३३ जो मनुष्य भक्तिसे श्राद्ध करता है वह निश्चय स्वर्ग्गवासी होता है १३४ दरिद्रको दानदेना व समर्थहोकर क्षमा करना युवापुरुषों को तपकरना व ज्ञानवान्होकर मौनरहना सुखकेयोग्य लोगोंकी इच्छा की निवृत्ति व सबप्राणियों पर दया करना इतने कर्म्म स्वर्ग्ग को पहुँचाते हैं १३५ पाप व पुण्यसे उत्पन्न दोप्रकारके कर्म्मके सम्बन्ध हैं जो सत्यके साथ कर्म्म कियाजाताहै वह उत्तम से उत्तमहोता है १३६ ध्यानसहित तप भवसागर के तारनेके लिये होता है व पाप नरकमें गिरानेके लिये होताहै इसमें कुछ संशय नहींहै १३७ जिस पुरुषके बल परिवार शूरता अभिजन होतेहैं पर पुण्यहीन होताहै उसके बलादि सब नष्टहोजातेहैं १३८ जैसे पर्व्वतों पर बड़े पुष्ट व ऊँचे वृक्षहोतेहैं परन्तु वायुवेगसे सघनभी वे वृक्ष मूलसहित उखड़ पड़ते हैं १३९ ऐसेही सत्य धर्म्मविहीन पुरुष यमालयको जातेहैं सामान्यतः सब जन्तुओंका केवल धर्म्मही बलहै १४० हे द्विज! सब पुण्योंमें दानही सबसे श्रेष्ठहै क्योंकि इस लोकमें व परलोकमें उसी

से सब तरतेहैं इससे हमने स्वर्गमार्ग देनेवाला यज्ञ १४१ संक्षेपसे कहा अब फिर क्या सुना चाहतेहो १४२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवैशाखमाहात्म्येषण्णवतितमोऽध्यायः ९६ ॥

सत्तानबेवां अध्याय ॥

यह सुनकर यज्ञदत्त ब्राह्मण बोला कि यहबात मूर्खभी जानता है कि शुभकर्म करनेवाला पुरुष नरकको नहीं जाता व पाप क्रियारत पुरुष स्वर्गको नहीं जाता १ विविधप्रकार के यज्ञोंसे व इष्ट तपदान जपादिकोंसे सत्यबोलने व आचारसुकृतकरनेसे स्वर्गका सुखमिलताहै २ विद्या आचार व धन युक्त व वेदकेपारगामी ऋषि लोग पुण्यके योगसे व यज्ञोंसे स्वर्ग को जातेहैं ३ व बिना धनके बहुत दानभी नहीं दिया जासक्ता व धन होनेपरभी कुटुम्बमें चित्त लगारहता है ४ व कलियुग में विशेष करके अग्निहोत्र इत्यादि धर्म्महैं और दान धर्म्म दुष्कर हैं व भगवान् का व्रत दुष्कर है ५ थोड़े प्रयाससे धर्म्म संचय होताहै इससे हे धर्म्म व अधर्मके प्रदर्शक! हमसे धर्म्म विशेषकरके कहो ६ सो सब धर्म्मों में जो उत्तम धर्म्महो वह हमसे कहो जिस एकही धर्म्मके करने से सबपापों का नाशहो ७ व जिससे धन धान्य यश धर्म्म आयु बढ़े मर्त्यलोक में तो सबसे मित्रताहो व परलोकमें जिससे अक्षय स्वर्गलोक प्राप्त हो ८ व साक्षात् भक्तोंके अभय देनेवाले नारायणजी सन्तुष्टहों व जिसके प्रसादसे सबकाम करतलमें स्थितहों ९ व जिसका सबयज्ञ तप दान तीर्त्थ सेवासे अधिक फल मिले हे यमराज ! वह सब हम से कहो १० हे देव! यदि धर्म्मोपदेश करनेके योग्यहमहों तो अनुग्रहपूर्वक उपदेश कीजिये व सब धर्म्म क्रियाका सार एक वही कृपा करकेकहो ११ जैसे २ पापोंके अनुरूप प्रायश्चित्तहैं वैसे २ विचारकरके पण्डितोंने कहेहैं १२ सो हे देव ! बहुत होनेके कारण मनुष्योंसे किये नहीं जासक्ते इससे सबपापोंका नाशकरनेवाला जो एकहो वह कहो १३ सूतने कहा हे शौनक ! यह कहके सूक्ष्म धर्मकी कामनासे वह ब्राह्मण श्रेष्ठ नम्रतासे धर्म स्वरूप यमराजजीकी स्तुति करनेलगा १४

ब्राह्मणने कहा कि हे सबके निवृत्त करनेवाले ! तुम्हारे नमस्कारहै व जगत्पति तुम्हारे नमस्कारहै देवरूपी तुम्हारे नमस्कारहै स्वर्गमार्ग के देनेवाले तुम्हारे नमोनमः है १५ व धर्मशास्त्रस्वरूप व धर्मराज तुम्हारे नमस्कार हैं आकाश अन्तरिक्ष व महर्लोक व पृथ्वी तुम्हीं से पालन कीजाती है १६ जन तप सत्य तुम सबकी पालना करते हो तुमसे रहितकुछ स्थावर जङ्गम नहीं है १७ व तुमसे गृहीत सब जगत् तुरन्त नष्टहोजाता है सत्पुरुषों की आत्मा सत्त्वस्वरूपी तुम्हीं हो १८ रजोगुणवालों को रजतुम्हीं हो व तामसों में तम तुम्हीं हो हे देव ! आप चारपादवालों के चतुःशृंग व त्रिलोचन आपही हैं १९ सप्तहस्त त्रिबद्धवृषरूप तुम्हारे नमस्कारहै सर्वयज्ञमय धर्म्म-शरीर तुम्हारे नमस्कारहै २० हे लोकेश ! तुम साक्षात् दिखाईदिये देव तुम्हारे नमस्कार है सब प्राणियों के हृदय में टिके हुये पुण्य पाप के आप द्रष्टा हैं २१ सबप्राणियों के प्रेरक व शिक्षक व दाता व शासन करनेवाले हो व सबके धर्म्म प्रवर्त्तक हो व हे देव ! भू-तलपर दण्डधर तुम्हींहो २२ इससे सर्व्व धर्म्ममय साररूप कृपा से एक कोई दान व्रतादि बताओ धर्म्मराज बोले कि हे विप्रवर ! तुमसे हम सन्तुष्टहुये मुख्यकर इसस्तोत्रसे २३ व अभ्यागमन ध-र्म्म से तुम हमारे मान्यहो हे सत्तम ! इससे जो किसीसे नहीं कहा व जो हमको परमगोप्य है २४ व पुण्यसमूहों में सारभूत जो एक परमहै व महानरक समूहका विघातक है २५ हे ब्रह्मन् ! तुम्हारे विनयसे ऐसासन्तुष्ट हुये कि जो अकथनीय भी है वह कहेंगे २६ ये सब शास्त्र व पुराण आगम चराचर जगत्के व्यामोहके लिये हैं व सब कल्पपर्य्यन्त शारीरक विषयों को नानाप्रकारसे बकते रहेंगे परन्तु उनमें सबोंका सिद्धान्त एक विष्णु सब शास्त्रोंमें गायेजाते हैं इससे यही सब व्यापारयुक्त शास्त्रोंमें विष्णुही की प्रधानता है २७ शिव ब्रह्मा व विष्णु इन्हीं तीनों को त्रयी कहते हैं इनमें हे विप्र ! जैसे अग्नि व बत्तीके संयोगसे दीपका संयोग है बस दीपकासा स-म्बन्ध हरिका सब शास्त्रोंमें कहा है २८ इससे विष्णुकी आराधना कियेहुये पण्डित शुभ गो लोकको प्राप्त होसक्ताहै व हरिके आरा-

थित होनेपर सबकाम करतलमें स्थित होते हैं २९ इससे हे द्विज! सब पुण्योंमे दानही परमश्रेष्ठ है क्योंकि दानही से पाप नाशहोते हैं व दानहीसे सबकुछ मिलताहै ३० नित्य व नैमित्तिक व काम्य और अभ्युदयात्मक व और परमदान ये पांचतरह के कहेगये हैं ३१ प्रातःकाल व मध्याह्नकाल और पराह्नकाल इन तीनों कालों में जोकुछ देनाहै वह नित्य कहाजाता है ३२ इससे जो अपने कल्याणकी इच्छा चाहे तो दान से दिन न शून्यकरे क्योंकि जिसकुल में जिस जिसका उद्देश्यकरके दियाजाता है वह जिस जिस का दिया जाताहै वहां २ सब पहुँचता है ३३ व जो निर्बुद्धि विनादिये मोहसे अपने खालेता है उसके हम रोगपैदा करदेते हैं जिसमें खा न सके ३४ कि फिर वह खानाही छोड़देता है व बड़ी पीड़ा पाता है क्योंकि मन्दाग्नि होजाती है जोकि सन्तापका द्वार है ३५ व जिन्होंने तीनोंकालमें ब्राह्मणों व देवताओं को नहींदिया व अच्छी मधुर चीज आपही खालिया उन्हों ने बड़ा पाप किया ३६ यमराज ने कहा कि हे ब्राह्मण ! मैं उनको व्रत कराताहूं इससे देह सूखजाती है बस ऐसे ऐसे भयानक प्रायश्चित्तों से उनसबको शुद्ध करताहूं ३७ जैसे चमार कुण्डके ऊपर मोगरी से चमड़ा वगैरह कूटकर शुद्धकरता है वैसेही कुद्रव्य के कूटने की तरह ३८ पाप करनेवाले को करूकाढ़ा व औषधों से निश्चयकरके शुद्धकराताहूं ३९ वैद्यरूप होकर गर्म्मपानी पिलाताहूं उसके आगे और लोग अच्छे अच्छे स्वादिष्ठ मनमाने भोजन करते हैं ४० क्याकरूं तुमने समर्थहोकर भी दान नहीं दिया इससे महान्रोग रूपसे तुमको खानेसे रोकते हैं ४१ यमराज ने कहा कि हे ब्राह्मण ! नित्यकालका यहदान अपनेही वास्ते है सोभी भक्तिसे अपनी शक्तिके अनुसार पापियों ने नहीं दिया ४२ इससे जब वे हमारे यहाँ आतेहैं तो बड़े दारुण उपायों से हम उनको जलाते हैं अब हम तुम्हारे आगे नैमित्तिक दानकाल कहते हैं ४३ जब महापर्व्वहोवे व किसी तीर्थकोजावे व पिताका क्षयाह होवे व वैशाखादिक ४४ पुण्यकारी महीना होवें बस इनमें यत्नसे दानदेवें यह नैमित्तिक दान कहाता है अब जो काम्यकाल है

वह फलदायक दान कहते हैं ४५ व्रतादिकों का उद्देश्यकरके व अपने मनोरथ से फलकी कामना करके जो मनोरथ सर्वाङ्गों से युक्त कहाजाता है ४६ उसदान के प्रभाव से भावनासे परिभावित मनुष्य उसके प्रसादसे जैसी वाञ्छा करताहै वैसा फल भोगकरता है ४७ अब आभ्युदय कहते हैं जोकि यज्ञादिकों में कहागया है जात कर्मादिकों में वह बिवाह व यज्ञोपवीत में ४८ व महल ध्वजा व देवता की प्रतिष्ठा में जो यत्नसे पुण्य कियाजाता है हे ब्राह्मण! वह आभ्युदयिक कहाजाताहै ४९ यहदान सन्तानका बढ़ानेवाला व उत्तम भोग व यश व स्वर्ग व सुखका देनेवाला है अब अन्य कहते हैं सो हे द्विज ! अब वह दानसुनो ५० कामकी क्षय जानकर व बुढ़ापा से पीड़ित होकर यत्नसे दानदेवे किसी का आसरा न करे ५१ यह न विचारकरे कि जब मैं मरजाऊंगा तो हमारे पुत्र स्त्री बांधव भाई व हमारे मित्र हमारे बिना क्याकरेंगे ५२ व जो मैं धनदेकर निर्धन होजाऊं शायद जीजाऊं तो फिर मैं क्या करूंगा यह विचारकर जे कुछ नहीं देते ५३ वह सैकड़ों आशारूपी फँसरियों से बँधाहुआ भाग्यवश से कुमाया करके वह मूढ़ मरजाता है तब पुत्रादिक रोते हैं ५४ तब पुत्रादिक दुःखसे पीड़ित व मोहसे आकुलचित्तहोकर किसी तरहसे थोड़ा थोड़ा दानदेने का विचार करते हैं ५५ परन्तु जब वह समय निकलगया व दुःख जातारहा तो फिर दानका ख्यालही नहीं करते व लोभसे देते भी नहीं हैं ५६ पुत्रों ने जाना कि पिता मरगया तब स्नेहपाश भी छूटजाता है यमराज ने कहा कि हे ब्राह्मण ! जो मरजाता है वह हमारी फँसरियों से बँधाहुआ ५७ क्षुधा तृषा से व्याकुल व बहुतसे दुःखों से पीड़ित बहुत कालतक बड़े भयानक नरक में पड़ारहता है ५८ इससे मनुष्यको चाहिये कि निस्सन्देह आप दानदेवे मरनेपर किसके पुत्र किसके नाती किसकी स्त्री व किसका धन होताहै ५९ संसारमें कोई किसी का नहीं है इससे अपने आप दानदेवे अन्न पान ताम्बूल जल तथा सुवर्ण ६० कपड़ा, गौ, पृथ्वी, छत्र, पात्र अनेकप्रकार फल व भूमिदान और तरह तरह के दान अपनी शक्तिके अनुसार ६१ हे ब्राह्मण ! देना चाहिये इसमें

विचार न करे अब हे ब्राह्मण ! तुम्हारे आगे लाखों तीर्थोंको कहेंगे ६२ सुन्दर तीर्थ यह गङ्गाजी प्रकाशमानहै व पुण्यकारी सरस्वती व नर्म्मदा व यमुना व तापी चर्म्मण्वती ६३ सरयू व श्रेष्ठवेणी व पापनाशिनी व कावेरी व कपिला अन्य विशल्या व विश्वतारणी ६४ गोदावरी व तुंगभद्रा व गण्डकी व पापोंको भयदेनेवाली भीमरथी ६५ व देविका व कृष्णगङ्गा व औरी जो श्रेष्ठ नदियां हैं ये सब पुण्यकालके लिये अनेकतीर्थ हैं ६६ चाहैं गांवमें हों व वनमेंहों नदी सर्वत्र पवित्रकारी हैं जहांहों वहांही स्नान दानादि क्रियाकरनी चाहिये ६७ हे ब्राह्मण ! जब उस तीर्थका नाम न जानाहो तब यह महान् विष्णुतीर्थ है यह कहना चाहिये ६८ तीर्थ के देवता विष्णुजी सर्वत्र हैं इसमें संशय नहीं है हे नारायण ! यह नाम जो साधक तीर्थ में स्मरण करताहै ६९ उसको तीर्थका फल सुन्दर विष्णुजीकेही नामसे होता है जिन तीर्थों व देवताओं के नाम नहीं जाने हैं निस्सन्देह ७० विष्णुके नामसे मनुष्यकहे सम्पूर्णसिद्धियां पुण्यकारी हैं व समुद्र भी तीर्थभूतहैं ७१ व मानसरोवरादिक तालाब निर्झर व छोटी २ तलैया व छोटी नदियां सब हरिके नाम से तीर्थही हैं ७२ पर्वत तीर्थरूप हैं यज्ञ व यज्ञभूमि व जहां विद्वान् ब्राह्मण कौतुक से स्थितहों ७३ वह सबपापों के हरनेवाला महान् तीर्थ है श्राद्ध व श्राद्धभूमि व देवशाला व होमकरने की पृथ्वी ७४ व वेदकी ध्वनि अच्छीतरह होतीहो व जहां शुभकारी विष्णुजी की कथाहोती हो व पुण्यसंयुक्त अपना घर व गोशाला पवित्रकारी हैं ७५ जहां वनमें पीपरकावृक्ष है व जहां पवित्र घर है व माता पिता ये सब तीर्थ हैं ७६ व जहां धर्म्म के लिये भोजन बनताहो व जहां गुरुजी टिकेहों व जहां साध्वी स्त्री हैं वहां तीर्थही है इस में संशय नहीं है ७७ व जहां नित्यही धर्म रति है व जहां विद्वान् पुत्र विद्यमान है उसके तारने के वास्ते वही प्रतिष्ठित तीर्थ हैं ७८ व राजघर ये सब तीर्थ हैं इन तीर्थन में पर्व्व के योग में विशेष करके ७९ प्राणियों को सबकुछ देनेवाले हृषीकेशजी की विनाआराधना किये कोई कहीं कुछ भी निश्चय करके पाता है कभी नहीं

पाता ८० हरिकी भक्तिसे सन्तान धन स्त्री हार हर्म्य घोड़े हाथी नानाप्रकारके सुख स्वर्ग व मोक्ष कुछभी दूर नहीं हैं ८१ नारायण देव सत्त्वरूपी जनार्द्दन हैं उन परमेश्वर ने अपनेको तीनरूप करके प्रकटकिया ८२ रजोगुण तमोगुणसे युक्तहुये रज व सत्त्वगुण अधिक हुआ तब अपनी नाभिकमलसे ब्रह्माजीको उत्पन्नकिया जोकि कमलपर आसन करते हैं ८३ फिर रजोगुण व तमोगुणसे रुद्रको विभुने उत्पन्नकिया इसप्रकार सत्त्व रज तम तीनप्रकारके गुणहुये ८४ सतोगुणसे जन्तु मुक्तहोजाताहै व सतोगुण नारायणका रूपही रजोगुण व सतोगुणयुक्त श्रीमान् व यशसे अधिक होताहै ८५ जो धर्म का उद्देश्यकरके वेद में कहागया है व सेवन कियाजाता है वह रुद्र कहागयाहै वह मनुष्योंमें विशेषहै ८६ तिससे लोकमें राजाहोताहै रजोगुण व तमोगुणसे फिर जो हीनहै व रजसे जो धर्महै व केवल तमोगुणसे जो धर्महै ८७ वह मनुष्योंको इहलोक व परलोक दुर्गति का देनेवालाहै जो विष्णु हैं वे आप ब्रह्माहैं व जो ब्रह्माहैं वे आप हरहैं ८८ बस तीनों देव यज्ञोंमें नित्य पूज्यहैं यह वेदोंमें निश्चय है व जो इनतीनोंमें भेदकरताहै हे द्विजसत्तम ! ८९ वह पापकारी पापात्मा अनिष्टगतिको पाताहै विष्णुही परब्रह्महैं व विष्णुही संसार रूप हैं हे द्विज ! ९० उनका यह वैशाखमास सबकर्म्मों में प्रियहै और अश्वमेधादि महायज्ञों में फलदायक कहताहूँ ९१ यह तीर्थ स्नान तप दान जप यज्ञ अधिक फलरूपहै वैशाखमें मेषराशिके सूर्य्यमें प्रभातकाल जो किसी नदीके विमलजलमें स्नानकरतेहैं वे हमसे दण्डनहींपाते ९२ । ९३ हमारे किङ्करसमूहोंको प्रथम मार २ कर व चित्रगुप्तके लेखका लोप कर२के वैशाखमासमें बार२ स्नान करके पूर्व्व पूर्व्वके पापोंका उद्धारकरते हैं ९४ इस वैशाख स्नानके समान संसारके भयका छेदनकरनेवाला और कोई नहीं है इससे यद्यपि परम रहस्यहै पर प्रकाश करने के योग्य नहीं है नरकवास के नाशका कारणहीहै व हमारे अधिकारका भी क्षयकारी है ९५ गङ्गा नर्म्मदा यमुना सरस्वती विशोका वितस्ता जोकि ये विन्ध्याचलके उत्तर संस्थित हैं ९६ गोदावरी भीमरथी तुङ्गभद्रा वेणिका तापी प-

योष्णी ये विन्ध्याचलके दक्षिणओर हैं ९७ इन बारह नदियों में वही स्नानकरता है जिसने प्रातःकाल विधिसे स्नान कियाहो ९८ जितनी नदियां समुद्रमें मिलीहैं सब पुण्यहैं व सब पर्वत पवित्रहैं सब देवस्थान पुण्यहैं व सबह्रद पुण्यहैं ९९ जिसने इनमें स्नान कियाहो वा जलस्पर्श कियाहो वा प्रणामकियाहो वा बहुतदिनोंतक इनका सेवनकियाहो उसको चाहिये कि मेषके सूर्य्यसहित बैशाख-मासमें नियमसे स्नानकरे १०० जो इनमें से किसी में बैशाखमास में स्नानकरताहै हे ब्राह्मणदेव ! उसकी पुण्य कुछ नहीं कहसक्ते हैं चाहे सहस्रों के सहस्रमुखहों पर नहीं कहसक्के १०१ व हे द्विजस-त्तम ! यदि ब्रह्माके तुल्य आयुहो तो बैशाखमासके स्नान दानादि का फल कहसके १०२ यह बैशाखमास महानरकरूप सूखेतृणों के लिये अग्निरूपहै जैसे कि हरिजी हैं ब्रह्महत्यादिक पाप व अगम्या गमनादिक पाप १०३ काम व अकामसे कियाहुआ पाप व ब्रह्म-हत्यादि अतिपाप म्लेच्छस्पर्शादि उपपाप रहस्यपाप संकरीकरण १०४ जातिभ्रंशकरनेवाला घोरपाप व अपात्रीकरण पाप मलावह प्रकीर्ण ये सब कायिक वाचिक मानसके भेदसे तीनप्रकारके होते हैं सो सबपाप १०५ जो विधिसे अनुष्ठान कियाजाय तो यह बैशाख मास इन सब पापोंको भस्मकरडाले वह प्राणी कल्पकोटि सहस्र व कल्पकोटि सैकड़ों वर्षतक १०६ श्रीयुक्तहोकर विष्णुपुरमें बसे यदि बैशाखमें श्रीहरिका पूजनकरे १०७ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवैशाखमाहात्म्येसप्तनवतितमोऽध्यायः ९७

अट्ठानबेवां अध्याय ॥

सूतने कहा कि भो ऋषे ! ऐसा धर्मराजका वचन सुनकर वह ब्रा-ह्मण फिर बैशाखमास की शुभविधि पूंछनेलगा १ ब्राह्मणने कहा कि हे धर्मराज ! हे महाभाग ! अच्छीतरहसे तुमने गुप्त प्रकाशित किया कि बैशाखस्नानसे जो पुण्यहै वह मनुष्योंको मुक्तिदायकहै २ अब यह बताओ कि प्रातःकाल बैशाखमें स्नानकरके किन पुष्पोंसे व कैसे पूजनकरे वह विधि कहो ३ धर्म्मराजने कहा कि सब पत्रजातियों में तुलसी केशवजी के प्रियहै व पुष्कर इत्यादि तीर्थ व गङ्गादि नदी ४

वासुदेवादिक देव सदा तुलसीदलपर निवास करतेहैं इससे सर्व्वदा सबकालों में तुलसी विष्णुकी बल्लभाहै ५ चमेलीके पुष्पको छोड़कर व कमल छोड़कर तुलसीपत्र लेकर भक्तिसे माधव की पूजाकरे ६ उसका पुण्यफल कहनेको शेषजी भी नहीं समर्थहैं विना स्नानकिये तुलसीदल उतारकर जो देव पितृकार्य्य में लगाताहै ७ उसका सब कर्म्म निष्फल होजाताहै व पञ्चगव्यसे वहप्राणी शुद्धहोताहै इससे विना स्नानकिये कभी तुलसीपत्र न तोड़ना चाहिये तुलसी दो प्रकारकी होतीहै एक कृष्णा दूसरी शुक्ला उनमें से किसीसे श्रीहरि की पूजाकरके दरिद्र व दुःखभोगादि बहुत पाप तुलसी शीघ्रही नाश करती है जैसे कि रोगोंको हरीतकी नाशती है ८।९ मनुष्य नारायणरूप होजाताहै मुख्यकर बैशाखमासमें हरिभक्त बैशाखमासभर जो मनुष्य नियमसे तुलसीदलसे हरिकी पूजाकरता है १० व सो भी तीनों संध्याओं में फिर उसका जन्म इससंसार में नहीं होताहै पुष्पपत्रों के अभावमें अन्नादिकसे श्रीहरिकी पूजाकरे ११ अन्नों में चावल गेहूं व यवों से श्रीहरिकी पूजाकरनी चाहिये माधवजी का प्रिय बैशाखमासमें प्रातःकाल स्नानकरके १२ पितर देवता मनुष्य व स्थावर जंगम सबको तृप्तकरे जो कोई बहुत जलसे पिप्पल की जड़को सींचता है १३ व सर्व्वदेवमय की प्रदक्षिणा करता है व जो पीपलको जलसे चारोंतर्फ सींचताहै वह अपने दशसहस्र कुलों को तारताहै इसमें संशय नहींहै १४ पिप्पलकी पूजाकरनेसे अलक्ष्मी कालकर्णी दुस्स्वप्न दुष्टचिंता पीपलकी तृप्तिसे व सब दुःख नष्टहोजाते हैं १५ जो अश्वत्थकी पूजा जलसे करताहै वह जानो अपने पितरों को तारताहै व विष्णुको प्रसन्न कराताहै वह जानो सब दुष्ट ग्रहोंको पूजकर सन्तुष्ट करताहै १६ श्वेतपुष्प शमी अग्नि चन्दन सूर्य्यबिम्ब पिप्पलकावृक्ष इनकास्पर्श करके फिर अपनी जातिका धर्म्म करे १७ जो अष्टाङ्गयोग करके गोग्रासदेकर व स्नानकरके पिप्पल को तृप्तकरके गोविन्दजी की पूजाकरताहै वह दुर्गति नहीं पाता १८ तेरसि चतुर्दशी पूर्णमासी तीनदिन चाहे अशक्तभीहो स्त्रीहो वा पुरुष १९ पूर्वकहे नियमोंसे युक्त प्रातःकाल शक्त्यनुसार स्नानकरके

सबपापों से छूटकर अक्षय स्वर्गको जाताहै २० वैशाखमास में जो शक्तिसे दशभी ब्राह्मणोंको भोजनकराताहै व जो तीनरात्र उठकर स्नानकरके एकवार ध्यानकरके पवित्रतासे २१ उजले वा कालेतिलों में मधुमिलाकर बारह ब्राह्मणोंको देकर उन्हीं से स्वस्तिवाचन करावे २२ धर्मराज हमारे ऊपर प्रसन्नहोवें यहकहके देवपितरोंको तृप्तकरे तो जन्मपर्य्यन्तका पाप उसीक्षण नाशहोजाताहै २३ व यथासुख हजारोंकी हजारोंवर्ष स्वर्गलोकमें रहे वह हमको देखेभी नहीं क्योंकि वह खुद सबदेवतों से पूजाजाता है २४ भोजन जलपूर्णघड़ा पितर व देवतोंकी तृप्तिकेलिये हे विप्र ! जो त्रयोदशी चतुर्दशी व पूर्णमासी तीनदिनतक २५ भक्तिसे ब्राह्मणोंको सुवर्ण व तिलसे भरेहुये पात्रोंसे जो अपनी शक्तिके अनुसार प्रतिदिन देता है वह महापापोंसे छूटजाताहै २६ जलपात्रों से भी तृप्तकरताहै वह ब्रह्महत्याको नष्टकरताहै वैशाखी पौर्णमासीको ब्रह्माजी ने इनतिलोंको उत्पन्नकियाहै २७ इससे उसतिथिमें तिलदेने चाहिये व भक्षणकरने कराने चाहिये यदि बहुत सन्ततिकी इच्छाहो इसके लिये पूर्वका वृत्तान्त है सो सुनो हे सुव्रत ! २८ वैशाखमासका फल पूर्णिमा के दिन परम अद्भुत है जिसदिन मेषकी संक्रान्तिलागे उस दिन से ३० तिथी उत्तमहैं २९ पुराणों में सबयज्ञ अधिक पुण्यकारी कही गई हैं विशेषते वे तीनपवित्र व पितरोंको दुर्लभहैं ३० तिनसे फिर माधवजीकी प्यारी बैशाखीपुर्णिमा पुण्यहै यह वाराहकल्पादि आदि तिथि महाफलदायकहै ३१ हे विप्र ! पूर्वही हिरण्याक्ष व मधुआदि दैत्योंको नारायण ने मोहितकिया व पृथ्वीको उद्धार किया ३२ बैशाखशुक्लपक्षमें तेरसि व चतुर्दशी व पूर्णिमाको इन विभु ने क्रमसे ये तीनकाम कियेहैं ३३ हे विप्रेन्द्र ! तबसे लगाके विशेष करके कल्पादि पूर्णिमा पवित्र कहीगई है व कर्म्मकी कल्पपर्य्यन्त साक्षी है जिसने नियमसे प्रातःकाल बैशाख में स्नान नहीं किया हे विप्र ! उसके जन्मलेनेहीसे क्याहुआ क्योंकि वह तो अपना अपकार करनेवाला आपही हुआ ३५ इससे त्रयोदशी व चतुर्दशी व पूर्णिमा को विशेषकरके अच्छीतरहसे प्रातःकाल विधानसे स्त्री व पुरुष३६

नियमसे स्नानकरके सबपापों मे छूटजाताहै स्नान दान पूजन श्राद्ध-
क्रिया पुण्यसेरहित ३७ जिसकी बैशाखीपूर्णिमा बीतजाती है वह नि-
श्चय नरकबासी होताहै न वेदकेसमान कोई शास्त्रहै न गङ्गा समान
कोई तीर्थ है ३८ न जलधेनुके तुल्य कोई दानहै न बैशाखी के समान
कोई तिथिहै विष्णुमें तत्परहोकर जो बैशाखीपौर्णमासी को जलधेनु
देताहै ३९ वह तीनों ब्रह्मा विष्णु महादेव देवताओं का चौथाहै ॥
चौ० । पितृहामातृघातकीजोऊ । गुरुतल्पग भ्रूणहा जुहोऊ ४०
जलसुरभी दातहि लखितेऊ । सब पापनसों छुटत न भेऊ १
बैशाखीपूर्णा कहँ जेऊ । जलसुरभी देवतहैं तेऊ ॥
दशकुल प्रथमरु दशकुलपाछे । तरत नरकसों तिनके आछे २।४१
फल शर्करा नागदल सत्तू । छत्र उपानह जो द्विज दत्तू ॥
ते नर धन्य धन्य जगमाहीं । सत्य कहत कछु संशय नाहीं ३
मणि जलयुक्त कुम्भ जो देई । पक्क अन्न दक्षिणा सह सेई ४२।४३
बैशाखी पूर्णिमा मझारी । अश्वमेध फल लहत करारी ४

धर्म्मराज फिर बोले इसविषयमें यह पुरातनइतिहास कहाजाता
है ४४ जिसमें कि महावनमें प्रेतों के साथ एक ब्राह्मण का संवाद
हुआ है मध्यदेश में पूर्व्वसमय धनशर्म्मा नाम ब्राह्मण हुआ ४५
कुशके लिये वनको जाकर उसने यह महाद्भुतदेखा अति भयभीत
होकर अतिदारुण तीनप्रेत उसने देखे ४६ जिनके कि बड़े ऊँचे
केश सुन्दर लालनयन कृष्णदन्त कृशउदर थे व विविध प्रकारके
शब्द करते थे व यत्नसे इधर उधर दौड़ते फिरते थे ४७ उन प्रेतों
को देखकर डरकर वह ब्राह्मण बड़े बेगसे रोताहुआ भागा व उस
के पीछे प्रेतभी गये ४८ उनप्रेतों ने जब उनब्राह्मण देवको बहुत
धर्षितकिया तो वे उनदुष्टों से मधुरबचन बोले धनशर्मा ने कहाकि
तुमलोग कौनहो व तुम्हारी यह नरकके योग्य दशाकैसेहुई ४९ हम
बहुत भयपीड़ितहैं दयाकरके हमारी रक्षाकरो जो तुमलोग भयभीत
निरपराधी हम वैष्णव पर वनमें कृपाकरोगे तो ५० श्रीकेशव तुम
लोगों का कल्याण करेंगे ब्राह्मण विष्णु भगवान्हैं सो हमारे ऊपर
जो दयाकरोगे तो बिष्णु तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहोंगे ५१ जो विष्णु

अतसीपुष्प समश्याम पीतवस्त्र धारण किये रहते हैं जिनके नामके श्रवण मात्र से महात्मालोग होते हैं ५२ व जो अनादि निधनदेव शंख चक्र गदा धारण किये रहते हैं अव्यय पुण्डरीकाक्ष प्रेतके मोक्ष देनेवालेहैं ५३ यमराजजी बोले कि विष्णु के नाम श्रवणमात्रसे वे प्रेतपितर होगये दया दाक्षिण्य से यन्त्रितहोकर पिशाचलोग पुण्यभावमें स्थितहुये ५४ सो उन ब्राह्मणदेवके वचनसे व भाग्यकी प्रेरणासे प्रसन्नहोकर ब्राह्मणसे प्रेत यह बोले क्षुधा पिपासा से व्याकुलहुये ५५ वे प्रेतलोग बोले कि हे बिप्र! तुम्हारे दर्शनसे व हरिके नामके सुननेसे हमलोग अन्यभावको प्राप्तहुये देखो दयालुहोगये ५६ सत्संगति पाप को दूरकरती है व कल्याणको जिलाती है निश्चय करके यश बिस्तारकरती है ५७ रसायनमयी और शान्तहोतीहै व परमानन्ददायिनी होती है बैष्णवों का अमृतरूपी प्रकाश किसको नहीं आनन्द करता ५८ प्रेत फिर बोले कि इसका कृतघ्न नाम है व दूसरे का विदैवत नाम है व मेरा अवैशाख नाम है मैं तीसराहूं मैं इन तीनोंमें भी अधिक पापीहूं ५९ इस पापीने सदैव कृतघ्नताका अनुष्ठानकिया इसीसे इसके कर्म्म के अनुसार इसका कृतघ्ननाम हुआ ६० यह पूर्व्वजन्म में सुदासनाम शूद्र था कृतघ्नताकरने के कारण हे द्विज! इस अवस्थाको प्राप्तहुआ है ६१ अतिपापी धूर्त्त गुरुद्रोही स्वामिद्रोही इनकी निष्कृतिहै पर कृतघ्नकी निष्कृति नहीं है६२ नाना नर समूह शरीरों से जोकि यम यातनाके अधिकारी हैं अवस्थाका अनुभवकरके इस अन्त्य अवस्थाको प्राप्तहुआ है ६३ यह बिना देवताका पूजन कियेहुये सदा अन्न भोजन किया करता था गुरु व ब्राह्मणोंको भी बिना दियेही भोजनकरता था ऐसा नास्तिकहुआथा इससे विदैवत इसका नामहुआ ६४ यह दशसहस्र ग्रामोंका स्वामी राजाथा पूर्व्वजन्म में इसका हरिवीरनाम था ६५ रोष अहङ्कार नास्तिक्यभावसे गुरुकी आज्ञालंघन करने में उद्यत रहताथा व बिना महायज्ञों के कियेहुये भोजन करलेता था व बड़ा विप्रनिन्दक था ६६ उस पापकर्म्मके कारण महानरक संकटका अनुभव करके विदैवतनाम प्रेत हुआ ६७ व मैं अवैशाख तीनों का

पापकारीहूं इसीसे मेरा कर्मजनाम यह अबैशाखहुआ मैं पूर्वजन्मका ब्राह्मणहूं ६८ मध्यदेश में मेराजन्म हुआथा गौतमगोत्रका था व गौतमनाम भी था व यज्ञभी मैंने कियाथा व ब्राह्मणों के रहनेवाले गांवमें रहताथा ६९ व मैंभी पूर्वजन्मका ब्राह्मणही था व पण्डितबड़ाथा मैं केवल एक वेदविहित धर्म्म के अनुसार कर्म्म करताथा इससे माधवदेवके उद्देशसे बैशाखमासमें मैंने कभी प्रातस्स्नान नहीं किया ७० व बैशाखी पूर्णमासी के दिन न मैंने कभी कुछदानकिया न हवन ही किया न श्रीहरिकी बैशाख में पूजाकी न बुद्धिमानोंका सन्तोषकिया ७१ व मणि कुम्भ जल दानों से देवता पितरोंको नहीं तृप्तकिया व न पौर्णमासीको ब्राह्मणोंको मधुसहित तिलदान किया ७२ व मूलफल ताम्बूल चन्दन व्यजन वस्त्रों से पण्डितोंकी पूजानहींकी जिससे कि देवता पितरोंकी सन्तुष्टता होती है ७३ मैंने एकभी बैशाखी पौर्णिमा पूर्णफल देनेवाली स्नान दान क्रिया पूजा पुण्यों से नहीं परिपालित की ७४ इससे मेरा सब वैदिककर्म्म निष्फल होगया इससे मैं अबैशाखनाम प्रेतहुआ ७५ यहसब मैंने तीनोंका भी कारण तुमसे कहा अब तुम मेरा व तीनों का उद्धारकरो जिससे कि ब्राह्मणहो ७६ जिससे कि ब्राह्मण तीर्थ सेभी अधिकहै साधु परमतप ये सब नरकोंमें गतभी लोगोंको महापापों से तारते हैं ७७ गङ्गादि पुण्यतीर्थों में जो नर सदा स्नान करताहै व जो सत्संगकरता है दोनोंमें सत्संग श्रेष्ठ है ७८ अथवा धनशर्म्मा नाम मेरापुत्रहै इससे तुम मेरेलिये वहांजाकर उपाय करके उसे समझाओ हे स्वामिन्! ७९ क्योंकि जो परायेकार्य्यकेलिये समुद्यम करके उसका कार्य्य सिद्धकरता है वह यज्ञ दान क्रिया से अधिक फलपाताहै ८० सूत शौनकादिकों से बोले कि प्रेतवाक्यको सुनकर धनशर्म्मा नाम वह ब्राह्मण बहुत दुःखितहुआ क्योंकि उसने अपने पिताको नरकमें पतितहोकर प्रेतयोनि में देखा ८१ व अपनी सबओरसे निन्दाकरताहुआ यह वचनकहा धनशर्म्माबोला कि हे स्वामिन्! मैं आपका पुत्रहूं गौतम के बंशको मैंने निरर्थक किया ८२ क्योंकि मुझ पुत्रसे पुत्रका अर्थ न हुआ अर्थात् पुन्नाम

नरक से रक्षाकरे उसका पुत्रनामहै वह मुझसे न हुआ आप तो प्रेत योनि में पड़ेही हैं जो पुत्र अपने पिताकी रक्षा नरकसे नहीं करता व अपनाको भी नहीं पवित्र करताहै जैसे कि धनवान् धनकानाश कर डालताहै दाननहीं करता ८३ यहधर्म्म बड़ागहन व सूक्ष्महै यथा-तथ्य नहीं जानपड़ता कि क्या है क्योंकि यदि वेदके अनुसार यज्ञ करनेवाले थे हमारे पिताजी इसदुर्गतिको पारहेहैं तो फिर क्या कहाजाय ८४ जैसे समुद्रमें सुखसे उतरनेका निमित्त जहाज़ होताहै ऐसेही इसलोक व परलोक दोनोंके सुखकेलिये सत्पुत्र होताहै ८५ धर्म्मसे पुरुषके पिता माता दो गुरुहोते हैं उनदोनों में भी वीर्य्यकी प्रधानता देखनेसे पिता श्रेष्ठहोताहै ८६ हेतात ! मैं क्याकरूं कहां जाऊँ व तुम्हारी गति कैसेहो धर्म्मका निश्चय मैं नहींजानता इस से संशययुक्त रहताहूं अब तुम्हीं कोई उपायबताओ ८७ प्रेतबोला कि हेपुत्र ! सुनो जो होनेवाला अर्थ हमारे विषयमेंथा वहतो होगया अब किसीपुण्यसे हमारीसुगति होनेवालीहै ८८ मैंने वेदविहितकर्म अभिमान से किया इतने कर्म्म अहंकार से करतेहुये हमने अपने गुरुके वाक्यका अनादर किया इससे गुरुका अपमानहुआ ८९ व गुरुओंके अपमानसे प्रहर्षक्रोध विस्मयोंसे पुण्य क्षयहोजातीहै व जैसे कि दुर्नीतियोंसे यश नष्टहोजाते हैं ९० यद्यपि पौराणिककर्म्म वेदके विरुद्ध नहींहोते परन्तु हमने पौराणिक कर्म्मका अनादर कर के अज्ञानसे केवल वैदिकही कर्म्मकिया ९१ हेपुत्र ! पाप इन्धनके लिये दावानलकी ज्वाला व पापवृक्षके लिये कुल्हाड़ी विधिसे एक भी वैशाखी पूर्णमासी मैंने न की ९२ व जो वैशाखी पूर्णिमाको नहीं करता वह अवैशाख कहाताहै व दश योनितक पशु पक्षियोंकी योनि को पाताहै९३ फिर अन्तमें प्रेतहोकर बहुत दिनोंतकदुःखित रहकर क्रमसे कभी दुर्लभ मनुष्यका जन्म पाताहै९४अब प्रेत मोक्षकारक श्रेष्ठउपाय तुमसे कहतेहैं जोकि पूर्व्वजन्ममें हमने अपने गुरूके मुख से सुनाथा ९५ हेपुत्र ! विधानसे यमुना जा स्नानकरके गृहको जाओ आजके पांचयेंदिन पितर देवताओं के आनन्द करनेवाली व सर्व्व गति देनेवाली कल्यादि वैशाखीपूर्णमासी आगई है ९६ सो इसमें

तिलसहित जलभी जो कोई देता है व सत्तू जलसहित कुम्भभी व फलभी भक्तिसे जो पितरों को देताहै यह सब देना सहस्र बर्षतक नित्य श्राद्धयज्ञ करनेके समान पितरोंके लिये होताहै ९७ बैशाखी पूर्णमासीको जो ब्राह्मणों को भोजनकराता है सीथ २ पर सीथोंकी संख्याके प्रमाण युगोंतक पितरोंकी तृप्ति होती है ९८ व बैशाखी पौर्णमासी को जो विधिपूर्व्वक स्नानकरके जो दश ब्राह्मणोंको भोजन कराताहै सोभी खीर खिलाताहै वह सब पापोंसे छूटजाताहै इस में कुछ संशय नहींहै ९९ उजले वा काले तिल मधु मिलाकर जो वैशाखीपूर्णिमाको दश विप्रोंको देताहै उन्हींसे स्वस्तिवाचन करावे १०० व धर्मराज प्रसन्नहोवे यह कहकर देव पितरोंको तर्पणकरे तो जिन्दगीभरका कियाहुआ पापक्षणमात्रमें नाशहोजाताहै १०१ब्रह्माजीने तिलोंको बैशाखी पूर्णिमाको उत्पन्न कियाथा इससे हेब्राह्मण ! तिलोंको उसदिन सबअंगोंमें स्पर्शकरना वा दानदेना चाहिये१०२ व उसी दिन जो यव मिलेहुये तिल जलमें मिलाकर सर्वाङ्गसे स्नान करताहै उसको ब्रह्मा व यम बांछितफल देतेहैं १०३ व उसी तिथि में यमराजकी प्रीतिके लिये जो सात जलसहित कुम्भ देता है वह मानों अपने सातकुलोंको निस्सन्देह तारताहै १०४ सो त्रयोदशी चतुर्दशी व पौर्णमासीको भक्तिमें तत्परहोकर स्नानकर व जपकरके हवनकरके दानदेकर व मधुसूदनजी की पूजाकरके १०५ जो फल मिले हे पुत्र ! वह हमारेलिये संकल्पदेओ परन्तु हम इन दोनों प्रेतों को छोड़कर स्वर्गवास नहीं करना चाहते १०६ क्योंकि इनदोनों के भी पापोंका भी अन्तसमय आगया यमराजजी ने कहा कि यह सुनकर ऐसाही करेंगे यहकहकर उस ब्राह्मणने अपने गृहमें जाकर सब वैसाहीकिया जैसा कि प्रेत उसके पिताने कहाथा १०७ प्रीति से व परमभक्तिसे सब स्नान दानादिककिया व भक्तिसे प्रातःकाल स्नानकरके बैशाखकी पूर्णमासी को पाकर १०८ बहुत दान देकर उनकी पुण्य उनतीनों प्रेतों के लिये अलग२ देकर जैसे स्थितहुआ कि उसी समय विमानपर चढ़कर सब तीनों प्रेत प्रेतत्वसे छूटकर स्वर्गको चलेगये १०९ ॥

चौ० । त्यहिसुदानअरुपुण्यसुयोगा । धनशर्म्माद्विजविगतविशोगा॥
बहुतकालतकभोगिसुभोगा॥ब्रह्मलोककहँगयहुअशोगा ११०।१११
धर्म्मराज फिर यज्ञदत्त ब्राह्मणसे बोले इसीसे यह बैशाखी पूर्णिमा संसारको पवित्र करनेवालीहै हे विप्र! इससे हमसे संक्षेप से कहो ११२ कि जो लोग बैशाखमास में प्रातःकाल स्नानकरके श्रीमधुसूदनजीकी पूजाकरतेहैं मनसे विशुद्ध वे लोगही धन्यहैं सुकृती भी हैं व वेहीपुरुष लोकमें पुरुषार्थ के भागीहैं ११३ जो मनुष्य सम्पूर्ण यम नियमों से युक्तहोकर बैशाख मासमें प्रभातसमय स्नानकरके श्रीलक्ष्मीनाथकी पूजा आराधना करताहै वहदुष्टभीहो तो निश्चय पापको नष्टकरता है ११४ भक्तिसे जो बैशाखमें प्रातस्स्नान करतेहैं उन्हीं लोगोंने कालको जीता व वेही मनुष्योंमें धन्यहैं व वेही अन्धकाररूप पापसे विगतहैं व वेही फिर गर्भमें नहीं डूबते ११५ जिस बैशाख मासमें किसीप्रकार थोड़ी भी पुण्यकरनेसे कल्पभर करनेकेयोग्य होजातीहै वह बैशाखमास यज्ञोंके योगसे तप व क्रिया दान विधानके योगसे भी गर्जताहै ११६ माधव मासमें माधवकी पूजा करनेमें मनलगायेहुये व प्रातःकाल स्नान कियेहुये मनुष्यके हितके उदयमें मनुष्य चाहे तामससेयुक्त भीहो परन्तु जल बिन्दुके संगमसे अपने अङ्गको पावनकरताहै ११७ प्राणी अन्य पुण्यकरके देहछोड़कर मुक्तिपाकर फिर जन्मधरके अघयुक्त विचरने लगतेहैं जबतक कि रमारमणके प्रिय बैशाख मासमें प्रातःस्नाननहीं करते अर्थात् बैशाखस्नान करनेवाला फिर जन्म नहींलेता ११८ व प्रातःकाल तीर्थमें स्नानकरनेके लिये माधवमास में जो मनुष्य कदमधरता है व माधवजी के चरणकमलों को भजताहै वह सहस्र अश्वमेध यज्ञोंका फलपाकर श्रीमाधवके स्मरणसे व उनका नाम पढ़नेसे मुक्तहोजाताहै ११९ सुमेरु व मन्दराचलके समान अनेक उग्रपापोंको प्रातस्स्नान करने से माधवजीका प्रिय यह माधवमास भस्मकरताहै १२० हे द्विज! हमने अनुग्रहकरके श्रोताके पापोंके चय करनेवाला बैशाख स्नानका माहात्म्य संक्षेपरीतिसे तुमसेकहा १२१ हमारा कहा यह इतिहास जो भक्तिसे सुनेगा वह सबपापोंसे छूट-

कर हमको न देखेगा १२२ ब्रह्महत्यादिक बहुत कियेहुयेभी पाप बैशाख स्नान विधानसे निश्चयनष्टहोजाते हैं १२३ विधिपूर्वक बैशाख स्नानकरनेसे तीस प्रथमके तीस पीछेके व तीस और आगे पीछे के पितरों को नरकसे उद्धारकरता है १२४ एकओर सब तीर्त्थ व दक्षिणासहित सबयज्ञ और एकओर नियमके अनुसार पालित बैशाखमाहात्म्य १२५ जिससे कि सरलतासे सब कर्म्मकरनेमें समर्त्थ श्रीभगवान् हरिको यह बैशाख माहात्म्य प्रियहै इससे वह मास सब मासोंमें प्रबल व अधिकहै १२६ हे ब्राह्मण! तुम बैशाख के विषय में किसीप्रकारका संशय न करो हम संक्षेपसे कहतेहैं कि बैशाख के तुल्य अन्य कुछ विशेष पदार्त्थ नहींहै १२७ इसविषय में जो पूर्व्वकालका वृत्तान्तहै वह अद्भुत सुनो यद्यपि यह कथा कहनेके योग्य नहीं है तथापि तुमसे कहेंगे १२८ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेबैशाखमाहात्म्येपातालखण्डेअष्टनवतितमोऽध्यायः ९८

निन्नानबेवां अध्याय ॥

यमराज बोले कि पूर्व्वकालमें महीरथनाम एक राजाहुआ पूर्व्व पुण्यके फलको वह प्रथमके ऐश्वर्य्य व सम्पदा कीपुण्य विशेषका फल जानताथा १ वह केवल कामकला की ललना से लालित स्थितिके व्यसनमें आसक्त नारीकर्म्म में व्यवस्थित धर्मार्थमें न व्यवस्थितहुआ हो२मंत्रियोंमें राज्यश्रीको स्थापितकर आप स्त्रियों के सुखको भोगनेलगा व ऐसीकामिनियोंका सहचरहोगया कि राज्यकार्य्यसे पराङ्मुख होगया ३ न प्रजाको देखता न धनको न धर्म्म को न अर्थको न कार्य्यको केवल नारियोंकाही अकार्य्यदेखा करताथा केवल कामिनीकेलिये कलितभावना से युक्तहुआ ४इसप्रकार बहुत काल बीतजानेपर उसके पुरोहित कश्यप चित्तमें धर्म्मकी चिन्तना करतेहुये वचन बोले ५ कि जो गुरु मोहसे अधर्म्म करतेहुये राजा को नहीं समझाता वहभी उसपापका भोक्ताहोताहै इससे पुरोहित को नृपतिको अवश्य समझाना चाहिये ६ जो पुरोहितके समझाने पर भी राजा न समझे तो पुरोहित निर्दोषहोजाताहै व राजा सब दोषोंका भागीहोताहै ७ हे राजन्! सुनो हमारेगुरुका वचन धर्म्मार्त्थसे

सम्मतथा अर्त्थयुक्त व उत्तमइच्छारागादि से वर्जित अर्थसे भिन्न-
था ८ यही परम धर्म्महै जो गुरुके वचनपर स्थितरहै गुरुकीआज्ञा
पालनसे राजाओंकी आयु श्री सौख्य बढ़तीहै ९ हे राजन्! न तुम
ने दानोंसे बिप्रोंको तृप्तकिया न विष्णुकी आराधना तुमनेकी न ब्रत
न कुछ तप न तीर्थ सेवनकिया १० हरिका नाम भी तुमने काम के
बशीभूतहोकर नहीं चिन्तन किया व बड़े कष्टकी बातहै कि तुमने
भीरुसंगति से विद्वानोंकी संगति नहींकी ११ कामकीकला बढ़ाने-
वाली स्त्रियां किसको नहीं प्रियहोतीं क्योंकि वे पवनसे भी चंचल
व कदली के तुल्य चलायमान होती हैं १२ अब तरंगकीतरह च-
लायमान अर्त्थों से व भ्रूभंगसे भंगुरभोगों से कुछकाम नहीं है मु-
हूर्त्तभरमें पीनेकेयोग्य तरुणताओं से महाशय नहीं तृप्तहोते १३
जिसका स्त्रियों से मनहरगया उसे विद्यासे क्याहै व तपसे क्या है
त्यागसे क्या व शास्त्रपढ़ने से क्याहै व एकान्त में बिचारकरतेहुये
मनसे क्या है १४ एक धर्म्महीं सुहृद् है क्योंकि वह मरनेपर भी
साथ साथ जाताहै व अन्य सब तो शरीरही के साथ नष्टहोजाताहै
१५ धर्म्म धीरे धीरे इकट्ठाकरना चाहिये जैसे दीवँक कीड़ा बामी वा
बमौटाको धीरे २ करते हैं क्योंकि धर्महीकी सहायतासे दुस्तर अ-
न्धकारको पुरुष तरताहै १६ हे राजेन्द्र! पवनसे चलायमान जलसे
उठेहुये कल्लोलों से भी चञ्चल मनुष्यों के जीवितको क्या नहीं जा-
नतेहो १७ जिनका रत्नमुकुट विनयहै व सत्य व धर्म्म कुण्डल हैं व
त्याग जिनका कङ्कणहैं उनको बहुत शिरके केश सँवारने चिकनाने
से क्याहै १८ काष्ठ व ढीलेके समान पड़ेहुये मृतक शरीरको छोड़-
कर बान्धव बिमुखहोकर चलेजाते हैं व धर्म्म उसके पीछे २ चला-
जाता है १९ सब जानेवालों को देखकर व क्षीण होतीहुई आयु
को देखकर प्राणोंको लुप्यमान जानकर उठकर क्यों नहीं दौड़तेहो
२० कुटुम्ब पुत्र दारादि शरीर द्रव्यसंचय ये सब सदानहीं रहते व
शृगाल व कुत्तोंके खाने के पदार्त्थ हैं व सुकृत व दुष्कृत अपने हैं
२१ जब सब छोड़कर तुमको अवशहोकर जानाहीहै तो तुम अनर्त्थ
में क्यों आसक्त होगये स्वधर्म्मका अनुष्ठान क्योंनहीं करतेहो २२

विश्रामहीन आलम्बरहित नाशरूप यमदूतोंकी आज्ञासे दिखा-येहुये अन्धकार वनसेयुक्त मार्ग्ग में तुम अकेले मृतकहोकर कैसे जाओगे २३ जब तुम चलोगे तो तुम्हारे पीछे २ कोई न जायगा केवल पुण्य पाप जातेहुये तुम्हारे पीछे जायगा २४ वेद पुराण ध-र्म्मशास्त्रोंका कहाहुआ कर्म्म जो कि कुलदेशके उचित व हितहो ऐसे धर्म्ममूलकी सेवाकरो व अनलस होकर सदाचारकी सेवाकरो २५ इससमय अर्थ काम दोनोंको छोड़ो क्योंकि ये दोनों धर्म्म विवर्जित होंगे इससे धर्म्महीकी सेवाकरो क्योंकि धर्म्म से अर्थ कामादिक सुख सब मिलते हैं २६ रात्रि दिन इन्द्रियोंके जयके योग में टिको क्योंकि जितेन्द्रिय होनेसे अपने मार्ग्गपर प्रजाको स्थापित करनेमें समर्थ होओगे २७ नवीन व धृष्ट स्त्रीके कटाक्ष के समान चञ्चल लक्ष्मी विनयसे युक्त राजाके यहां बहुतकालतक रहती है २८ व कामदर्पादि शील अविचारितकारी व मूढ़चित्त राजाओं की सम्पदायें आयुके साथही नष्टहोजाती हैं २९ नष्ट देखीहुई विभू-तियों से महायश नहीं प्रकाशितहोता चाहे वे आईहुई विभूतियांहों अथवा गईहुईहों उनसे पृथ्वीपर यशकी वृद्धि नहींहोती जैसे नदियों के आनेसे न समुद्रकी वृद्धिहोतीहै न मेघों के जललेजाने से हानि होतीहै ३० व्यसन व मृत्युका व्यसन कष्ट कहाताहै उनमें व्यसनी नीचे २ जाताहै व अव्यसनी राजा स्वर्ग्गको जाताहै ३१ व्यसन सब दुरन्तहैं पर कामसे उत्पन्न व्यसन तो विशेष दुरन्त होते हैं इससे हे महाराज! धर्म्मविरोधी कामकोत्यागो ३२ जड़ अविवेकी दुष्टात्मा असुरोंके भी भाग्यभोग्यवाले राजसुख होतेहैं चाहे वे अनीति भी करते हैं ३३ परन्तु पापोंकी सेवाकरने के कारण वे भोग्य सुखादि स्थिर नहींहोते जैसे थोड़ासा अग्नि गीले इन्धनके डालने से नष्टही होजाताहै ३४ चलते बैठते जागते व सोतेहुये जिसका चित्त अ-विचारमें पर होताहै वह मानो मृतकही है ३५ सज्जन उपदेश क-रनेवाला वृद्धगुरु कहाताहै क्योंकि जिसके विपत् निकट आजाती है उसके शिरकेबालही उपदेशकर्त्ता होतेहैं ३६ प्राज्ञको चाहिये कि विषमज्वरको छोड़कर स्वस्थचित्त व बुद्धिसे व क्षमासे व व्यवहा-

रिणी युक्तिसे ज्ञानीपुरुष स्वार्थ साधनकरे ३७ अशुभ से स्वार्थ चलाजाताहै उससे शुभचलाजाताहै जन्तुका चित्त बालकों के चित्त के समानहै बलसे उसको चलादेताहै ३८ इससे हे राजन्! धर्म्मदर्शी वृद्धोंकी नीतिको अपने मनमें धारणकरके उत्कृष्टबुद्धि से उत्पथगामी चित्तको अपने वशमेंकरो ३९ क्योंकि धन धान्य उपकार नहींकरते न मित्र न बान्धव न हाथों पैरोंका चलाना न देशान्तर के संगम ४० न शरीरक्लेशकी विधुरता न तीर्थदेव मन्दिरादि किन्तु जिसने अपने मनको जीताहै वही जिताहुआ मन सब कुछ सिद्ध व उपकार करताहै ४१ व जो बिषममें चित्त वर्त्तमान रहताहै तो दुष्टताकरता है इससे चित्तका संयम करनाचाहिये हेराजन्!पण्डितको चाहिये कि ऐसा यत्न करतारहे जैसे हांकनेवाला घोड़ेको यत्न सेहांकताहै ४२ ऐसा कर्म्म राजन् आपको करनाथा पर आपउससे बञ्चितरहे मुनियोंसे ऋषियोंसे कभी कुछ नहीं पाया पर इससमय हमारी बातसुनो ४३ मोहयुक्त भी मनुष्यको चाहिये कि अपने सुहृदोंसे पूँछे व पूँछनेपर वे जैसाकहें वैसाही यथोचित करनाचाहिये ४४ सब उपायसे काम व कोप दोनोंको दण्डदेना चाहिये जिससे कि कल्याणके अर्थीके कल्याणके ये दोनों काम व कोप घातक होते हैं ४५ हे राजन्! काम बड़ा बलवान्है इससे शरीरमें टिकाहुआ महान् बैरीहै जो कल्याण की अभिलाषाकरताहो हेराजन्! काम के बशीभूत न होवे ४६ इस कामको देवदेव त्रिशूलीजी ने पूर्वहीं अपने ललाटके अग्नि से भस्मकरडाला था तबसे वह अनङ्ग कहाने लगा ४७ सो वहमाराहुआ काम जब स्त्रीकी इच्छाकरताहै तो पुरुष के शरीर में आकर अपने रूपको वह दिखाताहै ४८ जब पुरुष स्त्री के रूपको बार २ चिन्तना करताहै तो बिनादेखेहुए उस पुरुष के शरीरमें प्रवेशकरके पुरुषको उन्माद कराताहै ४९ उसीतरह नारी के शरीरमें पैठकर स्त्री के शरीरका उन्माद करताहै इसमें कुछ संशयनहींहै हे नृप! स्मरण करनेसेही उत्पन्नहोताहै इसीसे इस काम का एक स्मरभी नामहुआ है ५० हे बीर! रङ्ग जैसाहोताहै उसीरङ्ग से वस्त्र में प्रवेश करजाताहै अपने तेजके प्रकाशसे अश्रुधाराकोभी

पीनेके योग्य करताहै ५१ नारीके रूपमें आकर धीरपुरुषों को भी मोहितकरताहै व पुरुषके रूपमें आकर स्त्रीको मोहित करताहै ५२ हे राजन्! वही अशरीर बड़े २ लोगों के शरीर में प्राप्तहोकर कैसे पाप प्रकट करदेताहै ५३ जिसको प्राप्तहोकर अतिपवित्र भी पञ्चगव्य इत्यादि हवि क्षणमात्र में अशुचि होजाते हैं इससे काम से अधिक और कौन अशुचिहै ५४ ॥

चौ० निजमलकी दुर्गन्धिहुसूंघत । देखत सबजननिजचषमूंदत ॥
छुवततासु उपजतअतिग्लानी । तासुअधार शरीरबखानी १ । ५५
हव्यसुरभिशुचिअन्नरुपाना । जाहिपायअतिअशुचिमलाना ॥
त्यहिशरीरसों को जगमाहीं । अशुचिकहहुकुछसंशयनाहीं २ । ५६
जासुउदरगत अन्नअनूपा । तजत तुरत निज सुन्दर रूपा ॥
कृमिताअशुचिरूपताहोई । कहुअपवित्र ततोऽधिक कोई ३ । ५७

धर्म्मराज फिर बोले कि हे भूपाल! ऐसेही देहभी अपने रूपको छोड़देताहै व पीछे शून्यता को प्राप्तहोताहै व कृमि दुर्गन्धिसे संकुलहोजाता है ५८ व शरीरमें जुआं पड़जाते हैं अथवा कृमि पड़जाते हैं इसमें संशय नहीं है वे कृमि स्फोट करदेते हैं व दारुण खजुली उत्पन्नकरते हैं ५९ व्यथाको उत्पन्नकरके फिर सब अङ्गों को चलायमान करतेहैं फिर नखोंके अग्रभागोंसे खजुलानेसे वह खजुहट शान्तहोजातीहै ६० जैसे मनुष्य स्वादिष्ठ रसोंको खाताहै व फिरपीता है ६१ ऐसेही मैथुनकरनेका सुखभीहोताहै इसमें कुछ सन्देहनहीं है फिर वही अन्नादि वायुसे प्रेरितहोकर पाकके स्थानमें जाताहै प्राणी लोग जो खातेहैं वह पाकस्थानमें फिर जाताहै वहांका रहनेवाला अग्निपकाकर मलको अपान स्थानमें पहुँचाता है व सारभूत रस वहां उद्रिक्तहोजाताहै ६२ उसमें जो कुछ निर्म्मल शुद्धबीज होताहै वह ब्रह्मस्थानको जाताहै आकर्षणके समसानसे उस वायुसे प्रेरित होकर पहुँचायाजाताहै ६३ फिर वह वीर्य्य अपने स्थानको नहींपाता है चंचलहोकर रहताहै व सब प्राणियों के मस्तकमें पांच कृमिहोते हैं ६४ उनमें दो तो कानोंकी जड़में होतेहैं व दो नेत्र स्थानमेंहोते हैं ये कनिष्ठांगुली के प्रमाण के हे राजन्! लाली पूँछसहित कृमि

होतेहैं ६५ नवनीत के रङ्गके काली पूँछके होतेहैं इसमें संशयनहीं है तुम्हारा कल्याणहो उनके नाम कहतेहुये हमसेसुनो ६६ पिंगली शृङ्कलीनाम के दो कृमि कर्णमूलों में रहतेहैं शृङ्कली व जङ्गली नाम के दो और नेत्रोंके मध्यमें स्थितहैं ६७ ऐसे कृमि डेढ़सौ शरीर में रहतेहैं व सब राजिकाके प्रमाणके व ललाटान्तमें स्थितरहतेहैं इस में संशयनहीं है ६८ व कपालमें रोग पैदाकरते हैं इसमें संशयनहीं है अब और प्राजापत्य नाम महाकृमि कहते हैं सुनो ६९ यह तण्डुल के प्रमाणका होताहै व वैसाही रङ्गभी इसकाहोताहै इस में संशय नहींहै व उसके मुखमें दो बाल होते हैं हे राजन्! सुनो ७० वह प्राणियों की संक्षयकारक बुद्धि क्षणमात्र में होतीहै इसमें सन्देह नहीं है अपने स्थानपर स्थितभीरहताहै तौभी प्राजापत्य के मुखमें ७१ वह वीर्य्यरसरूपहोकर पतितहोता है इसमें संशयनहीं है व मुखसे वीर्य्य पीकर वह प्रमत्तहोजाता है ७२ व वह तालुस्थानको भेदन करदेता है फिर तालुस्थानको भेदनकरके चञ्चलता में प्रवृत्तहोताहै व इडा पिंगला व सुषुम्णा नामकी तीन नाडिकाहोती हैं ७३ सो उसीसुबल से नाडिका समूह कांपता रहताहै उसीसे राजन् सब प्राणिओंके कामकण्डूहोती है ७४ व वह पुरुषके लिङ्गमें व स्त्रीकी योनिमें (कण्डू) खजुहट होतीहै उससे स्त्री पुरुष दोनोंको अङ्गसङ्ग करनेकी इच्छा होतीहै ७५ तब शरीरको शरीरमें घिसते हैं उसीको मैथुन कहते हैं एक क्षणमात्र सुखहोताहै फिर उसीप्रकारकी खजुली उत्पन्न होती है ७६ हे वीर! सर्व्वत्र इसीप्रकारका भाव दिखाईदेताहै यह विषय का काल विरसहै इसमें संशयनहीं ७७ इससे धर्म्मही कल्याणकारी है पर जो विधिपूर्व्वक अनुष्ठान कियाहुआ धर्म्महै इससे धैर्य्यधारण करके तुम धर्म्मही अच्छेप्रकारकरो ७८ देखो यह चञ्चलश्वास क्षण भरमें आताजाता रहताहै व प्राणियोंका जीवन उसी श्वासके अधीन है सो ऐसे जीवनको पाकर कहो कौन धर्म्मकरनेमें विलम्बकरे ७९ ऐसेनश्वर शरीरकोपाकरचलचित्तनिषिद्धविषयोंसे विरामनहींकरता है ८० सो कैसे विराम करसक्ताहै क्योंकि कभी काम कामोंके उपभोग से शान्तनहींहोता जैसे कि हविसे अग्नि फिर २ बढ़ताही रहताहै

जबतक हविष्य डालतेजाओगे अग्नि प्रज्वलित होताजायगा ८१ फिर पुंश्चली वेश्यादिकों से अपहृतमनको कौनछुड़ासक्ताहै हां आत्माराम ईश्वर भगवान् माधवजीको छोड़कर ८२ इस कामकश्मल से सब निष्फल होजाताहै हेराजन्! अभी तुम्हारी अवस्थाभीहै इससे अपना हितकरो ८३ हे राजन्! हम सबसे उत्तमोत्तम हित कहेंगे क्योंकि हम तुम्हारे पुरोहित हैं व सत् असत् कर्म्म के भागी भी हैं ८४ एक तरफ़ पापियों का पाप नाशकरने के लिये सबपुण्य व एक तरफ़ माधवजीका सदा प्यारा वैसाखमास ८५ ब्रह्महत्या सुरापान चोरी गुरुपत्नीभोग ये बड़ेपाप मुनीश्वरोंने कहेहैं ८६ इससे जौन मनसे व देहसे व ब्रतसे मनुष्योंने पापकियाहै वैशाखमास उनसब पापान्धकारों का नाशकहै ८७ जैसे सूर्य्य अन्धकारको नष्टकरतेहैं इससे वैशाखमास तुम विधानसेकरो ८८ क्योंकि हेराजन्! जन्मसे लेकर उससमय तक कियेहुये घोरमहापापों को छोड़कर मनुष्य वैशाखमासके करनेके पुण्यके प्रभावसे हरिपुरको पातेहैं ८९ जो एक भी वैशाखमास विधानसे मनुष्य करतेहैं चाहे आप राजालोगहों वा अन्यपापीहों सब हरिलोकको चलेजाते हैं ९० इससे हे राजेन्द्र! इससमय तुमभी इस वैशाखमासमें प्रातःकाल स्नानकरके विधान से श्रीहरिकीपूजाकरो ९१ हेवीर! जैसेक्रियाकरनेसे धानकीभूसी निकलजातीहै तबतण्डुल होजातेहैं व ताम्रकी कालिमा जातीरहतीहै ऐसेही क्रियाकरने से पुरुषके मल दूरहोतेहैं ९२ जीव का व तण्डुलोंका एकही प्रकारका बड़ाभारी मलहै पर युक्ति करने से दोनोंके मल दूर होजाते हैं इसमें सन्देह नहीं है इससे जैसाकर्म्म कहाहै वैसाकरो ९३॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवैशाखमाहात्म्येनवनवतितमोऽध्यायः ९९॥

सौवां अध्याय ॥

राजाबोला कि हेभगवन्! निर्म्मलदुग्ध जलतुल्य शीतलअमल दृष्टिवाली व सत्यसे विचित्र आपकी बाणियों से मैं बोधितहुआ १ सो सज्जनोंके संगमसे क्यानहींहोता उनका संगम बिनासागर से निकला हुआ अमृतहै व बिनाद्रव्यका व्यसन औषधहै व जो कि संसाररूपीरोगका नाशक आपने मुझेपिलाया २ व मनुष्योंको आनन्द

देनेवाला व पापनाशक व जीवनका औषधरूप व जरामृत्युका नाशक हे ब्राह्मण! सत्पुरुषोंका समागम होताहै ३ महीतलपर जो बांछित दुःखसे मिलनेकेयोग्यहोतेहैं वे सब साधुओंके संगमहीसे मिलते हैं ४ जो पापहारी साधुसंगतिरूप गङ्गा यमुनाके संगममें स्नानकरताहै उसको दानोंसे क्याहै व तीर्थोंसे क्याहै तपोंसे क्या व यज्ञों से क्याहै ५ घोर भवसागरमें बूड़तेउतराते फिर बूड़तेहुये लोगोंके श्रेष्ठसाधनशांतचित्त धर्म्मज्ञ पण्डित महात्मालोगहैं जैसे समुद्रमें डूबतेहुये लोगोंके लिये नौका साधन होतीहै ६ हेविद्वन्! कामके एकसुखकी लालसा किये हुये जो मेराभाव पूर्व्व समयमेंथा वह तुम्हारेदर्शन व बचनसे अब बिपरीतहोगया वह भाव अब नहींरहा ७ भला एकजन्मके सुखके अर्थ सहस्रजन्मोंका लोप कौनकरै क्योंकि प्राज्ञको एकजन्मसे सहस्रजन्मोंके लिये पुण्यइकट्ठी करनीचाहिये ८ हाहा कामरसके आस्वाद सुखकीलालसामें चित्तलगायेहुये मुझमूढ़ने अपना कुछभी हित न किया सब हतही करदिया ९ अहो मेरा आत्मसम्मोह ऐसा कि जिससे मेरा आत्मा स्त्रियोंसे हतहुआ व दुरत्यय घोर दुःखवाले व्यसन में गिरायागया १० हेभगवन्! तुम्हारे वचनसे परिबोधित होकर मैं बहुत सन्तुष्ट हुआ अब उपदेश दान करनेसे इससंसारसे उद्धार करनेके योग्य आपहैं ११ मैं जानताहूं कि पूर्व्वकाल में मैंने कुछ बहुत पुण्य कियाहै इसीसे आपने मुझको ज्ञान दिया है अथवा तुम्हारे चरणोंके रजसे मैं बिशेषरीतिसे पवित्र हुआहूं १२ हे कहनेवालोंमें श्रेष्ठ! अब बैशाखमासका विधान मुझसे कहो सबपापक्षय करनेवाला जो तुमने मुझसे कहाहै १३ बैशाख में क्या दानदिया जाताहै स्नानकैसे कियाजाताहै किसदेवकी पूजाकीजातीहै व नियम कौन २ कियेजातेहैं हे बिप्रवर्य्य! मेरेपापके उद्धारके लिये यह सब कहो १४ यमराजजी ने कहा जब दयानिधि भगवान् कश्यपमुनि से राजाने ऐसाकहा तो विश्वम्भरकाहितकारी धर्ममें श्रेष्ठवचन बिप्रदेव बोले कि १५ कश्यपजीनेकहा कि पूर्व्वापर समाधानके योग्यकी क्षमा बुद्धियुक्त बाणी से जो कुछ तुमने पूंछा व कोई पापमनवाला मनुष्य पूंछे तो पण्डितको अवश्य उत्तरदेनाचाहिये १६ व हे भूप! पाप

में टिकेहुयेको जो शुभसम्मतिदेताहै वह विद्यादान देनेकाफल अच्छे प्रकार पाताहै इसमें कुछसंशय नहींहै १७ बिनपूंछे किसीसे कुछ न कहनाचाहिये व अन्यायसे पूंछनेवालेसे भी कुछ न कहनाचाहिये ऐसे प्रश्नका उत्तर जो पण्डित जानताभीहो तो उसको चाहिये जड़वत् चुपरहे कुछ उत्तर न देवे १८ व विद्वान् शिष्य पुत्र यजमान व श्रद्धावान् जब प्राप्तहों तो उनसे विनापूंछा भी कल्याणकारक हित समाचार कहना चाहिये १९ हे राजन्! इससमय तुम हमारे कहने से शुद्धहृदयहुये इससे मालूम होताहै कि पूर्वजन्म में कुछ पुण्य तुमनेकीहै २० हे नृप! तुम्हारा शरीर पापके बशमेंथा व उसीके आश्रयथा परन्तु हमारे कहेहुये धर्म्मवाक्यके सुनने से अब धर्म्मयुक्त तुमकुछ होगये २१ व पापावस्थाको प्राप्त धर्म्म ज्ञान विवर्जित अधर्म्म कहाताहै व इससे विपरीत धार्म्मिक कहाताहै २२ धर्म्म अधर्म्म के भोगकेलिये तीसरी इन्द्रियाँहैं उनसेयुक्त शरीर तीनप्रकार का धर्म्मवेत्ता कहते हैं २३ एकयातना भोगनेका शरीर दूसरा धर्म्म भोगनेका व तीसरा मुक्तिपानेका बस शरीरके येही तीनों भेदहैं व जो शरीर पापके वश्य है वह पाप संज्ञा कहाता है २४ इस समय गुरुभक्ति करतेहुये हमारावचन सुनतेहुये व धर्म्मरूप तुम्हारा शरीर धर्म्मव्यवस्थासे युक्तहुआ २५ इसीसे अब तुम्हारी बुद्धि निर्म्मलहोकर धर्म्मक्रियाके योग्यहोगई भाग्यसे प्राणियों के नाम चित्त व आचरण २६ कालपाकर विपर्य्यताको प्राप्तहोकर शरीरोंको पुष्ट करते हैं अब तुम्हारा चित्त निश्चयकरके धर्म्म में प्रवृत्त है २७ इससे अब हमतुमको उत्तम बैशाख स्नान करावेंगे यमराज यशदत्तब्राह्मण से बोले कि ऐसाकहकर उन कश्यपनाम पुरोहित ने राजाको बैशाख स्नान कराया २८ व उस राजाने बैशाख मास में स्नान दान पूजन सबकिया व जैसाकि उसके पुरोहितजी ने शास्त्र से बैशाखस्नानकी बिधि पहले सुनाया व बताया २९ जबमुनि ने उसराजाको जैसा चाहिये सब स्तोत्रसार सुनाया व पढ़ाया व हरिपूजन बताया ३० जिसके सुनने व पढ़ने से सुन्दर फल मिलता है ३१ वहसब मुनिने कराया जिससे कि राजाने भी विशुद्धभाव

होकर विधि से उस समय सबकुछ किया जैसा श्री बैशाखमासका माहात्म्य सुन सब उसी के अनुसार से आदरसे किया ३२ प्रातःकाल पवित्र होकर स्नान व पीछे पाद्य व अर्घ्य हरिपूजन नैवेद्य भक्तिभावसे श्रेष्ठराजाने किया ३३ दान सब नियमों का पालन आदरसे किया सो एकदिन नहीं बैशाखमासभर बराबर अन्य सब छोड़कर राजाने बिधिसे सब बैशाख पूर्णकिया जो ब्राह्मण श्रेष्ठ साल २ में भक्तिसे रोज २ करता है वह हरिधामको जाता है ३४ व जबतक जिया इस बैशाखका स्नान विधि से करतारहा व अन्य ग्यारहमासोंमें अपनी इच्छाके अनुसार कामिनियोंके समूहके साथ कुचकेलि करताथा व भोगकी लालसासे अपने मनमाने विहारादि किया करताथा ३५ बैशाख मासको छोड़कर अन्य मासोंमें राजाने कभी धर्म्म कार्य्यका नियम नहींकिया क्योंकि अन्य मासोंमें केवल कामकेही बशीभूत रहता था ३६ ॥

चौ० काम परम दुर्व्वार कहावा। बुधजनहूं नहिं ताहिजितावा ॥
सो अनादि सब शासनकारी। तनुकहँबिकलकरतहैभारी १।३७
केशबन्ध शालिनि दुस्स्पर्शा। कठिन लोचनी कामिसुदर्शा ॥
अग्निशिखासम नारि न शंका ।तृणसमनरहिदहतअतिबंका२।३८
देह मध्य मनसिज नर बैरी। सकलभांति बिचरत जनुगैरी ॥
मोहधूमसों अन्ध कराहीं । त्यहिदेखतकछुसंशयनाहीं ३।३९

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवैशाखमाहात्म्येशततमोऽध्यायः १००॥

एकसौएकका अध्याय ॥

दो० एकोत्तरशतयें महं नृपमरि हरिपुर जात।
यमपुर हैनारकबचनसुनिदयालुयुतशात १
कह्यो दूतसों नारकी ताजि हरिपुर नहिं जाव ॥
दूत पाप कृतवास यह यह भूपतिहि बताव २

यमराज बोले कि इसके उपरांत कालकटाक्ष से देखाहुआ राजा अतिरति के सेवन से क्षीणशरीर होकर मरगया १ जैसेही राजा मृतकहुआ कि यमराज के गण आकर बारबार ताड़ित करतेहुये लेचले व राजा अपने पातकोंका स्मरण करतेहुये रोदन करनेलगा २

इतने में विष्णुदूत हमारे दूतों को ताड़ित करके व यह बड़ा धर्म्म-वान्है यह कहकर उन्होंने बिमान पर चढ़ालिया ३ व बैशाखमास में प्रातःकाल स्नानकरने से क्षीणपाप होकर राजा अप्सराओं से स्तुति पाताहुआ हरिपुरमें पहुँचायागया ४ फिर देवदूतोंने बिचारा कि यह तो धर्म्म विहीन है विष्णुदूत भी उसको विष्णुकी आज्ञासे नरकके समीपही लेकर निकले ५ तब उस राजाने जीवोंके रोनेका शब्दसुना वह नरकमें पच्यमान जीवों का त्रिविधप्रकारका राव था ६ जोकि पापकेमारे अतिदारुण घोर पुकारकरतेथे पहिले तो नहीं सुनाथा फिर पीछे से सुनकर राजा बहुत विस्मित व दुःखित हुआ ७ व दूतोंसे पूँछा कि यह किसका दारुणरोदन सुनाईदेताहै पहिले सुनाई दिया व अब फिर नहीं सुनाई देता इसका हमसे कारण बताओ ८ तब देवदूत बोले कि ये जंतुहैं अपने कर्म्मादिकमें पापकरते थे व अपने आचारसे बर्जितरहते थे अब तामिस्रादिक घोरनरकोंमें गिरायेगयेहैं ९ येसब बड़े२ पापकिये हैं इससे मरनेकेपीछे दक्षिण मार्ग्गमें जाकर नानाप्रकारके दारुणदुःख भोगरहे हैं १० व यमराजके घोरपुरुषोंसे इधर उधर खींचेजातेहैं व यमदूत इनको अंधकार मार्ग्गहोकर खींचते चलेजाते हैं ११ कुत्ता शृगाल काक कङ्क बकादिकोंसे नोचेजाते हैं व अग्निके समान जलतीहुई टोंटोंसे भक्ष्यमाण होतेहैं भेड़िया व व्याघ्र व सर्प्पों व वृश्चिकोंसे भी काटेजाते हैं १२ अग्निसे जलायेजाते हैं व कण्टकों से छेदेजाते हैं आरों से पीड्यमान होते हैं व पिपासा से भी पीड़ितहोते हैं १३ क्षुधासे मरे जाते हैं व घोर व्याधिगणों से पीड़ितहोते हैं पीब व रुधिरकेगन्धसे पद पद पर मूर्च्छितहोकर गिरते हैं १४ व कहीं कहीं तैलमें पकाये जाते हैं व कहीं मुशलोंसे ताड़ितहोतेहैं कहीं लोहेकी तपीहुई चट्टानोंपर पचायेजातेहैं १५ कहीं तो बन्तखाते हैं कहीं पीब व रुधिरही पीतेहैं कहीं बिष्ठा भक्षणकरते कहीं सड़ाहुआ कच्चामांस जो कि दुर्गन्धिसे दारुणहोता खाते हैं १६ कृमियों से भक्ष्यमाणहोते जिनके कि अग्निके समान तुण्डहोते हैं फिर उन २ स्थानों में डालेजाते हैं जिनमें कि केश रुधिरमांस चर्ब्बी बसाके समूह भरे हैं १७ व खटमलों

से आकीर्ण हैं कीड़ोंसे भक्षण किये जाते हैं काक कंक महागृध्रोंके मुखोंसे ध्वंसितहोरहे हैं १८ व मृतकमनुष्यों के शरीरकी दुर्गंधिकी कोटिकी कोटिजुटीहैं शरपत्र शिलापात तप्ततैलमें पातकराये जाते हैं १९ लोह तैल बसास्तम्भ कूट शाल्मलिके घरोंमें छूरा व कण्टक बड़े२ कीलोंसे उग्रज्वालाओंके स्तम्भों से चमकते हुये स्थानहैं २० तप्तबैतरणीके पीबसे परिपूर्ण अलग २ स्थानहैं असिपत्रबनमें कटे पड़ेहुये नर नारियों के स्तनों में २१ व घोर अन्धकार गहन अति दारुण स्थानोंमें बार बार गिरायेजातेहैं इससे वहां पापच्यमान दारुण बिबिधरवोंसे रोदनकरतेहैं २२ गलोंमें सबोंके पाशबँधेहुये हैं व कहीं२ सर्प्पों से वेष्टितहोरहे हैं व यन्त्रोंमें पीड्यमानहोते हैं जानुओं से खींचेजातेहैं २३ पीठ शिर ग्रीवा टूटजाती है कण्ठ बनाय अचल होजाताहै इससे महादारुण रूपहोजाताहै झूंठे मायाके गृहों में भ्रमण कराये जाते हैं व शरीर यातना सहनेवाले धारण कराये जाते हैं २४ सो हेराजन्! वेही विकर्म्मी पापी रोतेहैं व पीड़ितहोते हैं इसतरह विषयके स्वादों सहित सबरोते हैं २५ उजले दांत निकाल २ हँसते हैं व क्षणमें रोदनकरतेहैं यह सब जन्तु पहलेकिये अपने कर्म्मों के किये कुफलभोगते हैं परस्त्रियोंके साथ प्यारसे जो प्रसंग कियागयाहै वह दुःखदही होताहै २६ क्योंकि एक मुहूर्त्त भरका विषयवासनाका स्वादु अनेकबर्षों तक दुःखदहोता है सो हे राजेन्द्र! ऐसे ये महापापी बैशाख में प्रातस्स्नान कियेहुये तुम्हारे शरीरके २७ विधिसे पवित्र पवनके लगने से क्षणमात्र सुख पागये हैं व तुम्हारे तेजसे भी बढ़ायेगये हैं २८ इससे प्रथम रोदनकरते थे अब नरकमें पड़ेभी हैं परन्तु सुखसे हैं इससे रोदन नहीं करते हैं तुम्हारे अंगमें लगेहुये पवनके स्पर्श से पवित्र होगयेहैं इससे वेही लोग सुखपाने के कारण थोड़ाभी शब्द अब नहींकरते क्योंकि पुण्य शीलपुरुषोंका नामभी सुनने से सुखदायक कहागयाहै २९ व उस के शरीर में लगेहुये पवनका स्पर्श सुखदायी होताहै यमराज यज्ञदत्तसे बोले कि दूतका ऐसा बचन सुनकर करुणानिधि वहराजा ३० अद्भुतकर्म करनेवाले विष्णुके उनदूतोंसे यहवाक्य बोला क्योंकि

साधुओंका हृदय नवनीतके समान कोमलहोताहै ३१ वह परस-न्तापसे सन्तप्तहोकर पिघलता है राजा बोला कि मैं इन पीड़ित जन्तुओंको छोड़कर यहांसे जाना नहींचाहता ३२ क्योंकि वह पापिष्ठ है जो दुःखितोंका दुःख मिटासक्ताहो पर न मिटावे उसको धिक्कारहै हमारे अंगसंगमके वायुके स्पर्श से यदि ३३ जन्तु सुखी हुये तो फिर हमकोभी वहीं पहुँचाओ वे नर अपनी माता को व पृथ्वीकोभी पवित्रकरते हैं ३४ जोकि परायेतापका नाशकरते हैं जैसे मलयपर्वतपर के चन्दन जो पुण्यात्मा नर पराये उपकार के लिये पीड़ितहोतेहैं ३५ लोकमें सन्त वहीहैं जे पराये दुःखको दूरकरतेहैं आर्त्तोंकी आर्त्तिमिटानेके लिये जिनके प्राण तृणोंके समान हैं ३६ उनपरहितमें उद्यतलोगोंसेयहभूमि धारणकराई जाती है जो मनका सुखहै वह नित्य और स्वर्गहै वह नरककी उपमाहै ३७ इसमें पर सुखसेही साधुजन सुखीरहतेहैं यहां हमको नरकपात श्रेष्ठहै व प्राण वियोग श्रेष्ठहै ३८ परन्तु क्षणमात्रभी आर्त्तोंकी पीड़ा बिना नाश किये मुझे सुख नहींहै यहसुनकर दूतबोले कि इस घोरनरकमें पापीहैं वे जन्तुलोग पचितहोते हैं ३९ जीते हैं व जो अपने कर्मों से मोहस्थानको प्राप्तहोतेहैं जो लोग कुछदान नहींदेते न आहुतिकरते हैं न तीर्थमें स्नानकरतेहैं ४० व भक्तिसे उपकार नहींकरते व जिन्होंने पुण्य नहीं किया व जिन्हों ने कूप व बावली नहीं बनाया हे राजन् ! जिन्होंने खुशीसे तप व जप नहीं किया ४१ वे इस घोर नरकमें पच्यमान होतेहैं जो दुश्शीलहोतेहैं जो दुराचारीहोतेहैं व जो विहार आहारके निन्दकहोतेहैं व परापकार विनाप्रयोजन करते रहतेहैं व दुष्टस्त्रियोंके संग विहारकरतेहैं व मर्मकीबात कहकर पराये हृदयको विदीर्णकरतेहैं व बस येही सबलोग नरकमें पचते हैं इससे हे महीपाल ! यहांआओ हरिमन्दिर को चलें ४२ व ४३ व ४४ तुमको यहांरहना योग्यनहींहै क्योंकि तुम पुण्यात्माहो राजाबोला कि हे दूत ! जो हम पुण्यात्मा हैं तो इस महाभयदायक ४५ मार्ग नरकरूप में कैसे लायेगये व हमने कौनसी पुण्यकी है कामके विषय में सोतेहुये हमनेभी तो वैसा कुछ सुकृत नहींकिया ४६ फिर

हरिपुरको कैसे जायँगे इसविषयमें संशयहै दूतबोले कि हां सत्यहै कामके बशीभूतहोकर सुकृत तुमनेभी नहीं किया ४७ न कोई यज्ञ किया न यज्ञका बचा तुमने खाया परन्तु बैशाखमासमें बिधिसे तीन वर्षतक गुरुबचनकी प्रेरणासे प्रातस्नान तुमने कियाहै व भक्ति से विश्वेश मधुसूदन विष्णुकी पूजाकीहै ४८ व ४९ जो कि महापाप व अतिपाप समूह के भक्तवत्सल निहन्ता हैं सो हे महीपाल ! सब धर्मोंका एकसार उसी एककरके ५० विष्णुपूजन बैशाखमें जो तुम ने कियाहै उसीएक महापुण्य से देवगणों से पूज्य श्रीहरिपुर को पहुंचायेजातेहो माधवदेव जब पूजितहोते हैं तो बड़े बड़े भी पापों के हन्ताहोजाते हैं ५१ व ऐसेही विधिपूर्वक स्नान दानकरनेसे वैशाखमास भी सब ब्रह्महत्यादि महापापोंको नष्टकरताहै जैसे चिनगारीसे तृणों के ढेरके ढेर नष्टहोजाते हैं ५२ वैसेही वैशाखमें प्रातस्स्नानकरनेसे पाप समूह नष्टहोजाता है तभीतक सब पाप शरीरमें रहते हैं ५३ जबतक प्राणी बैशाखमास में प्रातःकाल किसी तीर्थमें स्नान नहीं करता बैशाखमासमें जो मनुष्य कहेहुये नियमोंसे युक्तहोकर स्नान करताहै ५४ वह हरिभक्त पापौघोंसे छूटकर हरिपुरको जाताहै देखो जन्म पर्य्यन्त तुमने कुछ सुकृत नहीं किया ५५ इसीसे तुम हे राजन् ! नरकमार्ग से लायेगयेहो अब हे राजन् ! हम मरुद्गणों से सेवित जल्द ५६ ॥

चौ० भूमिपचलहु देवगण सेवित। चढ़िविमान हरिपुरकहँदेवित ॥
त्वरितपहुँचिसुखभोगहुनाना। सबसुखविधिसोंसहितविधाना ११५७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवैशाखमहात्म्येभाषानुवादे एकाधिकशततमोऽध्यायः १०१ ॥

एकसौदोका अध्याय ॥

दो० यकसैदुसरेमहँ कह्यो राधस्नान दानादि ॥
नृपदीन्ह्योंजिमिपुण्यनिजनरकगगतिकप्रसादि १
यज्ञदत्त यम वाक्यसोंमहितलमहँकियस्नान ॥
माधवमहँगत पापह्वै सो पुनि भयहुमहान २
कहीफलस्तुतिराधकी सबविधिसोंशुभकारि ॥
सूत शौनकादिकनसों भाषी वह निरधारि ३

यमराज फिरि यज्ञदत्त विप्रसे बोले कि तदनंतर उननरक निवासियोंके शोकसे पीड़ित दयाका समुद्र वह राजा विनयपूर्व्वक विष्णु दूतोंसे बोला कि १ बड़ेभारी ऐश्वर्य्यके व जाति के मिलने का गुणों के व पुण्योंके पानेका फल पण्डितलोग यह बताते हैं कि भयभीत की रक्षा कीजाय २ इससे हमारे जो कुछ सुकृतहो उससे येसब जन्तु स्वर्ग को जावें व उनके स्थानमें हम होते हैं ३ ऐसा भूपका वचन सुनकर जो कि उस सत्यवचन राजाने कहा सो राजा की सत्य उदारताका ध्यान करतेहुये वे दूतलोग भूपति से बोले कि ४ हे नृप ! इस तुम्हारी करुणासे व धर्म्ममय वचनसे तुम्हारे इकट्ठाकियेहुये धर्म्म व पुण्य की बड़ीभारी वृद्धिहुई ५ इससे स्नान दान तप होम जप देवपूजनादि जो कुछ तुमने वैशाखमासमें कियाथा वह सब अनन्त फलदायक होगया ६ यज्ञकरनेवाला व दानदेनेवाला पुरुष देवताओं के साथ स्वर्गमें क्रीड़ाकरताहै व सुवर्णके कमलोंसेयुक्त पापियों के तीरपर कल्पवृक्षोंकी छायाओं में विहार करताहै ७ व गन्धर्व्व अप्सराओं के गणोंका गान सुनताहुआ सुखभोगताहै व जल अन्नका दाता लोकमें वारुण फलपाताहै ८ व गोदान देनेवाला एक खेलके साथ अपने सात कुलोंको तारताहै घोड़ा दानदेकर मनुष्य सूर्य्यलोकको जाताहै व विद्यादानदेनेवाला पुरुष ९ ब्रह्मलोकको जाता व सुवर्ण दानकरनेसे देवालयको जाताहै व देवमूर्त्ति दान तथा कन्यादानसे देवलोकको जाताहै १० वैशाखमास में जो स्नानकरके व दानदेकर माधवजीको पूजनकरताहै वह सकल कामनाओं को प्राप्त होकर हरिमन्दिरको जाताहै ११ एकओर तप दान यज्ञ सत्यादिक क्रिया व एकओर विधिपूर्व्वक कियाहुआ वैशाखमास १२ इससे हे भूप ! हे दयानिधे ! उस वैशाखमास के एकदिनकी भी पुण्य तुम इन नरकमें पचतेहुये दुःखित जन्तुओंको देओ तो इनका कल्याण होजाय १३ उस वैशाखमास में जो तुमने एकदिन सुकृत कियाहै वह तुम्हारे सबदानोंमे अधिकहै १४ दयासदृश कोई धर्म्म नहीं न दयासदृश कोई तपहै न दयासदृश दानहै न दयासदृश सखाहै १५ पुण्यदेनेवाला पुरुष अपने दानसे लक्षगुण अधिक पुण्यपाताहै सो

भी करुणाकेसाथ इससे तुम्हारी पुण्यकी वृद्धि बहुतहुई १६ दुःखित प्राणियों के दुःखका उद्धर्त्ता जो नरहोताहै वही लोकमें सुकृती है क्योंकि वह नारायणके अंशसे उत्पन्नहुआहै १७ हे बीर ! बैशाख-मासकी पूर्णमासीको स्नान दानादिक जो कुछ तुमने किया सोभी तीर्थमें कियाहै वह सबपापोंका नाशक है १८ वहसब श्रीहरिको साक्षीकरके इन नरक निवासियोंको देदेओ तीनबार श्रीहरिके आगे कहदेओ कि हमने पूर्णमासीका सुकृतदिया जिससे कि ये सब स्वर्ग पावें १९ दयानिधि राजा शिबिकारुण्यसे अपना मांस कबूतरके अर्थ देकर यहां कीर्त्तिसागर होकर स्वर्ग में शोभित होते हैं २० राजर्षिदधीचि भी अपने शरीर के सब अस्थि समूह देवताओं को देकर त्रैलोक्य प्रकाशिका कीर्त्तिको पाकर अबभी स्वर्ग में विराजते हैं २१ व राजर्षि महायशस्वी सहस्रजित् भी अपने इष्ट प्राण ब्राह्मणके अर्थ छोड़कर उत्तम लोकोंको चलेगये २२ जैसे पीड़ित जन्तुओंके निर्म्मुक्त करानेसे उत्तमलोक मिलते हैं उनके आगे न स्वर्ग न मोक्षकाभी सुख कुछहै २३ इससे जितने दानीहुये हैं उनमें प्रथम तुम्हींहो इससे इस अपूर्व्वकर्म्मसे उनके धुरंधरहोओ हे धर्म्मनिधे! २४ तुम्हारी बुद्धि व दयादानसे उत्पन्न धर्म्म देखकर धर्म्मवादी हमलोग ऐसा उत्साहसे विचार करते हैं २५ हे राजन्! जो तुमको रुचताहो तो बिलम्ब न करो इनलोगोंको यातना मुक्तिदायक पुण्यदेओ २६ जब श्रीहरिके दूतों ने ऐसा कहा तो श्रीहरिदेवको तीनबार साक्षी करके दयावान् राजाने विधिपूर्व्वक अपने बैशाखपूर्णिमाकी पुण्य उनलोगोंको दी २७ जैसेही राजाने एकदिन बैशाखीपूर्णमासी को पुण्यदानकिया कि उसी सुकृतसे नरकयातनासे निवृत्तहोकर वे सब जन्तु २८ श्रेष्ठ विमानोंपर चढ़कर सबके सब स्वर्गको चलेगये व प्रणामपातेहुये व स्तुतिपातेहुये मार्ग में स्थितलोगोंको देखकर हर्षित चित्त सबहुये २९ बैशाखमासके एकदिनकी पुण्य राजाकी दी हुई पाकर सुन्दर विमानोंपर चढ़कर सब नरकोंसे निकलकर सबके सब स्वर्गको चलेगये ३० निश्चय सब प्राणियोंका समूह पृथ्वीपर विचित्रहै व प्राणियोंका भाव बहुधा विचित्रहै ऐसेही कर्मयोग विचित्र

है व सत्कर्म्म शक्तिका इकट्ठाहोना अतीवविचित्रहै ३१ उस विशेषता से अधिक पुण्यपाकर मुनि व देवसमूहोंसे स्तुतिकियेहुये हरिके गणों से वन्दित श्रेष्ठयोगीजनों के न पानेवाले परम्पद राजा चलेगये ३२॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेबैशाखमाहात्म्ये
द्व्युत्तरशततमोऽध्यायः १०२ ॥

एकसौतीन का अध्याय ॥

यमराजने कहा कि इससे इस बैशाखमासका व पूर्णिमाका माहात्म्य संक्षेप व विशेषसे हे द्विजसत्तम! कुछ कहागया १ मधुसूदन के प्रिय बैशाखमासमें जो कोई यह इतिहास पढ़ता है वह शीघ्रही पवित्रहोकर देवलोकको जाताहै व अनेक कल्पोंतक वहां मोदित होताहै २ यह धन्य यशस्य आयुष्य स्वस्त्ययन स्वर्ग्य श्रीदायक सौमनस्य प्रशस्त व पापनाशक है ३ यह माधवजीका प्रिय बैशाखमासका माहात्म्य जिसमें उस राजाका चरितहै व हमारा तुम्हारा सँवाद है ४ इसको सुनकर पढ़कर व अपने मनका प्रिय जानकर अनुमोदन करके भगवान् में भक्तिहोती है जिससे कि ये क्लेश का नाशहोता है ५ अब हे ब्राह्मण ! इसलोक से अभी अतिबेग से पृथ्वीपरकोजाओ क्योंकि तुम्हारेशरीरको पृथ्वीपर डालकर अबभी तुम्हारे बांधवलोग रोदनकरते हैं ६ रोतेहुये तुम्हारे बंधुलोग जब तक तुम्हारे शरीरको अग्निमें जलान देवें तबतक हम अब तुमको वहां फेंकते हैं तुमजाकर अपने शरीरमें प्रवेशकरके सोतेसे उठबैठो ७ अब हमारे प्रसादसे जो यह पुण्ययोग तुमने सुनाहै जाकर इस को करो बिधानसे इसके समयपर करनेसे जब समय आवेगा तो फिर हमारे दर्शनकरतेहुये देवलोकको आओगे ८ सूतजी शौनकादिकोंसे बोले कि यह यमदेवका वचन सुनकर व धर्म्मराजजीके नमस्कारकरके वह ब्राह्मण फिर देवपुर से प्रसन्नमनहोकर नीचेको उतरा ९ इसके पीछे धर्म्मराजके प्रसादसे महीतलपर आकर अपने शरीरमें प्रवेशकरके अपने बन्धुओं के आगे सोतासा वह ब्राह्मण उठबैठा १० व पृथ्वीपर इसविधिको यज्ञदत्तने आपकिया व सबों से बैशाखमास विधिपूर्व्वक करवाया ११ ॥

चौ० यमब्राह्मणसँव्वादसुपावन । हमतुमसनभाषामनभावन ॥
जामें माधवमास महातम । हैप्रसंग सों सब द्विज सत्तम १ । १२
निरंतर हरिका प्यारा बैशाखमास में भक्तिसे स्नानकरे व दानदेवै
व होम करे इस सुकृत से हरिकापद कभी दुर्ल्लभ नहींहै १३ जो
एकचित्त होकर मेष के सूर्य्यकी महिमा सुनता है वह सब पापों से
छूटकर विष्णुलोकका जाताहै १४ ऋषियों ने कहाकि हे सूत ! २ हे
महाप्राज्ञ ! करुणामूर्त्ति तुमने पापनाशक बैशाखमाहात्म्य कहा १५
स्नानदान पूजनादि भगवान् के नियम मास बैशाखमें तुमनेश्रुति
स्मृतिविधानसे कहे १६ व जिसतरह पापनाशन माधवजी प्रसन्न
होवें व उनमहात्मा का ध्यान इससमय हमारे सुननेकी इच्छाहै १७
भक्तसमूहोंके प्रिय कृष्णजीका भवतारणमाहात्म्य सुनाचाहते हैं १८
सूतने कहा कि हे मुनिजनो ! गौवें व गोप व गोपी के प्राणरूप वृ-
न्दाबनबिहारी जगदात्मा श्रीकृष्णजीका माहात्म्य सबजनेसुनो १९
भोद्विजोत्तम एकसमय गौतमजीने नारदजीसे पूंछा सो नारदने जो
गौतमजीसे कहाहै वहीपापनाशन ध्यान हमभीकहेंगे २० नारदजी
ने कहा कि तीक्ष्णबुद्धिवाला पुरुष शुभसमूह सुगन्धसे उद्गलितमा-
ध्विकादिकों से देदीप्यमान सुन्दरवृक्षों के नवीन पत्तोंकेसमूह से
नमित व शोभायुक्त व बिकसित नवीन मञ्जरीकरके ललित बल्लरी
से आसपास बेष्ठित सुन्दरवृन्दावन व शिवजीको निरन्तर ध्यानकरे
२१ जोकि प्रफुल्लित फूलोंकेरसके स्वादनसे मंजुल घूमतेहुए भ्रमरों
के मुखसे निकलीहुई झंकारोंसे च कबूतर व शुकसारिका व कोयल
इत्यादि पक्षियों के शब्दसे व मोरोंकी नृत्यसे आकुल है २२ व जो
कि यमुनाकी लहरियोंके बिन्दुओंको व फूलेहुए कमलोंकी रजसमू-
हसे धूसर व काम से पीड़ित ब्रजबनिताओं के वस्त्रोंको उड़ातेहुए
पवनसे निरन्तर सेवितहैं २३ व जोकि प्रबालवत नवीनपत्तोंसेयुक्त
मोतियोंकीतुल्य कलियोंसेयुक्त व पकेहुए फलोंसेयुक्त व षट्ऋतुओं
से सेवित व कल्पवृक्षतुल्य बृक्षों सेसेवित वृन्दाबनको ध्यानकरे२४
फिर सुमेरुपर उदयहुए सूर्य्यकीतुल्य देदीप्यमान उसकेनीचे क-
नकस्थलीका ध्यानकरे जोकि अमृततुल्य शीकरोंसे युक्तहै व प्रका-

शित मणिकुट्टिमों से युक्त पुष्पोंकीरेणुके समूहसे उज्ज्वल षट्तरंग युक्त यमुनाजीकास्मरणकरे २५ उसकेरत्न पीठमें स्थितपूज्य योग पीठमें अष्टपत्र अरुणकमलको स्मरणकरके फिर उद्यद्विरोचनस-रोचिमुष्य मध्यमें सुखपूर्वक बैठेहुए भगवान् मुकुन्दजी कास्मरणकरे २६ जोकि इन्द्रके बज्रसे कटेहुए मेघसमूहोंसे निकलेहुए जलकीस-मान दीप्तिवालेहैं व चीकने नीले टेढ़ेकेश समूहसेयुक्त व प्रकाशमान मनोज्ञ मयूरपंखोंकाचूड़ा धारणकिये हैं २७ रोलम्ब से लालित जो कल्पवृक्षहैं उसके सुतसम्पदा से युक्त सम्यक्प्रकारसे उत्कच नवीन उत्पलका कर्णपूरयुक्त व चंचलभ्रमरों से देदीप्यमान भालतलमें दी-प्तिमान गोरोचनको तिलकधारणकिये व उज्ज्वलचिल्लिचापयुक्तहै २८ सम्पूर्ण शरद्ऋतुका गतअङ्क सहित जो चन्द्रमाहै उसकेबिम्ब की तुल्य मनोहरमुख धारणकिये कमलपत्रकी तुल्य विशालनेत्र धारण किये रत्न से स्फुरत मकराकृत कुण्डलधारणकिये उनकीकिरणों से दीप्ति गण्डस्थल में मुकुरवत् चारुउन्नत नाशिका धारणकियेहैं २९ सिन्दूरतुल्य सुन्दरतर अधरयुक्त चन्द्रमा व कुन्द व कल्पवृक्ष के पुष्पोंकी तुल्य दन्तोंसेयुक्त हसितहैउसकीदीप्तिसे प्रकाशितहै दिशा व बनके पत्तों व फूलोंका गजरासे उज्ज्वलमनोहर कमलतुल्य कण्ठ धारणकियेहैं ३० मत्तघूमतेहुए भ्रमरोंके शब्दयुक्त लम्बायमानपा-रिजातकेमाला को पहनेहुए हारोंकीपंक्ति से प्रकाशित छातीमें कौ-स्तुभमणिकी दीप्ति होरही है ३१ व भृगुलताको धारणकिये जानु पर्य्यन्त भुजाधारणकिये व उदरमें उदारगम्भीर नाभिमेंस्थित भ्रमर स्त्रियोंसेमनोहर रोमावली धारणकियेहैं ३२ व अनेकप्रकारकी मणि-योंसे बनाहुआ बजुल्ला व कङ्कण व कण्ठा व नूपुरधारण किये हैं व दिव्यअङ्गराग शरीरमें लगायेहुए पीताम्बरसे कमरलपेटाहुआ ३३ सुन्दर ऊरू व जानुओंसे अनुवृत्त सुन्दरजङ्घा व मनोहर एँड़ियों से निन्दित है कूर्मकान्ति व माणिक्यदर्पण तुल्य प्रकाशित नखोंकी पं-क्तियां अरुण अंगुलियोंसे कमलरूपीचरण धारणकियेहैं ३४ व मत्स्य अंकुश शङ्खकेतु यव कमलवज्रादिकों से संलक्षित अरुणकर व अंघ्रितलों अभिरामहैं सुन्दर अङ्गकी शोभासे कामदेवको भी लजाते

हैं ३५ कमलरूपी मुखसे बंशीको बजातेहुए स्वाभाविक अंगुलियों के दिव्यरागसे अनेक जन्तुओंको सुखदेरहे हैं ३६ अयनकेभार से धीरे २ चलतीहुई गौओंकी धूलिसेयुक्त मुख व लोचन धारणकिये दन्ताग्रोंमें जिनके तृणदबाहुआहै ऐसीगौवों से युक्त चलतेहैं ३७ जिनके चूतेहुए स्तनोंसे फेनासहित दूधसे मुख वेणुसेप्रवर्तित मनोहर मन्दगानमें कर्ण लगेहुए तर्कणाकर रहे हैं ३८ सींगों व मस्तकों से प्रहारकरतेहुए व खुरोंसे खोदतीहुई पूंछोंको उठायेहुए बछड़ा व बछड़ियोंके ३९ हुङ्कारके क्षोभसे बड़ेलाठ के भारसे खिन्नहोरहे हैं व उत्तम्भित श्रुतिपुटोंसे मान बंशीकाशब्दपानकर रहीहैं ४० अपनी समान गुण व शील व अवस्थाविलास व वेषवाले गोपोंसेयुक्त बंशी व वीणाका मधुरशब्द कररहेहैं जो मन्द व उच्चारताल से गानकररहे हैं ४१ जोकि जङ्घा पर्य्यन्त मोटे कमरतट में शब्दायमान किङ्किणी धारण किये हैं हाथसे बनायेहुए भूषणों को धारण कियेहुए अप्रकट मुग्धवचन कहनेवाले बालकों से युक्त ४२ अथ बड़ेस्तनों के भार से भंगुरयुक्त त्रिबली है उनसे विजृम्भित रोमराजीको धारणकिये व पृथु नितम्बसे मन्थर मनोहर गोपबधू ४३ जोकि अतिमधुर बंशी की आवाज को अमृततुल्य पानकररही है व विमल सुन्दर रोमाञ्च युक्त गात्र बल्लरी को धारण किये हैं ४४ जोकि अतिसुन्दर मन्द-हास से चन्द्रमा व आतप के मानों रागसे वारि राशिको विजृम्भित कररही हैं जिसमें कि चंचल लहरोंसे उठेहुये बिन्दु श्रमसे टपकते हैं ४५ फिर अतिललित मन्द चिल्लिचापसे निकलेहुये तीक्ष्ण नेत्र रूपी कामबाणकी दृष्टिसे मर्दनकियेहुये सबमर्मसे विह्वल शरीर में प्राप्त दुस्सह कंप व व्यथा ४६ व अतिमनोहर वेष व रूप व शोभा मानों अमृतरस है उसके पानकरने में लगीहुई लालसावाली व प्रणयरूप जलके बहनेसे निश्चल व चञ्चल नेत्र कमल जिनके ४७ व छूटेहुये केशोंके समूहसे गिरतेहुये फूलोंसे बहताहुआ मधुमें लम्पट भ्रमरोंकी घटासे सेवितहै व कामके उन्मादसे च्युत मृदुबाणी व चंचल क्षुद्रघण्टिका में देदीप्यमान नीबीसे च्युत नितम्बत्विषवाली ४८ व इधर उधर पड़ते पड़तेहुये कमलरूपी चरणों के अ-

भिघातसे व्याप्त मणितुलाकी कोटिसे आकुलहैं दिशा जिनसे फरक-तेहुये ओष्ठ कमलरूप नेत्रोंसेयुक्त चमचमातेहुये कुण्डल धारण किये हुये हैं ४९ स्वासबायुकी तापसे कुम्हलातेहुये अरुण ओष्ठवाली व नानाप्रकारकी भेटें हाथोंमें लियेहुये ऐसी स्त्रियोंके झुण्डसे निरन्तर सेवितहैं सबओरसे ५० व उनस्त्रियोंके बड़े २ चञ्चल श्याम नेत्रोंके फैलानेसे तीन अम्बुज मालाओंसे पूजित सम्पूर्ण शरीर जिनको नानाप्रकारके विलासके स्थानहैं उनके मुग्ध मुख कमलोंसे निकलतेहुये मधुरसके स्वादको धारणकियेहुये व प्रणयसे मधुयुक्तमनोहर मालाधारण कियेहुये हैं ५१ व गोप गोपी पशुओंसे आगे स्मरणीय व देवसमूह से भी स्मृत ब्रह्मा व शिव व इन्द्रस्तुत ५२ उनके दाहिनीओर मुनियों का समूह धर्म की इच्छासे वेदपढ़रहे हैं व योगीन्द्रोंको पीछे मुक्ति के लिये समाधिसे सनकादिकोंको ५३ बाममें यक्ष सिद्ध गन्धर्व विद्याधर चारण किन्नर अप्सरा कामार्थिनी नाचने गाने व बाजाबजानेके से ५४ शङ्ख इन्दु कुन्दवत् धवल सब आगमोंके जाननेवाले बिजुली की तुल्य पिशङ्ग जटासमूहवाले उनके कमलरूपी चरणों में भक्ति चाहतेहुये व अन्य सबसङ्गोंको छोड़ेहुये ५५ नानाप्रकारके श्रुति गणोंसेयुक्त सप्तरागके समूह व त्रयीगत मूर्छनोंसे प्रसन्नकरतेहुये व भक्तिसे चिन्तना करतेहुये ५६ इसतरह प्रवीण बुद्धिवाला ध्यान नन्दजी के लालको करके व बुद्धिही से अर्घादि पवित्र सामग्री से पूजनकरे फिर भक्तिसे सब मनोवाञ्छित कहे ५७ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेवैशाखमाहात्म्ये त्र्युत्तरशततमोऽध्यायः १०३ ॥

इति पातालखण्ड पूर्व्वार्द्ध ॥

पद्मपुराणभाषा ॥

चतुर्थपातालखण्ड का ॥

उत्तरार्द्ध ॥

एकसौचार का अध्याय ॥

दो० । यकशत महँ कह शम्भुमुनि राघवकेर मिलाप ॥
राम विभीषणबन्धसुनि किय मुनिवरनअलाप १
शकुनउठावन विधिकह्यो सब पुराणके बीच ॥
मुनिवर शम्भुविचारकरि भाष्यहुबहुत समीच २
शकुनउठाय विभीषणहि जायछुड़ाय बहोरि ॥
अपर विषय बहुभांतिसों शिवसोंसुन्यो निहोरि ३
पुनि पुराण भारतवनन कथा केर निर्द्धार ॥
भाष्यो सूत मुनीन सों करिकै अति विस्तार ४

ऋषियोंने सूतजी से कहाकि हे महाभाग ! फिर अद्भुतरामचरित्र कहिये क्योंकि भक्तोंका प्रीतिदायक राममाहात्म्यही सर्वस्वहै १ सूत जी ने कहाकि अश्वमेध श्रेष्ठयज्ञकरके रामचन्द्रजी जैसे२ ज्ञानवान् लोककृत्यमें व शास्त्रकृत्यमें जैसे प्रवृत्तहुये सूतजी मुनियों से बोले कि महात्मा शंकरनाममहामुनि पार्वती सहित अयोध्यापुरी को जाते थे ३ सरयू नदी के किनारेपर निवासकर रहे मुनिलोग विश्वरूपी उन शंकर मुनि के समीपजाकर ४ उनके चरणोंको पकड़कर अमित तेजस्वी उन से वे कश्यपादि महात्मालोग बोले २ कि हे मुनिश्रेष्ठ आपका आगमन तो अच्छीतरह हुआ न भार्य्या सहित आप कहांको जातेहैं कहांसे आतेहैं ५ व कहांजातेहैं इसयात्रा से तुम्हारा क्या प्रयोजनहै बताइये किसदेशके जानेको उद्यतहो यह सुनकर श्रीशंकरजी बोले कि हम शम्भु नाम विप्रहैं व हिमाचलपर रहते हैं ६ व श्रीराघवजीको देखनेजातेहैं उनसे हमारा बड़ाकार्य्य

है उन राजाने हमको पुराण सुनानेके लिये बुलायाहै ७ इससे वहां जाते हैं मुनिलोगो तुमभी हमारे साथचलो श्रीराघवजी बहुत प्रसन्नहोंगे यह कहकर शिवजी व वे मुनिलोग श्रीरामचन्द्रजी के दर्शनके लिये गये ८ उनलोगों को आयेहुये जानकर वशिष्ठजी ने रामचन्द्रजी से कहा तब शीघ्र उठकर श्रीरामचन्द्रजी पुरोहित सहित वहांआये ९ व अर्घ्यपाद्यादिकों से उनसब ऋषियोंका पूजन उन्होंने किया व घरमें लेआकर उनसबों को प्रसन्नकराते हुये १० राजाधिराज उन से बोले व प्रत्येकको आसन देकर स्वागत पूँछने लगे जब वे अच्छीतरह आसनोंपरबैठे तो उनको तृप्तकरातेहुये श्री रघुशार्दूलजीने सब ऋषियोंकी पूजाकी ११ व मधुरबाणीसे उनको तृप्तकरातेहुये आसनपर स्थित उनलोगों से यह बोले श्रीरामचन्द्र जीने कहा कि आज हमारा जन्मसफलहुआ व आज हमने तपका फलपाया १२ व आज विद्याओं के अभ्यासकरने के फलका काल यह आगयाहै आज हमारे पितर प्रसन्नहुये व हमारा राज्यभी सफलहुआ १३ आज हमारा सदाचार सफलहुआ व आज हमारा वेदशास्त्र पढ़ना सफलहुआ जब महाराजाधिराजने ऐसा कहा तो कश्यपादि ब्राह्मणलोग १४ कमलनयन श्रीरामचन्द्रजीसे प्रियतर वचन बोले ऋषियोंने कहा कि ये शम्भुनाम ब्राह्मण सबशास्त्रों में विशारदहैं जो आपके यहां आये हैं १५ वेदवेदांगोंके सब निश्चयों को जानते हैं व सब प्राणियों के हित में रतहैं सदा तपस्यामें रत रहकर कैलास पर्व्वतपर निवासकरते हैं १६ ब्रह्मतेजमें ये ब्रह्माके तुल्यहैं व सब वेदोंके जाननेवालोंमें श्रेष्ठहैं व ब्राह्मणोंके ऊपर कृपा करनेमें हरिके तुल्यहैं व प्रसन्नहोने में शंकरके समानहैं १७ ऐसे ये शम्भुनाम ब्राह्मणश्रेष्ठ महातेजस्वी अष्टादश पुराणों के जाननेवाले मीमांसा व न्याय के बड़े पण्डितहैं १८ सो ये मुनिश्रेष्ठ आपके वाक्यके गौरवसे यहां आये हैं हे प्रभो ! आपही के बुलाने से कैलास पर्व्वतपरसे आये हैं १९ इससे हे महाभाग ! इनसे आप पुराना आख्यान पूँछें क्योंकि हमलोगभी हे रघुनंदनजी ! सुननेहीके लिये आपके समीप प्राप्तहुये हैं २० क्योंकि जो सब वेदों के भीतर में

प्रविष्टहोताहै व सब शास्त्रोंको अच्छेप्रकार जानता है परन्तु पुराण नहीं सुनता उसको अच्छीतरहसे दर्शन नहीं देखते २१ सूतने कहा जब तत्त्वदर्शी मुनियों ने महाराजाधिराज श्रीरघुनन्दनजी से ऐसा कहा तो तब वे अतुल हर्षको पाकर पुराण सुनने में उत्सुकहुये २२ व श्रीरामचंद्रजी बोले भी कि शिवके लिंगके पूजनकाप्रकार लिंग का माहात्म्य महेशके नामकामाहात्म्य व उनकी पूजाकामाहात्म्य २३ उनके नमस्कारकरनेका माहात्म्य दर्शनका माहात्म्य जलदान करने का माहात्म्य व हे सत्तम ! धूपदानका माहात्म्य २४ दीप गंधादिदेनेका व पुष्पचढ़ानेका माहात्म्य व नानाप्रकारके आख्यान इतिहासों की पापनाशिनी कथा २५ धर्म्म अर्त्थ काम मोक्षके विधान व उनके पानेके उपाय हे मुनिवरों में उत्तम! तुमसे हम सुना चाहते हैं २६ यह सुनकर शम्भुनाम मुनि बोले कि हे राम ! हे राम! हे महाबाहो ! हे राघव ! आप बड़े पुण्यवान्हैं क्योंकि राज्यकार्य्य करनेमें सक्त भी आपहैं तो भी पुराणोंके श्रवणकरनेमें प्रीतिहै २७ क्योंकि महात्माओंकी सेवाहीसे व पुण्य तीर्त्थों के सेवन से पुराणों के सुनने में प्रीतिहोती है जिह्वा वहीहै जो शिवको गातीहै व चित्त वहीहै जो शिवमें अर्प्पितहोताहै २८ व वही केवल प्रशंसाकरने के योग्य हाथ होतेहैं जिनसे कि उनकी पूजाकी जातीहै व वही अत्यर्त्थ देनेवाला जन्म और शरीरहै २९ जोकि शिवनाम के कीर्त्तन करतेही पुलकित होजाताहै हे महाराज ! आपके प्रश्नके पीछे मति करने के कारण तुमभी कृतार्थहुये ३० शम्भुमुनि ऐसा कहतेही थे कि बड़ेवेगसे चारदूत वहां एकपत्रलेकर आये उनके हाथोंसे पत्री लेकर श्रीरामचन्द्रजीने अपने हाथसे खोली ३१ मन में श्रीराघव चिन्ता करनेलगे कि ऐसा कैसेहुआ तब ब्राह्मणका वेष धारणकिये हुये देवी सहित जो शम्भुमुनि आये थे वे बोले ३२ कि हे राघव ! इतने मुनियोंके आगे आप किसबातकी चिन्तनाकररहेहैं इनसे जो चिन्ताहो पूँछते क्यों नहीं यह वाक्य सुनकर श्रीराघवजी ने सब मुनिश्रेष्ठों से पूँछा ३३ श्रीरामचन्द्रजी ने कहा कि विभीषणको मनुष्योंने जँजीरसे कैसे बांधलिया हमारे स्थापित शिवलिंग रामेश्वर

के दर्शनकरके ३४ दुष्ट द्रविड़देशवाले मनुष्योंने ऐसा कैसे किया इसका विचार आप लोगकरें विचारांशकिया परन्तु उन मुनियों ने उस विषयमें कुछ थोड़ासाभी न जाना ३५ तो उन्होंने कहा कि हम नहीं जानते जब श्रीरामचन्द्रजी से ऐसा कहा तो श्रीराघवेन्द्रजी उनसे बोले हे मुनिसत्तमो ! पुराणको देखकर विधि से सब हमसे कहो ३६ फिर अपने अज्ञानका हेतुभी पीछे से कहना पुराणका क्या देखने के योग्यहोताहै व क्या वर्ज्जनीय होताहै ३७ कैसा श्लोक प्रशस्तहोताहै व कैसा अप्रशस्तहोताहै व कैसे कार्य्यों में कैसा पूजकहोताहै ३८ व कैसे मन्त्रों से निर्णय देखनेवालों को पूजाकरनी चाहिये श्रीरामचन्द्रजीके ऐसे वचनसुनकर वे श्रेष्ठ ब्राह्मणलोग ३९ चिन्तासे व्याकुल मन श्रीराघवजी से बोले हे रामचन्द्रजी ! हमलोग पुराण के वक्ता नहीं हैं आप किसी पुराणजाननेवाले को देखें ४० यहसुनकर श्रीराघवजी ने विनययुक्त होकर फिर शम्भुनाम मुनिसेपूँछा उनका वाक्यसुनकर वेभी महामतिवाले बोले ४१ शम्भुजी ने कहा कि जो पुराणसे जीविका करता है वही पुराणकी पूजाकरने के योग्य होताहै अथवा जो अपनी शाखाको पढ़ताहै वह पवित्र होताहै अथवा जो मीमांसाके तत्त्वोंको जानताहै व किसीको दूषित नहीं करता वह श्रोत्रिय पवित्रहोताहै ४२ व जो सब देवताओं में समदृष्टि रहताहै व शिवके पूजनादिमें रत रहताहै व जो शतरुद्रिय को जपताहै व जो साग्निकहोताहै ऐसावाचक होनाचाहिये ४३ व जो यजुर्वेद पढ़ाहो वह विशेषकरके प्रश्न उठानेके लिये पुस्तकको पूजे पुस्तक श्रीतालपत्रपर लिखीगईहो सो भी देवाक्षरों में सुन्दर लिखीहो ४४ अन्यदेशी अक्षरोंमें न लिखीहो उसमें एक ऐसाचक्र हो जिसमें प्रतिपद के आदि अन्तमें ॐकारहो व उसमें जो दो रेखायें पूर्व्व व ऊपरको गईहों उनसे ॐकारमें मिलनेके लिये ४५ एक रेखा औरहो उसके पास अकार लिखाजावे व एकरेखा शिरोभागसे लेकर नीचेके कोणतक लम्बीखींचीजावे ४६ वहांपर आकार लिखाजावे उसमें पट्टीके अक्षरकी रेखाकोमिलादेवे उसकी बाईंओर षट्चक्रके दोनों बिन्दु स्थापितकरे उसी बीचमें इकारलिखे ४७ व

उसकी बाईंओर जो शिरपर की रेखाहो उसके कोणमें ईकार लिखे सब अक्षरोंकेशिरपर रेखाहो पर ॐकारके शिरपर न हो सोभी सीधी ही रेखा अक्षरोंपरहो ४८ ॐकारके ऊपररेखा नहो नीचे लवित्रके आकारकी रेखा बनादे जैसे ॐकारके नीचेका भागहोताहै वैसा उकारहोताहै व उसी में दो लवित्रलगेहों तो वही ऊकार होजाता है ४९ ऐसेही भारती ने अन्य सबअक्षरों के भी रूप कहे हैं बस इस प्रकारके अक्षरोंसे लिखाहुआ पुराण प्रशस्तहोताहै ५० ब्राह्मपाद्म वैष्णव ब्रह्माण्ड नारदीय मार्कण्डेय आग्नेय कौर्म्म बामन ५१ गारुड़ लैंग स्कान्द मात्स्य नृसिंह व रामायण कापिल ५२ बाराह ब्रह्मवैवर्त्त श्रीमद्भागवत भविष्योत्तर व इतनेपुराण प्रश्नकरनेमें प्रशस्त हैं ५३ अन्य भविष्य उपपुराण प्रश्नकरनेमें वर्जितहैं बस ऐसी पुराणकी पुस्तकमें रस्सी वा सूत्र डाले व अच्छीतरह बनेहुये रत्नोंके पीढ़ापरधरे ५४ स्नानकरके धौतवस्त्र धारणकरके पवित्रचित्त क्रोध व बेगरहितहोवे प्रथम चन्दनादिसे अपनी पूजाकरके फिर संकल्प करे ५५ फिर अंकुश रुद्राक्षकीमाला यज्ञोपवीत पाश पुस्तक धारण किये प्रसन्नमुखी शुक्लवर्णा सरस्वती का ध्यानकरे ५६ गोदुग्ध के समान श्वेतवस्त्र धारणकिये तीननेत्रवाली वृषभपर आरूढ़ मंद २ मुसुकातेहुये शांतचित्त शुक्ल वस्त्रधारी शिव ५७ कल्याण देनेवाले हरिण व अभय दोनों हाथ ऊपरको उठाये व मस्तकपर किरीट धारणकिये दक्षिण हाथके नीचे व्याख्यामुद्रा किये व नीचे को बायें हाथसे वरदान देतीहुई ५८ नानारत्न भूषणोंसे युक्त कमलनयनी बहुत मुख्य मुनियोंसे वन्दित चरणारविंद ५९ व मूर्त्तिमान् वेदों तथा पुराणों से स्तुति की जातीहुई व अन्य सब लोगोंसे संसेवित पद्माम्बुजवाली ६० सरस्वतीका ध्यानकरके पूजक प्रथम पूजा का प्रारम्भकरे आपोवा इसमन्त्रसे कलशभरे ६१ फिर उसमें थोड़ासा जललेकर पात्रवाले जलको अभिमंत्रितकरे ॐतत्सद्ब्रह्म इसमन्त्रसे व प्रणवसे युक्तकरके ६२ फिर उसपात्रमें आत्माका आवाहन आवाहयेऽहम् इसमन्त्रसे करे व यद्वाग् इसमन्त्रसे षोड़शोपचारपूजन करे ६३ अथवा सहस्रशीर्षा इत्यादि पुरुष सूक्त नाम सोलह मंत्रों

से व गायत्रीसे पूजनकरे ॐनमोभगवतेऽमुकपुराणाय इससे पुराण की पूजाकरे ६४ काण्डात् इसमन्त्रसे दूर्व्वालाकर पूजाकरे फिर ॐनमोभगवत्यैदूर्व्वायै ६५ इससे लोकपालों की पूजाकरके फिर एक कन्याकी पूजाकरे कन्या पांचवर्ष से ऊँची व दशवर्ष से नीची हो ६६ अथवा जबतक ऋतुधर्म्म व कुच न उत्पन्नहुये हों पर अविवाहिता हो उसका पूजनकरे बस्र गन्ध पुष्प अक्षत धूपदीप ताम्बूल भूषणों से पूजाकरे ६७ अथवा यह मन्त्र पूजक कन्यका से पढ़ावै ६८ कि हे भगवति सरस्वति! सत्यकहो प्रियकहो नमस्ते नमस्ते ६९ कुमारी के हाथ में यह पढ़कर दो दूर्व्वा के अंकुर दे देवे व पुस्तकके निकट धराकर फिर पुस्तकके नीचे रखवादे सहस्र परमा इत्यादि तीनऋचायेंपढ़े ७० फिर दो वा तीनदूर्व्वा उस कन्या के हाथ में देवे व वह पुस्तक की सन्धिमें तीन शलाका डाले उनके सङ्ग एक दूर्व्वा भी रखतेजावे ७१ शलाका व दूर्व्वा धरकर शिवाभ्यांनमः यह मंत्रपढ़े जिनपत्रोंके बीच में शलाकापड़े उनके मध्य का श्लोक कार्य्यका सूचकहोताहै ७२ हे राघवजी! यदि पूर्व्वकेपत्र में श्लोककी समाप्तिहो तो दूसरे पत्रमें श्लोकपढ़े फिर उसकाअर्थ विचारकर प्रश्नकाफल कहे ७३ पर पण्डितको चाहिये कि धीरे २ श्लोक पढ़े व धीरे २ विचारांशकरे यहां शीघ्रता न करनी चाहिये क्योंकि शीघ्रताकरने में सरस्वती कोपकरतीहै ७४ एक घड़ीभरतक एकपादका विचारांशकरे इससे प्रथम विचारकरनेमें शीघ्रता कहाती है इससे बक्ता जब विचार करनेलगे तो उसको शीघ्रता करनेको प्रश्न करनेवाला न कहे ७५ व बक्ताकोचाहिये कि श्लोक के पाठकी विवेचनाकरके व अपने मनमें अर्थका निश्चय करके यदि अशुभफल बिदितहो तो एका एकी न कहबैठे हे रघुनन्दन! ७६ उसके पीछे चाहे योग्यहो वा अयोग्य दूसरी शलाका के पत्रों के बीचकाश्लोक पढ़े ब्राह्मणको चाहिये कि पुस्तकको छोड़कर अन्य श्लोक न पढ़े ७७ क्योंकि जो पुस्तक में निकले वही अर्थ समझना चाहिये उसका छिपाना व अन्य श्लोक पढ़नाठीक नहींहै क्योंकि वह श्लोक दैवसे आजाताहै व दैवजानों सबसे बलवत्तर होताहै ७८ जो आगया सो

आगया उसमें कुछ ब्राह्मणका दोष नहींहोता व उसमें कुछ विस्मय भी न करनाचाहिये क्योंकि दैवकी गतिकुटिल होतीहै ७९ यदि प्रथमपत्रकी ऐसीदशाहो तो दूसरा पढ़े ८० फिर तीसरापढ़े तीनोंका अर्थ इकट्ठाकरके शुभाशुभका बिचारकरके तब कार्य्यका बिचारकरे श्लोकको देखे पूर्व्वार्द्ध के अन्त में यदि बिसर्ग नहो व पञ्चम अक्षर तवर्ग्गका नहो ८१ ऐसासुन्दर अर्थवाला श्लोक प्रश्नमें आजावे तो अच्छाहो व यदि अध्यायके आदिका वा अन्तका श्लोक निकलआवे व वृथापत्र वृथा लेख निकलआवे ८२ वा जिस श्लोक में प्रश्नका कोई समाचारही न हो वा जिसके कुछअक्षर रहगयेहों वा पत्रकुछ जलगयाहो लेखनष्ट होगयाहो व उसके अक्षरोंमें सन्देह हो ८३ बस ऐसे श्लोक प्रश्नमें नित्य पण्डितों ने वर्ज्जित किये हैं प्रश्न दोप्रकारके होतेहैं एक दीप्तिकारक दूसरा शान्तिकारक ८४ शान्तप्रश्न दोप्रकारके होतेहैं क्योंकि उनमें उत्पत्ति स्थिति व वृद्धि आदि बहुत भेदहोतेहैं इनमें शान्तप्रश्न प्रशस्त होता है क्योंकि उसके पूर्व्वलक्षण सब अच्छेही होतेहैं ८५ कोई २ प्रश्नकार्य्योंके भेदोंसे मनुष्यों के बड़े उपयोगी होतेहैं कोई प्रश्न किसी अर्थ के लिये होताहै वह उसका स्मरण करके प्रश्नहोता है ८६ उसमें बहुत बिचारांशकरने की आवश्यकता नहीं होती यदि उसका ध्यान करके प्रश्नशलाका छोड़ो तो प्रायः उसी अर्थका श्लोक निकल आताहै बस ऐसे श्लोक प्रशस्त होतेहैं ८७ अथवा उस अर्थ का नहीं निकलता तो उसके अर्थोंसे कुछ २ मिलताहुआ निकलताहै अथवा उससे बैराग्यकरने का अर्थ बताताहै अथवा जहांकहीं दिखाई देने के कारण उसीका स्तुति पादकही निकलआताहै ८८ बस अन्य सबों को छोड़ जो उसी श्लोक का अर्थ निकलआता है वह अच्छा प्रश्न होताहै ऐसा श्लोक तो मन्त्ररूपही होजाताहै क्योंकि वहतो सरस्वतीही के अर्थको कहने लगता है इससे प्रश्नका अशुभदायक होताहै ८९ विवादके व बिजयके प्रश्नमें यदि बिजयके अर्थ का श्लोक निकलआवे तो शुभहोवे व जयके प्रश्नमें जो सृष्टि के अर्थका श्लोक निकले तो वहभी श्रेष्ठ समझाजाय व क्रूर विषय

का श्लोक निकलने से क्लेशसे बिजय होती है ९० जयके प्रश्न में प्रशान्तके विषयका श्लोक निकलने से उपायोंसे विजयहोती है व जहां प्रशान्ता प्रशान्त दोनोंविषय निकलआते हैं वहाँ मेल करने से जयहोती है व पुरादि बसने के अर्थका श्लोक मध्यम व उत्तम कहाहै ९१ कलियुग की सम्भावनास्त्रयादिकों के प्रश्नमें यदि शृं-गार रसका वर्णन निकलताहै तो शुभदायक होताहै व राज्यनिर्व्वाह की चिन्तामें राज्यचिह्नका श्लोक शुभदायक होताहै९२जिसको जैसा योग्यहो पण्डितोंको उसीके योग्य श्लोकों के आजानेपर शुभकहना चाहिये स्तुति व वैराग्यकरने के प्रश्नमें जो कार्य्यनाशका श्लोकनि-कले तो कार्य्यकी सिद्धिहो ९३ प्रश्नकरनेके समय पूँछनेवाला फिस-लकर गिरपड़े तो कार्य्यकी थोड़ी सिद्धिहो व शेष कार्य्यका निर्व्वाह न हो हे रामचन्द्रजी ! शान्तभावके विचारमें अन्य अर्थका अन्यभाव होताहै ९४ व जिस श्लोकके पूर्व्वार्द्धके अन्तमें विसर्ग होतेहैं विप-र्य्यय होताहै व अध्यायकी समाप्तिपरके श्लोकके निकलनेपर जैसा संकल्पकरो उसके विपरीत फल होता है ९५ व काण्डको समा-प्तिकरके श्लोकके निकलनेपर कार्य्यका विनाशही होताहै इससे ऐसे दोषमें शकुन उलटा होताहै ९६ प्रश्नकरने के समय छींकहोने से हाथसे पुस्तक गिरपड़नेसे मस्तकआदिमें चोट लगजाने से वक्ता का बड़ा अपमानहोताहै व शकुनका नाशहोजाता है ९७ इससे ऐसे दोषके होनेपर शकुन न करना चाहिये हे रामचन्द्रजी ! जहां उपमाका श्लोक निकलआताहै उसमें जानपड़ताहै कि कार्य्य हो-जायगा पर वास्तवमें कार्य्य नहींहोता ९८ सृष्टिके प्रकरणका श्लोक सृष्टिके प्रश्नको छोड़ अन्यत्र मध्यमफल देताहै स्तुति किसी २ गुणयुक्त कार्य्यमें अच्छी होतीहै ९९ बिवाह औषधभक्षण दान व्यवहार खेती इनमें जो अकस्मात् स्तुतिआती है दोषनहीं करती १०० व जो जानबूझकर कोई चलनेके समयमें छींकताहै वहां फिर कार्य्यसिद्धि नहींहोती व जिस श्लोकका कुछ अर्थही न जानपड़े अथवा पुराण अनादृतहो १ अथवा कहीं सेनाआदि के भागने का वृत्तान्त जिसमें निकलताहो अथवा देशके भागने व रोग उ-

त्पन्नहोनेकाहो व चोरकीबाधा जिसमेंहो तो कार्य्यका नाशही हो-
जाय २ चाहे कैसेही उपाय क्यों न करे व जो शांतप्रश्नहो तो
भी यदि ऐसे अनर्थ के श्लोक निकलें तो कार्य्यका नाशहीहो यह
पूर्व आचार्य्योंने कहाहै इतना सुनकर श्रीरामचन्द्रजी ने पूँछा कि
जिस श्लोकका अर्थ नहीं जानपड़ता उसमें कैसे प्रश्नका फल पु-
राणज्ञ कहे ३ सब श्लोकों का कुछपै कुछ अर्थ होताही है फिर
न कहागया न सुनागया यह श्रोताओंको अच्छीतरह निश्चय है
वह हमसेकहो व उसका अर्थ बिचारो ४ हे पण्डित! आप तो भा-
गावबोधभी कहने के योग्यहैं श्रीशम्भुमुनि बोले कि मधूनिचमधू
न्यत्रमधुर्मधुभुजम्मधु ५ मधुनामधुनाद्यर्थान्विषानिचविषानिच ॥ बस
यह श्लोक अबुद्धार्थ है इसका अर्थ कोई नहींजानता इसलिये प्रश्न
में शकुनके समय यदि यह निकले तो अच्छा नहीं ६ रुतेरुतेरुते
रोरीरीरीरारररीरराम् एवंकरोतिशुद्धात्माब्रह्मणोब्रह्मतोऽतिथिः ७
बस यह भागावुद्ध श्लोक है इसके पद विभाग कुछ नहीं हैं इससे
शकुनमें यह अच्छा नहींहै हे रघूत्तम! इसप्रकार के बहुतसे अन्य
भी पद पुराणों में हैं ८ पर उनकी व्याख्या नहीं है केवल पाठही
के लिये वे लिखेगये हैं इससे उनका पाठ पुण्यदायक है यदि इन
निरर्थक श्लोकों को निकालडाले तो बक्ता व श्रोता दोनों की अवै-
गुण्य होजावे व्रत व नियम में कुछ न सिद्धहो ९ बस सब पुराण वेद
के तुल्यहैं इससे कभी उनमें चिन्ता न करनी चाहिये बस ऐसे
श्लोकों को तीनबार पाठकरना चाहिये व अर्थका बिचारकरना चा-
हिये१०यदि प्रकरणानुसार कुछश्लोकका अर्थ निकलआवे तो उसे
उसकाअर्थ जाने बस वही परमार्थ से उसका बिचारहै नहीं तो उस-
को वहां पढ़कर रहनेदेवे क्योंकि वहां वह श्लोक बड़ा बलवान् होगा
व प्रक्रिया उस में लघु समझी जायगी ११ व यदि प्रश्नके समय वृथा
पत्रनिकलआवे तो उस विषय में यत्नकरनावृथा समझना चाहिये व
जले हुये पत्रके निकलनेमें कार्य्यका विनाशहीहोता है व जो प्रथम
पत्रमें कार्यसिद्धि न जानपड़े उसके आगे वाले १२ के आगेवाले में
जानपड़े तो कार्यहोने में बहुत बिलम्ब जाननाचाहिये व यदिबनाय

गले सड़ेपत्र में शकुनका श्लोक निकले तो बड़ाखर्चाहोकर कार्य सिद्धि जाननीचाहिये व ऐसेही प्रणष्टपत्रमें भी अर्थात् जिसके आगे जोपत्र चाहिये वह वहां न मिले तौभी वही फल समझनाचाहिये व बृथाअक्षरवाले श्लोक के निकलनेपर परिश्रम बृथा जानना चाहिये व जिसमें पुनरुक्तपद आगये हों वहीपद दोबार लिखगये हों उसकार्य्य के होने में विवाद जाननाचाहिये १३ व जिसमें उपमानकी बात आईहो उसमें जो कार्य्यकी सिद्धि पाई भी जातीहो पर कभी नहो व हो तो देरमें सिद्धहो जिसके अक्षर स्पष्टनहों उस में बिलम्ब से कार्य्यसिद्धि समझनी चाहिये १४ चाहे दिनों का नियमभी उसकार्यके लिये होचुकाहो तौभी कार्य्यके होनेमें संशय जाननाचाहिये हे महाराज! प्रतिदिन पुराणकाशकुन न देखनाचाहिये १५ व भोजनकरके जबतक शुद्धनहो जूँठारहे तबतक कभी पुराण न देखे जिसदिन पुराणमें शकुनउठाना हो उसके पूर्वकी रात्रि में पुराणकी पूजा कररक्खे १६ फिर हे रघुनन्दन! प्रातःकाल पर दिनमें शकुन उठावे पीछे कार्य्य का निरीक्षणकरे अथवा जिससमय शकुन उठाना हो उसीसमय पुराणकी पूजा प्रथम कर लेवे १७ प्रकरणादि विशेष से विशेष शकुनफल बतावे जैसे कि किसी शुभकार्य के प्रश्न में यदि प्रेतश्राद्धादि का प्रकरण निकल आवे तो अशुभजानना चाहिये कार्यसिद्धि न होगी १८ ऐसेही दण्ड देनेका प्रकरण वर्जित है शापदेना देशोंका भागना दुर्भिक्षादिका वर्णन व राक्षसादि दुष्टप्राणियों से शुद्धप्राणियों के नाशका प्रकरण १९ भस्म करने आदि का निर्म्माण वमनकरना कुल्लाकरना रोदनकरना हासवीभत्सकर्म्म चीड़ना फाड़नादि दुःख दुस्स्वप्न भ्रम व पाप २० पटादिकोंसे शत्रुओंकी पीड़ा कलह मरण क्रूरोंका आगमन व महात्माओं को भय २१ इत्यादि अन्यभी अशुभप्रकरण शुभकार्य्यों के शकुनमें वर्जितहैं लक्ष्मीकी प्राप्ति के विचारमें राजाओंकी सृष्टि का प्रकरण शुभदायक होताहै २२ ग्रहोंका उदय व रोगकी शांति भी लक्ष्मी प्राप्तिमें शुभहै बहुत कहने से क्याहै जिस कार्य्यके योग्य जो प्रकरणहो उसके लिये उसीका विचार करना चा-

हिये २३ हमारा मतहै कि सब पुराणों में शकुनके विषयमें स्क-न्दपुराण प्रशस्तहै पर बहुत लोगोंका मतहै कि विष्णुपुराण उत्तम है व अन्य सब भागवत ब्रह्मवैवर्त्त आदि वैष्णवीपुराण श्रेष्ठहैं व रामायण सब से विशेष है यह सबका मतहै २४ क्योंकि सत्यादि गुणोंके होनेके कारण वैष्णवी पुराणोंमें दोषता नहींहै व स्कन्द और रामायणमें भी कुछ दोषहै २५ परन्तु वैष्णवी पुराणों में विष्णुपु-राणकी पूजा कोईनहीं करसक्ता क्योंकि यदि सदाचार हीन पुरुष विष्णुपुराण की पूजा करताहै २६ तो अशुभ आजाताहै फिर श-कुन नहीं सिद्ध होता इससे यदि सब आचारों से युक्तहोतभी विष्णु पुराणादि वैष्णवी पुराणोंकी पूजा करके शकुनउठावे जैसे कि शाखा-बंधमें वृष २७ सूतजी शौनकादि ऋषियों से बोले कि इसप्रकार शम्भु द्विजसे बोधित होकर श्रीराघवजी विभीषणके विषयकी प-रीक्षा लेनेके लिये शकुन उठावने में उद्यत हुये २८ व सब पुराणों में विशारद सब तत्त्वों के जाननेवाले वशिष्ठजी से श्रीराघवजी बोले कि आप पुराणको देखें २९ तब वशिष्ठजी भी उन रामचन्द्र जी से बोले कि हे रामचन्द्रजी ! इन मुनिके समीप पुराण देखने व बो-लनेकी शक्ति हमको नहींहै ३० तब श्री रामचन्द्रजी शम्भु मु-निसे बोले कि जिनकामुख सब मुनि समूह देखरहेथे कि आपलोग तो बड़े तत्त्वज्ञ हैं व सब पुराणों में विशारद हैं ३१ इससे हमारे कार्य के लिये पुराणकेमध्यमें टिकेहुये शकुनको विचारें बहुतअच्छा ऐसाकहकर पवित्रहोकर पूजा करनेपर शम्भुमुनि उद्यतहुये ३२ व विधिपूर्वक प्रश्नकरके स्कन्दपुराणकी उन्होंने प्रथम पूजाकी व उस में पहिले यह श्लोक निकला जिसका अर्थ यहहै कि हमाराभक्त बिभी-षण शृंखला से क्योंबँधाहै ३३ व ये तीनोंलोकों के निवासी देखते हैं जोकि तीनप्रकार के आदेशक हैं ३४ व दूसरा यह श्लोक निकला जिसका यह अर्थहै कि समुद्रको बाँधकर उन राघवेंद्रजीने राक्षसोंको लङ्कापुरी में घेरलिया व उस लङ्कापुरीसे युद्ध करनेके लिये अतिकाय आदि राक्षस निकलकर लड़नेको आये ३५ तीसरा यह श्लोक नि-कला जिसका यह अर्थहै कि कलियुगमें सब देशवालों कोअन्न न मि-

लेगा व ब्राह्मण वेद न पढ़ेंगे स्त्रियों को केशोंमें भी तैल लगानेको न मिलेगा ३६ व चौथा यह श्लोक तीसरेके पीछे शलाका डालनेपर निकला जिसका अर्थ यहहै कि जब इसप्रकार महेशदेव स्तुति कियेगये तो शिवदेव देवताओं से बोले कि तुम्हारा कल्याणहो मल्लासुरकी बँधोई में पड़ीहुई आपकी स्त्रियों को हम छुड़ावेंगे ३७ इनतीनों श्लोकोंको अच्छीतरह देखकर व उनके प्रकरणों प्रबंधोंका विचारांश करके शम्भुमुनिने श्रीरामचन्द्रजीसे कहा कि हे राघवेंद्र ! विभीषण बँधुआ तो अवश्य होगये हैं परन्तु शीघ्रही छूटजायँगे ३८ शम्भुमुनिका ऐसा वाक्य सुनकर श्रीरामचन्द्रजी मुनि व वानरोंको सङ्ग लेकर शीघ्रही विभीषणके ढूंढ़नेके लियेगये ३९ व बड़ी शीघ्रता से जाकर श्रीरङ्गनाम नगरमें पैठे वहां जो राजालोग स्थितथे उन्होंने श्रीरामचन्द्रजी की पूजाकी ४० जब उनसे पूजितहुये तो उन से बोले कि विभीषण कहां स्थितहैं तब उनलोगोंने कहाकि हे देव देव श्रीराम ! हमलोग इस कथाको नहींजानते ४१ तब श्रीरामचन्द्रजीने वहांसे सब दिशाओंको वानरोंको भेजा परन्तु कपिवरोंने जाकर कहीं विभीषण को न देखपाया ४२ तब श्रीरामचन्द्रजीने शम्भुनाम ब्राह्मणसे कहाकि पीछेसे आप हमसे कहें विभीषण कहां हैं बहुत अच्छा कहकर श्रीरामचन्द्रजीको व ब्राह्मणोंको सङ्गलेकर शम्भुब्राह्मण चले ४३ कि हम दिखावेंगे जैसेही ऐसाकहकर चले कि एक ब्राह्मणोंका समूह दिखाईदिया उन से जब पूंछा व उनकी पूजाकी तो उन्होंने दिखादिया ४४ कि देखो भूमि के नीचे वह बहुत जंजीरों से बँधाहुआ विभीषण राक्षसहै तब श्रीराघवेन्द्रजीने कहाकि विप्रलोगो इस विभीषणने क्या किया जो बँधुआ कियागया ४५ तब उनलोगोंने कहाकि वृद्ध ब्राह्मणको मारकर ब्रह्महत्याकी है एक अति धार्म्मिक यज्ञ करनेवाला बड़ा दुर्बल वृद्ध ब्राह्मण था ४६ वह ध्यान करने के लिये वनमें बैठाथा वहां विभीषण गया व पादसे विप्रको ऐसाताड़ितकिया कि वह विप्रचूर्णीभूतहोगया ४७ इससे फिर विभीषण एक पदभर भी वहांसे न चलसका तब हम लोगोंने इस दुष्ट विभीषणको बहुत मारा पीटा व मारडालना भी

चाहा परन्तु यह न मरा ४८ इससे हे रामचन्द्रजी ! इस पापात्मा का बधकरके धर्म्ममूर्त्ति होओ यह सुनकर रामचन्द्रजी बड़े संदेहमें पड़कर ब्राह्मणोंसे यह बोले कि ४९ हमारा मरणहोजाय सो श्रेष्ठ है पर हमाराभक्त कैसे मारा जासक्ताहै फिर इसे हमने आयुदी व कल्पपर्य्यंत राजाहोनेको कहा है वह तबतक राज्यकरैगा कि मारा जायगा ५० सेवकके अपराध में सदा सब कहीं स्वामीको दण्ड होनाचाहिये श्रीरामचन्द्रजी के वाक्यको सुनकर विस्मययुक्त होकर ब्राह्मणलोग यह बोले कि ५१ हे राघवेंद्र ! पट्टबद्धमहाराजका मरण मुनियों का सम्मत नहीं है इससे वशिष्ठादि मुनींद्रों से जो हितहो उसका विचारकराओ ५२ तब रामचंद्रजीके पूँछनेपर सब मुनियों ने प्रायश्चित्त कहा कि जो अज्ञानसे ब्रह्महत्या होजातीहै वह प्रायश्चित्तों से मिटजाती है ५३ व यह हत्या विभीषण ने अज्ञानही से की है इससे इसका प्रायश्चित्त हमलोग कहते हैं विभीषण विधिपूर्वक तीनसौसाठ गोदानकरें ५४ इसविषय में जिन ब्राह्मणों ने विभीषणको बांधरक्खाथा उनकाभी सम्मत हुआ कि अच्छा यह राक्षस प्रायश्चित्तकरे हमलोग इसे छोड़देंगे ५५ ऐसा कहकर राक्षसराज विभीषणको छोड़कर ब्राह्मणों ने ले आकर रामचंद्रजी को देदिया पर सांसर्गिक दोष के भय से रामचंद्रजीने विभीषण से बार्त्तालाप नहींकिया और लोगोंसे कहवादिया ५६ कि बिभीषण से कहदेओ कि स्नानकरके फिर शुद्धमुनियों की आज्ञा लेकर पीछे प्रायश्चित्तकरें व जब द्विजोंकी अनुमतिहो तब ये पापी राक्षस बिभीषण हमारे समीप को आवें ५७ रामचंद्रजी के वचन सुनकर स्नानकरके ऋषियों के कहेहुये प्रायश्चित्तको करके विभीषण राक्षसेंद्र फिर श्रीरामचंद्रजी के सम्मुख आये ५८ व प्रायश्चित्त से बिशुद्धशरीरहोकर फिर उन्होंने श्रीरामचंद्रजी के प्रणाम किया व हँसतेहुये श्रीराघवेंद्रजी सभामें विभीषणसे यहबचन बोले कि ५९ हे पौलस्त्य ! आजसे अब जो हित की बातहो विचारकरके वही कियाकरो क्योंकि तुम्हारे लिये हमको इतनाप्रयास करनापड़ा ६० सब के ऊपर कृपाकरतेरहो क्योंकि तुम हमारे सेवकहो इसके पीछे

सब मुनिलोग निश्चितअर्थ में लग्न श्रीराघवेंद्रजीसे ६१ बोले कि महाराज हमलोगों को शीघ्र अज्ञान कैसे आगया इस के उत्तर में श्रीशम्भुमुनि बोले कि हे ब्राह्मणो ! विप्रके अनादर से तुमलोगों को अज्ञान आगया है क्योंकि आयेहुये हमारी पूजा आपलोगोंने भाव से शून्य होकर की है सो अब यह अज्ञान नष्ट होजायगा ६२ व सबलोग सर्वज्ञताको प्राप्तहोवोगे परन्तु जब तुम सब लोग वशिष्ठ जी के आश्रमपर पहुँचोगे तब अज्ञान नष्टहोगा व उनके स्थानपर भारत सुनोगे अन्यथा अज्ञान न जायगा ऋषिलोगों ने यह सुनकर सूतजीसे सन्देहकिया कि श्रीरामचन्द्रजी तो त्रेतायुगमें उत्पन्न हुये थे व सब पुराण और महाभारत द्वापरयुग के अंतमें बने हैं फिर यह कैसे होसक्ता है ६३ यह सुनकर सूतजी बोले कि ये पुराण सब वैसेही अपने २ नाम से ठीकहैं व्यासजीने इनको फिरसे कहाहै ६४ इससे सब पुराण व महाभारत बहुत दिनोंकेहैं व जैसे सबपुराणों में शकुन उठायेजातेहैं वैसेही भारत में भी उठाये जातेहैं ६५ भारतके आदिपर्व्वही की पूजाकरके प्रश्नशलाका डालकर निश्चय जानलिया जाताहै अथवा सब पर्व्व अर्थनिश्चय के लिये प्रशस्त हैं ६६ श्लोकादि लक्षण पूर्व्वोक्त रीति से भारतमें भी जानेजातेहैं व श्लोकोंके अन्वयसे तात्पर्य्यभी वैसेही कहाजाताहै जैसे कि पुराणों में ६७ जैसा अर्थ निकले वैसा तात्पर्य्य जानना चाहिये व अर्थ हीसे सब कहीं वस्तु आदिका निरूपण कियाजाता है ६८ जैसा अर्थ जहां निकले वैसाही वहां धातु कहे यहां शब्दों के अर्थही से फल कहेजाते हैं मिथ्या नहीं कहेजाते हैं ६९ इससे पण्डितोंको चाहिये कि सर्वत्र अन्य अर्थ न ग्रहणकरें १७० ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेशिवराघवसंवादे चतुरुत्तरशततमोऽध्यायः १०४ ॥

एकसौ पांचवांअध्याय ॥

दो० । इकसौ पँचयें मुनिनयुत लोकालोकहिपार ॥
श्रीनारायणपुरहि गे रामचन्द्र सविचार १
नारायणसों मिलि रमा कहँ करिलज्जितआप ॥

शम्भुसहित मुनिगणसहित भरद्वाज आलाप २
श्राद्ध विवेक बखान पुनि भस्ममहात्म्यसमेतु ॥
शिवपूजन दृष्टान्तबहु भस्म हेतु कृत सेतु ३

मुनियों ने सूतजी से पूँछा कि हे महाभाग ! विभीषणके छुड़ाने के पीछे श्रीराघवजी ने क्या किया व महात्मा उन मुनियोंने उसके पीछे क्या किया १ सूतजी बोले कि विभीषण व सुग्रीवादिसहित श्री रामचन्द्रजी के सुखपूर्व्वक स्थितहोनेपर सब मुनियों ने शम्भुमुनि से कहा कि हमलोगों से पुण्यरूपिणी कथा कहो २ उन मुनियों का वाक्यसुनकर शंकरमुनि अपनी पार्व्वती से बोले कि हे परमशोभने! यह किसी विप्रका परमशोभन गृहहै ३ जो कि रम्यवाटिका वापी व लताओं से शोभित होता है व गुञ्जार करतेहुये भ्रमरों की श्रेणी से कामको बुलारहा है ४ जानो मध्याह्नकी सन्ध्याकरने के लिये यहां सूर्य ठहरेहुये हैं चलो हम तुम बावली में स्नानकरके सुन्दरवस्त्र धारणकरें व छाया में टिकें ५ व मृगों की नाभि यानी कस्तूरी युक्त अपने अंगों में चन्दन लगावें व केलाके वृक्षके बकलेके सूतों से अपने शिरके बाल अच्छीतरह बांधलेवें ६ व बहुत सा कपूर डाल कर ताम्बूल भोजन करें व अन्य मादक पदार्थों को खाकर जहां इस शुभगृह में जलकी धारा बहती है ७ व बहुत से मयूर नाद करतेहैं व मोरोंकी मधुरवाणी से शब्दायमान होता है वहां पर दिव्य शय्या पर दोनोंजन परस्पर के सुखों से युक्त होवें ८ व मंद मंद मुसुकाते हुये तुम्हारे ओष्ठों का जो चुम्बनकरें तो हम दोनोंको संसार में आने का फल मिले ९ ऐसा शम्भुजी का कहना सुनकर सब मुनि लोग बड़े कुपित हुये व बोले कि तुम ने हमलोगों के आगे यह क्या अशुभ वाक्य कहा १० हम लोगों ने जो पूँछा उसका उत्तर कुछ न दिया अपनी स्त्री से विहार की बातें करनेलगे जब मुनियों ने ऐसा कहा तो कोपमें तत्पर शम्भुके मुखसे परम अद्भुत ११ ज्वाला निकली वह भी अतिविकरालमुखी होगई व किसी मुनिकी भार्य्या को पकड़कर आपभी स्त्रीरूपिणी होकर बड़ी शीघ्रता से १२ भाग खड़ीहुई रामचन्द्रजी को देखकर डरी तब श्रीरामचन्द्रजी ने भी

कहा कि हम इस शुद्ध ब्राह्मणी को छुड़ावेंगे १३ बार बार छुड़ाने को कहतेहुये पुष्पक विमानपर चढ़कर चले परंतु यह स्मरण श्री राघवजीको न हुआ कि धनुषपर बाण चढ़ावें १४ व उसी पुष्पक विमानपर चढ़ेहुये शम्भुजीभी पुण्यवन देवमन्दिर व विचित्र पुरों को देखतेचलेगये उन्हों ने भी रामचन्द्रजी का कुछ स्मरण नहीं किया १५ एक क्षणमात्रमें लोकालोकनाम महापर्व्वतपर पहुँचे तब सूर्य्यादि ग्रहोंके मार्गोंसे युक्त उस पर्व्वतको देखकर श्रीराघवजी १६ बोले कि वह ब्राह्मण की स्त्री कहां चलीगई है ब्राह्मणलोगो! तुम को कहीं दिखाई देतीहै तब वहांके ब्राह्मणलोगोंने कहा हां यहांपर होकर इस अन्धकारमें चलीगईहै १७ यह सुनकर श्रीरामचन्द्रजी ने उदासीन होकर कहा कि यह बड़े कष्टकी बातहै तब महातेजस्वी शम्भुजीने अतुल प्रकाश दिखाया १८ उसप्रकाशके प्रभावसे श्री रामचन्द्रजी उस कृत्याके पीछे २ चलेगये वहांपर सब जन्तुरहित अंधकारमयी भूमिथी १९ व उस अंधकारमयी पृथ्वीके बीचमें सौ करोड़ योजनकी बड़ीपक्की चांदी की भूमिथी २० वहीं कोटि सूर्य्य सम प्रकाशित श्रीनारायणजीका पुर दिखाईदिया मुनियों समेत श्री रामचंद्रजी उसेदेखकर बहुत विस्मितहुये २१ यह क्याहै व यहां हमलोगोंका प्रवेश कैसेहो यह चिंताकरके मन में सोचनेलगे कि क्या यह प्रलयका अग्निहै अथवा परमात्माकी मायाहै २२ क्या यहां हमलोगोंका मरणहोगा अथवा कल्याणहोगा जब श्रीरामचंद्र सहित सब मुनिलोग इसप्रकार चिंतासे व्याकुलहुये २३ तब शम्भु मुनि बोले कि हे राघवेंद्र! सुनिये हम तुम से कहते हैं यह माया है हमने तुम्हारेलिये रचाहै इसको अद्भुत न मानिये २४ यह नारायण का परमपद है, प्रकाशित होताहै यह उष्ण शीतादिरहित ज्ञान से प्राप्तहोने के योग्यहै साधारण चक्षुर्विषयीभूत नहींहै २५ देखो ब्रह्मादि सब देवगण इसकी पूजा ऊपरकी ओरसे करते हैं व सब दिशाओंमें देखो अमल मुनिलोग पूजाकररहेहैं २६ व देखो चारों वेद मूर्त्ति धारणकियेहुये इस परमपदकी स्तुतिकररहेहैं योगाभ्याससे यत्नपूर्वक सनकादिक मुनिभी स्तुति करते हैं २७ व हे रामचंद्रजी!

देखिये ये सब परम तेजको ध्यान करतेहैं व इन लोमशजी को देखो कि प्रदक्षिणाकरके नमस्कार कररहेहैं २८ व देखो करोड़ों बालखिल्य मुनीश्वरलोग प्रदक्षिणाकरते हैं व लक्ष्मी आदि सब स्त्रियांभी इस परमपदको पूजती हैं २९ साकारमें जो निराकार ब्रह्म कहाजाताहै व जिसे अज्ञानी लोग नहीं देखते व ज्ञानदृष्टि से लोग देखते हैं ३० शम्भुके कहने से सब लोगोंने मन से उस परमपदकी पूजाकी फिर प्रकटहोकर भी गिरिकर्णी तुलसी कदली आदिसे पूजनकिया ३१ नील कमल लालकमल कृष्णजल आदिसे सब महात्माओंने उस परमपद में स्थित महात्मा श्रीजनार्दनजी की पूजाकी ३२ पर यह सबपूजा दूरही से हुई इतने में वहांसे जटा रखाये बड़ी लम्बी दाढ़ीवाले नारदमुनि वीणालिये दिखाईदिये जोकि नारायण २ जोर से कहरहे थे ३३ व नारदजीने भी मनसे विचार किया कि इन मुनियों व रामचन्द्रजीके साथ यह विशेष मुनि कौनहै फिर शम्भुजी को जानकर आनन्दितहोकर उनके पैरोंपर गिरपड़े ३४ व शैवी विद्याको मुनिने मनसे जापकिया व कहा हम धन्यहैं व आपने बड़ा अनुग्रहकिया व आज हमारा जन्म सफलहुआ ३५ व ब्रह्मादि देवताओं से वन्दित व अगम्य तुम्हारे चरणोंको हमने आकर देखा तब शम्भुमुनिने नारदजी से धीरेसे कहा कि तुम ऐसा न कहो ३६ जिसमें ये सब मुनिलोग हमको न जानें कि ये महादेवही हैं वैसाही उपायकरो शम्भुनाम मुनिका वेष धारण किये हैं क्योंकि हमने इन लोगोंसे अपनेको प्रकट नहीं किया है अब शीघ्र जाकर श्रीहरि से हमारा आगमन गुप्तकरके कहो ३७ यहसुन अतिवेगसे जाकर नारदजी ने श्रीहरि से सब बताया तब श्रीविष्णुभगवान् शीघ्रता के साथ अर्घ्यपाद्यादिलेकर ३८ लक्ष्मीआदि सब कोटि २ शक्तियोंको सङ्गलिये व आप नारद के हाथमें हाथ मिलायेहुये गरुड़ध्वज चले व शङ्करजी के नमस्कारहैं नमस्कारहैं नमस्कारहैं यह कहतेहुये ३९ व अर्घ्य पाद्यादिकों से अतिथिरूप आयेहुये शङ्करादि सबमुनियों की पूजा श्रीकेशवजी ने की ४० व सबों को श्रीनारायणजी अपने पुरके भीतर लिवालेगये व गृहमें स्थितहोकर श्रीहरिजी बोले ४१

ये सब कैसे यहांआये और ये महायशस्वी राजाधिराज कौनहैं यहां मनुष्य कभी प्रवेश नहीं करता बरन ब्रह्मादि देवता भी सदा यहां एकाएकी नहीं आसक्ते ४२ शम्भुजी बोले कि हमारे दिखाये हुये मार्गसे हमसब मुनिलोग भी यहांआये व ये महाराजाधिराज भी आये इनको आप नहीं जानते ये तो आपही के रूप महाप्रतापी रामचन्द्र महाराजहैं ४३ तुम्हारी इन पत्नी लक्ष्मीके दर्शन करनेको आयेहैं यहसुनकर श्रीनारायणजीने श्रीराघवजीसे कहा बहुतअच्छा चलिये व फिर रामचन्द्रजी को भीतर लेगये ४४ भीतरजाकर लक्ष्मीजीको देखकर न नमस्कारकरके श्रीरामचन्द्रजीने विनयसे नमितहोकर सुन्दरी वाणीसे कहा ४५ कि हम तुमको देखकर कृतार्थ हुये इसमें सन्देह नहींहै पर तुम अपना अभीष्ट बतावो क्या चाहतीहो लक्ष्मीजी बोलीं कि हे राघव ! तुम युवावस्थाको प्राप्तहो इससे अभी कामयुक्तहो व रूपवान्हो ४६ व सब अङ्गों से सुन्दरी तुम्हारी पत्नी सीताजी हैं परन्तु बहुतदिनहुये उनका तुम्हारा वियोगहोगया है इससे बहुत विरहसे आतुरहोगयेहो हमारे विचारसे यहबात आती है ४७ भला सीताके विरहसे व्याकुलतो हो फिर हमसे सम्पूर्ण वह कहो नहीं तो हास्यसहित जोकि युवा मनुष्यों के चित्तको हरलेवे वह वाक्य न पावोगे ४८ लक्ष्मीजी के ऐसे हास्ययुक्त वचन सुनकर आत्मज्ञानी श्रीरामचन्द्रजी ने अपना मुखकमल नीचेको झुकाकर वहांसे चलदेनाचाहा ४९ व अपनीजान कमलवत् काम बाणसे श्रीरामचन्द्रजीको अन्य साधारण देवमनुष्यके समान ताड़ितकरके कमलवन है प्यारा जिनको ऐसी लक्ष्मीजी ने भी वहांसे चलदिया ५० क्योंकि श्रीराघवजीको एकनारीव्रत जानकर उनके समीप सबगये सर्व्वाङ्गसे मारेभयके कांपते हुये स्खलितपदगतिसे युक्त ५१ देखकर शिव व नारायण भगवान् दोनों बड़े विस्मित हुये कि अहो इन रामचन्द्रकी दृढ़ताके तुल्य कौनहै कि जिसकाचित्त इन मायावी लोगोंके भी वशमें नहीं आता५२बस इसप्रकारका धैर्य्य व यश नियत है इसीसे ये श्रीरामचन्द्र सुकीर्त्तिमान्हैं व इसीसे सबओरसे इनका कल्याणहीहै अकल्याण कहीं नहीं होता ५३ तब रामचन्द्रजी

बोले कि हे भगवन्! अब हम यहांसे जानाचाहते हैं ऐसाकहकर श्रीहरिकी आज्ञालेकर पुष्पकविमानपर श्रीराघवेन्द्रजी ५४ शम्भुजी के व सब मुनियोंकेसाथ आरूढ़हुये व श्रीनारायणजी भी उसीपर चढ़े व श्रीरामचन्द्रजी लोकालोक पर्व्वतको नांघकर स्वादुजलवाले सागरकेपास आये ५५ फिर बीचके सबद्वीपों व समुद्रों को नांघते हुये जम्बूद्वीपमें आये व आकर गौतमीनदीकेतीरपर भरद्वाजजी के आश्रमपर ठहरे ५६ व महानदीमें स्नानकरके महामुनि भरद्वाजजी ने अपने शिष्यों के सङ्ग आकर पुष्पकविमानको देखा ५७ फिर उस पर महाबाहु श्रीरामचन्द्रजी को शिव व नारायणजी को व ऋषियों को भी देखा इससे यथाविधि सबोंकी पूजाकरके महामुनि उनसबों से बोले कि ५८ हे सत्तमलोगो! हमारे आश्रमपदपर आप सबलोग भोजनकरनेके योग्यहैं मुनिके बहुत कहनेपर श्रीरामचन्द्रजीने किसी न किसी यत्नसे भोजनकरना अङ्गीकारकिया ५९ व उस महानदीमें स्नानकरके व देवता पितरों व ऋषियों का तर्प्पणकरके जब राम-चन्द्रजी भोजनकरनेपरहुये तो वशिष्ठजी उनसे यह वाक्य बोले ६० कि हे रामचन्द्रजी! जो श्राद्ध न करोगे तो धर्म्म च्युत होजायगा यह सुन श्रीरामचन्द्रजी बोले कि अमावास्या व चन्द्रसूर्य्य के ग्रहण व व्यतीपातयोग और संक्रान्तिमें ६१ यदि श्राद्धकरनेको रहजाता है तो फिर कियाजाताहै व नित्यश्राद्ध जब करनेको रहजाता है तो फिर नहीं कियाजाता यह तुम्हारा वचन है ६२ जैसे कि हमनेही माताओं के मरने में जब अशौच आगयाथा तब नित्यश्राद्ध नहीं किया ६३ व व्यतीपातादि कालोंमें जब नहीं किया तो तुम्हारे वचन से फिर किया है वशिष्ठजी बोले कि ये सब मुनिलोग हैं तथा ये शम्भुनाम ब्राह्मणहैं ६४ इनलोगों के मुखसे सम्पूर्ण निर्णय होजा-यगा इसबातको तुरन्त निश्चय करके मुनिलोग शम्भुमुनिसे बोले ६५ कि हे द्विजवर्य्य! तुम सबमें महान्हो इससे सब हमलोगों से कहो शम्भुजी बोले कि जो श्राद्धछूटजावे वह फिर करनाचाहिये ६६ व सूतक प्राप्तहोने व किसी विघ्नके होनेसे जो श्राद्ध नहीं होते उस विषय में हम कहते हैं मासिक श्राद्ध सान्नोदकुम्भ श्राद्ध

व प्रसव के समय के श्राद्ध ६७ व प्रतिसंवत्सर श्राद्ध ये सब सूतकके पीछे कियेजाते हैं और सबोंको छोड़नाचाहिये जब सूतकमें विघ्न उत्पन्नहोजावे तो ६८ उसके अनन्तर क्रिया करनीचाहिये इसमें कुछ संशय नहींहै सब मासिक श्राद्ध व प्रतिवर्षका श्राद्ध६९ इनको सूतकके पीछे करनाचाहिये व और किसी विघ्नके होनेपर फिर वह श्राद्ध न करनाचाहिये हां जिसकी श्राद्धमें कुछ विघ्नहोजावे व श्राद्ध की तिथि विदित न हो तो कृष्णपक्षकी एकादशीको शुभचिन्तक पुरुष श्राद्धकरे ७० जो एकादशीको भी कोई व्यतिक्रम होजाय तो अमावास्याको करे व नहीं तो जिसदिन विघ्नके कारण श्राद्ध न हो तो उसके दूसरेदिन श्राद्ध करनाचाहिये ७१ हे राम ! जो श्राद्धकर्म रहगयाहो सब कृष्णपक्षकी एकादशी वा अमावास्याको करना उत्तमपक्ष है व जिसके मरनेका किसीतरह मास न विदितहो ७२ उसका श्राद्ध मार्ग्गशीर्ष अथवा माघमें करनाचाहिये व जब तिथिका ज्ञान न हो व मासका ज्ञानहो ७३ तो उसीमासकी अमावास्याको आब्दिक श्राद्ध सदा करनाचाहिये व जो कोई विदेशमें मराहो दिन मास दोनों अज्ञातहों ७४ तो जिस तिथिको वह अपनेस्थानसे चलाहो वह दिन ग्रहणकरनेको योग्यहै यदि वह दिनभी न विदितहो तो आश्विनकी अमावास्याको वा मार्ग्गशीर्षकी अमावास्याको अथवा माघकी अमावास्याको उसका वार्षिकश्राद्ध सदाकरे बस ये तीनदिन ऐसेके श्राद्धके लियेहैं ७५ बस दिन मासादिके न जाननेपर इन तीनमासों मेंसे एकमास व उसकी अमावास्या का ग्रहण करनाचाहिये वृद्धि पुंसवन व सीमन्त श्राद्ध व प्रेतश्राद्ध व मासिकश्राद्ध ७६ व नित्य कुम्भोद श्राद्ध ये सब मलमासमें भी कियेजातेहैं ग्रहणमें पुत्रजन्मादि में व अन्य शान्तिकर्म्म में ७७ व संकल्प कियेहुये सब कर्म्मों का करना मलमासमें दूषित नहींहै जो मनुष्य रोगीहो व उसके पिता आदिका श्राद्धकर्म्म आनपड़े ७८ तो उसेचाहिये कि अपनीभार्य्या व भाई अथवा शिष्यको श्राद्धकरनेको नियुक्तकरदेवे जो ये भी न हों तो फिर श्राद्धकर्म्मकी हानि न होगी ७९ व नित्य श्राद्धके करने में जो किसी प्रकारकी अशक्ति होजाय तो जो नित्य श्राद्ध में भोजन

करताहो उसीसे कहदेवे वही श्राद्ध करडाले परन्तु अमावास्या मासिकश्राद्ध व मृताहको छोड़कर क्योंकि इनको भोक्ता नहीं करसक्ता ८० व जो आप कर्म्म करने में अशक्तहो तो अपनेपुत्र वा विप्रको नियोजित करे व जो किसी राजकार्य्य में नियुक्तहो जिससे किसी प्रकारसे न आनेपावे ८१ व अन्य सब दुःखोंमें विप्रसे श्राद्ध करादेवे पर द्विजोत्तमको चाहिये कि बड़ेप्रातःकाल कोईश्राद्ध न करे८२ पर नैमित्तिक श्राद्ध ग्रहण पुत्रजन्मादिके श्राद्धों में कालका नियम नहीं है ८३ क्योंकि ग्रहादिकों को छोड़कर प्रतिकर्म कुतुप कहाता है व कुतुप के पहले आसन्नकुतुप होताहै ८४ परन्तु मास मास में जो श्राद्धकियाजाताहै वह पराह्णहीमें करनाचाहिये व जब दोनों दिन अमावास्या अपराह्णव्यापिनी हो ८५ तो क्षयमें पूर्व्वदिन वाली में श्राद्धकरे व वृद्धिश्राद्धमें वह अमावास्या परदिनवाली होनी चाहिये जो दोनों दिन अपराह्णमें बराबरहो वह अमावास्या कहातीहै ८६ क्षयमें पूर्व वृद्धि में पर व साम्यमें भी पर कही गई है व सोमवती अमावास्याभी परदिनकी करनीचाहिये व जिस अमावास्या को चन्द्रमा क्षीणहोजाय उसदिन पार्व्वण श्राद्ध करनाचाहिये ८७ अमावास्या जो सूक्ष्महो व चतुर्दशी अष्टम भागसे न्यून न हो तो पर मध्याह्नमें उसदिन अमावास्या पाईजाय तो एकोद्दिष्ट श्राद्ध उसी पूर्व्वदिनकी मध्याह्नव्यापिनी अमावास्यामें करनाचाहिये ८८ वजो तिथि सन्ध्याकालमें हो पार्व्वण श्राद्ध उसमें करना चाहिये व जो अमावास्या अपराह्णसे कुछ कम होती है वह वृद्धिश्राद्ध में ग्रहण कीजातीहै ८९ जो तिथि मरणके दिन तीनमुहूर्त से प्रथम सन्ध्या कालमें हो व परदिनमेंभी सन्ध्याकालमेंहो तीनमुहूर्त पूर्ववत्हो ९० उसमें परदिनवाली में श्राद्धकरनेसे ज्येष्ठपुत्रका नाशहोताहै व यदि अमावास्याश्राद्धके दिन मृतकतिथिभी प्राप्तहोवे ९१ तो ब्राह्मण को छोड़कर और सब मध्याह्नव्यापिनी में मृताहश्राद्ध करें यहसुनकर श्रीरामचन्द्रजी बोले कि सबश्राद्धक्रम व मनुष्योंका क्रम ९२ व प्रासंगिक सब धर्म्मोंका निर्णय हमसे कहिये श्रीशम्भुमुनिबोले कि जब श्राद्धकादिन आवे तो उसके प्रथमके दिनमें नियमयुक्त रहे ९३ व

हैं फिर पूजतेहैं व फिर विसर्जन करदेते हैं १९ व हवनक्रिया करने वाले लोग शिवजीकी पूजा अग्निमें करते हैं व सम्पूर्ण पूजकलोग शिवलिंगों में महेश्वरजीकी पूजा करते हैं २० इससे लिंगहीका स्थापन लिंगहीका पूजन व विसर्जन करनाचाहिये क्योंकि शंकरजी की धारणा लिंगही में होती है इससे लिंगहीको शिव कहनाचाहिये २१ सबसे उत्तम लिंग वह होता है जो सज्जी से बनाया जाताहै उस से उतरकर जो सुवर्ण से निर्म्मित कियाजाताहै चाँदी के पत्रों से वा चाँदीके टुकड़ोंसे बनाना चाहिये व बांससे २२ व लताओं के तंतुओं से बनावे अवथा काष्ठका लिंग बनावे अथवा वस्त्रसे रचितकरे मिट्टी से बनावे २३ फिर ऊपरसे वस्त्र लपेटकर सुगंधित पदार्थोंका अनुलेपनकरे पर वस्त्र धोयेहुये शुद्धहों जिनको ऊपरसे लपेटे अथवा मिट्टी व शुद्ध सन ऊपरसे लपेटदेवे २४ व वह लिंग ऐसे स्थानपर स्थापितकरे जहां अधिक शीत वा अधिक उष्ण न हो चारपाद युक्तहो प्रावृति छेदन युक्तहो व जिस वस्त्रसे आच्छादितकरे उस में कृमिकीट कुछ न लगेहों २५ केवल धोयेहुये कोमल वस्त्रसे शिवलिंगका वेष्टन करनाचाहिये बस इसप्रकार लिंग बनाकर सज्जीके भीतर धरदेवे व ऊपरसे अन्य वस्त्रसे आच्छादित करदेवे २६ हे रामचंद्रजी! यह सज्जी देवस्थान कहातीहै फिर उन देवदेव के लिंगका स्थापन किसी ऊँचे सिंहासन पीठआदिपर करे २७ अथवा भीतिकी जड़में स्थापितकरे अथवा देववेदीपर स्थापितकरे परंतु जहां स्थापितकरे वह स्थान अच्छीतरहसे रक्षितहोवे व रक्षित न हो तो वहां रक्षक नियतकरे २८ व भाव सहित विधिपूर्वक उस लिंगकी प्राणप्रतिष्ठाभी करे यह परमात्माका स्थापन राजसहै २९ व सात्त्विक स्थापन वह है जो अपने समीपहो व अपने किसी अंगमें धारणकिये रहना तामस स्थापनहै शिवलिंग अपने शरीरमें धारण किये रहना व अपने अंगोंका स्पर्श कराना अथवा अपने देहमें कहीं गुप्त करके रखना ३० इनसबोंमें अपने मस्तकपर धारणकरना मुख्यहै क्योंकि ब्रह्माजीने भी ऐसाही किया है उसमेंभी मुकुट के अंतमें स्थापित करना बहुत शुभदायक कहा

जाता है ३१ व मस्तकपर शिवलिंग धारण करना अच्छा है क्यों कि लक्ष्मीजीने इसीप्रकार धारण कियाथा व बाणासुरने अपने शिर पर धारण कियाथा फिर दहिनीओर छातीपर ३२ व हरकर्णनाम परमऋषिने अपने कानमें शिवलिंग धारण कियाथा व अपने अंग को काट छेदकर व उसके भीतर लोहेका स्थान बनाकर ३३ कोई २ उत्तम राक्षसलोग शिवलिंग धारण करते हैं व मनुष्यलोग अपने शरीरके भीतर लिंग स्थापन करनेका स्थान नहीं बनासक्के इस से वे प्रायःशिरपर धारण करते हैं ३४ परंतु धोती की मुर्री वा पेड़ूपर लिंग धारणकरना अधमसे भी अधमहै क्योंकि इन स्थानोंमें उच्छि-ष्टता प्राप्त होजातीहै इस से मस्तकपरही धारण करनाचाहिये ३५ जिनलोगोंका आचरण अधमसेभी अधमहै उनकोभी लिंग धारण करनाचाहिये क्योंकि पापियों के पासभी यदि मरणसमय में लिंग होताहै तो उनको यमलोक नहीं जानापड़ता ३६ यह सुनकर श्री रामचंद्रजीने पूछा कि चित्रगुप्तकी लिखीहुई जो सब के ललाट में तीनपंक्तियां रहती हैं व उसमें जिसके लिये उसके कर्म्मके अनुसार नरकवास लिखाहोताहै वह शम्भु के पूजनकरने से अन्यथा कैसे होजाताहै ३७ शम्भुकी पूजाकरने से उसके पाप कैसे नष्टहोजातेहैं शम्भुजी बोले कि सब पाप नाश होजाते हैं चाहे प्राणी सौ जन्मके पाप इकट्ठेकियेहो ३८ क्योंकि शिवजीका स्मरण करने से सब पापों का भर्त्सन करनेहीसे उसका भस्म नाम हुआहै इससे भस्म धारण करना उत्तमहै ३९ विधिपूर्व्वक ललाट में अग्नि के वीर्य्य भस्मके धारण करने से मस्तक में चित्रगुप्तकी लिखीहुई पट्टिकाको अग्नि नाश करदेताहै ४० मुखमें भस्म धारणकरनेसे कानके ऊपरमे किये हुये सब पाप नष्टहोजातेहैं व कण्ठमें धारणकरनेसे कण्ठसे भोजन कियेहुये सबपाप नष्टहोजाते हैं ४१ व बाहुओंमें धारणकरनेसे बाहुओं से कियेहुये पाप नष्टहोतेहैं व छातीमें धारणकरनेसे मन से कियेहुये पाप बिलाते हैं नाभिमें भस्म लगानेसे लिंगइन्द्रियके कियेहुये पाप नष्टहोते हैं व पीठमें लगाने से गुदके कियेहुये पातक नशाते हैं ४२ व हे रामचन्द्रजी ! दोनों बगलों में भस्म लगाने से परस्त्री के

उसी दिन विप्रोंके लक्षणों मे युक्त विप्रेन्द्रोंका निमन्त्रणकरे एकबार भोजन करना ब्रह्मचर्य्य से रहनाचाहिये अन्त्यजादिकों से भाषण न करना ९४ दन्तधावन करना अभ्यंग लगाना नख केश कटाना इनकर्म्मोंको श्राद्ध करनेवालेको चाहिये कि श्राद्धके पूर्व्ववाले दिनमें करे परदिन में न करे ९५ कहेहुये नियमोंका ग्रहणकरे व जो त्याज्य हैं उनको छोड़े व जो तीनोंकालों में देवपूजनकरताहो उसे चाहिये कि प्रातःकाल अपने देवताकी पूजा श्राद्धके दिन करलेवे ९६ क्योंकि उसदिन अरुणोदय वेलाही में देवपूजन लिखाहै उसके पूर्व्ववाली रात्रिमें भूमिपर शयनकरे फिर प्रातःकाल उठकर कर्म्मवेत्ताको चाहिये ९७ कि प्रातःकाल के शौच स्नानादि जो कर्म्म हैं विधिपूर्व्वक करे क्योंकि सत्रकृत्यों के नित्य करने से पुरुष तीनों ऋणों से छूटकर ब्रह्ममें लीन होताहै ९८ व सूर्योदयके समय जो कोई शिवकी पूजा करताहै वह सूर्य्यसमतेजस्वीहोकर शिवलोकमें जाकर पूजित होता है ९९ व सूर्योदय होने के पीछे घड़ीभर दिनचढ़ेतक जो पूजन करताहै वह रुद्रसमतेजस्वी होकर शिवलोक में जाकर पूजितहोता है १०० व जो दूसरी घड़ी में पूजन करता है वह वायुसमतेजस्वी होकर शिवलोक में पूजित होताहै १ व जो तीसरीघड़ी में शिवकी पूजाकरता है वह कुवेरसमतेजस्वी होकर शिवलोक में पूजितहोता है २ व चौथी पांचवीं छठीं सातवींघड़ी में जो पूजा करता है वह पवनसमतेजस्वी होकर शिवलोकमें जाकर पूजितहोता है ३ जिस कालमें जो पूजा कहीहै उसको उसीकालमें करे अथवा जिसी किसी समयमें नियमसहित शिवकी पूजाकरे ४ यदि उपचारमें शक्तिहो तो नियमों का पालनकरे व नित्य षोडशोपचार पूजन करे व नियम न होसकें तो रात्रिमें जागरणकरनेसे भी शिवजी प्रसन्न होते हैं ५ यह सुनकर श्रीरामचन्द्रजीने पूँछा कि स्मरण करनेसे पापनाशक व मोक्ष देनेवालेअमिततेजस्वी देवदेव शंकरजीकी पूजा कहां करनीचाहिये ६ क्योंकि शिवजी व शिवरूप व शिवजी के तत्त्वार्थ जाननेवाले व सोम व सोमभूषण व प्रकाशमान सोमनेत्र शिवजी तो वेदमूर्ति अमूर्ति वेदसारके जाननेवाले व वेदवेदाङ्गवेत्ता वेद्य अवेद्य ज्ञानरूप

योगी ७।८ गोदुग्धसम शरीरवाले व गोदुग्धकेस्नानसे हर्षितहोनेवाले व गोरक्षा करनेवाले तीननेत्र धारण करनेवाले व मायावी हैं ९ यह सुनकर शिवमुनि बोले कि हे रामचन्द्रजी ! शिवजी सब प्रस्तरोंके मध्यमें ज्ञान देते रहते हैं व अचल होकर अपनी नासिका का अग्रभाग देखते हुये सदा ध्यान किया करतेहैं १० जब जिस मूर्ति का ध्यान करते हैं वह मूर्ति देखतेहैं तो आनन्द के आंसू बहनेलगते हैं व बहकर कपोलतक चले आते हैं ऐसे महादेवजी को पार्व्वती जी सदा अपने हृदय कमल में धारण किये रहती हैं जिनका शरीर गोदुग्धसमान सदा शोभित हुआ करताहै ११ इतना कहतेही शम्भु मुनि के वक्षस्स्थल में श्रीरामचन्द्रजी का सब प्रतिबिम्ब दिखाई दिया व शम्भुकी मूर्ति चतुर्भुजी दिखाईदी तीननेत्र अच्छेप्रकार प्रकटहोआये १२ महादेवजीकी ऐसी मूर्तिको देखकर सब मुनिगण व वानरलोग बड़े विस्मितहुये देखा तो अब बनाय प्रत्यक्षहोकर चतुर्भुजी शम्भुजी की छाती में श्रीरामचन्द्रजी बैठे हुये हैं व अत्यन्त प्रकाशित होरहेहैं जिनकी ओर कोई अच्छीतरह नहीं देख सक्ता १३ यह आश्चर्य्य देखकर दोघड़ीतक सब के सब चुपहोगये फिर रामचन्द्रजी शम्भुमुनिसे बोले कि हां जो हमने पूँछा था सब कहो १४ शम्भुमुनिबोले कि चाहे शिव का लिङ्ग अचलहो वा चल हो इसमें पूजक की इच्छा है लिङ्ग में शिवपूजन करना मुख्य है क्योंकि प्रतिमा सर्वत्र नहीं मिलती १५ जब कोई विशेष अधिकारी मिलजावे तो शिवकी पूजा प्रतिमा जल आकाश आदिमें भी होसक्ती है पर लिङ्गका पूजन चाहे विगुणहो वा सगुणहो फलदायक होता है १६ परन्तु प्रतिमा आदि में जो पूजा शिवकी कीजाती है वह सबगुणोंसे युक्त नहीं कीजाती जैसीकी षोडशोपचार वा पंचोपचार शास्त्रमें लिखीहै वह सफल नहीं होती इससे चाहे अचललिङ्ग हो वा चलहो लिङ्गहीकी पूजा प्रशस्त होती है १७ अब चल लिङ्ग का पूजन कहते हैं स्थापन व विसर्ज्जनभी उसीका कहते हैं क्योंकि स्थापन व विसर्जन दोनों कोईमुनिभी कहीं नहीं जानता १८ योगी लोग शंकरजीको अपने मनकमलमें सदा स्थापितकरतेहैं व छिपाते

संग्राम में आयुर्दायहीन देवताओंको भी भस्मने जिलाया है इस से हे विनापापवाली ! हमभी भस्मसे तेरे इस जंतुको जिलाये देते हैं ६९ ऐसा कहकर भगवान् दधीचजी महेश्वरजीके शरणको गये भस्म अभिमन्त्रितकरके हाथमेंलेकर उस पतिव्रताके पतिको जिला दिया ७० उन महेशजी के भक्त दधीच के हाथका स्पर्शहोनेसे करुणमुनि शापरहित होगया बस इसप्रकार दधीचने उस ब्राह्मण को जिलाया व अपने पूर्व्वके रूपको पाकर करुण अपने स्थानको चलागया ७१ व वह पतिव्रता भोजन कराने के लिये दधीच मुनि को भी अपने गृहको लाई व प्रार्त्थना करनेसे विप्रर्षि दधीचजीने उसके गृहमें भोजन किया ७२ विप्रेंद्रके भोजन करहोनेपर उनके कोटि शिष्यगणभी वहां आये व भस्म अंगोंमें लगाये हुये देवगण भी वहां आये ७३ व शिवजी के पूजक दधीचजी के प्रणाम करके देवताओंने शिवका कारण उनसे पूँछा देवताओंने कहा कि हम लोगोंका ज्ञान पूर्व्वकालमें नष्ट होगया था हे महामते! ७४ जब कि हम लोग गौतमकी भार्य्याको देखकर कामातुर होगये थे परन्तु विवाह के मंगलसे युक्त उस देवी अहल्याको हमलोगोंने धर्षित नहीं किया ७५ परंतु तोभी उसके संग भोग करनेकी इच्छाही करने से हमलोगों का ज्ञान नष्ट होगया तब हम सब भ्रांतचित्त होकर दुर्व्वासा मुनिके समीपगये ७६ तब मुनि बोले कि इसी समय हम तुम सबलोगोंका मल दूरकरेंगे जोकि शतरुद्रिय मंत्रसे साक्षात् शम्भुजीने अभिमंत्रित कियाहै ७७ हमको ब्रह्महत्यादि शान्त करने के लिये उन्हीं ने दियाथा ऐसा कहकर दुर्व्वासाजी ने उत्तम भस्मदिया ७८ व उनके कहनेसे चित्त बिगड़ेहुये हमलोगों ने शत-रुद्रिय मंत्रसे भस्म सब अपने अंगोंमें लगालिया ७९ व हे मुने ! सबके सब उसीक्षण पापहीन होगये सो हमलोग इस आश्चर्य्यको जानते हैं कि भस्ममें ऐसी अद्भुत सामर्थ्यहै ८० दधीचजी बोले कि शिवके भस्मका माहात्म्य हम अब संक्षेपरीतिसे तुमलोगों से कहते हैं क्योंकि विस्तारसे तो सैकड़ोंवर्षोंमें नहीं कहसक्के ८१ इसविषय में तुमलोगों से सब देवताओं के स्वामी दो देव हरिशङ्करका पूर्व्व

कालका ब्रह्महत्यादि नाशक वृत्तांत कहते हैं ८२ पूर्व्वकाल में जब ब्रह्माकी प्रलय होगईथी तब सब घोर एकार्णव होगयाथा व भगवान् महाविष्णुजी उस महाजलमें शयनकरतेथे ८३ उनकी दोनों बगलों में दो सौ ब्रह्माण्ड टिके थे व बीस ब्रह्माण्ड चरणों के पास व बीस मस्तकमें ८४ व नासामें मौक्तिकके भावसे श्रीप्रभु एक ब्रह्माण्डको धारणकिये थे व कोई २ लोमशादि मुनीश्वर उनके नाभिमण्डलमें बैठेहुये ८५ वहीं तप करतेहुये उन परमेश्वर महाविष्णुजीकी उपासनाकरतेथे तब महातेजस्वी महाविष्णुजीको सृष्टिकरनेकी चिन्ता हुई ८६ तब ध्यानयोगमें पर होकर उन्होंने विचारांश किया परन्तु सृष्टिकरनेका कोई उपाय न दिखाईदिया तब बड़ेदुःखसे ऊंचेस्वरसे बार बार रोदन करनेलगे ८७ उसी अवसर में कोई लोकविलक्षण दीप्ति दिखाईदी उसे देखकर भ्रान्तिसे श्रीहरिजी ने अपने नेत्र मूंद लिये ८८ वह गोदुग्धके समान श्वेत तेज अगम्य समझपड़ा फिर अंगवान् होगया व अपने दोनोंहाथों में कोटि ब्रह्माण्ड गठिलाये हुये लियेथा ८९ व गलेमें एक माला पहिने वह रूपथा जिसमें कोटि ब्रह्माण्ड गुहेहुयेथे व एक २ बड़ेभारी ब्रह्माण्ड दोनों हाथों में लियेथा ९० व सब भूषणोंसे भूषित उस मूर्त्तिको देखकर विष्णुभगवान् उसके दर्शनके लिये स्तुति करनेलगे ९१ कि हे देवदेवेश ! तुम्हारे नमस्कार है व हे निरन्तर रहनेवाले, नाशरहित ! तुम्हारे नमस्कार है हम तुमको नहीं जानते तुम अपनेको जानते हो तुम्हारे नमस्कार है ९२ हम तुम्हारे भावको नहीं जानते व तुम्हारी द्युति बड़ेदुःखसे निरीक्षण करनेके योग्यहै हे माणिक्यके कुण्डल धारण कियेहुये ! हे सुवर्णके मालाओंके समूहसे भूषित ! ९३ रत्नों की अँगूठियोंसे सुंदर व बाहुओंमें विभूषण धारण कियेहुये व कुछ ललाई लियेहुये ओष्ठ वाले व दीर्घ बड़े कर्ण पर्य्यंत विस्तृत नेत्रवाले ९४ पंद्रह नेत्रवाले व पांच मुखवाले उन नेत्रों में एक २ पांचों मुखों के ललाटोंमें धारण करनेवाले व कंदर्प के धन्वाकी भ्रांतिवाली भौंहोंको धारणकिये ९५ व चिकनी ऊँची सुंदरी नासावाले व सुंदर कपोलवाले मंद २ मुसुकातेहुये प्रसन्नमुख व द्वितीयाके चन्द्रमाके समान दांतवाले विभु ९६

आलिङ्गन से उत्पन्न पाप नष्ट होता है इससे भस्म का धारण करना सब कहीं अच्छा है पर तीन रेखाओं से युक्तही ४३ जिसने भस्म धारण किया उसने जानो ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों देवताओं का व तीनों अग्नियों का और तीनों लोकों का गुण धारण किया ४४ जिसने मन्त्र से अभिमन्त्रित करके शुभ भस्म पंद्रह स्थानों में धारण किया उसने जानो सब पुण्य किया दोनों कोठों में दोनों बाहुओं में दोनों कोठों के ऊपर ४५ दोनों कानों के ऊपर दोनों कलाइयों के ऊपर गल में मस्तक में पीठ में छाती में व शिर में जो कोई भस्म सब देह में धारण करता है उसने जानो सब देवताओंकी पूजा की व जो भस्मपर आसन करते भस्मपर शयन करते व सब शरीर में भस्म लगाते ४६ वे भस्म में स्नान किये हुये समझे जाते हैं व सब पापों से छूटते हैं इसमें संशय नहीं है ४७ जब ब्राह्मण दीक्षित होनेलगे तो उसे चाहिये कि " त्र्यायुषञ्जमदग्नेः " इस मन्त्र से मस्तक में भस्म लगावे फिर अन्य कर्म करनेका प्रारम्भ करे चाहे प्रथम भूतादिक प्रवेश भी उसके शरीर में करगये हों पर जैसेही भस्म धारण करता है उसकी रक्षा होजाती है सर्पादिकों के विषके मिटाने के लिये भी यह सबका साधन है ४८ चाहे अवैष्णव भी मनुष्यहो वा कोई इतर मनुष्यहो पर जैसेही भस्म से स्नान करता है व भस्म अङ्गों में धारण करता है कर्म करने का अधिकारी हो जाता है ४९ यह सुनकर श्रीरामचन्द्रजी ने पूँछा कि प्रथम हमसे भस्म का माहात्म्य कहो फिर भस्म कैसे आयु बढ़ानेवाला हुआ व सब रक्षा कैसे करलेता है यह सब हम से कहो ५० शम्भु जी बोले कि तीन प्रकारके भी प्राणियों की आयु बढ़ाने का भस्म कारण है पापनाशक शीत व उष्ण है व स्पर्श करने से शिवपद देताहै ५१ इस विषय में हम एक पुराना इतिहास आप से कहते हैं सुनिये वसिष्ठके वंशमें एक धनञ्जय नाम ब्राह्मण हुआ ५२ उसके रूप सौन्दर्य से युक्त सौ स्त्रियाँथीं उनमें एक स्त्रीका श्यामा नाम था उसने करुण नाम मुनिको उत्पन्न किया ५३ व हे रामचन्द्रजी ! इसी प्रकार उस धनञ्जय के जितनी स्त्रियाँ थीं सबों में एक एक पुत्र उत्पन्न

हुआ व पिताने उनसबों का विभाग विषम करदिया व उनके लिये देशभी नियत करदिया कि तुम यहां रहो ये यहां रहें ५४ परन्तु उन सब भाइयोंका आपस में बड़ा भारी वैर हुआ क्योंकि जब जातिका नरसमूह होताहै तब आपसमें वैर बढ़ता है ५५ तब वह करुणनाम ब्राह्मण नाना प्रकारके मुनिगणोंके साथ नृसिंह जीके दर्शनकी इच्छा से भवनाशनिका नाम नदी के किनारे पर गया ५६ वहां नृसिंहजी के दर्शन के लिये एक कोई ब्राह्मण अतिसुन्दर सुगन्धित जँभीरी निम्बू लायाथा ५७ करुणने वह उत्तमफल उठाकर सूंघलिया वहांपर जितने ब्राह्मणलोग थे सबोंने करुणको शापसे युक्त किया ५८ कि हे पापात्मन्! जाकर आजसे सौवर्षतक मक्षिकाहो इस शापका अन्त महात्मा दधीचमुनि करेंगे ५९ जब करुण मक्षिका होगया तो अपनी भार्य्या से आकर यह बोला कि हे शुभे! हम मक्षिका होगये हैं हमारा पालन करो ६० ऐसा कहकर मक्षिकारूप धारण किये वह वहां फिरतारहा इस बातको जानकर पापी उसकी जातिवालोंने ६१ उसका वध होजाने के लिये उसे तेलके भीतर गिरादिया बस वह मृतक होगया उस अपने मरे हुये पतिको लेकर वह उसकी कृशोदरी नाम स्त्री बहुत दुःखितहुई ६२ उसका दुःख मिटाने के लिये वसिष्ठजीकी पत्नी देवी अरुन्धती जीने उससे कहा कि हे शुचिस्मिते! इस तेरेपतिको हम अभी भस्मही से जिलाती हैं ६३ यह कहकर अग्निहोत्र से उत्पन्न भस्मलेकर अरुन्धतीने मृत्युञ्जयमन्त्र पढ़कर उस मृतक मक्षिकाके शरीरपर डालदिया ६४ तब उसकी स्त्री पंखे से मन्द मन्द वायु करनेलगी बस इसी भस्म के प्रभाव से वह मक्षिकारूप ब्राह्मण जीकर उठखड़ाहुआ ६५ जब सौ वर्ष पूर्णहुये तब एक जातिवालेने उसे मारडाला पतिके मरजानेपर उसकी पतिव्रता स्त्री बहुत दुःखित हुई ६६ व महादेवजी के भक्त दधीचनाम मुनि से जाकर वह बोली जब वह मुनि के शरण में गई तो उस पतिव्रता के वृत्तांत को जानकर मुनिजी बोले ६७ कि आयुर्दाय हीन तपोनिधि जमदग्निजी को व वैसेही आयुर्दायरहित कश्यप जी को भस्मही ने जिलाया है ६८ व पूर्व्वकाल में एक देवासुर

विज्ञानसे रँगेहुये लालवस्त्र ओढ़े वेदोंको नूपुररूप धारणकिये तु-
म्हारे शरणमें हैं हे विभो! हमको दृष्टिदेओ ९७ दीन अन्ध कृपण
अज्ञानसे नष्ट हमारे शरणहोवो यहसुनकर अपने दर्शन की शक्ति
से युक्त दिव्यदृष्टिदी ९८ तब श्रीहरिने तीननेत्रवाले श्रीशम्भुको
आगे स्थित देखकर कहा कि आप कौनहैं हम महायशस्वी तुमको
नहीं जानते ९९ केवल तुम्हारे प्रणाम करसक्तेहैं पर तुमको जाननहीं
सक्ते यहसुनकर सदाशिवजी बोले कि तुमको ज्ञानदेंगे परन्तु प्रथम
जल में स्नानकरो २०० फिर पीछे भस्मस्नानकरो तब ज्ञान देंगे
यहसुनकर श्रीभगवान् बोले कि हमारे स्नानके योग्य कहीं जलही
नहीं है १ ऐसाकहकर ब्रह्माण्डोंको अपने शरीरमें आसक्तकरके श्री
हरि उस जलमें पैठे परन्तु वहसब प्रलयका जल उनके घुटुनों के
नीचेहीतकहुआ इससे स्नानकरने के योग्य न हुआ २ तब शम्भुजी
बड़ेजोरसे हँसे कि अच्छा अब तुम्हारे स्नानकेयोग्य जल दिखातेहैं
दधीचमुनि देवताओंसे बोले कि फिर सदा शिवजी श्रीविष्णुदेवको
अपने मस्तकपरवाले नेत्रसे देखा ३ व उस नेत्रको दबाकर बहुत
सूक्ष्म करलिया व वामनेत्रसे देखा तब श्रीविष्णु शम्भुजी के देखने
से सूक्ष्म शरीरवाले होगये व शीतलदेह होगये ४ तब शिवजी ने
कहा हे श्रीविष्णो! यह ह्रद हमने और बनादिया है इसमें स्नानकरो
तब हरके बनायेहुये ह्रदमें श्रीविष्णुजी स्नानकरनेको उद्यतहुये ५
परन्तु वह हरजीका बनायाहुआ ह्रद इतना गहिराथा कि उसमें श्री
हरि प्रवेश न करसके तब श्रीविष्णुजी बोले कि इसह्रदमें पैठनेका
मार्ग्गबताओ ६ जब उन्होंने मार्ग्ग पूँछा तो शम्भुजी बोले कि यह
जल प्रथम कोटियोजन गहिराथा ७ परन्तु उसमें जब आपपैठे तब
घुटुनोंके नीचेहीतक जलहुआ अब इसछोटेसे ह्रदमें कैसे नहीं आप
पैठतेहैं ८ यह केवल आठअंगुलके प्रमाणका ह्रदहै इसमें जब तुम
पैठोगे तो हम तुम्हारा चरण देखेरहेंगे डूबने न पाओगे बरन जब
बुड़ीमारोगे तो हम तुम्हारा चरण पकड़ेरहेंगे ९ इसमेंकी एक सि-
ड्ढी हमारे मुखसे निकलाहुआ वेदहै यहसुनकर श्रीहरि भगवान्
बोलेकि यदि ऐसाहै तो शब्दपर आरोहणकरनेकी शक्ति तो किसीकी

नहीं है १० जिसकी कुछमूर्त्तिहो उसे सबकोई ग्रहणकरसक्ताहै वेदको कैसे ग्रहणकरसके शम्भुजीबोले कि पुरुषको चढ़ने आदिकी शक्ति वस्तुओंके धारण व आरोहण करनेमें नहींहोती ११ इससे इस महावेदको ग्रहणकरो इससे सब धारणकरने की शक्तिहोजायगी तब श्रीहरिजीने वेदको ग्रहणकिया परन्तु जानो अशक्ति के कारण श्री हरिका नम्रहाथ कुछ नीचेको झुकगया १२ तब श्रीहरिने कहा कि इसे तो हमनहीं धारण करसक्ते शिवजी बोले कि कुछनहीं इस ह्रदमें पैठजाइये १३ व फिर हे केशव ! इसी वेदको सिड्ढी बनाकर उसपर चढ़कर स्नानकरनेके योग्यहो दधीचिमुनि बोले कि इसप्रकार वेदही को सोपान बनाकर उसपर ऊरुधरकर उसह्रदमें श्रीहरि पैठे १४ व विधिसे स्नानकरके व फिर उसी के द्वारा बाहर निकलकर बोले कि अब तो हम स्नानकरआये इसके अनन्तर क्याकरना चाहिये तब शम्भुजी श्रीहरिजी से बोले १५ कि तुम अपने मनसे ध्यान क्या करतेहो हमसे क्योंनहीं कहते तब श्रीहरिजी ने कहा कि ध्यान तो कुछनहीं करते यह सुनकर शम्भुजी फिर बोले कि १६ अब भस्मसे स्नानकरो तो चित्त शुद्धहोजावे फिर सब शुद्धपदार्थोंको जानो इसमें जब दीक्षितहोओगे तो हम तुम्हारे हाथकी रक्षाकरेंगे १७ दधीचिमुनि बोले कि यह कहकर अपने वक्षस्स्थल में स्थित भस्म नखसे लेकर शङ्करजीने प्रणवसे व ब्रह्मभूत गायत्री से अभिमन्त्रित करके १८ अंगुलियों से लेकर शिवजी ने पञ्चाक्षर मन्त्रसे हरिके मस्तक व सबदेहमें छिड़कदिया १९ शान्तदृष्टिसे अच्छीतरह देखकर हरजीने श्रीहरिजी से कहा कि जीव अपने हृदयमें ध्यानकरो कि तुम्हारे हृदय में क्या दिखाईदेता है तब श्रीहरिजी ध्यानमें तत्परहुये २० व बड़ा लम्बा चौड़ा अतिप्रकाशित दीप उन्होंने हृदयमें देखा तब श्रीहरि ने श्रीशिवसे कहा कि हमने हृदयमें एकदीप देखाहै २१ तब शिवजीने कहा कि हे हरे ! तुम्हारा ज्ञान परिपक्व नहींहै अब यह भस्म भक्षणकरो तो समग्रज्ञान तुमको होगा २२ श्रीहरिबोले कि अच्छा प्रथम भस्ममें स्नानकरके फिर हम शुभभस्म भक्षणकरेंगे भक्तिसे प्राप्तहोनेके योग्य ईश्वरको देखकर फिर अच्युत भगवान्ने भस्मभ-

क्षण किया २३ तब एकबड़ा आश्चर्यहुआ कि श्रीवासुदेवजी की द्युति जो पक्के कुंकुमके समान थी वह जातीरही उनका शरीर शुद्ध मुक्काफलके रङ्गका होगया २४ तबसे श्री वासुदेवकी मूर्त्ति शुक्लवर्ण व प्रसन्नता युक्त सदा रहनेलगी व फिर ध्यान में तत्पर होकर जो देखा तो उस दीपक के मध्य में पुरुष २५ शुद्धस्फटिक मणि के समान प्रकाशित तीन नेत्रवाली द्विभुजी शिवकीमूर्त्ति दिखाईदी जोकि दक्षिणहाथ वरदेने के लिये उठायेथी व वामहाथ अभय देने को २६ पांचवर्ष की अवस्था उस मूर्त्तिकी थी व दशसहस्र शरद् ऋतु के चन्द्रों के समान द्युतिथी ॥

चौ० । हेमदामके जालविभूषित । माणिककुण्डल लसतअदूषित२७
रत्नांगुलिक सुभग बहुधारी । बाहुकोष्ठ भूषिन सुखकारी १
सूक्ष्मारक्त अधरयुग सोहत । कर्णायत लोचन मन मोहत २८
बाणनयनसम लोचन शोभित । अव्ययमूर्त्ति मनोज्ञ अक्षोभित २
काम चाप भ्रामक भ्रू दोऊ । ईश्वरशोभित बहुविधि सोऊ २९
स्निग्धोन्नत नासा वर अङ्गा । सुभग कपोल लजात अनङ्गा ३
मन्दस्मित प्रसन्न मुखधारी । बालचन्द्र वर भाल विधारी ३०
शुभविज्ञान रक्त धृतवासा । वेदसुकल्पित नूपुरभासा ४
वामांगुलिक मध्य मणिसुन्दर । तापर प्रणवलिखित अशुभन्दर ३१
ताहि विलोक्यहु श्रीहरिनीके । निजकहँ तब कृतकृत्य सुठीके ५
तब शिव हरिसन यहकह वाणी । यहांकाह तुम लख्यहु प्रमाणी ३२
कह हरि प्रथमलखा हमनीके । शान्तशरीर पुरुषविधि ठीके ६
यहकहि महाविष्णु भगवाना । कीन प्रणाम शिवहि गतमाना ३३
पुनि कह भस्म शक्तिनहिं जानूँ । तव प्रभाव पुनि किमिमैं भानूँ ७
महादेव तब करत प्रणामा । शरणागत पालक तव नामा ३४
शिवकह महाभाग वरजोई । चाहत मांगहु पैहहु सोई ८
सुनि हरवचन विष्णुवर मांगा । प्रेम सहित अतिशयअनुरागा ३५
तवपद युगलभक्ति अतिपावनि । होय सदा ममभक्त जुड़ावनि ९
वरदै शम्भु फेरि हरि पाहीं । वचन कहा गुनि निज मनमाहीं ३६
जो न भस्मधारण नर करई । सो न हमार भक्त भवतरई १०

कह दधीच देवनसों बाता । भस्ममहात्म्य सकल सुखदाता ३७
तुमसन भाषा हम चितलाई । धारणकरहु भस्म शुभदाई ११
यहसुनि विस्मित सबसुरलोगा । गे निज निज थल ह्वैगतशोगा३८
जो यह पुण्याख्यान निरन्तर । उत्तमवित्तम सुनिहि शुभङ्कर १२
विगत सर्व्वपापनसों सोई । शङ्करपद पाइहि नहिं गोई ३९

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेशिवराघवसंवादेभस्म माहात्म्येपंचोत्तरशततमोऽध्यायः १०५ ॥

एकसौछह का अध्याय ॥

दो० एकसौछा महँ द्विज कहै चरित क्षत्रियावस्य ॥
ह्वै जो शिवकहँ पूजिअघ हन्यो अनेक अवश्य १
शिवदीपक घृत खायशत जन्म श्वान पुनिशैव ॥
मोतासति पत्नीजरी तासँग स्वर्ग लहैव २
भस्म उपरमरिश्वानसो गो शिवलोकहि सोइ ॥
भयहु शम्भुगण श्वानमुख यह इतिहास न गोइ ३

शुचिस्मिता नाम कण्वमुनिकी स्त्री ने फिर दधीचमुनि से पूछा कि हे महामुनिजी ! हमने भस्मका लगाना व खाना देखा कि आयुष्यको बढ़ाताहै भला यहतो आपकहें कि यह भस्म परलोककी गति देनेमें भी समर्थहै वा नहीं १ दधीचमुनि बोले कि इस विषय में जो चित्रगुप्त और यमराजके वचनसे विख्यातहुआहै वह पुरातन इतिहास तुमसे कहते हैं २ मिथिलापुरीमें पूर्व्वकाल भूँखसे पीड़ित एक कुत्ता घूमाकरता था वह सौजन्मके पहिले कोई पापी ब्राह्मणथा ३ जिसने कि पहिली अवस्था में बहुत वेद व शास्त्र पढ़े थे इससे अति सुबुद्धिमान् था वह स्नान करने के लिये गङ्गाजी को गया वहां स्नानकरके पितरों ४ व देवताओं, ऋषियोंको तृप्तकरके पत्तल की पुरको गया वहां एक ब्राह्मण के गृह में जाकर ठहरा ५ उस ब्राह्मण के घरके समीप एक युवती क्षत्रिय की कन्या [illegible]थी उस का पति मृतक होगया था व उसका [illegible] परन्तु ६ कोटिनिष्कधन उसके पास था ६ वह [illegible] से सुन्दर वह ब्राह्मण भोजनकरके शयनकरनेलगा व रात्रि में सुंदर चंद्रमाके प्र-

काशसे सब दिशा हँसनेलगीं ७ ब्राह्मण के निकटआकर उस को अच्छीतरह देख यह वचन बोली कि हे विप्र ! तुम कहां से आयेहो व किस देशको जाओगे ८ ब्राह्मण बोला कि अकाल में सब कहीं जाना सबको शंकाउत्पन्न कराता है व युवती स्त्रीका युवापुरुष से एकान्त में वार्त्ताकरना हास्यका स्थानहोताहै ९ वह क्षत्रिया बोली कि कथाके प्रसंगमें यात्रामें तीर्थ में देशादि के भागनेमें दुर्भिक्षमें व जब ग्राममें अग्निलगे इनमें एकांत में वार्त्ताकरना दूखितनहीं होता १० इसके विशेष मैं आपको बुलाने नहींगई आपही आकर मेरे घरमें ठहरे हैं मैं इस गृहमें रहतीहूं व मेराही स्थानभी है यहां किसीकी शङ्का नहीं है ११ ब्राह्मणबोला कि हम अब चुपहोते हैं तुम अपने गृहको जाओ हमको वार्त्ता करने का अवकाश नहीं है जब ब्राह्मण ने ऐसा कहा तो उसने अपने मनमे यह चिन्तनकिया १२ कि इसकेसाथ मेरा संगम जिसप्रकारसे हो वैसा यत्न मैं करूं बसमैं स्थानपरजाकर रोदन करूं तो यह ब्राह्मण मेरेपास आवे १३ जब मुझको समझानेको आवेगा तो मुझको उठावेगा व जैसेही मुझको उठावेगा कि मैं अपने दोनों हाथ इसके गलेमें डालकर लटकरहूंगी १४ व दोनों कुच उसके अंगों में छुआतीसी मूच्छित होजाऊँगी जब मुझको मूच्छितहोकर गिरपड़ी यह देखेगा तो आपभी बैठजायगा १५ व दयावान् यह ब्राह्मण अपनी मोटी जाघोंपर मेरे देहको धर-लेगा तब अचेतसीहोकर मैं अपनेवस्त्र ढीलेकरके नीचे गिरादेऊँगी व रोतीसी हूंगी १६ फिर बहुतचीकना रोमरहित पिप्पलके पक्केपत्ते के आकारका सुगंधित वहस्थान दिखाऊँगी जो कामका स्थानहै जब ऐसे होकर मैं इसके अंगपर लोटनेलगूंगी तो लोटते लोटते इसकाभी वस्त्र अलग करदूंगी बस इसप्रकार इसके चित्तको ललचाकर इसे अपनेआधीन करलेऊँगी १७। १८ क्योंकि विना देखेहुये जैसा चित्त पुरुषों का निष्ठुर रहता है वैसा देखने से नहीं रहता व देखने पर जैसा होता है वार्त्तालाप करने पर वैसा नहीं रहता १९ व जैसा वार्त्तालाप करनेपर रहताहै वैसा हास्यकी बातें करनेपर नहींरहता व जैसा हास्यकी बातें करनेपर चित्तरहताहै वैसा स्पर्श करनेपर नहीं

रहता २० स्पर्श होनेपर जैसा चित्त रहताहै भग देखनेपर वैसा नहीं रहता व भगके देखनेमें जैसे चित्तरहताहै योनिके छूनेमें वैसा नहीं रहजाता २१ इससे कांख दोनोंकुच व योनिके देखनेसे किसका चित्त स्खलित नहीं होता व बीज नहीं पतितहोता ऐसा कोई भी पुरुष जितेन्द्रिय नहींहै जिसकी ऐसी दशाहो २२ दधीचमुनि शुचिस्मिता से बोले कि ऐसा मनसे चिन्तनकरके वह क्षत्रिया अपने समीपवर्त्ती स्थानको चलीगई व अपने घरके द्वारपर पहुँचकर पहिले धीरेधीरे रोई २३ जब बड़ी देरतक रोतीही रही तो करुणानिधि उस ब्राह्मण से न रहागया २४ क्योंकि स्त्री बालक वृद्ध बीमार राजा व वियोगी विषखायेहुये अग्नि में जलतेहुये जलमें डूबतेहुये पहाड़से गिरते हुये व अन्यदुःखोंसेभी दुःखित प्राणियोंका उद्धारकरना कुवांखोदने की पुण्यकेसमान कविलोग कहतेहैं २५ ऐसा अपनेमनमें चिंतनकरके पवित्र चित्त व प्रसन्नबुद्धिसे वह ब्राह्मण उसके समीपगया व उससे बोला कि २६ इसलोक व परलोकके विरोधी इस बड़े शोकसे कुछ प्रयोजन नहीं है शोकसे व रोदनसे शरीर सूखजाता है व चित्त का विध्वंस होजाता है २७ इससे हे बाले! शोकको छोड़दे क्योंकि शोचकरनेसे कुछ अर्थ नहीं सिद्ध होता व शोकका कारण क्या है जिससे तू ऐसा रोदन करतीहै २८ दधीचमुनि बोले कि जब उस ब्राह्मणने ऐसाकहा तो कुछभी वह न बोली मूर्च्छितसीहोकर पृथ्वी पर गिरपड़ी व जानो उसे देखाही नहीं दूसरीओर देखनेलगी २९ तब परमार्थवेत्ता उस ब्राह्मणने उसे उठाया पर उस विप्रसे उठाई गईभी वह बार बार पृथ्वीपर गिरतीरही ३० व बार बार गिरतीहुई उसको विप्रने फिर फिर उठाकर अपनी गोदमें बैठाकर अपने हाथ से उसके नेत्र पोंछे ३१ तब मूर्च्छितसीही बनीहुई उसने धीरेसे अपने वस्त्र खोल डाले व अपने स्तन कांख देखाती हुई व उस के मुख की ओर देखतीहुई ३२ दोनोंहाथ ब्राह्मणके गलेमें डाल कर अपने कुच उसके अंगमें रगड़दिये चन्द्रमाका प्रकाश सुंदर होरहा था मंद पवन बहताथा ३३ इतने में ब्राह्मणको चिन्ताहुई कि यह तो मेराकार्य्य नहींहै पिता माताके उचित कार्य्यहै व स्वामी और गुरु

केभी उचितहै ३४ इससे मेरा कुछ सम्बंध नहीं पर मुझको सब विपरीतही जानपड़ता है ब्राह्मण यह विचारताही था कि एकांत में उस दशामें स्थित उन दोनों के समीप काम आया ३५ व उस दुष्टात्माने अपने तीच्णवाणों से बेचारे ब्राह्मण को ताड़ित किया तब कामबाण से आतुर होकर उस कामुक विप्र ने चिन्ता की ३६ कि यह सुचारु सर्वाङ्गी कामिनी दिखाई देतीहै ऐसा न होतातो इसकी योनिसुखमें रोमांच कैसे होता ३७ व यदि इसको इसकी इच्छा न होगी तो कुच स्पर्श करने से सब प्रकट होजायगा मनमें यह चिंता करके ब्राह्मणने उसके कुच व योनिभी अपने हाथसे स्पर्शकिया ३८ तब यहभी मूर्च्छितसी बनीही रही व मंद २ मुसुकाने लगी व फिर झट बड़े जोरसे हुमसकर ब्राह्मणको छपटगई व उसका मुख चूँबने लगी ३९ बस ब्राह्मणभी यथाविधि उसके संग अंगसंग करनेलगा इसप्रकार उन दोनोंका संयोग पूरे सौ वर्षतक होतारहा सौवर्ष बीत जानेके पीछे एकदिन वह ब्राह्मण ४० अन्य ब्राह्मणों के प्रसंग से कृष्णानदी को स्नान करनेगया वहां स्नान करके फिर वहीं पुराण सुनने लगा ४१ कूर्म्मपुराण सबका सब उसने वहां सुना जोकि सब पापोंका नाशक व शिवकी भक्ति देनेवालाहै पुराणवक्ता के मुखसे बीच में यह श्लोकभी उसने सुना कि ४२ ब्राह्मण मारने वाला मद्य पान करनेवाला तथा गुरुशय्यापर बैठनेवाला कूर्म्मपुराणको सुनकेही उसपातकसे छूटजाताहै ४३ यह वचन सुनकर वह विप्रपौराणिक से बोला कि मेरे कियेहुये पापोंकी कोई संख्यानहीं है ४४ इससे जो सब पापसमूहोंका नाशकहो वह हमसे कहो तब पौराणिक ब्राह्मण बोला कि देवताओंके ईश्वर शङ्करदेवकी आराधनाकरो ४५ हेविप्र! उनके पूजनसे सबपाप नष्टहोजायँगे अथवा ज्ञानदीपकसे अंधकाररूपी पापनष्ट होतेहैं ४६ अथवा देव पूजनसे सब पाप नष्ट होते हैं व ज्ञानपूजा विहीन लोगोंका निश्चय नरकमें पातहोताहै ४७ दधीचमुनि शुचिस्मितासे बोले कि तब वह ब्राह्मण एकउत्तम शिवालय को गया व वहां द्रोण के सहस्रपुष्पों से उसने शंकरजीकी पूजाकी ४८ व फिर अपने गृहको गया वहां भोजनकरके फिर उस क्षत्रिया

को छोड़कर अपनी मनमानी पृथ्वीको चलागया ४९ व फिर किसी शिवालयमें जाकर शिव भोजनसे शेष हविष्यान्नलेकर दीपक जलानेसे बचेहुये घृतमें मिलाकर शिवालयके बाहरजाकर भोजन किया ५० दैवात् उसी समयमें मृतकहोकर यमलोकको गया उससे यमराज बोले कि तुम्हारे कियेहुये बहुतपापोंका नाश तो पूर्व्वकालही में होगया ५१ क्योंकि तुमने एकदिन शंकरजीकी पूजाकीथी हेद्विज! उससे आपके सहस्रों पाप नष्टहोगये ५२ परन्तु अब भी जो पाप तुममें स्थितहैं उनका फल नरक में पातनहै इससे अब दोकोटि वर्ष तक नरकमें रहकर फिर सौ जन्मतक कुक्कुरकी योनिमें उत्पन्नहोओ ५३ क्योंकि शिव पूजनसे परस्त्री गमनादि पाप तो तुम्हारेनष्ट होगयेथे परन्तु शिवके आगे दीपकजलानेसे बचेहुये घृतके पीनेसे अब यह शेष नरकवास करनाहोगा व फिर सौवर्षतक भयभीत नरकमें रहना पड़ेगा ५४ कुम्भीपाकमें काष्ठवत् वारंवार भस्महोकर कुम्भीपाकमें रहकर फिर दशवर्षतक कृमिभोजन नरकमें रहोगे ५५ फिर दशवर्ष तक तैलदीपकी बत्ती होओगे फिर दश २ वर्षतक श्लेष्मा अपवित्र विष्ठा आँशू मूत्र कन्दर्प्पके कुण्डोंमें ५६ बूड़ते उतरातेहुये श्लेष्मा विष्ठा मल भोजन करोगे फिर जो शेषनरकवास रहेगा उससे सौ जन्मतक कुत्ता होओगे ५७ यमराजका ऐसावाक्य सुनकर ब्राह्मण मूर्च्छितहोकर गिरपड़ा व उसकी प्रिया भार्य्या पतिकी चिन्तामें तत्पर अपने घरमेंथी ५८ इसीअवसरमें उसके समीप नारदमुनि आये वहअतिदुःखितहोकर नारदजीके चरणोंपर गिरी ५९ उसको उठाकर आयुष्यहीन परमशुद्ध उससे मुनिबोले कि हेभद्रे! हे विशालाक्षि! क्या अपने भर्त्ताके समीप जाया चाहतीहो ६० तुम्हारापति बन्धुरहितहोकर मृतक हुआहै इससे हे भद्रे! तुमरोदन न करो किन्तु अग्नि में प्रवेश करजाओ ६१ तब वह बोली कि हेमुने! यहबताओ कि हम वहांतक पहुँचसक्तीहैं वा नहीं भला ऐसातो नहींहै कि जबतक मैं वहां जाऊँ तबतक अग्निप्रवेशका काल जातारहे ६२ नारदजी बोले कि जहां तुम्हारा पति मृतकपड़ाहै वहपुर यहांसे सौ योजनपरहै व प्रातःकाल ब्राह्मणका दाहहोगा तुम जानाचाहो तो जासक्ती हो ६३

यह बोली कि हे मुनिनाथ! जाना तो मैं अवश्य चाहती हूं परन्तु दूर बहुत है व समय बहुत थोड़ाहै उसका वचन सुनकर नारदमुनि उस से बोले कि ६४ हमारी वीणाकी डाँड़ीपर बैठले अभी क्षणभर में हम पहुँचाते हैं ऐसा कहकर उसे विपंचीनाम अपनी वीणाकी डाँड़ी पर चढ़ाकर मुनि बड़ी शीघ्रता से गये ६५ व जहां वह ब्राह्मण मृतक पड़ाथा उस स्थानपर पहुँचकर उसकी स्त्री से बोले कि जो अग्निमें प्रवेश करना चाहतीहो तो अब रोदन न करना ६६ क्योंकि हे भद्रे! परपुरुषकी सेवामें तूने जो पाप कियाहै उसके छूटने के लिये तीनों लोकों में प्रायश्चित्त अग्निमें प्रवेश करनाही है ६७ इस से हे पुत्रि! इस प्रायश्चित्तको कर तो फिर परपुरुष सेवनरूप यह उपपातकका समूह अग्नि प्रवेशकरने से दूर होजायगा स्त्रियों को सब पापोंके शान्तकरने के लिये और कोई प्रायश्चित्त हम नहीं देखते६८बस एकअग्नि प्रवेशही तीनों लोकोंमें प्रायश्चित्तहै दधीच मुनि शुचिस्मिता से बोले कि नारदजीके वचनसे प्रेरित होकर वह यह वचन बोली ६९ कि हे महामुने! अग्निमें प्रवेशहोने के समय स्त्रियोंको क्या करना चाहिये नारदमुनि बोले कि जब अग्निमें स्त्री प्रवेशकरनेचले तो स्नानकरके मंगल संस्कारकरे सबभूषण धारण करे अंजन लगावे ७० चन्दनादि सुगंधित वस्तु पुष्प धूप हरिद्राक्षत धारणकरे मांगलिक अरुण सूत्रोंसे केश बँधावे पैरोंमें महावर लगवावे ७१ अपनी शक्तिके अनुसार दानदेवे प्रियवचन सबसे बोले प्रसन्नमुखी रहे नानाप्रकारके मंगल बाजे व गीत सुने ७२ ये सब व्यभिचार कियेहुये पापोंकी प्रशान्तिके लिये करनेचाहियें अतीत पापोंका स्पर्श करके प्रायश्चित्त कहागया है ७३ क्योंकि कहदेनेसे पीछेके सबपाप छूटजाते हैं अथवा सबभूषण जो धारणकरके अग्नि प्रवेश करनेको चले ब्राह्मणको देदेनेसे सबपाप छूटजाते हैं जिसके भूषण न हों वह अपने शरीरहीको जलाकर प्रायश्चित्तकरे ७४ अन्यथा व्यभिचारादि पापोंका नाश किसीप्रकार कहीं नहीं होसक्ता तब वह अव्यया नाम ब्राह्मणकी स्त्री बोली कि हे मुनिराज! आपका कहा सब मैं करूंगी परन्तु हरिद्रा मेरे पास नहीं है ७५ फिर भूषण

को कौन कहे अब आपही सबकुछ देवें नारदजी बोले कि यहांपर तेरी कहीहुई कोई भी मंगलवस्तु नहीं है दधीचमुनि बोले कि ऐसा कहकर मुनि क्षणमात्रमें कैलासपर्व्वतपर शिवजी के मन्दिर में पहुँचे व पार्व्वतीजी को देखकर प्रणामकरके यह बोले कि ७६ । ७७ हे मातः! हरिद्रा भूषण व सूत्र देवो पार्व्वतीजी बोलीं कि विधवा के लिये कुछ भी भूषण हम कैसे देवें ७८ क्योंकि जिसको हम भूषणादि देती हैं उसके विधवापन नहीं रहता नारदजी बोले कि हे मातः! स्त्री तबतक विधवा नहीं होती जबतक कि उसके पतिका शरीर बनारहताहै ७९ जबतक पतिका दाह नहीं होता तबतक उसका उत्तम सौभाग्य बनारहताहै पार्व्वतीजी बोलीं कि हमारे भूषण व हमारी हरिद्रा अन्य देहवाली स्त्री नहीं धारण करसक्ती ८० क्योंकि हमारे दिये हुये भूषणादि धारणकरके फिर वह बहुत दिनोंतक जीती रहती है परन्तु तुम्हारे हितके लिये इस जयन्तीको सब देती हैं ८१ बस पार्व्वती के दिये भूषणादि लेकर मुनि उस जयन्ती के समीप आये व स्नान करतीहुई अव्यया को मुनिने हरिद्रा दी ८२ फिर सूक्ष्मवस्त्र और भूषणभी मुनिने उसे दिये व बोले कि बतावो अब तुम्हारा अन्तेष्टि कर्म्म कौनकरे उसको नियुक्तकरो ८३ अव्यया बोली कि हे महामुने! मेरी सबक्रियाओं के करनेवाले तुम्हींहो हे मुनिपुंगव! तुम मेरेपिता हो तुम्हारे नमस्कार करतीहूं तुम्हीं मेरी सब क्रिया करो ८४ दधीच मुनि बोले कि तब उस ब्राह्मणका दाहकरके नारदमुनि उस अव्यया से बोले कि हे अव्यये! अब यदि तेरी इच्छाहो तो जा तूभी अग्निमें प्रवेशकर ८५ तब वह पतिव्रता सब भूषणों से भूषित होकर तीनबार प्रदक्षिणाकरके नारदमुनिके नमस्कार करके व यत्नसे गौरीजीकी भी पूजाकरके मन अर्पण करदिया ८६ अपने भूषण मंगल सूत्र हरिद्रा अक्षत कुसुंभके रँगेहुये वस्त्र कस्तूरी चन्दन ८७ सुवर्ण का गलेका निष्क विविध प्रकारके फल सुन्दरदक्षिणा व वस्त्रान्त अलग २ स्पर्श करके ८८ पार्व्वतीजीकी प्रीतिकी कामनासे उसने सब सुभगा स्त्रियों को देदिया व ज्वालाओंकी मालाओं से आकाश को चाटते हुये से अग्निके ८९ तीनप्रदक्षिणा करके अग्निकेआगे खड़ी होकर वह सती

हाथ जोड़कर हँसतेहुये मुखसे यह वाक्य बोली ९० अव्ययाने कहा कि हे इन्द्रादि दिक्पाललोगो ! हे मातः, पृथिवि ! हे भास्कर ! हे धर्मादि सबदेवलोगो ! हमारा वचन सुनो ९१ विवाहके दिनसे लेकर इससमय तक दिनरात्रि वचन मन कर्मोंसे जो पतिकी सेवा भक्तिसे मैंने कीहो ९२ व तीनोंकालों में जो मैंने व्यभिचार न कियाहो उस सत्यसे मुझको मेरेपतिका सङ्ग देवो ९३ ऐसा कहकर अपने हस्ताग्र से पुष्पलेकर अग्निमें छोड़दिया व धद्धाकार जलतेहुये अग्निमें पैठगई कि आगे विमानको देखा ९४ जोकि सूर्यसम चमकता था व अप्सराओंके गीतोंसे शोभितथा उस विमानपर चढ़ी व पतिके साथ स्वर्ग को चलीगई ९५ वहां पतिसंयुक्त उस स्त्रीसे उसकी पूजाकरके यमराजजीने कहा कि तुम्हारे देहमें कुछभी पाप नहींहै इससे तुमको तो अक्षयस्वर्गगमन हुआ इसमें सन्देह नहींहै ९६ व इस तुम्हारे पतिके भी दो करोड़ वर्षतक नरकमें पड़ेरहनेका जो पापथा वहभी नष्टहोगया इसमें भी सन्देह नहीं है परन्तु और एक पाप इसका अभी नहीं मिटा ९७ जोकि इसने शिवके दीपकके घृतके खाने से इकट्ठाकिया है इससे इसको नरकमें पातहोगा व सौजन्मतक कुक्कुर होना पड़ेगा ९८ यहसुनकर अव्यया बोली कि अग्निमें प्रवेशकरके शुद्धलोगोंको फिर नरकवास कैसे क्योंकि अग्निप्रवेश से सबपापों का नाशहोताहै ९९ यमराजजीने कहा कि अग्निमें प्रवेशादि करने से शिवधनहरनेका पाप नहीं नष्टहोता अन्य पापोंका नाश होताहै यह पूर्व्वकालमें महादेवजी ने अपनेआप कहाहै १०० बस ऐसा कहतेही वह ब्राह्मण कुत्तेकी योनिमें जाकर उत्पन्नहुआ व उसमें भी जब सौवां जन्महुआ तब मिथिलापुरी में वह कुत्ता मरनेलगा तो भाग्यसे दधीचमुनिके आश्रमपर पहुँचा १ उनकी भीतके समीप मन्त्रसे अभिमन्त्रित भस्मधरीथी बस उसी भस्ममें वह कुत्ता गिरकर मरगया व जाकर यमपुरमें पहुँचा २ उसे देखकर बड़ीपूजा करके यमराजजी बोले कि आप अब पुण्यात्मा मुनिहैं इससे आपकेयोग्य हमारे गृह में स्थान नहीं है बस यहां से बाहर चले जाइये ३ तब यमराज के कहने से वह कुक्कुर वहां से बाहर जाकर स्थितहुआ व

सन्तापयुक्त उसे वहां खड़ेहुये दैवात् नारदमुनिजी ने देखा ४ व पूंछा कि तुम ऐसे दीप्तिमान् होकर यहां किसलिये खड़ेहो क्योंकि हे महामते ! जो शिवकी भस्म में मृतक होता है उसको हम शैव जानते हैं ५ व शैवलोग जो पापी भी होते हैंऔर साहस से शरीर छोड़ते हैं उनको यमलोक नहीं मिलता यह शिवजीकी आज्ञाहै ६ दधीच मुनि बोले ॥

चौ० । इमि मुनि श्वानहि बहुसमुझाई । गे कैलासपुरी कहँ धाई ॥
करि शिव के दण्डवतप्रणामा । बोल्यहु हरसों युत सबसामा १ । ७
देव एक यमपुरसों बाहर । कुक्कुर खड़ो न त्यहि तहँ ठाहर ॥
मरो भस्ममहँ यासों सोई । चहत तुम्हार लोक अघ खोई २ । ८
शिव आज्ञा लहि अयमुखकाहीं । वीरभद्र पठयहु त्यहि पाहीं ॥
दिव्यरूप धृत श्वानहि सोई । शिवढिग लायहु तुरतअगोई ३ । ९
जब सो आय शम्भुपद लागा । तब कह देवन अतिअनुरागा ॥
निजगण याहिकरिय तत्काला । दीनबन्धु निजजन प्रतिपाला ४ । १०
शिव तथास्तु भाषा त्यहिकाला । भयहु श्वानमुख गण सो हाला ॥
अबहुँ कुकुरमुख यकगण तहँवां । रहत सदा शङ्करहैं जहँवां ५ । ११
कह दधीच यह भस्म महातम । करुणापत्नि तुम सुन्यहु पाप नम ॥
अबकाश्रवणकरन तुमचाहत । कहहुकहब जोअघगणदाहत ६ । १२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेशिवराघवसंवादे विभूतिमाहात्म्येपडुत्तरशततमोऽध्यायः १०६ ॥

एकसौसातवां अध्याय ॥

दो० । इकसौसतयें जमदगनि कश्यपादि अरु देव ॥
गये सौकटहि अचल पर तहँ सब जरे अभेव १
वीरभद्र तिन ज्याव पुनि सर्प्प ग्रस्यो तिनकाहिं ॥
ताहिमारि पुनि भस्मसों तिन्हें जियायहु ताहिं २
पुनि तिनकहँ राक्षस ग्रस्यो ताहि मारि बहुकाल ॥
सुरमुनि कपिन जियाव तिन भस्महिसों खलघाल ३

शुचिस्मिताने दधीचमुनि से पूछा कि कश्यप जमदग्नि व देवताओंकी रक्षा भस्मने कैसेकी हे महामुनिजी ! वह हमसेकहो १ दधीच

जी बोले कि एकसमय कश्यपादि मुनियोंसहित सब देवगण अति-
सुन्दर पर्व्वतों के मध्यमें स्थित सौकटनागनाम पर्व्वतपर गये २
जोकि नानाप्रकारके पक्षियों से युक्त व नानाप्रकारके मुनियोंके नि-
वास का स्थान वासुदेवजीके रहनेका स्थान अप्सराओं से सेवित
अतिरम्यथा ३ विचित्र वृक्षोंसे सम्पन्न व सब ऋतुओंमें फल पुष्प
सहित रहता ऐसे पर्व्वतपर हम सब मुनियों समेत पहुँचे ४ व
श्रीविष्णुभगवान् की स्तुति करके फिर महादेवजी के समीपको गये
वहां देखा तो अग्नि की बड़ीभारी ज्वाला निकलरहीथी भ्रान्तिसे सब
लोग उसीमें पैठगये ५ दधीचजी कहते हैं कि हम अकेलेको छोड़
कर सबदेवताओं व मुनियों को अग्निने जलादिया पीछेसे हमको
भी जलादिया इससे हम सबलोग भस्मीभूत होगये ६ हमलोगोंको
ऐसे जलेहुये देखकर महादेवजी के गणोंमें मुख्य प्रतापवान् वीरभद्र
किसी कारणसे वहां आकर उपस्थितहुये ७ व सबअंगों में विभूति
लगायेहुये शिवजी भी वहांआये व आकर हमलोगोंका हाहाकारशब्द
दोनों जनोंने सुना ८ व बड़ीचिन्ता में तत्परहुये तबतक हमलोगों
के जलनेकी दुर्गन्धि मृतकजीवोंके जलनेकीसी आई ९ परवीरभद्र
जी यह देख जानकर क्षमा न करसके उस प्रज्वलित अग्निके समीप
को गये वह अग्नि वीरभद्रको भी जलानेलगा १० परन्तु जैसे तृणों
को जलाता हुआ अग्नि जलको पाकर शांत होजाता है वैसेही वी-
रभद्रको पाकर शान्तहोगया तब वीरभद्रने एक बड़ीभारी और म-
हाज्वालादेखी ११ जोकि आकाशसे चलीआतीथी व सब प्राणियों
को जलातीथी उसज्वालाको देखकर मनसे उन्होंने चिन्तना की १२
कि यह ज्वाला सब प्राणियोंका नाशकरती है सैकड़ों लाखों जलते
हुये चलेजाते हैं इससे सबोंकी रक्षा करनेके लिये हम वहां जावें १३
व इस महाज्वालाको ऐसे पान करलेवें जैसे कि बड़ा प्यासा शीतल
जलको पीजाताहै इसी अवसरमें वीरभद्रसे १४ आकाशवाणी ने
कहा कि हे वीरभद्र! इस विषय में साहस न करो क्योंकि कहां तृषा
और कहां यह अग्नि बड़ा दुर्द्धर्ष है जैसे प्यासे पानीको पीजाते हैं
दुर्द्धर्ष होने के कारण यह अग्नि तुम्हारे पीलेनेके योग्य नहींहै १५

इस अग्निमें योजनशिरा नाम एक राक्षसोंका राजा जलगया है व दूसरा शतयोजनवक्त्र व शतबाहुनाम राक्षस भस्म होचुका है १६ व महाभाग अगस्त्यजी जिन्हों ने सम्पूर्ण महासागर को पानकिया था उनकोभी इसने जलायाहै इत्यादि अन्य असंख्योंको इस ज्वाला ने मारडाला है १७ यह सुनकर वीरभद्रने कहा कि यह विभीषिकाहै महाज्वाला नहीं है जोकि जलाडाले वहे सरस्वति! तुम्हारे ऊपर कुछ हमारा रोषहै १८ परन्तु सब देवताओं से चिन्तितपदवाले हमको वीरभद्र जानो वाणी बोली कि हमने हितभावही से तुमसे कहा है कुछ वैरबुद्धि से नहीं कहा १९ हे वीर! अब कोप छोड़कर अपना हितकरो ऐसा कहकर भारती वीरभद्रके सामने से डरकर अन्तर्द्धान होगई २० बस इसके पीछे वीरभद्रजी ने वह महाज्वाला एक खेलसा करतेहुये पान करलिया यद्यपि वह ज्वाला सौ योजनमें फैली थी परन्तु एक क्षणमें प्रतापी वीरभद्रजी ने पान किया २१ एकही वीरभद्रजी ने ऐसी परमदुस्सह ज्वालाका पानकिया जिसको बहुत लोगभी किसी प्रकार नहीं पीसक्के थे तब इन्द्रादि देवताओं व सब मुनियोंकी राशि जो जलीहुई पड़ीथी २२ उसे देखकर एक एकका नामलेकर वीरभद्रजीने पुकारा परन्तु वे देवता व ऋषिलोग जो मृतकहोगये थे इससे नहीं बोलसके २३ तब मुनियों व देवताओंका नाश जानकर वीरभद्रजीने ध्यान किया कि इन कोटियों देवता मुनियोंको हम कैसे जिलावें २४ ध्यानसे देखा तो उन सबोंका जीवन अपने देहकी भस्म दिखाई दी तब आचमनकर अपने अङ्गकी भस्म को मृत्युञ्जय मन्त्रसे अभिमन्त्रित करके मरेहुये मुनि देवताओं के देहकी भस्म में छोड़ दिया बस सब कश्यपादि मुनि व देवगण अपना २ रूप धारण करके उठखड़ेहुये २५। २६ व सबके सब उस महाप्रभावाले पर्वत के समीपको गये वहांपर एक बड़े भारी शरीरवाले सर्पने सबोंको भक्षण करलिया २७ तब प्रभु वीरभद्रजी उस महासर्प्प के समीप को गये वीरभद्रको आयेहुये देखकर वह महासर्प्प उनसे युद्ध करने लगा २८ व एक वर्षतक नानाप्रकार के रूप धारणकरके बराबर वह सर्प लड़तारहा तब वीरभद्रजीने

अपने दोनों हाथोंसे उसके दोनों ओष्ठ पकड़कर २९ सब अंग दो खण्ड करके फाड़डाला उसके भीतर से सब देव मुनिगण निकले पर मरेहुये बस उनको वैसे देख शङ्करजी ने अपने अङ्गकी भस्मसे जिलादिया ३० तब सब देवता व मुनिलोग वीरभद्रजी के प्रणाम करके अपने अपने स्थानको यथायोग्य मार्ग्ग से चले तो मार्ग्ग में सबोंने देखा कि एक राक्षस आगया ३१ उसके पांच तो लिंगथे बड़ा भारी शरीरथा व दशहाथथे पांचपैरथे व आठशिरथे ३२ व बहुत आहारकी इच्छाकरताथा कि बाली युद्धकरनेको मिले व महावराहरूपी श्रीवासुदेवजीकासा बल ३३ धारणकियेथा व उसीबीचमें बड़ाबली बाली नाम वानरेन्द्र यहांआया व उसीके समान उसका भाई सुग्रीव नाम वानरभी आया ३४ बस मुष्टियुद्धसे तो उस पांचपैरवाले ने साहसकरके पांचपैरों से बालीको मार व सुग्रीवको दोनोंहाथोंसे मारनेलगा ३५ फिर मुखमें लेकर सुग्रीवको लीलगया जैसे कि कोई कवल लीलजाता है बाली सुग्रीवका निगलना देखकर चिन्ताकरने लगा ३६ कि इसको कैसेमारूं व वीरभद्रको ऐसी चिन्तना करतेहुये वानरको उस राक्षसेश्वर ने ३७ एक यत्नके साथ निगललिया ऐसा करतेहुये राक्षसको देखकर कपिकी रक्षा कैसेकरें तब सब देवगण व मुनिलोग भागखड़ेहुये ३८ इनको भागतेहुये देखकर पांचलिंगवाले उस राक्षसने अपने सबहाथोंसे पकड़कर सब देवता मुनियोंको खा लिया ३९ तब उन वानरश्रेष्ठ बाली सुग्रीव व देवता मुनियों को मारकर खागयेहुये उस राक्षसराजको देखकर प्रतापी वीरभद्रजी ने दोसौ कोसकी लम्बी चौड़ी एक शिला हाथमें लेकर क्रोध से ४० उसके शिरपर मारा कि उसका शिर बीचवाला गिरपड़ा व फिर उससे दूनी चारसौ कोसकी लम्बी चौड़ी एक शिला लेकर ४१ वीरभद्रने बड़ेबल से तोलितकरके उस राक्षसेन्द्रको मारा तब तीननेत्र धारण कियेहुये वीरभद्रजीसे वह राक्षसेन्द्र यह बोला ४२ कि हमने तो तुम्हारा बल देखलिया अब तुम हमारे बाहुओंका बल देखो दो२ सौ कोसोंकी लम्बी तैलसे पैनाईहुई चमचमाती हुई ये दो तलवारें हैं ४३ व चार २ कोसोंकी चौड़ीहैं व सब दृढ़लक्षणों से युक्तहैं इनमें

जो चाहो एक तुम लेवो व जो शेषरहेगी उसे हमलेंगे ४४ बहुत अच्छा ऐसा कहकर महाबली वीरभद्र ने उसके हाथसे एक खड्ग लेलिया व हाथसे लेकर उसे खूब इधर उधर घुमाकर क्रोधसे अजमातेहुये देखा ४५ व उधर उस राक्षसने भी खड्ग लेकर इधर उधर घुमाकरदेखा बस वीरभद्रके समीपजाकर उसने गलेमें खड्ग प्रहार किया ४६ उनका गात्र कटगया व बहुतसा रुधिर बहनेलगा तब राक्षस ने एक हाथसे वह सब रुधिर पान कर लिया ४७ तब वीरभद्रजी ने भी क्रुद्धहोकर उस राक्षसके गलेमें क्रोधसे खड्गप्रहार किया उससे दो शिर और उसके कटगये उन्हें गिरतेहुये वीरभद्रजी ने अपने हाथसे लेकर ४८ उसे भक्षण करलिया व बड़ेबलसे सिंहनाद किया उस महानाद से तीनों लोक क्षोभको प्राप्त होगये ४९ व परस्परके खड्ग के घातसे दोनोंके शरीर रुधिर से भीगजाने के कारण फूलेहुये दोपलाशके वृक्षोंके समान दिखाईदिये ५० इसप्रकार फिर एक वर्षतक खड्गप्रहार करतेहुये दोनों लड़ते रहे इसके पीछे एक वर्ष तक फिर गदायुद्ध होतारहा ५१ फिर एक वर्ष तक असिपुत्रियों से युद्धहुआ फिर दो खड्ग लेकर आपसमें दोनों युद्ध करतेरहे ५२ तब धन्वा बाणसहित खड्गधारण कियेहुये गणों के ईश वीरभद्रजीने रोषसहित लालनेत्र करके व आगेसे खड्ग उठाकर ५३ उसके कण्ठों के सब वनको काटडाला जैसे कोई केलेके वनको काटडालताहै व भगके नेत्रोंको हरनेवाले वीरभद्रने लेकर उसके सब शिरोंको भक्षण करलिया ५४ व उसके अङ्गोंको नखोंसे फाड़कर उसके पेटसे सब देवताओं मुनियों को व बाली सुग्रीव दोनों वानरों को निकाल लिया व अन्य परमेश्वरीको भी देखा ५५ इस महाघोर युद्धको देखकर नारदजीने जाकर ब्रह्मा विष्णु व महादेवसे सब वृत्तान्त कहा ५६ कि वीरभद्रजी ने सब मुनियों व देवताओं व [illegible]ली सुग्रीव दो वानरोंकी रक्षाकी व इनको जिलाया क्योंकि इसने [illegible] को ब्रह्मा विष्णु शिवरूपही बना रक्खाथा ५७ इस राक्षसको [illegible]भु जीने बड़ा दारुण वर दियाथा इससे हिरण्यकशिपु के राज्य [illegible] यह राक्षस बड़ा बलवान् था ५८ इसने तो देवताओंके साथ [illegible]

में सौत्रपंतक अद्भुत युद्ध कियाथा सैकड़ों देवगण भागे थे ५९ व बहुत मृतकभी हुये थे, असुरोंके गुरु शुक्राचार्य ने इसकी बड़ी रक्षा की तब इसने यह चिन्तनाकी कि हे शुक्र! हम तो सैकड़ोंबार मृतक हुये परन्तु आपने रक्षाकरली ६० परन्तु अब कोई ऐसा उपाय करना चाहिये कि इससे कभी हमारा मरणही न हो व मृत्यु उदरमेंहो अन्यथा निस्सन्देह हमारा मरण होगा ६१ हे गुरुजी! यमसे पूर्व समयमें हमसे दारुण युद्ध होचुकाहै उसमें हमने प्रतापी यमराजको ग्रसित करलियाथा ६२ परन्तु हमारे पेटमें घुसकर व फाड़कर वे गर्जनेलगे तब हम मृतक होगयेथे परन्तु आपने फिर जिलाया था ६३ इससे अब हम ऐसा तपकरें जिसमें जो हमारे पेटमें स्थितहो वह मृतक होजावे यह सुनकर शुक्र बोले कि अच्छा ऐसाही करो इसके लिये तपकरो ६४ स्यमन्तपञ्चक नाम तीर्थ है वहां जाकर तुम तपकरो तब यह राक्षस बोला कि ऐसा घोर तप करूं जैसा कि किसी देवता दैत्योंने कभी न कियाहो ६५ घुटनोंके पास पैरोंमें लोहे की फाँसी बांधकर दो लोहेके खम्भे गाड़कर उन में दो लोहेकेही खूँटे गाड़कर ६६ उनमें दोनों पैर ऊपरको करके बांधूंगा व शिरनीचेको लटकतारहेगा व एक कल्पतक मुहँबाये हुये बराबर नीचेको मुखकिये रहूंगा ६७ व खम्भोंके बीचमें अग्नि जलादूंगा उसकी ज्वाला मुख और सब शरीर के इधर उधर समीप धधाकार जलतीरहेगी नीचेको शिर इसरीतिसे कियेरहूंगा जिसमें बराबर अग्निज्वालाको नेत्रोंको उघार उघार कर देखता रहूंगा ६८ इसप्रकार तप करूंगा तो कोई मुझे वरदेहीगा ब्रह्मा व शङ्कर व विष्णु मुझको वरदेंगे मुझको तो ६९ वर देनेके लायक होना मेरा प्रयोजन है चाहे जो कोई वरदायीहो इसप्रकार अपने गुरु भार्गवमुनिसे कहकर ७० जाकर कहेहुये केअनुसार तप करनेलगा ६ मासतक तो इसीप्रकार किया फिर अन्य प्रकार से करनेलगा दो नखोंसे अपना शिर काटकर अग्निमें उसने मन्त्र से हुनदिया ७१ "नमोभद्राय" इस मन्त्रको पढ़कर इसने अपने चार शिर काट२ अग्नि में हुने जब यह राक्षस अपना पांचवां शिर भी हुननेपर उद्यत हुआ तो ७२ अग्निके बीचसे भगवान् अम्बि-

काजी के पति निकलआये जोकि शुद्ध स्फटिकमणि के समान गौर वर्ण थे व मस्तकमें चन्द्रमाको भूषण किये थे ७३ नीचेको शिर किये हुये इस राक्षससे महेश्वरजी ने कहा कि हे राक्षस! साहस न कर हम वरदेने के लिये आये हैं इससे वरमांग ७४ राक्षस बोला कि हे महेश्वर! बहुत वरोंके तुम दाता होवो मेरे जितने शिर हत होगये हैं व जो कभी हतहों उनकी तो फिर उत्पत्ति होजावे व जिस जीवको मैं निगलजाऊँ वह मृतक होजावे ७५ व वराहरूप धारण किये हुये विष्णुकी चौगुनी शक्ति मेरेहो व मेरेऊपर तुम्हारा कभी रोष न हो व मेरे समीप तुम सदा रहो ७६ व जो पुरुष तुम्हारी जटाके उखाड़ने से उत्पन्नहो वही मुझको मारेगा अन्य कोई भी नहीं बस उसीसे मेरा मरणहो अन्य किसी से भी न हो यही मुझे वरदानहो ७७ यह सुनकर शिवजी ने कहा कि ऐसाही होगा ऐसा कहकर अन्तर्द्धान हो गये सो इस प्रकारका वर पायेहुये पापी इस राक्षसको तुमने मार डाला ७८ इसके पीछे ब्रह्मा श्रीहरि व शंकरजी आये व वीरभद्रको मिलेभेंटे व जैसे आये थे वैसेही अपनेअपने स्थानोंको चलेगये तब सब देवों व मुनियों की स्त्रियां ७९ वहांपर आईं व भूमिमें दण्डवत् प्रणाम करके वीरभद्रजी से बोलीं कि हे देवदेवेश! तुम्हारे नमस्कार हैं व हे करुणाकर! तुम्हारे नमस्कार हैं ८० हे निरन्तर रहनेवाले! हे अनन्त! तुम्हारे नमस्कार हैं आप वरदायकहोवें वीरभद्रजी बोले कि हम भस्म से देवता मुनि वानरोंको जिलावेंगे ८१ आपलोग सन्तुष्ट होवें व शोक किसी प्रकारसे न करें ऐसा कहकर वीरभद्रजीने भस्म से सबोंको जिलादिया ८२ इससे सब मुनि व देवगण उठखड़े हुये और बाली सुग्रीव दोनों वानर भी व सबके सब हाथजोड़ शिरपर धर के प्रणाम करते हुये यह बोले ८३ कि हे तात! तुमने यहां हमलोगों को जिलाया इससे धर्म्म से हमलोगों के तुम पिताहो हे शंकरसे उत्पन्न! सदा हमलोगों के रक्षक होवो ८४ जैसे बालकोंके दुष्ट चरित देखकर प्रसन्न होकर उनके माता पिता उनकी रक्षा औरोंकी कीहुई बाधाओं से व व्याधियों से करते हैं वैसेही आप रक्षाकीजिये व शिक्षा दीजिये ८५ दक्षके यज्ञमें अपराधकियेहुये हमलोगोंको आपने शिक्षा

दीथी व इस समय रक्षाकी इससे हे तात! हमलोग तुम्हारे बालकों के समान हैं ८६ वीरभद्र बोले कि यह हम सत्य कहते हैं इसमें सन्देह नहीं व तुम्हारे कहनेमें भी सन्देह नहीं है जहां तुमलोगोंको कोई बाधाहो वहां हमारा स्मरण करना तुरन्त बाधा नाश होजायगी ८७ व जो कोई वीरभद्र इस पदको आठसौबार पढ़ेंगे सो यों नहीं प्रथम ॐकार व अन्तमें नमः यह पद व वीरभद्र शब्दकी चतुर्थीका एक वचन अर्थात् ॐवीरभद्राय नमः ऐसा जो पढ़ेंगे ८८ उनकी राक्षसपीड़ाका नाश होजायगा ऐसेही ब्रह्मराक्षसपीड़ाओं में व पिशाचादिकोंकी भयोंमें ८९ वीरभद्रके नामका स्मरण सब बाधाओंका नाशक होगा ९० विद्युत्प्रभालोचनमुग्रमीशम्बालेन्दुदंष्ट्रारुणशोभिताधरम् । सुनीलगात्रञ्चजटाकृतस्रजंदधानमङ्गेभसितन्त्रिपुण्ड्रकम् ॥ अर्थात् बिजुलीकी प्रभाके समान चमकतेहुये नेत्रवाले उग्र रूप ईश द्वितीयाके चन्द्रके समान टेढ़ी चौहड़ीवाले व अरुण शोभित ओठवाले सुन्दर नीलअङ्गवाले जटाकोही पुष्पोंकीमाला किये हुये व अङ्गों में भस्मका त्रिपुण्ड्र लगायेहुये बस ब्रह्मराक्षस छूटनेके लिये यह स्मरण सब तन्त्रोंमें वीरभद्रके लिये कहागयाहै ९१ । ९२ दधीचमुनि शुचिस्मिता से बोले कि—

चौ० अन्तर्द्धान तहांभे आपू । वीरभद्र अति प्रबल प्रतापू ॥
अरु सबमुनि सुरगणनसमेता । गये मुदितमन स्वीय निकेता ॥
त्र्यायुषभस्म महात्म्य पुनीता । उत्तम यह तुमसन हम गीता ९३
पढ़त सुनत सुमिरत जो कोई । तासु पापगण अपगतहोई ॥
शम्भु भक्तिदायक पुनि सोई । आयु अरोग्य बढ़ावन होई ॥
सकल पुण्यकर यह हम भाषा । तनिक न गुप्त तोहिंसँगराखा ९४
शुचिस्मिता कह भइउँ कृतारथ । धन्यनारि उत्तमपरमारथ ॥
पापरहित पुनि भइउँ कृपाला । करतप्रणाम विगतसबजाला ९५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेशिवराघवसंवादेसप्तोत्तरशततमोऽध्यायः १०७॥

एकसौआठवां अध्याय ॥

दो० इकसौअठयें भस्मकी वर उत्पत्ति अपूर्व ॥
ब्रह्म विष्णु शिवजन्मकह अतिविचित्रकरिधूर्व १

श्रीरामचन्द्रमहाराजने शम्भुमुनिसे पूँछा कि हे महाभाग ! भस्म की उत्पत्ति भस्मका माहात्म्य भस्म के धारणकरने में पुण्य व भस्म दानमें पुण्य हमसे कहो १ श्रीशम्भुमुनि बोले कि सब पाप नाशने वाली भस्मकी उत्पत्ति हम कहेंगे जोकि स्मरणकरने व कीर्त्तन करने सेभी पापनाशतीहै फिर धारणकरनेसे क्याकहना हे राजराजेंद्र! उसे सुनिये २ जो एक निरंतर ब्रह्मासे वन्द्य सदाशिव त्रिलोचन गुणोंके आधार गुणोंसेअलग अक्षर नाशरहित सदाशिव हैं ३ उनके सृष्टि करने की इच्छा हुई तो अपने में टिकेहुये तीनोंगुणोंको देखा व जो गुण तीनों हैं वे तीनों वेदोंके बराबर जाननेके योग्यहैं ४ व हे तात! उन तीनों गुणोंको पृथक्करके व सबोंमें समानशक्ति बांटकर अपने दक्षिणअंगसे ब्रह्मानाम पुत्रको उत्पन्नकिया व वामअंगसे हरिनाम को ५ व पीठसे महेशाननाम पुत्रको इसप्रकारसे उन्होंने तीनपुत्रों को उत्पन्नकिया सो जैसेही ब्रह्मा विष्णु महेश्वरनाम के तीनों पुत्र उत्पन्नहुये ६ वैसेही स्पष्टतापूर्वक तीनों बोले कि आप कौनहैं व हम लोग कौन हैं तब वे सदाशिव बोले कि हे पुत्रो! तुमलोग पुत्रहो व हम पिताहैं ७ सो हे पुत्रो ! तुमलोग इन तीनों गुणोंको भजन करो जिससे कर्महेतुक संसार बने पुत्रलोग बोले कि गुण कौनहैं व उनको कितने कल्पतक कौन ईश्वर भजता रहताहै ८ व गुणोंसे निवृत्ति कैसे होतीहै यह हमलोगोंसे कहो सदाशिव बोले कि आपलोगोंका जहां तक ज्ञान होगा व जहांतक आयु होगी ९ वहांतक एक गुणको एक धारण कियेरहेगा तुममें ब्रह्मा तो सत्त्वगुणकी सेवाकरें व विष्णु रजो-गुणकी व महेश्वर तमोगुणको भजें १० जब देवेश सदाशिवजी ने ऐसा कहा तो ब्रह्माने सत्त्वगुण को ग्रहण किया परन्तु उसको ब्रह्मा स्थानपरभी उठायही न सके फिर धारणकरनेमें कैसे शक्तिमान् हों ११ उस सत्त्वगुणका तिरस्कारकरके ब्रह्माने रजोगुणको ग्रहणकिया परंतु वे उसेभी न उठासके तब उन्होंने तमोगुण ग्रहण किया १२

परन्तु तमोगुणको भी जब न उठासके तो गिरपड़े व रोदनकरनेलगे परन्तु विष्णुजीने वाम हाथसे रजोगुणको धारणकरलिया १३ व दो अंगुलियोंसे महेशने भी तमोगुणको धारणकरलिया व फिर विष्णु जीने अकेलेही अपनी दो अंगुलियों से सत्त्वगुणको भी धारणकरलिया १४ व ब्रह्माको पैरकी पीठपर उठाकर नाचनेलगे १५ गोदुग्धकीतुल्य रूपवाले तरुण त्रिनेत्र अतिविलासपूर्वक नाचतेहुये कौतुक कियेहुये सर्व्वधारी शिवको देखकर वरदानदेनेवाले पुत्रों से बोले १६ शिवजीने कहा कि हे पुत्र ! हम तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहुये अपने मनमाना वर माँगो तब पुत्ररूप शिव पितासे बोले कि यह वर हमको देवो १७ कि हे सदाशिव ! हमारेलिये जो कोई पूजाकरे वह तुम्हारी पूजा होजावे व हममें तुम सदा टिकेरहो व जैसे तुम नाशरहितहो वैसेही हमभी होजायँ १८ सदाशिवजी बोले कि हे महाभाग ! यह ऐसाही होगा इसमें संशय नहीं है परन्तु रक्तवर्ण व गौरस्वरूप ब्रह्मा व विष्णु येभी दोनों हमारेही पुत्रहैं १९ इससे येभी दोनों हमारेही आकारके हैं व हमारी कांखके लोमके समानहैं ऐसा शिवसे कहकर फिर ब्रह्मासे बोले कि आपभी तीन गुणों में से एक किसी गुणकी सेवाकरें २० ब्रह्माजी बोले कि हे ईश्वर ! तुम्हारे कहे हुये गुणको तो हम नहीं धारण करसके पर रजोगुण धारण करेंगे सत्त्वगुण विष्णुजीभजें व इस अवशिष्टगुणको ईश्वरजी धारण करेंगे सदाशिवजी बोले कि गुणों को लेके जब तीनों देव नित्य धारण में न समर्थभये तब २१ । २२ धारणशक्ति करनेके लिये फिर शिवसे कहा तब शिवने कहा कि हम सबलोग सर्वकाल गुण नहीं धारणकरसक्के २३ हे स्वामिन् ! जो तुम वरदान देनेवालेहो तो धारणकरनेकी शक्ति दीजिये तब तो उनके वचनसुनके सदाशिवजी बोले २४ कि विद्याशक्ति सबों की शक्ति कहाती है व विद्या तीनोंगुणों के आश्रयभूत होती है व अविद्याभी तीनोंगुणोंकेही आश्रयभूत होती है २५ इससे तीनों गुणों को दग्धकरके उनका सारांश धारणकरने के योग्यहो और यह बहुतही अच्छाहै कि तीनों गुणोंको जलावो उनमें जो कुछ शेषरहे तीनों जन धारणकरो २६ तब तीनों पुत्र बोले कि

किसी वस्तुका दाह विना अग्निके नहीं होसक्ता तब सदाशिवजी ने कहा कि इन महेश्वरके नेत्रमें अग्निहै २७ व तीनोंगुण धेनुरूप हैं व धेनुका गोमय विद्या कहाती है व उसका मूत्र उपनिषत् है इससे वह अग्नि उस गोमयको भस्मकरडालेगा २८ व उसधेनुका बछड़ा सबस्मृतियांहैं उससे गोमय उत्पन्न है इससे आगावः इस मन्त्रसे गुणत्रयरूपिणी धेनुको अभिमन्त्रितकरे २९ फिर "गावोगावोगावः" इससे उस धेनुको तृणजलदेवे कृष्णपक्षहो वा शुक्लपक्ष चतुर्दशीको उपवास वा व्रतकरके ३० परदिनमें प्रातःकाल उठकर पवित्रहोकर एकाग्रचित्तहोवे फिर स्नानकरके धौतवस्त्र धारणकरके गोमयलेनेके लिये गायके पासजावे ३१ गायको उठाकर बड़ेयत्नसे उसका मूत्र गायत्रीमन्त्र पढ़करलेवे सुवर्ण चांदी ताम्रके वा मिट्टीके घड़ेमें गोमूत्रलेवे ३२ कमलकेपत्रके वा पलाशकेपत्रके पात्रमें अथवा गायकी सींगमें गोमूत्र ग्रहणकरे व गन्धद्वारा इसमन्त्रसे गोमय ग्रहणकरे ३३ गोमूत्र व गोमय दोनों भूमिपर गिरने न पावें कहेहुये पात्रोंमेंसे किसी पात्रमें ऊपरही लेलेवे व गोमयको फिर विद्वान्को चाहिये कि शोधनकरे श्री हमको भजें इस मन्त्रसे ३४ अलक्ष्मीमयीति मन्त्र करके गोबरको शुद्धकरे संत्वासिञ्चामि इसमन्त्रकरके गोमूत्रको गोमय में छोड़े ३५ फिर पंचानांत्वेति इसमन्त्रसे चौदहपिण्ड गोमयके करे फिर सूर्य्यके किरणोंमें उनको शुष्क कराके फिर ग्रहणकरे ३६ फिर पूर्व्वके कहेहुये पात्रोंमें उन गोमयपिण्डोंको धरे फिर अपने गृह्यके कहेहुये विधान से अग्नि स्थापन करके उसमें इन्धन डालकर प्रज्व-लितकरे ३७ फिर वर्णदेवायपिण्डकान् इसमन्त्रसे उन पिण्डोंको अग्निमें डाले फिर आघार व आज्यभाग दो२ हुने ३८ फिर जया आदि तेरहमन्त्रोंसे निधनपतिके लिये आहुतिदेवे व "नमोहिरण्याय बाहवे" इससे पांच आहुतियां देवे ३९ इसप्रकार सब आहुतियां हुनकर फिर सब शब्दोंको चतुर्थी विभक्तिके एकवचन द्विवचन वा बहुवचन जैसा सम्भव हो उससे आहुतिदेवे फिर सर्वकेलिये व रुद्र के लिये वैकङ्कती इन मन्त्रोंसे विद्वान् आहुतिदेवे ४० फिर ॐभूः इत्यादि व्याहृतियोंसे आहुतिदेकर स्विष्टकृत मन्त्रोंसे हवनकरे ४१

इसप्रकार सब इन्धनकी जब आहुति होचुके तो पूर्णपात्र व जल दानकरे पूर्णमासीत् इसमन्त्रसे जल व अन्यसे उसकी समाप्ति करे फिर अन्य किसी मन्त्रसे न हुने ४२ फिर ब्रह्मणोऽवश्वथम् इसमन्त्र से पूर्णपात्रके साथवाले अग्निमें तपायेहुये जलसे शिरका अभिषेक करे फिर पूर्व्वआदि दिशाओंके लिंगके अनुसार नमः पढ़करके जल छिड़के ४३ ब्रह्माको दक्षिणादेकर फिर शान्तिपढ़नेकेलिये कुशोंकी कूँची हाथमेंलेवे कूँचीलेने में यह मन्त्रपढ़े कि ॥

दो० । सुरकृति रक्षाके लिये हरत तुम्हें सुनि लेहु ॥
अग्निहिढाँकहुबहुतबिधि सुक्रुपुलाकवचएहु १ ॥

इस मंत्रसे कुशोंकी कूँचीसे अपने ऊपर जल छिरके व अग्नि के ऊपर कोई पात्र धरदेवे ४४ । ४५ जिसमें धीरे २ शांत होजाय तीनदिनतक अग्निरहनेकेलिये उसे आच्छादित करनाचाहिये हवन समाप्ति के दिन ब्राह्मणों को भोजनकराके पीछे आपभी भोजनकरे ४६ जिसको अधिक भस्मकी इच्छाहो वह अधिक गोमय ग्रहण- करे तीनदिनमें व एकही दिनमें बहुत ४७ तीन दिनमें जो अग्नि न शान्तहो तो तीसरेके पीछे चौथे दिन प्रातस्स्नानकरके शुक्लवस्त्र धारणकरके शुक्ल यज्ञोपवीत व शुक्ल पुष्पोंकीमाला व शुक्लचंदन धारणकरके ४८ शुक्लदांत कियेहुये अपने अंगोंमें भस्मलगाके यह मंत्रपढ़के कि तत्सद्ब्रह्म इसका उच्चारकरके सत्यभस्मकोन छोड़े४९ फिर आवाहनादि षोड़शोपचारसे अग्नि का पूजनकरे परन्तु अति दीनताके साथ पूजा करे फिर अग्नि का विसर्ज्जन करे ५० व अ- ग्नेर्भस्म इसमंत्रसे उसमें से भस्मग्रहणकरे फिर अग्निरस्मि इस मंत्रसे शोधनकरके ५१ गंगाजलसे व कपिला धेनुके दुग्धसे संयुक्त करके कपूर कुंकुम केसर खस व चन्दन ५२ दोनोंप्रकारके अगुरु लेकर बहुतसूक्ष्म पीसकर भस्ममें मिलावे ओंकार इस ब्रह्ममंत्रसे ५३ मनुजी ने कपिलाका दुग्ध सेचनके लिये कहा है कि हे देवि ! तुम्हारा क्षीर अमृतके तुल्य है व पवित्रहै व बुद्धिदेनेवाला है ५४ तुम्हारे प्रसादसे सब मनुष्य पापसे निर्मुक्त होजातेहैं व विद्वान्को चाहिये कि प्रणवसे भस्मके गोले बनावे ५५ वा फिर अणोरणी-

यान् इसमन्त्र से विचक्षण को चाहिये कि गोलाकरे शम्भुमुनि बोले मन्त्रवेत्ताकोचाहिये कि इसप्रकार सम्पादनकरके व शुष्ककरलेकर ५६ फिर प्रणवसे शुद्धकरके ॐकार सातबार पढ़कर अपने अंगोंमें सात बार लगावे ईशानेन इसमन्त्रसे शिरमें व तत्पुरुषेण इससे मुखमें ५७ अघोरेण इससे छातीमें व गुह्यस्थानमें भी इसीमन्त्रसे सद्योजात इस मन्त्रसे दोनों पादोंमें व अन्य सब अंगों में ॐकारसे ५८ इस प्रकार मस्तकसे लेकर पादपर्य्यन्त सब अंगोंमें लगावे फिर आचमनकरके श्वेतधौत वस्त्र धारणकरे ५९ फिर आचमन करके तो अपने सब कर्म्मोंके करनेका अधिकारी होताहै फिर भस्म हाथमें लेकर ॐकारसे शुद्धकरके ६० त्रिनेत्र तीनोंगुणों के आधार व तीनोंलोकों के उत्पन्न करनेवाले विभुको स्मरण करतेहुये नमःशिवाय इस मन्त्र से मस्तक में त्रिपुण्ड्रलगावे ६१ व नमःशिवाभ्याम् यह कहकर दोनों बाहों में त्रिपुण्ड्रलगावे अघोरायनमः इससे दोनों प्रकोष्ठोंमें ६२ भीमायनमः इससे पीठमें व शिरके पीछेभी इसीसे व नीलकण्ठायनमः इससे शिरमें लगावे व सर्व्वात्मनेनमः इससे भी शिरमें लगावे ६३ फिर इस प्रकार लगाकर दोनों हाथ धोकर कर्म्म का अनुष्ठान करे सदाशिवजी ब्रह्मादिकों से बोले कि तुम लोगभी इस प्रकार भस्म बनाकर व लगाकर ६४ गुणोंके धारण करनेमें समर्थ होओगे फिर प्रजाओंको उत्पन्न करसकोगे शम्भुमुनि श्रीरामचन्द्रजी से बोले कि इसप्रकार सदाशिव के कहने से ब्रह्मा विष्णु महादेव देवता ६५ इसी प्रकार भस्मबनाकर धारणकरके हम सब इसएकतासे परस्पर बोध में समर्थ होकर प्रणाम करके सदाशिव से बोले ६६ कि बताइये हमलोग अब किस २ गुणको धारणकरें तब सदाशिव फिर पुत्रोंसे बोले कि कर्म्मकरने की शक्ति और ज्ञान ये मुखरेणुकी तुल्य नाश होतेहैं ६७ जिस के योग्य जोहै हम बताते हैं ब्रह्माकी थोड़ी आयु दिखाई देतीहै क्योंकि मनुसंख्यासे इनका जीवनहै व हम ब्रह्माण्डों की माला से भूषित होकर ब्रह्माकी रक्षा किया करते हैं ६८ परन्तु रजोगुणके धारणकरने से तुम हमको सदा नहीं जानते ब्रह्मासे विष्णु बल में अधिक हैं व आयुमें भी ब्रह्मा से बहुत अधिक हैं ६९ व

ब्रह्माण्डोंकी मालाओं का भूषण महेश भी धारण करते हैं व हम भी चार निःश्वास मात्रकरके विष्णुकी आयुहोती है ७० ब्रह्मासे अधिक पराक्रमीहोने के कारण श्रीहरि सत्त्वगुण धारणकरें क्योंकि ये सब कालोंमें हमको जानते रहेंगे कभी कहीं न हमारा विस्मरण इनको होगा ७१ व इन विष्णुकी सदा सात्त्विकी ही पूजाहोगी राजसी व तामसी न होगी शान्त शिवदायक सत्त्वगुणी व रजोगुण तथा तमो गुण के अवमान करनेवाले ये विष्णु होंगे ७२ तमोगुण जिसका नील स्वरूप है उसको शम्भु सदा भजेंगे व इन शिवने पूर्व्वसमय में सत्त्वगुण रजोगुण व तमोगुणको भी धारण कियाथा ७३ इस से शंकर की तीनप्रकारकी पूजाहोगी व रजोगुण जब तमोगुणसे युक्त होजाता है तो दारुण कहाता है ७४ इससे शंकरकी पूजा दारुणभी गतिदेनेवाली होगी व रजोगुण तमोगुणसे युक्तहोने पर अत्यर्थशास्त्र प्रवर्तक होगी ७५ विच्छिन्न भी करदेताहै इससे शंकरकी पूजा विच्छिन्न सदा होतीरहे व यह भी शङ्करजीकी फलदेनेवाली होवे निरंतर न होगी व तम जब सत्त्वगुणसे युक्त होताहै तो मिश्रक अर्थात् मिलाहुआ कहाता है ७६ इससे मिश्रपूजा भी लोकका कल्याण करनेवाले शंकरकी फलदायिनी होगी चाहे जैसी कैसीपूजा उलटी सीधीहो फलदेती है इनकी पूजाका कुछ नियम नहीं है ७७ शंकर की पूजा प्राणियों को शीघ्र फलदेवेगी ॥

चौ० कह शंकर सुनिये रघुराया । यह संक्षेप महात्म्य बताया ७८
वक्ता श्रोता के अघ सारे । भस्म महात्म्य हरत इकबारे ११७९

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखंडेभाषानुवादेशिवराघवसंवादे भस्मोत्पत्तिविधानंनामअष्टोत्तरशततमोऽध्यायः १०८ ॥

एकसौनवां अध्याय ॥

दो० यकसौनवयें भस्मकर पुनि महात्म्य गति दैन ॥
शिव पूजन विधिहू कह्यो मन्दरगिरि गत चैन १
तहँ शिव शिवगण रूप बहु वर्णनकीन अनेक ॥
द्विज इक्ष्वाकु जबालिमुनि वार्त्ता सहित विवेक २

श्रीशम्भुमुनि श्रीरामचन्द्रजी से बोले कि अब हम इस विषयकी

एक पापनाशिनी उत्तम कथाकहतेहैं जिसको सुनकर एकधर्म्मात्मा शिवभक्ति को प्राप्तहुश्रा १ महाविद्यावान् महामति बहुत शास्त्र प्रवीण व न्यायशास्त्रमें विशारद इक्ष्वाकु नाम विप्रेंद्रहुआ २ यह न यज्ञ करता न दान देता न देवताओंकी पूजा करता न वेद पढ़ता न शास्त्रोंका व्याख्यान करता ३ व पुराण इतिहास वेद वेदान्तकी स्मृतियों व श्रुतियों को नहीं मानता बस यत्नसे अच्छे अच्छे भोजन करके अपने शरीरका पालन करता व सुन्दर वस्त्र भूषणों से देहको संस्कार युक्त समझताथा ४ ऐसे उस विप्रकी एक लक्षवर्षकी आयु हुई उसी लक्षके भीतर अन्तवाले वर्षके पांचवेंमास ५ के तीसरे दिन उसने रात्रिको पुराण में यह सुना कि जो कोई अपने इकट्ठे कियेहुये धनमें से कुछभी दान नहीं करता ६ प्रतिदिन आपही उसको खाता पीताहै सो जितने वर्षोंतक भोग करताहै रहता है वहसब निस्सार होजाता है क्रमसे उतने वर्षोंतक नरक में पचा करता है यह निश्चय है ७ फिर सहस्रजन्म तक कृमियोंकी योनि में उत्पन्न होताहै उसके पीछे मनुष्य होताहै परन्तु दरिद्री रोगी बन्धु रहित दुष्ट स्त्रीवाला बहुत सन्तानवाला होता है ८ व दिन दिन भिक्षा माँगेहुये अन्नसे भोजन चलाता है अथवा मार्ग्ग में पड़ेहुये अन्नोंको बीन बीन कर अपनी जीविका करता है ९ अथवा भृत्यों की जीविका मँजूरी धतूरी करता है व बीचही में नेत्रों से हीन कानों से रहित होकर नानाप्रकार के कष्ट भोगता है १० ऐसा पुराणका वाक्य सुनकर इक्ष्वाकु अत्यन्त दुःखित हुआ व फिर वह द्विजों में अधम अपने कर्म्मों का स्मरण करके मनसे यह चिन्तना करनेलगा ११ कि जैसे चाँदी के पुष्पों से भी पूजा करने पर भाव रहित होनेके कारण दुर्गा भी फल रहित होती है वैसेही पुराण वर्जित विद्याभी गतिको नहीं दिखाती १२ क्योंकि बहुत शास्त्रों में अच्छेप्रकार अभ्यास करे व बहुतसे वेदोंको विस्तार पूर्व्वक देखे परन्तु जिस पुरुषने पुराण नहीं सुने उसकी अच्छीगति नहीं दिखाई देती १३ शम्भुमुनि बोले कि ऐसी चिन्ता करते हुये उसकी अकालमृत्युहुई व यमलोक में जाकर यमसे उसने यह बात सुनी कि १४ हे तात! तुम अनेक पापों से युक्तहो व बड़ी पुण्यभी तुमने

नहीं की न वेदोंको पढ़ाकर भी तुमने पुण्य इकट्ठा की केवल पापही तुमने इकट्ठा किया १५ इससे हमको यह विदित होताहै कि कोटि वर्षतक तुम्हारी नरकमें स्थिति होगी अभी तुम्हारी थोड़ीआयु बाकी है इससे अपने पूर्वके शरीरमें चलेजाओ १६ व पुण्यहित दान देव पूजन व जपकरो व साङ्गोपाङ्ग ब्राह्मणों को वेद पढ़ाओ व विप्रों को भोजन कराओ वा भस्म धारण करो १७ व देवदेव उमापति विश्वेश्वर देवको भजो उनके पूजनमात्रसे फिर हमारे लोकको न आवोगे १८ व हे पापिन! जिसी किसी पुराणको नित्य सुनतेरहो उसके श्रवण करने से फिर यमयातनाको न देखोगे १९ यमराज का वचन सुनकर वह ब्राह्मण अपने शरीरमें चलागया व फिर जबतक जीता रहा बराबर शिवपूजन करतारहा जब बनाय वृद्धतासे सिथिलहुआ तो शिवकेपूजक जाबालिमुनि के दर्शन की इच्छासे मन्दराचलपर को गया जो जाबालिमुनि तप व वेदाध्ययनसे सम्पन्न श्रुतिस्मृतियोंकी विवेचना करतेथे अष्टादश पुराणोंके निश्चयको जानतेथे व लाख शिष्य उनके संग रहते थे वृद्धतासे उनके सब अंग शिथिल होगयेथे वेद वेदांगों के पारगन्ता थे वह मन्दराचल नानाप्रकार के पक्षियोंसे सम्पूर्ण था व नानाप्रकारके पुष्पों लताओंसे युक्तथा २० व २१ व २२ व २३ सब ऋतुओं में पुष्पोंसेयुक्त रहता इससे सब सुगन्धोंसे उपशोभित होता व उसकी महागुहा किन्नरोंकी गीतों से पूरितहोरहीथीं २४ व अनेकरूप सौन्दर्य्य से युक्त स्त्रियों से उसकेवृक्ष शोभितहोतेथे लम्बमान चित्र विचित्ररूपवाली स्त्रियों से वृक्ष शोभित होरहेथे २५ विराजमान होताथा व रतिकरने के श्रमसे थककर सोतीहुई किन्नरियों के जगाने में उद्यत भ्रमरों से व कोयलों के शब्द व चक्रवाकों के शब्द से युक्तथा २६ व जो नानाप्रकारके मुनिगणों से व शान्तमृगगणोंसे युक्त था अप्सराओं के गणों से संकीर्ण गन्धर्व्वगणोंसे सेवित २७ व नानाप्रकारके सिद्धजनों के मुखसे निकले हुए गानसे जिसका बनान्तर पूर्णहोरहाथा व विचित्रफलों से संपूर्ण नानाप्रकारके देवालयोंसे संयुक्त था २८ प्रासादोंके समूहों से युक्त व नानाप्रकार के अन्यमंदिरों से युक्तथा सिंहमुखवाले गजमुख

वाले उलूकमुखवाले २९ बिनामुखवाले दुष्ट मुखवाले उग्ररूपवाले आंधेमुखवाले मृगीके मुखवाले रुरु शृगाल गोह सर्प्प बानर ऋक्ष-मुखवाले ३० व्याघ्र बीछू भालू उष्ट्र श्वान गर्द्दभ रुण्डमुखवाले अन्य नानाप्रकारके सब जीवों के तुल्य मुखवाले गणेश्वरों से युक्त वल्ली मुखवाले वृक्ष मुखवाले शिलामुखवाले लोहेकेमुखवाले ३१ शङ्ख मोती कमल मुखवालों से उपशोभित अधिक अंगवाले बिना अंगवाले जटारखाये हुये शिरमुड़ाये हुये ३२ चिड़ियों के से मुखवाले व १२ मुखवाले स्त्रियों की देहकी तुल्य मुखवाले धारणकिये घण्टासे मुख-वाले सूर्पमुखवाले कर्णपादाकार मुखवाले ३३ घण्टाकार मुखवाले बंशके आकार के मुखवाले किङ्किणीसमान मुखवाले जितने वस्तु इस संसार में हैं उन सबोंके तुल्य मुखधारणकरने वाले ३४ कोई कोई कंदर्प की सुन्दरता व रूपवाले कोटिसूर्य्यसम प्रकाशित चंद्रकोटिसम भासित ३५ नानावर्णों के विश्वम्भरके मुख व रूपवाले चारमुखवाले द्विमुखवाले पांचमुखवाले तीनमुखवाले व छमुखवाले ३६ एकमुख वाले अनेकमुखवाले शान्तस्वभाववाले व सदासुखीरहनेवाले सिद्धों से युक्त व नानाप्रकारके भोग समृद्धिवाले रति कामके समान रूप-वाले ३७ लक्ष्मीनारायणजी के आकार के मुखवाले व उमानाथके सम शरीरवाले व अन्य नानाप्रकारके रूपधारण करनेवालोंसे सेवित मन्दराचलथा ३८ व जिस मन्दराचलपर वेदरूपिणीधेनु विद्यमान थीं मीमांसाशास्त्र जिनके बत्सथे धर्म्मादिक सब कवचादिकों से युक्त उनके कर्म सब पुराण थे ३९ स्मृति इतिहासों के समूह व सब वेद वहां ये सब उस मन्दराचलपर शरीरधारण किये हुये विराजते थे इससे वह पर्व्वत सब पापोंका नाश करताथा ४० उस पर्व्वतके मध्यमें महाशोभित अतिमनोहर एक पुरथा वह बापी तड़ाग उपबन व सैकड़ों ऊँचे ऊँचे मन्दिरोंसे शोभित होताथा ४१ सात प्रकारों से घिरा हुआ व रत्नादि अट्टाओं से शोभित होता था नवगोपुरों से युक्त व विचित्रगृहों से संयुक्तथा ४२ जिसमें ऐसा अद्वितीय तेज था जोकि उष्णता व शीतलता से हीन था उसके बीचमें एक पुण्य रू-पिणी नगरी थी व उसके बीचमें शुभ सभाथी ४३ उसके मध्यमें सुंदर

सिंहासन बनाथा जिसमें चारवेद पाद थे व सब उपनिषद् उसी में ठौर ठौर जटित थे ऐसा एक शोभायमान पादपीठधराथा ४४ पुराण वेद उसके कल्याणकारी चरणों के स्वस्तिवाचक थे उस सिंहासन पर गोदुग्धसमान शुद्ध रंगवाले महायोगी बैठेथे ४५ जोकि सुन्दर मुख से मन्द मन्द मुसुकाते हुये थे व सोलह वर्षकी जिनकी अवस्था थी व मणियों व बीच २ में रुद्राक्षों से गुहीहुई महामाला को धारण किये थे ४६ व यज्ञोपवीत धारण किये हुये कठचम्पाके वृक्षके समान पीलेरंगके शोभित होतेथे सुन्दररत्नों केकुण्डल धारण किये व किरीट धारणकिये पीताम्बरओढ़े बिराजतेथे ४७नानाप्रकारकेभूषणोंसेसंयुक्त व नानाप्रकार के चन्दनादि विलेपनों से युक्त थे उनके बामभाग गोद में गिरिजाजी बैठी थीं उनका मुख योगिराज शम्भुजी देखरहे थे ४८ मुग्ध सुन्दर मुखवालीबाला नवयौवनावस्थासे युक्तथीं व सब सुन्दर अंगोंसे भूपितहोतीं और हाथमें सुवर्ण का कमल धारणकिये थीं ४९ ऐसी गिरिजाजी विराजमान होतीथीं व बामहाथसे देवीजीको महादेवजी छपटायेहुये थे व दक्षिणहाथसे उनकामुखारविन्द पोंछते थे व उसी बामकरसे उनकाशिर पकड़ेहुये दहिनेहाथसे चन्दनका तिलक लगारहेथे ५० व भक्ति ॐकारको बेनाबनायेहुये देवदेवके पवनकर रहीथी व उनकी कान्ता पार्व्वतीजी भी पुष्पोंकी माला उनके गले में पहिनातीहुई पूजाकरती थीं ५१ व ज्ञप्तिविरक्ति दोनों स्त्रियां योगाभ्यासको चामर बनायेहुये धारणकियेथीं व धारणास्त्री उन शङ्करजी को समाधि अर्प्पणकरतीथी ५२ व यम नियम सब उनके किङ्करबने हुये उनके समीपस्थितथे प्राणायाम सब आगेखड़ेथे व प्रत्याहार भी सुन्दरवर्ण धारणकिये उपस्थितथे ५३ कुबेर उनके ध्यानरूपथे व सत्य सेनापति था व ब्रह्मासे लेकर कीटपतंगतक सब पशुरूपथे उनकेपति शिवजी थे ५४ व पशुओंके स्वामी धर्म्म व अधर्म्म चोरहैं व मायाके पाशसे सब बँधेहुये हैं व उनके छुड़ानेकेलिये वही काशिकामृतिहै ५५ व नानाप्रकारकी स्त्रियां देव देव उमापति की सेवा सदाकरती हैं व उससमयभी करतीथीं ऐसे उमानाथका स्मरण कोटिजन्तुओंको करना चाहिये ५६ क्योंकि उनकी सेवाकरने से अभीष्ट भोगोंको भोग-

कर प्राणी शिवलोकमेंजाकर पूजितहोताहै ब्रह्माविष्णु इन्द्रादि उनके पुरके द्वारपालकहैं ५७ लक्ष्मी सरस्वती दोनों देवियां देव देवकी देहली झाड़ाकरती हैं व अन्य देव व उनकी स्त्रियां सब दासी कर्म्म में नियमितहैं व सबदेव उन महात्माके दासहैं सब देवियां उनकी दासियां हैं सो ऐसे मन्दराचलको इक्ष्वाकुनाम ब्राह्मण ने जाकर देखा ५८।५९ व उसीपर्व्वतपर ठहरेहुये जाबालिमुनिके दर्शनकर उनके प्रणामकरके यह वचनबोला कि हे महामुने ! हम इस महा पर्व्वतपर जाना चाहते हैं परन्तु जानहींसक्के ६० व ज्ञानी यमराज ने पूर्व्वकालमें हमारी अल्पआयु कहीथी ६१ व नरक बहुत बताये थे कि इनमें तुमको पड़ना पड़ेगा सो अब कहिये हमारा कल्याण कैसे होगा जाबालिमुनि बोले कि हमने भी अपनी दिव्यदृष्टिसे यह तुम्हारा सब जानलिया ६२ तुमने जानभी लियाथा कि अब केवल दशदिन आयु शेष रही है पर तौभी धर्म्म पुण्य नहीं किया अब अनभ्यास के कारण इतने दिनों में न तो तुम तपकरसक्केहो न थोड़े कालके कारण योगसाधन करसक्केहो ६३ व धन न होने के कारण दानभी नहीं करसक्के व सामर्थ्य न होनेके कारण किसी देवकीपूजा अर्च्चाभी नहीं करसक्के व आयु न शेषरहनेके कारण यज्ञ व्रत तड़ा-गादि खुदाना देवमन्दिर बनवाना व पुण्य ६४ न वेदशास्त्रादि कि-सीको पढ़ासक्के न कालविरोधसे तीर्थयात्रा करसक्केहो इससे अब तुम्हारे पाप नाशनेकेलिये कोई प्रायश्चित्त नहीं है ६५ व न कोई गतिदेनेवाला धर्म्मही है इससे हे ब्राह्मण ! चाहे यहां ठहररहो वा चलेजाओ यहसुनकर इक्ष्वाकु बिप्रबोला कि जिस ब्राह्मणने जन्म-भर बिप्रहीके कर्म्म यानी धर्म्मकियेहों ६६ वह हमारे पापोंका परि-हार करसक्काहै यह निश्चयहै ऐसे तो आपही हैं बताइये किस श्रेष्ठ धर्म्मसे हमारा पाप नष्टहोगा ६७ व किस पुण्यके योगसे स्वर्गग-मनहोगा हे बिप्रर्षिजी ! अबइस नरकपातसे रक्षाकीजिये हम आपके शरणमें हैं ६८ व शरणागतका पालनकरना सब धर्म्मोंका फल क-हागयाहै जाबालिजी बोले कि हम सत्यही कहते हैं कि तुम्हारे पापोंका नाशक धर्म्म थोड़ेसे कालमें नहीं होसक्का ६९ व हम स्व-

भ्रमें भी मिथ्यावचन नहीं कहसक्के परहां एक अतिरहस्य धर्म्महै वह जिसी किसीसे हमने नहीं कहा न कहनेके योग्यहै ७० इक्ष्वाकुबोला कि हे मुने ! शरणआयेहुये हमारा पालनकरो अब हमारा काल बीतजाने चाहताहै जाबालिजी बोले कि हे विप्र ! वेदोंका कहाहुआ रहस्य हमारे प्राणसे भी अधिक ७१ ब्रह्मादि देवताओंका कियाहुआ शिवलिङ्ग पूजनहै यहसब पापोंका नाशकरताहै व सब उपद्रवोंको निवृत्तकरताहै ७२ मुक्ति व भुक्तिदोनोंदेताहै इससे तुम शिवकी पूजाकरो हे मुने ! शुभ शिवपूजाका अति क्रमण न करना चाहिये ७३ करता है शिवकी पूजा नहीं करता वह जानों हमारा शिरकाटता है कोई उठाकर शूलके ऊपर फेंकदेवे वह श्रेष्ठ है व शेमरकी कटीली डालों पर चढ़ाकर खींचना श्रेष्ठहै ७४ व प्राणों का छोड़ना श्रेष्ठ है परन्तु पूजा का व्यतिक्रम अच्छा नहींहै अग्निमें गिरपरना अच्छा है व नीचेको शिरकरके पर्व्वतादि ऊँचे स्थानपरसे गिरना अच्छाहै ७५ अपना मलभोजन करना अच्छाहै पर ईशकी व्यतिक्रम अच्छा नहीं है बिना शिवकी कुछ पूजा कियेहुये जो अधम मनुष्य भोजन करता है ७६ उसका भोजन अन्नरूप पापों का भोजन कहाता है जो बिना शम्भुपद उच्चारण कियेहुये कोई शैव भोजनकरता वा कोई और चीज खाताहै ७७ शिव यह मङ्गलनाम जिसकी बाणीपर टिकताहै शीघ्रही उसके महापापों की कोटियाँ भस्म होजातीहैं ७८ शिवकी प्रदक्षिणा करके जो मनुष्य नमस्कार करेगा वह उस नमस्कारसे भूमिकी प्रदक्षिणा करनेके समान फलपाकर पापसे छूटजायगा ७९ तीन प्रदक्षिणा करके फिर जो पांचबार प्रणाम करता है व फिर प्रदक्षिणा करताहै व फिर नमस्कार करता है वह सबपापोंसे छूटजाता है ८० शिवके मन्दिरमें जो कोई सब बाजे वा एक बाजाभी बजाताहै व और से बजवाताहै परन्तु धीरे २ नहीं बड़े बलसे बजाताहै वह देवताओं से सेवा करनेके योग्य होताहै ८१ व जो कोई देव देवं त्रिलोचनजी को कोई पुराण सुनाता है वह कुशली सब पापों से छूटकर शिव के पुरमें बसताहै ८२ व उसको भक्तिवाक्यसे प्रियवचन आदर से कहकर शिवजी पुकारतेहैं जाबालिजी बोले कि यह संक्षेपरीति से

उत्तम शिवपूजन हमने कहा ८३ हे ब्राह्मण ! आपकी थोड़ी आयु शेष रहीहै अब शिवकी पूजाकरो चाहे तीनोंकालों में वा दो कालोंमें अथवा एकहीकालमें ८४ एकपहर वा आधेपहरतक शिवपूजनकरो अब वानप्रस्थाश्रममें टिककर वानप्रस्थका आश्रयणकरो ८५ व वनमेंउत्पन्न पुष्पों से शङ्करजी की प्रातःकाल पूजाकरो बिल्वपत्र शतपत्र अन्य सुगंधित कमलोंसेभी पूजनकरो ८६ कदम्ब दुपहरी के पुष्प पुन्नाग कँदैल पाड़र डाँड़ तुलसीदल मदार वा अकौवा के पुष्पोंसे व धतूरके पुष्पों से ८७ व लटजीरासे व रुद्रजटा व दमनकसे इनसबों से जो कि बराबर फलदायक हैं व बिल्वपत्र व धतूरा ८८ द्रोण व शिरीष व दूर्वा व कोरक तिल मिलेहुये अक्षतों से वा केवल अक्षतों से ८९ अन्यभी पुष्प पत्रादिकों से प्रातःकाल शिवार्चन करनाचाहिये कठचम्पाके पुष्पों से सुवर्णके पुष्पों से वा दूर्वासे भी शिवपूजनकरे ९० दुपहरीके व कमलके पुष्पको छोड़कर अन्य किसी पुष्पकी बोड़ी से शिवकीपूजा न करे सब कमलोंके पत्रोंके पात्रोंमें अक्षत धरके पूजा होसक्तीहै ९१ कुशके पुष्पोंसे सुवर्ण चांदीके पुष्पोंसे उत्तम पूजा होती है व सब अन्य पूजन होसक्ताहै परन्तु तैलपक्व किसीभी अन्न से शिवपूजन नहीं होसक्ता ९२ क्योंकि तैलके पकायेहुये अपूपशष्कुली आदि जूंठे होजातेहैं इससे घृतपक्वही सबअन्न शिवके निवेदन करनेके योग्य होतेहैं व जो फल पत्रादि तैल व खारा व अरुन व जीरासेयुक्त होजातेहैं सब त्याज्य होतेहैं ९३ व जलमें जितने फूल फूलतेहैं व शाकादिक होते हैं वे सब कभी जूंठे नहींहोते गङ्गाजल समुद्रके भीतरभी जाकर जूंठा नहींहोता ९४ महानदियों का सब जल व खेतोंका सब जल कभी जूंठा नहींहोताहै कुण्डरूपसे जो तीर्थ होतेहैं व कूप तीर्थ व हे राघव ! ९५ तड़ाग वापी झील व कूपके समीप जो जल भरारहताहै ये सब जल तीर्थ के बराबर कभी जूंठे नहींहोते ९६ रात्रिमें कभी कूप तड़ाग नद्यादिकों में से जल न भरना चाहिये किन्तु दिनमेंही रात्रिके लिये भी भररखना चाहिये सिकतासहित जल लाने से जूंठा नहीं होता ९७ ऐसा पूजनका विधान जानकर तुम जाकर शिवलिङ्ग पूजनकरो शम्भुमुनि श्रीरामचन्द्र

जी से बोले कि इसप्रकार जब जाबालिमुनि ने कहा तो प्रियब्राह्मण इक्ष्वाकु ९८ शिवपूजामें आठदिन बराबर लगारहा नवयेंदिन प्रातःकाल स्नानकरके व शिवपूजनकरके ९९ फिर मरणके समयमेंभी शिवकीपूजा अच्छेप्रकार करके अपने प्राणों को शिवजीकी पूजाकी सामग्री बनाकर उनके समर्प्पण करदिया १०० इक्ष्वाकुको मरेहुये जानकर वहांपर यमदूत आये व यमलोक को लेजाने के लिये यत्न करनेलगे १ व अग्निमुखादि शिवकेदूतभी वहां आये उन लोगों में परस्पर बड़ा बादहुआ यमदूतोंने कहा यह हमाराहै व शिवदूतोंने कहा यह हमाराहै २ तब यमराज के दूतोंमें से एकने पाश हाथ में लेकर किसी शिवदूतको मारा तब अग्निमुखादिक शिवगणोंने क्रुद्ध होकर सैकड़ों यमदूतोंको ३ व महाकायने भी वैसेही उन यमदूतों को पकड़कर व अन्य बहुत से दूतोंकोभी पकड़कर एकही स्थानपर सबोंको तरूपर धरके सबों के शिर काटडाले जैसे कि किसानलोग अन्न काटतेहैं ४ व यमदूतोंको मारकर इक्ष्वाकुको लेकर अग्निमुखादि शिवलोक में आये व बुद्धिमान् वीरभद्रसे निवेदन किया ५ व वीरभद्र ने जाकर शङ्करजी से निवेदन किया महेश्वरजी फिर इक्ष्वाकु से बोले कि तुमने आठदिनोंतक दिन दिनभरतक हमारी निरन्तर पूजाकी ६ परन्तु तुमने पहले हमारी यह निन्दा किया कि लिङ्ग शिश्नुका अग्रहै उसीपापके योगसे तुम लिंगके आकारके मुख वाले होवोगे ७ व लिंगके आगे एक छेदहोगा वही तुम्हारा मुखहोगा व जिह्वा नासिकादि उसमें कुछ न होंगी परन्तु प्रथम तुमने हमारा नाम कहाहै इससे तुम वक्ताभी होवोगे ८ महादेवके वचनसे वह इक्ष्वाकु वैसेही लिंगाकार क्षणमात्रमें होगया श्रीशम्भुमुनि बोले कि॥

चौ० यहइतिहास पुरातम जोई। नित्य सुनिहि नरवर वरसोई ९ पापबन्ध सों छूटि तुरन्ता। शम्भु भक्तहोइहि हरमन्ता १। होइहि शंकर सदन बिहारी। भोक्ता वक्ता अरु अधिकारी १० जोयह कथा नित्यनर गाइहि। अमरसदृश यहिजग सुखपाइहि २। कहि यह कथा महीपति एका। जासुनाम अधीर सुनेका ११ भार्य्यासहितस्वर्गसोगयऊ। करतपाप पुनितहँ सुखलह्यऊ३।१२

इति श्रीपाद्मेविभूतिमाहात्म्येनवोत्तरशततमोऽध्यायः १०९ ॥

एकसौदशवां अध्याय ॥

दो० इकसौदश कह अग्नि शिख पूर्व्वजन्मकी गाथ।
लुब्धक शिवपूजन नृपति वेश्यासंग सनाथ १
जिमि वेश्या शिर काटिभे निज शिर बिन परलोक।
नृप गन्धार बखान सो कीन्ह्यों करण विशोक २

श्रीरामचन्द्र महाराजाधिराजजी ने पूछा कि यह पवित्र अग्नि शिख नाम अग्नि शिवगण ऐसाकैसे हुआ यह हमसे कहो तुम्हारे नमस्कारहै १ श्रीशम्भुमुनि बोले कि यह कोई बड़ाक्रोधी पूर्व्वकाल में क्षत्रियथा इसकी भार्य्या नष्टहोगई थी सेनाभी नष्टहोगई थी व राज्यभी नष्टहोगयाथा इससे अतिदुःखित हुआथा २ व दोमहिषी पास रहजानेपर अपने पुत्रोंके साथ खेती करनेलगा खेतीकरने में बड़ा ऋणीहोगया इससे अत्यन्त दुःखित हुआ ३ व उसी खेतीही में सर्प्पके काटनेसे एक पुत्रभी मरगया राजा और भी दुःखितहुआ जब ऐसाहुआ तो राजाने खेतीकरना भी छोड़दिया ४ व जो दोपुत्र बाकीरहे उनको भी छोड़कर व भोजन करना भी छोड़कर वह रोदन करनेलगा तब उसके दोनों पुत्र आकर पितासे यह बोले कि ५ हे तात! क्यों रोदन करतेहो जो पदार्थ नष्ट होजाताहै वह रोदन करनेसे नहीं आता यह तुम्हारा शोक इस समय तुम्हारे शरीर को शोषलेगा ६ व शोकसे नेत्रभी तुम्हारे फूटजायँगे व कण्ठभी नष्टहोजायगा व जो कुछ अनुष्ठान तुम करते थे वहभी इस शोकसे नष्ट होगया अब किसलिये परिताप करतेहो ७ एक पुत्र नष्टहोगया वह तो अब आता नहीं तुम अपने पांच प्राणों की रक्षाकरो बहुतों की रक्षाकरने से पुण्य होतीहै उसमें भी अपने आश्रित पुत्र सेवकादिकोंकी रक्षा करनेमें बिशेष पुण्यहोतीहै ८ व अन्य किसीके आश्रित इस मरेहुये शत्रुरूप पुत्रको कैसेशोचतेहो यह सुनकर पिता पुत्रोंसे बोला कि इस पुत्रका शोक कैसे हम न करें क्या हमाराशत्रुहै जैसे तुम दोनोंपुत्र वैसेही यहभी तोहै क्या तुमभी शत्रुरूपहो ९ पुत्र तो अत्यन्त सुख देताहै फिर तुम दोनों इस पुत्रको शत्रुकेसमान कैसे समझतेहो दोनोंपुत्र बोले कि पुत्र जब उत्पन्न होताहै वैसेही पिता

की भार्य्याको हरलेताहै व जब बढ़ने लगताहै तब धन हरताहै १०
व जब मरनेलगताहै तब पिता के प्राणों को हरलेताहै फिर पुत्र से
बढ़कर और कौन शत्रुहोगा हे राजन्! जो तुमने पुत्रके स्पर्श करने
व आलिङ्गन करने आदिको सुख कहा ११ वह बड़ेभारी दुःख को
देता है उसे हम तुमसे कहतेहैं जब पुत्र होने लगता है तो बिचार
करने से यही जानपड़ता है कि अब भार्य्याका नाशही होजायगा
१२ यदि पत्नी उस समय न मरी जीतीही रहगई तो अपने सुख
काही नाशहोजाता है क्योंकि योनि फिर अशुद्ध होजातीहै प्रथम
कीसी नहीं रहती इससे सँय्योग अच्छा नहीं होता १३ व यदि
गाढ़ आलिंगन करो तो कुचों से दुग्ध बहनेलगता है इससे अङ्ग
भीगजाताहै उसपर भी जो स्त्री का सँय्योगही कियागया तो उसी-
समय बालक रोनेलगताहै १४ व फिर लड़के की ओर से पतिकी
ओर चित्तका आना दुर्घटही होजाताहै शायद समागमहो भी तब
उसके पतिके मैथुनमें विक्षेप होताहै १५ व रतिके मध्य में विच्छेद
होने से जो दुःख होता है उसके समान कोई दुःखही नहीं है बस
इसकारण से सदा उसकी रति का सम्भव एक नियतकाल पर हो-
जाताहै १६ व फिर भोजनादि भी समयपर नहीं होता व शयन भी
भार्य्याके साथ नहीं होताहै फिर शिशुओं की रक्षा व्याधियों व ग्रहा-
दिकोंसे करनी पड़तीहै १७ व तुम्हारे मतसे जो सुखहै कि बालक
पिताकी गोदमें चढ़आताहै उसको छपटाना होताहै मुख आदि चूँ-
बनेको मिलताहै १८ व हे नरेश्वर! अप्रकट तूतुरे आदि वचन जो
लड़का बोलताहै उससे जो सुखहोताहै ये सबसुख रतिके मध्य में
जो विरामकरना पड़ताहै उसमें जो दुःखहोताहै उसके सोलहेंभाग
को भी नहीं मिटासक्ते १९ व और भी सहस्रोंदुःख पुत्रमें हैं इसपुत्र
से क्या तुम रक्षित होओगे यह तो इसलोक व परलोक दोनों का
विरोधी है २० इससे अब तुम शोक छोड़ो यदि पुत्रको बहुतही चा-
हतेहो तो हम दोजने तो पुत्रही हैं राजा बोला कि यद्यपि शोक बड़े
दुःखसे निवारण करने के योग्यहै तथापि सब कार्यों को विरोधी है
इसको छोड़ताही हूं २१ अब अपना हित इसलोक व परलोक के

लिये करेंगे तुमदोनों हमारेपुत्र अब हम अपने पूर्व के गुरु पुरोहित मुनिश्रेष्ठ वशिष्ठजीके समीप जायँगे वे हमको गति देंगे ऐसा कहकर राजा बाराणसी में स्थित अपने गुरुके समीप गया २२ व दण्डवत् प्रणामकरके मुनिके आगे खड़ाहुआ तब मुनिने आगत स्वागतकिया व छातीसे लपटालिया शिरसूँघलिया व आसन बैठनेके लियेदिया २३ । २४ व कहा कि किसलिये तुम्हारा आगमनहुआ व तुम्हारा कार्य्य क्याकरें कहो राजा बोला कि हे ब्रह्मन् ! परलोक जानेकी गति हमसे कहो २५ हम अब निरन्तर कर्म से खिन्नहोगये हैं इससे तुम्हारी शरणमें आयाहूं वशिष्ठ जी बोले कि यह विश्वेश्वर नाम महालिङ्ग गतिरूप स्थितहैं देखो २६ हे राजेन्द्र ! इन देवदेव पिनाकीजीकी पूजाकरो पूर्वकाल में अरुन्धती के पुत्र शक्तिमुनि जिसकी आराधनाकरके २७ राक्षससे खायेभीगये परन्तु वे यमलोक को न गये कुछ कालमें स्वर्गलोक को गये फिर वहांसे ब्रह्मलोक को चले गये २८ व ब्रह्मलोक से फिर विष्णुलोक को गये व अब वहां क्रीड़ा करतेहुये वे हमारे पुत्र शक्ति विराजमान हैं हे महाराज ! इस वनवासी लुब्धक को देखो २९ केवल अपने इकट्ठे कियेहुये पत्रोंसे विश्वेश्वर जीकी पूजा कररहा है शमीवृक्ष के पत्रोंसे व सुपारियों के पुष्पोंसे ३० कदम्ब के पुष्पोंसे मदारके फूलोंसे व चमेली के पुष्पों से इनसे व औरोंसे भी महेशजी की पूजा करतेहुये इसको देखो ३१ यह आधेपहर के पीछे मृतक होगा अब बनाय अन्तकाल आगया है व लुब्धक शिवकेलिये ३२ पूजाकी सामग्रीलिये व जल पूर्णघट लिये पूजन करनेको उद्यत है यद्यपि आम्रफलसे भरेहुए इस घड़े को कुत्तेने स्पर्श करलियाहै इससे यह अपवित्र होगया है ३३ व महानिन्दित होगयाहै परन्तु सङ्कल्पित पूजाकी सामग्री के न होने से लुब्धक ने लोगोंके हितके लिये भक्तिसूचक यह वचन कहाहै ३४ कि पुष्प न मिले हरिनेत्र स्मरण तो व अन्य उत्तम फलोंके न मिलने पर रविअंगुल लिङ्गके अभाव में कंब्रह्माणं जमदग्निऋषिने ३५ अपना अङ्गही काटकर लिङ्ग पीठके विभेद में शिवके समर्पण कर दिया था ऐसेही अन्यभी शैवोंने और २ परमसाहस के कर्म किये

हैं ३६ सो हमभी ऐसेहीकरें नहीं तो दोषभागी होंगे लुब्धक ऐसा विचारकर पूजाकररहा था कि इतनेमें एक उन्मत्त शिवके वहांआया ३७ व लुब्धककी कीहुई पूजालेकर क्षणमात्र में उठाकर खागया तब लुब्धक ने शैवकी पीठपर वमन करदिया ३८ व चिंतना करने लगा कि देखो इस शिवके अपकारी को हम मारडालें तो अच्छाहो या न मारें जब उस उन्मत्त शैवने जाना कि यह लुब्धक अब हमकोही मारनेका विचार कररहा है ३९ क्योंकि यह समझताहै कि हमारी की हुई इस उन्मत्तने शिवकी पूजा भक्षण करली है व हमारा यह कामहै कि जहांलिंग देखें उसके ऊपर जोकुछ छायाहो उसे अलग करदें ४० इस प्रवृत्तिमे हम इसको नियुक्त करेंगे शीघ्रही क्योंकि पूजाके विमोचनके लिये फल हानि होतीहै इससे मलत्यागदें ४१ ऐसा सङ्कल्पकरके उस शैव उन्मत्तने तीक्ष्ण तलवार चलाया कि जिससे उस लुब्धककी त्वचा व दहिना पैर कटगया व कटिके नीचे का भाग कटगया ४२ तब शैवने वामपाद कमर २ तक भटवनाय काटडाला तब उसका ऊपरका भागवहुत हर्षितहुआ कांपाभी नहीं तब उसने ऊपरका भागभी काटडाला ४३ हाथ कांधा पेट हृदय कंठ त्वचा काटकर लुब्धकने मस्तक का चमड़ा काटकर आनन्दितहुआ ४४ फिर उनके अन्तरसे वर्तुला कार देहको काटकर अंगुली को लेकर शिवके अर्थ त्वचाको अर्पणकिया ४५ जैसेही उसके शरीरसे शैवने शिवकी पूजाकीहै कि उस लुब्धकका शरीर चतुर्भुजी होगया व नानाप्रकारके भूषणोंसे संयुक्तहोकर वह शिवभक्त लुब्धक आकाश में स्थितहुआ ४६ तब विचित्र मुकुटादि भूषणों से भूषित त्रिशूल हाथों में लियेहुये शुद्धस्फटिकमणिके आकारके गौरवर्ण सैकड़ों सहस्रों शिवदूत वहां आगये ४७ सब चतुर्भुजी मूर्त्ति धारणकिये व श्रेष्ठ विमानों पर आरूढ़ सुन्दर स्वरूपवाले थे त्रिशूल लिये शुद्ध स्फटिकमणिकी तुल्य ४८ सब सूर्य्यवत्प्रकाशित व शांतरूप सबों के संग रम्भाके समान स्त्रियां विराजमानथीं व सैकड़ों विलासिनी स्त्रियां उनगणोंकी स्त्रियोंसे युक्तथीं ४९ सो तेजसे सूर्य्यवत्प्रकाशित उन स्त्रियों ने अपने विमानपरसे पुष्पोंकी वर्षा करदी व उन लोगों

ने लुब्धकको बुलाया परन्तु लुब्धक उनके बुलानेसे नहींगया व उन से बोला ५० उसने कहा मैं अपनी स्त्री पुत्र परिवार सहित आया चाहताहूँ सो आऊँ वा नहीं तब उसका वचन सुनकर सब शैवलोग यह वाक्य बोले कि ५१ जिसने पुण्यकियाहै वह पुण्यका फल भोगेगा व जिसने पाप कियाहोगा वह पापकाफल लुब्धक बोला कि सब अशौचधर्म्मों का करनेवाला जो एकहो ५२ व सब माहेश्वर धर्मों के फल दो व बहुत होते हैं यह वार्त्ता लुब्धक व शिवदूतों से होतीहीथी कि सौ बालक युक्त बीरभद्र वहां आये ५३ नानाकोटि गणोंसे युक्त बीरभद्रजीने वहां आकर पुकारा कि लुब्धक अपने बन्धुओं सहित यहां आओ जिसको २ अपनी भार्य्यापुत्र बन्धुओं में से सङ्गलाना चाहतेहो लेकर आओ ५४ व इस विमानपर चढ़कर शिवजी के समीपको चलो तुम्हारा कल्याणहो बीरभद्रके कहने से विमानपर सपरिवार चढ़कर लुब्धक परमानन्दित होकर श्री शिव जीके लोकको चलागया ५५ बशिष्ठजी बोले कि राजन् तुमने यह लुब्धककी दशादेखली है अब शिवजीकी पूजाकरो सबपाप बन्धन से छूटकर शिवलोकको जाओगे ५६ हे महीप ! जो तुमको राज्य करनेको फिर इच्छाहो तो शिवका आंगन पहिले मार्ज्जनी आदि से शुद्धकरो फिर गोबर व जलसे लीपो ऐसा नित्यही करते रहो ५७ ऐसा करनेसे निश्चय भूमिका राज्य तुम्हारे होगा जबतक जीवोगे राज्यसुख भोगोगे अन्तमें शिवलोकहोगा ५८ परन्तु अब इसदेह में तुमको राज्य न मिलेगा मृत्युके बाद सिद्धि होगी इससे अन्य शरीरको पाकर शिवसेवाके प्रभावसे ५९ स्थिरराज्य तुम्हारा होगा व शिवकी स्थिरभक्तिभी होगी शम्भुजीने कहा ऐसा सुनकर वैसेही शिवकी पूजाकरके राजा मृतकहुआ व स्वर्गको गया ६० व फिर जन्मलेकर राजाराज्यको प्राप्तहुआ व शिवकी पूजामें रतरहनेलगा एकसमय वह राजाशिवजीके मंदिरकोगया ६१ जोकि नानाप्रकार के दीपोंसे सँय्युक्तथा व मणियों से जटितथा कि मानो नागराज हैं वहां उससमय भटोंकी भीड़ बड़ीथी इसलिये एकदीपक राजाकेऊपर गिरपड़ा ६२ तब बहुत कुपितहोकर राजाने शीघ्रही दीपकको लेकर

देव समूहमें कोपसे देवालय रम्यपुरमें कोपयुक्तहोकर फेंकदिया ६३ उसदीपकसे वह देवगृह जलगया इससे राजाको बड़ापापहुआ परन्तु जो देवालय राजाके फेंकेहुये दीपकसे जलगयाथा उसे राजाने फिरसे बनवाकर उसमें महादेवजीका स्थापनकरवाकर बहुत मन्त्रादि जपा जब राजाके मरनेका दिनआया तो शङ्करजीकी आराधना कियेहुये वह राजा ६४।६५ भस्ममें स्नानकरके व भस्मकेऊपर बैठकर शिवजीको जपताहुआ मृतकहुआ इसलिये वह शिवलोककोगया तब राजासे वीरभद्रजीने कहा ६६ कि तुम हमारे परिचारकहोकर गणों में श्रेष्ठहोओ व जो हमारी आज्ञाहो उसे करतेरहो जिसको हमकहें उन शिवभक्तोंको हमारे समीप बुलालाओ ६७ पर तुम्हारे शिर न होगा केवल अग्निकी ज्वाला के आकारका मुखहोगा यह सुनकर राजागणों के स्वामी महात्मा वीरभद्रजीसे बोला ६८ कि नेत्र कान जिह्वा नासिका मुख ये सब शिरके गणहैं फिर इनसबोंके बिना ज्वालाकार मुखसे मेरानिर्व्वाह कैसेहोगा ६९ व मैंने कौनसा पापकिया है जिससे अब बिना शिरका रहूंगा वीरभद्रजी बोले कि तुमने पूर्व्वजन्म में एक परमसुन्दरी स्त्रीको ग्रहणकियाथा ७० महेशभवन नित्य चातुर्वर्ण के रंगोंसेयुक्त फिर स्वस्तिक सर्व्वतोभद्र नन्द्यावर्त्तादि शुभ पद्म उत्पल आन्दोल वा चामर व्यजनादिलिये वहां पर त्रिशूल शङ्ख चक्र गदा धन्वा ७१।७२ डमरू खड्ग भृङ्गीरिटि शिव सब वहां विद्यमानथे ७३ व सब सामग्री पूजनकी इकट्ठीकरके वह वेश्या नित्य शिवजीका पूजनकरतीथी सो एकदिन वह वेश्या देवताके आगे खड़ीथी ७४ उसीबीचमें राजाके बन्दीगृहका स्वामी उस मन्दिरमें आया वह उस वेश्याको देखकर उससे यहवचनबोला ७५ काराङ्किकने कहा कि तू वेश्याहोकर एकांतमें खड़ीहै व हम युवाहैं वृद्धनहीं हैं व वृद्धरोगी नपुंसक शक्तिरहित निर्द्धन ७६ छोटे लिङ्गवाले व बड़ीदेरतक न मैथुन करनेवाले व दीन पुरुषको स्त्री छोड़देवे व बिना दाढ़ी मूँछवालेको बहुत मैले वस्त्र धारण कियेहुये व मलिन शरीरवालेको व जड़को व दुर्ग्गन्धिसे दूषितको ७७ व स्वल्प पराक्रमी को निरुद्यमीको स्त्रीको चाहिये कि दूरसे त्यागदेवे

हे वेश्ये ! हमको मैथुन देकर शीघ्रजियाओ ७८ यहसुनकर वह वेश्याबोली कि सब जातिकी स्त्रियोंकेलिये जो पातिव्रत्य परमधर्म्म नियतहै वही इसलोक व परलोकमें सुखदायी होताहै व हमने सुन रक्खाहै ७६ कि स्त्रियोंका पातिव्रत परमधर्म्महै सो जिसके अधीन जिससमय वेश्याहो उस समय अन्य किसीकेपास न जावे तो वह वेश्या भी पतिव्रता कहावे इससे मैं इस व्यवस्था का पालन करतीहूं ८० कारांकिकने कहा कि जो ऐसाहीहै तो शीघ्रही मृत्यु होजायगी इसमें संदेह न होगा तब वह राजाके बंदीखानेका स्वामी राजाकेपास गया व बोला कि ८१ अब वह वेश्या हमारी भार्य्या होगई है इस से अब उसे तुम्हारी भार्य्या कहना उचित नहींहै ऐसा राजा से कह कर ८२ व मण्ड कुछ लेकर वह फिर वेश्याके मन्दिरको गया उस समय वेश्या शयनकररही थी सो उसे निद्रा के बशीभूत देखकर व हाथपकड़कर ८३ उस दुष्ट कुबुद्धिने उसके वस्त्रके विवरमें मण्डडालदिया व ऐसाकरके राजा के पास फिर जाकर यह वचन बोला ८४ कि हे राजन् ! चलकर देखलीजिये कि वह वेश्या अन्य किसी की स्त्री होगईहै अब तुम्हारी नहीं रही उस वेश्या को उठाकर उसके सब अङ्ग देखिये ८५ परन्तु सब वस्त्र खोलकर बनाय उघारकर यत्न से देखिये यह कारांकिक वचनसुन राजा वेश्याके मन्दिरको गया ८६ व उसे सोतीहुई देखकर राजाने कहा यह सोरही है इसका वस्त्र कैसे खोलैं तुम्हीं खोलकर देखो तब उसने राजासे कहा कि यह हमारा उचितधर्म्म नहींहै ८७ इसके देखने के लिये इसकी माताको अथवा इसकेपिताको नियुक्तकरो उनके देखनेसे सब शीघ्रही प्रकट होजायगा ८८ तब राजाकी आज्ञापाकर उसकी माता देखनेको उद्यतहुई व राजा के कहनेसे उसके वस्त्र खोलकर मैथुनके चिह्न खोजनेलगी ८९ उसके भीतर योनिकेपास मण्डको जानकर उसकी माताने उसको हाथसे रगड़ दिया जिससे उसके वस्त्रभी मसमसे होगये थे यह दशा देखकर राजाबोला ९० भला तू तो इस वेश्याकी माताहै इसके बस्त्रादि देखने से मैथुनके चिह्न पाये जाते हैं वा नहीं तब उसने कहा आपही नहीं कुछभी नहीं यह वेश्याकी माताने कहा तब अन्यलोगोंने भी कहा

राजाने तब देखा परशंकाही बनीरही ९१ निश्चय न हुआ राजा ने वस्त्रलेकर सबको दिखाया कि देखो वीर्य्यसे भीगाहै तब सबसमीप खड़ेहुये अन्य लोगोंने भी राजासे कहा कि हां येलक्षण अवश्य ही मैथुनहीके हैं ९२ बस राजा अपने स्थानको जाकर दण्डके अध्यक्षसे बोला कि इसीसमय इस वेश्याका शिर काटडालो कुछ भी विचार न करो ९३ एक घड़ीभरके भीतर हमको इसका शिर दिखाओ दण्ड देनेवाले ने राजाकी आज्ञासे वैसाही करदिखाया वेश्याका शिर काटकर राजाको दिखादिया ९४ बीरभद्र राजासे बोले कि ऐसा तुमने पूर्व्वसमय में कियाथा उसका फल आज पाया जोकि विना शिरके हुये अब इसीज्वालाहीसे बोलोगे देखो सुनोगे व सूंघोगे९५ रस जानोगे व बड़े क्रोधीहोओगे और पराक्रमी बड़े होओगे ॥

चौ० । बोले शम्भु रामसों एहू । राघव सुन्यहु चरितयुत नेहू ॥
माहेश्वर राजाइमि भयऊ । ज्वालामुखगण बरचितनयऊ १ । ९६
यासों क्षमाकरत जो कोई । यहां वहां सुखपावत सोई ॥
यासों सदाक्षमा नितकरहू । परमानन्द सदा सुखभरहू २ ।
जो यह पुण्याख्यान अनुत्तम । सुनिहै कोइ नित्य द्विजसत्तम ॥ ९७
पापबंधसों छूटि करारी । वहँ जाइहि जहँ रहत पुरारी ३ । ९८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेशिवराघवसंवादेशिव पूजामाहात्म्यकथनंनामदशोत्तरशततमोऽध्यायः ११० ॥

एकसौग्यारहवां अध्याय ॥

दो० । एकसौग्यारह महँ कहै शम्भु महात्म्य दृढ़ाय ॥
पापीनृपकी कहिकथा जोकहि प्रहरमलाय १
मरणसमय हरकहि गयहु शिवपुरको मतिधीर ॥
यदपिगयहु नहिंएकदिन धर्म्मकर्म्म केतीर २

इतनी कथा सुनकर श्रीरामचन्द्रजीने शम्भु मुनि से पूछा कि हे मुने ! महेशके नामका माहात्म्य व उनकी पूजाका माहात्म्य उनके नमस्कारका माहात्म्य उनके दर्शनका माहात्म्य १ जलदान का माहात्म्य व धूपदान का माहात्म्य व दीपदान गंधादिदान का माहात्म्य हमसे विस्तार सहित कहो २ शम्भुमुनि बोले कि एक २ नाम

का माहात्म्य विस्तारसहित नहीं वर्णन करसक्के इससे आपसे संक्षे-
परीतिसे कहतेहैं हे राघवजी ! आदरसहित सुनो ३ पूर्व्वके त्रेता
युगमें एक बड़ा वीर्य्यवान् विधृतनाम राजाहुआ जब उसका पिता
मृतकहुआ तो वह बालकही था राज्यसिंहासनपर बैठायागया ४ तब
उसने अपनीही अवस्थावाले सबलोगों को अपने समीपरक्खा जो
लोग वृद्धथे व विद्वान्थे वे उसके सम्मत से बाहर करदियेगये ५
अकार्य्य करनेवाले युवापुरुषही सब उसके सम्मतहुये जो महादुष्ट
स्वभावके थे जो सुन्दरी स्त्रियोंके ले आनेमें दक्ष थे व चौर्य्यकर्म्ममें
विशारद थे वेही सम्मतहुये ६ जो भांड़ोंकी वार्त्तामेंरत व हास्यकर्म्म
में निपुण थे वेही उस राजाके सम्मतहुये व जो वशीकरण के मंत्र
जानते व वशकरने की औषधें जानते ७ गाने नाचनेमें जो निपुण
थे व जुआ खेलने व झूंठी बड़ाई करने में निपुणथे उनको रक्खा व
उस राजाने अपने पिताके सङ्गरहनेवाले मंत्री दीवान आदि सबों
को निकाल बाहरकिया ८ व उन अपने दुष्टोंके विचारसे दुष्टही कार्य्य
आपभी करनेलगा व ऐसेही और भी बहुतसे दुष्टोंको उसने इकट्ठे
कराया ९ व इनसबों के कहनेसे सबसुहृद् शिष्टलोगोंको त्यागदिया
जो लोग उसकी छातीमें मूकामारें वा सामने थूकें हाहूकरें वेहीलोग
उसको प्रियलगें १० व जो भगके लक्षण बहुत अच्छीभांति जानें
व रतिके तन्त्रों में विशारदहों राजनीतिसे हीनहों वेही प्रियहों ऐसा
करनेसे उसका सबराज्य राजनीति रहितहोगया ११ हाथी घोड़े रथ
ऊँट छाग गाय बैल भैंसआदि जो कुछधनथा सबनष्टहोगया किसी
को भोजनादि समयपर नहीं मिला इससे सब नष्टहोगये १२ ऐसे
ही रत्न द्रव्य अन्नपानादिकके भी सबपदार्त्थ जातेरहे होते होते एक
अन्य राजाने चढ़ाईकरके जीतलिया वह राजा भागखड़ाहुआ १३
एक बड़ेभारी वनमें जाकर उसने पर्व्वतहीको अपना किलाबनाया
वहां थोड़ेसे लोगों के साथ रहकर चोरीकरने करानेलगा १४ सुवर्ण
वस्त्र अन्न रत्न गन्धादिक जो कुछ जहांकहीं सुने उनलोगों से हरा
लेवे उसमें द्रव्यहरण कर्म्ममें कभीकभी अपने साथियोंसहित बँधोई
में पड़ जायाकरे जब आहार न मिले तो अभक्ष्य पदार्त्थ भक्षण

करे १५ । १६ बैल भैंस आदिका मांसभी खालेनेलगा जब कि अन्न न मिले घोड़ेका मांस मनुष्यका मांसभी भोजनकरलेवे १७ ऐसा वृत्तान्त उसकाहुआ कि सन्ध्योपासनादि सब कर्म्मोंको उसने छोड़ दिया उसके एकमन्त्री का सुरापनामथा वह जातिका राक्षसथा १८ उसको सदा आहार ले आनेकी आज्ञारहती व भोजन उसीराक्षसही के सम्मतसे होताथा इसलिये नानादेशोंके आयेहुये सहस्रोंमनुष्यों को १९ सहस्रों मनुष्योंसे युक्त निर्दयीहोकर मारमार सब खागये व अपने मनकी स्त्रियां जहांकहीं वह राजासुने उस राक्षसके द्वारा मँगा लियाकरे २० कुछकालतक उनके सङ्ग भोगकरे फिर उनको मारकर खाजावे इसप्रकारसे बहुत से नर नारियोंको उसने मारकर खालिया इसप्रकार हजार वर्षतक खाते पीतेहुये उसने वनका राज्य किया होते होते अब अनाथ वृद्धहोनेके कारण दांत गिरपड़े मुखकी खाल सिकुड़गई बालपकगये शरीर शिथिलहोगया २१ । २२ व उसके स्थानके चालीसकोश चारोंओर कोई जीवजन्तु न रहगया धीरे धीरे सबोंको खालिया होते होते उस राजाकी मृत्युका दिन आ गया २३ मृत्युके समय उस राजाको स्नानकराके उसके मन्त्रियोंने भूमिपर लिटवाया व उसके सब अनुचर लोग सब ओरसे घेरकर खड़ेहुये २४ तब सुरापनाम मन्त्री बोला कि मुझको क्या करनेकी आज्ञाहोती है परन्तु राजा तो आसन्न मरणथाही व आयुहीन होही गयाथा इससे पीड़ितभीथा २५ नाभिके नीचेसे प्राण निकलआया था इससे बड़े कष्टसे कुछ बोला कि हे दैत्येन्द्र ! तुम कालको हर-लेवो इसको मारो मारो २६ ऐसाकहकर राजा मरगया व यमराज के दूत वहां आगये व मारतेहुये उनलोगों ने चित्र विचित्र लोहेकी जञ्जीरों में बांधनेका यत्नकिया २७ परन्तु सबपाश व दण्ड टूट टूट कर चूर्णहोगये व और सब अस्त्रोंके दण्ड चूर्णीभूतहोगये उस राजा के अङ्गोंमें स्पर्शमात्रहीसे सब चूर्णहोगये यहबड़ा अद्भुतसाहुआ २८ तब मृत्युने अपनेआप आकर राजाको पाशसे बांधा तब मृत्यु का पाशभी टूटगया इससे देखकर मृत्युने चिन्ताकी २९ कि हमने सब मनुष्योंकी मृत्युदेखीहै पर ऐसी कहींनहीं देखी जब मृत्यु इस-

प्रकार चिन्तामें तत्परहुई तो प्रतापवान् ज्वालामुखनाम गणको ३० वीरभद्रकी आज्ञाहुई वह शूल हाथमें लेकर वहां आनपहुँचा ज्वालामुखको इसप्रकार आयेहुये देखकर मृत्युवहांसे शीघ्र भागखड़ीहुई ३१ मृत्युको भागतेहुये देखकर ज्वालामुखने पुकारा कि अरे चोररे चोर खड़ीरह कहांजाती है ३२ हे चोर ! तू हमारे शूलपर चढ़नेसे इसपापसे छूटेगी ऐसा मृत्युसे कहकर ज्वालामुखने मृत्युको त्रिशूल से छेदलिया ३३ व शूल अपने कन्धेपरधरके दूतोंको रस्सीसे बांधदिया व पैरोंमें जञ्जीरसे बांधकर फिर राजाकेसमीप लेजाकर ३४ उसे श्रेष्ठ विमानपर चढ़ाकर गाते बजाते शोभायुक्त वीरभद्रके पासजाकर सब निवेदनकिया ३५ व वीरभद्रजीने भी सब महात्मा शङ्करजी से निवेदनकिया जोकि नानाप्रकारके मुनिगणों से व ब्रह्मादि सर्व्वदेवताओं से ३६ सेव्यमान होरहेथे व पार्वती के साथ बैठेहुयेथे प्रणामकरके राजाके समाचार निवेदन करके फिर शूलसे छिदेहुये मृत्युके समाचार निवेदनकिये ३७ व फिर प्रतापवान् वीरभद्र विश्वात्माजी चुपहोरहे ३८ व अग्निमुखको देखकर निन्दा करतेहुये शिवजी बोले कि हे गण ! तुमने यहसाहस कैसे किया व तुम इसमृत्युसे कैसे नहीं डरते जोकि यमराजसे भी अधिक है यह सब हमसे विचारसहित कहो ३९ महादेवजी के प्रणामकरके बड़े रोषसे मृत्युकीओर देखकर हर्षसे अग्निमुख नाचनेलगा व बोला कि इसमृत्युने चोरीका कर्म्मकिया इससे मैंने इसशूलपर चढ़ादिया ४० तब शिवजी ने मृत्युको छुड़ादिया व अन्य यमदूतों को पीड़ारहित करदिया व फिर मृत्युकीओर देखतेहुये उसमृत्युसे शिवजी बोले कि मरणके समयमें जिनके मुखसे हमारानाम निकलताहै ४१ व हममें व अन्यदेवमें जिनका चित्तलगताहै व हमारानाम चाहे सम्पूर्ण उच्चारण करे अथवा कुछहीन वर्ण उच्चारणकरे हम उनसबोंको अपनालोक देतेहैं सो इसने मरणकेसमयमें अपने मन्त्रीसे हमारा प्रहर ऐसानाम कहा ४२ सो इसमें प्र शब्द अधिकहै व हर हमारा नामहीहै बस जो कोई हमारा पददेनेवाले इसनामको वा अन्य हमारे नामको कहते हैं उनके समीप तुम न जायाकरो जाओभी तो दूरहीसे उनके प्रणाम

करो यहबात हमारी आज्ञासे यमराजसेभी कहना ४३ कि जो कोई हमारी नति व हमारानामलेतेहों व उपासना करतेहों वा हमारे दास व किंकरहों व जिनके कानोंमें शिव यहनाम सुनाई दियाहो उनका बिचार यम न कियाकरें व जो (नमश्शिवाय) यह हमारा पञ्चाक्षर मन्त्रजपतेहों वा शतरुद्रिय पाठकरतेहों ऐसे शिवके भक्तों में विचार न करना ४४ व हमारे नामको लेकर बिभूति व रुद्राक्ष धारणकरतेहों व जो हमारे आगे पुराण बांचतेहों चाहे सबप्रकारके महापाप उपपाप कियेहों उनके शासन करनेको हमीहैं यमराजको अधिकार नहींहै ४५ व औरभी जो पाप युक्त मायावी मनुष्यहैं व सदा पराया अन्न वस्त्रादि व परस्त्री भोगकरतेहैं पर अन्तमें जाकर काशीमें मृतक होतेहैं अथवा श्रीशैलपर जाकर मरतेहैं बस इनकी गतिको यमराज न बिचारें हम जोचाहेंगे वह गति देवेंगे ४६ जुआँ डाँस खटमल मृगादिक कीड़ च्यूँटी सर्प्प बीछू शूकर आदि जोकोई काशीमें मरतेहैं सबशंकरको प्राप्त होतेहैं ४७ इस हमारे नामकोजो हृदयरूपी मन्दिरमें ध्यानकरतेहैं व कीर्तन करतेहैं ४८ ॥

चौ० त्र्यम्बक सोम अर्द्धबिधुधारी । सोमसूर्य शिखिलोचनहारी ॥
त्रिनयनवेदत्रयीमयआपू । नमतविरूपनयन हतपापू १ ।
देवनाथ सुरमूर्त्ति तुम्हारे । सर्वयज्ञ पशुपति हितकारे ॥
महादेव देवन के देवा । करतअहैं हम तुम्हरी सेवा २ ।
तव शिवकह मृत्युहिसुपुकारी । हमसन बरमांगहु हितकारी ॥
तवस्तुतिसों हमभये प्रसन्ना । पैहहुसो जोहोय तमन्ना ३ ।
मृत्युकहा सुनु शम्भु महाना । पापिनके अघहतहु सयाना ॥
करहुकृपा हमदीननपाहीं । आन परमबर चाहतनाहीं ४ ।
कह शंकर मृति अब निजधामा । जाहुजहां यमबसत ससामा ॥
यहसुनि मृत्यु गयहु यमलोका । सकलकह्योतिनसोंगतशोका ५ ।
कहाशम्भुमुनि जोयह पावन । पुण्याख्यान भक्तमनभावन ॥
सुनिहि पापगतह्वै सो प्राणी । शिवपुरजाइहि मृषा न बाणी४६।५४

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेशिवराघवसंवादेएका-दशोत्तरशततमोऽध्यायः १११ ॥

एकसौबारहवांअध्याय ॥

दो० शतद्वादश शिवनामकर कीर्त्तनको इतिहास ॥
कलाशोणमुनिचरितकहि ताकरकियोप्रकास १
कलाहरणराक्षसकरण कलामरणशिवलोक ॥
तासुगमनशोणादिगति बिधुव्रतकरनअशोक २

श्रीशम्भुमुनि श्रीरामचन्द्रजीसे बोले कि हे राघव ! अब तुमसे एक उत्तम स्त्रीका आख्यान कहतेहैं जोकि शिवकानाम कीर्त्तनकरने से देवरात की कन्याने उत्तमफलपाया १ देवरातकी कन्याका कला नामथा वह अतिरूपवतीथी वह धनञ्जयके पुत्र शोणनामबुद्धिमान् मुनिकी भार्य्याहुई २ ये दोनों स्त्रीपुरुष अपने धर्म्म कर्ममें निष्ठथे एकसमय दोनों गंगास्नानकरनेकोगये वहां बड़ाभारी खज़ानापाया ३ गङ्गाके प्रवाहसे कूलकाकरारा जलमें गिरपड़ाथा व ये दोनों मृत्तिकालेनेकोगयेथे किनारेपरसे मृत्तिकाका ढीलालिये आतेथे इतने में एकबड़ाभारी घड़ादेखा ४ वहघड़ा चांदीकाथा व उसके ऊपरएक पत्थरधराथा उसेदेखकर शोणमुनि अपनीभार्य्या से यहबचन बोले कि इसविषयमें क्याकरनाचाहिये जिसमें कि हमलोगोंका हितहोवे ५ भार्य्याबोली कि स्त्रीकामतलेकर कुछभी कार्य्य करना न चाहिये स्त्रीसे कभी कोई गुप्तबार्त्ता न कहनी चाहिये व अप्रियबचनभी स्त्रीसे न कहनाचाहिये ६ जो स्त्रीके नेत्रोंकेसामने धनआजावे तो चाहिये कि ऐसे वचन कहकर उससे छिपावे ७ कि हमने नहींदेखा कि वहां कौनसी बस्तुहै शायद धनहै तो हम उसधनको न देखेंगी क्योंकि हमारे देखने से बड़ीबाधा उत्पन्न होजायगी ८ जो अन्य किसीसे जानेंगी तो फिर ज्ञानका विनिश्चय कैसे होगा क्याजानें हमतुम बार्त्ताकरतेहैं कोई छिपाहुआ मनुष्य सुनता न हो ९ यदि यों कोई न रहसकेगा तो किसी माया सेही कोई ठहराहोगा यदि मनुष्यों को माया न आती होगी तो कोई क्षेत्रपालही टिका होगा १० यदिक्षेत्रपाल न होगा तो कोई भैरव व ब्रह्मराक्षसही होगा ब्रह्मराक्षस भी न होगा तो राजाकीओरसे कोई महाबाधाहोगी ११ यदि राजा भी न जानपावेगा तो लेनदेनके ब्यवहार से जानजाने का सम्भवहै

कदाचित् छिपकर लेनदेनकियाजायगा राजा न जानपावेगा तो भी चोरोंकी बाधा तो बनीही रहेगी १२ सो अप्रमत्त आपको इसधनसे महाअनर्थहोगा क्योंकि बहुधा धनवालोंको भोगकरनेकी इच्छाहोती है १३ व भोगकरने से फिर दूसरी वस्तु के भोगकरने की इच्छा होती है जो कि सब जप तप आदि अनुष्ठानों का नाश करती है फिर पुरुषकी तो यह दुर्दशा धनसे होतीही है यदि कदाचित् कहीं स्त्रीने धनको जानलिया तो बड़ाही अनर्थ उत्पन्न होजाताहै तो भाव व योग सब जातारहताहै १४ क्योंकि स्त्रीजाति धनपाकर स्वतन्त्र होजातीहै व मारेरोषके सबकहीं कहने लगतीहै कि मेरे इतनाधनहै जब उसको अपनेरोष में विश्वास होजाता है तो फिर अनेक दोष उत्पन्नहोतेहैं १५ विश्वासपर विश्रम्भहोताहै उससे यातो कहीं चली जाती है या किसी दूसरेमें चित्त लगाये रहती है तो अन्यलोग उस को अपने चित्तमें मिलातेहैं व जब स्त्रियोंका चित्त अन्यलोगों का बिश्वास करने लगताहै तो नानाप्रकारके आचरण फिर उनके हो-जातेहैं १६ फिर क्या जब अन्यपुरुषका बिश्वास स्त्रीकरनेलगतीहै तो जिसी किसी युवा सुंदरपुरुषको देखतीहै उसीके ऊपर प्रीतिकरने लगतीहै प्रीतिकरनेसे फिर योगउत्पन्नहोताहै व योगसे हाथ इत्यादि का स्पर्श करनेसे फिर मैथुनकी संगति होतीहै १७ व निरन्तर मै-थुनहोने से फिर दूसरेके संग मैथुन करानेकी इच्छाहोती है क्योंकि फिर वह बिचारने लगतीहै कि हमारेपतिके मैथुनमें व इसके मैथुन में कुछ अन्तरहै तो अन्य पुरुष के मैथुनमें औरभी अन्तरहोगा बस इसीप्रकार अनास्थाहोजाती है १८ किसी के संग प्रीतिकरती है किसीको परखतीहै बस फिर क्या फिर तो चतुररसिक पुरुषों को ढूँढ़ने लगतीहै १९ बस जिससे जिससे वह वार्त्ता करतीहै वा जिस की जिसकी बातें सुनतीहै उसीके अनुकूल वार्त्ता करनेलगतीहै २० बस होते होते ऐसी धृष्टता उसको आजाती है कि फिर किसी की शंकाही नहीं मानती द्रव्य तो उसके पास विद्यमान होतीहीहै उसे लेकर जिस किसीको चाहतीहै अपने वशमें करलेतीहै व आपजानों स्वतन्त्रहीहोती उसे कोई कुछ कही नहीं सक्ता २१ सो पतिको

मरवाकर वह द्रव्य लेकर घात कराती है कदाचित् प्रथम पति मृतक होगया तो और भी सुन्दरी बनबैठती है २२ व कहने लगती है कि यहधन हमारी वैधव्यतामें धर्मार्थमें काम देगा व इससे विधवाकी दशामें धर्म्म करेंगी जब वैधव्य प्राप्तही होजातीहै २३ योनिमें जब खजुहट उठतीहै तो दिनमें वा रात्रि में एकान्तस्थानमें जाकर वस्त्र खोलकर व भगखोलकर २४ उपस्थपर दोनोंहाथ धरके यह वचन कहतीहै कि हे योने ! तुमने क्याकिया व कौनसा पापकियाहै २५ जो लिङ्ग तुममें नहीं पैठता तुमने लिङ्गका कौनसापाप कियाहै हम जानतीहैं कि हमारी सेवा इत्यादिके न करनेसे पतिने कुछपाप किया था २६ बस ऐसा कहकर रहजाती है यदि ऐसा कहनेपरभी फिर खजुहट उठती है तो अपनी अंगुली उसमें डालती है इस प्रकार बिचित्र चेष्टा करके जब खजुहटकी वृद्धिही होती जातीहै २७ तो दोनों हाथों से मींजतीहै व पीटकर फिर नोचतीहै व बार बार पैरों को कँपातीहै व मुखबायकर दुःखितहोतीहै २८ काष्ठमयी खट्वामें छपटकर उसमें कुचों को दबातीहै जैसे कि पतिके अंगमें कुच द-बातीथी फिर अपने चित्तकी बिचित्रिता देखकर दुष्टताको ग्रहण करलेतीहै २९ पुरके बाहरखड़ी होकर दिनमें अपने मनका व्यव-हार करने लगती है घरके अवलम्बमें सन्ध्यासमय व रात्रि में दि-शाओं व उपदिशाओं में ३० व अपना दूसरा वेष धारण करके जिसी किसी के संग भोग कराने लगती है जिसमें कि कोई कुछ न कहे इससे ऐसे कार्य्य छिपकर करती रहती है ३१ व किसी अज्ञात गृहमें जाकर बिहार करतीहै कलाबोली कि बस स्त्री जो धनको देख लेतीहै व पाजाती है तो इसदशाको प्राप्तहोतीहै ३२ इससे मुझसे पूछ कर आपको न कोई कार्यकरनाचाहिये न मुझकोधन दिखानाचाहिये यहसुनकर शोणमुनि बोला कि अच्छा यह ऐसाहीहै तो तू दूर जा कर खड़ीहो ३३ हमयहांसे मलमूत्र त्याग करनेकेलिये अलग जाते हैं व कलाने कहा मैंभी अलग जातीहूं जब ऐसा कहकर कला चली गई तो शोणने अपने वस्त्रके कई खण्ड करडाले ३४ व उनखण्डोंमें बहुत २ धन बांधलिया व जंघाभर नीचे खोदकर पृथ्वीमें ३५ सब

दो एक स्थानोंमें गाड़कर ऊपरसे बराबर करदिया व उसके ऊपर विष्ठा करदिया व वस्त्रमें लपेटकर उस घड़ेको कहीं फेंक दिया ३६ इसप्रकार सबके अज्ञातहीमें ऐसाकरके मुनि उस स्थानसे स्नानके लिये चला व उसकी भार्य्या वहांसे थोड़ीही दूरपर स्नानकरके व पार्व्वतीजी की पूजाकरके ३७ पतिसे गृहके जानेकी आज्ञा पाकर अपने स्थानकी ओर को चली उसको अकेली जाती हुई जानकर मारीच नाम राक्षस ३८ उसके पतिका रूप धारण करके कलासे यह बोला कि सप्तगोदावरी के तीर पर पवित्र व पापनाशन ३९ द्राक्षाराम के नाम से प्रसिद्ध एक स्थान है वहांपर भीमसेन सदा स्थित रहते हैं वह स्थान मनुष्यों को भुक्ति मुक्ति देता है व स्मरण करनेसे पापको नष्ट करता है ४० सो वहांको हम दोनोंजन चलेंगे हे सुन्दरि ! शीघ्र यहांसे चलो कला बोली कि स्नान करनेके लिये यहां आयेथे व अभी स्नान नहीं किया ४१ फिर ऐसा वचन तुम कैसे कहतेहो ऐसा तो तुमने धर्म्म कर्म्म के बीचमें कभी नहीं कहा व प्रकृतिके विरुद्ध कर्म्मकरने को उत्तम लोग उत्पात कहते हैं ४२ मारीचराक्षस बोला कि पतिके अनुकूल कर्म्म करनाही स्त्रियोंका धर्म है अब यह बात हमसे शीघ्रही बतावो कि तुम पतिके अनुकूलहो अथवा प्रतिकूलहो ४३ तब चुपरहकर वह पतिव्रता बिचारनेलगी कि यह हमारा पतिहै कि नहींहै फिर सोचा कि पतिहीहै इससे वह भी उसके संग चलखड़ीहुई व जाते २ एक वनके मध्यमें पहुँची ४४ व बोली कि अब मध्याह्नका समय आगयाहै इससे मध्याह्नका सन्ध्यावन्दनादि कर्म्म कीजिये राक्षस इस वचनको सुनकर यह जगह अनुष्ठानके लायक नहींहै ४५ जहांको जानाहै वहांको दोनों जनेचलें फिर मध्याह्न व सन्ध्या जो कुछ होगा करेंगे यह कहकर थोड़ी दूर चलकर एकपर्व्वत की गुहा देखकर व वहीं एक तड़ाग देखकर ४६ राक्षसने कहा कि बस इस स्थानपर हम तुम दोनों टिक कर स्नान करेंगे ऐसा कहकर उस तड़ाग में स्नानकरके फलाहार इकट्ठा किया ४७ जब भोजन करनेका समय आया तो कलाने मनमें पार्व्वती व शिवजीका ध्यानकिया कि यह मेरा पतिहै वा नहींहै यह

ध्यान किया ४८ हे पार्व्वति ! इससे तुम्हारा ध्यान करतीहूं ध्यान करतेही उस पतिव्रताने निश्चय कर लिया कि यह चोर राक्षस है मेरा पति नहींहै बस भयभीत होकर नीचेको मुखकरके रोदन करती हुई ४९ कष्ट आपतित हुआ व बड़ापापहुआ ऐसा कहकर पृथ्वीपर गिरपड़ी उसको रोतीहुई देखकर उस पापिष्ठ राक्षसने चाहा ५० कि इसके संग ढिठाई करूं हाथ चलाऊं फिर हाथ चलायाभी पर विना इसकी इच्छाके कुछ न करसका फिर जबरदस्ती करने पर जब वह राक्षस उद्यत हुआ ५१ तो जंघासे लेकर नाभिपर्य्यन्त कलाने एक शिलाकी आड़ करली वह शिला वज्ररूप होगई उस पतिव्रताकी लज्जा नहीं जानेपाई इस बातको देखकर राक्षसने ५२ बिचारा कि भोगकरना तो इसकेसङ्ग असम्भव दीखता है पर इसे मारकर खाजाऊंगा ऐसा कहकर खड्ग घुमाकर उसका शिरकाटनेपर उद्यत हुआ ५३ तब कलाने कहा मैं कलाहूं जब मेरापति जानेगा तब तुझे शाप देगा इससे (माहर) मुझको न मार जैसेही उसने ऐसा वचन कहाहै कि उस राक्षस ने शिरकाटडाला ५४ जब वह बेचारी पतिव्रता इसप्रकारसे मारीगई तो वहांपर शिवजी के दूतआये दूत सब विचित्र भूषण धारणकिये व नानाप्रकारके आयुध धारणकियेथे ५५ बस उस पतिव्रताको विमानपर चढ़ाकर पार्व्वती शिवके लोकको गये जब वह वहां पहुँची तो पार्व्वतीजीने बड़े हर्ष से उसकी पूजा करके ५६ अपने पैरोंपर प्रणाम करतीहुई शुद्धरूपको देखकर पार्व्वतीजी उससे बोलीं कि हम तुम्हारे पातिव्रत धर्म्म से सन्तुष्टहुई हैं इससे तुमको अभीष्ट वरदेवेंगी ५७ कला बोली कि मुझको अपनी दासीभावको पहुँचावो क्योंकि मुझको तुम्हारे चरणकमल प्रिय हैं अन्य बहुत मांगनेसे क्याहै पार्वतीजीने कहा (तथास्तु) ऐसाहीहो ५८ बस ऐसा पार्व्वतीजीके कहतेही कला इन्द्रादिकों की स्त्रियोंसे पूजितहोकर पार्व्वतीकी सेवामें रहनेलगी इतने में पीछे से शोणमुनिभी अपने गृहमें पहुँचे ५९ व गृहमें अपनी भार्य्याको न देखकर ध्यानयोगमें तत्पर हुये तब ज्ञानदृष्टिसे देखा कि उसे राक्षसने इस रीति से मार डाला व मारकर वह शिवलोकमें पार्व्वतीजीके समीप पहुँचगई ६०

पार्व्वतीजीने वरभीदियाहै इस बातको ज्ञानचक्षुसे जानकर मुनिने कुछ दुःखित मन करलिया व कुछकाल ध्यानकरके गृहसे लौटकर उससमय ६१ अपने श्वशुर देवरातमुनिके समीपको गये यह सब उनसे कहकर देवरातके सहित विश्वामित्रजीके पास दोनोंजनेगये ६२ विश्वामित्र देवरात व शोण तीनों फिर वसिष्ठजीके समीपको गये व वसिष्ठजीसे सबकहा तो वसिष्ठजी उनतीनों मुनियोंसे बोले कि तुमलोग प्रथम कैलास को जावो वहां महादेवजी के दर्शनकरो ६३ व फिर शिवकी आज्ञा पाकर पार्व्वतीजीके मन्दिर को जावो व अपना यथार्त्थ वृत्तान्त फिर देवीजी से कहो ६४ यह सुनकर ऐसा ही करेंगे यहकहकर वे मुनिवरलोग शङ्करजी के स्थान कैलास पर्व्वत परको गये व जाकर देवेशजीके प्रणामकरके वीरभद्रसे पूजित हुये ६५ व उन्होंने जनाया कि शोणकी भार्य्या मरगईहै तब शिवजी मुनीन्द्रोंसे बोले कि यह वृत्तान्त हम जानतेहैं ६६ कि इसकी अकाल मृत्यु हुईहै वास्तव में इसकी सौवर्ष अभी आयु और बाकी है व जो लोग अकालमें मरतेहैं उनका फिर जीवन होसक्काहै ६७ यह स्त्री अभी दशपुत्र उत्पन्न करेगी व रूप सौभाग्य से युक्त होगी सो आप लोगभी इसबातका निश्चयकरके तब हमारे समीपको आयेहैं ६८ व यमलोकके रहनेवालेभी सब इस निश्चयको जानतेहैं हमारेलोक को जो चलेजातेहैं उनकी फिर और गति नहीं होती ६९ इसने प्राण निकलनेके समय हमारे नामका कीर्तन कियाथा इससे यमराजका लिखना स्पष्टहोगया आयुका निर्णय कैसारहा ७० अथवा जो कुछ हुआ सो हुआ यह सब वृत्तान्त तुमलोग जाकर पार्व्वती से कहो तब वे तीनों ब्राह्मण पार्व्वतीजीके चरणों के दर्शनको गये ७१ व सबके सब माताजीके प्रणामकरके विश्वामित्रजी यह बोले कि हे मातः ! पूर्व्वकालमें तुमने बहुतसे दीन अनाथ दुर्ब्बल भार्य्याहीन पितृहीन बालकोंकी ७२ रक्षाकी है हे मातः ! तुम सदा इष्ट देने वाली हुईहो यह कला हमारी पौत्रीहै सो तुम्हारी आराधनाकरके इस शोणनाम मुनिको पति पायाहै यह तुम्हारीही तपस्याका फलहै सो अब जिस तप से व जिस दान से ७३ । ७४ अथवा जिस उपवास

से फिर कला इस शोण को मिलजावे हे मातः ! वह उपाय हमसे बतावो क्योंकि यह बिना सन्तानही के मृतकहोगईहै इसके पुत्रादिक होते तो उनका दियाहुआ अन्न हमलोग प्रमातामह व मातामहोंकोभी मिलता इस कलाका दियाहुआ हमलोग कैसे ग्रहणकरें ७५ पार्व्वतीजी बोलीं कि जैसी भार्य्या शोणको चाहिये हम वैसी ही देदेवें इसको तो अब हम नहीं छोड़सक्तीं नहीं तो कहो मुनिजी तुम क्या मांगतेहो ७६ विश्वामित्रजी बोले कि तुम हमारी माताहो इससे हमने निश्शङ्कहोकर जो कुछ कहनाथा तुमसे कहदिया अब हे मातः ! जो कुछ कहनाहोगा वह यह शोणमुनि तुमसे कहेगा ७७ शोणमुनि बोले कि उसी भार्य्याके ऊपर मेरी उत्कट प्रीतिहै इससे वही भार्य्या मुझको दीजिये नहीं तो मैं मरजाऊँगा ७८ पार्व्वतीजी बोलीं कि हाँ भार्य्या व पति दोनों समानरूप अवस्थाके होनेचाहियें क्योंकि जो समान नहीं होते वे निन्दित होतेहैं यह तुम्हारे योग्य नहींहै इससे हम और दूसरी तुम्हारेयोग्य भार्य्या देवेंगी ७९ हमारे मन्दिरको देह छोड़कर आईहुई इसको न छोड़ेंगी तब शोणमुनि फिर बोले कि यदि तुम हमको इसको न देवोगी अन्य स्त्री दिया चाहतीहो तो ८० राज्यदेवो व महेश्वरजी में भक्तिदेवो बस यही उत्तम वर हमचाहतेहैं पार्व्वतीजीने कहा कि अच्छा ऐसाही होगा ऐसा कहकर फिर मुनियों से बोलीं ८१ कि तुमलोग यहां पर तीन दिनरहो व भोजन हमारे यहांकरो व प्रति सोमवारको महादेवजीकी प्रसन्नताके लिये व्रत रहो और आठ ब्राह्मणोंको भोजन करावो सो चाहे यहां निवासकरके व्रतकरो चाहे अन्यत्र जहांकहीं इच्छाहो वहीं करो ८२ । ८३ परन्तु एक वर्षभर प्रतिसोमवारको करो जब वर्ष पूर्ण होजावे तो चाँदीकी चारनिष्क भरकी महेश्वरजीकी मूर्ति बनवावो चारनिष्ककी न होसके तो दोनिष्ककी मूर्त्ति बनवावो ८४ उस मूर्त्ति को धोती अँगौछा उजला चढ़ावो व चामर और व्यजन भी उत्तम चढ़ावो खराऊँ जूता छतुरी येसब ब्राह्मणको देदेवो ८५ व अपनी शक्ति के अनुसार दक्षिणादेकर फिर ब्राह्मणोंको बिदाकरो यह उद्यापन जो कोई इस व्रतको करे वह आदि मध्य व अन्त में करे ८६ और प्रति

सोमवारको परमात्मा महादेवजीकी पूजा करताहै ८७ पूजाका मंत्र यहहै कि—तत्पुरुषस्यविद्महेमहादेवस्यधीमहितन्नोरुद्रःप्रचोदयात्॥ अर्थात् तत्पुरुषको जानतेहैं व महादेवका ध्यानकरतेहैं व रुद्र हमको प्रेरितकरे ८८ सो इस मन्त्र से स्थण्डिल में देवताकी पूजा करे अथवा आठप्रकार की प्रतिमाओं में से किसी प्रतिमा में व आप व्रत के दिन एकबार भोजन करके ब्रह्मचर्य से रहे ८९ यह शिवको सन्तुष्ट करनेवाला शुभ सोमव्रत हमने कहा जो इसरीतिकी भक्ति से करता है चाहे स्त्रीहो वा पुरुषहो ९० जैसे कि मनुष्य के पीछे छाया रहती है वैसेही वह नित्य शङ्कर का अनुगामी रहता है पार्व्वती जी बोलीं कि आज सोमदिन है इस से मध्याह्न के उस पार भोजन करना ९१ हे सबमुनिलोगो! पहले पूर्वाह्णकी क्रिया करलेना हे सत्तमलोगो! मध्याह्नकी क्रिया करकेही भोजन भी करना ९२ माता पार्व्वती जी का ऐसा वचन सुनकर अच्छा ऐसाही करेंगे यह कहकर व नमस्कार करके अनुष्ठान करने के लिये सबके सब भागीरथीजी के तीर को गये ९३ व वहां पहुँचकर सबोंने मध्यावृत्ति से सङ्गममें मध्याह्नकी सब क्रियाकी व फिर षोड़श उपचारोंसे विश्वेश्वरजी की पूजाकी ९४ फिर पार्व्वतीजीके गृहमें आकर व देवीजी के प्रणामकरके लोकमाता की आज्ञासे व्रत के उद्यापनके लिये ब्राह्मणों की पूजा में तत्परहुये ९५ चरण धोने आदि पूजाके जितने उपचार होते हैं सबको उपकल्पित किया व पञ्चगन्ध लेकर उन मुनियों के अंगों में लगाया ९६ क्योंकि जो कोई पञ्चगन्ध ब्राह्मणों के अर्प्पण करता है वह बड़ाभारी राज्यपाताहै व कामसमान रूप पाकर स्त्रियों को प्रिय होताहै ९७ व जोकोई पञ्चगन्ध विष्णु भगवान्को देताहै वहभी कामसदृश रूपवान् होता है चाहे कामसे अथवा अकाम से जो कोई पञ्चगन्धसे पूजनकरताहै पांच वर्षतक कैलासमें बासकरताहै ९८ व सब गन्धों से युक्तहोकर नानाप्रकारके भोगविलास करके अपने यथेष्ट पदार्थ भोगनेके लिये फिर राजाहोताहै ९९ व कस्तूरी चन्दन कपूर अगुरु व तगर बस इन्हींको एकमें मिलाने से पञ्चगन्धक बनजाता है जोकि सब कार्य्यों में शोभन होताहै १०० जब इस प्रकारसे उन मुनियोंने

अपने व्रतके उद्यापनके लिये उनमहात्मा ब्राह्मणोंके अंगोंमें पञ्चगन्ध लगाया व वे सब आनन्दसे बैठे उसी बीचमें एक वृद्धब्राह्मण दुर्ब्बल गात आया १ उन्मत्तवेषधारी नग्न वृद्धतासे कम्पितशरीर शिरमें जिसके बाल न थे खांसी व दम आरहीथी हुचकी सेभी युक्त व क्षुधासे व्याकुलथा २ व उसकी दाढ़ी मूंछोंके बालोंमें राललगी थी व खँखार मुहँसे निकलता चला आताथा इससे नीचेको मुखकिये पद इधरउधर पड़तेथे व उसके संग एकस्त्री सोलहवर्षकी अवस्थाकी सब आभूषणोंसे भूषित ३ रूपसौन्दर्य्यसे युक्त लोकमें उत्कृष्ट सुरूपिणी व रूपवान्पुरुषोंको बार २ देखतीहुई ४ गानकरती व फिर नाचती हुई व अपने उस पतिको देखकर हँसतीहुई उस वृद्धपतिसे कहरही थी कि जल्दी आवो देर मत करो हमको क्षुधा लगीहै ५ हे वृद्ध ! तुम्हारे हाथको ग्रहणकरके हम नित्य दुःखितहैं भूषणवस्त्रघ्राण पुष्पमाला नानाप्रकारके चन्दनादिविलेपन ६ हासगाना मदिरापान नाना प्रकारके मंडनकेपदार्थ सुंदरगृह सबबस्तुओं की समृद्धि येसब कामकी वृद्धिके लिये होतेहैं ७ व सबकामोंका प्रयोजन एकरतिहै सबसंसार के सुख एकओर व रति एकओर होतीहै ८ लोगों ने इनदोनोंको पूर्व्व कालमें तौलाथा अन्यपदार्थोंसे रति सौगुणी अधिक ठहरी इससे हमसी स्त्री आपमे पतिको पाकर क्याकरेगी ९ ऐसी औरभी बहुत सी बातेंकहतीहुई उसस्त्रीका हाथपकड़ेहुये आया व उसके उत्तरमें कहा कि क्याकरें हमारा भाग्यही ऐसाहै १० परन्तु हमको ऐसा जान कर अब ऐसे दुर्वचनोंसे न मारो यह कहताहुआ वह ब्राह्मण पार्व्वती जीके मन्दिरमें आया ११ बिनाजानेबूझे पार्व्वतीजीसे यहवचन उसने कहा पर मुनियोंको भी सुनाया कि हे मुनियो ! यहां आयेहुये मुझको अन्नका अर्थी समझो १२ भोजन के अवसरमें आयेहुये मुझको ब्राह्मणोंके लिये जो अन्नहो वह खिलावो व फिर उसने अपनी भार्य्याके वचन कहे व कहा कि वह मुनि कहांहै जो भार्य्या चाहता है १३ उस अन्धे ब्राह्मणके सब ऐसे दृढ़ वचन सुनकर पार्व्वतीजी बोलीं कि हे मुनियो ! चरणधोकर इनदोनों स्त्री पुरुषोंको आसनपर बैठाओ १४ व सुवर्णके पात्रों में धरकर भोजन अर्प्पण करो क्योंकि

यह स्त्री व यह ब्राह्मण दोनों बड़े वेदवादी विदित होते हैं १५ तब अरुन्धती को बुलाकर पार्व्वतीजी ने आभूषित कराया व कला से कहा कि तुम व अरुन्धती दोनोंजनी व पतिव्रता अनसूया १६ सब पदार्त्थों को परोसो पार्व्वती की आज्ञा से माला चन्दन अक्षत आभूषण लियेहुये तीनों षट्रस अलग अलग परोसनेलगीं १७ जब सब ब्राह्मणलोग भोजन करनेलगे तो वह जो नग्न ब्राह्मण अपनी ब्राह्मणीको लेकर आयाथा व भोजनकरनेकोभी बैठगयाथा एकक्षण-मात्रमें जितने कि पदार्त्थ भोजनके लियेथे सबखागया बस अरुंधती आदि स्त्रियां उसे और कुछ न देसकीं १८ तब पार्व्वतीजी उठकर आप परोसनेपर उद्यतहुईं पर उन्होंने भी जो कुछ दिया उस वृद्ध ब्राह्मणने क्षणमात्र में सब खालिया १९ व अपनी स्त्रीसहित उसने चाहा कि जितना इस पात्रमें बनायाहुआ अन्नहै सब खाजाऊँ पार्व्वतीजीने उस ब्राह्मणकी वैसी रुचि जानकर पात्रका सबअन्न उसे देदिया कि अक्षयहोवे २० तब उसने अपने बायें हाथ से भोजन करना चाहा तब पार्व्वतीजी ने कहा कि अच्छा अब तुम्हारे इस वामहाथकी अक्षय तृप्तिहो यह कहकर बायें हाथ में अन्नदिया २१ तब वह हाथ तो भरगया परन्तु उस ब्राह्मणने दूसराहाथ निकालकर भोजनकरनाचाहा इसप्रकार एक दूसरेके पीछे उस ब्राह्मणने सहस्र हाथों से भोजन करनाचाहा २२ व बार बार देकर देवीजी सन्तुष्ट बनीरहीं कोपयुक्त न हुईं इसप्रकार वह ब्राह्मण पार्व्वतीजी का चित्त अन्यथा न करसका २३ तब पार्व्वतीजी ने हाथधोकर सुगन्धित ताम्बूल अर्प्पणकिया तब वह ब्राह्मण गिरिजाजीसे बोला कि हमको तुमने बहुत सन्तुष्ट किया अब वरमांगो २४ तब पार्व्वतीजी बोलीं कि हे ब्राह्मणोत्तम! जो तुम हमको वरदेसक्तेहो तो भला कहो तो जिससे कि हमारे पति शङ्करजी हैं तो हमको वरसे क्या कार्य्य है २५ तब वह ब्राह्मण देवीजीसे बोला कि तुम्हारे शङ्कर कैसेहैं तुम्हारे योग्य हैं या नहीं यदि तुम्हारेही तरहके वेभीहों तो तुम उनके योग्य नहीं हो व वे तुम्हारे योग्य न होंगे २६ रूपदक्षता शुभांगता जो सबपदार्थ हममें न होते तो ऐसी भार्य्या हमारे अधीन कैसे होतीं २७

पार्व्वतीजी बोलीं कि हे ब्रह्मन्! तुम्हारी भार्य्याके वचनभी हमने सुनेहैं जैसा तुमको कहतीथी व अब तुम्हारे भी वचन हमने सुने परन्तु हमको तो जानपड़ताहै कि तुम्हारी स्त्रीसे व तुमसे नहीं बनती बतावो तो क्या बात है २८ ब्राह्मणदेव बोले कि तुम जो हमारी गोदमें आबैठो तो हम तुम्हारा बड़ा आदरकरेंगे परन्तु यदि तुम्हारा चित्त चलायमान हो तो पातिव्रतधर्म तुम्हारे कैसे रहा २९ पार्व्वती जी बोलीं कि हे द्विजश्रेष्ठ! एक शङ्करहीकी गोदपरचढ़ना हमाराव्रत है इस भवानी के चित्तको जानकर वे ब्राह्मणरूपी परमेश्वर ३० सोलहवर्ष की अवस्थाके होगये व सुंदर चिकने बालोंको बांधकर सुन्दर मनोहर नेत्र धारणकरके गोदुग्धके समान श्वेतशरीरको धारण करलिया ३१ कोटि कन्दर्पकी सौन्दर्य्यसे युक्त व सब आभरणों से भूषित होगये व अपने पास स्थित उस स्त्रीके कांधेपर अपने दोनों हाथ फैलादिये ३२ व कहा कि बस जैसे हम इस स्त्रीके साथ उन्मत्तसे होकर गातेहैं वैसेही तुम्हारे साथभी गावेंगे यदि तुम हमारी भार्य्या होजावोगी इतना कहकर उन पार्व्वतीजी को भी शम्भु जीने हाथसे अपने पास खींचलिया ३३ व दोनों स्त्रियोंके कन्धोंपर एक २ हाथ धरके गाने व नाचनेलगे व आनंदकी समृद्धि सब अंगों में छागई क्योंकि समयका गानही ऐसा होताहै ३४ सो ऐसे शिव का ध्यानकरनेसे कोटिजन्मके कियेहुये पापछूटजाते हैं व अनेक दुःख जातेरहते हैं व उसके यहां सब हर्षही होते हैं ३५ इसीसे फिर उस समय उनमुनियोंने वैसेही दो स्त्रियोंके मध्यमें नाचतेहुये शिवजीकी स्तुतिकी तब महादेवजीने अपनी उसस्त्रीकारूप श्रीहरिका बनादिया तब सन्तुष्टहोकर पार्व्वतीजी महादेवजीसे बोलीं कि ३६ भला आप क्यों ऐसेभावमें टिककर यहांआये विष्णुभगवान्को स्त्रीबनाकर क्यों यहांलाये अपने पूर्व्वरूपसे क्यों नहींआये व ये विष्णुजीभी अपने रूपसे क्यों न आये ३७ शिवजीबोले कि हमनेजाना कि इन मुनियों को तुमने व्रतकरायाहै व व्रतके अंतमें अतिथियोंको भोजनदेना चाहिये क्योंकि व्रतके अन्तमें जो कोई अतिथिको उत्तम भोजनदेताहै व भोजन देनेमें कुछ विषाद नहीं करताहै ३८ व विषादहोनेपर व्रतका

फल अच्छा नहींहोता सो हे देवि ! जितने सोमवारोंके व्रत इन मुनियोंने कियेहैं उतने सैकड़ोंवर्षोंतक ३९ सबभोगों से युक्तहोकर हमारे लोक में बसेंगे व इसलोक में सुपुत्र बन्धु स्त्रीसमेत पूर्णआयु वेदमें कही हुई नानाप्रकारके सुख करके ४० पीछे काशीपुरीमें जन्मलेकर मरकर फिर मुक्तिपावेगा शम्भुमुनि श्रीरामचन्द्रजी से बोले कि यह कहकर महादेवजी वहीं स्थितही थे कि मुनियों ने उनके तीनबार प्रदक्षिणा ४१ करके फिर पांचबार नमस्कार करके फिर एकबार प्रदक्षिणा करके फिर दण्डवत्प्रणाम किया व महादेवजी से बिदाहुये ४२ व शोणमुनिने अपनी अनिन्दित अभीष्ट भार्य्या फिरपाई व भरतखण्डमें आकर राज्यपाया व उस ब्राह्मणने धर्म्म से प्रजाका पालनकिया ४३ मनुष्यों के सम्पूर्ण भोगविलासों को पाया व शिव का बड़ाभक्त वहहुआ नित्य देवपूजन में तत्पर रहता व नित्य ब्राह्मणों की पूजाकरता ४४ ॥

चौ० । नित्यदान ब्राह्मण कहँ देई । नित्य यज्ञकरि शुभफल लेई ॥
नित्य श्रवणकरु सुभगपुराना । मरेगयहु शिवपुरहि महाना १ । ४५
कहा शम्भुमुनि सुनु रघुराजा । शम्भुनाम कीर्त्तन शुभ भ्राजा ॥
तुमसन हम प्रसङ्गसों गावा । सुनतै जो अघनिकर नशावा २ । ४६
सब कल्याणदायि शिवदायी । भार्य्या राज्यभोग प्रद आयी ॥
अरुशिवभक्तिदायिअतिगोपन।जाहिकाहिनहिंदेइयचोपन३।१४७॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेशिवराघवसंवादे शिवनाममाहात्म्येद्वादशोत्तरशततमोऽध्यायः ११२ ॥

एकसौतेरहवां अध्याय ॥

दो० । शतत्रयदश दशरथ नृपति पूजित बिप्रअनेक ॥
शिवपूजनकरि स्वर्गसुख भोगतसहित विवेक १
यही कथा इतिहासयुत भाषी शम्भु मुनीश ॥
देखहिं सुजन लगायचित जो सबभांति कवीश २

श्रीरामचन्द्रजीने शम्भुमुनिसे पूँछा कि ये जो आकाशमें विमानोंपरचढ़ेहुये नानाप्रकारके रूपधारणकिये सबकामोंके फलोंसे युक्त सुन्दरी स्त्रियों से युक्त पुरुष दिखाईदेते हैं व सैकड़ों स्त्रियां १ जोकि

सहस्रों नरनारियों से पूजितहोतीहैं व उनमें बीसस्त्रियां तो गानक-रतीहैं ये रूप सुन्दरतामें बहुत कोमलहैं २ व एक ताम्बूलकी पिटारी हाथ में लिये है व चामर तो बहुतसी हाथों में लियेहैं व बहुतसी दो २ तालके पङ्खे हाथोंमें लिये हैं व डुलारही हैं ३ व उनके बीच में एक तकिया हाथमेंलिये हैं व बहुतसी हाथजोड़े एक पुरुषकी स्तुति कररही हैं ४ व सब नानाप्रकारके हाथोंसे अपनामुख प्रफु-ल्लित कररही हैं व एक बिमानपर बहुतसे चन्द्रमाके समान प्रका-शित दिखाई देते हैं ५ व सैकड़ों स्त्रियोंसे युक्त सैकड़ों बिमानों पर चढ़ेहुये सैकड़ों ईश्वरलोग दिखाईदेतेहैं हे मुनिजी! ये पुण्य करने वाले लोगहैं अथवा बिष्णुकी मायाहै ६ शम्भुमुनिबोले कि ये सब गृहस्थाश्रमवासी पुण्यात्मा ब्राह्मणलोगहैं जिनको कि आपकेपिता दशरथजीने ग्रासदान कियाथा ७ उनलोगों का चित्त किसी समय परमेश्वरके भजनमें लगगया उनलोगों ने कहा कि जैसे हमलोग यहां सुखीहैं कोई जीविका हमको नहीं करनीपड़ती ८ व हमलोगों के स्थानपर सैकड़ों मनुष्य जीतेरहतेहैं सो अब हमलोग कोईऐसी पुण्यकरें जिससे सुखपूर्व्वक ९ सुन्दरी स्त्रियोंसे पूजित होकर राज्य सुख भोगतेहुये जरामरणसे हीन सदा युवावस्थाको प्राप्त १० सुख भोगकरते रहें यह बिचारांश करके सब ब्राह्मण लोग वसिष्ठमुनि के आश्रम को गये आयेहुये उन लोगों का उचित सत्कारकरके वसिष्ठजी यहवाक्य बोले कि ११ हे द्विजोत्तम लोगो! तुम लोग किसलिये यहां आये शीघ्रही कहो तब उनलोगोंने ऊपरलिखित अपना विचारकहा कि हमसब लोग यहकांक्षा करते हैं कि सम्पूर्ण सम्पदाओंसे युक्त १२ कामग बिमानपर सवारहोवें सो हेगुरो! दी-जिये उनकाप्रयोजन सुनके निश्चयकरके वसिष्ठजी बोले कि १३ हे ब्राह्मणो! यदि तुमलोग ऐसाचाहतेहो तोसदा पुराणश्रवणकरो क्यों-कि पुराण सुननेसे पाप नष्टहोजातेहैं व धर्म्म अर्त्थ काम और मोक्ष भी उसी पुराणहीके सुननेमें दिखाई देताहै १४ इसबातको सुनकर सबब्राह्मणलोग पुराणजाननेमें कुशल सबशास्त्रोंमें विशारद अंगिरा मुनिके समीपको गये १५ जोकि सबशास्त्रों व पुराणोंके जाननेवाले

व सदा सत्कर्म्म करतेरहतेथे नमस्कारकरके यह सब बोले कि हम लोग सफलजीवी हैं १६ व कृतकृत्यहैं जिससे कि साक्षात् आपको हमलोगोंने देखा श्रीअंगिरा मुनिबोले कि जिसकार्य्यके लिये आप लोग आयेहो वहकार्य्य कहो हमकरें १७ हमारीजान तुमलोग पुराणसुननेके लिये यहांआयेहो इससे सबपापोंके नाशनेवाला पुराण सुननेका बिधान हम तुमलोगोंसे कहेंगे १८ वह सबज्ञान देनेवाला वेदके निश्चय ज्ञानसे उत्पन्न शिवभक्ति देनेवाला व श्रीविष्णुभक्ति देनेवाला शुभदायक हृदयको आनन्ददायी १९ बिचित्र अपनीगति प्राप्तकरनेवाला ज्ञान देनेवाला रमणी देनेवाला नानाप्रकारके शुभ ज्ञानोंसे युक्त रतितंत्रके प्रकाशनेवाला २० भुक्ति मुक्तिके देनेमें प्रधान बिधि दिखानेमें दीपकरूप बिचित्र भक्ति कहनेवाला भक्तिके साहसके कीर्त्तन करनेवाला २१ ब्रत प्रतिष्ठादानादिके वर्णन करने वाला भस्म पूजादि धारण करने व करनेका बिधान कहनेवाला सब पुराणों में पद्मपुराणहै जोकि ब्रह्मरूप पद्मसे निर्म्मित हुआहै २२ महेश्वरजीने कहाहै इसपुराणमें वैष्णवों व शैवोंकी आकृति का वर्णनहै इत्यादि बहुतसी बातें अन्यत्र व पद्मपुराण मेंभी कहीगई हैं २३ व यही पुराणोंकी कथा पूर्व्वकाल में दिलीपराजाके पूछने पर वसिष्ठमुनिने उनसे कहीहै हेमुनिवरो! वहसुनो सबज्ञात होजायगा २४ यहसुनकर ब्राह्मणलोग पुराणसुननेकी इच्छा से मुनि से बोले कि हे मुनिजी! पुराण कैसे श्रवणकियाजाताहै इससमय क्याकरना चाहिये २५ अंगिराजीने कहा सनातनधर्म्म पुराण श्रवणका सुनो प्रथम पुराण जाननेवाले पण्डित के प्रणाम करे फिर उसको कोई ऊँचा उत्तम आसनदेवे २६ व कहे कि बिराजिये जब वह अच्छेप्रकार आसनपर बैठे तो गन्ध पुष्पोंसे उसकी पूजाकरे अपने खानेके योग्य ताम्बूलादि पदार्थ जो अधिक उत्तमहो उसेखिलावे २७ तब फिर उस पौराणिक से विनयपूर्व्वक कहे कि ब्रह्मन् अब पुण्यकारी पौराणिकी कथा कहिये जब कथा होनेलगे तो सुननेवाले को चाहिये कि न खट्वापर बैठकर सुने न किसी ऊँचे आसन पर बैठकर सुने २८ किन्तु धर्म्म अर्थ कामकी सिद्धिके लिये नीचे आसनपर

बैठकरसुने व ॐङ्कारसहित पुराणवक्ता को चाहिये कि सुनो यहकह-
कर आगे यहमन्त्र पढ़े २९ कि हे हरे ! व हे हर ! हम तुम्हारे नम-
स्कार करतेहैं गणेश सरस्वती व अपने इष्टदेव के नमस्कारकरके
तब पुराण कहे ३० प्रतिदिन चारघड़ी अथवा जितनी देरतक इ-
च्छाहो पुराणसुनकर दिन समाप्तकरे फिर अन्य कृत्यकरे ३१ श्रोता
को चाहिये कि सुनने के समय चुपचाप सुने व उसका स्मरणरक्खे
क्योंकि ऐसा न करनेपर भारती वृद्धाहोकर मूकताको पहुँचजाती है
३२ व पुराणका श्रोता सदा वक्ताको ताम्बूलदेतारहे नहीं तो भारती
इसमें भी मूकहोजातीहै व वक्ताकी जीविकाके लिये अपनी सामर्थ्य
के अनुसार पुराणके आरम्भकरनेके समयमें कुछवस्त्र भूषणादि देने
चाहियें ३३ एकनो सूक्ष्मवस्त्र रेशमी वा ऊनी देनाचाहिये व धोती
अँगोछा दो वस्त्र ये अवश्य देनेचाहियें ३४ व आसन तो महाचित्र
विचित्र पुष्ट कोमल बिछौनेसे युक्तकरके देनाचाहिये व सुवर्ण गाय
भूमि गृह आदि जैसीसामर्थ्यहो सबदेवे ३५ हे विपेन्द्रो ! यहसब पूर्व-
कालमें दक्षिणामूर्त्ति शङ्करजीने सब देवताओं व मुनियों से कहा है
जोकि हमने तुमलोगोंसे कहाहै ३६ इसबातको सुनकर उनसब ब्राह्म-
णोंने नमस्कारकरके आसनपर बैठेहुए अङ्गिराजीको अलग२ताम्बूल
लगाकर दिये व पुराण अच्छेप्रकारसे सुननेकेलिये बैठे ३७ उन्होंनेभी
सब सम्पदादेनेवाला सब पुराण कहा अन्तके अध्यायतक सब मुनियों
ने यथावस्थित श्रवणकिया ३८ दिलीपजीने इसी कथाको वसिष्ठजी
से पूँछा कि फिर उनब्राह्मणोंने कथा श्रवणकरके क्याकिया क्या सब
कामग व सम्पूर्ण समृद्धियोंसे युक्त सुख देनेवाले बिमानपर चढ़के
स्वर्ग को चलेगये ३९ वसिष्ठजी बोले कि हां राजन् तुमने बहुत
अच्छा पूँछा वे सबब्राह्मणलोग पुराणश्रवणकरके विमानोंपर चढ़कर
जिस पुण्यसे क्रीड़ाकरतेहुये चलेगये हम कहतेहैं ४० श्रीशम्भु मुनि
श्रीराघवजीसे बोले कि फिर उन ब्राह्मणोंने पद्मपुराण सुननेके पीछे
चारोओर अमृतके तुल्य उजला एक शिवका मन्दिर बनवाया उस
में रूपविलासिनी बहुतसी स्त्रियां सबआभूषणोंसे भूषित ४१ जोकि
नानाप्रकारके सुन्दर गीतोंमें कुशल व नानाप्रकारके नाचने में बि-

शारदथीं उनमें चार आठ व छ तो मर्दल बाजा बजानेवाली थीं ४२ व दो वासिनी स्त्रियांथीं व दो बीणापर टंकोर देनेवाली दो नेत्रादि के चलाने से चार आव भाव करनेवाली व अन्य एक गानेवाली ४३ एक गान जाननेवाली व दो बहुत बातें करनेवाली व दो बजानेकी आड़वाली व ६ व आठ ऐसी जो सदा मौनब्रत धारणकिये रहतीं ४४ व ऐसी तो सब स्त्रियांथीं रूपवती व बिलासवती जिनके स्तन नहीं गिरेथे व सब रतिके तंत्रमें कुशल व राग गानेके समय निश्शङ्क होजातीथीं ४५ व सबरेशमी सूक्ष्मवस्त्र धारण किये बिजुली के समान चञ्चल दृष्टिवालीथीं ऐसी स्त्रियोंसे युक्त शिवमन्दिर किया व उनसबोंसे उसमन्दिर में नृत्यकराया ४६ सो हे राजन्! बर्षोंकेबर्ष एक २ दिन बिमानमें सवार वह युवा सैकड़ोंस्त्रियां जिसकेमुख की ओर देखरही हैं व बहुतसी पूजनकररही हैं ४७ व आनन्द पालन युक्त क्रोध इर्ष्यारहित पञ्चगंध का लेप अङ्गमें लगायेहुए चन्द्रखण्ड तुल्य मुखयुक्त ४८ सूर्य्यकी तुल्य प्रकाशमान व सम्पूर्ण स्त्रियां भी सुन्दर दन्तपंक्ति से युक्त शीघ्रही बिकाशमान आनन्द भर व कमलके माला पहने ४९ व सम्पूर्ण फूलेहुए कमलोंकी माला अरुण गौरवर्ण बक्षस्थल में पहने व मुसकानयुक्त ओंठ ५० ऐसी स्त्रियों के साथ नृत्यगीतसेयुक्त बिमानमें चढ़ाहुआ अक्षयकाल बिताकर ५१ पीछेसे राजा होताहै इसतरहसे करके फिर राज्य व स्वर्गफल भोग करके अन्तमें शिवभक्त होताहै ५२ श्री शम्भुमुनि रामचन्द्रजी से बोले कि अङ्गिराजीने दिलीपसे बसिष्ठजीकी कहीहुई यह कथा मुनियोंसे कही इससे इसप्रकार का शिवमन्दिर वैसेही स्त्रियोंसे युक्त महादेवजी का उनब्राह्मणोंने भी बनवाया ५३ व पद्मपुराण सब सुनकर सुखीहुये सो हे रामचन्द्रजी! वेही ब्राह्मणलोग बिमानोंपर चढ़कर ५४ अब आकाशमें सदासुखी आनन्दसे दिखाई देतेहैं यह हमने तुमसे सब पुराणोंकी निश्चित वार्त्ताकही ५५ इसके पीछे फिर अब क्या श्रवणकिया चाहतेहो ५६ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेशिवराघवसंवादेत्रयोदशोत्तरशततमोऽध्यायः ११३ ॥

एकसौचौदहवां अध्याय ॥

दो० । मनुशत में गौतमभवन महँ शिवपूजननीक ॥
तहँ बाणादिक शुक्रयुत गमन कीन अतिठीक १
वृषपर्व्वा मुनि शिष्यहति गौतम भृगुम्रतिदेखि ॥
बाणादिक सबभे मृतक तबशिव हरि बिधिपेखि २
सकल जियाये शम्भु पुनि पूजा भोजन आदि ॥
पाइ पवनसुत गान सुनि भे प्रसन्न शम्भ्वादि ३
पुनि यक गौतम पापिकी कथा कही समझाय ॥
पौराणिक सम्बाद युत प्रश्नोत्तर बहुगाय ४

श्रीरामचन्द्रजी ने शम्भुमुनिसे पूछा कि सब आभरणोंसे भूषित श्रेष्ठ बिमान पर स्थित मध्याह्न के सूर्य्य के समान प्रकाशित महादीप्तिमान् यह कौनहै जो आकाशमें दिखाई देताहै १ व सब मनुष्यों को बहुत दुःखसे देखनेके योग्यहै व उसके क्रोडमें सुन्दर हँसतीहुई दूसरी लक्ष्मीही के समान रूपवती एक स्त्री बैठी है व पांच स्त्रियां और भी हैं २ वे भौंहें मटकातीहुई मधुर गीत गारही हैं व मन्दमन्द मुसकाती हुई करताली बजारही हैं ३ व कभी कभी एक दूसरी की गीतको सुनकर ताड़ी बजाती हैं व आपस में एकदूसरी का मुख देखकर गीत का आलाप करती हैं ४ इसप्रकार पद्मकी किंजल्ककी तुल्य दीप्तिवाले महायोगी क्रीड़ा करते हुये स्थित हैं सो ये सब किसी पुण्य से ऐसा कहते हैं अथवा और किसी कारणसे सब हमसे कहो ५ श्रीशम्भुमुनि बोले कि हे रामचन्द्रजी ! यह जो स्वर्ग में दिखाई देता है पूर्व्वजन्म का ब्राह्मण है यह सब सम्पत्ति से युक्त था व नाना प्रकार के सुखोंसे युक्त था व अपनी भार्य्या के पोषण में तत्पर रहता था ६ अपुत्र था व दान कभी कुछ नहीं करता था न किसी देवता का कभी पूजन करता था पंचयज्ञसे बिहीन व वेदाध्ययन से बर्जित था ७ प्रातःकाल मध्याह्न व सन्ध्या कालमें नियम से भोजन करता था व महाअपवित्र रहता था सो एकसमय यह ब्राह्मण महात्मा गौतमजी के घरको गया ८ व गौतमजी का गृह पुण्यकारी महादेवजी के पर्व्वत कैलासपर था इसपर नानाप्रकार के पुण्यवान् मुनिगण

रहतेथे व स्फटिकमणि के खम्भों से युक्त एक अतिशोभित गृहथा ९ वह सब गृह अगुरुरस कस्तूरी कपूर केसरसे परिलिप्त था व जिसकी भीति कल्पवृक्षके पुष्पोंकी सुगन्धिसेयुक्तथी १० व कस्तूरी के सुगन्ध से जिसका भूतल लिपाहुआ था व जिसके ऊपर रेशमीसूक्ष्म व चीकने वस्त्रोंका मण्डप तना था ११ व आंगन केलासुपारी के वृक्षोंसे शोभित होताथा व उसके समीपके तड़ाग में कमल फूलरहेथे व उनपर बैठे हुये भ्रमर गूंजतेथे १२ व उसके किनारे किनारे चन्दनके बृक्षोंकी सुगंध व गानसीखीहुई स्त्रियोंके कियेहुये आनन्दपूर्वक गानसे सब दिशायें पूरित होरहीथीं १३ व ग्रीष्मऋतुसे उत्पन्न तापके नाशके लिये पंखालगे हुये हैं केलाके वृक्षोंकी घनीछाया विराजमानथी १४ व चन्दनकेबृक्षोंके सुन्दर चिकने दरवाजों में किवाड़लगेथे व कल्पलता की सुगन्धिसे सब दीवारें सुगन्धित होरहीथीं १५ व उसके ईशान कोणमें सुन्दर रत्नोंसे एकबेदी बनीथी जो कि बीच बीचमें सुवर्णसे भी बनीथी व उसपर विचित्र औरभी बेदियां बनीहुईथीं १६ व वह बेदी एक बड़ी चीकनी छायावाले बरगदके बृक्षके नीचे बनी थी उसके सब ओर केलाके पुष्पित बृक्ष लगेथे व उसीके समीप चारों तरफ सर बनेथे १७ व उस बरगदके बृक्षके ऊपर शीतलतासेयुक्त मेघ छाया कररहेथे व मानो स्वर्गोद्यान से युक्त चित्र विचित्र बगीचे शोभित होरहे थे १८ व वे बाटिकायें वापी कूप तड़ागादि व अनेक बनों से शोभित होती थीं व सुखदायी पवन मन्द मन्द जहां चलरहाथा १९ व उनमें सुन्दर सब अंगवाली श्रेष्ठ स्त्रियां बीणा बेणु त्रिबेणु आदि बाजोंको बजा बजाकर गातीथीं जिससे कन्दर्प्प की सब सम्पदाओंका स्मरण होताथा २० व ऐसेही अन्य बाद्य नानाप्रकारसे बजातीहुई नारियां नानाप्रकारके गानकरतीथीं जिस की ध्वनि से सब दिशायें पूरितहोरहीथीं व सुवर्णादिकों के पात्रोंमें बंटक भस्म लगेहुये २१ व सुन्दर धूपोंकी सुगंधोंसे बासित व चन्दनादिकों की गन्धिसे युक्त कुशकी ग्रंथियोंसे बीच बीचमें शोभित कोटि कमलाक्ष व रुद्राक्ष की मालायें धरीथीं २२ व उसके बाहर निकटही सहस्रों मृगचर्म्म धरेथे ऐसे श्रेष्ठ गृहमें देवबेदी पर चारों

दिशाओंमें कर्पूरादि सुगन्धित पदार्थ स्थापितकिये हुये मुनीश्वर गौतमजी सुन्दर पटीर से बनेहुये आसनपर बैठेथे २३ व २४ व सूक्ष्म सफेद चीकना गन्धसार इकट्ठे कियेथे व सुगन्धित जल से व दुग्धसे वहांके देवको स्नानकराने में तत्परथे २५ अन्य और वैदिक मन्त्रोंसे सदाशिवजी को स्नानकरके कर्पूरयुक्त काष्ठके पीढ़ापर कपड़ा बिछाकर व आगे पात्रधरके उनको दलोंमें स्थापनकरके २६ एकपात्रमें अक्षत धरेथे व दूसरेपात्रमें तिलसहित अक्षत स्थापितथे एकमें पञ्चगन्ध धराथा व अन्य पात्रमें अष्टगन्ध स्थापितथा २७ व अन्य २ पात्रोंमें केसर कस्तूरी कर्पूर व चन्दन अलग २ स्थापित कियेथे ये सबपदार्थ पात्रोंमें धरकर पूजाके स्थानमें मुनिवर उपस्थित थे २८ व नानाप्रकारके आवरणोंके मार्गसे पूजाकरनेमें उद्यतथे मध्य में लिङ्गके बीचमें पंचमुखी सदाशिव स्थापितथे २९ उनके आवरण करनेकेलिये लिङ्गस्थापितथा व लिङ्गके आवरणके लिये शक्ति स्थापितथी शक्तिके आवरण विष्णुभगवान् व विष्णुके आवरण ब्रह्माजी ३० ब्रह्माके आवरण चन्द्रमा चन्द्रमाके सूर्य्य व सूर्य्यके सबवेद व वेदोंका आवरण सब दिक्पाललोग व दिक्पालोंका आवरण दिशायें ३१ व दिशाओंके आवरण शम्भुजी व शम्भुके आवरण सत्त्वादिगुण बस यह दश आवरण युक्त शिवलिङ्ग का शुभ पूजन है ३२ व किसी २ के मतसे शिवलिङ्गका आवरण और प्रकारसे भी है जैसे कि शिवके पीछे महाविद्याओं का आवरण उनके पीछे उमाका आवरण ३३ फिर उमाकेआवरण विष्णु व विष्णुके ब्रह्मा व ब्रह्माकेआवरण चन्द्रमा व चन्द्रमाके आवरण सूर्य्य ३४ व सूर्य्यके आवरण ईश यह छःप्रकारका आवरण कहाताहै व इसी में से ब्रह्मा को निकाल डालनेसे पञ्चावरण शिवपूजन होताहै ३५ व चन्द्रमा विष्णु शक्तियोंका तीन आवरणका पूजन कहाताहै व जिसमें एकही आवरण होताहै वह अम्बिकावरण कहाताहै ३६ अथवा चन्द्रमा के पूजनमें सबलोकपाल आवरण होते हैं अथवा शिवका पूजन आवरणरहित भी होताहै ३७ अष्टदल पात्रिकापर स्थित बस्तुओं से शिवकी पूजा करनीचाहिये अब सब कर्म्मों का उपयोगी पात्रिका

का लक्षण कहते हैं ३८ पात्रिका कितो सुवर्ण से बनीहो वा चांदीसे अथवा ताम्रसे बनाई गईहो व मोतियों के गुच्छों के आकार आठ दलोंसे युक्त होनी चाहिये ३९ अथवा कमलके पत्रके समान अष्ट-कोणकी आकार कल्पनाकरे उत्तमपात्रिका तो एक पलभरकी गरुई चाहिये जोकि निर्वृत व विस्तृतपदहो ४० उसकेऊपर मोटेमध्यवाला कमलके आकारके आठदलबनावे अथवा अपनीशक्ति के अनुसार पांचहीदल कल्पितकरे ४१ अथवा तीनही पत्रकरे पर यह जब आठ दलकी पात्रिकाकी शक्ति न हो तो पांच दलकी व पांचकीभी न हो तब तीन दलकी करनीचाहिये जैसा करनेसे सुन्दर पात्रबने अपनी शक्तिके अनुसार वैसा करनाचाहिये ४२ यदि शक्तिहो तो आठसौ रुद्राक्षका माला शुभहोताहै व ३०८ तीनसौआठका यज्ञोपवीत बनावे ४३ गालोंपर भी एक एक व प्रकोष्ठोंमें दो धारण कियेथे व कोठे में भी व एकशिरमें व एक कण्ठमें धारणकियेथे ४४ व मुनि स्फटिक-मणियोंके बीच २ में रुद्राक्षकी गुरियोंकीमाला भी धारण कियेथे व व्याघ्रचर्म्मके आसनपर पद्मासनसे मुनिराज बैठेथे ४५ व पद्म के ही पात्रमें अर्घ्य आचमनीय व आवाहनकी द्रव्यलियेथे व अर्घ्यादि करके फिर गङ्गाजलसे मुनिने शङ्करजी को स्नान कराया ४६ उस जलमें अष्टगन्ध पाड़र डांड़ व कमलके पुष्पभी मिलेथे व सुवर्ण के पात्रमें वह गङ्गाजल वस्त्रसे शुद्धकरके भरागयाथा तब स्नान कराया गयाथा ४७ व द्वारपर आम्रके पल्लवोंका वन्दनवार बँधाथा ताम्रका कटाह शुभधराथा व जल कुछ गोशृङ्गमें भराथा गवयके शृंग में कहींधराथा ४८ कुछ दक्षिणावर्त्त शङ्खमें भराधराथा कुछ अन्य स्नानकराने के योग्य रत्नपात्रोंमें था स्वर्णके चांदी के व ताम्रके पात्रोंमें भी बहुतसा जल भराधराथा व कांस्यके भाजनों में भी था ४९ परंतु सब कलशोंसे सुवर्णके छोटेसे पात्रमें भरकर इच्छापूर्व्वक मुनिने धीरे २ शिवजीको नहवाया जिसको अन्यपात्र न मिले उसे चाहिये कि मिट्टीके पात्रसे स्नानकरवावे अथवा कमलके पत्तेमें भरकर जलसे स्नानकरावे ५० अथवा पलाशके पत्रोंसे वा आम्र जामुनके पत्तोंसे श्रीबिभुजीका स्नान करावे अथवा सब स्नानोंसे धारास्नान विशेष

गिनाजाताहै ५१ नमस्ते इत्यादि शतरुद्रियके मन्त्रोंसे स्नानकरावे अथवा अन्य शान्तिरूप अनुकवाकमन्त्रोंसे शिवजीको स्थापितकरे ५२ इसप्रकार यथाशक्ति स्नानकराके फिर चन्दनादि सुगन्धित वस्तुचढ़ावे फिर सुन्दरसुगन्धित पुष्पोंसे व बिल्वपत्रोंसे पूजनकरे ५३ फिर तुलसी द्योनाकेदलोंसे कल्हार व महोत्पलआदि कमलके नानाप्रकारके पुष्पोंसे पूजाकरे नीलकमल श्वेतकमल व अन्य कमलोंसे कँदैलके पुष्पोंसे ५४ कठचम्पाकेफूलोंसे व उजले कमल विशेषों से व अपराजिता से भी पूजनकरे ऐसेही तिल मिले हुये अक्षतों से व खाली अक्षतों से व तिलमिश्रित बिल्वपत्रों से ५५ इसप्रकार महेश ईशानको गौतमजी ने पूजितकिया फिर कपूर अगुरु कस्तूरी देवदारु चन्दन ५६ व अन्य धूपदीपादि षोडशोपचार पूजा गौतमजी ने शिवजीकी की व कपूरकीबाती दीपदानपरधरके ५७ महेशजी के निवेदन करके फिर उत्तम नैवेद्य समर्प्पणकिया अच्छेपकेहुये धानों के चावलोंकाभात मिठाई व अन्य भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्यआदि ५८ मधुर तिक्तादि षट्रस व पंचभक्ष्यसे युक्त नानाप्रकारके भोजन अनेकप्रकारसे परिपक्क कियेहुये शाकोंसेयुक्त ५९ बीसप्रकारके शर्व्वतआदि पानकरने के पदार्थ तथा मुनक्का छुहारा केलाआदि के फल सूपादि संयुक्त व मूलफलादिकों से युक्त ६० नैवेद्यलगाया व यथासम्भव अन्य २ समयके पदार्थोंसे नैवेद्यलगाया प्रथम पुष्पाञ्जलि देकर तब इसप्रकारकी नैवेद्य मुनिनेदी ६१ फिर सुवर्ण के पात्रमें रखकर सहस्रबत्तीका दीपकबारकर नीराजनकिया इसप्रकार सब उपचारों से पूजनकरके नमस्कारकिया ६२ फिर पूगफल कर्प्पूर इलायची मिश्रित धोयेहुयेताम्बूल समर्प्पणकिया ताम्बूल सब उजले रंगकेथे नसें व ढेंपें किसीमें न थीं उसमें खदिर व चूनाभी पड़ाथा सो ऐसे तीनताम्बूल लगाकर सुवर्णकेपात्रमें धरकर ईश्वरको निवेदन किया ६३।६४ फिर नमस्कारकरनेके अनन्तर प्रदक्षिणाकिया इसके पीछे बीणादि धारणकिये आठस्त्रियां मुनिके समीपआईं ६५ वेसब विचित्र बाजे बजानेमें परमप्रवीणथीं जो मुनिके समीप आईं प्रथम छोटी २ दो रागिनियां शिवजीके निकटगानेलगीं ६६ इसी बीचमें

गौतममुनि गानकरनेमें तत्परहुये व वे तालस्वरसे आलापकरनेलगीं व अन्य मन्द २ बाजेबजानेलगीं ६७ मधुरस्वरसे मुनि जब आलाप करनेलगे तो सब निषादादि स्वरमूर्त्ति धारणकरके उपस्थितहुये व महादेवजी के आगे नाचनेलगे यह महाअद्भुतसाहुआ ६८ इसी अवसरमें भगवान् नारदमुनि वहांपर आनपहुँचे आयेहुये उनके प्रणामकर व पूजनकरके गौतमजीने ६९ कहा कि हम कृतार्थ हुये आज हमारेसमान कोई नहींहै आपके आगमनका क्या कार्य्य हम को कर्त्तव्यहै कहिये कैसे आगमनहुआ ७० नारदजीबोले कि हम इससमय बाणासुर के गृहमें पाताललोक में भोग कियेहुये वहीं से चलेआतेहैं आजही महात्मा बाणासुर शुक्रादि तुम्हारे गृहको आ- वेंगे ७१ नारदजी तो इतना कहकर बैठे कि एक क्षणमात्रमें शत्रुओं के पुरको जीतनेवाला बाणासुर हाथीपर चढ़ाहुआ बीस अक्षौहिणी सेना संगलिये गौतमजी के स्थानपर आया ७२ व अन्य हाथीपर शुक्राचार्य्य और प्रह्लाद चढ़ेहुये आये व वृषपर्व्वा एक श्रेष्ठरथपर चढ़कर आया व बलिउत्तम घोड़ेपर सवारहोकरआये ७३ इनसबों को आयेहुये जानकर गौतममुनि अपने शिष्यों समेत अर्घ्य पा- द्यादि लेकर घरसे बाहरनिकले ७४ गौतमजीको आतेहुये देखकर बाणासुरादि सब अपने २ वाहनोंपरसे उतरपड़े व शुक्राचार्य्य के प्रथम नमस्कार किये हुये गौतमजी के सब दैत्योंने नमस्कारकिया ७५ तब सब दैत्योंको विधिसे मिलभेंटकर यथायोग्य सत्कारकरके गौतमजी अपने गृहमें लाये व मुनिश्रेष्ठ ने राक्षसी दैत्योंकी उससे- नाको मन्दिरके बाहरटिकवादिया ७६ व शुक्राचार्य्यके चरणधोकर वहजल गौतमजी ने अपने शिरपर चढ़ालिया व बिचित्र फलादि युक्त भोजनकी सामग्री मुनिनेदी ७७ सबलोग उतरे व बापी कूप तड़ाग सर आदिमें स्नानकरके सबोंने मध्याह्नकी क्रियाकरी कराई व गौतममुनिके शुभआश्रममें संगम सबजनोंका अच्छीतरहहुआ ७८ इसकेपीछे अपने पुरोहित सहित बाणासुरादि गौतमजीके गृह के भीतर पैठे वहां सबोंने भी देवता महादेवजी की पूजा करने का बिचार मुनिके घरमें किया ७९ तुरन्त बेदीबनाकर उसपर महादेव

जीको स्थापितकरके शुक्राचार्यने पूजाकी उन्हींकी बाईंओर प्रह्लाद ने श्रीविष्णु भगवान्‌की पूजाकी ८० व बलिने चन्द्रमाकी इसीप्रकार अन्य असुरश्रेष्ठों भी अपने २ अभीष्टदेवकी पूजा वहांपरकी इसके बाद बाणासुरने शिवजीकोही पूजाकिया ८१ शुक्राचार्य्य ने व फिर भगवान् उमानाथकी पूजाकी व गौतमजीने भी मध्याह्न में फिर शंकरजी की पूजा अच्छेप्रकारसे की ८२ पूजाकरने के समय सबोंने शुक्लवस्त्रधारणकिये व सबोंने अपने अङ्गों में बिभूति लगाई व श्वेतभस्मसे सब स्थानों में त्रिपुण्ड्रलगाया ८३ व शुक्राचार्य के नमस्कारकरके सबोंने भूतशुद्धिकी हृदयकमलके मध्यमें प्रथम पृथिव्यादि पंचमहाभूतोंका स्मरणकिया ८४ उनकेमध्यमें महाकाश का स्मरणकिया व आकाशमें निर्म्मल अग्निका स्मरणकिया उसके मध्यमें महेशानका दीप्तिमय शुभध्यान किया ८५ फिर अज्ञान से युक्त भूतशमल सबमें प्राप्त उस शरीरको आकाशरूपीदीपमें ज्ञानाग्निसे भस्मकिया ८६ आकाशका आवरण अहंकारहै सो अहंकार को जलाके फिर आकाशको भस्मकरे फिर आकाशको जलाके अग्निभूत वायुको जलावै ८७ इससे प्रथम जलको भस्मकरके फिर पृथ्वी को भस्मकिया फिर इनसबोंके आश्रित सत्त्वादि गुणोंको भस्मकरके फिर शरीरको संतप्तकिया ८८ इसप्रकार ज्ञानाग्निसे सब प्राणियों ने सब भूतादिकोंको भस्मकरके शिखाके मध्यमें स्थित विष्णु आनन्दरससे भरेहुये ८९ चन्द्रकिरणोंके समान निर्म्मल प्रकाशित विभु शिवजीको शिवके अंगसे उत्पन्न किरणों से अमृतरससे युक्त करके ९० सुशीतल ज्वालासे युक्त प्रशांत चन्द्रकिरणकी तुल्य सुधाकिरणोंको फैलायेहुये अन्य सबोंको उनसे डबोतेहुये ९१ क्रमसे सब भूत समूहोंको आर्द्रीभूत करते हुये शिवका ध्यानकरे ९२ इसप्रकार भूतशुद्धि करनेसे वे सब क्रियाकरनेके योग्यहुये व इसीप्रकार भूतशुद्धि करनेसे सब मनुष्य क्रिया करनेके योग्यहोते हैं फिर पीछे पूजाजप सब क्रियाओंके पीछे ध्यानकरने से ब्रह्महत्यादिक नाशहोजातीहैं ९३ इसप्रकार चन्द्रदीप्ति के समान प्रकाशित शिवके लिंगका ध्यान अपने हृदयमें आरोपण करके व बीच में सदाशिवकी चिन्तना करके

पञ्चाक्षर मन्त्र से शिव पूजन में तत्पर होकर ९४ उनका आवाह-नादि उपचार करे प्रथम आप स्नान करके फिर शङ्करजी के लिये सुवर्ण चांदी वा गूलर के काष्ठका आसन बनवाकर वस्त्रादि से आ-च्छन्नकरके उसके ऊपर शिवका आवाहन करे ९५ व अन्त में बु-द्बुदों की वर्षाकरे व प्रति आसनोंके आगे एक नाग बनावे व उस आसनकी दोनोंओर दो हाथी देवके निकट दाहनी बाईं ओर बनावे ९६ व दोनों हाथियों के बीच में दुपहरी का फूल धरके उसकी चारों ओर बारह पत्तेका वस्त्र बहुत उजला लेकर उसके ऊपर बैठाकर महेश्वरजी के लिंगकी पीठयुक्त पूजाकरे ९७ इसीप्रकार बाणासुरा-दिकों ने भी ईशजी की पूजा वहांकी जैसे कि अष्टगंध पञ्च गन्धा-दिकों से करनी चाहिये पुष्प बिल्वपत्र तिलमिश्रित अक्षत व केवल अक्षतों से भी पूजा करके ९८ धूप दीपादि विधिपूर्वक देकर नैवेद्य लगाकर सब पूजा समाप्त करके गाना बजाना नाचना सब सबोंने किया ९९ इसी अवसर में गौतमजी का शङ्करात्मानाम शिष्य वहां आया १०० जोकि उन्मत्तवेषधारी नग्न अनेकों वृत्तियां धारण किये हुये कभी श्रेष्ठ ब्राह्मणकारूप धारणकिये कभी चाण्डाल का वेष धारण किये रहता था १ कभी कभी शूद्रकी तुल्य रहता था व कभी कभी तो तपके कारण शुद्ध योगी बनारहता था व कभी कभी विक्षिप्तों की नाईं गर्जने लगता कूदने फांदने लगताथा व नाचने स्तुति व गाने लगता था २ रोने सुनने कहने लगता कभी गिरपड़ता फिर उठता फिर गिरता इसप्रकार शिवके ज्ञान से सम्पन्न परमा-नन्द से युक्त रहता ३ सो वह भोजन करने के समयपर आता व गौतमजी के समीप को चलागया गुरु के संग भोजन करके कभी वह उच्छिष्टही ४ का पात्र चाटनेलगा व कभी वहांसे चुप्पे उठकर चलदिया व कभी गुरुका हाथ पकड़कर आपही भोजन करनेलगा ५ फिर कभी गृहके भीतर मूत्र करदेता कभी कीचड़ अपनी देहमें लगालेता पर गुरुजी जैसे कैसे उसको देखते हाथ पकड़कर गृह के भीतर ६ बैठादेते व अपने पीढ़ेपर बैठाकर उसे भोजन कराते व फिर उसीके पात्रमें गौतममुनि आपभी भोजन करते थे ७ उसका

चित्त जानने के लिये एकसमय परमसुन्दरी अहल्या ने शिष्य को बुलाकर उससे कहा कि भोजन करो ८ सब अन्न तो अहल्याने सुवर्ण के पात्रमें धरेथे व अन्यपान पात्रमें पानादि के पदार्थ धरकर एक पात्रमें अग्नि धर दिया ९ व इसतरह अंगारों का ढेर धरकर और पात्रमें कांटों का गुच्छा धर दिया व कहा कि अब यथेष्ट आनंद से भोजन करो इस बातको सुनकर उस मुनिने भोजन किया १० व जैसे उस ब्राह्मण ने जल शर्बत आदि पीनेके पदार्थ पिये वैसेही अग्नियों को भी उठाकर पीगया व कण्टकयुक्त कुछ अन्न दियेगये थे उनको भी खाकर पूर्व्ववत् वह मुनि बैठारहा ११ इससे प्रथमभी इस मुनिको मुनियों की कन्यायें भोजन करने के लिये बुलाती थीं व प्रतिदिन सबकी सब मिट्टीके ढेले पानीमें मिलाकर गोबर देदेती थीं १२ व कीचड़ काष्ठआदि अभक्ष्य पदार्थ देदेती थीं बस वहसब खाकर ज्योंका त्यों बैठा रहता था व प्रीति से हर्षितही रहता था सो ऐसा वह मुनि चाण्डालकासा डौल बनाये रहता था १३ बहुत पुरानी लतरा जूती हाथोंमें लिये वह मुनि अन्त्यजों के योग्य बोली से वृषपर्व्वा नाम दैत्य के निकट गया १४ व फिर नग्न वृषपर्व्वा व बाणासुर के बीचमें बैठगया पर वृषपर्व्वाने उसे मुनि न जानकर उसका शिर काटडाला १५ उस ब्राह्मण श्रेष्ठके मारजाने पर यह चराचर सब जगत् अत्यन्त पापसे युक्त होगया व वहां के रहनेवाले सब मुनिलोगों को १६ व गौतममुनि को बड़ाशोक हुआ क्योंकि वह बड़ा महात्मा था नेत्रों से आंसू छोड़तेहुये व शोक दिखातेहुये वहां गये १७ तब गौतमजी ने सब दैत्योंके समीप यह वाक्य कहा कि इस मुनिने क्या पाप किया जिससे इसका शिर काटडालागया १८ यह हमको प्राणों से भी अधिक प्रिय था व सदाशिवका योगी था बस इसके मरण से अब हमारा भी मरण होजायगा क्योंकि जो शिष्य वही गुरु होता है १९ क्योंकि धर्म्मयुक्त सदाशिवके मार्ग पर चलनेवाले शैवों का जहां हम मरण देखते हैं वहां हमारा भी मरण होजाता है २० शुक्राचार्य्यजी बोले कि इस अपने गोत्रवाले शिवप्रिय मुनिको हम अभी जिलादेंगे हे ब्रह्मन् ! तुम किसलिये

मरेजातेहो हमारे तपोबलको देखो २१ शुक्राचार्य्य ने जैसे ऐसा कहा है कि गौतमजी भी मृतकहोगये व गौतम के मरजानेपर योगाभ्यास से शुक्राचार्य्यजीने भी अपने प्राणोंको छोड़दिया २२ व शुक्राचार्य्य के मरणको जानकर प्रह्लादादि जितने दैत्य थे उसक्षण मृतकहोगये यहबात बड़ी अद्भुतसीहुई २३ व धीमान् बाणासुरकी बीस अक्षौहिणी जो सेनाथी वह भी मृतकहोगई व शोकसे सन्तप्त होकर अहल्या बड़े ऊँचेस्वर से बार २ रोदन करनेलगी २४ व गौतमजीने महादेवजी की पूजा विधिपूर्व्वक बहुत दिनोंतक कीथी इसलिये इसकर्म्म को देखकर महायोगी वीरभद्रजीने बड़ाही कोप किया २५ व कहा कि बड़े कष्टकी बात है महाकष्ट है कि बहुत से शिवभक्त एकाएकी मृतकहोगये अब हम शिवजी से जाकर जनावें व वे जो कहें वैसाकरें २६ यह निश्चय करके वीरभद्र मन्दराचल परकोगये व नाशरहित शिवजी के नमस्कार करके सब वृत्तान्त उन्होंने जनाया २७ उससमय में ब्रह्मा व श्रीविष्णुजी भी शिवजीके समीप विराजमानथे दोनों देवेशोंसे शिवजीबोले कि हमारे भक्तोंने बड़ासाहस कर्म्मकियाहै इससे हम उनको देखकर बरदान करेंगे २८ सो हे विष्णो ! हे ब्रह्मन् ! चलकर उनकोदेखें आपभी दोनोंजन वहां को चलें इतना कहकर महादेवजी तो अपने वृषभपर आरूढ़हुये व वायु चामर करनेलगे २९ व सुन्दर वेषधारी नन्दिकेश्वर नाम गणने सुन्दर छत्र शिवजीके ऊपर लगाया जिसकी डांड़ी तो सुवर्ण कीथी व वह श्वेतवर्णकाथा ३० वेभी धारणकिये विभुने व महादेवजी के सम्मतसे श्रीविष्णुजी भी अपने गरुड़पर आरूढ़हो कौस्तुभमणि धारणकियेहुये कुछ लाल व नील मिलेहुये रंगके दोछत्र जयविजय की द्वारा लगायेहुये शोभितहुये ३१ व शिवजी की अनुमति से ब्रह्माजी भी अपने हंसपर आरूढ़हुये व बीरबहूटीनाम कीड़ेके रंगसे बहुतही अरुण दोछत्रों से येभी शोभितहुये ३२ व इन्द्रादि सब देवगण भी श्वेतआदि अपनी २ सवारियोंपर शोभित होकरचले ये सब नानाप्रकारके बाजनोंसे अनुमोदित होकरचले ३३ व अपने २ कोटि कोटि गणोंसे युक्तहोकर सब गौतमजी के आश्रमपर पहुँचे व

ब्रह्मा विष्णु महादेव ने यहचरित्र देखकर अति अद्भुतमाना ३४ जाते २ महादेवजीने अपनी कृपादृष्टि से बामनेत्रकी कोरसे देखकर सबों को जिलादिया व फिर शङ्करजी गौतममुनिसे बोले कि हम सन्तुष्ट हुये हमसे वरमांगो ३५ गौतममुनि बोले कि हे देवेश! यदि प्रसन्न हुयेहोओ व यदि वर मुझको दियाचाहतेहो तो हे महेश्वर! तुम्हारे लिङ्ग के पूजनकी सामर्थ्य मुझको नित्य बनीरहै ३६ व हे त्रिलोचन! और भी एकमैं वर चाहताहूँ उसे सुनो मेरा यह महाभाग्यवान् शिष्य यद्यपि हेयाग्रहेयादि वर्ज्जित है ३७ इससे स्नेह से देखनेकेयोग्य है क्योंकि यह नेत्रसे नहीं देखताहै न नासिकासे सूंघनेकेयोग्यहै न देनेके लायक न कोई इतर कार्य्यकेयोग्य ३८ यह जानके वैसाही करताहुआ महायशवाला योगी व यह हमारा शिष्य इसीप्रकार उन्मत्तवत् विकरालरूप व शङ्करात्मा इसका नाम आज से सदा बनारहै ३९ न कोई इससे बैरमाने न कोई इसे मारसके यह हमको दीजिये व ये जितने यहां मृतकहोगयेथे अब कभी न मरें ४० महादेवजी बोले कि अच्छा इस कल्पभर ये सब जीतेरहें फिर मुक्तहोजावें व तुम्हारे कियेहुये इस शुभविस्तृत त्रिकूटस्थानमें ४१ हम यहां क्षणमात्र टिकेरहेंगे व फिर अपने स्थानको चलेजावेंगे यह सुनकर गौतममुनिबोले कि हे ईश! अर्थी दोषको नहीं देखता इससे मैंने अयोग्यवरकी प्रार्थना आपसेकी ४२ कि आपलोग मेरेगृह में निवासकरें व ये सब अमरहोजायँ यहभी ब्रह्मादिकोंको भी अलभ्य वर मैंने आपसेमांगा सो जो रुचे तो दीजिये यह गौतमकी प्रार्थना सुनकर महादेवजी विष्णुभगवान्कीओर देखकर उनकाहाथ अपने हाथसे पकड़कर४३ हँसतेहुये सदाशिवजी कमलनयन श्रीहरिजीसे यहबोले कि हे गोविन्द! इससमय आपका उदर भूँखकेमारे जानों कुछम्लान होगयाहै परन्तु तुमको क्याभोजन हमदेवें ४४ अब आप अपनेआप गृहके भीतर चलकर अपने गृहकेसमान जो चाहें भोजनकरें व तुम पार्व्वतीके गृहको चलो वे तुम्हारे उदरको परिपूरित करेंगी ४५ ऐसा कहकर विष्णुभगवान्का हाथ पकड़े हुये महादेव जी एकान्तको लेगये व द्वारपाल नन्दीश्वरसे कहा कि और कोई

भीतर न आने पावे ४६ फिर जाकर गौतमजीसे विष्णुजीका कहा हुआ सदाशिवजीने कहा कि हम और सबजने भी भोजन किया चाहतेहैं इससे सब सामग्री इकट्ठी करो ४७ ऐसा गौतम से कहकर वासुदेव सहित शङ्करजी एकान्तको चलेगये व एक कोमल शय्या पर दोनों देवोत्तम जाकर शयन करनेलगे ४८ आपसमें एक दूसरे से हास्ययुक्त बातें करनेलगे कुछ देरके पीछे उठे दोनों जने एक उत्तम गहरे तड़ागके समीप स्नान करनेको गये ४९ उसमें सबमुनि व दैत्य राक्षसलोगभी स्नान कररहेथे व सबके सब जलक्रीडा करते थे एक दूसरेके ऊपर जलके छिप्पे मारतेथे ५० उसी बीचमें श्री विष्णुजी व शङ्करजीभी जल में प्रविष्टहुये शङ्करजी ने अपने कर कमलों से जल लेकर श्रीहरिके ऊपरको उछाला ५१ वह जल श्री हरिके मुखारविन्द में व कमलसमाननेत्रोंमें पड़ा इसलिये भगवान् केशवजीने अपने नेत्र मूँदलिये ५२ जब श्रीहरिने नेत्र मूँदलिये तो इसी अवसर में उनके कन्धेपर कूदकर महादेवजी चढ़गये व दोनों हाथों से श्रीहरिजी का शिर पकड़कर जलमें डुबोदिया ५३ सो बार २ ऊपरको निकालकर फिर डुबोया व फिर ऊपरको निकाला जब इस प्रकार पीड़ितहुये तो श्रीहरि ने शङ्कर को थोड़ीदूरपर जलमें फेंक दिया ५४ व दौड़कर दोनों पैर पकड़कर घुमातेहुये अपनीओरको श्रीहरि ने खींचा तब छुड़ाकर महादेवजी ने श्रीहरिजी की छाती में मारा व गिरादिया ५५ तब श्रीहरिने उठकर अपनी अंजलिसे जलले-कर महादेवजीके ऊपरको चलाया फिर महादेवजीने हरिके ऊपरको व हरिजीने महादेवजी के ऊपर ५६ इसप्रकार जलक्रीड़ा ऋषिगणों में हुई जलक्रीड़ा बढ़जानेपर ऋषियों ने एक दूसरे की जटा अपनी जटामें बांधी ५७ यहांतक कि आपस में सब एक दूसरे की जटासे बँधगये जब एक दूसरेकी जटासे सबमुनिलोग बँधगये ५८ तो श-क्तिमान् अशक्तिमानोंको पकड़ २ दुःखदेतेहुये खींचनेलगे व इधर उधर गिरानेलगे कोई चिल्लाते जातेथे कोई रोदन करतेथे ५९ जब इसप्रकारका रणसंकुल जलकर्म्महुआ तब आकाश में हर्षितहोकर नारदमुनि नाचने व गानेलगे ६० व फिर अपनी वीणाको बड़ेजोर

से बजाकर ललितगीत गानेलगे व सुन्दर गीतों में जो दशप्रकार के गीत बहुत ललित होते हैं उनको गाया ६१ नारदजी के मधुर गीतोंकी गति सुनकर लोकभावन शङ्करजी भी अपने आप मन्द२ ललितगीत गानेलगे ६२ जब देवेश आपभी गानेलगे तो नारद का व उनका गान एकमें मिलगया फिर नारदजी नाचनेलगे व स्वरभेदसे गानेलगे ६३ तो सब लक्षणोंसे युक्त स्वरको विचारकर आलापकरके व अपने अमृतरूप गानधारासे युक्त करके उस गान से मिलादिया ६४ जब ऐसा गान व नाचहोनेलगा तो अपतधारा-मय मर्दलबाजेको श्रीवासुदेवजी ने हाथोंसे बजाया अब तीनों गाने नाचने व बजानेवाले अपूर्व्वही एकत्रहोगये उसीबीचमें चारमुखका तुम्बुरु नाम गन्धर्व्व आन पहुँचा व गानेलगा ६५ गौतमआदि सब मुनि लोग चुपचाप तान ताल लेने सुधारने लगे व धीरेधीरे गाने लगे उसीबीचमें हनुमान्जीभी मधुर मधुर गानेको उद्यतहुये ६६ जब वानरराज हनुमान् मधुर गीत गानेलगे तब यद्यपि प्रथम म्लानमुख थे पर श्रीहरि हनुमान्जी का गान सुनतेहुये हृष्टपुष्ट होगये व सबके सब अपने अपने गीतका अनादर करके मूर्च्छितसे होगये ६७ व सब देव ऋषिगण चुपहोकर हनुमान्हीका मधुरगीत सुननेलगे बस एक हनुमान्जी गानेवालेरहे अन्य सब सुननेवाले होगये ६८ इतनेमें मध्याह्न का समय आगया जो कि भोजन का समयहै तब गान सुनतेहुये महादेवजीने रेशमीदोवस्त्र भोजन करने के लिये धारणकिया ६९ व विष्णुभगवान्जी ने भी दो पीताम्बर धारण किये व ब्रह्माजी ने कुछरक्तरङ्गका वस्त्र धारणकिया व अन्य सबोंने अपनी इच्छा के अनुकूल वस्त्र धारणकिये ७० व अपने अपने वाहनों पर चढ़कर सब देवता तड़ाग परसे चले व गानके प्रिय महेशजी अपने उसी वृषभपर सवारहुये व हनुमान्जीसे उन्हों ने कहा ७१ कि तुमभी हमारीओरको मुखकरके इसी वृषभपर चढ़ लेचो व सम्पूर्ण गान सुनातेचलो ७२ तब कपिशार्दूल हनुमान्जी महादेवजी से बोले कि तुमको छोड़कर वृषभपर चढ़नेकी किसको सामर्थ्यहै ७३ इससे तुम्हारे वाहनपर चढ़कर हम पातकीहोंगे हम

जानतेहैं कि आप हमारे ऊपर सवारहोलेवें क्योंकि विहंगभी शिव-
वाहनहैं ७४ हम आपके मुखकी ओर मुखकियेहुये गानसुनाते च-
लेंगे तब महादेवजी जैसे अपने वृषभकी पीठपर सवारहोतेथे वैसे
ही हनुमानूजीकी पीठपर चढ़लिये ७५ महादेवके चढ़नेपर हनुमान्
जीने अपना शिर काटडाला व घुमाकर कन्धेपर जोड़दिया महादेव
जीकी ओर मुखकरके पहलेकी तरह गातेहुये चले ७६ इसप्रकार
शिवजीको गीत सुनातेहुये हनुमानूजी गौतमके गृहको गये व सब
देवता ऋषि राक्षस दैत्यभी गौतमके गृहपर आगये ७७ सबों की
गौतमने पूजाकी व कहा कि अब तो भोजनका अवसर आगयाहै
जो कुछ रूखा सूखा फलमूल गृहमें सामग्रीहै उसे भोजनकरिये ७८
उसी बीच में हनुमानूजीने फिर गानकिया जिसको सुनकर सबका
चित्त लगगया व सबकी दृष्टि उसीकी ओर जाकर लगगई ७९ व
दो बाहुओं से तो महादेवजी के चरणारविन्दों की वन्दना हनुमानूजी
करते थे व सब अंगों में नानाप्रकार के आभरण धारणकिये थे प्रसन्न
मूर्त्ति तरुणावस्था को प्राप्तहो दो हाथ जोड़े शिरपर धरे शिवजीकी
स्तुति भी कियेजातेथे व आप देवताओंसे वन्दितथे ८० तब महादेव
जीने हनुमानूजी का शिर दोनोंहाथों से पकड़कर जैसा प्रथम मुख
था वैसाही करदिया व कमलाकार आसनमारे हनुमानूजीकी पीठ
पर तो चढ़ेहीथे एकपाद हनुमानूजी की अञ्जलिपर धरेथे व एक
उनके मुखमें ८१ व पैरोंकी दो दो अंगुलियां नासिका पर धरेथे व
स्नेह से धीरे धीरे इन सब अंगोंको ग्रहण कियेथे स्कन्ध पर मुख
में कण्ठ में छातीपर स्तनोंपर हृदयपर ८२ कोखियों में नाभि
मण्डल में व दूसरे अञ्जलि में अपने सब अंगोंका योग कियेरहे व
दोनों हाथोंसे शङ्करजीने शिर पकड़कर नीचेको झुकाकर व डाढ़ी
को पकड़कर कहतेहुये पीठको स्पर्श करकेफिर जैसाका तैसा शिर
करदिया ८३ व मोतियों का माला बनाकर शिवजीने हनुमानूजीके
कण्ठमें पहना दिया तब विष्णुभगवान् महादेवजी से यह वचन बोले
८४ कि हनुमानू के समान सम्पूर्ण ब्रह्माण्डमण्डल में कोई नहीं है
क्योंकि वेद व देवताओं के अगम्य तुम व तुम्हारे चरणों को अपनी

पीठपर यह चढ़ाये हैं ८५ सब उपनिषदें जिनको नहीं जानपातीं वे तुम्हारे चरणारविन्द इस हनुमान् की पीठको छूते हैं यमनियमादि साधनों से तुम्हारे ये पदकमल महायोगियोंके हृदयकमल में क्षण-मात्र नहीं स्थित होते वे इस हनुमान्की स्वच्छ पीठपर स्थित हैं कोटिसहस्रों वर्षोंतक बड़े कष्ट से दुश्चर तप करके ८६। ८७ तुम्हारे रूपको नहीं जानते फिर पादोंको मुनीश्वर कैसे पासकें साधारण मुनियों को कौन कहै अहो भाग्य विचित्र है कि यह चपल हनुमान् मृग कृतार्त्थ हुआ ८८ जोकि योगियों के हृदय में भी नहीं बैठसके ऐसे पादयुगलको अपनी पीठपर धरेहै हमने सहस्रों के सहस्रों वर्षतक प्रतिदिन ८९ भक्तिसहित पूजाकी परन्तु इसप्रकार तुम्हारे पादों के दर्शन नहीं हुये याने आपने चरण न दिखाया लोक में यह महावाद प्रसिद्ध है कि शम्भु नारायण के परमप्रियहैं ९० व शम्भु को नारायण परमप्रिय हैं परन्तु इस प्रकारकी भाग्य हमारी भी न हुई यह सुनकर सदाशिवजी बोले कि हे हरे! तुम्हारे समान हमको अन्य कोई प्रिय नहीं है ९१ पार्व्वती भी तुम्हारे तुल्य हमको प्रिय नहीं हैं फिर अन्य किसी की कौन गणना है यह वार्त्ता होजानेपर महादेवजी के प्रणाम करके गौतममुनिने ९२ जनाया कि हे करुणानिधे! हे अमेयात्मन्! यहां आइये मध्याह्नसमय भी बीता जाता है व भोजन का विलम्ब होता है ९३ इसके बाद श्रीविष्णु भगवान् सहित प्रकाशवान् महादेवजी आचमन करके गौतमजी के मन्दिर में जाकर भोजन के लिये उद्यत हुये ९४ सब पैरोंकी अंगुलियों में मुंदरियां धारण किये व नूपुर पहिने व बिजुली के समान चमकतेहुये रेशमी वस्त्रको ऊपरसे ओढ़े व क्षुद्रघंटिका पहिने अनेकहार कङ्कणादिकों व कण्ठाभरणों से भूषित व यज्ञोपवीत अंगौछेसे शोभित ९५ व लम्बायमान चञ्चलमणि कुण्डलों से युक्त व बालोंमें पुष्प गुहेहुये पञ्चाङ्ग विलेपनसे शोभित अङ्गद कङ्कणादि हाथों व अंगुलियोंमें धारण कियेहुये ९६ ऐसे भूषित शिवजी उत्तम आसनपर जाबैठे व वैसेही उत्तम दूसरे आसनपर अपने सम्मुख श्रीहरिको बैठालिया इससे श्रीहरि व श्रीशङ्कर सब देवताओं के

ईश आमने सामने दोनोंबैठे व गौतमजी प्रथम सुवर्णके पात्र दोनों जनोंके आगे धरगये ६७ उनमें तीसप्रकारके भेदके भक्ष्यपदार्थ व चारप्रकारकी पायस यह लेह्य पदार्थ ऐसेही और भी सुपक्क दोसौ प्रकारके पाक कल्पित कियेथे व तीनसौप्रकारके अपक्क पक्कमिलेहुये पदार्थ बनेथे व सौसौ उसी प्रकारसे सुन्दर कन्दके तुल्य शाकभी उसी प्रकारसे मुनिने ९८ घीयुक्त शाकादि पचीस तरहके दिये जो केवल शर्कराघृत आदि कच्चे पदार्थों के योगसे बनते हैं इस प्रकार सब पच्चीस प्रकारके भोजनहुये सब परोसे फिर सुन्दर कटहलका शाक व अन्य जो इक्कीसप्रकार के शाकभक्ष्य होते हैं सब शर्करादि युक्तकरके व कोई २ लवणयुक्तही गौतमजीने समर्प्पण किया आम्र केला अनार आदिके फल मोचाफल छुहारा खजूरके फल नारङ्गी जामुन चिरौंजी आदि नानाप्रकार के फलभी परोसे ९९ यह सब परोसकर थोड़ेजलसे "अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा" इसमन्त्रसे आचमनकराके जिसे "आपोशान" कहतेहैं फिर गौतमजीने कहा कि अब सबदेवर्षि महर्षिलोग व देवदेव सब भोजनकरैं २०० जब सब लोग भोजन करनेलगे तो सूक्ष्मवस्त्रका पङ्खालेकर गौतमजी शिव व विष्णुजीके पवनकरनेलगे १ तब महादेवजीके परिहासकरनेकी इच्छाहुई विष्णुजीसे बोले कि हे हरे! देखो भला इन सब पदार्थों को ये वानर हनुमान् कैसे भोजनकरेंगे २ जब श्रीहरि वानर हनुमान्की ओर देखनेलगे तो श्रीविष्णुके पात्रमें कोई वस्तु डालदी व सब मुनिसमूह देखतेही रहगये ३ व फिर महादेवजी ने अपनी जूंठी खीर आदि हनुमान्जीको देदी तब हनुमान्जीने कहा कि अब तो हमारा भोजन उच्छिष्ट होगया क्योंकि हे महादेवजी! उसमें तो आपने अपना जूंठाअन्न डालदियाहै व तुम्हाराही वाक्यहै कि जो कुछ पुष्प पत्र फल अन्नादि हमारेऊपर चढ़ायाजाय अथवा हमको निवेदित किया जाय वह सब अभक्ष्य होजाता है इससे कूपमें फेंक देना चाहिये ४।५ सो तुम्हारे इस कथनसे तो हम अब नहीं भोजन करसक्ते हां जो तुम्हारी आज्ञाहो कि इसमें कुछ दोष नहीं है तो हम भोजन करें सदाशिवजी बोले कि बाणकुण्ड मे उत्पन्न व अपने आप उत्पन्न चन्द्र-

कांत मणिकीमूर्त्ति व मनमें स्थिति मूर्ति ६ इन शिवकी मूर्त्तियों की नैवेद्य का भक्षण चान्द्रायण व्रतके समान होताहै व अन्य किसीके प्रतिष्ठापित आदि सब शिवमूर्त्तियों की नैवेद्य चरणामृतादि अभक्ष्य होते हैं यह भोजन करने का समय है इससे अन्य कथा कहने से वैरस्य होजायगी ७ भोजन करने के पीछे कहैंगे अब निश्शङ्क होकर हमारा उच्छिष्ट भोजनकरो यहकहकर भोजनकिया तब गौतममुनिने जलका संस्कारकरनेका प्रारम्भकिया ८ कुछ लाल रंगके छोटे चीकने अनेक प्रकार से धोये व अच्छी तरह से सुखाये हुये स्वच्छ करवों में तड़ाग का दिव्य निर्म्मल वस्त्रसे छनाहुआ जल भरा ९ व उन करवों को नदीकी बालूकी नवीन वेदीपर स्थापित किया व सूक्ष्म भीगेहुये वस्त्रों से आच्छादित किया व उनमें ऊपरसे पतली धारसे अन्य सुगन्धित जल छोड़ा व फिर कपूर कस्तूरी इलायचीका रस ऊपर से सबोंमें डाला व फिर चन्द्रकिरणों के समान उज्ज्वल थोड़ा थोड़ा कपूर सब पात्रों में छोड़ा ऊपर से पाड़र के पुष्प व गुलाब के पुष्प के माला छोड़े १० फिर उस जलको कपड़ा से छानकर घड़ा में भरके चम्बेली इत्यादि सुगन्धितचीजें छोड़कर व कपड़ासे मूंद कर ११ फिर उस सब जलको शुद्ध श्वेत वस्त्र से छाना इसप्रकार शुद्ध करके फिर प्रत्येक करवों में भरा फिर महीन कपड़े से घड़ेका मुख ढांककर १२ फिर छाया में करवोंको धरा व सूक्ष्मपंखों से ऊपर से पवनसंचार किया १३ उसी जलसे करवों को छिनका जब इसप्रकार संस्कारयुक्त जल सब पात्रोंमें भरागया तब बहुत से पुरुष व स्त्रियां हे नृप १४ व उनकी कन्या स्नानकरके व नानाप्रकार के भूषण धारण करके व शुद्ध छांटेधोये वस्त्र धारणकर हाथ पैर अच्छीतरह धोके थोड़ा अगर लगाकर १५ बाहुमूल व कण्ठमें ज्यादह लगाकर व मस्तक और अपने अंगोंमें कर्पूरमिश्रित चन्दन पंचगन्ध आदि सुगंधित पदार्थ लगाकर १६ व सुन्दर पुष्प अपने केशों में गूंथकर शुभमुखवाली साफ ऐसी स्त्रियां अंगों में केशर लगायेहुये १७ नूपुरादि भूषण विशेषता से धारणकरके निर्म्मल होकर व युवतियां विशेषकर सुन्दर सब अंगोंसे युक्त थीं ऐसी स्त्रियोंसे व ऐसेही भूषित

स्वच्छ पुरुषों से जल सबको दिखाने लगे १८ व देने के समय सबोंने सूक्ष्म वस्त्र धारण करलिये सब बायें हाथमें करवा लेकर १९ व उसकी टोंटी जो वस्त्रसे बँधीथी उसका डोरा खोलकर सब लेकर उद्यत हुये इसप्रकार भगवान् गौतम मुनि ने सब जल परोसने वालों को उद्यत कराया २० व महादेवादि सब महात्मालोगों को भोजनके समय जलपान कराया जब सब भोजन करचुके तो सबोंके हाथ पैर सुगन्धित वस्तु लगवाकर धुलवाये २१ व देवदेव महेश्वरजी जब जाकर आसनपर विराजमान हुये व विष्णुभगवान् दूसरे आसनपर विराजमान हुये व सब देवता ऋषिगणभी नीचे आसनोंपर बैठे २२ तब मणियोंके पात्रोंमें सुपारीके खण्ड व इलायचियां रखकर व कोणरहित गोले न बहुत बड़े न बहुत छोटे खण्ड ले आकर सबको दिखाये २३ व ताम्बूलके श्वेतपत्र लेकर अच्छी तरह देख शुद्धकरके उनपर कर्पूर के खण्ड व चूना खदिर गिरी के खण्ड धरके व बन्द करके गौतमजीने महादेवजी को दिया २४ व कहा कि हे देव ! ताम्बूल ग्रहणकीजिये जब मुनिजी यह वचन कह चुके तब महादेवजीने हनुमान्जी से कहा कि हे वानर ! तुम इस ताम्बूलको ग्रहणकरो व उसमें से निकालकर कर्प्पूरका एक खण्ड हमको देदेवो २५ तब हनुमान्जी बोले कि हे महेश्वर ! हमारा शरीर शुद्ध नहीं है क्योंकि हम अनेक फल भक्षण करते हैं हाथ मुखादिकभी नहीं धोते फिर वानरहोकर कैसे पवित्र होसक्तेहैं २६ तब सदाशिवजी बोले कि हमारे वचनसे सब शुद्ध होजाताहै व हमारे वचनसे विषभी अमृत होजाताहै व हमारेही वचनसे सब वेदहैं व हमारेही वचन से सब देवतादि हैं २७ हमारेही वाक्यसे धर्म्मका विज्ञान होताहै व हमारेही वाक्यसे मोक्ष होताहै पुराण वेद स्मृतियां व शास्त्रतन्त्रादि सब हमारेही वाक्यसे होतेहैं २८ इससे तुम ताम्बूल ग्रहणकरो व हमको कर्पूरादिके खण्ड देदेवो तब वानरेश ने ताम्बूल बायें हाथपर धरके स्वच्छ सुपारी का खण्ड उसमें से निकालकर २९ ताम्बूलके पत्ते तो अपनेलिये रखछोड़े व सुपारीके खण्ड शिवजीको देदिया व कर्प्पूर इसके देने के प्रथमही देचुके थे इससे शिवजी ने

कर्पूर व सुपारीके खण्ड भक्षण किये ३० जब महादेवजी इसप्रकार पूगफल खण्ड भक्षण करचुके तो मन्दराचलपरसे जय व विजयका हाथ पकड़ेहुई पार्व्वतीजी वहां मुनिजी के घरमें आई ३१ व महादेव जीके पदों के प्रणामकरके नीचेमुखकरके खड़ीहोरहीं व उनका मुख ऊपरको उठाकर महादेवजी यह वचन बोले कि ३२ हे देवदेवेशि ! तुम्हारे लिये हमने बड़ा अपराध किया जो तुमको छोड़कर हमने अकेलेही भोजन करलिया इससे हे सुन्दरि ! औरभी सुनो ३३ तुम अपने गृहही में बैठीरहीं जो कि घर खुलाथा यानी कपाटादि बन्द न थे व हमभी न थे इससे हमने बड़ा पाप किया ३४ सो हे देवि ! कोप छोड़कर देखो व हमारे इस अपराधको क्षमाकरो महादेवजीके ऐसा कहनेपर भी पार्व्वतीजी कुछ न बोलीं वसिष्ठकी स्त्री अरुन्धती के साथ वहां से चलखड़ीहुईं ३५ पार्व्वतीजी को चलीजाती हुई जानकर गौतममुनि ने दण्डवत् प्रणाम किया तबसे महादेवजी के सब दण्डवत् प्रणाम व स्तुति ३६ करनेलगे इसके पूर्व्व कोई द- ण्डवत् प्रणाम नहीं करता था व प्रणाम करतेहुये मुनिसे पार्व्वतीजी बोलीं कि गौतमजी अब तुम क्या चाहतेहो हमसे बतावो गौतम जी बोले कि हे देवि ! हम कृतार्थ हुये व यदि हमको वर दिया चा- हती हो ३७ तो हे महाभागे ! इससमय हमारे मन्दिर में भोजन करनेके योग्यहो पार्व्वतीदेवी बोलीं कि हे मुनिराज ! हम शङ्करजी की आज्ञाही से तुम्हारे गृह में भोजनकरेंगी यों न करेंगी ३८ यह सुनकर मुनि शङ्करजी के समीप जाकर उनकी आज्ञा लेकर फिर आये व पार्व्वतीजी को तथा अरुन्धतीजी को विधिपूर्व्वक अपने गृहमें भोजन कराया ३९ तब पार्व्वतीदेवी भोजन करके गन्ध पुष्प भूषणादि धारणकरके हजारों अनुचरी कन्याओंके साथ महादेवजी के समीप को गईं ४० तब शङ्करजी देवीजी से बोले कि अब तुम गौतमके घरको जावो व हम सन्ध्योपासन करके फिर गृहको आ- वेंगे ४१ यह सुनकर देवीजी फिर गौतमके मन्दिरको चलीगईं व शङ्करादि सबदेव महर्षिलोग सन्ध्यावन्दन करनेकी इच्छासे वहांसे बाहर निकले ४२ व महेशादि सब लोगोंने तड़ागपर सन्ध्यावन्दन

किया जब सबलोग सन्ध्या करचुके तो महादेवजी उत्तरको मुखकरके व अङ्गन्यास करके कुछ मन्त्र जपनेलगे ४३ तब महातेजस्वी श्री विष्णुभगवान् महेशजी से यह बोले कि जो सबलोगों से नमस्कार किये जातेहैं व सबलोगोंसे पूजित होते हैं ४४ व सब यज्ञों में जिनके लिये आहुतियां दीजाती हैं वे आप किसको जपेंगे जोकि जपने के लिये अङ्गन्यास करचुके हैं अंजलि जोड़कर बहुधा सब तुम्हीं अकेलेकी उपासना करते हैं ४५ सो देवदेवेश आपने किसकेलिये अञ्जलि जोड़ीहै हे महेश्वर ! नमस्कारादि पुण्योंके फलदाता तुमहो ४६ तो तुमको फल देनेवाला कौनहै व तुम्हारे वन्दनाकरने के योग्य तुमसे अधिक कौन है कहो तो श्रीशङ्करजी बोले कि हे गोविन्द ! हम किसीका ध्यान इस समय नहीं करते न किसीके नमस्कारही करते हैं ४७ व न किसी की उपासनाही करतेहैं न किसीका जपही करते हैं किन्तु नास्तिक जन्तुओं की प्रवृत्तिके अर्थ हमने यह कर्म्म करके दिखायाहै ४८ जिसमें लोग पापी नास्तिक न होजावें हमको देखकर सबलोग किसी न किसी की उपासना करतेरहें इससे हमने लोगोंके उपकारही के लिये यह सबकुछ कियाहै ४९ तब हां ऐसा कहकर श्रीहरि भगवान् स्तुति करके वहीं स्थित रहे बस इसप्रकार सन्ध्यावन्दनादि करके सब देव ऋषि मुनिलोग गौतमजी के गृह को गये ५० व वहां पहुँचकर सबोंने देवदेव महादेवजी की पूजा की सो हे रघूत्तम ! हनुमान्सहित महादेवजी गान करनेलगे ५१ सबदेवता मुनियों ने वहां नमःशिवाय इस पञ्चाक्षरी महाविद्याको जपा तब हनुमान्जी का हाथ पकड़कर शङ्करजी भीतरको पार्वती जीके निकट चलेगये ५२ व वहां एक शय्यापर पार्वतीसहित बैठ गये हनुमान् तुम्बुरु व नारद वहां गानेलगे ५३ व परमेश्वरजीने नानाप्रकारके विलास वहांपर किये फिर पार्वतीजी से शङ्करजी ने यह बात कही ५४ कि हे शुभे ! तुम हमारे सम्मुख बैठो हम तुम्हारे केश पुष्पादिकों से रचेंगे तब पार्वतीजी ने कहा कि पति स्त्रीकी शुश्रूषा करे यह कर्म्म उचित नहीं है ५५ केशप्रसाधन करनेपर फिर और भी अनर्थ प्राप्त होंगे इसके विशेष केशप्रसाधन करने

का निश्चय तुमको आताभी नहीं ५६ व आवे भी तो जब केश झाड़कर बाँधोगे तब फिर कन्धे भी झाड़नेहोंगे फिर पुष्पादिक केशोंके बीचोंमें देकर जूड़ाआदि बाँधनाहोगा ऐसेही एक दूसरे के पीछे तुम करतेरहोगे ५७ व इसी बीचमें कोई महात्मा आजायगा तब सब देवताओं से वन्दित तुम क्या उत्तर देवोगे ५८ कदाचित् कोई न भी आवे तोभी भय तो लगीही रहेगी ऐसा कहतीहुई पार्व्व-तीजीको हाथसे पकड़कर शङ्करजीने खींचलिया ५९ अपनी दोनों जांघों के ऊपर बैठालिया व उनके बँधेहुये केशोंको छोड़कर दोनों हाथों से केशोंके दोभागकरके नखोंसे फिर एक २ अलग कर-दिया ६० विष्णुभगवान् की दीहुई पारिजात के पुष्पों की माला जो केशोंके बीचमें गुहीथी उसको निकालकर सबलटोंको अलग २ करदिया फिर उस मालाको तो अपने हाथमें रक्खा ६१ व चमेली की दूसरी माला केशोंके साथ गुहदी फिर ब्रह्माकी दीहुई कल्पवृक्ष के फूलोंकी माला शङ्करजीने ६२ पार्व्वतीजी के गूढ़वस्त्र के भीतर अन्य गन्धादिकों से सुगन्धित करके स्थापित करदी तब कन्धे और पीठको अच्छेप्रकारसे श्रीविभुने मर्द्दनकिया ६३ तब नीवीको शि-थिलकरके कपड़ासे वेष्टित उसके नीचे दृष्टिपात करके यहांपर क्या है ऐसा कहकर फिर नीवी ज्योंकीत्यों शङ्करजी ने अपने करकमलों से बांधदी ६४ व फिर कहा कि तुम्हारा नासिकाभूषण हम देखेंगे यह सुनकर पार्व्वतीजी ने देदिया व शोभायमान मोतियोंको लेकर ६५ उनमें हरिद्रा मिलाकर सब मोतियोंको एकमें मिश्रित करदिया व कहा कि यह मोती धारण कीजिये जो कि हमारे व तुम्हारेप्रियहैं ६६ इसी बीचमें पार्व्वतीजी महादेवजीसे बोलीं कि हे शिव! अहोभाग्यकी बातहै कि तुम्हारे मन्दिरमें सब वस्तुओं की समृद्धिहै बहुतसे भूषण देखकर हमने पूर्व्वकालहीमें यह सब जानलियाथा ६७ व धनकी स-मृद्धि अब आपके भूषणोंसे जानीजातीहै जैसे कि आपका शिर तो ब्रा-ह्मणोंके शिरोंकी मालासे भूषितहै ६८ व मनुष्योंके हाड़ोंकी माला छाती पर शोभित होतीहै व विषसहित शेषनाग व वासुकि तुम्हारे हाथोंके कङ्कणहैं ६९ दश दिशायें वस्त्रहैं अर्थात् सदा नङ्गे रहतेहो जटा

तुम्हारे केशहैं व भस्म तुम्हारा अंगरागहै महोक्ष बड़ाबूढ़ा यह बैल तुम्हारा वाहनहै व तुम्हारा गोत्र और कुल अज्ञातहै कोई जानताही नहीं ७० व न तुम्हारे माता पिताका कुछ पता है व शरीर जानो वि-रूपाक्षहै अर्थात् तीन नेत्र होनेके कारण रूप बिगड़ाहुआ जानपड़-ताहै ऐसा कहतीहुई पार्व्वतीजी से विष्णुभगवान् कोपसहित बोले ७१ कि हे देवि ! देवदेव जगत्पतिकी निन्दा किसलिये करतीहो हे भद्रे ! जो तुमको असंयमहो तो हम अपने प्रियप्राण तक त्यागदें ७२ जो कोई इनकी निन्दा करताहै उसे सुनकर हमको मरणसमान दुःख होताहै ऐसाकहकर विष्णुभगवान् अपने नखों से पार्वती का शिर काटडालनेपर उद्यतहुये ७३ तब महादेवजीने हाथ पकड़लिये व कहा कि ऐसा साहस न कीजिये क्योंकि पार्व्वती के सब वचन हमको प्रियहैं व तुमको अप्रियहैं ७४ हमको यही अप्रियहै जोकि तुमने पार्व्वतीका शिर काटडालना चाहा तब बहुत अच्छा यह क-हकर श्रीहरिजी मौनहोरहे ७५ तब हनुमान्जीने महादेवजीसे यह वचन जनाया कि हम यहां से जाना चाहतेहैं क्योंकि हमको पूजा क-रनीहै ७६ उसकेलिये अपने गृहको जायँगे इसलिये आप आज्ञा देनेके योग्यहैं महादेवजी बोले कि किसकी पूजा करनी है व कहां पूजा करोगे उसमें पुष्प क्या होगा व पत्र क्या होगा कहो तो ७७ गुरु कौनहै व मन्त्र कौनहै व कैसा तुम्हारा पूजनहै जब देवेशजी ने ऐसा कहा तो हनुमान्जी भयसे कम्पित हुये ७८ व सब अङ्गों को कँपातेहुये स्तुति करनेलगे ॥

चौ० महादेव नम करत तुम्हारे । अमितात्मा शंकर दुखहारे ७९
योगी योग विधारण कारी । तुम योगिनी गुरू अघहारी ॥
योगगम्य सुरवर नम तोरे । ज्ञानिन स्वामी तुम्हें निहोरे ८०
वेदन के पति तुम्हें नमामी । देवनके पति तव अनुगामी ॥
ध्यानगम्य अरु ध्यान स्वरूपा । ध्यानकर्त्त गुरु नम अनुरूपा ८१
शिष्टगम्य अरु शिष्टस्वरूपी । भूमि स्वामि नम लेहु अनूपी ॥
जलगत वेदवाक्य उत्पादक । निधि तुम्हरे हम नमतअमादक ८२
आशुतोष मुखवाक्य प्रशंसित । अरु प्रतिपाद्य नमो वरदांशित ॥

अष्टमूर्तिधर तुम्हें नमामी । पशुपति हौं मैं तव अनुगामी ८३
त्रिनयन त्र्यम्बक नमत तुम्हारे । सोम सूर्य पावक नयनारे ॥
भृंगराज धतूर पूग प्रिय । द्रोणपुष्प बृहती जिन प्रियकिय ८४
चम्पक अरु पुन्नाग पियारे । नमो नमो हम करत तुम्हारे ॥
नमो नमो नम नमो नमो है । पुनि पुनि नमो नमो नममोहै ८५
कहशिव वानर भय कछु नाहीं । कहहु न किन जो तव मनमाहीं ॥

यह सुनकर हनुमान् जी बोले कि अंगों में विभूति लगाकर शिव पूजन करना चाहिये ८६ पर पूजाके लिये जल पुष्पादि सब दिन मेंही इकट्ठे करलेने चाहिये हे देव! अब शिवपूजा विधि बताते हैं ८७ जब सायंकाल आवे तो शिर से स्नानकरे फिर छांटाहुआ सूखा वस्त्र धारणकरके दोबार आचमनकरे ८८ व भस्म हाथमें लेकर उससे स्नानकरे इसीको आग्नेय स्नान कहते हैं ॐकारसे अभिमंत्रित करके भस्म धारणकरे अथवा आठबार ॐकारपढ़े तब धारण करे ८९ पंचाक्षर मन्त्र से अथवा जिसी किसी शिवके नाम से धारणकरे सो सातबार अभिमंत्रित भस्मको कुशधारण किये हुये हाथ से उठावे ९० व ईशानस्सर्वविद्यानाम् इस मन्त्रको कहकर शिरपर भस्म छोड़ देवे व तत्पुरुषायविद्महे इस मन्त्र को पढ़कर मुखमें भस्म छोड़े ९१ व अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यः यह मंत्र पढ़कर छातीपर भस्म छोड़े व वामदेवायनमः यह कहकर गुह्यस्थान में भस्मलगावे ९२ व सद्योजातम्प्रपद्यामि इससे दोनों चरणों में भस्म धारणकरे ऐसेही अन्य सब अंगों में पण्डितको चाहिये कि ॐकार पढ़कर भस्म लगावे ९३ यह ब्राह्मण क्षत्रिय व वैश्य तीनवर्णोंकी विधि उत्तम हमने कही अब शूद्रादिकोंके लिये विधि कहते हैं जैसा कि हमारे गुरुजीने कहा है ९४ शूद्र शिव यह कहकर भस्मको अभिमंत्रितकरे व फिर सातबार शिवाय यह कहकर शिरपरछोड़े शंकराय कहकर मुखमें छोड़े व सर्वज्ञाय यह कहकर हृदयमें लगावे स्थाणवेनमः यह कहकर गुह्यमें व स्वयम्भुवेनमः ९५ ९६ यह कहकर दोनों पादोंमें तब भस्मसे शुद्धहोकर इसके पीछे फिर नमश्शिवाय यह मन्त्र पढ़कर सब अंगोंमें भस्म लगावे ९७ फिर दोनोंहाथ धोकर आचमन करके हाथों में कुश धारण किये हुये ॥

दो० कुशाभावमहँ स्वर्णत्यहि के अभाव गँडकेश ।
ताअभाव दूर्व्वाकही सोनहोतु रजतेश ॥

अर्थात् कुशों के अभाव में सुवर्ण की मुँदरी पहिने उसके अभाव में गँडे के बालोंकी ९८ उसके न होनेपर दूर्व्वाकी व दूर्वाके अभाव में चांदीकी फिर इसप्रकार कुशादि धारण करके सन्ध्योपासन जप करके देवमंदिर में जावे ९९ वहां देववेदी हो तो उसपर नहीं तो स्थण्डिलकी कल्पना करे वह स्थण्डिल अर्थात् चबूतरा मिट्टी का शुद्धबनाहो व कमल की कर्णिका उसमें बनीहों सो कमलों के आकार जहां बनाये जायँ ३०० चाररंगों से अथवा उजले बनाये जायँ व सबपर विचित्र कमल स्वस्तिक १ उत्पल गदा शंख त्रिशूल डमरू आदि बनाये जायँ पांच धवरहर व शिवलिंग भी उसीपर बनाये जायँ २ व सदाफल वृक्ष बहुत से बनाये जायँ बेर व बेलके वृक्षभी अवश्यहों पट्कोण त्रिकोण अथवा नवकोण ३ द्वादशकोण की दोलापालकी बनाई जाय पादुका व व्यजनभी बनाये जायँ चामर व छत्र दो २ बनाये जायँ विष्णु ब्रह्मा ४ ये सब बुद्धिमान् जन पिसानसे वेदीके ऊपर बनावे अथवा देवालयकी भीतियों में अथवा वहां सबके लिये मन्दिर बनवावे उनमें स्थापित करे जहां देवपूजाहो वहीं पण्डितको चाहिये कि इन सब मूर्तियों का भी स्थापन करे ५ अपने हाथोंसे बनवायाहुआ मन्दिरादि मुख्यहोताहै व मोल लियाहुआ भी मध्यम होताहै किसीसे मांगाहुआ कनिष्ठ होता है व बलात्कारसे किसीका छीनलेना अधम होताहै ६ चाहे पूजा के योग्यहो व न हो जबर्दस्तीसे लेना निष्फलही होताहै इससे दुपहरिया फूल व सफेद व लाल चावल व धान्यमात्रके पिसानसे यथाक्रम उत्तम मध्यम व अधम ७।८ पद्मादि स्थापन करके सम्यक् प्रकार से यागकरे पूर्व उत्तर मुखकरके व पूर्वही मुखहोकर पूजाकरे ९ अब आसन कहतेहैं जैसा कि देखा व सुनाहै चाहे कौशेयहो व कच्चासूत व काष्ठका व ताड़के पत्रोंका १० व कम्बल सोना व चांदी व ताम्रकाहो व गौके सूखेगोबरका व मदारके पत्तोंका आसन बनावे ११ फिर व्याघ्रचर्म व रुरुसंज्ञकचर्म व हरिणसंज्ञक व मृगसंज्ञक

इन चारतरहके चर्मके आसन बनावे व मौंहाके पत्तोंका बनावे १२ इनमें जो होसके उसका आसन बनावे फिर पद्मासन करके व स्वस्तिकासन होके १३ कुश व भस्मसे आसन करके प्राणायाम करके मौन होरहे तब तक देवतारूप होकर हृदयमें ध्यानकरे १४ शिखाके अन्त में बारह अंगुलके स्थित सूक्ष्मशरीर शिवजी जोकि विश्वमूर्त्ति हैं प्राणियों के गुहारूप हृदयमें प्राप्तहैं १५ सम्पूर्ण आभरणयुक्त व अणिमादि गुणयुक्त ऐसे शिवको ध्यानकरके चित्तमें स्मरणकरे व शिवकी व्याप्ति से शरीरको पूर्णकरे १६ उसी दीप्तिसे शरीर में टिकाहुआ पाप नाश होजाता है जैसे कि पाराके सम्पर्कसे सोना लाल सफेद होजाताहै १७ वहां बारहदलोंसे आवृत आठ व पांच व तीनशुद्ध आसन परिकल्पित करके उसमें लिङ्ग स्थापन करके १८ गुहास्थित महादेवजीको लिङ्गमें चिन्तनाकरे व शुद्ध कलश में शुद्ध सुगन्धित जल १९ जिसमें सुगन्धित पुष्पछोड़े व उसको प्रणव से अभिमन्त्रितकरे प्राणायाम व प्रणव शूद्रसे न कहे न देखावे न जनावे २० प्राणायामपदमें ध्यान शिव यह व ॐकारमन्त्र व चन्दन फूल अक्षत पूजाकी सामग्री जौनहै २१ उनको निकटधरके सङ्कल्पकरे कि शिवकी प्रसन्नताकेलिये शिवकी पूजाकरेंगे २२ यह सङ्कल्प करके फिर स्नानपर्य्यन्त आवाहनादिक करके फिर स्नानकरावे २३ शतरुद्री विधानसे नमस्ते इत्यादि मन्त्रोंसे आविच्छिन्न जो धाराहै वह मुक्तिधारा कहीजाती है २४ उस धारासे रुद्रजी के समीप जपतेहुये स्नानकरावे एकबार व तीनबार व पांचबार व सातबार व नवबार २५ व ग्यारहबार युक्त महीनाभर मुक्तिदायक मुक्तिस्नान कहाजाताहै २६ शैवविद्यासे स्नान व केवल प्रणवसे मिट्टी व नारियल के खण्डोंसे व ऊर्मियों से २७ व कांस्यसे व पुष्पादिकों से यथासम्भव कहेहुये मन्त्र व सामग्री से देवदेवशजीको स्नानकरावे २८ अब स्नानकेयोग्य जैसी शृङ्गकीविधि होतीहै वह कहते हैं पहिले भीतर शुद्धकरके फिर बाहर शुद्धकरे २९ चिक्कण छोटा नाग करके कहीं छेद न करेव नीचे एकदेशमें गोलाकार द्वार द्रोणी से ३० कुश युक्त करके देवके अर्थ स्नान करावे इस तरह गवय शृङ्ग की नल-

मूर्त्ति कहीजाती है ३१ द्वारपर निषिद्ध लोहार्द्ध सन्धिद्वारा समन्वित योग वक्र नागदण्ड नागाकार बनावे ३२ फल स्थानमें दण्ड के बराबर छिद्रयुक्त पानपात्र स्थितकरे उस में ऊर्ध्व यन्त्र घड़ामें स्थित जल गिरावे ३३ व अन्य वामकरसे छोड़े उससे पवित्र पापनाशन मुक्तिधारा कीजाती है ३४ इसतरह देवेशजीको स्थापनकरके पञ्चगव्य व पञ्चामृतसे स्नानकराके व तीनों मधुर चीजोंसे ३५ फिर देवेशजीको भूषणों से भूषितकरके फिर महेश्वरजी को स्नानकराके व शीतोपचार करके फिर आचमनादि करावे ३६ फिर वस्त्र व यज्ञोपवीत व पञ्चगन्ध व कर्पूर व अगर व चन्दन ३७ दोनों मिलाकर शिवलिङ्गको पूजनकरे व सम्पूर्ण पीठ चन्दन से पूर्णकरके व विभवके अनुसार ३८ चुपचाप सामग्री सहित काले पुष्प अर्पणकरे व श्रीपत्रसे व यथायोग्य शक्तिके अनुसार सम्पूर्ण सामग्री से पूजाकरे ३९ अनेकद्रव्ययुक्त धूप व गुग्गुलु केवल कपिलाके घीसे युक्त सब धूपोंकेलिये अच्छा कहागया है ४० यथाशक्ति धूपदेकर कपिलाके घीसे व और घीमात्रसे दीपदेकर उपहार ४१ शक्तिके अनुसार पुष्पोंसे युक्त देकर फिर आदरसे मुखशुद्धि के लिये ताम्बूल देकर ४२ फिर प्रदक्षिणा व नमस्कारकरे इसतरह पूजा समाप्तकरे फिर गीताङ्गपञ्चक पढ़े ४३ गान व नृत्य व वाद्य व पुराण पढ़ना व हास्यवचन व नीराजन पुष्पांजलि ये सब अर्प्पणकरे ४४ फिर क्षमा कराके विसर्ज्जनकरे यह उपचार कहाताहै फिर भूषण व छत्र व चमर व पङ्खा ४५ शिवजीका उपवीत व किङ्करता ये छह शिवजी के उपचारहैं इसीतरह ३२ उपचारोंसे जो शिवजीका आराधन करताहै ४६ उनके एकही दिनमें सब पाप नाश होजातेहैं ३२ उपचारका पूजन उत्तमोत्तम होताहै ४७ सदाशिवजीने कहा कि इसी तरह हे कपिश्रेष्ठ ! तुम्हारी पूजा हम कहतेहैं हमारे युगलचरणकी पूजाकरके सब पूजाकारक होवो ४८ इसतरह यथायोग्य लिङ्ग की पूजाकरके हमारा आराधनकरो यह सुनके हनुमान्जी ने कहा कि गुरुजीने तो लिङ्गपूजाही हमारेलिये कल्पनाकी है ४९ हे देव ! उसको पहले करूंगा पीछेसे तुम्हारे चरणोंकी पूजा करूंगा यह कहके नम-

स्कार करके शिवलिङ्गका पूजन करनेलगे ५० तड़ागके निकट जाके बालूकी ही वेदी बनावे व तालके यंत्र से बनायाहुआ सुन्दर आसन बनावे५१तब हाथ पाद धोकर एकाग्रचित्त होकर आचमनकरे फिर भस्मस्नान विधिपूर्वक करके फिर आचमन करके मौनरहे ५२ देव-वेदीमें मनोहर कमलबनावे फिर तालपत्र व कमलोंका आसन बनाकर प्राणायाम करके पूजाकरनेवाला बैठे ५३ व्यानपवनको धीरे धीरे रोंकतारहै फिर गुरु ईशानके प्रणाम करके इसके उपरान्त जपकरे ५४ फिर देवपूजन करनेके लिये यत्नपूर्वक स्थित होवे पलाश के पत्रोंके दो दोनोंमें पवित्रजल लावे ५५ व शिरपर कमण्डलु व करवा धरलावे अग्निको तीनमन्त्रों से युक्तकरे आवाहनसे लेकर स्नान पर्य्यन्त सब क्रियाकरे ५६ फिर स्नान करानेके लिये देवता को करसम्पुटसे उठावे व सबओरसे उस देवमूर्तिको देखकर कपिने पीठ न देखा ५७ लिङ्गमात्र हाथमें देखकर भयसंयुक्त होकर यह कहे कि मैंने कौनसा पाप कियाहै ५८ जो यह पीठरहित शिवलिङ्ग मेरेहाथमें स्थितहै सो मेरेपापका स्मरणकरके लिङ्ग इस पीठपर नहीं आताहै तो मेरा मरणही सिद्ध है ५९ अब रुद्र को जपूंगा तो महेश्वर जी आवेंगे यह मनमें करके शतरुद्रियका जपकरेंगे ६० हनुमान्‌जी कहतेहैं कि जब मैंने पूजकहोकर ऐसाकहा तोभी महेश्वरजी न आये तब मैं रोदन करताहुआ पृथ्वीपर गिरपड़ा उसीसमय वीरभद्रजी आये ६१ व बोले कि हे भक्त ! किसलिये रोतेहो रोदनका हेतु हम से कहो तब हनुमान्‌जीने कहा कि यह लिङ्ग पीठहीनहै हमारा पाप-समूह तो देखो ६२ वीरभद्रजीने कहा कि जो लिङ्गमें पीठ नहींआया तो साहस न करो जो पीठ न आवेगा तो हम लोकको भस्मकरदेंगे ६३ देखो जो पीठ न आवे तो लिङ्ग मुझे दिखावो तब वीरभद्रने देखा कि लिङ्ग विना पीठहीका आयाहै ६४ यह समझकर प्रताप-वान् वीरभद्र सब लोकों के भस्म करनेका विचार किया व अग्नि फेंका उसने क्षणमात्रमें सब पृथ्वीको जलादिया ६५ फिर नीचे के सातोंलोकोंको भस्म करके अग्नि ऊपरके लोकोंके जलानेको चला जब यहांके पांच लोकोंको भस्मकिया तब जनलोकनिवासीलोग ६६

ललाटके नेत्र से सम्भूत अग्निको नखमे लेकर जँभीरी निम्बूके फलके समान हाथमें लेकर ६७ कहाकि यदि पीठ लिङ्गके संग नहीं आता तो लोक सब भस्मही धरे हैं इसमें कुछ संशय नहीं है जब ऐसा कहने परभी पीठ नहीं आया तो प्रतापी वीरभद्रने ६८ सनकादि महात्माओंका स्मरण किया वे लोग अपने योगाभ्याससे जानकर वहांआये व आकर गौतमजी के आश्रम में जाकर महादेवजी के समीप पहुँचे ६९ व वहां देवादिकों से सेव्यमानभी महेश्वरजी को प्रथम न देखा तब सब देवोंसे उत्पन्न स्तोत्रोंसे वे लोग महेश्वरजीकी स्तुति करनेलगे कि ७० ॐ देवदेव शुद्धप्रभाव अचिन्त्यरूप तुम्हारे नमस्कारहै व सुरोंके अधीशके नमस्कारहै व उनके वेदगुह्यके नमस्कारहै ७१ शिव आदिदेव के नमस्कारहै व नागकोही यज्ञोपवीत के स्थानमें धारणकिये शिवके नमस्कारहै व देवताओं को आनन्द समूह देनेवाले त्रयीरूप विश्वम्भरजी उन शिवजी के नमस्कार है ७२ पृथ्वी वायु आकाश जल चन्द्रमा अग्नि सूर्य्य व आत्मा जिन शङ्करजी की आठमूर्तियां हैं उनके नमस्कार है जो कि केवल ज्ञान से गम्य हैं ७३ ऐसी स्तुति को सुनकर भगदेवता के नेत्र देनेवाले शिवजी श्रीविष्णुजी से बोले कि आप जाकर उन ब्राह्मणोंको लिवा लावें ७४ बस श्रीहरिजीके लायेहुये उनलोगोंने शिवजी के प्रणाम किया उनसे शङ्करजी बोले कि तुमलोग किसलिये यहांआये ७५ मुनिलोग बोले कि हे देव! बारह लोकोंके भस्मकी राशियां देखीजाती हैं बस यह जनलोकही स्थित रहगया है इसप्रकारका लोकनाश देखिये ७६ तब श्रीसदाशिवजी बोले कि ऊपरके पांचलोकोंके दाहमें हमको संदेहहै क्योंकि यदि वे भस्म होगये हैं तो अंगारों की वृष्टि इसलोक में क्यों नहीं होती व बड़ीभारी ध्वनि क्यों नहींहोती है ७७ मुनिलोग बोले कि हमलोगों को इससमय बीरभद्र से भय है वेही जानों अंगारवृष्टिके प्यासे हैं सो पी रहे हैं ७८ यहसुनकर महादेव जीने बीरभद्रको बुलाकर कहाकि वीरभद्र यह क्या बातहै बीरभद्रने कहाकि हमने हनुमान् के यहां पीठ रहित लिंगको देखकर ऐसा कियाहै ७९ बानरराज के चित्तकी दृढ़ता जानने के लिये हमने यह

कियाहै यह सुनकर कृपानिधि शिवजी ने जैसा पूर्व्व में था वैसाही सब करदिया ८० जो जलगये थे सब लोकोंको उन समर्त्थने पूर्व्ववत् बिना जलेहुये करदिये ऐसा करके फिर बिश्वात्मा शिव वीरभद्रसे बोले ८१ व उनको लपटाकर शिर सूँघकर शिवजी ने ताम्बूल दिया व हनुमान्‌जीने फिर ईशजीका पूजन किया ८२ उसी बीचमें बीणा हाथमें लिये एक वनबासी गन्धर्व्व वहां आया हनुमान्‌जीने उससे कहा कि यह बीणा हमको देवो ८३ गन्धर्व्वने कहा यह बीणा हमारे प्राणके समान है इससे हम इसे नहीं देसक्ते हनुमान्‌जीने कहा कि हमारे भी प्राणोंकेही तुल्य यह बीणाहै ८४ बस हनुमान्‌जीने एक मूकामारा वह गन्धर्व्व गिरपड़ा तब बानराधिप ने बीणालेली व उस को स्वरताल तारों से ठीक किया ८५ व उसकी तुम्बीको ठीककर के तारके फलके समान बनाया व उसके ऊपर तार लगाकर उसे अपनी छातीमें लगाकर गातेहुये हनुमान्‌जी शिवजीके पासगये ८६ व भटकैयाके सुन्दर पुष्पोंसे जाकर देवदेवके पादोंकी पूजा की तब शिवजी ने कल्पपर्य्यन्त जीने का बर हनुमान्‌जी को दिया ८७ व दूसरा बर यह दिया कि तुमको समुद्र नांघजाने व नांघआने की शक्तिहो ८८ व किसी से ठीक २ तुम्हारी पराजय न हो फिर सब भूषणोंसे भूषितहोकर व अपनी दीप्तिसे सब देवताओं की दीप्तिको मन्दकरके प्रसन्नमूर्त्ति तरुणगुणोंसे युक्त एक शिवजीने सब देवताओंका बड़ाआदर सत्कारकिया ८९ एक अतिरमणीय मनोहर पीताम्बर लेकर महेश्वरजीने कहा हे हरे! यह पीतवस्त्र तुम ग्रहणकरो ९० इसीप्रकार एक रक्तवस्त्र ब्रह्माजीको दिया व फिर सबोंको वस्त्र दिये देवता ऋषि दानवादिकोंको दो २ वस्त्रदिये ९१ श्रीरामचन्द्रजीने यह बृत्तान्त सुनकर शम्भुमुनिको दो वस्त्रदिये जोकि बहुत सूक्ष्म व बहुतमोलके थे व सुवर्णका एक भूषणभी अपूर्व्वदिया ९२ भोजनकर मन्त्री पुरोहितों सहित सुखपूर्व्वक बैठेहुये नानामुनिगणों व राजाओंसे युक्तहोकर व बानरोंके साथ गौतमीनदीके तटपर ९३ पुराणके निश्चयको जाननेवाले शम्भुमुनिसे श्रीराघवजीने पूँछा कि तुम सब कर्म्म धर्म्म सब युगोंके जानतेहो ९४ हे ब्रह्मन्! किसयुग

में कौन धर्म्म विशेष होताहै यह हमसे सब युगोंकी व्यवस्था अच्छे
प्रकार कहो शम्भुमुनि बोले कि सत्ययुगमें केवल ध्यानकरनाही श्रेष्ठ
था व त्रेतामें यज्ञका करना ९५ व द्वापर में नित्य पूजन करना व
कलियुगमें नित्य कुछ दानकरना और हरिकीर्त्तन करना श्रेष्ठहै सब
सब युगोंमें श्रेष्ठहैं परन्तु कलियुगमें ध्यान करना किसीप्रकार श्रेष्ठ
नहीं है ९६ हे प्रजानाथ ! कलियुग में रहनेवाले मनुष्योंके बल व
धन दोनों थोड़ेहोंगे इससे किसीकी बुद्धि धर्म्ममें न नियत रहेगी व
न वेदमें न स्मृतिमें ९७ न यज्ञकरने में न स्वधाकार में न पुराणों
के सुनने में न जपकरने में न तीर्थोंमें न सज्जन महात्मा पण्डितों
की सेवामें ९८ न देवताओंकी पूजामें न अपनी २ जातिके कर्म्ममें
बुद्धि नियतहोगी न देवताओंके स्मरणमें न कभी किसीप्रकारके धर्म्म
में ९९ इससे कलियुग में बहुत दिनोंतक करने के योग्य पुण्योंके
करनेमें लोगअसमर्थ होजायँगे परन्तु दानथोड़ेही कालमें होसक्ता
है इससे कलियुगमें दान मनुष्य करसक्ताहै वह धनके अभावसेहो
नहीं सक्ता १०० इससे कलियुग में दुष्टप्राणियोंका प्रायश्चित्त नहीं
होसक्ता हां किसी २ के पापोंका नाश प्रायश्चित्तोंसे होजाता है १
जिनका भूलसे भी कहीं पुण्यक्षेत्र में जानाहोजाता है जैसे कि जो
लोग ब्रह्मज्ञानी होतेहैं जो गयामें जाकर श्राद्धकरते हैं जो काशीको
जातेहैं जो वेदमार्ग्ग पर चलतेहैं जो पुराण बांचकर जीविका करते
हैं व पुराण सुनतेहैं व पुराण बांचते हैं २ सो युगों के अनुसार से
व अर्थकी विवेचना करनेसे अपने व दूसरेके निश्चय उत्पन्न कराने
से परब्रह्म के प्रकाश करने से ३ पुराणवक्ता सब से विशेष है जो
पुराणवक्ता के कियेहुये पापभी पुराणके प्रभावसे न छूटें ४ तो फिर
अन्य किसीके पाप कलियुगमें पुराणसे जो पुराणमें विश्वास करताहै
व वक्ताको गुरू मानताहै ५ जोकि ब्रह्मविद्याका देनेवालाहै व ज्ञाति
बन्धु से विशेष है उस मनुष्य के भी सब पाप नाश होजातेहैं इसमें
सन्देह नहींहै ६ महादेवजीके श्रीशैलमेंजाना पूजाकरनेवालेको इसी
से कलियुगमें पुराण मनुष्योंके पाप नाश करनेवालीहै ७ हे रामच-
न्द्रजी ! इसके प्रथमके कलियुगका एक वृत्तान्त हम कहते हैं सुनो

एक वेद वर्जित गौतम नाम ब्राह्मणहुआ ८ उसके पुष्टि व पशुनाम के दोभाई और थे वेभी दोनों वेद शास्त्र कुछपढ़े लिखे न थे उनदोनों के साथ उस गौतम ब्राह्मणने खेतीकी उसमें कुछ बढ़तीहुई ६ जब कुछ धनधान्यादिक अधिकहुआ तो वह राजाको दिया व राजासे बोला कि हमको किसी अधिकारपर नियतकरो १० हमारे दोनोंभाई बड़े परिश्रमी हैं इसमें कुछद्रव्य न इकट्ठाहोगी राजा बोला कि ब्राह्मण का अधिकार वैदिक धर्म्म कर्म्म करनेका है ११ हे विप्र! इससे वैदिक धर्म्म कर्म्म से अन्यत्र नियत करने से ब्राह्मणता जातीरहेगी गौतम ब्राह्मणबोला कि जो आप कहते हैं वह अन्य युगोंका धर्म्म है क-लियुगका ऐसा धर्म नहीं है १२ व हे भूपाल! तुम राजाहो इससे राजाओं का धर्म्म कहतेहो ब्राह्मण जो धनादिक से क्षीणहोजाय तो तुम्हारी वा तुमसे नीचोंकी वृत्ति करने से नहीं दूषितहोता १३ यह हमभी जानते हैं कि खेती का करना शूद्रोंकाही धर्म्म है आपत्काल में भी ब्राह्मण का धर्म्म नहीं है इससे हम क्षत्रिय के धर्म्म को करेंगे अस्त्रशस्त्र धारण करके जीविका करेंगे हमको ग्राम देदेओ १४ हम को क्षत्रियकी वृत्ति को छोड़कर अन्य वृत्तिसे जीविका करना नहीं अच्छा लगता तब राजा ने कहा कि बहुत अच्छा जो तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो हमने तुमको ग्रामों का अधिकारी किया १५ परन्तु जैसेही उसब्राह्मणको ग्रामोंका अधिकार हुआ उसका चाल चलन दुष्ट होगया अभक्ष्य पदार्थ मदिरा आदि जो उनग्रामों में बनतेथे उनके सूँघने से मदिरा पीनेका स्वभाव पड़गया व दुष्टवचन बोलने का स्वभाव स्वामिता के कारण होगया १६ पराई स्त्रियों के संग भोग करनेका स्वभाव व परधन लेलेने का अभ्यास होगया बार-बार जुआ खेलने में प्रीति होगई व कलह करने का तो जानों वह ब्राह्मण स्वरूपही होगया १७ व जगत् के ईश शिव व विष्णु की पूजा तो उसने कभी स्वप्न में भी नकी जब इसप्रकारके दुराचार में वह ब्राह्मणयुक्त हुआ तो राजाने उससे एकदिन कहा १८ कि हे विप्र! अबतुम ब्राह्मणता छोड़कर शूद्रताको प्राप्तहोगयेहो इससे अब नि-योगके धर्म्म से हम आपको जाति से भ्रष्टकरते हैं १९ तब वह

ब्राह्मण बोला कि अच्छा जो ब्राह्मणता हमारी जातीरही तो शूद्रताही हमको बहुत है हम इसी वृत्तिमें रहेंगे जो आज से ब्राह्मण लोग अब हमारे गृहमें न भोजन करेंगे तो न करेंगे हमको यही श्रेष्ठ है २० परन्तु हे महाराज! हम अपने इन आचरणोंको नहीं छोड़सक्ते क्याकरें शूद्रही सही अबतो भ्रष्टही होगये शम्भुमुनि रामचन्द्रजी से बोले कि जब उस दुराचारी ब्राह्मणने ऐसाकहा तो राजा चुपहो रहा २१ वह ब्राह्मण अब शूद्रोंके समान मांस सहित अन्न खाने-लगा एक समय वह दुष्ट विप्र दैवयोग से एक सभा में चलागया २२ वहां एक ब्राह्मण का पढ़ाहुआ यह श्लोक उसने सुना व उस ब्राह्मणका कहा हुआ उसके हृदय में स्थित होगया वह श्लोक यह था जिसको उस ब्राह्मण ने सभामें पढ़ाथा कि २३ ॥

श्लोक परात्परतरय्याँन्ति नारायणपरायणाः ॥
नरकेतंपतिष्यन्तियेद्विषन्तिमहेश्वरम् १

दो० परसे परतरजात हैं नारायण परलोग ॥
नरकपरहिंगे लोगजे शिववैरी सहशोग १

अर्थात् जो लोग नारायण में परायण होते हैं वे परसे परतर परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होते हैं व जो लोग महादेवजी से वैर रखते हैं वे नरक में गिरेंगे २४ इस व्याख्यान को भी सुनकर वह ब्राह्मण उस पौराणिक बिप्र से बोला कि नारायण कैसे हैं व महेश्वर कैसे हैं २५ व पर अयन क्या कहाता है व वैर कैसा होताहै व त-त्पर किसको कहते हैं व उससेभी परतर क्याहै २६ पौराणिकबिप्र बोला कि पर ब्रह्म के स्थान को कहते हैं जोकि सुखका एक मुख्य लक्षण है व उससे परतर विष्णु का धाम है क्योंकि वह ब्रह्मधाम से अधिक है २७ व कभी न बिनाश होने के कारण वह परमपद कहा जाताहै उसके मध्य में पुरुष विष्णुहैं उनके अंगको परमविभु कहते हैं २८ नारसे जन्म होने के कारण (आप) जल नार कहाते हैं व नार जिससे कि इनके अयन हैं इसलिये ये नारायण कहाते हैं २९ व जिन लोगों का बर्त्ताव उस पर में है वे लोग तत्परायण कहाते हैं व जिसके नेत्र चन्द्र सूर्य्य व महदादि तत्त्वों का जो ईश्वर है ३० व जिसके नेत्र चन्द्र सूर्य्य

अग्नि हैं उन उमापतिजी को महेश्वर कहते हैं ईश्वर परमात्मा में अप्रीति करने को बैर वा द्वेष कहते हैं ३१ शम्भुमुनि रामचन्द्रजी से बोले कि पुराणके भट्टका कहाहुआ ऐसा वचन सुनकर चिन्तना करतेहुये उस ब्राह्मणने फिर कहा कि भला मुझसे पापीकी कैसेगति हो ३२ तब पौराणिक पण्डित बोला कि सुनो तुम्हारी गतिको कहते हैं अब तुम सबयत्नसे(प्रायश्चित्त)पापोंका शोधन विधिपूर्व्वक करो ३३ व धर्म्म भी यथाशक्ति यथाकाल यथाविधि करतेरहो ऐसा करने पर पापों से विमुक्तहोकर उत्तमगतिको पाओगे ३४ अथवा एकाग्रचित्तहोकर नित्य पुराणसुनो अथवा विना भोजनकियेहुये महेशान पिनाकीआदि नामोंसे प्रसिद्ध शिवजी की पूजाकरो ३५ अथवा पुण्डरीकाक्ष क्लेशनाशन श्रीकेशवभगवान् देवदेवकी पूजाकरो अथवा संन्यास धारणकरो वा ब्रह्मज्ञान में नित्य तत्परहोओ ३६ अथवा काशीको जाओ व मुक्तिकेलिये वहांमरो अथवा वहां श्राद्धकरने के लिये तुम बड़ेयत्नसे गयाजीको जाओ ३७ अथवा सब वेदोंकेसार पापनाशी रुद्रको शतरुद्रिय जपतेहुये प्रतिदिन पूजो ३८ श्रीशैलपरजाओ अथवा केदारनाथको जाओ अथवा प्रतिवर्ष माघस्नान करतेरहो ३९ बहुत कहनेसे क्याहै शिवजी सदा धर्म्मके भक्तहैं सो इन सबधर्म्मों के करनेसे तुम्हारा नरकवास न होगा यद्यपि तुम ब्राह्मणों में अधमहो ४० तब गौतमविप्र बोला कि आपकेमुखसे पुराणसुनकर फिर जितनेकार्य आपनेकहे हैं सब हमकरेंगे परन्तु शास्त्रही विश्वासका हेतुहोता है इसलिये जो वस्तु बर्जितहों हमसे बताइये ४१ पौराणिक ब्राह्मणबोला कि मांसभक्षणकरना मदिरापीना परस्त्रीगमनकरना जुआखेलना मिथ्या अपनी प्रशंसाकरना कठोरता मिथ्यावचन माया देवदेव विष्णु वा शिवकीनिन्दा ४२ गुरू पिता वृद्ध पुराणपाठी स्मृतिपाठीकी निन्दा उजला भांटाखाना गोललौकी का भक्षण ४३ बिजौरानिम्बू कुसुम्भकाशाक लालमूरी अरीतुरई नारियल कूष्माण्ड ४४ कोविदारफल तेल पीठा मनुष्यकादूध नयी ब्याईहुई दशदिनके भीतर गायआदिका दूध व भेड़ीकादूध ४५ ऊँटिनका व एकखुरवाली घोड़ी खचरीआदि का दूध बिलारीकादूध

बिन बच्चेकी गाय भैंसकादूध लोन व दूधमिलाकर ४६ व कांस्यके पात्रमें नारियलका दूध ताम्र व शीशेकेपात्र में मधु काच में मट्ठा जूंठमें फिर घृतलेना ४७ मिट्टीकेबर्त्तनमें होम व चांदीकेपात्रमें खीर इनको भक्षण न करे व विचक्षणको चाहिये कि बहुधा किसीका विश्वास न करे ४८ पात्रके बीचमें चूनालगाहो तो उसगर घरके अन्य पदार्थका भोजन न करे खाली सुपारीके साथ चूना न खाय ४९ व जिसके मुखमें कृमिपड़ेहों वह सुपारी केवल न भी खाय खीरमें मिलाकर लोन न खाय व केवल प्रत्यक्ष में लोनहीलोन हाथमें लेकर न खाय ५० परन्तु सिन्धु सौराष्ट्र काम्बोज मगध सिंहल इनदेशों में दुग्ध लवणमिलाकर खानेमें दोषनहींहोता ५१ व सबप्रकारके दूध लोन में मिलाकर अन्य सबदेशों में वर्ज्जित हैं इनके पानकरने से दोषहै इसमें सन्देह नहींहै ५२ व बहुत कहनेसे क्याहै इनसब वस्तुओंको व सज्जनों की निन्दाको बराना चाहिये शम्भु मुनि रामचन्द्रजी से बोले कि उसमहात्मा पौराणिक ब्राह्मणके ऐसे वचनसुन कर ५३ वह गौतम अपने घरको जाकर बड़ीचिन्ताको प्राप्तहुआ अब ऐसा दुःखितहुआ कि यही शोचाकरे कि रात्रिमें मृत्युहोगी वा दिनमें ५४ शोचनेलगा कि सुख दुःखतो परदेशमें भोगने पड़तेहैं व भोग यहां कियाजाताहै कृमिकीट मनुष्यादिकों के सुख दुःख अलग २ होतेहैं ५५ व प्रत्येक जन्तुओं के जीवनका भेदभी बहुत है एक जीवकी दूसरे जीवकीसी जीवनकी व्यवस्था नहीं होतीहै ५६ जन्मकेसमय सबको महाज्ञान रहताहै व शैशवमें फिर उससे बहुत कमहोजाताहै प्रथम प्राणी उठकर चलनहींपाता फिर थोड़ा २ चलने लगता है ५७ फिर कुमार अवस्था में क्रीड़ाकरने में आसक्त होजाताहै व यौवनावस्था में स्त्रयादिकों के विषयोंकी इच्छा होतीहै जब यौवन बीतजाताहै तो द्रव्योपार्ज्जन करनेमें चित्तलगताहै ५८ व वृद्धावस्थामें भोगकरने की लालसाहोती है परन्तु उसअवस्थामें भोगनहीं करसक्ताहै क्योंकि वृद्धावस्थामें कीचड़ ख्यँखार राल बार पकने दाँतउखड़ने व कांपने ५९ श्वास कासआने आदिसे सब इंद्रियाँ विकल होजाती हैं न कहीं वह जासक्ताहै न कुछ जानसक्ता है ६० पर

बैठीहुई परस्त्रियों के गुप्तस्थान देखने की इच्छाकरता रहता है व पर-
स्त्रियोंको देखकर अण्डकोश खजुवाने लगताहै इन कुलक्षणोंसे वह
क्रूर जीनेलगताहै ६१ गलहरियाँ खजुवाकर वस्त्रखोलकर उनको अ-
पने अङ्ग दिखाताहै भोजनकरने के समय वृद्धावस्थामें गलेमें कफ इ-
तना जकड़जाताहै कि भोजन नहीं कियाजाता ६२ जब खाँसी आने-
लगतीहै तो जानपड़ताहै कि बस अब फिर युवा होगया व सौवर्षकी
आयुहोगई उस अवस्था में मल बहुत निकलनेलगताहै व खँखार
अधिक निकलने लगता है यह सबकी दशाहोती है उसकीभी यही
दशाहुई ६३ पुत्रबधू अपकार वचन कहनेलगीं व पौत्रादि हँसकर
तालीदेनेलगे परन्तु गुरुजानकर बार२ शोचकर फिर ६४ भोजनके
लिये बुलानेलगे पर वहतो न भोजन करसके व फिर विचारनेलगे कि
ये वेही लड़के हैं जिनका पालन पोषण मैं करताथा ६५ अब अति
दुष्ट कर्म्म करनेवाला मैं कैसे भोजनकरूं व कैसे शयनादि करूं कैसे
ठहरूं कैसे चलूं व मेरा परलोक अब कैसे सुधरे ६६ इस चिन्तामें
रात्रिदिन लगे रहकर किसीका नमस्कारादि नहीं करसका किसीके
साथ एकदिन वह पौराणिकब्राह्मण के घरको फिरगया ६७ व लज्जा
के मारे नीचे मुखकरके बोलाकि अब मैं क्या करूं परन्तु वह पौरा-
णिक ब्राह्मण उससे कुछभी न बोला ६८ यह बड़ापापीहै यह जान-
कर अपने एक शिष्यकेसाथ चलागया तब यह गौतमभी निकलकर
उसके द्वारके बाहर खड़ाहुआ ६९ तब पौराणिक फिर अपनेगृहके
भीतर पृथ्वीमें बैठाहुआ देखकर बिचारने लगा कि किस उपाय से
इस पापीको पीठ दियागया पर इसने न भजा ७० हे राम ! पृथ्वी
में बैठाहुआ पुराण जाननेवाले से बोला व फिर कि जो प्रायश्चित्त
आप बतावें उसको मैं करूं ७१ तब ब्राह्मण बोला कि प्रथम तूने
जितने पापकियेहैं अपने मुखसे कह तो प्रायश्चित्त बतायाजावे तब
उसने कहा मैंने तो कुछभी पाप नहीं किया ७२ इतनाकहकर पृथ्वी
पर गिरपड़ा व रोदनकरनेलगा कि हे ताम ! मैं कैसे पीड़ितहूं तब पौ-
राणिक ब्राह्मणने उससे कहा कि जब तुमने कुछपापही नहीं किया
तो हम प्रायश्चित्त किसकाबतावें जाओ कुछभी प्रायश्चित्तनहीं है ७३

जब महापाप तीनबार कियाजाता है अर्थात् एकबार किया गया फिर छिपायागया फिर पूछनेपर कहा गया मैंने कियाही नहीं तो तीनबार होचुका बस ऐसे पापका कौन प्रायश्चित्त है गौतमब्राह्मण बोला कि हे महाभाग, पौराणिकजी! अभी मुझमें पाप विद्यमानही हैं तो आपकी संगति जो मेरी हुई वह विफलही ठहरी पौराणिक जी बोले कि प्रायश्चित्तके निर्णय करने में सबके लिये शास्त्र प्रमाण है ७४ । ७५ इससे जो विनाशास्त्रके अपने मनमाना प्रायश्चित्त बतादेताहै वह प्रमाण नहीं होसक्ता एकबार जो पाप कियाजाता है उसका प्रायश्चित्तभी एकही है व दोबार करनेका दूना प्रायश्चित्त होता है ७६ व तीसरे पापका त्रिगुणा प्रायश्चित्त कहा है पर चौथी बारका उद्धार किसी प्रकार नहीं होसक्ता पर तुमने चारप्रकार क्या बहुत प्रकारसे पाप किये ७७ तो आप ऐसे महामहापापीका प्रायश्चित्त हम कैसे कहसकें तब गौतम ब्राह्मण फिर बोला कि बताइये मैं फिर कहांजाऊं ७८ तब हे रामचन्द्रजी ! वह पौराणिक ब्राह्मण चुपहोरहा व गौतम श्रीशैलपरको चलागया ७९ व वहां नदी में स्नान करके उसने मल्लिकार्ज्जुन नाम महादेवजीका दर्शनकिया व तीनव्रतकिया कि शिवरात्रि आपहुँची ८० कि चौथाव्रतभी किया अतिदुःखसे फिर फल मूल वल्कलसे अमावास्या को पारणकिया ८१ फिर ब्राह्मणने श्रीशैलकी प्रदक्षिणाकी चिन्तासे श्वास लेते हुये दुर्बलशरीर पीछे मन्दिरको गया ८२ चुपचाप मेरे पापकी निवृत्ति कैसे होसक्तीहै कौन विना विचारे बड़ापाप कियाहै ८३ व विनयपूर्व्वक बोला कि हे भगवन् ! मैंने कौन ऐसा पाप किया कि कोई उसका प्रायश्चित्तही नहीं बताता भला किसी पुराणके सुनने वा जाननेसे प्रायश्चित्तहोगा ८४ वा नहीं यह शोचकर ईश्वरकी प्रेरणासे फिर पुराणभाषीके पास जाकर बोला कि हे भगवन् ! आप एक कोई पुराण हमको सुनावें ८५ फिर हमारे जातकर्म्मादि संस्कार करावें तब हम ब्राह्मण होकर सुनें व जो प्रायश्चित्त उचितहो करें ८६ बस जो कर्त्तव्यहोगा वह पुराणही बतावेगा इससे हम यथायोग्य पुराणहीका विचाराहुआ करेंगे ८७ तब पौराणिक बोला कि अच्छा हम पाप-

नाशनपुराण कहेंगे जैसी हमारी शक्तिहै व जैसी विधिहै व कालहै ८८ भला तुम्हारी रुचि किस पुराणकीहै कहो तो हम वही पुराण कहें गौतम विप्र बोला कि हमारी रुचि सब पुराणोंमें है अब हम क्या कहें अपने विचारसे आपही कहें ८९ पर ऐसा पुराण कहें कि जिसके सुननेसे हरि व हरकी निन्दा न हो पौराणिक पण्डित बोला कि॥

चौ० कूर्म्मपुराण एक जो गावा । उभय देव कर नाम बतावा ९०
जो त्यहि सुनत तासु अघनाशा । होत त्वरित यह सबहुँप्रकाशा ॥
पर जो वक्ता कूर्म्मपुराना । तासु विघ्न होवत सब जाना ९१
अरु जो सुनाचहत त्यहि नारी । मरत तुरत यह बात प्रचारी ॥
पर यक बात कहत हम नीकी । जो श्रोता वक्ता कहँ ठीकी ९२
जो वक्ता करि प्रीति बखानै । धर्म्म प्रकाश होय सब जानै ॥
पुण्य कर्म्म आचार बखाना । कर्म्म मोक्षप्रद है पुनि नाना ९३
हरिहर तुष्ट होत यहि गाये । देत इष्ट फल निज मन भाये ॥
तासु पितरतरि शुभगति लहहीं । पावहिंपरपद श्रुति असकहहीं ९४

इति श्रीपद्मपुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेशिवराघवसंवादे
चतुर्दशोत्तरशततमोऽध्यायः ११४ ॥

एकसौपन्द्रहवां अध्याय ॥

दो० । इकसौपन्द्रह अष्टदश मह पुराण श्रुतिविद्धि ॥
उपपुराण अरु भारतहु रामायण श्रुतिसिद्धि १
पौराणिक लक्षण श्रवण फल अरु दान महात्म्य ॥
सकल कहे दृष्टान्तयुत जिनसों हरितादात्म्य २

इतनी कथा सुनकर श्रीरामचन्द्रजी ने शम्भुमुनि से पूँछा कि हे द्विजसत्तम! अनेक पापकिये हुये उस अधम ब्राह्मणसे उस पुराणवक्ताने कैसे व्याख्याकी १ शम्भुमुनि बोले कि हे रामचन्द्रजी! पापी को पढ़ाने से व पापीसे पढ़ने से व अन्य किसीप्रकार एकत्रबैठने उठने से उसके संग सालभर भोगकरने कराने से पापीका पाप दूसरे अपापी में चलाजाता है २ परंतु सब निश्चित अर्थ जाननेवाले पौराणिक पण्डितकी वाणी पापके समूहको भी नष्ट करडालती है ३ जैसे कि अग्निका बड़ाढेर धूमसे नहीं नाश होता व शलभ दीपक

का नाश करसक्ता है परंतु अग्नि का नाश नहीं करसक्ताहै ४ ऐसेही पौराणिक पण्डित औरों के पापोंका नाश करडालता है व औरों के पाप उसको नहीं लगसक्के जैसे भूत प्रेतादि ग्रह लगेहुये मनुष्यों को भूतादिक भय छुड़ानेवाला पण्डित ५ मन्त्रवान् होता है वह भूतोंको छुड़ादेता है व उसका भूत कुछ नहीं करसक्के हैं पर पापी लोग ऐसा नहीं करसक्के ६ पौराणिक पण्डित ऐसेही सुननेवालोंके पापोंका नाश करता है पर और के पापोंको नहीं पासक्ता है अपने कियेहुये जो पाप व औरों के किये हुये पापोंको पुराण जाननेवाला नाशता है अथवा अतिसन्तुष्ट अपना कर्म पापों का नाश करता है ७ व आपतो हृषीकेश भगवान् महाविष्णु हैं व महाविवेकी हैं लोकवेदोंकी सब क्रियाओं के वेत्ताहैं वाञ्छारहित होकर रुद्रजाप करते हैं ८ संतुष्ट रहते शांत रहते सब क्रियाओं में दक्षहैं व बड़े उद्योग करनेवाले इन्द्रियजित् हैं हे महाराज! जैसे पुराण जाननेवाले भगवान् ऋषि वशिष्ठजी ९ तुम्हारी आज्ञासे अयोध्यामें बहुत दिनों से स्थित रहते हैं व सब पृथ्वीभर की रक्षा वही करते थे जब तुम राक्षसोंका नाश करनेको गये थे १० व वनमें शुक्राचार्य्य के उपदेशसे एक राक्षस तुमको मारने के लिये आया था उसने विचारा था कि जब कभी ये निद्रावश होजावेंगे उसी अवसर में मारडालूँगा और ऐसा अवसर न मिलेगा ११ इस बातको अयोध्या में बैठेही बैठे तुम्हारा प्रिय करनेवाले वशिष्ठजीने जानलिया कि जबकभी सुस्त होकर रामचन्द्रजी सोजायँगे तब यह राक्षस मारेगा इसमें संशय नहीं है १२ सो अब हमको प्रथमही से इसका निवारण करना चाहिये यह चिंतना करके विप्रर्षिवशिष्ठजी सेनालेकर गये १३ व मृत्युसहित उस राक्षस के मारने में असमर्थ हुये तब मुनि आप राक्षसका रूप धारण करके महामुनिजी उसराक्षससे यह वचन बोलेकि १४ मुनियों से सेवित इस वनमें तुम कैसेआये उसने कहा कि राजा राक्षसों के मारने को आयाहै हम उसको मारने आयेहैं १५ तब मुनिने कहा कि राजाके जीने मरने से क्याहै हमारा मांसखावो व युद्ध करके जीतको पावो १६ तब वह राक्षस बोला कि तुमभी तो राक्षस

हीहो फिर हमारे भक्षण के लिये कैसे होवोगे तब वशिष्ठजी मनुष्य का रूप धारणकर जाय आकाश में स्थित हुये १७ व उसके मस्तक पर थूँककर मूकासे उसे मारा जब राक्षसको मुनिने ताड़ित किया तो वह राक्षस ताड़ित होनेपर आकाशको चलागया १८ तब वहां से दोनोंजने एक दूसरे के ऊपर दौड़ते हुये समुद्र के तीरपर पहुँचे वहां समुद्र में रहनेवाले एक घड़ियालने उस राक्षसको लीललिया १९ तब मुनि फिर अयोध्याको चलेआये व पूर्व्ववत् वहां स्थित हो-कर राज्यप्रबन्ध करनेलगे व आनन्द से विराजनेलगे शम्भुमुनि बोले कि इससे पुराण जाननेवाला स्वामी के मतसे सब कुछ पुण्य पाप किया करताहै पर उसे पाप नहीं लगता २० अब पुराण सुनने का विधान कहते हैं महाराज उसे सुनिये शुक्ल तो पक्षहो सुन्दर सौम्यग्रहों के सोम बुध गुरु शुक्रवारहों व नक्षत्र योग भी शुद्धहीहों २१ करण अच्छाहो लग्नभी शुभहो ग्रह तारा सब बल युक्तहों कोई ग्रह अस्त न हो बृहस्पति शुक्रकी बाल्य व वृद्धता न हो २२ कृष्णपक्ष न हो ग्रहण के दिनसे तीनदिन पहिले पीछे न हो व न किसी नास्तिकके निकटहो बस इन समयों को छोड़कर प्रथमके कहेहुये पक्ष नक्षत्रादि में पुराण सुने २३ शुद्ध झारेबहारे लीपेपोते गृहमें अथवा शुद्धवेदीपर अथवा पाठशाला मठादि में नदी के तीरपर वा किसी देवालयमें अथवा सभामन्दिरमें २४ वा अन्यत्रही मण्डप छाकर पर चौरहा में न सुने अन्य रम्य पुण्यशाला धर्म्म-शाला आदिमें सुने जब सुननेपरहो तो सब विप्रेन्द्रोंके नमस्कार करे व पुराणवक्ताके तो विशेष प्रणामकरे २५ पुराणज्ञ के लिये सब से विशेष व ऊँचास्थान कल्पितकरे वक्तासे मधुर कोमलवाणी से कहै कि आइये इस धर्म्मासनपर बैठिये २६ अब पुराण के प्रारम्भ के दिनका जो कार्य्यहै वह कहतेहैं पुराणके वक्ताको प्रथम वस्त्रादिकोंसे पूजितकरे २७ फिर सूक्ष्म रेशमी ऊनी आदि दिव्य नवीन वस्त्रदेवे पहुँची आदि भूषण सब पात्र दिव्य नवीन आसन २८ देकर गन्ध पुष्पाक्षतादिकों से पूजित करके फिर दिव्य सुगन्धित ताम्बूल देवे व अच्छेप्रकार अपने हाथोंसे लेकर वक्ताको आसनपर बैठाले फिर

शुक्लवस्त्र धारणकिये चन्द्रमाके सदृश उज्ज्वल वर्णवाले चतुर्भुज २९ प्रसन्नमुख विष्णुजीका ध्यान सब विघ्नोंके शान्त होनेके लिये करे फिर सभामें बैठेहुये अन्य महात्मा ब्राह्मणादिकोंकी पूजा करके फिर गणेशजीकी प्रार्थनाकरे ३० ॐनमः इत्यादि मन्त्रसे उनकी पूजाकरके फिर नमस्कारकरके सरस्वतीजीकी स्तुतिकरे व प्रातःकाल से पुराण बांचनेका प्रारम्भकरे ३१ प्रारम्भके दिन तीन पांच सात नव आदि विषम संख्याक श्लोकपढ़े व उसके दूसरेदिन उससे दूने श्लोकपढ़े ३२ हे रामचन्द्रजी ! तीसरे दिन उनसे भी अधिक पढ़े जबसे लगालगावे निरन्तर पढ़तारहै किसीदिन विच्छेद न होने पावे ऐसेही नियम सुननेकाहै कि किसीदिन विच्छेद न होने पावे ३३ जब अन्तर पड़जाय किसीकारणसे सुनना बन्दहोजाय तो उसदिन वक्ताको ताम्बूलदेकर विसर्ज्जन करे फिर दूसरे दिन सुने ३४ इस प्रकार प्रतिदिन पुराण श्रवण करना चाहिये यह श्रुतिहै व जो कोई नर व्रतरूपसे पुराणको सुनता है ३५ उस पुराणका प्रतिपाद्य जो देव होता है उसके लोकको वह पुरुष जाता है इस में संशय नहीं है पुराण सुननेकी इच्छा कियेहुये पुरुष जो एक श्लोकभी सुनता है ३६ तो उसका उसदिनका कियाहुआ सबपाप नष्ट होजाताहै इसमें संशय नहींहै ३७ इसप्रकार जो कोई क्रमसे पूरा कोई पुराण सुनता है वह ब्रह्महत्या कियेहुये पापके भी बन्धनसे छूटजाताहै व हे रामचन्द्रजी ! मदिरापान करने के पापके बन्धन से सुवर्ण चुराने के पापसे व गुरुस्त्री के संग भोग करने के भी पापसे विमुक्त होजाता है ३८ व अन्य भी जो पूर्व्व के किये हुये पुरुषों के पाप होते हैं सब नष्ट होजाते हैं व इस जन्म के भी सौवर्षतक के इकट्ठे किये हुये श्रोता व वक्ताके पाप नष्ट होजाते हैं ३९ कलियुग में सब ब्राह्मणों को सर्व्वज्ञता नहीं होती इससे जो गुणरहित जैसी कैसी भी व्याख्याहै वह दानकर्म्म के समान फल देतीही है ४० पुराणों का अभिप्राय जैसा व्यासजी जानते हैं वैसा और नहीं जानताहै पर शम्भुमुनि कहते हैं कि हम व्यास से व ब्रह्मा से भी अधिक पुराणों का अभिप्राय जानते हैं ४१ वेदाध्ययन तप मन्त्र व हवन इतना नहीं फल

देते जितना कि पुराणों का सुनना फल देताहै ४२ एक एक पुराण के श्रवण करने से महामहापाप नाश होते हैं इस में कुछ भी संदेह नहीं है जैसे कि श्रीशैलपर जाने से पाप नष्ट होजाते हैं ४३ इससे पुराणज्ञाता पापनाशक गुरुहै श्रोता को चाहिये कि उसकी वंदना भलीभांति करे क्योंकि उससे अधिक गति देनेवाला अन्य कोई गुरु नहींहै मन्त्र देनेके जो गुरुलोग हैं व जो वेद शास्त्रों के गुरुलोग हैं वे सब विज्ञान नहीं देसक्के क्योंकि वे अपने अपने विषय के बोध करानेवाले हैं ४४। ४५ हे राम! पिशाच ब्रह्मराक्षस व वेदमंत्र जाननेवाले सैकड़ों लोगहैं परन्तु पुराणजाननेवाला ठीक २ कहीं नहीं दिखाई देता ४६ क्योंकि जो पुराण से विमुख नहीं होता वह भूत भविष्य वर्त्तमान सबकुछ देखताहै इससे पुराणजाननेवाला सबका हितकारी होताहै क्योंकि पापनाशकरनेसे वह सबका प्रभुहै ४७ इससे पुराणज्ञाता की पूजा सबकी पूजा है व उसको पीड़ित करना सबका द्रोहकरनाहै जैसे सबदानों से विद्यादानकी प्रशंसाहोतीहै ४८ हे रामचन्द्रजी! ऐसेही पौराणिक पण्डितकी प्रशंसाहै इससे उसको जो दानदियाजाता है उसका महाफल होताहै श्रीरामचन्द्रजी ने पूंछा कि पौराणिक पण्डितको क्या देना चाहिये कितना व कैसा पदार्त्थ ४९ व कैसा पुराण वर्ज्जनीय है व कैसा पुराण जाननेवाला त्याज्य होताहै शम्भुमुनि बोले कि हे रामचन्द्रजी! छहरसके अन्नपान व अन्य जितने चीकने रसीले पदार्त्थहों व जो अपनेको बहुतप्रियहों ५० व सामग्रीसहित गृह पुराणवेत्ताको दिलादेने चाहियें जितने पदार्त्थ दियेजायँ सबपूर्ण व अधिक फल देनेवालेहों व सब सुन्दर प्रिय मनोहर चित्र विचित्र वस्तु देनी चाहियें ५१ व भूषण उसके पहिरने के योग्य अपनी शक्तिके अनुसार देने चाहियें ५२ व गन्ध पुष्पादि तो प्रतिदिन देनाचाहिये अथवा केवल चन्दनादि सुगन्धित वस्तु प्रतिदिनदेवे केवल पुष्पही चाहे प्रतिदिनदेवे व फलोंके काल में फलदेवे ५३ व ताम्बूल प्रतिदिन देतारहै और समय २ पर नमस्कार भक्तिसे करतारहै व पुराण जिसदिन समाप्तहो उसदिन विशेष दानदेवे ५४ व हे महाराज! उसदिन अधिक पृथ्वी सुवर्णादिक

देवे व कोई चुपचाप विना कुछ दिये हुये नहीं सुनसक्का ५५ चाहे
सभा सज्जनों की इकट्ठीहो पर विना पूजा कियेहुये वह सभाकी
असभा होजाती है देवता के स्थान में सबको यथाशक्ति कुछ देकर
पूजन करना चाहिये ५६ हे रामचन्द्रजी ! जैसे तीर्थों में जाकर व
पुण्य देव मन्दिरादिकों में पूजा कीजाती है ऐसेही कथा सुनने के
पीछे पौराणिककी भी पूजा अवश्य करनी चाहिये ५७ पर हां अ-
पनी शक्तिके अनुसार पूजा करनीचाहिये यह नहीं कि किसी दरिद्र
को थोड़ी सामग्रीसे पूजनकरतेहुये देखकर धनाढ्य भी वैसेही करने
लगें नहीं वे अपनी सामर्थ्य के अनुसारकरें हे नृप ! श्रोताके
लक्षण जानो हम आपसे प्रथम कहीचुके हैं अब सब पौराणिक के
लक्षण तुमसे कहते हैं ५८ कुलहीन कुष्ठादि महाव्याधियों से युक्त
ब्रह्महत्यादि महापापोंसे युक्त जिसका बहुधा अनादरहोताहो शौच
आचारसे विहीन व वेदस्मृतियों से रहित ५९ किसी देवताकीपूजा
से शून्य जिसके मुखसे दुर्गन्धिआतीहो अङ्गरहित काना लंगड़ा
आदि अधिक अङ्गवाला परस्त्रीगामी चोर प्राणियों की हिंसाकरने
करानेवाला व जो पौराणिककासा आकार न रखताहो बस ऐसे
पौराणिक वर्जितहैं ६० हे नृपोत्तम ! अब तुमसे वर्जित पुराण क-
हते हैं जो पूर्वके मुनि ब्रह्मा मरीच्यादि कहगयेहों व पीछे फिर नये
मुनि ६१ व्यासादिकोंने कहाहो बंस ऐसे पुराण उचितहैं इससे सु-
नने व कहनेके योग्यहैं पुराणके भीतर जितने ग्रन्थहों उनको पढ़े व
उसकी जो टीका आदि व्याख्या हुईहो उसे न पढ़े ६२ जिसी किसी
देशभाषा में व्याख्या कीगई होगी वह देशभाषा के भेद से अनेक
प्रकार की होसक्ती है पर जिस देशकी भाषामें वह ग्रन्थ न रचागया
हो जिस देशकी वह भाषा न हो वह ग्रन्थ सुनने से उस देशमें कुछ
फल नहीं है ६३ व किसी पुराणकी व्याख्या अनुवादादि हो पर
जिस देश के श्रोताहों उसी देशकी भाषा में होने से फलदायक होता
है इससे जो पुराण सुनने की इच्छाहो उसको हमसे कहो हम सुना-
वेंगे ६४ शम्भुमुनि रामचन्द्रजी से बोले कि जैसे हमने तुमसे कहा
कि जिस पुराण के श्रवणकी इच्छाहो हमसे कहो ऐसेही उस पौरा-

णिकने गौतम से कहा वह सुनकर गौतम ने भी तीनवस्त्र उस महात्मा ब्राह्मण को दिये ६५ व उससे पहिले कूर्म्मपुराण सुना यह हमने सुनाहै व फिर उसने बहुतसा सोना दिया व अच्छे अच्छे बहुत से वस्त्रदिये ६६ फिर लिंगपुराण सुना फिर विष्णुपुराण व फिर वामन पुराण श्रवण किया तदनन्तर पद्मपुराण फिर गरुडपुराण फिर आ-दित्यपुराण फिर ब्रह्मपुराण सुना ६७ इसप्रकार इन आठ पुराणों को गौतम विप्रने सुना फिर रामायण सुनकर कूर्म्मपुराण दुबारा सुना ६८ व शिवनारायण यह परममन्त्र सदा जप करता रहता था फिर जब वह ब्राह्मण मृतक हुआ तो ब्रह्मलोक को चलागया ६९ ब्रह्माजी ने उसकी पूजा की फिर शिवजी की पूजा करके फिर विष्णु-लोक को चलागया वहाँ विष्णुजीने पूजा की फिर शिव के लोक को आया ७० ऐसा करने से गौतम विप्र सबका वन्दनीय हुआ आपको जो श्रवण करनेकी इच्छाहो तो भारतकोभी श्रवण कीजिये ७१ जिस महाभारतको व्यासमुनिने तीनवर्षमें बनाया है इसभारत के इतिहास के सुनने से व सम्पूर्ण भारतकी टीका आदि बनाने से ७२ फिर उसको चाहिये कि उत्तमयोगी को छोड़कर किसी के प्रणाम न कियाकरे क्योंकि जो कोई भारतपर व्याख्या करता है वह सबका वन्द्य होजाता है ७३ व जो कोई अब आगे महाभारतका अर्थ कहेगा अथवा अनुवादादि कोई नई व्याख्या इसकी करेगा अथवा ऐसेही इसका पाठ करेगा वह ब्राह्मण सबसे अधिक होगा व सब मनुष्योंको तारेगा ७४ जो कोई भारत के सब पर्व्वोंका व्याख्यान करता है अथवा किसी किसी पर्व्वका वह ब्राह्मण सब पापोंसे छूटकर हव्य व कव्य के देने के लिये विशेष समझा जाताहै ७५ व सबको चाहिये कि उसी विप्रके प्रणामकरें व उसीकी योग्य पूजाकरें व उसी को नित्य भोजन करावें व सबकुछ उसीको देवें ७६ व उसके पूजा का विधान व्याख्यान के समयका यह है कि जैसा अपने धनहो उसके अनुसार वस्त्र भूषण व पात्रों से उसकी पूजाकरे ७७ आदि-पर्व्वकी समाप्ति में तीन सूक्ष्म रेशमी वस्त्र वक्ताको देवे व यथाशक्ति सुवर्ण भी देवे व सभापर्व्व के अन्त में दो वस्त्र देवे ७८ व अनुशा-

सन वनपर्व्व व स्वर्गारोहण पर्व्वोंमें जो पूजा आदिपर्व्व के अन्तमें कही गई है वही करनी चाहिये ७९ व कर्णपर्व्व अश्वमेधपर्व्व विराट् शल्य व द्रोण इनपर्व्वों में तीन सूक्ष्मवस्त्र व दो निष्क सुवर्ण देना चाहिये ८० व अन्य छोटे २ पर्व्वों में भी दो २ निष्क सुवर्ण देवे व हरिवंश के अन्तमें निष्कसहित तीन सूक्ष्मवस्त्रदेवे व जब सम्पूर्ण महाभारत की समाप्तिहोवे तो कुछ भूमिदान अवश्य करना चाहिये व रामायण के श्रवण में प्रत्येक काण्डकी समाप्ति में पूजन करना चाहिये ८१।८२ कितो जितने में वाचकका निर्व्वाह होजावे उतना खेत देना चाहिये अथवा सुवर्ण देना चाहिये क्योंकि व्याख्यान करनेवाला पण्डित गुरुवाक्य का भी कल्मष नष्ट करदेता है ८३ हे मुनिसत्तमो ! अर्त्थ धर्म्म काम व मोक्ष व्याख्या के सुनने से सब पदार्त्थ सिद्ध होते हैं ८४ व ब्रह्महत्यादि सबपापों का भी नाश होता है जो एक महाभारत को सुनलेतेहैं उन पुरुषों को फिर क्या सुनने को बाकी रहजाताहै ८५ इससे द्रव्य पान सुवर्ण आदिकोंसे नित्य वक्ताकी पूजा करनीचाहिये व्याख्यान करनेवाले की पूजा करनेही से सबपापोंका नाश होताहै ८६ और भी पुराण जो मुनियों के कहे हुये हैं वे सब श्रोताओंके पापोंका नाशकरते हैं व वक्ताओंकेपापों का नाश तो विशेषरीतिसे करते हैं ८७ व जो कोई सब छत्तीसों पुराणों व उपपुराणों को कीर्त्तन करताहै अथवा सबोंको सुनताहै उसके चित्तमें भ्रान्ति नहीं होती है ८८ इस पुराणके मतसे ब्रह्मपुराण प्रथम है दूसरा पद्म तीसरा विष्णुपुराण चौथा शिवपुराण ८९ व भागवत पुराण पांचवां व छठां भविष्य व नारदीयपुराण सातवां ९० व मार्कण्डेयपुराण आठवां व नवां अग्निपुराण व दशवां ब्रह्मवैवर्त्तपुराण ९१ ग्यारहवां लिङ्गपुराण बारहवां वामनपुराण तेरहवां स्कन्दपुराण चौदहवां मत्स्यपुराण पन्द्रहवां कूर्म्मपुराण सोलहवां वाराह सत्रहवां गरुडपुराण ९२ व अठारहवां ब्रह्माण्डपुराण पण्डितोंने ये अष्टादश पुराण कहेहैं अब इनकेपीछे उपपुराणों के नाम कहते हैं ९३ प्रथम सनत्कुमारनाम उपपुराण दूसरा नृसिंहपुराण तीसरा माण्डव्योपपुराण चौथा दौर्व्वाससोपपुराण ९४ पांचवां बृहन्नार-

दीयोपपुराण छठां कापिलोपपुराण सातवां मानवोपपुराण आठवां औशनसोपपुराण नवां दूसरा ब्रह्माण्डोपपुराण ९५ दशवां वारुणोपपुराण ग्यारहवां कालिकोपपुराण बारहवां माहेशोपपुराण तेरहवां शाम्बोपपुराण चौदहवां सौरपुराण पन्द्रहवां पाराशरोपपुराण सोलहवां मारीचोपपुराण सत्रहवां भार्ग्गवोपपुराण ९६ व अठारहवां कौमारोपपुराण ये अष्टादशउपपुराण गिनाये इन अष्टादशउपपुराणों के कर्त्ता मनुजी हैं इसीसे मानवोपपुराणसे मनुस्मृति प्रयोजनहै ९७॥

इति श्रीपाद्ममहापुराणेपातालखण्डेभाषानुवादेशिवराघवसंवादेपुराणमाहात्म्यप्रस्तावोनामपञ्चदशोत्तरशततमोऽध्यायः ११५॥

एकसौसोलहवां अध्याय ॥

दो० सौसोलह कल्पान्तरी रामायण शिव गाव ॥
सोसुनि राघव चकित भे जाम्बवान समभाव १
प्रथम दशाननवध बहुरि कुम्भकर्णवध यत्र ॥
शिवधनु सेतु भयो जहां अपर अपूर्व्वक तत्र २

श्रीरामचन्द्रजी ने शम्भु मुनिसे कहा कि अब तो सन्ध्यावन्दन का समय आया इससे इस समय की क्रिया करनीचाहिये क्योंकि सूर्य्यभी अस्तहुये व पक्षी सब अपने अपने घोंसलोंमें होरहे १ इतना कहकर रामचन्द्रजी सन्ध्यावन्दन करने को चले व शम्भुमुनि भी बड़ी शीघ्रतासे चले श्रीरामचन्द्र के आगे हाहा हूहू नाम गन्धर्व गाते बजाते स्तुति करते हुये चले जाकर गौतमी नदी के तट पर श्रीराघवजी पहुँचे २ जाम्बवान् ने उनके दोनों चरण धोये व अन्य लोगोंके समान जाम्बवान्जी के हाथ के बलसे उस उत्पथगामिनी नदी गौतमी के बनाय तटपर पहुँचे ३ दोनों हाथोंमें कुश धारण करके वेदानुसार सब मन्त्रोंको पढ़कर पश्चिमदिशाको मुख करके आचमन करके विधिपूर्व्वक तीन अंजलि जल सूर्य्यकी ओर मुखकरके छोड़ा व हर्षित होकर गायत्रीमन्त्रका जप किया ४ व वरुणके प्रणामकर शम्भुमुनि के व वसिष्ठमुनि के यथाक्रम प्रणाम किया व उनसे आशीर्वाद लेकर प्रसन्नहुये फिर हनुमान्जी ने श्री राघवजीके चरणारविन्दधोये तब उन्होंने अग्निमें आहुतिदी इसके

पीछे सूत मागध बन्दीजनों से स्तुति आदि सुनतेहुये श्रीरामचन्द्र जी स्थानसे बाहर निकले ५ फिर हास्ययुक्त मानो चन्द्रमाकी किरणों से व अमृतसे लिप्त जैसे आकाशहो जिसमें प्रसन्न नक्षत्र गण मानो फूलोंसे युक्त सर्वत्र वितान है ६ इसके बाद वृद्ध मन्त्री से बनायेहुये सौधतल को गये फिर नानाप्रकार के आसनोंसे युक्त सभास्थानको राजा गये ७ व शम्भुमुनि व वसिष्ठमुनिको प्रथम सभा में आसनपर बैठाकर श्रीराघवजी आप भी उत्तम आसनपर विराजमान हुये व बड़े बड़े शरीरवाले वानरगण सब ओर से श्रीरामचन्द्रजी को घेरकर बैठे ८ जब रामचन्द्रजी सिंहासनपर विराजमानहुये तो उनको देखकर समयके उचित वचन शम्भुमुनि बोले कि समस्त ब्रह्मा विष्णु महादेवादि देवोंसे पूजित आपहैं पर आप की कथा किसी श्रेष्ठ महाराजाधिराजकीसी कैसे गुहामें होसक्तीहै ९ वह प्रसिद्ध कथा आपहीकी है वा अन्य किसीकी है यह बात शम्भु मुनि के मुखसे सुनकर रामचन्द्रजीको वह कथा सुननेकी इच्छाहुई व वहां बैठेहुये सबलोगोंको बोलनेका निवारणकरके सबको सुनाकर आपने सब रावणवधादिकी कथा अपने से विपरीतसुनी जैसी आपकी कथाथी उसके विपरीत सुनाई दी १० जिसमें रावणका वध प्रथम हुआ व कुम्भकर्णका वध पीछे हुआ यह बात सुनकर रामचन्द्रजी ने कहा कि ऐसा तो हमने नहीं किया नहीं जानते यह कैसा रामायण है यह ब्राह्मण कौनहै जो ऐसी कथा कहकर सबलोगों को नास्तिक बनाताहै नहीं जानते कि राजाके स्थानमें आकर इसने ऐसी कथा कहीहै यह पूज्यहै वा अपूज्यहै ११ यह सुनकर जाम्बवान् ने श्रीरामचन्द्रजीसे कहा कि यह रामायण जिसमें रावण का वध पहिले ये ब्राह्मणदेव कहतेहैं वह आपका रामायण नहींहै यह कल्पित मत है हमने जैसा ब्रह्माजीके मुखसे सुनाहै विस्तारसहित कहेंगे सुनिये १२ यह कल्पान्तरकी कथा है ऐसा वचनसुनकर श्रीरामचन्द्रजी बोले १३ कि कल्पान्तरका प्राचीन रामायणहै तो हमसे कहो हमको बड़ी सुननेकी इच्छाहै भला यहभी जानतेहो कि यह रामायण किस कवि का बनायाहुआहै १४ तब जाम्बवान् बोले कि ब्रह्माजीके नमस्कार

हैं व केशव शिवके नमस्कारहैं १५ अब पुरातन रामायण कहतेहैं जिसके सुनने से अनेक जन्मके इकट्ठे कियेहुये मनुष्योंके पापों का नाश होजाताहै १६ एकसमयकी कथाहै कि दशमहारथियों के समान प्रतापी महाराज दशरथजी बड़े रथपर चढ़कर आकाशमार्ग्ग होकर मानससरके पास मानसनगर जीतनेकी इच्छासे वसिष्ठजी को बुलाकर उनके नमस्कार करके मुनिकी आज्ञा लेकर सौ अक्षौहिणी सेना संगलेकर घोड़ेमें सवारहोकर चन्द्रमा की समान देह युक्त चले महारोषयुक्त होकर जो विष्णुकी आराधनाकरके दण्डकयात्रा की व वहां पहुँचे तो १७।१८ वहां एक साध्यनामदेव था वह अपनी सेना लेकर दशरथजी से युद्ध करने को सम्मुख आया वह दशरथ जीसे परस्पर युद्ध करनेलगा व दशरथजी उस साध्य से १९ मास भरयुद्ध करके दशरथजीने उस साध्यको पकड़लिया २० तब साध्य का पुत्र अपने थोड़े से परिवारको लेकर युद्ध करनेको आया इसका भूषण नाम था व दशरथ जी के साथ लड़नेलगा २१ परन्तु दशरथजी ने उसे पृथ्वी का भूषण देखकर उसके सङ्ग युद्ध करना न चाहा २२ कि ऐसे थोड़ी सेना सङ्ग लिये थोड़ी अवस्थावाले के सङ्ग हम कैसे युद्ध करें इसके मारजाने पर इसका पिता फिर कैसे जीता रहेगा व माता कैसे जीवेगी व अभी अच्छी तरह युवती न हुई होगी इसकी भार्य्या कैसे जीवेगी २३ इसके देहमें स्त्रीके समालिङ्गन चुम्बन परिवर्त्तन नवीन नखदन्तादिकों के चिह्न बनेहुये हैं व शय्यापरके पुष्पों के चिह्न भी बने हैं २४ इसके समानवर्ण व अवस्थावाला ऐसा सुभग परमप्रीतिपात्र राजपुत्र जब भल्लूक के भक्षण के समान माराकाटा जायगा तो अवश्य अपने पिताके भी प्राणोंको लेलेगा इससे हमारा मन इसके मारने पर नहीं उद्यत होता यह मनसे विचारकर बालक के भी पकड़लेनेही का विचार किया २५ यहांतक कि साध्य भी पराधीन हुआ २६ परन्तु उस साध्य ने अपने पुत्रका सङ्ग होनेसे बन्धन का कुछ भी खेद न माना परमसुखसेही वास किया २७ दशरथ जी भी वहां एक मासभर रहकर उसके पुत्रके देखनेके सुखको देख कर चिन्तना करनेलगे २८ कि अहो पुत्रके मुखका दर्शन सब दुःखों

को दूर करसक्ता है देखो यद्यपि हमसे यह साध्य पराजित होगया है परन्तु पुत्रके दर्शन के आनन्द से फूला नहीं समाताहै व हमारे पुत्र नहीं है इसको स्मरण करके सब दुःखही दुःख जानपड़ता है २९ इससे इस साध्यसे हम पूंछें कि गृहस्थीमें पुत्र कैसे उत्पन्न होता है ऐसी वितर्कणा करके राजाने साध्यसे पूंछा तो ३० साध्यने सब मोक्षमार्ग राजा के अर्थ कहा ३१ चौबीसों एकादशियों का व्रतकरके हरिहरको पूजन करके व द्वादशियों को ब्राह्मणों की आराधनाकरके जिसकालमें जो फल पुष्पादि मिलें व जो अपूर्व अन्नादि व व्यञ्जनादि अपने किये इकट्ठे होसकें सब लेकर कपिलाधेनु के घृत से युक्त करे व सब सामग्री अलग धरके कपिला के घृत में केशव भगवान् का स्नान करावे स्नान के पीछे फिर मूँगके पिसान से मले फिर स्वादिष्ठ जलसे स्नानकराके कर्प्पूरादि सुगंधित वस्तु मिलेहुये स्वादु शुद्ध जलसे स्नान करावे फिर वस्त्र से अच्छे प्रकार पोंछे व बैठाकर कस्तूरी केसर गुग्गुलु आदिका धूपदेवे फिर कर्प्पूर चन्दन केसर अगर एक में घिसकर भगवान् के सर्व्वाङ्गों में लेपन करे फिर तुलसीदल जूही कनेर नीलकमल श्वेतकमल अरुणकमल श्यामकमल कुमुदिनी द्रोणीपुष्प कुशमञ्जरी घोनागिरिकर्णिका केतकी आदिके पुष्प पत्र लेकर और भी जो समयानुसार मिलें सबसे पूजाकरे व द्वादशाक्षरमन्त्र से अथवा पुरुषसूक्त से व अन्य किसी परमेश्वरके नामसे अथवा षोडशोपचारों से आराधना करके प्रणामकर नृत्य गीतादि करके देवदेव से क्षमापन करावे ३२ व ऐसेही नारायण के तृप्त होने के लिये विचित्र व्रतोंको करे ३३ फिर प्रसन्नहोकर भगवान् वाञ्छितवर व अभीष्टपुत्र देते हैं इससे तुमभी इन भगवान् की आराधनाकरो यह दशरथजी से उस साध्य ने कहा ३४ दशरथजी ने भी साध्य को वहीं स्थापित कर अयोध्यामें जाकर सब वैसाही किया ३५ फिर पुत्रेष्टि यज्ञ किया उसकी समाप्तिहोनेपर आहवनीय अग्नि के भीतरसे शङ्ख चक्र गदा पद्म हाथों में धारणकिये भगवान् निकले व बोले कि हे राजन्! वरमांगो ३६ राजाने उनसे अतिधार्मिक दीर्घआयुवाले परमचतुर व सबलोगों के उपकारी चारपुत्र मांगे ३७

राजादशरथजी के चार स्त्रियां थीं एक का कौसल्यानाम था दूसरी का सुमित्रा तीसरी का सुरूपा व चौथी का सुवेषा राजा से भगवान् बोले कि हे राजन्! प्रत्येक स्त्रीमें एकएक पुत्र होगा तब कौसल्याजी दशरथजी से बोलीं कि यदि ये श्रीहरि प्रसन्नहैं तो यही हमारे उत्पन्न होवैं ३८। ३९ तब राजाबोलेकि बहुत अच्छा इन हरिजी से प्रार्थना करते हैं ऐसा कहकर कहा हे विष्णो, देवदेवेश, लक्ष्मीनाथ, शङ्खचक्र-गदाधर, सर्वसृष्टिपालक, समस्तलोकपालों से पूजितचरणयुगल, निरन्तर रहनेवाले, श्रीहरे! तुम्हारे नमस्कार है जब ऐसी स्तुति राजाने की तो श्रीहरिभगवान् राजासे बोले ४०।४१ कि हम साक्षात् तुम्हारे पुत्र कौसल्या में होंगे यहकहकर श्रीहरिभगवान् पायस में प्रवेशकरगये तब राजाने उस चरु में चार भाग करके अपनी चारों स्त्रियोंको देदिया ४२ समयपर कौसल्यामें रामचन्द्र उत्पन्नहुये सुमित्रामें लक्ष्मण सुरूपामें भरत व सुवेषामें शत्रुघ्नहुये उससमय आकाशसे पुष्पोंकी वर्षा हुई ४३ तब ब्रह्माजी ने आप आकर जातकर्म्मादि सबक्रियायें कीं ४४ व तीनोंलोकोंको अभिरामहोनेके कारण कौसल्यानन्दन का राम ऐसा नाम धराया व रूप शौर्य्यादि लक्ष्मी की योग्यताके कारण दूसरेका लक्ष्मण ऐसा नाम कहा पृथ्वीको भार से तारनेके कारण भरत नाम हुआ शत्रुओंके मारनेकी शक्तिहोनेके कारण चौथेका शत्रुघ्न नामधराया इसप्रकार नामकरण करके ब्रह्मा अपने स्थानको चलेगये व बालक सब क्रमसे बढ़नेलगे ४५ व अपने पैरोंके बलसे चलतेहुये द्वितीयाके चन्द्रमाके समान प्रकाशित दांतोंवाले कुन्दुरूके समान लालओष्ठवाले ऊँची व तिलके पुष्पके आकारके छिद्रोंमें युक्त नासिकावाले व मस्तकपर लम्बायमान रत्न पत्र धारणकिये व कानोंमें चलायमान कुण्डलपहिने छातीपर बड़ी२ मोतियोंकी माला लटकायेहुये व चमकतेहुये पक्के सुवर्ण के कङ्कण धारणकियेहुये मणिजटित वलय धारणकिये रत्नोंकी मुँदरियां पहिने सुवर्णरचित मणिजटित जंजीर कटिमें बांधे बाजती हुई पैंजनियों से भूषित पदकमल यव अंकुश वज्र पद्मादिकोंके चिह्नोंसे शोभित पादतल तरकस समान चढ़ाउतार जङ्घावाले हाथीकी सूंड़के समान

गोल चढ़ाउतार ऊरुवाले पतली कटिवाले गोल व गहिरी नाभि-
वाले नीलमणिकी शिलासमान विशाल वक्षस्स्थलवाले शङ्खके स-
मान गोल चढ़ाउतार व तीनरेखाओं से युक्त गलेवाले चन्द्रबिम्ब
तुल्य मुखवाले अर्द्धचन्द्रतुल्य नील टेढ़ेबालों से युक्त ललाटवाले व
क्रीड़ा में आसक्तहोने के कारण धूलिलगने से किञ्चित् पाण्डुरंग
वाले प्रफुल्लित कमलदलाकार कुछ ललाईलियेहुये नेत्रवाले महादेव
के समान विभूतिलगायेहुये व महेशहीकी नाई दिगम्बर रामचन्द्र
कुमारजीको देखकर महाराज दशरथने हर्षसे पूर्णहृदय होकर पुत्र
को छपटाकर व मुखचूंबकर छातीमें दृढ़तासे छपटालिया ४६ अब
कुमारजी बगलसे महाराज दशरथजीके कोड़ामेंबैठकर कल मनोहर-
लोचन जो कुछबोले ४७इधर उधर देखतेहुये मांगतेहैं कि हे तात !
हम जायँगे व शयनकरेंगे व खेलेंगे तात इत्यादि वचनों से बार
बार पुत्रके सुख का अनुभव करके राजा निर्व्वृतिको प्राप्तहुये ४८
एकदिन भोजन करनेकेलिये आयेहुये राजाके सम्मुख घुटुनोंकेबलसे
दौड़तेहुये रामचन्द्रजीने प्रसन्नमुखहो दौड़कर राजाके आगे धरेहुये
मणिजटित सुवर्ण के पात्रमें स्थित अन्नको बायें हाथसे उठाकर राजा
के ऊपर किलकारी मारकर फेंकदिया राजाने उसे भी परमसुखही
माना ऐसेही और भी अनेकखेल श्रीरामचन्द्रजी राजाकी प्रसन्नता
प्रकट करातेहुये नित्य करतेथे ४९ एकदिन रामचन्द्रजी खेलरहेथे
कि बौंड़रने आकर उनको गिरादिया व रामचन्द्रजी रोदन करतेहुये
गिरपड़े ५० व उस बौंड़र के भीतर एक ब्रह्मराक्षस था उसने श्री
रामचन्द्रजीको पकड़लिया व रामचन्द्रजी मूर्च्छितहोगये ५१ अब
साथके खेलनेवाले बालकने रोतेहुये रामचन्द्रजीका वैसाहाल राजा
से जाकरकहा ५२ तब राजा रामचन्द्रको लेकर वशिष्ठके समीप जा-
कर उनसे बोले व पूँछनेलगे कि यह रामचन्द्र कुमारको क्या हुआ
जो रोतेहैं ५३ तब वशिष्ठजीने भस्मलेकर अभिमन्त्रित करके ब्रह्म-
राक्षसको छुड़ाया ५४ व उससे पूँछा कि आप कौनहैं वह बोला कि
मैं वेदगर्वितनाम ब्राह्मणहूं बहुधा परधन हरकर ब्रह्मराक्षस हुआहूं
इस योनिसे छूटनेका उपाय विचारिये ५५ वशिष्ठजी बोले कि इसके

पीछे अभी सौवर्षतक राक्षस बनेरहोगे व नरक भोगते रहोगे फिर गङ्गामें स्नानकरके शिवको एकसौ बिल्वपत्र व सौ कमल चढ़ाकर व फिर गङ्गामें स्नानकरके पापसे छूटोगे ५.६ जो कोई बड़ी पुण्यकरोगे तो तुम्हारे पदको भेजेंगे तब श्रेष्ठगति को पावोगे उसने कहा कृपाकरके अभी छूटनेका उपाय कीजिये वशिष्ठजी ने अपनी वैसीही कुछ पुण्य उसको देदी व कहा कि बस अब तू इसयोनिसे छूटजायगा यहसुनकर ब्रह्मराक्षस वशिष्ठजी की पुण्यसे दिव्य शरीरहो उनके नमस्कार करके स्वर्गको चलागया ५७ व फिर ग्यारहवर्षकी अवस्था होनेपर वशिष्ठजी ने रामचन्द्रजीको यज्ञोपवीत से शोभित किया व चारोंवेद उनको पढ़ाया व दो खण्ड सहित मीमांसाशास्त्र व नीतिशास्त्र भी सब विधिपूर्व्वक पढ़ाया ५८ फिर धनुर्व्वेद वैद्यकशास्त्र गान्धर्व्वशास्त्र शकुनशास्त्र व विविधप्रकार के युद्धशास्त्र पढ़ाया ५९ फिर रामचन्द्रजी के विवाह करने की इच्छा किये हुये राजा दशरथ जीने नाना देशों के राजाओं के यहां अपने बहुत से दूत भेजे ६० उन में से कोई दूत बहुत शीघ्र आकर राजा दशरथजी से यह वचन बोला ६१ कि हे राजन्! विदर्भ देशके स्वामी विदेहनाम राजा हैं उनकी कन्याका वैदेही नामहै जोकि पृथ्वीसे लाभ हुई है वह सुंदर शुभगुणों से व रूपसे लक्ष्मी के समान है व सब शुभ लक्षणोंसे युक्त होने के कारण रामचन्द्रजी के योग्य है व वह राजा अपनी कन्या रामचन्द्रजी कोही दिया चाहताहै इससे शीघ्र चलो ६२ तब राजाने वसिष्ठादिकों को वहां भेजा वे लोग राजा विदेहके यहांगये व वैदेही को देखकर लग्न शोध ठहराकर अयोध्यामें आकर महाराजदशरथजीसे कहकर रामचन्द्रजीके विवाहकी तैयारी की राजा दशरथजीने बड़ी शीघ्रतासे सब राजाओं को संगलेकर रथ पालकी हाथी घोड़े आदि विविध प्रकारके वाहनोंपर सबको चढ़ाकर व विविध प्रकारकी गान नृत्यकी क्रियाओं में कुशल लोगोंको संगलेकर व विविधप्रकारकी चेष्टा करतेहुये गन्धर्वोंको संगलिये व कोमल मोटी जांघोंवाली ऊँचे मोटे कड़े कुचोंवाली कुंदुरू के समान लाल ओंठोंवाली कुटिल श्याम केशोंवाली कपोलोंपर कुण्डल लटकाती

हुई सुवर्ण के रंगके समान शरीर के रंगवाली अन्य कानों के आ-
भूषणोंसे युक्त व दुपहरीके फूलके समान लालदांतोंवाली व चंचल
मछलियोंके समान नेत्रवाली व नक्षत्रतुल्य स्थूल मोतियोंसे युक्त
नासिका भूषणसे शोभित दर्पणतुल्य कपोलोंवाली तिलपुष्पकेस-
मान नासिकाके छिद्रवाली भीतरको कुछ छपुनी दबेहुये कुचोंवाली
बीरबहूटी के रंगके सदृश रंगके ओठों व दंतोंके क्षतों से युक्त वाली
मोटे चढ़ाउतार भुजोंवाली हरिद्रा व कठचम्पाके फूलके रंगकी कँ-
खरीवाली कोमल गोलीपतली कटिवाली कड़े गोले मोटे ऊँचे एक
दूसरे से स्पर्द्धाकेमारे मिलेहुये स्तनोंवाली व पदिक सहित हारसे
शोभित वक्षस्स्थलवाली व नाभिसे स्तननिकटतक सूक्ष्मकालेरोमों
की चढ़ाउतार रोमावली से शोभित व उदर पर कोमल तीनचार
त्रिवलियों से शोभायमान रूपवाली चढ़ाउतार पेडूवाली कुछरोम
युक्त जांघोंवाली कदलीके खम्भकेसमान चढ़ाउतार व कोमलगोल
जानुओंवाली व न बहुत मोटी न बहुत पतली फीलियोंवाली किं-
चित् ऊँचे गुल्फोंवाली व लम्बी पतली चढ़ाउतार अंगुलियोंवाली
नूपुर पैंजनी कड़ाछड़ा आदि पदभूषणोंसे भूषित पदवाली मत्तगज-
गतिसमान गतिवाली दक्षिणहाथके अंगूठे से स्पर्श करनेके योग्य
कँखरीवाली दिव्य लालरंगके वस्त्रोंकी चोली धारणकियेहुये स्तनों
के ऊपर दृढ़स्थूल वस्त्र धारणकियेहुई व नानाप्रकारकी शोभाओंसे
युक्त विवाह मंगल गातीहुई युवतियों को संगलेकर व अन्य सब
विवाह मंगलकी सामग्री लियेहुई अनेक स्त्रियां आगईं व नानाप्र-
कारके उत्तमअंगों में उत्तमोत्तम भूषण धारणकिये बहुतसी कुमा-
रिकायेंभी मंगलकर्म्म करनेके लिये आईं जिनके कुच अभी कुछ २
उत्पन्न होनेलगे थे अभी पूर्णताको न पहुँचेथे कुछ थोड़ासा समय
पाकर बोलती थीं मृदु सुकुमार अंगों से शोभित होतीथीं व वृद्ध
स्त्रियांभी बहुतसी आईं इनसबोंसे मंगलगानादि कराकर श्रीरामा-
दि सहित दशरथजी अयोध्याजीसे चले ६३ । ६४ व विदेह पुरके
समीपकी एक आम्रवाटिकामें उतरे जो कि समान विशाल भूमिसे
शोभित होतीथी व जिसमें नानाप्रकारके पक्षी मधुरशब्द कररहेथे

व नानाप्रकारके मृगगण कानदेकर उन पक्षियोंके शब्द सुनरहे थे व सुवर्ण चांदी के धवरहर नानामणियोंसे जटित विराजतेथे उनसे शोभित होरही थी व जिसके वृक्षोंकेनीचे अनेक मुनिगण परमेश्वर काध्यान कररहेथे व विविधप्रकारके विद्याधरोंकी स्त्रियोंसे शोभायमानहोरही थी व जिसमें नानाप्रकारके जन नानाप्रकारके नृत्यगीतादि कररहे थे व जिसमें सबओरसे पुष्पोंकी सुगन्धि आरहीथी व जिसके मध्यके तड़ागके किनारे २ विहारकरनेके लिये लोग घूमरहे थे व विहारकराने के लिये अनेक वेश्याजन विद्यमान थीं व जो नानाप्रकारके ऐश्वर्य्योंसे युक्तथी सो ऐसीवाटिकामें रामादिपुत्र मंत्री पुरोहितादि सहित दशरथजी उतरे व सुख से बसे ६५ व राजा विदेहभी मिथिलानाम पुरीको नानाप्रकारकी पताकाओं से उपशोभित विविधप्रकार के धवरहर गोपुरों से विराजमान देवमन्दिरों से उपशोभित व परस्पर केलि करने में चतुर युवतियों से अनुकीर्ण खस खस कर्पूर मिलेहुये जल से युक्त पयशालों से शोभित व सुन्दर क्रीड़ा करनेवाले जनों से उपशोभित व विविध प्रकार की बाजारों से उपशोभित चौरहोंसे युक्त व वहां वेदपाठ से युक्त विद्यार्थियों के मन्दिरोंसे उपशोभित व प्रति मन्दिरमें मीमांसा शास्त्र के व्याख्यान समाधानों से शोभित व पुण्याहवाचन हवन सामग्री वेदपाठ पदक्रमादि युक्त ब्राह्मणों की बाटिकाओं से युक्त अनेक महात्माओं के मन्दिरोंमें आनेजानेसे शोभित व अगुरु गुग्गुलादि के धूपोंसे धूपित व मृदुवचन बोलने वाली ताम्बूलके रङ्ग से लाल दांत ओठवाली स्त्रियों से शोभित व विविधप्रकार के उपायनों की सामग्री हाथों में लिये मृदुवचनसे आगमन कठोर वचन के संकेत से निवारणको जानतेहुये जनोंसे उपशोभित व कोमल गोर रंगके पेडुओं को कोमल वस्त्रों से आच्छादित कियेहुये व ऊपरके भागमें चीकने मोटे गोले परस्परमिले हुये स्तनों से मध्यभाग में शोभित स्त्रियोंसेयुक्त व विविध प्रकारकी मुक्ताओंके हारोंसे शोभित व हास्य करनेमें परमचतुर दुपहरी के पुष्पके रङ्गके ओठोंवाली मन्द मन्द हास्य करतीहुई मालाकार हजारों स्त्रियों से उपशोभित पुण्यकारी

सब साधनयुक्त व धन सहित मन्दिरोंसे युक्त व विचित्र तोरणादि-
कोंसे आच्छादित मन्दिरों से उपशोभित विचित्र शुद्ध झारे बहारे
चौरहोंसे युक्त व वहांपर स्थापित कल्पवृक्षों के नीचे नानाप्रकारके
केला खम्भोंसे युक्त द्वारोंसे उपशोभित किया व फिर अगुआनी लेने
के लिये कज्जलनेत्रों में लगाये शिरके बालोंमें तैल फुलेल लगाये
केश छिटकाये व बांधेहुये भी व नासिका भूषणादि सब भूषणों से
शोभित युवतियोंके हाथोंपर सुवर्णके पात्रोंमें हरिद्रा गुग्गुल फलादि
मङ्गलवस्तु धरायेहुये स्त्रीजनों से व अन्यजनों से भी शोभित राजा
विदेह गृहसे निकले ६६ । ६७ उससमय मङ्गलके नगारे तुरुही
ढोल मृदंग आमर्द्दल शंखादि शब्द प्रकटहुये ६८ व गायक लोग
मंगलगीत गानेलगे ६९ व वैदिक ब्राह्मण मंगलवाक्यवाले वेद
मन्त्र पढ़ने लगे इसप्रकार मंगल शब्दों से वहां की सब दिशायें व
आकाश आपूरित होगईं ७० तब अक्षत सुपारी ताम्बूलादि देकर
दोनों ओर के लोग परस्पर दे लेकर मिले सूत बन्दी जनादिकों से
स्तुतिको प्राप्त व विदेह नगरमें प्रवेशकिया ७१ बाहर पश्चिमओर
बने हुये दिव्य मन्दिरमें महाराज दशरथजी पैठे ७२ व जो लोग
शेष रहे यथायोग्य मन्दिरों में पैठे ७३ इसी समय में नारद मुनि
भी मिथिलापुरी में अपनी इच्छासे आगये ७४ राजा बिदेह ने भी
नारदजी की पूजाकर आगत स्वागत पूंछकर भोजन करवाया जब
सुखपूर्व्वक मुनि आसनपर विराजमान हुये तो खदिरकर्प्पूर सहित
ताम्बूल देकर उनसे जनाया ७५ कि प्रातःकाल हमारी कन्या का
विवाह होनेवालाहै इससे आपरहकर उसे करादेवें ७६ नारद मुनि
बोले ७७ कि कल जो नक्षत्रहै वह सूर्य्यके नक्षत्रसे दर्शितहै इससे
उसमें विवाह न करनाचाहिये ७८ तब मुहूर्त्त बतानेवाले वृद्धगर्ग्ग
को बुलाकर राजाने पूँछा कि यह विवाह का मुहूर्त्त कैसा है व किस
समयहै ७९ तब गार्ग्यजी बोले कि मुहूर्त्त तो यहीहै ८० इसबा
को सुनकर राजा गार्ग्य व नारद दोनोंकी ओर देखकर बोले कि
यह इसीतरहहै यह पूँछा ८१ तब नारदमुनि गार्ग्यमुनि से बोले ८
कि इस लग्न में तुम कैसे विवाह कराओगे ८३ गार्ग्यजी बो

कि इसमें विषम घड़ियों को छोड़कर विवाह करावेंगे ८४ नारदजी ने गार्ग्यसे कहा कि क्या ब्रह्माके वचन इस विषयमें नहीं जानतेहो जो इसमें विषनाड़ी छोड़कर बिवाह कराया चाहतेहो ८५ गार्ग्यने पूँछा ब्रह्माके कौनसे वचनहैं आप पढ़िये तब नारदजी ने ब्रह्मवचन के इलोकपढ़े ८६ ॥

दो० उल्कामोघरुकम्प अरु ब्रह्मदण्ड अतिघोर ॥
सर्व्वकार्य्य नाशक कहे ब्रह्मवचन करिजोर १ । ८७
ब्याह प्रतिष्ठा मौञ्जिबँध अरु अभिषेक मँझार ॥
इन्हें छोड़ सबकार्य्यमें बिषनाड़ी व्यवहार २ । ८८
इन्हें छोड़ सब कार्य्यमें बिषनाड़िका न दोष ॥
ब्याहआदिमें दोष जो तुमसन कहत न रोष ३ । ८९
उल्काकुल जारत बहुरि ब्रह्मदण्ड सबनाश ॥
मोघमरणकरिदेत अरु कम्प कँपावतआश ४ । ९०

नारदजीका ऐसा वाक्य सुनकर गार्ग्यमुनि चुपहोरहे ९१ ग्रहपति सूर्य्यनारायणका ध्यानकिया तब दग्ध होकर ग्रहोंके पति सूर्य्य नारायण वहां आगये सूर्य्यनारायण बोले कि हां विषनाड़ी छोड़कर बिवाहकीजिये ९२ यहसुनकर नारदमुनि बोले कि ब्रह्माके बचनको आप कैसे नहींमानते ९३ सूर्य्यबोले कि ब्रह्माकाबचन मानतेहैं पर देश भेदसे यह व्यवस्था हमने कहीहै क्योंकि इस देशमें बिषनाड़ी को छोड़करही बिवाहकरनाचाहिये ९४ इसबातको नारदजीने भी मानलिया ९५ व कहा अच्छा क्षत्रियोंका बिवाहतो स्वयम्बर मेंही होताहै इससे स्वयम्बर कराओ इससे प्रातःकाल स्वयम्बरके लिये राजालोग आवें राजा तुम उनके पासको दूतोंको भेजो९६तब राजा बिदेहने दशरथजीका मतलेकर सब राजाओंको बुलवाया पर वे विचारनेलगे कि इन सब राजाओंको छोड़कर बैदेही रामचन्द्रजी को हम कैसे देपावें ९७ रात्रिमें बार२इसीबातकी चिंताकरतेरहे यद्यपि बहुत औंघायेथे पर रात्रिभर उनको निद्रा न आई ९८अर्द्धरात्रिबीतजानेपर पवित्रहोकर राजा जनकजीने मंगलबस्त्र धारण कियेहुये महादेव पार्व्वतीका ध्यानकिया जोकि ब्रह्मा बिष्णु इन्द्र आदि देव-

ताओंसे स्तुतिकिये जातेथे व भृगु आदि मुनिगणोंसे सेव्यमान हो
रहेथे व हाहा आदि गन्धर्व्वोंसे व तुम्बुरुआदि गन्धर्व्वोंसे श्रुतिस्मृ-
ति पुराण इतिहासादि मूर्त्तिधारण कियेहुओंसे स्तुति कियेजाते थे
सिद्ध विद्याधरादि मातृगण नन्दी आदि शिवगणों से सेव्यमान च-
रणकमल व सब पापगण नाशनेवाली गङ्गाजीसे सेवित शिर व नि-
ष्कलङ्क चन्द्रमासे भी सेवित शिर वामाङ्कपर बैठीहुई पार्व्वतीजी
के हाथसे ताम्बूल लेकर खाते हँसतेहुये व उनकी ओर देखतेहुयें
गोदुग्ध तुल्य प्रतिकूल कस्तूरी सदृश कण्ठ से शोभित कोमल
सूक्ष्म जटाओंसे जटाजूट बनायेहुये विशुद्धसुवर्ण के कुण्डलोंसे शो-
भित गण्डस्थल सोलहवर्षकी अवस्थाको प्राप्त गोक्षीर तुल्य श्वेत
बड़ी २ मुक्ताओं से व कौस्तुभमणियोंमे शोभित शिरोभाग व वि-
विधप्रकारके रत्नोंसे जटित शुद्ध सुवर्णके भूषणोंसे शोभित वक्षस्थ-
ल व अतिश्वेत यज्ञोपवीत धारण कियेहुये व पार्व्वतीके लगायेहुये
चन्दनादि अनुलेपनोंसे युक्त व कोटि कदर्प समान शोभित शरीर
वाले शङ्करजीकी चिंतनाकी ९९ व शतरुद्रिय मंत्रकोजपा व उसी
मंत्रसे आहुति किया व पुरुषसूक्त मंत्रोंसेभी स्तुतिकी १०० जैसे ऐसा
किया कि ऊपरके लिखेहुये स्वरूपके महादेवजी वहां आकर प्रकट
हुये १ तब राजा नमस्कारकरके स्तुति करनेलगे २ कि हे पृथ्वी जल
आकाश पवन अग्नि सूर्य्य चन्द्र यजमान मूर्त्तियों से आठमूर्त्तिवाले!
हे विश्वमूर्त्ते! लोकमूर्त्ते! त्रिभुवनमूर्त्ते! वेदपुराणमूर्त्ते! यज्ञमूर्त्ते! स्तो-
त्रमूर्त्ते! शास्त्रमूर्त्ते! स्वधामूर्त्ते! नारायणमूर्त्ते! सर्व्वदेवतामूर्त्ते! हे वेदत्रय
मूर्त्ते! वेदत्रयीमय वेदत्रय प्रमाण नेत्रत्रय धारण करनेवाले सामवेद
प्रिय वसुधाराप्रिय भक्तिप्रिय भक्तिसुलभ अभक्तिविदूर स्तुतिप्रिय
धूपप्रिय दीपप्रिय घृतक्षीरप्रिय द्रोणकरवीरपुष्पप्रिय श्रीपत्रप्रिय
कमल कल्हारप्रिय नन्द्यावर्त्तप्रिय बकुलप्रिय यूथिकाप्रिय श्वेतयूथि
काप्रिय कोकनदप्रिय ग्रीष्मजलावासप्रिय नियमप्रिय नियतो-
प्रिय जयप्रिय श्राद्धप्रिय गानप्रिय गायत्रीप्रिय पञ्चब्रह्मप्रिय सदाचा
रप्रिय गोत्रोत्सादिक कमल भवहरिहरनयन समर्चित पाद
धातृहरिप्रार्थित जलोत्पाटित चक्रप्रद एकबार स्मरण करनेपर स

कुखदेनेवाले मंगल देनेवाले मृत्युञ्जयतुम्हारे नमस्कार है ३ इस स्तो-
त्रको सुनकर भगवान् महादेव राजासे बोले कि हम बरदेतेहैं तुम बर
मांगो ४ राजाजनक बोले कि मैं अपनी कन्या बैदेही श्रीरामचन्द्रजी
को दियाचाहताहूं परन्तु अब स्वयम्बर कियाहै उसमें अनेक देशों
के कुलरूप बलउत्साहसेयुक्त राजा राक्षस ब्राह्मणादि सब आये हैं
यदि सबोंको जीतें तो रामचन्द्रजी ग्रहणकरें तब हमारा वचन
भी झूंठा नहो व शापभी हमको नहो ५ व राजा दशरथजी भी तो
अकेले सब राजाओं से जीत न सकेंगे व क्षत्रियों का नाश होगा
जो रामचन्द्रजी आयेंगे तो हमारी कन्याको क्या करेंगे व क्या क्या
भेजेंगे व कैसा करावेंगे व हमको क्या करेंगे सब तरहसे प्रभूतबल
बाहनराजा सम्पूर्ण त्रिभुवन को मारेंगे अथवा हम कुछ नहीं करसक्ते
आपही शरण हैं इससे कुछ उपाय बतावें जिसमें कि बिवाह में
कल्याणहोवे व रामचन्द्रही हमारे जामाताहोवें ६ ऐसाही करेंगे ऐसा
कहते हुये श्रीमहादेवजी बोले ७ कि श्रीरामचन्द्रही सीता के नाथ
होवेंगे अब रामचन्द्रजी को हम स्वस्तिसे युक्त कियेदेते हैं तुम यह
हमारा आजगव नाम धन्वा ग्रहण करो ८ राजा जनकजी बोले कि
इस आजगव धन्वासे क्या है ऐसी कोई युक्ति करो जिसमें स्वयंबर
में सीता रामचन्द्रजी को प्राप्तहोवे ९ महादेवजी बोले कि इस हमारे
धन्वापर कोई प्रत्यंचा नहीं चढ़ासक्ता जो कोई चढ़ावेगा उसीको
हम सीतादेवेंगे बस तुम यही प्रतिज्ञा करदेओ १० ऐसा कहकर
भगवान् महादेव अपना धन्वा राजाको देकर गणोंसहित अन्तर्द्धान
होगये राजा जनकजीने ऐसीही प्रतिज्ञा की जब एक एक राजा
धन्वाको कोई किसी यत्न से न उठासका न चढ़ासका ११ तो तब
बलवान् सैकड़ों सहस्रों हाथियों के बलवाले राजाओं को बुलाकर
राजाने कहा इसे ग्रहण करो १२ उसने भी अपने मामाके प्रणाम
करके बड़े जोर से हँसकर कूदकर धन्वाके नमस्कार करके अपनी
जंघापर्यंत दोनों हाथोंसे उठालिया पर चढ़ा नसका तब उसका मामा
मारीच जोकि बिप्रका बेष धारण किये था आकर राजा बिदेह से
प्रार्थना करनेलगा कि वैश्वदेव के अन्तमें आये हुये हमको अतिथि

जानो १३ राजा बोला कि आपका आना अच्छे प्रकार से तो हुआ
हे ब्राह्मण ! इस आसनपर बैठो १४ वह अतिथि तथा कहकर आ-
सनपर बैठगया १५ तब राजाने जल लेकर उसके चरण धोकर
गन्ध पुष्पाक्षतों से पूजाकरके एक बड़ाभारी छाग उसको देकर
भोजन के लिये प्रार्थना की १६ तब उसने छरस के अन्नोंसे भरे
हुये सुवर्ण के पात्रको बार बार इधर उधर देखा १७ उसी अवसर
में कमल किंजल्क की प्रभा वाली कुछ अरुणवस्त्र धारण किये हुई
नील कुटिल केश धारण किये चलायमान केशों से युवा पुरुषों के
मनोंको खींचती हुई यह पूंछती हुई व मन्द्रवचन बोलती हुई स्त्रियों
का चित्त ऐसाहोता है यह जनाती हुई शोभायुक्त ललाट से युक्त
कामबाण से युक्त व शोभित तिरछी भौंहों मे विराजमान मुखी क-
मलपत्र सम अरुण लोचन वाली तिलके पुष्प के आकार के नासा
के छिद्रवाली मृदु चीकने बहुत छोटे लोमों से युक्त कपोल वाली
जपा पुष्प समान अरुण ओठवाली ताम्बूलके रंग से रंजित दांतों
वाली सुन्दर चिबुकवाली शंखकी तीन रेखाओं के तुल्य रेखाओं से
शोभित व शङ्खहीं के आकार की चढ़ाउतार गोले गलेवाली अति
मांसल वक्षस्स्थल वाली दिव्य हारसे शोभित वक्षस्स्थल वाली
अति मांसल सुभग बाहुलता वाली बहुत रत्नजटित अंगुलीयक
भूषणों से भूषित अति सूक्ष्म कोमल रोमपंक्ति से भूषित नाभिप-
र्य्यंतवाली व विकसित सुगन्धित पुष्प हाथमें लिये सीताजी भोजन
करते हुये मारीच के आगे होकर निकलीं १८ व देखकर वह चिंता
करनेलगा कि इसको मैं कैसे हरूं व कैसे आलिङ्गन करूं व अन्य
जो कुछ हो कैसे करूं इस प्रकार अवसर न पाकर चुप निकल-
गया १९ तब सब देवता लोग धन्वापर चाप चढ़ाने के लिये यत्न
करते हुये हम पहिले धन्वा चढ़ावेंगे ऐसा कहनेलगे सबोंका तिर-
स्कार करके इन्द्रने पहिले धन्वा उठाया पर उनसे चाप न चढ़ी तब
शंकित चित्त होकर उन्हों ने जहांका तहां धरदिया २० फिर सूर्य्य
धन्वा लेकर जैसे झुकानेलगे कि आपही गिरपड़े २१ तब बलवानों
में श्रेष्ठ वायुने धनुषको उठाकर कुछ नवाया व अपने हाथसे खींचा

पर आप पृथ्वीपर गिरपड़े व धन्वा उनके ऊपर गिरपड़ा यह देख-कर सब के सब हँसउठे २२ इसी अवसर में श्रेष्ठ तुरङ्गपर चढ़कर सहस्रबाहु धारणकिये अनेक शिरवाला अकेला बाणासुर प्रह्लाद सहित दैत्योंको सङ्ग लिये जनकपुरी में आया २३ व अपने भूषणों से दिशाओं को प्रकाशित कराता हुआ व अपने तेज से देवता-ओंको विनायश करताहुआ विविध प्रकारकी गीतें सुनता हुआ धन्वाको दो अंगुलभी न उठासका २४ इससे चुपहोकर बैठगया प्रह्लाद और बलिभी चुपचाप बैठगये २५ जब दैत्य राक्षस चुपहुये तो बलीराजालोग आयेपर वे भी धन्वापर प्रत्यञ्चा न चढ़ासके इस से हटकर दूरजाकर ठहरे फिर ब्राह्मण लोग आये २६ । २७ उनमेंसे विश्वामित्रजीने धन्वाको उठाकर एक अंगुल तक चढ़ाया फिर न चढ़ासके व सबके सब चुपहोगये २८ जब दिनभर सब लोग चुप होतेगये तो रामचन्द्रजी ने अपने छोटे भाइयों समेत आकर धन्वा को देखकर स्पर्शकिया २९ उससमय सैकड़ों राजकुमार वहांआये जो सब आभरणों से भूषित थे आतेही सबोंने धन्वाको छुआ परन्तु कोई भी चापको चला न सके ३० तब दाशरथादि महाराजकुमार लोग वहां आये ३१ व नानाप्रकारके शस्त्रास्त्रों से सबों को वहांसे हटा दिया ३२ तब सब आभरणोंसे भूषित रामचन्द्रजी लक्ष्मणका हाथ पकड़ेहुये वहां आये धन्वाको उठाकर नमस्कार करके फिर धरके प्रदक्षिणा करके फिर उन्होंने धन्वाको उठालिया ३३ उनके उठाने के समयसबके सब आकर हँसीके साथबोले कि इसधन्वाके उठाने में बड़े २ महारथ भग्नहोगये हैं तुम क्याउठाओगे ३४ तब राम चन्द्रजीने धन्वाको नवाकर उसमें जंघा लगाकर अकेलेबायें हाथमें करके दोनों कोन झुँकादिये ३५ व धन्वापर प्रत्यञ्चाचढ़ादी पनच चढ़ेहुये धन्वाको देखकर सब अपनी २ नासिकाके आगे हाथकी अंगुली लगाकर रहगये ३६ व रामचन्द्रजीने प्रत्यञ्चाको बजाया उसनादसे सबोंकेमन चलायमान हुये ३७ श्रीरामचन्द्रजीने धन्वा चढ़ाया यहसब कहीं प्रसिद्धहोगया ३८ जनकजीने सीता रामचंद्र जीको देदी व रामचन्द्रजी राजाओं से युद्धकरके उनको जीतकर

सीता सहित अपनी पुरीको आये ३९ व राजादशरथजी रामचन्द्र जीको यौवराज्याभिषेककरके सुखीहुये व सबप्रजाओं का अनुरञ्जन करने से राजा रामचन्द्रजी राजादशरथजी के अनुमतहुये यह बात सबकहीं प्रसिद्धहोगई ४० तब कैकय देशके राजाकी कन्या सुवेषा रामचन्द्रको राजाहोना न सहकर राजादशरथजी से बोली कि अब हमारे वरदानका अवसरहै राजाने चिन्तनाकी कि क्या देना चाहिये ४१ सुवेषा देवी बोली कि चौदहवर्ष रामचन्द्र वनमें बसें व भरत राज्यकरें ४२ राजादशरथजी मिथ्या बोलने से बहुत डरतेथे इससे किसी न किसी प्रकार से इस बातको उन्होंने अंगीकार किया ४३ व वसिष्ठजी को बुलाकर उनसे बोले कि रामचन्द्र वनको जाते हैं इस में इनका शुभाशुभ क्या होगा विचारकरकेकहो ४४ वसिष्ठजी विचार करके हर्षसहित राजा से बोले ४५ कि वन में जाकर रामचन्द्र जी सम्पूर्ण दानव राक्षस वीरोंको मारेंगे व शम्भुजीको बहुत आनन्दित करेंगे सीताका वनमें वियोग होजायगा इससे वानरों की सेना लेकर समुद्रको उतरकर रावणको मारकर रामचन्द्र परमानंदित होंगे ४६ फिर वहांसे आकर श्रीरघुनंदन बहुत वर्षोंतक राज्य करते रहेंगे व बड़ीकीर्त्ति सब लोकोंमें पावेंगे महादेवजी के साथ बहुत कालतक वास करेंगे ४७ ब्रह्मादि देव बड़ी स्तुति करेंगे सुपुत्र युक्त होकर बहुत यज्ञ करेंगे व सबसे अधिक गुणोंमें व धनमें होंगे ४८ वसिष्ठजी का ऐसा वचन सुनकर रामचन्द्रजी के गुणोंका स्मरण करके राजा दशरथजी यह बोले कि यदि ऐसाहै तो रामचन्द्र के चले जानेपर हमारा मरण तो होगा पर कल्याण होगा ४९ यह सुनकर रामचन्द्रजी माता पिता गुरु वसिष्ठजी के प्रणाम करके अपनी स्त्री सीता व लक्ष्मण के साथ वनको गये ५० अयोध्या के निकटही एक वाटिका में जटा बनवाकर वल्कल धारण करके यज्ञोपवीत न-वीन धारण करके दन्तधावन किया फिर एक यज्ञोपवीत से जटा बांधकर सब अंगों में भस्म लगाकर बीच २ में मोती व बीच २ में रुद्राक्ष गुहकर माला बनवाकर व धारण करके कुछ थोड़े से भूषण धारण करके व सीता बहुत से भूषण पहिने हुई सीता व लक्ष्मणको

सहाय लेकर रामचन्द्रजी वनको चलेगये ५१ वनमें उन्होंने अनेक राक्षसोंको मारडाला वहांपर सीताको रावण हरलेगया तदनन्तर श्री-राघव सुग्रीवके आश्रम ऋष्यमूक पर्व्वतपर गये एकदिन एक सघन छायावाले आम्रके वृक्षके नीचे लक्ष्मणके कोरामें शिरधरे रामचन्द्रजी शयन कररहेथे धन्वा वृक्षकी डालमें टांगदियाथा मृगचर्मपर लेटे २ लक्ष्मणसे वार्त्ता कररहेथे व वृक्षके फलोंको देखतेथे इतनेमें मणियों के कुण्डलपहिने एक वानरको देखा जोकि ब्रह्मचारीका रूप धारण किये यज्ञोपवीत मौञ्जी व कौपीन धारणकिये एक फल हाथमें लिये गानकरताहुआ खड़ाहुआथा ऐसे वानरको देखकर श्रीरामचन्द्रजी पञ्चाकरतेहुये लक्ष्मणजी से बोले ५२ कि लक्ष्मण यह वानर कौन है ५३ लक्ष्मणजीने कहा कि हम तो नहीं जानते तब रामचन्द्रजी ने उस वानरको बुलाकर पूँछा कि तुम किसकेहो व तुम्हारा क्या नामहै ५४ तब उसने कहा मैं सुग्रीवका मन्त्रीहूं हनुमान् मेरा नाम है ५५ यह कह रामचन्द्रजी के प्रणामकरके सुग्रीव के समीप जाकर नमस्कार करके उसने कहा कि हे देव ! मानो दूसरे नारायणही हैं ऐसे एक पुराणपुरुष मेघश्याम जटाधारणकिये आजानुबाहु अति-यशस्वी सूर्यवत् प्रकाशित दूसरे सहायकसे युक्त ५६ मार्गमें लगेहुये एक आम्रवृक्षकी छायामें बैठेहैं परन्तु सर्व्वमहाराज लक्षणोंसे युक्त होनेके कारण किसी महाराज के पुत्र विदित होते हैं हमने उनको जब देखा तो उन्होंने कहा कि हमको सुग्रीव से जाकर बतावो ५७ सो हमने तुमसे बताया यह सुनकर अतिवेग उठकर चरणधोने के लिये जल व अन्य पूजनकी सामग्री लेकर वहां जाकर पादप्रक्षाल-नादिक करके फलादि समर्प्पण करके अपनेको बताया ५८ व उ-नसे पूँछा कि आप दोनों कौनहैं किसलिये यहांआये हैं हमको तो कोई राजपुत्र व तपस्वी विदितहोतेहो सुग्रीवका वचनसुन रामच-न्द्रजी ने लक्ष्मणकेद्वारा उत्तर दिलवाया ५९ कि हमदोनों महाराज दशरथजी के पुत्रहैं रामचन्द्र व लक्ष्मण नामहै दुष्टोंको दण्डदेने के लिये व शिष्टोंको पालनेकेलिये वनको आयेहैं ६० तब सुग्रीवने कहा कि हमको जानपड़ता है कि आप दोनों को कुछ उपकार कराने व

करनेकी इच्छाहै कहिये क्याबातहै ६१ नहीं तो तुमदोनों सेनासहित यहांआते यदि उपकारकी इच्छा न होती लक्ष्मणजी ने कहा हां कुछकार्य्य है इनकी भार्य्या कोई हरलेगयाहै उसको अब नहीं जानते हैं कहांहै उसीके खोजनेको हमदोनों यहां आयेहैं यही हमदोनों का कार्य्य है इसीके सङ्गके और सबकर्म्म हैं जिसकेलिये हमदोनों समुद्रके पारको भी चलेजायँगे व पातालमें भी पैठजायँगे व स्वर्ग को भी चलेजायँगे व महेन्द्राचलको भी चूर्णकरडालेंगे व बड़े से भी बड़ेबलीको मारडालेंगे बताइये इसविषयमें क्याकरें ६२ यहसुनकर सुग्रीव बोले कि हां रावणकी हरीहुई विमानपर चढ़ीहुई एकस्त्री ने कुछ अपने भूषण नीचे फेंकदियेथे उनको हमने धररक्खे हैं वे दिखावेंगे ऐसाकहकर रामचन्द्रजी को अपने मन्दिर में लेजाकर सब दिखाया ६३ रामचन्द्रजीने भी अच्छीतरह देखकर बनाय निश्चय करके व रोदनकरके वह रावण कहांगया यहपूछा सुग्रीव ने कहा वह दक्षिणदिशाको गयाथा ६४ तब रामचन्द्रजीने उसके सङ्ग मैत्री की व पूछा कि सुग्रीव तुम यहां भार्य्याहीन किसअर्थ रहतेहो ६५ सुग्रीव बोले कि हमारा भाई बाली बड़ाबलीहै उसने हमारी राज्य व भार्य्या हरलिया है व वह किष्किन्धा में रहता है उससे हम युद्धमें हारगये हैं उसके वधकेलिये हमको सदा चिन्ता बनीरहती है जो तुम उसको मारडालो तो हमभी समुद्रमें सेतुबांधकर रावणसे हरी हुई व लङ्कामें स्थित सीताको तुमको सौंपदेंगे यह कहकर सुग्रीव ने शपथकिया व महाबली बालीसे युद्धकरनेके लिये सुग्रीवगये व बुलाकर उससे लड़े ६६ रामचन्द्रजी भी सुग्रीवके संगहीसंग गये थे परन्तु युद्धकरने के समय रामचन्द्रजीको निश्चय न हुआ कि यह बालीहै इससे बालीको नहीं मारा ६७ तब सुग्रीव भागकर श्रीरामचन्द्रजी से बोले ६८ कि तुम्हारे चित्तको न जानकर हम फिर युद्ध करनेको प्रवृत्तहुये सो वह मरणहीके लिये हुआ ६९ रामचन्द्रजी ने कहा कि तुमदोनों के रूपविशेष का ज्ञान न होनेसे हमने तुम्हारे भाईको नहीं मारा अब तुमको चिह्नित कियेदेतेहैं चलकर लड़ो अवश्य उसे मारेंगे ७० तब सुग्रीव चिह्नितहोकर वहांजाय बालीको पुकार

कर युद्धकरनेकेलिये सन्नद्धहोकर खड़ेहुये ७१ तब बालीकी स्त्री तारा बालीसे बोली कि ७२ सुग्रीव अब सहायवान् लक्षितहोता है यदि ऐसा न होता तो इसप्रकार पुकारकर द्वन्द्वयुद्ध करनेकेलिये फिर न आता हमने सुनाहै कि श्रीराम लक्ष्मण दशरथजीकेपुत्र साक्षान्नारायण आपहोकर पृथ्वीकाभार उतारने के लिये आयेहैं वे दोनों इस सुग्रीवके सहायकहैं ७३ बाली बोला कि हमने सुनाहै कि रामचन्द्र बड़े नीतिमान्हैं वे बलवान् हमको छोड़कर दुर्बल सुग्रीवकी सेवा न करेंगे इससे रामचन्द्र हमारीही ओर होंगे व उसीकी ओर आवेंगे तो हमारा क्याकरेंगे क्योंकि वे आप युद्धके अपघातसे डरतेहैं जो युद्धही करेंगे तो देखाजायगा तारासे ऐसा कहकर सुग्रीव से युद्धकरनेके लिये बाली गृह से निकला ७४ व दोनों से मुष्टियुद्ध बराबर हुआ ७५ उसी बीचमें रामचन्द्रजीने बालीको बाणसे मारा ७६ व बाली गिरपड़ा व बोला कि अशस्त्रयुद्धमें बाण कहांसे आया फिर बालीके सर्वांगसे रुधिर बहनेलगा ७७ उस समय तारा व अंगद दोनों वहां आकर व्यथितहुये ७८ तब रामचन्द्रजी से युद्ध करनेके लिये बहुतसे वानर आये बालीके मारेजाने के पीछे वे भी मारेगये व बहुतसे रोदन भी करनेलगे ७९ तब तारा रामचन्द्रजी से बोली कि हमने सुनाथा कि सब रघुवंशी शास्त्र व शस्त्रमें कुशल होतेहैं शूर व धार्मिक अत्यन्त होते हैं व उनमें रामचन्द्रजी की कथा तो बहुत प्रसिद्धहै पर हा राम! तुमने कैसे पाप किया ८० तुम क्षत्रियोंका धर्म्मही नहीं जानतेहो जोकि राजगणों से सेवितहै ८१ क्योंकि कोई दो परस्पर युद्ध करतेहों उनमें चाहे किसी की जयहो वा मरण पर जो कोई तीसरा उनमें से किसी को मारडालताहै तो वह ब्रह्मघाती होताहै ८२ तुमने किस वैर से बालीको मारा बतावो वैरही से मारा अथवा मांस के लोभ से ८३ यदि मांस के लिये मारा हो तो वानर का मांस अभक्ष्य होताहै जो तुमको यह अप्रिय लगाहो तो इसके मारने से कुछ सुख न होगा क्योंकि जैसे अपना शरीर वैसेही औरोंका यह बड़े विमोहकी बातहै यदि तुमने मांसके लोभसे ऐसा कियाहो क्योंकि जैसे अपना मांस वैसेही दूसरे का व जो हमारे

लेने के लिये कियाहो ८४ व यदि एकनारीव्रत होनेके कारण रावण की हरी हुई सीता के ले आने के लिये सुग्रीव का सहाय किया हो तो यह बड़ी मन्दता का कार्य्य हुआ जो कि महाबलवान् बालीको तुमने मारडाला क्योंकि यदि महाबली बालीकी सहायता लेते तो यह जबतक सूर्य्य न अस्त होते तभी तक सीताको ले आता व इसके स्मरणमात्र से रावण सीताको यहीं देजाता क्योंकि यह पचास परार्ध्य वानर भल्लूकों का स्वामी है तुम्हारा कार्य्य तुरन्त सिद्ध करदेता व अल्पवीर्य्य केवल सात परार्ध्य वानरों के स्वामी सुग्रीवसे क्या हो-सकेगा किस कार्य्य की सिद्धि होगी ८५ अहोअज्ञान सब देवताओं का कल्याण करने में उद्यतहो ऐसी बुद्धिसे क्या देवताओं का क-ल्याण करोगे ८६ तब श्रीरामचन्द्रजी ने कहा कि हम पृथ्वी के पति हैं इससे हमने इस दुष्टको दण्ड दियाहै क्योंकि हमारा यह धर्म्म है कि दुष्टोंको दण्डदें व शिष्टलोगोंका पालनकरें बालीने सुग्रीव की स्त्री तुमको हरलिया व उसकी रुमास्त्री व राज्यभी हरलिया इससे इसके वध में कुछ दोष नहीं है ८७ तारा बोली कि तो सुग्रीव भी वध करने के योग्य है क्योंकि जब बाली दुन्दुभिनाम दैत्य के साथ युद्ध करता था वर्षभरतक बिलके भीतर रहा उसी बीचमें बाली की स्त्री हमको सुग्रीवने हरलिया व राज्यभी किया इससे प्रथम सुग्रीव को मारना था पीछे से बालीको क्योंकि प्रथम सुग्रीव नेही परदारा-हरण किया था इससे उसे पीछेही मारो ८८ श्रीरामचन्द्रजी बोले कि इसकाल के पूर्व्व सुग्रीवने क्या किया था स्पष्ट कहो ८९ तारा बोली कि साठ सहस्र पाँचसौअस्सी वर्षकी बातहै जब कि बाली दुन्दुभि से युद्ध कर रहाथा उसी बीचमें सुग्रीवने उसका राज्य व उसकी स्त्री हमको हरलिया था ९० जब फिर वर्षभर केपीछे बाली आया तो मारे भय के सुग्रीव भागगया ९१ तब बाली ने उसकी स्त्री व राज्य दोनों हरलिया ९२ उसी दिन आपके पिता राजा दशरथ जी को राज्याभिषेक मिलाथा ९३ श्रीरामचन्द्रजी बोले कि हां हमने तो पिताकी आज्ञासे उनके राज्य केसमय में दुष्टता करनेवाले बाली को दण्ड दिया क्योंकि गुरुवचनसे कुछ पापभी करे तो दोष नहीं होता

बस उनके राज्याभिषेकके समय में तो सुग्रीवही राजाथा बालीने उ-
सका राज्य व उसकी स्त्री दशरथजी केही समयमें हरा ९४ अथवा ये
दोनोंमृगहैं व आपसमें लड़तेथे उसमें बाली बली था वह युद्ध मिटानेके
लिये हमनेमारडाला क्योंकि मृगोंको परस्पर युद्ध न करनाचाहिये ९५
व उनमेंसे दोनोंके मारनेमें दोष होताहै व बलवान्‌के मारडालने में
पुण्य इससे बली बाली मृगको हमने मारडाला व दुर्बल सुग्रीव
मृगको अब कैसे मारें अथवा हमने शिकार कियाहै व शिकार करने
में राजाओंको कुछ दोष होता नहीं हां बँधे व स्थित व भागतेहुये
मृग को न मारनाचाहिये सो यह भागताहुआ न था राजाका शिकार
करना धर्म्महै चाहे उस मृगका मांस भक्ष्यहो वा अभक्ष्य क्योंकि
मांसभक्षण राजधर्म्म नहींहै केवल मृगया करनाही धर्म्म है ९६ ।
९७ । ९८ रामचन्द्रजीके ऐसे वचन सुनकर सबके सब कांपउठे
९९ फिर बाली शिरपर हाथ जोड़कर रखके श्रीरामचन्द्रजीसे बो-
ला कि हे रामचन्द्रजी! तुम्हारे नमस्कार है अब मेरा वचन सुनिये
२०० शङ्खचक्रगदापद्मपाणि पीताम्बरधारी जगद्गुरु नारायण
साक्षात् आप हैं यह मैंने सुना है १ व योगीलोग तुम्हारी चिन्त-
नाकरतेहैं व तुम्हारी पूजा करतेहैं व हव्य कव्यके भोजन करनेवाले
तुम्हीं एकहो व पितृ व देवरूप तुम्हींहो २ व मरणके समय में जो
तुम्हारी चिन्तना करताहै मुक्ति उससे दूर नहीं होती सो आप म-
रणकेही समयमें दर्शन देरहेहैं अब मेरे पापका लेशभी नहीं रहा ३
अब हे राघवेन्द्र! बाण मेरे शरीरसे निकाल लीजिये मैं बहुत व्यथित
हूँ ४ तब रामचन्द्रजी बाण लेकर बोले कि क्या अभीष्ट है सो देवें
५ बाली बोला कि हे भगवन्! यदि प्रसन्नहुये हो तो मुझको स-
द्गतिदेवो ६ व इस सुग्रीव की रक्षा करना अङ्गद व तारा की भी
रक्षाकरना व मुझपापी ने जैसा अपराध किया उसका फलपाया ७
यहकहताहुआ बाली श्रीरामचन्द्रजी को देखताहुआ स्वर्गको च-
लागया ८ फिर सुग्रीवको राज्यपर स्थापितकरके रामचन्द्रजी आप
नगरके बाहर वनमें जा बसे ९ फिर सुग्रीवके सङ्ग समुद्र के समीपको
गये व लङ्का कहांहै सीता कहां हैं व मार्ग्ग कहां होकरहै यह कहतेहुये

श्रीराघवजी सुग्रीव से बोले १० कि अब इस विषय में क्या करना चाहिये सुग्रीवने कहा हनुमान् लङ्काको जावें वहांके वृत्तान्त जानकर आवें युद्धकरनेके योग्यहो तो युद्ध कियाजाय नहीं तो मेलकरलिया जाय इससे अब समुद्र नांघनेकेलिये आप हनमान् को आज्ञादेवें ११ तब सुग्रीवसे श्रीरामचन्द्रजी बोले कि यह कैसे होसक्ता है १२ सुग्रीवबोले कि हमारे वानर भल्लूकादि करोड़ों विद्यमान हैं १३ उन मेंसे एक किसीको इस कार्य्य में नियुक्त करके सब समाचार जान कर जैसा उचितहो कियाजाय १४ यहसुनकर जाम्बवान् बोले कि एक हनुमान् जावें व लङ्का में जाकर जानआवें १५ यह सुनकर हनुमान् लङ्काकोगये वहां सबकहीं ढूँढ़ा सीताजी अशोकवाटिका में थीं उनसे रामचन्द्रजीका सन्देशकह वार्त्ताकर विश्वास कराके वन उजाड़कर वनरक्षकों को मार १६ व राक्षसों से बन्धन में होकर व अन्य बहुतसे घोर राक्षसोंकोमार लङ्काको जलाकर समुद्र के उत्तर के तटपर आकर रामचन्द्रजी को देखकर सीताजी का व लङ्काका सबवृत्तान्त कहकर चुपचाप हनुमान्जी बैठे १७ तब रामचन्द्रजी ने सबोंसे विचार कराया उनमें जाम्बवान् बोले कि यह हमने सुना है कि रामचन्द्रजी वानरों से लङ्का नष्ट करवाडालेंगे यह नारदजी कहतेथे १८ अब सागरके पार सेना लेजानेका उपाय करनाचाहिये १९ तब रामचन्द्रजी शङ्करजीकी आराधना करके सब जानकर वानरोंको बुलाकर शिवकी पूजाकरके प्रणतहो स्तुति करनेलगे २० हे देवदेव, भूतग्रास, प्रलयकारण, महाहिभूषण, महामहाशय, शङ्कर, परमेश्वर, विरूपाक्ष, नागयज्ञोपवीतक, गजकृत्तिवसन, ब्रह्मशिरःकरकपालमालाभरण, नरकास्थिभूषण, भीम, नारायणप्रियशुभचरितपञ्चब्रह्मादिदेवपञ्चाननचतुर्व्वेदनदेववेद्य, भक्तसुलभ, अभक्तदुर्ल्लभ, परमानन्दविज्ञानरसपूर्ण, पूर्व्वदत्तायतन, दक्षशिरश्छेदन, ब्रह्मपञ्चमशिरोहरण, पार्व्वतीवल्लभ, नारदोपगीयमानशुभचरित, शर्व्व, त्रिनेत्र, त्रिशूलधर, पिनाकपाणे, कपर्दिन्, अनेककपालधर, वृषवाहन, शुद्धस्फटिकसंकाश, चतुर्भुजनागायुधदक्षिणामूर्त्ते, ईश्वर, देवपते, गङ्गाधर, त्रिपुरहर, श्रीशैलनिवास, काशीनाथ, केदारेश्वर,

भूषणेश्वर, गोकर्णेश्वर, पर्वतेश्वर, सिद्धेश्वर, पटहकर्णेश्वर, कनखलेश्वर, चक्रप्रद, बाणार्चितपादकमल, मुरहरपूजितचरणकमल, सोमभूषण, सर्व्वज्ञ, ज्योतिर्मय, जगन्मय ! नमस्ते नमस्ते २१ ऐसी स्तुति करतेहुये श्रीरामचन्द्रजी के आगे लिंगके मध्यमें युक्त तेजोमयमूर्त्ति शिवजी प्रकटहुये २२ जोकि अनाथों को अभयदान करते हैं पद्मासनपर आसीन रहते हैं उमा जिसके अङ्कमें अधिष्ठित रहती हैं व कामेश मायामुक्त सर्व्वाभरणभूषित रहते हैं किरीटधारणकिये गिरिजाको वामांगमें कियेहुये व उनकी कटि दोनों हाथोंसे पकड़ेहुये अभयवरकेदाता अनेकदिशाओं से पूर्ण तेजस्वी हाससहित मुखवाले प्रसन्नवदन ऐसे शिवको रामचन्द्रजी ने देखा २३ व परमेश्वरके हाथजोड़कर नमस्कार किया व फिर दण्डाकार पृथ्वी में श्रीरामजी गिरपड़े २४ व शिवजीने दोनों हाथ ऊपरको उठाकर श्रीरामचन्द्रजी से कहा कि जो चाहो वर मांगो हम तुम्हें वरदानदेंगे २५ श्रीरामचन्द्रजी बोले कि यदि तुम वरदेतेहो तो हम तुमसे यह कहते हैं कि हम लङ्काको जायँगे समुद्र उतरनेका एक उपाय हमको देवो बस और कुछ नहीं चाहते हैं २६ शङ्करजी बोले कि हमारा आजगवनाम धन्वाहै वह तत्कालरूप है उसे लेकर तुम समुद्रमें डाल देवो बस उसपर चढ़कर सेनासहित समुद्रपारको चलेजावो २७ रामचन्द्रजी ऐसाही करेंगे यह निश्चयकरके आजगवको स्मरण किया २८ व आयेहुये धन्वाको रामचन्द्र ने पूजाकिया २९ महादेवजीने अपना आजगवधन्वा श्रीराघवजी को देदिया ३० रामचन्द्रजीने उसे समुद्रमें फेंकदिया ३१ बस वह सेतुके आकारका होगया उसपर सबवानर चढ़े व श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी भी चढ़े जब साठपरार्ध्य संख्या वानरलोग उसके ऊपरचढ़े तो सबकेसब जाकर दोघड़ीमें उसपार पहुँचगये ३२ वहां पहुँचकर वानर इधर उधर किनारेपर धन्वाको देखनेलगे ३३ तब अतिकायनाम राक्षस ने वानरोंकी सेना देखकर जाय रावणसे जनाया ३४ रावण ने कहा कि वानरों से क्या होसक्ता है व राम लक्ष्मण दो मनुष्यों से क्या क्योंकि ये सब तो हमलोग राक्षसों के भाग्यसे आयेहुये भोजन हैं ३५ यहां

सूर्यास्त होनेके प्रथम वानरराज सुग्रीव ने हनुमान् आदि बड़े २ बलवान् वानरोंको लेकर लङ्काके पास जाकर उपवन में पैठकर नानाप्रकारके फलखाकर व जलपीकर रक्षक राक्षसोंकोमारकर सबोंको यमलोकको भेजदिया व एक २ को पकड़कर लङ्काके गोपुरके ऊपरको फेंकदिया व आप सबलोग भी लङ्काके ऊपर चढ़गये प्रासादोंको तोड़फोड़ उजारदिया कोई २ वानर स्तम्भोंको उखाड़ २ उन्हीं से राक्षसोंको मारनेलगे ३६ कोई २ नानाप्रकारके मन्दिरोंको गिराने लगे व चूर्ण करनेलगे बाल वृद्ध स्त्रीजन सबोंको मारनेलगे ३७ राक्षसोंने वानरोंको लङ्काके ऊपर चढ़आयेहुये व प्राकारको जीतलिया देखकर जाकर रावण व मेघनाद से जनाया ३८ मेघनाद तुरन्त युद्धकरने को आया उसको अतिघोरयुद्ध करते हुये देखकर वानरलोग भयभीनहोकर बहुतसे भागखड़ेहुये ३९ तब हनुमान्जी ने सब वानरोंको गये जानकर व रावणको जानकर पुकार पुकारकर बहुतसे अपकार वचनकहे व सेनाको फिर मेघनादके सम्मुखकरके ये बड़े प्रसन्नहुये ४० मेघनाद आकाशसे लड़ने लगा ४१ जहांसे उनलोगोंको मेघनाद न दिखाई देनेलगा व फिर हनुमान् व जाम्बवान् दोनों आकाशको उड़कर पर्व्वतके शिखरों से मेघनाद को मारनेलगे ४२ जब वह पृथ्वीपर गिरपड़ा तो लक्ष्मणजीने उसे यमलोकको पहुँचादिया ४३ तब अतिकाय महाकायनाम दो महाबलीराक्षस वानरोंकी सेनापर दौड़े व बहुतसे बानरोंको मारकर लक्ष्मणजीकोभी पीड़ित किया फिर रामचन्द्रजी के साथ युद्धकर के जाय सुग्रीवको मारा परन्तु हनुमान् व जाम्बवान् दोनों महाबलवानोंने युद्धमें दोनों को पराजित किया व पकड़भी लिया व लेकर रामचन्द्र के समीप लेजाकर समर्पित किया ४४ तब रामचन्द्रजी अतिकायसे बोले कि ४५ रावणको हमारा युद्धकहो व मन्त्रियों को व अन्य राक्षसोंको बताओ तो रावणके मन्त्री वा अन्य महाबली राक्षस कितनेहैं ४६ अतिकायबोला कि हमलोगोंने पहलेही निश्चय करके बिचार कियाहै व सेनाके भी विभाग कियाहै विद्युन्मालीनाम राक्षस बड़ा बली है व विचित्र प्रकारका युद्धकरताहै जिस लक्ष्यको

देखता है उससे तो युद्ध करताही है पर जिसे नहीं देखता उससे लड़ताहै व आप समक्षमें युद्धकरता है व गुप्त होकरभी वह सब बानरों से एकही युद्ध करसक्ताहै ४७ औरभी बड़ेबड़े बलीराक्षस महा शस्त्रास्त्रों के शिक्षित हैं जो कि आये हैं व हम दोनों जने तुम्हारे साथ युद्ध करेंगे व रावण विद्युन्मालीकी दहिनी ओर पुष्पक विमानपर चढ़कर आवेगा तो तुमकोभी मारडालेगा ४८ व अन्य भी कुम्भकर्णादि राक्षस ऐसेहैं कि तुमको पकड़ लेजाकर सीता को दिखाकर रावणके सम्मुख लेजाकर मारडालेंगे ४९ रामचन्द्रजी ने कहा कि बलवान्लोगोंको कुछभी असाध्य नहींहोता अथवा दैवकी गति बड़ी कुटिल है जो चाहेकरे यह सुनकर सुग्रीव ने बड़ा कोप किया सकोप देखकर श्रीरामचन्द्रजी बोले ५० कि अब इनदोनों को न छोड़देना चाहिये क्योंकि ये मारने के योग्यहैं ५१ रामचन्द्र जीने कहा क्योंकि जो अबल होते हैं चाहे मारने के योग्य भी हों पर छोड़देना चाहिये बसन विभूषणादि लाओ जैसेही रामचन्द्रजी ने ऐसा कहा है कि हनुमान्जी भूषणबसन लाये रामचन्द्रजीने अतिकाय व महाकाय को दियेँ ५२ तब अतिकायने बताया कि लंका के द्वारपर जो यह पांच मुखका काष्ठ दिखाई देताहै उसको एक बाणसे मारो यदि यह टूटजायगा तो रावणका बध अवश्य होजायगा यह शुक्राचार्य्य ने कहा है ५३ व इस काष्ठ के काटने के पीछे फिर पातालको चलना होगा यह शुक्राचार्य्य का बचन आज्ञारूप उसी काष्ठ यन्त्र में लिखाहै ५४ इससे तुम एकही बाणसे इस दारुपञ्चमुख यन्त्र को काटो तौ तुम्हारी शक्ति जानकर हमलोग इतर युद्ध करेंगे ५५ यह सुनकर श्री रामचन्द्रजी ने धन्वापर एक बाण चढ़ाया व पूर्व्वकोटिमें स्पर्श कराके धन्वाको अच्छेप्रकार खींचा व हनुमान्कागीत सुनते हुये व दोनों राक्षसों को देखते हुये राघव जी ने बाणको चलाया ५६ बाणको धन्वासे चलते हुये राक्षसों ने देखकर कि उस बाणने एकही स्थानपर लगकर उस पञ्चमुख काष्ठ यन्त्र को काटडाला तब उसको पांच स्थानों पर कटा देखकर उन दोनों राक्षसों ने रामचन्द्रजी से कहा कि बस हमलोगों ने

जानलिया कि तुम सब राक्षसों को मारोगे पर हम दोनोंके बालकों की रक्षा करना रामचन्द्रजी ने कहा अच्छा तुम दोनों के बालक न मारे जायँगे तब वे दोनों राक्षस लंकाको गये ५७ व इधरसे वानर लोग गये उन्होंने अपने हाथों पैरों और पीठोंसे प्रथम की शहरपनाह को गिरा दिया व जाकर दूसरे प्राकारपर होरहे तब रावण वहां आकर सब वानरों को बाणों से मारकर फिर रामचन्द्रजी के समीप पहुँचा ५८ व रामचन्द्रजीको पांचबाणोंसे उसने ताड़ितकिया ५९ तब रामचन्द्रजीने दशबाणों से रावणको घायलकिया ६० इसप्रकार दोनोंसे परस्पर महादारुण युद्धहुआ ६१ फिर रावणने दश बाणोंसे रामचन्द्रजीको व्यथितकिया ६२ व रामचन्द्रजीने बीसबाणोंसे रावण को घायलकिया तब रामचन्द्रजीके बाणोंसे सर्वांगोंमें विदीर्णहोकर रावणराक्षस युद्धसे भागगया ६३ तब वानरोंने व लक्ष्मणजीने किरोड़ों राक्षसों को मारडाला रात्रिहोजानेके कारण युद्ध बन्दहोगया ६४ फिर दूसरेदिन विभीषणने रावणको समझाया कि ६५ युद्धमें कई उपायहोते हैं जबतक तीसरे उपायसे कामचले तबतक चौथे उपायसेदण्डका बिचार न करनाचाहिये क्योंकि जब चौथा उपाय विपरीत होजाताहै तब फिर कुछ करतेनहीं बनता ६६ अपनी व शत्रुकी शक्ति जानकर उसकेअनुसार साम दाम भेद दण्ड ये चार उपाय करनेचाहियें जो अपनीशक्ति अधिकदेखे तो युद्धकरे नहींतो ६७ जो अपनीशक्ति को न जानकर युद्धकर बैठताहै उसका विनाशहीहोताहै हम कहतेहैं कि महाबली रामचन्द्रजीके साथ तुम्हारा युद्ध अच्छा न होगा क्योंकि उन्होंने एकहीबाणसे बालीको मारडाला है व बालीका बल तुमने पूर्वही जानरक्खाहै ६८ व मारीचको एकबाणसे मारा तुम अकेले सीताकोलेकर भागआयेहो व सब वीर राक्षस मारडालेगये तुम्हारा अतिबलवान् मेघनादभी मारडालागया ६९ व तीनश्रेष्ठ मारेगये अब तुम्हारायुद्ध रामसे न चाहिये व वही एकवरदानके कारण प्रतापीथा सो नहींरहा इससे अब अच्छाहोगा कि सीता रामचन्द्रजीको देकर उनके दासभावको प्राप्तहोओ ७० उन्होंने तुम्हारेद्वारपर स्थित पांचमुखवाले उसकापुत्र यन्त्रको एकही

बाणसे काटडाला वे राम तुमको मारडालेंगे ७१ तुम्हारेलिये बहुत नष्टहोचुकेहैं व जो शेषहैं सब नष्टहोजायँगे एक तुम अन्यायके सुख केलिये महामूढ़ताका पालन न करो ७२ ये मनुष्य की जातिकी सीता तुम्हारी मृत्युहीहैं जिनकी तुम इच्छाकरतेहो वे पतिव्रता शिरोमणिहैं इसीसे तुम्हारी मृत्यु हम बतातेहैं इसके सिवाय वे बड़ेबलवान्की स्त्रीहैं व अनेक बलवानोंसे पूजित हैं तुमभी पूजनकरके उनको छोड़दो ७३ व बिना इच्छा कियेहुई स्त्रीका संयोग सुखदायी नहींहोता क्योंकि बिना इच्छा कियेहुई व दुर्गन्ध युक्त मलिनवस्त्र मलिनअङ्गवाली नारीका सङ्गम बहुत निन्दित है ७४ इससे ऐसी स्त्रियोंके सङ्ग विरक्तही अच्छीहोतीहै क्योंकि उसमें कार्य्यकी हानि नहींहोती यदि परस्त्री में अनुरागहुआ तो मरणको पहुँचाता है व नरकबास दिलाताहै ७५ सो सीताके आदि संयोगमें व्यर्थ तुम्हारा मरणही होजायगा इससे हे तात ! इन धर्म्मपत्नी महापतिव्रताका त्यागही करना धर्म्म है व न त्यागना निस्सन्देह मरणही है ७६ इत्यादि अन्यभी बहुत कारण इसमें हैं जिनसे तुमको कष्टको छोड़कर सुख न होगा अब और एक वाक्य तुमसे कहते हैं जोकि सबों का हित व प्रियहै ७७ वह यह है कि रामचन्द्रजी के समीप जाकर नमस्कारकरके फिर स्तुतिकरके श्रीराघवजीके आगे अपने अपराध कहकर कहो कि हे शरणागत बत्सल महाबीर श्रीराम! मेरी रक्षाकरो ७८ क्योंकि हम सब राक्षसलोग तामसीहोनेके कारण महापापी होते हैं इससे अब सीताजी के अपहरणसे जो दोष मैंने किया है उसे त्यागकर पुत्ररूपी हम लोगोंकी रक्षाकरो ७९ हे रामचंद्रजी ! हम सब तुम्हारे अधीनहैं चाहे रक्षाकरो चाहे अपनी इच्छासे मारो यह कहकर जब हमलोग महात्मा श्रीरामचंद्रजी के आगे चलकर खड़े होवें ८० तो हे रावण ! सब लोगोंकी आयु स्थिर होजाय व राज्यभी स्थिर होजावे तब रावण बोलाकि बड़े खेदकी बातहै आप राक्षस नहीं हैं ८१ व शूरभी नहीं हैं न राजधर्म्म जानतेहैं परनारी परद्रव्य परराज्यका सेवन ८२ शूरोंका उत्तमधर्म्म है पर आप ऐसे नपुंसकों का धर्म्म नहीं है बस तुम शत्रुपक्षके समालम्बी हो इससे

यदि जीवन चाहो तो यहां से निकलजाओ ८३ यहसुन विभीषण अपने मन्दिरको चलेगये फिर वहांसे रामचंद्रजीकी शरणमें पहुँचे ८४ तब रावण अपने पुरसे निकलकर अनेकमहाबली राक्षसों के साथ रामचंद्र लक्ष्मण व वानरों के संग महाघोर युद्धकरनेलगा ८५ तब रामचंद्रजीने बिभीषणके मुखकी ओर देखकर उनके कहने से उसे रावणजानकर सौतीक्ष्ण बाणोंसे उसके खण्ड २ करके मारडाला ८६ तबकुम्भकर्ण महागदालेकर अनेक वानरोंको मारताखाताहुआ रामचंद्रजी से युद्धकरनेलगा रामचंद्रजी के शिरमें गदाप्रहारकिया व ८७ उसे भी श्रीराघवजीने तीक्ष्णबाणसे मारडाला ८८ तब श्री रामचन्द्रजी विभीषण की द्वारा रावण कुम्भकर्णादिकों के श्राद्धादि करवाकर बिभीषणके नाम से एक शिवालय वहाँ बनवाकर उस में शिवलिंग स्थापित करवाकर फिर बिभीषणको लङ्काका राजाबनाया फिर सीताजी को अग्निमें प्रवेशकराके शुद्धजानकर महादेवके नमस्कारकराके व महादेव से सब बानर ऋक्षोंकी सेनाको आयुष्य दिलवाकर पुष्पकबिमानपर आरूढ़हो समुद्र उतरकर उत्तरतटपर आय अपनी सेना वहाँ ठहराकर शिवकी प्रतिष्ठा करवाकर वहाँ इन्द्रादि सब देवताओंकी पूजाकरवाई व मुनियों से पूजित व फिर सब देवताओं व बानरादिकोंके साथ रामचन्द्रजी अपनी अयोध्यापुरीमें आकर ८९ इसके बादभरतादि युक्त नगरबासी व वसिष्ठजी व मुनियोंसे पूजित अपने गृहको गये ९० व आयेहुए इन्द्रादि देवगणों को आसनादिकों से पूजनकरके व वानरादिकों की भी जटा बनवाकर राज्य के सिंहासनपर विराजमान हुये तब रावण के बध से हर्षित ब्रह्मादि देवगण श्रीरामचन्द्रजी से यह बोले ९१ कि आप ने हमलोगों को फिर अपने अपने राज्यपर स्थापित किया व सदा आपने अनेक अवतार धारणकरके हम सब देवताओं की रक्षा दुष्ट दैत्यादिकों से कीहै बन्धुसहित रावणको मारकर तीनोंलोककी रक्षा की है अब श्रीसहित सुखीहोओ यह कहकर देवगण अपने अपने स्थानोंको चलेगये ९२ तब अयोध्यानिवासी लोगों ने बड़ी स्तुति की व कहा कि रावणके बध के लिये आप अवतीर्ण हुये पर तीनों

लोकोंकी रक्षाकी ९३।९५ यह सुनकर श्रीरामचन्द्रजीने बस्त्रादिकों से सब नगर देश निवासियोंकी पूजाकी फिर राज्याभिषेक में आये हुये सब मुनिश्रोंसे कहा कि ९६ आपलोगोंका तपतो अच्छे प्रकार होता है न व यज्ञादि अच्छेप्रकार होते हैं न कोई बिघ्न तो नहीं है भला अपनी अपनी स्त्रियोंके संग भोगविलास आनन्दसे होताहै न व शिवकी पूजा तो नित्य करतेहो न ९७ व तुम सबलोगोंकी भार्य्यायें अच्छे सन्तानोंको तो उत्पन्न करतीहैं न व सब सुखकी बातें तो विद्यमानहैं न किसी प्रकारका कष्ट तो नहीं है ९८ मुनिलोग बोले कि हे राघवेन्द्र ! आपके राजा होनेपर तपस्वियों को कौन दुःखहै सब सुखही है अब हमलोग अपने अपने स्थानोंको जायँगे अथवा जो आज्ञा आपकी हो करें ९९ रामचन्द्रजी बोले कि जिसके ऊपर मुनि लोग प्रसन्न होतेहैं वहधन्यहै व उसके ऊपर शम्भुजी भी प्रसन्न होते हैं जिसके ऊपर महादेवजी प्रसन्न होते हैं उसका कल्याण होताहै ३०० व जिसके यहां बिप्रगण भोजन करतेहैं वह धन्यहै इससे आपलोग यहां उत्तम भोजनकरके तब अपने अपने स्थानोंको जायँ यही प्रार्थनाहै यह सुन तथा कहकर भोजनकर १ सब मुनिगण आशीर्ब्बाद देकर हर्षितहो अपने अपने आश्रमों को चलेगये॥

चौ० अरु श्रीराघव परमकृपाला। भार्य्याअनुजसहित महिपाला २
कीनअकण्टकराज्य विशाला। सर्ब्बजनप्रियगतसबजाला।
जो यह सुनत चरित जनपापी। होतपापबिन गत सबदापी॥
परब्रह्मपद पावत नीको। सकलभांतिसों सबबिधि ठीको ३। ४
जो सुमिरत यह शुभ उपखाना। तासु न दुर्ग्गति होतकुठाना॥
अरुजोकीर्तनकरतबिचारी। सो होवत शुभगतिअधिकारी ५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखंडेभाषानुवादेशिवराघवसंवादेकल्पांतरीय रामायणकथनन्नामषोडशोत्तरशततमोऽध्यायः ११६॥

एकसौसत्तरहवां अध्याय॥

दो० एकसौसत्रह महँ मिलन भरद्वाज की गाथ॥
जहँ बसि शम्भु मुनीशसों कथासुनी रघुनाथ १
पुनिनिज जननी मासिक श्राद्धकीन विधियुक्त॥

अतिथिभयेजहँ गुप्तह्वै शिव सबकीन्ह्योभुक्त २
पुनिशिवहरिसोंपायवर निजगृह लहि सबभ्रात ॥
बिदाकीन सोवन लिये सोये आप पुसात ३

सूतजी शौनकादिमुनियों से बोले कि इतनीकथा सुनकर प्रसन्न मन होकर वसिष्ठादि मुनीन्द्र व शम्भुमुनि और विष्णुसहित व बानर ऋक्षोंसमेत श्रीरामचन्द्रजी भरद्वाजमुनिके गृहमें भोजन करके बहुत प्रसन्नहुये १ उनके गृहके ऊपर आकाश मेघसे बनाथा पवन मन्द मन्द चलताथा व बनके बीचमें सुन्दररम्य गृहबनाथा २ गृह में सब सुवर्णके तो स्तम्भ लगेथे व सुवर्णही की पलँगों में पाटियां लगीथीं मणियोंके चित्रबनेथे व बीच बीचमें चांदीकेखण्ड जड़ेथे ३ पाटीर कपूर कस्तूरी कुंकुम अगुरुसे बनायेहुये कर्द्दमसे सब कलश शोभितथे ऊपरसे मोतियोंकी झालरसहित जालसे आच्छादितथा ४ दीवारों के मध्यमें चन्द्रमाकी दीप्ति तो पड़ती है पर सूर्य्य नहीं दिखाईदेते व कपूर कस्तूरी अगुरु इनतीनों से सब भित्तियां लिपी पुतीथीं व गृहके भीतरकी सबभूमि कर्पूरकेरस व पुष्पोंसे छिरकीगई थी ५ व उत्तरदिशाकी सबभीति सुन्दरतासे युक्तथी व प्रत्येकखम्भों में नानाप्रकारकी चित्रकारी विराजतीथी ६ व स्फटिकमणिके ऊपर सौहाथकालम्बा चौड़ा चबूतरा बनाथा व गृहका आंगन बहुधा पारिजात वृक्षोंकीही छायासे शोभित होताथा ७ व सब खावांके किनारे की शहरदीवारी केलाके बनसे आच्छादितथी केलाके बनके पीछे २ केतकीका बनथा उससे बनाय आच्छन्नथी ८ मोरोंकानाद बहुत होताथा व कूजतेहुये भवँरोंसे शोभायमान होरहाथा कबूतरोंकी ध्वनि से शोभित व मतवाले कोकिलोंसे नादित होताथा व शाखाओं में महारत्न लटकतेहुये अनेक वृक्षोंसे शोभित होरहाथा व किन्नरियोंके नादसे दिशाओंका मुख पूरित होरहाथा मन्दिर सैकड़ों धवरहरों से शोभित होता व नानाप्रकारके उपवनोंसे शोभित होरहाथा व अनेक फुलवाड़ियोंसे सुन्दर गौतमीनदीकेतटपर यहस्थान शोभितथा ९।११ ऐसा भरद्वाजजीकागृह अनन्त गुणोंसे शोभित होरहाथा रति व कन्दर्पके समान प्रकाशित अनेकदासी दासोंसे भूषितहोताथा १२

नानाप्रकारकी सामग्रियोंसे शुभभरद्वाजजी का आश्रम शोभितथा उसकेबीचोबीचमें एकसौधथा उसके किनारे२गृहकेभीतरकी बाटिका जिसे अब पाईबाग कहतेहैं उससे शोभितथा १३ ये बाटिकायें प्रासाद की आठोओर आठथीं उनके बीचमें एक परमसुंदर गृह शोभितहो-ताथा व चारोंदिशाओं में महादेव के एक एक प्रासाद बनेथे १४ व प्रत्येक देवगृह में एक एक बधाई बजानेवाला बैठाथा व स्वर्गमें रहनेवाली श्रेष्ठस्त्रियों के विश्राम के स्थान बीच बीचमें बने थे १५ सो ऐसे भरद्वाजजीके गृह से श्रीरामचन्द्रजी शेषनाग समेत निकले व उन्हीं भरद्वाजजीका एकगृह बनकेमध्यमें था उसमें चलेगये १६ उस मन्दिरकी सब दिशाओं में बड़े मोल के कम्बलतने थे व वस्त्रों के आसन सब कहीं पड़े थे उसके मध्यमें एक दिव्य सिंहासन वि-राजमानथा उसमें मुनिके साथ रामचन्द्रजी पैठे १७ उस महागृह में पौराणिक पण्डितकेलिये एक दिव्य महासिंहासन अलगधराथा व राजसिंहासनभी धराथा बन्दरों व ऋक्षोंका आसन भी था वहां पहुँचकर पौराणिक शम्भुमुनिको पौराणिकके आसनपर बैठाया व फिर मुनिश्रेष्ठ बसिष्ठजीको बैठाया १८ फिर नारायणजीको बैठाया व अन्यलोगों को बैठाकर फिर आप एक नीच आसनपर बैठे उस समयमें आकाशमेघोंसे आच्छादित होगया सब दिशायें प्रसन्न हो-गईं पृथ्वीपर घासजमआई बीजभूतलपरजमआये १९ उसके आँ-गनमें सन्ताननाम देववृक्षके पुष्पोंसे सुगन्धित न बहुत शीतल न बहुत उष्ण स्थानको देखकर शम्भुमुनिसे श्रीरामचन्द्रजी बोले शं-करकी कोई कथा हमसे कहो २० हे मुनिवर्य्य ! ये सब जन समूह सुनाचाहते हैं इसलिये अघनाशन महेशका आख्यानकहो गौतम मुनिके आश्रमपरदेवगणोंके बीचमें बैठेहुये महादेवजीने क्याकिया २१ शम्भुमुनि बोले कि महाबीणा लियेहुये हनुमान्जीने गौतमके आश्रमपर फिर शिवजी से पूँछा कि न्यायसे कर्म्मकरनेसे क्याफल होताहै व अन्यायसे करने से क्या सो कहो २२ व चोरी की द्रव्यसे क्या होताहै व किसीकी अर्पितवस्तु फिर अर्प्पण करनेसे क्याफल होता है व नष्ट टूटी फूटी वस्तु किसी को देने से क्या फलहोता है

हे भगवन् ! एक २ प्रश्नका उत्तर कहो कि क्या २ होताहै हे शम्भो ! २३ यह सुनकर महादेवजी हनुमान्जीसे बोले कि हम तुमसे सब कहते हैं चित्त लगाकरसुनो न्यायसे अर्जित वस्तुसे सदा शिवकी पूजाकरके इन गौतमने निरन्तर ऐश्वर्य्यको पायाहै २४ इसविषय में तुमसे एक पुरातनी कथा कहतेहैं पूर्व समयमें करणका पुत्र एक अकथनाग ब्राह्मणहुआ उसका सुशोभनानाम एकस्त्रीकेसंग विवाह हुआ वहब्राह्मण बड़ा दरिद्रथा व करुणावान्था जो अन्नहो उसका छठांअंश भोजन करलियाकरे व अपने पितासे वर्जितथा २५ एक समय उसको पांच दिनोंसे कुछ अन्न नहीं मिलाथा छठें दिन जैसे भोजनकरनेपर हुआहै कि एक संन्यासी वहां आगया व बोला कि मैं एकमाससे व्रतकररहाहूँ मधुरभोजन करनेके लिये तुम्हारे समीप आयाहूँ २६ यदि तुमसे होसके तो भोजन देओ नहीं तो मैं और किसी के पास भोजनकी इच्छासे न जाऊँगा अकथ ने कहा कि हे द्विजेन्द्र ! यदि हमारा भोजन आज कहीं न होगा तो फिर छठेंदिन होगा २७ इससे आओ तुम्हारेचरण धोवें व भोजनकरावें यह अकथ ने कहा तब उसयोगीने कहा अच्छा पादधोओ भोजन देओ तब उस ने योगीके पाद धोकर २८ घृतमिलीहुई केलाकी फलियां उस यती कोदीं व उसने खाईं व अन्यभी बहुतसे वनके कन्दमूल फलादि दिये कुछ थोड़ासाभी अन्न शेष न रहा सब उस संन्यासी ने भक्षणकर लिया २९ तब अकथ ने उस संन्यासी मुनीन्द्र को सन्तुष्ट देख-कर अपनी सुशोभना स्त्री सहित वहभी सन्तुष्ट हुआ यती तो भो-जनकरके चलागया वह अकथ सन्तुष्टचित्त होकर जप करनेलगा ३० तप वृद्धिके लिये स्त्री सहित कपोतवृत्ति मुनि ने की व पीढ़ामें उमापति शिवजी को स्थापित करके गणोंसहित लिङ्गमें आराधन करके ३१ लिङ्ग स्थापनकरके देखनेलगा वैसेही एक और अतिदु-र्बल अपरिचित भुबुक्षित ब्राह्मणको देखा जो कि नग्न जूताहीन काना कुष्ठरोगसे युक्त व बहिराथा परन्तु समर्थ था ३२ सामवेदको गाताथा बहुतशास्त्रोंका पारगामीथा उसे गृहको आतेहुये देखा ३३ फिर अकथ अपनी सुशोभनानाम भार्यासे बोला ३४ कि यह पंक्ति-

च्युत ब्राह्मणकासा वेषबनाये कोई ब्राह्मण आताहै ३५ यह आधा भोजन इसके लिये रखछोड़ो परन्तु आज भी जो इसको यह बचा बचाया अन्न देदियाजायगा तो अब छ दिन बीतजायँगे तुम्हारा जीवन न होसकेगा तो इसविषयमें जो तुम अच्छा समझतीहोओ कहो ३६ तब सुशोभना बोली कि जो आयु ललाट में लिखीहै उस के विपरीत नहींहोता ३७ यह सुनकर अकथबोला कि विधिपूर्वक यज्ञकरतेहुये दक्षका भी शिर बीरभद्रने काटडाला सो यज्ञआत्माहैं तो पापात्मा मनुष्यों की अकालमृत्यु होने में क्या सन्देह है इससे जबतक यह आयाचाहे तबतक तुम इतना अन्न भोजन करलेओ जो आनेपर इसको दियाचाहतीहोओ तो तुम्हारी इच्छाके अनुसार हमकरेंगे ३८ भार्याने कहा हम कैसे भोजनकरें बिना तुम्हारे भोजन किये हमने कब कुछ भोजनकिया है इस विषयमें औरभी सुनो ३९ प्राणियोंके प्राण अन्नही हैं व अन्नही सब प्राणियोंका यज्ञहै इससे जो अन्न देताहै वह जानो प्राणदानकरताहै ४० अन्न से सबप्राणी उत्पन्नहोते हैं व अन्नहीसे बढ़तेभी हैं इससे थोड़ेभी अन्नका दान महाफल देताहै ४१ पीपरके पत्तेकेअग्रभाग के ऊपर स्थितजल के समान चलायमान यह जीवनहै इसमें जिसने दान न किया उस-का जन्म निरर्थकहै ४२ परलोकमें धर्म्मही सहायहोताहै न भार्य्या सहायहोती न बान्धवलोग भार्या माता पिता पुत्र ये सब जबतक आयु है तभीतकके बन्धुहैं ४३ व धर्म्म यहांवहां सबकासुहृत् व बंधु होताहै धर्म्मवानों को धर्म्मही का संग्रहकरना चाहिये हमारा तु-म्हारा औरकुछ यहां क्याहै ४४ तब उसकी स्त्रीने कहा मैं नहींखा-ऊँगी तुम धर्म्मकरो इसब्राह्मणको खिलाओ इसीमें मुझकोभी धर्म्म होगा इसप्रकार भार्याकावचन सुनकर करुणानिधि अकथ निश्शंक होकर आयेहुये उसब्राह्मणको अन्नदेनेपर उद्यतहुआ व जोकुछ था सबलेकर उपस्थितकिया ये शंकरदेव हैं व नाना कारणोंके कारणहैं यहांआयेहैं ४५ यह मनसे शोचकर पापनाशन उसकाअन्न दान करनाहीचाहा ४६ व आयेहुये उनब्राह्मणके आजानुपाद प्रक्षालि-तकरके फिर गुल्फ व गुल्फों के नीचे धोकर ब्राह्मण को आचमन

कराया ४७ अकथ गृहके आंगणमें लाये व पादसंधिको धोधो कर अर्घ्यदेकर उनका सर्वाङ्गधोकर अच्छा आसनदिया ४८ प्रथम मिष्ट जलादि से पूजितकिया फिर आसनपर विश्रामकराया फिर अच्छी तरह पूजनकरके भोजनकराया इन विप्रको भोजनकराके जैसेही बैठायाहै कि कोई एक उन्मत्त गृहमें आगया ४९ तब पादसंधि को गृहके बाहरलेगये उस उन्मत्तने उसकाघर जलादिया व उसने आतेही के साथ अपनेपैरों से इस अकथ को स्त्रीसहित मारा ५० जब अकथ ताड़ितहुआ व उसकाघर जलताही था व गृहमें पैठगया प्रथम के आयेहुये योगिराज महादेवको पकड़लिया ५१ व महेशान को लेकर बाहरचलदिया व उनके पूजाकी सामग्री जानों प्रथमही जलगई थी तब उस अकथब्राह्मण ने बाहर आकर पूजा व योगिराज शम्भुजीको जलेहुये देखकर अपनामुख पीटा व अपनी भार्य्या से कहा कि येभी शिवही हैं इससे इनकीभी पूजाकरनीचाहिये ५२।५३ यह कहकर उनके सर्व्वाङ्ग की पूजा अकथ ने की तब वह अङ्गभङ्ग उन्मत्तब्राह्मण बोला कि अच्छा जो पूजा तुमने पीछेमें की है वहभी सफलहोगी ५४ क्योंकि जो द्रव्य देवताआदि के लिये धरी होतीहै वह जो जलजातीहै तोभी पूजाहीमें लगीहुई समझीजाती है क्योंकि अग्निभी हमारी अर्थात् महादेवकी मूर्त्ति है इस से पूजा से मानों अग्निकी पूजा कीगई ५५ यहसुनकर अकथब्राह्मण बोला कि जो चोरीसे इकट्ठेकियेहुये धनसे तुम्हारीपूजा कीजातीहै उससे कल्याण नहींहोता इससे हे शम्भो! जो अन्यायसे अर्जितधनसे तुम्हारी पूजाकरे तो शुभ देनेवाली नहींहोती ५६ यह कहकर अकथ जल्दी अपनीदेह जलानेपर उद्यतहुआ तब दग्धलिङ्ग को उन्मत्त लेकर क्षणमात्र में अन्तर्द्धान होगया ५७ इसके बाद अव्यङ्ग हर होकर अकथसे कहनेलगा कि हे विप्र! क्यों खेदकरतेहो हम वरदान देनेवालेहैं तुम वरदानमांगो ५८ तब अकथ ने विभुके चरणों में निश्चलभक्ति मांगी सूतजीनेकहा कि यहकथा सुनिके मुनियोंसहितश्री रामचन्द्रजी प्रसन्नहुए ५९ व भारद्वाजमुनिके नमस्कारकरके चलने की आज्ञामांगी ६० तब भारद्वाज प्रसन्नहोकर शम्भुजी व मुनियों में

श्रेष्ठ बशिष्ठजी व नारायणजी व ऋषिगणोंको नमस्कार करके बि-
दाकिया व वेभी नमस्कारकर चले ६१ शौनकादि ऋषियोंने इतनी
कथासुनकर सूतजीसे पूंछा कि भरद्वाजजीके आश्रमपरसे अयोध्या
में जाकर महातेजस्वी रामचन्द्रजीने मुनियों के सङ्ग क्याकार्यकिया
व महायशस्वी शम्भुमुनिने क्याकिया ६२ सूतजीबोले कि अयोध्या
में पहुँचकर श्रीराघवजी ने दूसरेदिन कौशल्याजीका मासिकश्राद्ध
करनेकी इच्छासे ऋत्विक्आदि ब्राह्मणोंको निमन्त्रितकिया ६३ स-
मस्त तत्त्वजाननेवाले शम्भुमुनि नारदमुनि रोमश व भृगुमुनि बि-
श्वामित्रसे एकभक्त होकर श्रीरामचन्द्रजी ने कहा ६४ कि श्राद्धक-
रनाहै उनसबोंकी आज्ञासे पूर्वदिनमें एकवार भोजन करके भूमिपर
शयनकियाथा इससे कुछ व्याकुलेन्द्रिय होगयेथे जब परदिनआया
तो विधिपूर्वक प्रातस्स्नान किया ६५ शुद्ध अन्न शाकादि सब अ-
पने जनोंसे इकट्ठे करवाये व नानाप्रकारके विचित्र अन्नोंका परिपाक
करवाया ६६ व बटकआदि ३८ प्रकारके भक्ष्य पदार्थ बनवाये छः
प्रकारकी पायसबनवाई व दोसौ प्रकारके शाक पकवाये ६७ व बिना
पकेहुये कच्चेही अन्न शर्करा घृतके योगसे तीनसै प्रकारके बनवाये
केलाआदि के विविधप्रकार के सौफल मँगवाये ६८ ऐसेही बहुत से
गञ्जीआदि मूलकन्द व बल्कल अनेकप्रकारके इकट्ठेकराये सबइकट्ठे
कराके अपने भाइयों व पुरोहित के साथ श्रीराघवजी नदीकेतीरपर
गये ६९ सरयूजी के जलमें सबपदार्थ प्रक्षालितकिये अग्नि व ब्रा-
ह्मणोंको वहां स्थापित करके हवनाकिया फिर उनका आगत स्वागत
करके देवबुद्धि से पूजनकरने के लिये स्थापित किया ७० प्राणायाम
करके सङ्कल्पकरके एकक्षणमात्रमें सब देनेलगे प्रथम रोमश व नारद
मुनिको श्रीरामचन्द्रजीने वैश्वदेव ब्राह्मणकरके निमन्त्रितकिया ७१
शम्भुमुनि भृगुमुनि व विश्वामित्रको मातृस्थानमें निमन्त्रित किया
फिरगोमय से मण्डल किया उसपर इनसब पूज्योंको स्थापितकरके
७२ जानकीजीके दियेहुये जलसे सब ब्राह्मणों के चरणधोये फिर
आचाम इस मन्त्र से प्रथम सबों को आचमन कराया व घर
जानेका विचारकिया ७३ उसी अवसर में एक वृद्धब्राह्मण विकृता-

कार अभ्यागतहोकरआया जिस के मुखसे वृद्धता के कारण राल बहतीथी व कनपटी थर २ कांपती शिर व चरण कांपते थे ७४ बड़े लम्बेकेश रक्खेथा व देहकी सबखाल झूलपड़ी थी श्वास व कास से बनाय पीड़ित होरहा था गण्डस्थलोंपर कानोंसे निकलकर खूंट बहरहा था दाढ़ीके बालोंमें सब राललगी थी ७५ वह बिप्र श्रीरामचन्द्रजी से बोला कि हे राजन् ! हम एकही ब्राह्मण यहांपर स्थितहैं इससे दुर्ब्बल व बृद्ध हमको भी भोजनदेना चाहिये ७६ रामचन्द्रजी उसका बचन सुनकर लक्ष्मणजीसे बोले कि इसब्राह्मण के पाद तुमधोओ व हम ब्राह्मणकी पूजाकरेंगे ७७ तबवह अभ्यागत आकुल बचन श्रीरामचन्द्रजी से बोला कि जब तुम्हीं अपने हाथों से हमारे चरणधोओगे. तभी हम भोजन करेंगे ७८ क्या हम से अधिक तुम्हारे कोई ब्राह्मणहैं जिससे तुम हमारा अनादर करतेहो महर्षिगणोंका सेवित श्राद्धधर्म्म हमारीजाने तुम नहीं जानतेहो ७९ हमारा अनादर करने से सब विप्रोंका अनादरहोगा व श्राद्धविधि जहां हतहोजाती है कर्त्ता नरकको जाताहै ८० तब रामचन्द्रजी ने अपने आप उस विप्रके पादधोये व बुलाकर व आचमनकराके उस ब्राह्मणको गृहमें प्रवेशकरवाया ८१ व आचमनकरके अपने हाथसे उस ब्राह्मणको कुशासन बैठनेकेलिये दिया जबसब ब्राह्मण अपने २ आसनोंपर बैठगये तो प्राणायाम करके ८२ अपने कर्म्म के करने की आज्ञा ब्राह्मणों से लेकर तिलसहित जल हाथमें लिया व अपहृता इसमंत्रको पढ़कर वह सतिलजल द्वारदेशपर छोड़दिया ८३ व उदीरिताम् इस मन्त्रको पढ़कर पितृपात्र के स्थानपर जलछोड़ा व गायत्री पढ़कर फिर वह जल देवपात्र के स्थानपर छोड़ा व यही गायत्री मन्त्र पढ़कर जितने पायसादि पाकान्नथे सबोंपर जल छोड़दिया ८४ फिर श्राद्धभूमि को गया करके ध्यान किया व गदाधर देव का ध्यान किया पीछे से वस्वादि अपने पितरों का ध्यान करके श्राद्धकर्म्म में प्रवृत्तहुये ८५ क्योंकि ऐसाही करना चाहिये व विश्वेदेव का पूजन यवों से वा अक्षतों से करना चाहिये फिर मूल व अग्रभाग एक में मिलाकर दो कुशलेकर व अक्षत भी लेकर ८६

पृथ्वीपर दहिनी जानु छुआकर ब्राह्मणके हाथपर जल अर्पण करे पुरूची इस मन्त्रसे पुरूरवाद्रव व देवताओंको आसन देवे ८७ इस प्रकार देवोंको आसनदेकर फिर श्राद्धदेनेवाला क्षणमात्रभर प्रार्थना करे ८८ व अक्रोधनैः इत्यादि मन्त्र पढ़े व कुशोंके अग्रभागोंपर फिर न्युब्जीकरणके लिये अर्घ्यपात्र धरे उसके ऊपर कुशकी गांठि धरे व उसी उत्तानपात्र में जल छोड़े पवित्रक धरेहुये उसीपात्र में फिर शन्नोदेवीः इस मन्त्रसे जल छोड़े ८९।९० वैश्वदेवका जितना कर्म्महै सब दो प्रकार का है यवोऽसि वा धान्यराजोसि इस मन्त्रसे विश्वेदेवोंके पात्रोंमें यव छोड़े ९१ फिर मधु मिश्रित करकों में गन्ध-पुष्प मिलाकर देवे द्विजेष्वर्घ्यं इस मन्त्र से अस्तुअर्घ्यः इस से अर्घ्य देवे ९२ तान्देवानावाहयिष्ये इसमन्त्र को पढ़कर विश्वेदेव ब्राह्मणों से पूछकर उनका उत्तर लेकर फिर विश्वेदेवासः यह पढ़कर ब्राह्मण के शिरपर कुश छोड़े ९३ फिर विश्वेदेवाऽश्शृणुतेमम् आगच्छन्तु ये दोनों मन्त्र पढ़े जब आकर विश्वेदेव वहां बैठजायँ तब तो दर्भ सहित पात्र पहुँचावे ९४ फिर पुष्प व पात्र का जल विश्वेदेव ब्राह्मण के दहिने चरण पर छोड़े व फिर बिप्र के दहिने हाथ पर व पवित्रकपर छोड़े ९५ फिर यादिव्याः इसमन्त्र से पात्रकाजल भांपे फिर भोजन पात्रपर छोड़देवे छोड़ने के समय कहे इदं वोऽर्घ्यम् फिर अस्त्वर्घ्यः यह उत्तर विश्वेदेव ब्राह्मण से सुने ९६ फिर पात्र में धरकर जल की पूजाकर वह पात्र कहीं स्थापित करे फिर बिप्रकरमें जल देकर यवोंसेही पूजन करे ९७ अर्च्चित प्रार्च्चित पाद से लेकर शिरपर्य्यंत जल छोड़ता हुआ पुत्र पूजन करे ९८ फिर गन्ध द्वारा इममन्त्र से सुन्दर गन्ध देवे इस प्रकार सम्पूर्ण पूजन करके तथास्तु यह ब्राह्मण से कहवालिया करे इसीप्रकार पितरोंका भी पूजन करे पर भेद इतनाही है कि वह अपसव्य होकर कियाजाता है ९९ व अपसव्य ही पितृ ब्राह्मणों को भी करके यज्ञोपवीत देवे व कुशोंको द्विगुणित करके यवोंके स्थान में तिलछोड़े व बाईंजानु भूमिमें लगाले तब पितरों को आसनादिदेवे १०० व दक्षिण को मुख करके क्षणमात्र प्रश्न करे व दक्षिणाग्र कुशों पर तीनन्युब्ज

अर्थात् औंधेपात्र धरे १ व उन प्रत्येकके साथ तीन तीन कुश ग्रंथि रहे फिर उनको उताने करे फिर पात्रों में पवित्र सहित तिलछोड़े २ फिर शन्नोदेवीः इससे जल छोड़कर तिलोऽसि इत्यादि से तिल छोड़े फिर गन्ध पुष्प देकर स्वधास्थ यह पूँछे ३ जब उत्तर पाजाय तो स्त्वग्र्घ्यः यह कहे व पितरोंका आवाहन करे तिल पुष्प कुश हाथमें लेकर ४ उशन्तस्त्व यह तीनबार पढ़े व पितृ ब्राह्मणों के मस्तकों पर धरके फिर यह मन्त्र पढ़े व पूजन पितृ ब्राह्मणों का पूर्ववत् अपसव्यही होकर करे ५ व सव्य होकर धोकर देवताओं के लिये सुवर्ण के भोजनपात्र देवे व पितरों के लिये जैसा संभवहो भोजन-पात्र कल्पित करे सुवर्णहो तो सुवर्णका नहीं तो चांदीका ६ उसके भी अभाव में कांस्यका परन्तु नवीन हो उसमें किसीने भोजन तब तक न किया हो इनसब पात्रोंके अभावमें पलाश के पत्रों के पात्र मध्यमहोते हैं ७ फिर केला आम्र जामुन व पुन्नागके भी पात्र होसक्ते हैं अथवा महुआ कुरैयाके पत्रों के पात्र बनावे वा बिजौरा नींबूके अथवा बदरी के पत्रों के ८ व मातुलुङ्ग के पात्र मनुष्यों को श्राद्ध में देना चाहिये फिर दर्व्वीमें अन्न लेकर फिर दोनों हाथों में घृतलेकर ९ फिर सव्यहोकर परिवेषण करने के लिये देव ब्राह्मणों से पूँछे फिर पूँछे कि विश्वेदेव ब्राह्मणो हम अग्नौकरण करेंगे वे उत्तर देवें कि करो १० तब सव्यही होकर परिवेषण करके उपवीती होकर अभिघार्य्य करै फिर ॐ सोमायपितृमते स्वधानमः यह पढ़ कर एकआहुति देवे ११ व यमायांगिरसे पितृमते स्वधानमः यह पढ़कर दूसरी आहुतिदेवे फिर अक्षतछोड़े १२ दूसरी आहुतिदेकर फिर अग्नये कव्यवाहनायस्वधानमः इसमन्त्रसे आहुतिदेकर फिर अपसव्यहोकर ब्राह्मणोंको परिवेषण करकेचले १३ पितरोंके लिये अग्नौकरण करे परन्तु पितरोंके पात्रों में बार २ परिवेषण करे फिर पिण्ड देने केलिये पात्रतैयार करे उसमें प्रथम करछुल वा चिमचा जिससे खीर चलानाहो उसे धोवे १४ फिर उससे पायसलेकर अग्नि में डाले फिर पात्रों का उपस्पर्श करे फिर पात्र के दक्षिण भाग में उसके अनन्तर थोड़ी खीर छोड़े १५ फिर जितने भक्ष्य भोज्य शाक

अन्नादिहों देवे बस जैसा विधान कहआये हैं इसी प्रकारसे सब श्री रामचन्द्रजी ने क्रमसे किया व महावृद्ध अतिथि सब क्रमसे देखता रहा १६ फिर रामचन्द्र से बोला कि अब शीघ्रही नमस्कार करो हमलोगों को भूखलगी है जो तुमकहो तो भोजनकरें १७ तब रामचन्द्रजी बोले कि हे मुने ! एक क्षणभर और रहजाओ क्योंकि इस समय हम देवताओं व पितरोंके नमस्कार करते हैं १८ यह कहकर श्रीराघवजी ने पात्रों में स्थित अन्न दिया देवताओं के आगे पूर्व्व को फुनगी करके कुशधरे व पितरों के आगे उत्तरको फुनगी करके सबकुश स्थापित किये १९ व देवताओं के आगे यवसहित कुश व पितरों के आगे तिल समेत कुश दिये व फिर पृथिवीतेपात्रम् इस मन्त्र से पायसादि सब पदार्थ देकर २० इदंविष्णुः इसमन्त्रसे अंगुष्ठ सब पदार्थों पर धरा व प्रथम यद्देवा इस मन्त्र से देवताओं को दिया २१ फिर सबपितरोंको दिया तदनन्तर उस अतिथिको अन्नपानादि सब दिया फिर देवताभ्यः इस मन्त्रको पढ़कर देवताओंको व पितृभ्यः यह पढ़कर पितरोंको दिया २२ फिर जब सव्य यज्ञोपवीत कियेहुये देवब्राह्मण भोजनकरनेलगे व अपसव्य होकर पितृ ब्राह्मण भक्षण करनेलगे तब श्रीराघवजी गायत्री जपनेलगे व फिर मधुवाता इत्यादि तीनमन्त्र पढ़कर कहा २३ (भुञ्जध्वम्) भोजनकरो जब सबविप्र भोजन करनेलगे तब रामचन्द्रजी रक्षोघ्न मन्त्र पढ़नेलगे व भक्ष्यभोज्य पदार्थ आदरपूर्व्वक परोसनेलगे २४ इस अनन्तर में जो वह अतिथि ब्राह्मण आयाथा उसने जो महाश्चर्य्य किया वह तुमसे संक्षेपसे हम कहते हैं २५ वह यहहै कि जितना उसको परोसागया पात्रभरका सब भोजन एकही कवल में खागया व बोला कि अभी हमारी प्राणाहुतियों की समाप्ति नहींहुई इससे और भोजनदेओ २६ जो इतनाही एक अतिथिके भोजनमात्रको नहीं देसके तो कैसे श्राद्धकरने में प्रवृत्तहुये हे रामचन्द्र ! यदि एक हमको भी नहीं देसके तो वृथा श्राद्धकरनेसे क्याहै २७ हे राम ! जब एकही को नहीं भोजनदेसके तो वृथा बहुतोंको भोजन देनेपर क्यों उद्यत हुये जो सहसा कर्म्म करता है उसके कर्म्मों की कभी समाप्ति नहीं

होती है २८ तुमने हम को अकेले तृप्त नहीं किया सबको कैसे करसक्के हो हमको तो भोजन दे नहीं सक्तेहो इनको कैसे देवोगे सो कहो २६ तब रामचन्द्र ने उनसे कहा कि तुम यथासुख भोजनकरो यह परमाद्भुत देखकर व उस अतिथिकीओर देखकर ३० श्रीरामचन्द्रजी शम्भुमुनिको बुलाकर उनसेबोले कि अब तुम इनको परोसो क्योंकि हम जानते हैं कि तुम साक्षात् शिवहो व तुम्हारी भार्या साक्षात् पार्वतीजी हैं तुम पिताहो व पार्वतीजी शिवा देवी माताहै यहहम ख्याल करते हैं ३१ सो वे साक्षात् अन्नपूर्णा ईश्वरी भवानी हैं यहभी हमारे विचारमें आताहै तब पार्व्वतीजी बोलीं कि हम अभी इस अतिथि को अघवायेदेती हैं ३२ यहकह सुवर्णकेपात्रमें भातभरके व सुवर्णही की करछी लेकर सुगन्धित व उजली खीर करछी से निकालकर ३३ कहा कि यह पायस इस विप्रके लिये अक्षयहो ऐसा कहकर आनन्द से उस ब्राह्मणके दहिने हाथमें पायस देदिया ३४ तब शिर कँपाकर उस ब्राह्मण ने ऊपरको दृष्टिकरली व हाथ में पायस लेकर फिर उसने अपना बायां हाथ पायस के लिये पसारा ३५ व कहा कि स्वादुयुक्त परिपक्व पायस और हमको देओ तब शम्भुकी पत्नी बोलीं कि जितना दोनों हाथों में है भोजन करो फिर और देवेंगी ३६ तब उस ब्राह्मण ने दोनों हाथों में जितना था सब भोजन करलिया जब उसके हाथ का पायस अक्षय हुआ न चुका तब उसने और हाथ पसारा ३७ तब पार्व्वती जीने उस हाथ में भी पायस देदिया व अन्य ब्राह्मणों को भी देवीजी ने पक्व अक्षयपायस दिया ३८ तब दोनों हाथों के पायसको अक्षय जानकर उस ब्राह्मणने और तीसरा हाथ पसारा ३९ व कहा कि इसमें भी घृतयुक्त दालसहितभात परोसो तब पार्व्वती देवीने उसहाथपर भी अक्षय अन्न परोसा ४० इसप्रकार जिसके आगे जो कुछ पतिव्रता पार्व्वतीजी ने परोसा वह अक्षय होगया उसको वह खाकर नहीं चुकासका पर उस अतिथि का जब तीसरा हाथ भी परिपूर्ण होगया तो उसने चौथा हाथ निकाला ४१ इसप्रकार सहस्र हाथतक उसने निकाले व देवी जीने सबोंको अक्षय पायसादि से परिपूर्ण करदिया तब वह विप्र

बोला कि अब हमको आचमन करने के लिये जलदेओ हे भद्रे ! तुम्हारे परोसने से हम तृप्त होगये और न रामचन्द्र के परोसने से तृप्त हुये न सीताके परोसने से ४२ तब पार्व्वतीजी बोलीं कि रामचन्द्रजीने दिया व सीताजी ने दिया और हमने भी दिया अब बताओ इसके पीछे और क्या देवें अब तुम्हारी पूर्णता हुई वा नहीं हमसे कहो४३ वह ब्राह्मण बोला कि हम अब बनाय तृप्त होगयेहैं हमको कुछ न चाहिये क्योंकि हमारे हाथमें अधिकहै वह हाथसे हे विद्वन्! क्यों नहीं गिरता ४४ जलदेओ जिसमें हाथ मुख अच्छेप्रकार धोलेवें तब पार्व्वतीजीने हाथमें जलदिया पर वह ब्राह्मण जब पीनेपर हुआ वह जल हाथपरसे किसीप्रकारसे भी न गिरा तब उस ब्राह्मण ने बड़ी देरतक ध्यानकिया कि केवल हमारे हाथ से जल क्यों नहीं गिरता तब उसने विचारा कि यह जल भी हमारे पीनेहीके लिये है अन्य हाथधोने आदि कर्म्मकेलिये नहीं है ४५ इससे इसे भी पीलेवें व फिर लेकर अन्य कार्य्यकरें तो फिर हाथखाली होजायगा अन्यथा नहीं यह मनसे विचारकर उस अतिथिने वहजल फिर पीलिया व अन्य जलसे हाथ धोकर कहा हम तृप्तहुये व ये सब ब्राह्मण भी तृप्तहुये सबदेवगण देखतेहीरहे यह अद्भुतसाहुआ कि उसके कहतेही सब तृप्तहोगये इसप्रकार सब ब्राह्मणोंको तृप्तजानकर परमार्थवान् श्रीराघवजीने देवी के हाथके नीचे अपना हाथकरके विधिपूर्व्वक सब ब्राह्मणों से कहा कि (तृप्तास्स्थ) तब सब ब्राह्मणों ने कहा (तृप्तास्स्मः) बस मन्त्रसहित जल फिर सबोंके आगे छोड़दिया इसकेपीछे श्रीरामचन्द्रजी ने पात्रकी दक्षिणओर समीपही पिंडदान किया व वहीं विप्रोंको आचमन करनेकेलिये जलभी दिया ४६।४९ उन लोगों ने झूंठेपत्रों के पात्रों पर कुल्लाकिया जब सब ब्राह्मणों ने आचमन करलिया व गृहके भीतर स्थितहोकर अन्य बहुत से ब्राह्मणोंको बुलाया व सब वे ब्राह्मण व श्राद्ध के पांच ब्राह्मण भी गृहके भीतर जाकर फिर उन्होंने आचमन किया पर वह अतिथि गृहके भीतरको नहीं गया ५० उसने कहा कि हम बाहर आचमन करेंगे तब उस अतिथि से रामचन्द्रजी ने भीतरआने को कहा पर

उसने कहा कि हम तो उठी नहींसक्ते तो फिर गृहमें कैसे आवें हे-
राघव ! हमको हाथ देवो ५१ तब रामचन्द्रजी ने अपना हाथ पक-
ड़ाया व कहा इसके सहारेसे उठो परन्तु वह ब्राह्मणोत्तम नहीं उठा
तब हनुमान्ने अपना बलवान् हाथ ब्राह्मण को पकड़ाया ५२ व
दूसरे हाथ से उस श्रेष्ठब्राह्मण को पकड़कर बड़े बलसे खींचा तब
वह ब्राह्मण रोदनके साथ बोला कि ५३ हमारे हाथको खेद होताहै
इससे अन्य कोई अङ्ग पकड़कर उठावो तब हनुमान्ने अपनी पूँछ
से ब्राह्मणके शिरको लपेटकर ५४ पृथ्वीपर दौड़ परन्तु वह ब्राह्मण
अपने स्थानपर से न चलायमान हुआ तब उन बानरवीर हनुमान्
ने पृथ्वीपर अपने दोनों पाद अड़ाकर ५५ व हाथों से ब्राह्मण का
शिर पकड़कर उसी घरके ऊपर उठाकर फेंकदिया व वह गृह फूट
टूटगया ब्राह्मणलोग उस गृहसे बाहर निकलआये ५६ उस वृद्ध
ब्राह्मणको हनुमान्ने इसरीतिसे मन्दिरके बाहर करदिया व फिर उन
बूढ़े दुर्बल ब्राह्मणको लेकर एक सिंहासनपर स्थापित किया ५७
व मिट्टीके घड़ासे लेकर उस ब्राह्मणको जाम्बवान्ने जलदिया तब
ब्राह्मण बोला कि हमको स्वच्छ जल पात्रसहित देवो ५८ हमारे
सब अङ्ग सीता अपने हाथोंसे धोवें व लक्ष्मण जल छोड़तेरहें तब
जाम्बवान्ने आकर रामचन्द्रजी से सब वृत्तान्तकहा ५९ जैसे कि
उस वृद्ध ब्राह्मण ने लक्ष्मण व सीताके विषयमें चरणादि धोने को
कहाथा तब रामचन्द्रजी ने उस ब्राह्मणके धोने को अपने छोटे भाई
लक्ष्मणको व सीताजीको आज्ञा दी कि हे लक्ष्मण ! हे सीते ! जल
लेकर इन विप्रजी के सब अंग धोवो जैसे कि इन्द्रध्वज राजा की
प्रतिमाका पूजन सर्वाङ्ग धोकर किया जाताहै रामचन्द्रजीकी आज्ञा
से सीताजी व लक्ष्मणजीने सब वैसाही प्रक्षालन किया ६० । ६१
तब उस अतिथि ने अपना कुल्ला सीताजीके मुखमें छोड़दिया जि-
ससे कि आभूषणसहित सब वस्त्रादि जलसे व्याप्त होगये परन्तु
पतिव्रता सीताजीने पतिकी आज्ञासे पूजनकरनेके कारण कुछ नहीं
कहा चरणधोतीही रहीं ६२ फिर उन पतिव्रताजीने विप्रका खँखार
व राल धोया फिर नासिकाके भीतरका मल नकमैली आदि निका-

लकर बाहर फेंकदिया ६३ फिर लक्ष्मणजीने आचमन कराकर ब्रा-
ह्मणसे कहा अबउठो ब्राह्मणने कहा हम नहीं उठसक्के इतने में ह-
नुमान् फिर आये ६४ तब वह अतिथि विप्र बोला कि हनुमान्
हमको अबकी न उठावें क्योंकि तबकी हमको इतने बलसे इन्होंने
उठाया कि हम व्यथित होगये ६५ तब जाम्बवान् उन विप्रजी से
बोले कि हमारे सबअंग कोमलहैं इससे हे विप्र ! जो हम तुम को
पकड़कर उठावेंगे तो तुमको पीड़ा न होगी ६६ ऐसाकहकर जाम्ब-
वान् ने दोनों हाथों से पकड़कर उन विप्रजीको उठालिया व जहां
सब ब्राह्मणलोग बैठे थे वहीं लेजाकर उनको भी स्थापित करदिया
६७ तब रामचन्द्रजी ने सब द्विजेन्द्रों की प्रदक्षिणाकी तब विप्रेंद्रों
ने आशीर्व्वाद दिया व राघवजी ने सबोंको ताम्बूल दिये ६८ व
अपने भाइयों सहित श्रीरामचन्द्रजी ने सब ब्राह्मणोंके चरणछूकर
सीताजी से कहा कि भला तुमने इन अतिथिजी के सबअङ्ग अच्छी
तरह नहीं धोये ६९ क्योंकि इन अतिथिजी की दोनों फीलियों में
मैल लगाहै व मुखमें भी मैल लगाहै अच्छी रीतिसे मैल धोडालो
ये ब्राह्मणदेव मैल को नहीं सहसक्के ७० सीताजी बोलीं कि हमने तो
अच्छे प्रकार धोयाथा परन्तु अब फिर इनके अंग मलिन होगये हैं
तब श्रीरामचन्द्रजी बोले कि फिर इनका मैल धोवो नहीं तो हमको
दोष होगा ७१ तब सीताजी वैसाही करके यानी धोकर चुपहोगईं
फिर रामचन्द्रजी से व सीताजीसे वे विप्रदेव बड़े कोपसे बोले ७२
कि हे राजेंद्र ! हमारी दोनों ऊरू तो सीता पकड़ें व आप दोनों हाथ
पकड़ें व भरत हमारे बेना हांकें ७३ व लक्ष्मण हमारे शिरके केश
पकड़े रहें व उनको सँवारते सुधारते रहें व शत्रुघ्न हमारा खँखार
धोते छोड़ातेरहें सोभी अपने वस्त्रसे पोंछतेरहें ७४ सूतजी शौनका-
दिकोंसे बोले कि इस बातको सुनकर उन चारोंजनों ने वैसाही किया
सोभी बड़ेहर्षसे व सब मनुष्य राक्षस वानरादिकभी बहुत विस्मि-
तहुये ७५ व पार्व्वती देवी शम्भुजी को तिरछी भौंहें करतीहुई उधर
देखकर शोभित हुईं व वहां सबसे बोलीं कि ये अतिथिजी शम्भु
हैं ७६ यह सुनकर शङ्ख चक्र गदा धारणकियेहुये अतिथिजी बहुत

प्रसन्नहुये व पीताम्बर ओढ़े सबअंगों से भूषित व प्रकाशित हुये
७७ व बोले कि जिस शम्भु की तुमने पूर्व्वकाल में आराधना की
थी वे हम प्रसन्न हुये जो हम शुद्धस्फटिकमणिके समान प्रकाशित
हैं व सब आभरणोंसे भूषित हैं ७८ कोटिसूर्य्यसम प्रकाशित कि-
रीट धारण कियेहुये करुणानिधान हैं इतना कहकर श्रीरामचन्द्रजी
का हाथ पकड़कर श्रीशिवजी खड़े होगये ७९ तब परमधर्म्मात्मा
श्रीरामचन्द्रजीके अंगोंमें पुलकावली होआई व दण्डवत् पृथ्वीपर
गिरकर आनन्दरसमें मग्नहोगये ८० व उनके सब भाई दण्डव-
त्प्रणाम करके पृथ्वीपर गिरपड़े तब श्रीशिवजी ने श्रीराघवजी को
उठाकर अपनी छातीमें लपटाकर उनका मस्तक सूँघलिया ८१ व
राजीवलोचन श्रीरामचन्द्रजी से यह मधुरवाक्य कहा कि आप वर
मांगें हम प्रसन्नहैं जो ब्रह्मादिकों कोभी दुर्लभहै वहभी वरदेंगे ८२
तुमको अदेय हमारे कुछ नहीं है इससे विलम्ब न करो जो चाहो
अभी मांगो हम सब कुछ देनेपर सन्नद्धहैं यह सुनकर श्रीरामचन्द्र
जी बोले कि हे जगन्नाथ ! हमको कुछभी मांगना नहीं है क्योंकि
पृथ्वीमण्डलका राज्य तो इस समय अपने आप प्राप्तही है ८३ व
स्वर्ग जानो कर्म्मोंमे प्राप्तहीहै व भक्ति व नानाप्रकारके भोगविलास
तुम्हारे पादोंके दर्शनसेहैं शरीरकी आरोग्य व यश आदि सबहैं स्त्री
सीता सब स्त्रियोंमें श्रेष्ठ विद्यमानहै ८४ व सब राजा लोगोंको हम
ने अपने वशमें करलिया व प्रजा सब अपने धर्म्मों से युक्तहैं बस
तुम्हारे आगमनही से हमको यह बड़ा हर्ष हुआ ८५ तथापि आप
के कहने से यही वरमांगतेहैं कि तुममें हमारी स्थिरभक्तिहो व दू-
सरा वर यहहै कि हे देव ! तीन वर्षतक तुम हमारे गृहमें टिके रहो
८६ व इसीरूपसे बसकर सब धर्म्म कहतेरहो श्रीशम्भुजी बोले कि
हे राम ! सब ऐसाहीहो सब तुम्हारे होगा ८७ तब श्रीविष्णुभग-
वान् ! जो लोकालोकके पारसे श्रीरामचन्द्रजी के संग आये थे वे
बोले कि हे महाभाग ! हमभी तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्नहैं जो चाहो
वर मांगो ८८ तब श्रीरामचन्द्रजी बोले कि हमको अब कुछभी तुम
से मांगना नहीं है क्योंकि जो कुछ मिलनेको था वह सब शम्भुसे

मिलचुका सो अभी तुम्हारे सामने भी कहचुके हैं ८९ हां एक वर मांगते हैं कि हे विष्णो ! सर्व्वदा प्रसन्न बनेरहो तब श्रीहरिभगवान् सीताजी से बोले कि हम इससमय तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहैं ९० इस लिये जो चाहो वर मांगो देवेंगे तब सीताजी यह बोलीं कि हमने तो पूर्व्वसमयमें भर्त्ताहीको वर मांगा अब फिर अन्य वर नहीं मांग सक्ती हैं ९१ जो वरही दियाचाहतेहो तो यह देवो कि ऐसेही परपुरुष से कुछ मांगनेकी इच्छा न हो आपके नमस्कार है बस और कुछ हमको न चाहिये ९२ तब सब मुनियोंने देवताओं में उत्तम श्रीविष्णु व श्रीशिवके प्रणामकिया तब शिवजी ने राघवजी से कहा कि तुम अब अपने बन्धुओं समेत भोजनकरो ९३ व हम अपनी पार्व्वती देवीसहित तुम्हारे मन्दिर में एकान्तस्थलमें बसेंगे व सबके कल्याणदाता ये विष्णुभगवान् लक्ष्मीसमेत ९४ इस तुम्हारे मंदिर में सदा टिकेरहेंगे क्योंकि ये ऐसे मन्दिरमें रहनेके बड़े लोभी हैं ऐसी वार्त्ताहोजानेपर बहुत पात्रादिकों से युक्त बड़े शुभ मन्दिरके सिंहासन पर बैठाने के लिये ९५ आगे २ वसिष्ठजी व शक्तिके पुत्र पराशरजी चले व और भी सब ऋषिलोग व वृद्ध २ सब छोटे २ राजालोग भी चले ९६ व उन सबोंके सम्मुख अपने भाइयोंसहित श्रीराजारामचन्द्र महाराज चले व मन्दिरमें पहुँचकर वसिष्ठजीकी बाईंओर सब ऋषियोंको श्रीराघवजीने आसनोंपर बैठाया ९७ फिर हनूमान् आदि भृत्योंसे श्रीरामचन्द्रजी समझातेहुये बोले कि तुमलोग तबतक बैठो पीछेको भोजनकरना अभी नहीं ९८ तब उनलोगोंने अच्छाकहकर सब ऋषियोंको अर्घ्यपाद्याचमनीयादि दिया व फिर रामचन्द्रजी से उपसेवित सब ऋषियों ने भोजनकिया ९९ उन सबोंको भोजन के पीछे ताम्बूलादि देकर श्रीराघवजी ने कपीन्द्रादिकों को भोजन कराया जब सबलोग भोजनकरचुके तो राजीवलोचन श्रीरामचन्द्र जीने २०० दीन अंध कृपणादि मनुष्योंको व पशु पक्ष्यादि मृगादिकोंको भोजनदेकर फिर सन्ध्यावन्दन करने का आरम्भ किया १ सन्ध्या जपादिक करके व उन सब ऋष्यादिकों के नमस्कार करके फिर श्रीरामचन्द्रजी पुरवासियों व देशनिवासियों के सङ्ग जाकर राज-

सिंहासनपर विराजमानहुये २ व सब जनोंसे सेव्यमान होकर सभा स्थानमें प्राप्तहोकर राघवजी शोभितहुये जैसे कि सब देवों के बीच में देवराज इन्द्राणी के पति पुरन्दरजी शोभित होतेहैं ३ व राजसमाजकी प्रशंसाके लिये नगारे तुरुहीआदि बजानेवाले लोगोंको नियत किया वे सदा अपने २ समयपर बजानेलगे फिर श्रीराघवजीने सबोंका नाम ले २ कर एक २ का विसर्ज्जन किया ४ फिर सब भाइयोंका विसर्ज्जन अपने २ स्थानोंमें जानेकेलिये किया व वानरादि अन्य सब लोगोंका भी विसर्ज्जनकिया तब श्रीरामचन्द्रजीसे महातेजस्वी वशिष्ठजी वाक्य बोले ५ कि हे राघव ! प्रातःकाल जो कार्य्य तुमको करना है उसको भूल न जाना ये जो शम्भु जगन्नाथ भगवान् अम्बिकापति तुम्हारे यहां टिके हैं ६ स्मरणकरने व वन्दना करने के योग्य बड़े यत्नसे हैं ॥

चौ० । एवमस्तुकहि गुरुसन राजा । करित्यहिनमनजपनमहँ आजा ७
देवदेव कर करत चिन्तवन । निज भार्य्याकहँ भज्यहु मुदितमन ॥

ऋषियोंने कहा कि हे गुरो ! प्रातःकाल उठकर बुद्धिमानों में श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी ने क्या किया सो कहो क्योंकि हमको सुननेको कौतूहलहै सूतजी शौनकादि ऋषियों से बोले कि रामचन्द्रजी शम्भु मुनिको अपने यहां स्थित देखकर बोले कि शम्भुकी कथा हमसे कीर्त्तनकरो क्योंकि पापसमूहके नाशकरनेवाला महेशजीका माहात्म्य सुनकर हमको अभी तृप्ति नहीं हुई ८ । ९ शम्भुमुनि बोले कि अब प्रसन्न ईश्वरका कहाहुआ उत्तर तुमसे कहते हैं जो लोग अन्य किसी के उपार्ज्जित द्रव्यों से ईश्वरकी उपासना करते हैं वे अङ्गहीन होते हैं १० इस विषयमें यह इतिहासहै कि एक रूपकनाम राक्षसथा उसने चोरीके धनसे शङ्करकी आराधना करके उसी द्रव्यसे ईश्वरकी प्रीतिकेलिये घण्टा बनवाई ११ उसके पुत्रका सम्पाति नामथा उसने चोरीसे इकट्ठे कियेहुये धनसे शङ्करजीकी पूजा बड़े प्रेमसे की १२ वे दोनों एकही दिन मरे व दोनों शिवलोककोगये तब वीरभद्रजीने दोनों से कहा १३ कि हे रूपक ! आपने अन्यायसे इकट्ठीकीहुई द्रव्यसे पूजाकी है इस अन्यायके भावसे अंगहीन होकर तुम चोरों

के गणहोवोगे १४ व शिवचरणकी पूजाकरने व व्यक्तनामके आश्रयणसे उसके शब्दसे कान ध्वस्तहोजायँगे व उनके भक्त हमारे दर्शन करने के कारण व अन्तमें शिवगणोंके दर्शन करनेके हेतुसे तुम्हारे शिवभक्तिभी होगी व यह तुम्हारा पुत्र अनाशन नाम गण होगा क्योंकि इसने न्यायसे इकट्ठे कियेहुये धनसे शिवकी पूजाकीहै वीरभद्रसे अनाशननाम गण से कहीं घूमतेहुये यह आज्ञादी १५ । १६ ऐसी आज्ञापाकर वे दोनों वीरभद्रके कहनेके अनुसार चोरगणोंके अधिप व अनाशन नाम गणहोकर शिवलोकमें टिके १७ शम्भुमुनि बोले कि अब उपहृत द्रव्यसे कीहुई पूजाकी कथा हनुमान् से महादेवजी की कहीहुई तुमसे कहेंगे १८ हे राघव! सबोंके चरित्र सुनो एक २ के कर्म्मविपाककहेंगे १९ उपहृत गणोंकी व्याख्याकरो यह हनुमान् जीने पूछा शिवजी ने कहा २० कि उनकी उपहृतगणसंज्ञा इसलिये है कि उनलोगों ने जानकर उपहृत द्रव्यसे ईश्वरकी पूजाकी है यह बात एक ज्ञानीने कहीहै इससे सुनो २१ एकके सब अंगों से पसीना बारबार निकलताथा इससे सब कालों में सब अंगों से पसीना चला करताथा पसीनासे जिस आसनपर बैठताथा वह भीजजाता था व पसीना बहते २ उसका शरीर दुर्ब्बल व हलका होगया था नासिकाके अग्रभागसे सदा पसीनेके बूँद टपकाकरते थे इससे स्पर्श करनेके योग्य नहीं दिखाईदेताथा २२ एक दिन उसने अपने पुरमें वैसेही पसीनहे हाथों से महादेवजी की पूजा की इस विषयका एक इतिहास और कहतेहैं २३ चेकितान नाम एक किसान ब्राह्मणहुआ वह नित्य प्रातःकाल स्नानकरके तो खेतीका कर्म्म करने को जाया करे २४ जब मध्याह्न समय आवे तो वह ब्राह्मण मंत्र जपता हुआ अपने गृहको आवे व आतेही अपनी स्त्री से कहे कि हमको बहुत शीघ्र अन्नलाकर देवो २५ जब वह अन्नलावे तो उसमें से कुछ ले जल्दी से शिवपूजनकरे इसप्रकार वह सदा वैसेही खेतीकरके आये हुये पसीने से चुचुआतेहुये शिवपूजन कियाकरे २६ गंधपुष्पअक्षतादिकों से जो पूजाकरे सबोंमें पसीने के बूँद मिलेहीरहें परन्तु जब संध्यासमय आवे तो अपने सब अंग धोकर साफशुद्धहो २७ तब

कालके अनुसार यथासम्भव सामग्री से देवेश महादेवजी की पूजा करे जब वह महाबुद्धि मृतकहुआ तो शिवलोक को गया २८ तब वीरभद्रने कहा कि तुम स्वेदिल अर्थात् पसीनायुक्तगण यहां होवो क्योंकि तुम ने पसीनायुक्त पदार्थों से पूर्व्वजन्म में शिव का पूजन किया है २९ जिससे कि नित्यही पसीना से युक्त होकर पूजन किया है इसी से तुम स्वेदगणहोवो शम्भुमुनि श्रीराघवजी से बोले कि हे रामचन्द्रजी ! वीरभद्रकी ऐसी आज्ञा पाकर वह स्वेदिलनाम गण हुआ ३० व इस घण्टामुख गणको देखो यह पूर्व्वजन्मका विभावसुनाम वैश्यथा बड़ादानी ज्ञानी नित्य ब्राह्मणोंको भोजन करानेवाला था सो इसीप्रकार अनुष्ठानकिया करताथा प्रातःकाल शिवके नमस्कारकरके पुष्पोंसे शिवका पूजन करके वहांकी कुछ भूमि गोबर से लीपकर कमल आदि इकट्ठेकरके देवताके समर्प्पणकरके एक फूटी हुई घण्टाको बजायाकरे ३१ यह सुनकर श्रीरामचन्द्रजीने पूँछा कि वह घण्टा उपहृत कैसेथी ३२ शम्भुमुनि बोले कि पूर्व्वकालमें एक सोमनाम वैश्यहुआ उसके पुत्रका मन्दनामथा उसकी जब दशवर्ष की अवस्थाहुई ३३ तो उसने अग्निमें उर्द कुलथी घण्टामें करके छोड़दिया फिर निकालकर उर्द कुलथी आदि उसी घण्टा में धरे २ भोजन करलिया इसीसे वह घण्टा उपहृत होगई ३४ पर उस घण्टा को लेकर उस वैश्यने यत्नकरके यह कहा कि हमने इसको शुद्धकर लियाहै अब जूँठी नहीं है क्योंकि अग्निमें डालकर तप्त करादियाहै परन्तु यह उसका पाप समझागया जोकि उसने घण्टाको अन्नभरकर अग्निमें डाला वह फूटभीगई व उसमें फिर भोजन किया इससे जूँठी भी होगई इसी पापयोगसे यह घण्टामुख नाम गणहुआ ३५।३६ श्रीरामचन्द्रजीने पूँछा कि जैसे द्रव्योंकी शुद्धि लिखीहै उसप्रकारसे तो उस वैश्यने उसकी विशुद्धिकरली थी फिर पापका कारण क्या हुआ जो सम्यक्प्रकारसे द्रव्य शोधनके लिये कहीगईहै वह द्रव्यको क्यों नहीं शुद्ध करसक्ती ३७ शम्भुमुनि बोले कि लौकिक व्यवहार ने तुम्हारी भक्तिसे रहित नहीं होता क्योंकि वह तो शिवलोक को जाताही है व वक्ताभी वैसाही होताहै ३८ रामचन्द्रजी ने कहा कि-

चौ० जो यह कथा कहत नर कोई । अरु मन लाय सुनतहै जोई ॥
गुप्तहुसों अतिगुप्त सुपावन । शिवज्ञानप्रद सबमनभावन ३९
पुण्यदायि अघओघनशावन । शम्भुभक्तिप्रद शैव जुड़ावन ॥
जो यहि सुनत भक्तिसों कोई । शिवपुरजाय सुपूजितहोई ४०
यह पातालखण्ड की गाथा । तुम सन हम भाषी मुनिनाथा ॥
यहि मुनि वक्ताको चहि देना । वस्त्र हेम भूषण धन धेना ॥
सस्यसहित महि शक्त्यनुसारा । देय बहुरि जो जुरे जुरारा ॥
सूत कहा सुनु शौनक योगी । शिवराघव संवाद सुभोगी ४१
सकलपापनाशन हरिहरको । अतिप्रिय देनहार शुभवरको २४२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेपातालखण्डेशिवराघवसंवादेभाषानुवादेउपरिभागेराममोक्षोनामसप्तदशाधिकशततमोऽध्यायः ११७ ॥

॥ इति पद्मपुराणपातालखण्डः ॥

॥ शुभम्भूयात् ॥